पारा – 1

सूरह–1. अल–फ़ातिहा

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

**1 हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह ही
के लिए है जो संपूर्ण सृष्टी का
पालनहार है. 2 अत्यंत कृपाशील
और दयावान है. 3 इंसाफ़ के दिन
का मालिक है. 4 हम तेरी ही
उपासना करते हैं और तुझ ही से
सहायता चाहते हैं. 5 हमें सीधा
रास्ता दिखा. 6 उन लोगों का**

रास्ता जो तेरे कृपापात्र हुए. 7
उनका रास्ता नहीं, जिन पर तेरा
क्रोध प्रकट हुआ और न उन
लोगों का रास्ता जो (सीधे) रास्ते से
भटक गए.

सूरह–2. अल–बक़राह

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 **अलिफ़० लाम० मीम०.** 2 **यह अल्लाह की किताब है. इसमें
कोई संदेह नहीं. मार्गदर्शन है डर रखने वालों के लिए.** 3 **जो
बिना देखे (दृढ़) विश्वास करते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं. और जो कुछ हमने
उन्हें दिया है, वह उसमें से ख़र्च करते हैं.** 4 **और जो ईमान लाते हैं उस
(आसमानी-संदेश) पर जो तुम्हारे पास (ख़ुदा की ओर से) आया है और जो तुम
से पूर्व प्रकट हुआ. और वे आख़िरत पर (अर्थात मृत्यु-पश्चात जीवन पर) दृढ़
विश्वास रखते हैं.** 5 **यही वे लोग हैं जो अपने रब के (बताये हुए) सीधे मार्ग पर हैं
और यही सफलता प्राप्त करने वाले हैं.**

6 जो लोग सत्य को न मानने पर अड़े रहे, उनके लिए समान है कि तुम उन्हें
डराओ या न डराओ, वे मानने वाले नहीं हैं. 7 अल्लाह ने उनके दिल (व दिमाग़) पर
और उनके कानों पर मुहर लगा दी है; और उनकी आँखों पर पर्दा है; और उनके लिए
सख़्त सज़ा है.

8 लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और
आख़िरत के दिन पर, हालाँकि वास्तव में वे ईमान वाले नहीं हैं. 9 वे अल्लाह को और
ईमान वालों को धोखा देने (का प्रयास) करते हैं, मगर वे सिर्फ़ अपने आपको धोखा देते
हैं और वे इसको नहीं समझते. 10 उनके दिलों में (दांभिकता का) रोग है तो अल्लाह ने

उनके रोग को और अधिक बढ़ा दिया और उनके लिए दर्दनाक (दुखदायी) सज़ा है, इसके फलस्वरूप कि वे झूठ बोलते थे. 11 और जब उनसे कहा जाता है कि धरती पर फ़साद (उपद्रव) न करो तो वे जवाब देते हैं, हम तो सुधार करने वाले लोग हैं. 12 नहीं! वास्तव में यही लोग फ़साद करने वाले हैं, मगर वे नहीं समझते. 13 और जब उनसे कहा जाता है कि तुम भी उसी तरह ईमान ले आओ जिस तरह अन्य लोग ईमान लाए हैं तो वे कहते हैं, क्या हम उस तरह ईमान लाएँ जिस तरह मूर्ख लोग ईमान लाए हैं. जान लो कि मूर्ख स्वयं यही लोग हैं, मगर वे नहीं जानते. 14 और जब वे ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हैं, और जब शैतानी (विचारों से प्रेरित) अपने साथियों से एकांत में मिलते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो उनसे (अर्थात ईमान वालों से) केवल हँसी (उपहास) करते हैं. 15 अल्लाह उनसे हँसी कर रहा है और उन्हें उनके विद्रोह (सरकशी) में ढील दे रहा है. वे भटकते फिर रहे हैं. 16 यही वे लोग हैं जिन्होंने मार्गदर्शन (हिदायत) के बदले पथभ्रष्टता (गुमराही) ख़रीदी तो उनका सौदा फ़ायदेमंद नहीं हुआ, और वे न हुए राह (सन्मार्ग) पाने वाले.

17 उनका उदाहरण ऐसा है जैसे एक व्यक्ति ने आग जलाई. जब आग ने उसके आस-पास के परिसर को प्रकाशमान कर दिया तो अल्लाह ने उनकी आँख की रोशनी छीन ली और उन्हें अंधेरे में छोड़ दिया कि उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता. 18 वे बहरे हैं, गूँगे हैं, अंधे हैं. अब वे (सन्मार्ग की ओर) पलटने वाले नहीं हैं. 19 या फिर उनका उदाहरण ऐसा है जैसे आसमान से बारिश हो रही हो, उसमें अंधकार भी हो और गरज–चमक भी. वे बिजली की कड़क से डर कर, मौत से बचने के लिए अपनी उंगलियाँ अपने कानों में ठूंस रहे हों. हालाँकि अल्लाह (अपने सामर्थ्य से) सत्य का इन्कार करने वालों को अपने घेरे में लिए हुए है. 20 क़रीब है कि बिजली उनकी निगाहों को उचक ले. जब भी उन पर बिजली चमकती है, उसमें वे चल पड़ते हैं और जब उन पर अंधेरा

छा जाता है तो वे रुक जाते हैं. और यदि अल्लाह चाहे तो उनके सुनने और देखने की क्षमता को नष्ट कर दे. निस्संदेह, अल्लाह हर कार्य करने की सामर्थ्य रखता है.

21 **ऐ लोगो! अपने रब की इबादत (उपासना) करो जिसने तुम्हारा सृजन किया और उन लोगों का भी जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं,** ताकि तुम (जहन्नम से) बच जाओ. 22 वह हस्ती (वह प्रभुत्वशाली सत्ता) जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया और आसमान को छत बनाया, और उतारा आसमान से पानी और उससे पैदा किए हर प्रकार के फल तुम्हारी जीविका के लिए. तो तुम किसी को अल्लाह के बराबर न ठहराओ, हालाँकि तुम जानते हो (कि उस जैसा दूसरा कोई नहीं).

23 **यदी तुमको इस (क़ुरआन के ईश-संदेश होने) में संदेह है जो हमने अपने दास (तथा पैग़ंबर) पर प्रकट किया है, तो तुम भी इस जैसा एक अध्याय (बनाकर) प्रस्तुत करो** और (इस कार्य में) अल्लाह के सिवा अपने समर्थकों को (जिस-जिस को) बुला सकते हो (अपनी सहायता के लिए)

बुला लो, यदि तुम (अपनी बात में) सच्चे हो (तो इस चुनौती को स्वीकार करो). 24
और यदि तुम यह न कर सको और कदापि न कर सकोगे, तो डरो उस आग से जिसका इंधन बनेंगे आदमी और पत्थर. वह तैयार की गयी है सत्य का इन्कार करने वालों के लिए.
25 और शुभ-सूचना दे दो उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने सत्कर्म किए,कि उनके लिए ऐसे बाग़ **होंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी. जब भी उन्हें इन बाग़ों में से कोई फल खाने को मिलेगा, तो वे कहेंगे, यह वही है जो इससे पहले हमें दिया गया था. और मिलेगा उन्हें एक दूसरे से** मिलता–जुलता. और उनके लिए वहाँ (तन-मन से) शुद्ध (एवं सच्चरित्र) जीवनसाथी होंगे. और वे उसमें हमेशा रहेंगे.

26 **अल्लाह इस बात से नहीं शरमाता कि मच्छर का उदाहरण दे या उससे भी ज़्यादा किसी तुच्छ जीव का,** फिर जो लोग सत्य का स्वीकार करने वाले हैं (अर्थात ईमान वाले हैं) वह जान लेते हैं कि यह सत्य है उनके रब की ओर से, लेकिन जो सत्य का इन्कार करने वाले होते हैं, वे कहते हैं कि इस उदाहरण को बयान करके अल्लाह कहना क्या चाहता है.

अल्लाह इसके माध्यम से अनेकों को पथभ्रष्ट करता है और अनेकों को इससे सन्मार्ग दिखाता है. वह पथभ्रष्ट करता है केवल उन लोगों को जो अवज्ञाकारी हैं,
27 जो अल्लाह से किए हुए प्रण (वचन) को उसके पक्का हो चुकने के बाद तोड़ देते हैं और उस चीज़ को तोड़ देते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया है और धरती पर उपद्रव मचाते हैं. यही लोग घाटे में रहने वाले हैं. 28 **(लोगो!) तुम अल्लाह को**

मानने से इन्कार कैसे कर सकते हो, जबकि तुम निर्जीव थे, तो उसने तुम्हें जीवन प्रदान किया. फिर वही तुम्हें मृत्यु देगा. फिर दोबारा वही तुम्हें जीवित करेगा.(इस तरह)तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे.

29 **वही है (तुम्हारा पालनहार) जिसने धरती पर जो कुछ है सब तुम्हारे लिए बनाया.** फिर उसने आसमान की ओर रुख किया और सात आसमानों की (ठीक-ठीक) रचना की. उसे हर चीज़ का परीपूर्ण ज्ञान है.

30 **और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती पर (मनुष्य को) उत्तराधिकारी बनाकर बसाने वाला हूँ.** इस पर फ़रिश्तों ने कहा कि क्या तू धरती पर ऐसे को बसाएगा जो इसमें उपद्रव मचाएगा और ख़ून-ख़राबा करेगा.(ऐ प्रभु!) हम तो तेरी स्तुति के साथ तेरा महिमागान करते हैं और तेरे पावित्र्य का बखान करते हैं. अल्लाह ने कहा, मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते.

31 और अल्लाह ने सिखा दिए आदम को सब चीजों के नाम, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने प्रस्तुत किया और कहा, यदि तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ.

32 फ़रिश्तों ने कहा, तू महिमावान है! **हमें तो सिर्फ़ उतना ही ज्ञान है, जितना ज्ञान तूने हमें दिया है.** निस्संदेह तू ही परिपूर्ण ज्ञानी और बुद्धिमान है.

33 तब अल्लाह ने कहा, ऐ आदम! तुम (फ़रिश्तों को) उन लोगों के नाम बताओ. फिर जब (आदम ने) फ़रिश्तों को उनके नाम बताए. तो अल्लाह ने कहा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं ही आसमानों और धरती के सारे तथ्य (छिपी हुयी बातें) जानता हूँ. **और**

(सिर्फ़) मैं (वह सब) जानता हूँ जो तुम प्रकट करते हो और जो तुम छिपाते हो.

34 और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो (अर्थात आदम के सामने नतमस्तक हो जाओ) तो इबलीस के सिवा सब ने सजदा किया. इबलीस ने इन्कार किया और घमंड का प्रदर्शन किया. परिणामतः वह सत्य का इन्कार करने वालों में से हो गया. 35 और हमने कहा, ऐ आदम! तुम तथा तुम्हारी पत्नी दोनों जन्नत में रहो और उसमें जहाँ से चाहो मुक्त रूप से खाओ और इस (एक) वृक्ष के निकट मत जाना, अन्यथा तुम अत्याचारियों में से हो जाओगे. 36 फिर शैतान (इबलीस) ने उस वृक्ष के माध्यम से उन दोनों को (प्रलोभन देकर हमारे आदेश से) विचलित कर दिया और उन्हें उस आनंदमयी अवस्था से निकलवा दिया जिसमें वे थे. तब हमने कहा, तुम सब उतरो यहाँ से. तुम एक-दूसरे के शत्रु होंगे. और तुम्हें एक निश्चित अवधी तक धरती पर ठहरना और गुज़र-बसर करना है. 37 फिर आदम ने अपने रब से (प्रार्थना की) तो अल्लाह ने उस पर (कृपादृष्टी की और) उसके पश्चाताप को स्वीकार किया. निस्संदेह, वह पश्चाताप करने वाले पर कृपा करने वाला है, दयावान है.

38(तब) **हमने कहा, तुम सब यहाँ से उतरो. फिर जब मेरे पास से तुम्हें मार्गदर्शन प्राप्त हो, तो जो कोई मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेगा तो ऐसे लोगों के लिए (मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में) न किसी प्रकार का भय होगा और न वे कभी दु:खी होंगे.** 39 **लेकिन जो लोग सत्य का इन्कार करेंगे और हमारे संदेशों को नकारेंगे तो वे अवश्य जहन्नम में पड़ने वाले हैं. वे उसमें हमेशा रहेंगे.**

40 ऐ इसराईल की संतान! याद करो मेरे उस अनुग्रह को जो मैंने तुम पर किया था. तुमने मेरे साथ जो प्रतिज्ञा की थी उसको तुम पूरी करो. और मैंने तुम्हारे साथ जो वादा किया, मैं उसकी पूर्तता करूँगा. सिर्फ़ मुझसे ही डरो (अर्थात मेरे प्रति तुम हमेशा सचेत
रहो). 41 और इस संदेश पर (अर्थात क़ुरआन पर) ईमान लाओ जो मैंने प्रकट किया है, जो पुष्टि करता है उस सत्य की जो (पहले से) तुम्हारे पास है. इसलिए तुम सबसे पहले (इस) सत्य का इन्कार करने वाले न बनो. और तुच्छ (सांसारिक) लाभ प्राप्त करने के लिए मेरे संदेशों को मत बेचो और मुझ ही से डरो (अर्थात मेरे प्रति हमेशा सचेत एवं
उत्तरदायी बने रहो). 42 और सत्य में असत्य की मिलावट न करो और सत्य को न
छुपाओ, जबकि तुम (उसको) जानते हो. 43 नमाज़ का नित्य रूप से पालन करो और ज़कात अदा करो और (नमाज़ में) झुकने वालों के साथ झुक जाओ (अर्थात सामूहिक
नमाज़ अदा करो). 44 क्या तुम लोगों से भलाई के काम करने को कहते हो और अपने आपको भूल जाते हो, हालाँकि तुम ख़ुदा की किताब को पढ़ते हो? क्या तुम बुद्धी से
काम नहीं लेते ? 45 सहनशीलता एवं नमाज़ के द्वारा (अल्लाह से) सहायता प्राप्त करने

की कोशिश करो. निस्संदेह, (ऐसा करना) बहुत कठिन है, लेकिन उन लोगों के लिए नहीं,(जिनके दिल) अल्लाह के प्रति

(हमेशा) सचेत (एवं उत्तरदायी) रहते हैं, 46 जो दृढ़ विश्वास रखते हैं कि **वे अपने रब से मिलने वाले हैं. और वे उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं.**

47 ऐ इसराईल की संतान! मेरे उस अनुग्रह (उपकार) को याद करो जो मैंने तुम पर किया था और इस बात को कि मैंने तुम्हें सारे संसार वालों पर श्रेष्ठता प्रदान की थी.

48 **और उस दिन के प्रति सचेत रहो जिस दिन कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के कुछ काम न आएगा** और न किसी की ओर से कोई मध्यस्थता (सिफ़ारिश) स्वीकार की जाएगी, न किसी से मुक्ति-धन (ransom) लिया जाएगा और न किसी प्रकार से (अपराधी) लोगों की सहायता की जाएगी. 49 और (याद करो) जब हमने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुटकारा दिलाया. वे तुम्हारे बेटों की हत्या करते और तुम्हारी औरतों को (अर्थात तुम्हारी बेटियों को) जीवित रखते,(इस प्रकार) वे तुम्हें सख़्त यातना देते थे. इसमें तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी भारी परीक्षा थी. 50 और (याद करो वह समय) जब हमने तुम्हारे लिए समुद्र को फाड़कर (रास्ता बनाया) (फिर उस रास्ते से) पार कराकर तुम्हें बचा लिया और फ़िरऔन के लोगों को डुबो दिया और यह सब तुम देख रहे थे. 51 और जब हमने बुलाया मूसा को चालीस रातों के वादे पर, फिर तुमने उसकी अनुपस्थिती में बछड़े को उपास्य बना लिया. (परिणामतः) तुम अत्याचारी बन गए. 52 फिर उसके बाद हमने तुमको माफ़ कर दिया, ताकि तुम (अपने पालनहार के प्रति) आभार व्यक्त करने वाले बनो. 53 और (उस

समय को भी याद करो) जब हमने मूसा को किताब दी और (सत्य तथा असत्य में अंतर करने वाली) कसौटी भी, ताकि तुम सन्मार्ग पा सको.

54 और (याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम!

तुमने बछड़े को पूजनीय बनाकर अपने आप पर भारी अत्याचार किया है.

तो अब अपने सृजनहार की तरफ़ (अपने Creator की तरफ़) पश्चाताप करते हुए पलटो. और (तुम्हारे बीच में) जो अपराधी लोग हैं उनकी (स्वयं) अपने हाथों से हत्या करो. (ऐसा करना) तुम्हारे सृजनहार की दृष्टी में तुम्हारे लिए बेहतर है. (जब तुमने ऐसा कर लिया तो) अल्लाह ने तुम्हारे पश्चाताप करते हुए (उसकी ओर पलटने) को स्वीकार किया. निस्संदेह, वह पश्चाताप को स्वीकार करने वाला है, बड़ा दयावान है.

55 और याद करो जब तुमने कहा, ऐ मूसा! हम तुम पर कदापि विश्वास नहीं करेंगे जब
तक हम अल्लाह को साक्षात (अपने) सामने न देख लें. (इस पर) तुम्हें बिजली के कड़के
ने पकड़ लिया. और तुम (इस परिणाम) को देख रहे थे. 56 फिर हमने तुम्हारे मृत्यू के
पश्चात तुम्हें जीवित किया, इसलिए कि तुम (हमारे प्रति) कृतज्ञ बनो. 57 और हमने
तुम्हारे ऊपर बादलों की छाया की और तुम पर मन्न (बटेर जैसा पक्षी) और सलवा (एक
विशेष खाद्य पदार्थ) उतारा. (और कहा कि) खाओ.(स्वच्छ तथा)शुद्ध चीज़ों में से जो

हमने तुम्हें (तुम्हारी) जीविका के लिए उपलब्ध करायी हैं. (फिर अवज्ञा करके) **उन्होंने हमें कोई हानि नहीं पहुँचायी, बल्कि वे स्वयं को ही हानि पहुँचा रहे थे.**

58 याद करो (उस समय को) जब हमने कहा था कि इस बस्ती में प्रवेश करो और जहाँ से चाहो और जितना चाहो (आज़ादी के साथ) खाओ. पर शहर में प्रवेश करो सिर झुकाए हुए (अर्थात नम्रतापूर्वक) और (इस प्रकार) प्रार्थना करो, (ऐ प्रभू!) हमारे पाप-कर्मों को माफ़ कर दे. हम तुम्हारे पाप-कर्मों को माफ़ कर देंगे और सत्कर्म करने वालों को हम और अधिक पुरस्कारित करेंगे. 59 लेकिन उन अत्याचारी लोगों ने उनसे कही गयी बात को दूसरी बात से बदल दिया. (परिणाम-स्वरूप) हमने उन अत्याचारियों पर आसमान से यातना उतारी, क्योंकि वे अवज्ञाकारी लोग थे. 60 और (याद करो उस समय को) जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी माँगा, तो हमने कहा, अपनी लाठी पत्थर पर मारो. तो उससे फूट निकले बारह जलस्रोत. हर समूह ने अपना-अपना पानी लेने का स्थान जान लिया. (और उनसे कहा गया) खाओ और पिओ अल्लाह ने प्रदान की हुई निर्वाह की चीज़ों में से और धरती पर दुष्कृत्य करके उपद्रव मत फैलाओ. 61 याद करो जब तुमने कहा था, ऐ मूसा! एक ही प्रकार के भोजन से हमें कदापि संतुष्टि नहीं हो सकती. इसलिए अपने रब से हमारे लिए प्रार्थना करो कि वह हमारे लिए निकाले ज़मीन से जो उगता है, (जैसे) साग, ककड़ी, गेहूँ, मसूर और प्याज़. मूसा ने कहा, क्या तुम एक बेहतर चीज़ के बदले एक तुच्छ चीज़ लेना चाहते हो. किसी शहर में चले जाओ, वहाँ तुम्हें मिलेगी वह चीज़ जो तुम माँगते हो (अकृतज्ञता के परिणाम-स्वरूप) वे अपमान और दरिद्रता से ग्रसित किए गए और वे अल्लाह के प्रकोप के पात्र ठहरे. इसका कारण यह था कि वे अल्लाह के संदेशों का इन्कार करते थे और (अल्लाह के)

संदेशवाहकों की अन्यायपूर्वक हत्या करते थे. यह परिणाम था उनके विद्रोह और मर्यादाओं के उल्लंघन करने का.

62 निस्संदेह, जो लोग ईमान वाले (अर्थात मुसलमान) हुए और जो लोग यहूदी हुए और ईसाई और साबियन. इनमें से जो व्यक्ती ईमान लाया अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और उसने अच्छे कर्म किए हो. तो ऐसे लोगों के लिए उनके रब के पास उचित प्रतिफल है. वहाँ उन्हें न तो किसी प्रकार का भय होगा, न वे कभी दुःखी होंगे.

63 (ऐ इस्राईल की संतान! उस समय को याद करो) जब हमने तूर पर्वत को तुम पर उठाकर तुमसे प्रण लिया था. (और कहा था कि) पकड़ो उस चीज़ को दृढ़तापूर्वक जो हमने तुम्हें प्रदान की है. और जो कुछ उसमें है उसे अच्छी तरह याद रखो, ताकि तुम (बुराई से) बच सको. 64 लेकिन इस (प्रतिज्ञा के बावजूद) तुम फिर गए. अगर तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दयालुता न होती तो तुम (भी) अवश्य बरबाद हो चुके लोगों में से हो जाते. 65 और तुम अपनी क़ौम के उन लोगों के बारे में अच्छी तरह जानते हो जिन्होंने (प्रार्थना का खास दिन) सबत (अर्थात शनिवार) के विषय में (हमारे) आदेशों को तोड़ा तो हमने उनसे कहा, तुच्छ बंदरों जैसे हो जाओ. 66 फिर हमने (इस घटना को) उस समय के लोगों के लिए और बाद की पीढ़ियों के लिए चेतावनी देने वाला उदाहरण बना दिया और (अल्लाह का) डर रखने वालों के लिए सबक़ लेने का साधन.

67 और जब मूसा ने अपने लोगों से कहा कि अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम एक गाय की बलि दो. (तो) उन्होंने कहा, क्या तुम हमसे मज़ाक़ कर रहे हो? मूसा ने कहा, मैं इस बात से अल्लाह की शरण माँगता हूँ कि मैं (ऐसा करके) अज्ञानी लोगों में अपना समावेश कर लूँ. 68 उन्होंने कहा, हमारे लिए अपने रब से निवेदन करो कि वह हमें स्पष्ट रूप में बताए कि वह गाय कैसी हो? मूसा ने कहा अल्लाह फ़रमाता है कि वह गाय न बूढ़ी हो और न बछिया, पर इन दोनों के बीच की हो. तो अब पालन करो उस

आदेश का जो तुम्हें दिया जा रहा है. 69 उन्होंने कहा, हमारे लिए अपने रब से (फिर से) निवेदन करो कि वह हमें स्पष्ट रूप से बताए कि उसका रंग कैसा हो? मूसा ने कहा, अल्लाह फ़रमाता है कि वह पीले रंग की हो, उसका रंग ख़ूब गहरा हो, वह देखने वालों को अच्छी लगती हो. 70 फिर उन्होंने कहा, हमारे लिए अपने रब से निवेदन करो कि वह हमें स्पष्ट रूप से बताए कि वह गाय कैसी हो? क्योंकि सारी गायें हमें एक सी दिखती हैं (अर्थात हम गाय के निर्धारण के संबंध में संदेह में हैं) यदी अल्लाह ने चाहा तो हमें अवश्य मार्गदर्शन प्राप्त होगा. 71 मूसा ने कहा, अल्लाह फ़रमाता है कि वह ऐसी गाय हो जो भूमि को जोतने हेतु प्रशिक्षित की हुई न हो और न वह खेती की सिंचाई करने हेतु प्रशिक्षित की गयी हो. वह बिल्कुल स्वस्थ हो, उसमें किसी प्रकार का ऐब (एवं कलंक) न हो. वे बोले, अब तुम स्पष्ट बात लाए हो. फिर उन्होंने उसको ज़बह किया (अर्थात बलि दिया), लेकिन (वास्तव में) उनका ज़बह करना ऐसा था, जैसे उन्होंने वह नहीं किया. 72 **(ऐ इस्राईल की संतान! याद करो उस समय को) जब तुमने एक व्यक्ति की हत्या की, फिर तुम उसके बारे में झगड़ने लगे (और हत्या का आरोप एक-दूसरे पर थोपने लगे), लेकिन अल्लाह को (उस अपराध के सत्य को) प्रकाश में लाना था, जो तुम छिपाते थे.** 73 **तो हमने आदेश दिया, उस (शव) को मारो गाय का एक टुकड़ा (फिर वह मृत व्यक्ति अपने क़ातिल का नाम बता देगा). इसी प्रकार अल्लाह मुर्दों को जीवित करता है. और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम (अपनी) बुद्धि का उपयोग करो.**

नोट:- बनी-इसराईल में एक हत्या की घटना घटित हुयी थी. इस घटना के संबंध से वे एक-दूसरे पर दोषारोपण करने लगे थे. तो अल्लाह ने उन्हें उस हत्यारे को मालूम करने के लिए एक चमत्कारिक युक्ति बतायी, जिसके द्वारा हत्यारे का पता लगाया गया. इस युक्ति की हक़ीक़त यह थी कि इस युक्ति के द्वारा गाय की पवित्रता की तथाकथित कल्पना को समाप्त

करने के साथ-साथ उनके सामने मृत्यु-पश्चात जीवन की सच्चाई को भी स्पष्ट किया गया. यह चमत्कारिक घटना पैग़ंबर की उपस्थिती में घटित की गयी घटना थी, जो प्रत्यक्ष सर्व-सामर्थ्यवान के आदेश से घटित हुयी.

इजिप्त की क़ौम गाय को पवित्र मानकर उसे पूजती थी. बनी इसराईल जो कि आसमानी किताब के मानने वाले थे, इजिप्त में लंबे समय तक वास करने के कारण वे भी इजिप्त के लोगों के प्रभाव में आकर गाय को पवित्र मानने लगे थे. तो ख़ुदा ने उनके भीतर दाख़िल हो चुकी इस अवास्तविक पवित्रता को तोड़ने के लिए गाय की बलि देने का आदेश दिया.

74 फिर इसके बाद तुम्हारे दिल कठोर हो गए, पत्थरों की तरह (कठोर), या इससे भी अधिक कठोर. क्योंकि पत्थरों में कुछ ऐसे भी होते हैं जिनसे नहरें फूट निकलती हैं. और कुछ पत्थर फट जाते हैं तो उनसे पानी निकलने लगता है. और कुछ पत्थर ऐसे भी होते हैं. जो अल्लाह के भय से गिर पड़ते हैं और अल्लाह उससे अनभिज्ञ नहीं जो कुछ तुम करते हो.

75 क्या तुम ये आशा रखते हो कि ये यहूदी तुम्हारे मात्र कहने से ईमान ले आएंगे, जबकि उन में एक समूह (अर्थात कुछ लोग) ऐसे हैं जो अल्लाह का कलाम (अर्थात ईश-संदेश) सुनते थे

फिर उसे समझ लेने के बाद उसको जान-बूझकर बदल डालते थे. 76 और जब वे ईमान वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं, हम भी ईमान लाए हुए हैं. लेकिन जब आपस में एक-दूसरे से एकांत में मिलते हैं, तो कहते हैं, क्या तुम उन्हें वे बातें बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर प्रकट की हैं? (इसका परिणाम यह होगा कि ये ईमान वाले तुमसे प्राप्त बातों के आधार पर) तुम्हारे रब के सामने तुम्हारे ही विरुद्ध प्रमाण प्रस्तुत करेंगे. तो क्या तुम बुद्धि का उपयोग नहीं करते?

77 **क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह वह सब कुछ जानता है जो वे छिपाते हैं और जो वे प्रकट करते हैं.**

78 और उनमें अनपढ़ (निरक्षर) हैं जिन्हें अल्लाह की किताब (अर्थात अल्लाह के मार्गदर्शन) का ज्ञान नहीं (उनके पास जो कुछ है वह) निराधार (एवं स्वयं-कल्पित) अभिलाषाओं के सिवा और कुछ नहीं और वह अटकलबाज़ी के सिवा कुछ नहीं करते.
79 विनाश है उन लोगों के लिए जो अपने हाथ से किताब लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है. ताकि उसके माध्यम से थोड़ी सी पूँजी प्राप्त कर लें. तो विनाश है उस चीज़ के कारण जो उनके हाथों ने लिखी. और उनके लिए विनाश है अपनी इस
कमाई से. 80 और वे कहते हैं हमें जहन्नम की आग नहीं छुएगी, सिवाय गिनती के कुछ दिन. कहो, क्या तुमने अल्लाह से कोई वादा (वचन) ले लिया है कि अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध नहीं करेगा. या अल्लाह के संबंध में तुम ऐसी बात कहते हो जो तुम नहीं जानते.
81 हाँ, जिसने कोई पापकर्म किया और उसके पाप ने उसे अपने घेरे में ले लिया. तो ऐसे ही लोग जहन्नम के वासी हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे.

82 **और जो ईमान लाए और उन्होंने सत्कर्म किए, वे जन्नत वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे.**

83 और जब हमने बनी इसराईल (अर्थात इसराईल की संतान) से वचन लिया कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करोगे और अच्छा व्यवहार करोगे माता-पिता के साथ, संबंधियों के साथ, अनाथों और दीन-दुखियों के साथ. और यह कि

लोगों से अच्छी बात कहो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो (दानकार्य करो). फिर तुम इस (वचन) से फिर गए सिवा थोड़े लोगों के. और तुम प्रतिज्ञा करके उससे हट जाने वाले लोग हो.

84 और जब हमने तुम से यह वचन लिया कि तुम अपनों का ख़ून न बहाओगे. और अपने लोगों को अपनी बस्तियों से नहीं निकालोगे. फिर तुमने इसको स्वीकार किया और तुम उसके गवाह हो. 85 फिर तुम ही वह लोग हो कि अपनों की हत्या करते हो और अपने ही एक समूह को उनकी बस्तियों से निकालते हो और उनके विरुद्ध उनके दुश्मनों की मदद करते हो गुनाह और ज़ुल्म के साथ. फिर अगर वे तुम्हारे पास बन्दी होकर आते हैं तो तुम फ़िदया (आर्थिक दंड) देकर उन्हें छुड़ाते हो. हालाँकि ख़ुद उनका निकालना ही तुम्हारे लिए निषिद्ध था (हराम था). क्या तुम ख़ुदा की किताब के एक भाग को मानते हो और एक भाग का इन्कार करते हो. तो तुममें से जो लोग ऐसा करें उनकी सज़ा इसके सिवा क्या हो सकती है कि उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में अपमानित किया जाए और क़यामत के दिन (अर्थात जिस दीन अल्लाह की अदालत लगेगी) उन्हें सख़्त अज़ाब (यातना) में डाल दिया जाए. और अल्लाह उस चीज़ से अनभिज्ञ नहीं जो तुम कर रहे हो.
86 यही लोग हैं जिन्होंने आख़िरत (अर्थात मृत्यु-पश्चात अनंतकालीन जीवन) के बदले दुनिया की ज़िंदगी ख़रीदी. तो (इसके परिणाम-स्वरूप) उनकी यातना में न कमी की जाएगी और न उन्हें किसी प्रकार की सहायता पहुँचेगी.

87 और हमने मूसा को किताब दी और उसके पश्चात, एक के बाद एक (लगातार) पैग़ंबर (संदेशवाहक) भेजे. और मरियम के बेटे ईसा को खुली–खुली निशानियाँ दीं और पवित्र आत्मा (रूहे-पाक) से उसकी सहायता की. तो जब भी कोई पैग़ंबर तुम्हारे पास वह बात लेकर आया जिसे तुम्हारा दिल नहीं चाहता था तो तुमने घमंड किया. फिर तुमने कुछ (पैग़ंबरों) का इन्कार किया और कुछ (पैग़ंबरों) को मार

डाला. 88 और यहूदी कहते हैं कि हमारे दिल बंद हैं. नहीं, बल्कि उनके इन्कार के कारण उन पर अल्लाह की फिटकार पड़ी है. इसलिए कि वे बहुत कम ईमान लाते हैं. 89 और जब आयी अल्लाह की ओर से उनके पास एक किताब, जो पुष्टि करने वाली है उस (सत्य) की जो उनके पास है और वे पहले से सत्य का इन्कार करने वालों पर विजय प्राप्त करने हेतु प्रार्थना करते रहते थे. फिर जब आयी उनके पास वह चीज़ जिसे उन्होंने पहचान रखा था तो उन्होंने उसको मानने से इन्कार कर दिया. तो अल्लाह की फिटकार है सत्य का इन्कार करने वालों पर. 90 कैसी बुरी है वह चीज़ जिसके लिए उन्होंने अपने प्राणों का सौदा किया (वह यह) कि वे इन्कार कर रहे हैं अल्लाह के उतारे हुए कलाम (संदेश) का, इस दुराग्रह के कारण कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल (कृपा) से (अपना संदेश) अपने बंदों में से जिस पर चाहे उतारे. अंततः वे ग़ुस्से पर ग़ुस्सा कमा कर लाए और सत्य का इन्कार करने वालों के लिए अपमानजनक सज़ा है.

91 और जब उनसे कहा जाता है, **जो कुछ अल्लाह ने उतारा है उस पर ईमान लाओ, तो वे कहते हैं कि हम उस पर ईमान रखते हैं** जो हमारे ऊपर उतरा है. और वे उसका इन्कार करते हैं जो उसके पीछे आया है. हालाँकि वह सत्य है और पुष्टि करने वाला है उस (सत्य) की जो उनके पास है. कहो, अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम अल्लाह के पैग़म्बरों को इससे पहले क्यों क़तल करते रहे हो.
92 और मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियाँ लेकर आया. फिर तुमने उसकी अनुपस्थिती में (अर्थात वह तूर पर्वत पर जाने के बाद) बछड़े को पूज्य बना लिया और तुम ज़ुल्म करने वाले हो. 93 और जब हमने तुम से प्रतिज्ञा ली और तूर पर्वत को तुम्हारे ऊपर खड़ा किया, (और कहा), जो आदेश हमने तुम्हें दिया है उसे दृढ़ता के साथ पकड़ो और सुनो. उन्होंने कहा, हमने सुना, लेकिन हम नहीं मानते. और उनके इन्कार के कारण बछड़ा उनके दिलों में रच-बस गया. कहो, यदी तुम ईमान वाले हो, तो कैसी बुरी है वह

चीज़ जो तुम्हारा ईमान तुम्हें सिखाता है. 94 कहो, अगर अल्लाह के यहाँ शाश्वत दुनिया का घर दूसरों को छोड़कर, ख़ास तुम्हारे लिए है, तो तुम मरने की कामना करो यदि तुम सच्चे हो. 95 लेकिन वे कभी मौत की कामना नहीं करेंगे, उस कारण, जो वे अपने आगे भेज चुके हैं. और अल्लाह भली-भाँति जानता है ज़ालिमों को. 96 और तुम उन्हें सांसारिक जीवन की सबसे ज़्यादा लालसा रखने वाला पाओगे, उन लोगों से भी ज़्यादा जो दूसरों को ख़ुदा का समकक्ष ठहराते हैं (अर्थात बहुदेववादी). उनमें से हर एक यह चाहता है कि हज़ार वर्षों की आयु पाए. हालाँकि इतनी आयु भी उसे सज़ा से बचा नहीं सकती. और अल्लाह देखता है जो कुछ वे कर रहे हैं.

97 कहो कि जो कोई जिब्रील का विरोधी (अर्थात अल्लाह का संदेश पैग़ंबर तक लाने वाले फ़रिश्ते का विरोधी) है तो (वह यह जान ले कि) उसने इस (क़ुरआन) को तुम्हारे दिल पर अल्लाह के हुक्म से उतारा है, यह (कलाम) पुष्टि करने वाला है उन (पूर्व-सूचनाओं) की जो इससे पहले से हैं और यह मार्गदर्शन और शुभ-सूचना है ईमान वालों के लिए. 98 जो कोई दुश्मन हो अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसके पैग़ंबरों का और जिब्रील व मीकाईल का तो अल्लाह ऐसे इन्कार करने वालों का दुश्मन है. 99 और हमने तुम्हारे ऊपर स्पष्ट निशानियाँ उतारी हैं और कोई उनका इन्कार नहीं करता, मगर वही लोग जो अवज्ञाकारी हैं. 100 क्या (ऐसा नहीं है कि) जब भी वे कोई प्रण करते हैं तो उनका एक समूह उसे तोड़ फेंकता है. बल्कि उनमें से अधिकतर लोग ईमान नहीं रखते. 101 और जब उनके पास अल्लाह की ओर से एक पैग़ंबर आया जो पुष्टि करने वाला था उस चीज़ की जो उनके पास है तो उन लोगों ने जिन्हें किताब दी गयी थी, अल्लाह की किताब को इस तरह पीठ पीछे फेंक दिया, जैसे वे उसे जानते ही नहीं.

102 और वे उस चीज़ के पीछे पड़ गए जिसे शैतान सुलैमान की हुकुमत से जोड़कर पढ़ते थे. हालाँकि सुलैमान ने सत्य का इन्कार नहीं किया, बल्कि ये शैतान थे

जिन्होंने सत्य का इन्कार किया. वे लोगों को जादू सिखाते थे. और वे उस चीज़ में पड़ गए जो बाबिल (बेबिलोन) में हारूत और मारूत इन दो फ़रिश्तों पर उतारी गयी,जबकि उनका मामला यह था कि जब भी किसी को अपनी यह कला सिखाते तो उससे कह देते कि हम तो बस परीक्षा के लिए हैं. तो तुम सत्य का इन्कार करने वाले न बनो. मगर वे उनसे वह चीज़ सीखते जिसके द्वारा पति और पत्नी में अलगाव उत्पन्न कर दें. हालाँकि वे अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर उससे किसी का कुछ बिगाड़ नहीं सकते थे. और वे ऐसी चीज़ सीखते जो उन्हें वास्तव में नुक़सान पहुँचाए और नफ़ा न दे. और वे जानते थे कि जो कोई इस चीज़ का ख़रीदार हो, मृत्यु-पश्चात जीवन में उसका कोई हिस्सा नहीं. कैसी बुरी चीज़ है जिसके बदले उन्होंने अपनी आत्माओं को बेच डाला. क्या ही अच्छा होता कि वे इस (वास्तविकता को) समझते. 103 और अगर वे ईमान लाते और तक़वा (ईश-भय) को अपनाते तो अल्लाह का बदला उनके लिए बेहतर था, क्या ही अच्छा होता कि वे इस (वास्तविकता को) समझते.

104 ऐ ईमान वालो! तुम 'राइना' न कहो, बल्कि 'उंज़ुरना' (अर्थात हमारी ओर ध्यान दीजिए ऐसा) कहो और सुनो. और सत्य का इन्कार करने वालों के लिए दुःखदायी सज़ा है.

नोटः- 'राइना' अर्थात हमारी ओर देखो, लेकिन इस शब्द का दीर्घ उच्चार जैसे 'राईना' का अर्थ होगा 'ऐ हमारे चरवाहे'. तो ऐसे संदिग्ध शब्दों का प्रयोग न करके स्पष्ट शब्दों का प्रयोग करने का आदेश दिया गया.

105 जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया, चाहे वह पूर्ववर्ती ग्रंथधारक हों या बहुदेववादी, वे नहीं चाहते कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की ओर से कोई भलाई उतरे.

और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी दयालुता के लिए चुन लेता है. अल्लाह अत्यंत दयावान है.

106 हम जिस आयत को (जिस संदेश-वचन को) निरस्त करते हैं या भुला देते हैं तो उससे बेहतर या उस जैसी दूसरी आयत लाते हैं. क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह को हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त है. 107 क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाही; **और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई संरक्षक-मित्र है और न कोई सहायक.**

108 क्या तुम चाहते हो कि अपने पैग़ंबर से उसी प्रकार प्रश्न करो जिस प्रकार इससे पहले मूसा से प्रश्न किए गए. और जिस व्यक्ति ने 'ईमान' को 'सत्य के इन्कार' से बदल दिया, वह निश्चित रूप से सन्मार्ग से भटक गया.

109 पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वालों में बहुत से ऐसे हैं जो (केवल) अपने दिलों की ईर्ष्या की वजह से यह चाहते हैं कि किसी तरह तुम्हारे ईमान के बाद तुम्हें इन्कार करने वाला बना दें, इसके बावजूद कि सच्चाई उनके सामने स्पष्ट हो चुकी है. तुम क्षमा से काम लो और उन्हें नज़रंदाज़ करो, यहाँ तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ जाए. निस्संदेह अल्लाह को हर चीज़ पर प्रभुत्व प्राप्त है. 110 और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो. और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे, उसे तुम अल्लाह के पास पाओगे. जो कुछ तुम करते हो, निस्संदेह अल्लाह उसे देख रहा है. 111 और वे कहते हैं कि जन्नत में मात्र वही लोग जाएंगे जो यहूदी हों या ईसाई हों, यह केवल उनकी (स्वयं-कल्पित) कामनाएँ हैं. कहो कि लाओ अपने प्रमाण अगर तुम सच्चे हो. 112 बल्कि जिसने अपने आपको अल्लाह के आज्ञापालन में समर्पित कर दिया और वह उत्तम रीति से

कार्य करने वाला भी है, तो ऐसे व्यक्ति के लिए उत्तम प्रतिफल है उसके रब के पास, ऐसे लोगों को वहाँ किसी प्रकार का न भय होगा और न वे कभी दु:खी होंगे.

113 और यहूदियों ने कहा कि ईसाई किसी बुनियाद पर नहीं और ईसाइयों ने कहा कि यहूद किसी बुनियाद पर नहीं. और वे सब आसमानी किताब पढ़ते हैं. इसी तरह उन लोगों ने कहा जिनके पास (आसमानी किताबों का) ज्ञान नहीं, उन्हीं की सी बात. तो अल्लाह क़यामत के दिन उनके बीच उस बात का फ़ैसला करेगा जिसमें ये झगड़ रहे थे.
114 उससे बढ़कर ज़ालिम (दूसरा) कौन होगा जो अल्लाह की मसजिदों में अल्लाह की याद किए जाने से रोके और उन्हें उजाड़ने का प्रयास करे. उनका हाल तो यह होना चाहिए था कि वे मसजिदों में अल्लाह से डरते हुए प्रवेश करते. उनके लिए इस दुनिया में अपमान है और मृत्यु-पश्चात दुनिया में उनके लिए भारी सज़ा है.
115 **और पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के लिए हैं. तुम जिस ओर भी रुख़ करो उसी ओर अल्लाह है. निस्संदेह, अल्लाह असीम है,सर्वज्ञानी है.**
116 **और वे कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है. वह इससे पाक है.** बल्कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी का है. उसी का हुक्म मानने वाले हैं सारे. 117 वही आसमानों और ज़मीन को अस्तित्व प्रदान करने वाला (Originator) है. वह जब किसी कार्य के करने का निर्णय कर लेता है तो बस उसके लिए वह कह देता है कि हो जा, तो वह हो जाता है.

118 और जो लोग ज्ञान नहीं रखते, उन्होंने कहा, अल्लाह (प्रत्यक्ष रूप से) हमसे क्यों नहीं बात करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती. इसी तरह उनसे पहले

के लोग भी उन्हीं की तरह बात कह चुके हैं, इन सबके दिल एक जैसे हैं, हमने स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कर दी हैं निशानियाँ, उन लोगों के लिए जो दृढ़ विश्वास रखने वाले हैं.

119 (पैग़ंबर!)हमने तुम्हें सत्य के साथ भेजा है, शुभ-सूचना देने वाला और चेतावनी देने वाला बनाकर. और तुमसे जहन्नम में जाने वालों के संबंध में कोई पूछ नहीं होगी.
120 और यहूदी और ईसाई कदापि तुम से प्रसन्न (रज़ामंद) नहीं होंगे, जब तक कि तुम उनके पंथ पर न चलने लगो. तुम कहो कि **जो मार्ग अल्लाह दिखाता है वही असल मार्ग है.** और अगर बाद उस (दिव्य) ज्ञान के जो तुम तक पहुँच चुका है, अगर तुम उनकी इच्छाओं पर चले, तो अल्लाह के मुक़ाबले में न तुम्हारा कोई संरक्षक-मित्र होगा और न कोई सहायक.
121 जिन लोगों को हमने किताब दी है वे उसको (पूर्ण गंभीरता के साथ) पढ़ते हैं, जैसा कि उसको पढ़ना चाहिए. यही लोग ईमान लाते हैं इस (क़ुरआन) पर. और जो इसका इन्कार करते हैं वही घाटे में रहने वाले हैं.

122 ऐ इसराईल की संतान! मेरे उस अनुग्रह को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और उस बात को कि मैंने तुम्हें समस्त संसार वालों पर प्रधानता दी.
123 और उस दिन से डरो जिसमें कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के कुछ काम न आएगा और न किसी की ओर से कोई बदला स्वीकार किया जायेगा और न किसी को कोई सिफ़ारिश लाभ देगी और न कहीं से उन्हें कोई सहायता पहुँचेगी.
124 और जब इब्राहीम की उसके रब ने

कुछ बातों में परीक्षा ली तो उसने पूरा कर दिखाया. अल्लाह ने कहा, मैं तुम्हें सब लोगों का इमाम (पथप्रदर्शक) बनाऊँगा. इब्राहीम ने कहा, और मेरी औलाद में से भी. अल्लाह ने कहा, मेरा वचन ज़ालिमों तक नहीं पहुँचता.

125 और जब हमने काबे को लोगों के जमा होने की जगह और अमन का मक़ाम (शांति-स्थल) ठहराया और हुक्म दिया कि मक़ामे-इब्राहीम (इब्राहीम के खड़े होने के स्थान) को नमाज़ पढ़ने की जगह बना लो. और इब्राहीम और इस्माईल को हुक्म दिया, कि मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों, एतकाफ़ करने वालों और रुकूअ व सजदा करने वालों के लिए पाक-साफ़ रखो.
126 और जब इब्राहीम ने कहा कि ऐ मेरे रब! इस शहर को अमन का शहर बना दे. और इसके वासियों को, जो उनमें से अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर (अर्थात अंतिम न्याय-दिन पर) ईमान रखें,फलों की जीविका प्रदान कर. अल्लाह ने कहा, **जो सत्य का इन्कार करेगा मैं उसे भी थोड़े दिनों तक लाभ दूँगा.** फिर उसे आग के अज़ाब की तरफ़ धकेल दूँगा, और वह बहुत बुरा ठिकाना है.

127 और जब इब्राहीम और इस्माईल अल्लाह के घर (काबा) की दीवारें उठा रहे थे और यह कहते जाते थे, ऐ हमारे रब! इसे हमारी ओर से स्वीकार कर, निस्संदेह तू ही सुनने वाला, जानने वाला है.
128 ऐ हमारे रब! हमें अपना आज्ञाकारी बना और हमारी संतान में से अपना एक आज्ञाकारी समुदाय उठा और हम (तेरी) इबादत (कैसे करें वे) तरीक़े हमें बता और हम पर अपनी कृपादृष्टी डाल, निस्संदेह तू बहुत क्षमा करने वाला है, दया करने वाला है.

129 और ऐ हमारे रब! उनमें उन्हीं में का एक संदेशवाहक उठा जो उन्हें तेरे संदेश सुनाएं और उन्हें ईश-ग्रंथ सिखाए और उसमें मौजूद विवेकपूर्ण संदेश को उन पर खोले और

उनके दिलों की अशुद्धियों को दूर करे (अर्थात उनके mind की deconditioning करे). निस्संदेह, तू ज़बरदस्त है, बुद्धिमान है.

130 **और कौन है जो इब्राहीम के पंथ को पसंद न करे,** मगर वह जिसने अपने आपको मूर्ख बना लिया हो. हालाँकि हमने उसे दुनिया में चुन लिया था और आख़िरत (मृत्यु-पश्चात दुनिया) में वह नेक (सदाचारी) लोगों में से होगा.

131 **जब उसके रब ने कहा कि अपने आपको (अपने रब के) हवाले कर दो तो उसने कहा, मैंने अपने आपको समस्त सृष्टि के रब के हवाले किया.**

132 **और इसी की नसीहत की इब्राहीम ने अपनी संतान को और इसी की नसीहत की याक़ूब ने अपनी संतान को. ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इसी दीन को (अर्थात मज़हब को) चुन लिया है. तो इस्लाम के सिवा (अर्थात अल्लाह को पूर्ण निष्ठा के साथ समर्पित अवस्था के सिवा) किसी और अवस्था में तुम्हें मृत्यु न आए.**

133 क्या तुम उस समय मौजूद थे जब याक़ूब की मौत का वक़्त आया. जब उसने अपने बेटों से कहा कि मेरे बाद तुम किसकी उपासना (इबादत) करोगे. उन्होंने कहा, हम उसी ख़ुदा की उपासना करेंगे जिसकी उपासना आप और आपके पूर्वज इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़ करते आए हैं. वही एक माबूद है और हम उसके आज्ञाकारी हैं.

134 यह एक जमात (उम्मत) थी जो गुज़र चुकी. उसे मिलेगा जो उसने कमाया और तुम्हें मिलेगा जो तुमने कमाया. और जो कर्म वे करते थे उसके संबंध में तुमसे पूछ नहीं होगी.

135 और वे कहते हैं कि यहूदी या ईसाई बन जाओ तो सन्मार्ग पाओगे. **कहो कि नहीं, बल्कि हम तो अनुसरण करते हैं इब्राहीम के पंथ का जो अल्लाह की तरफ़ एकाग्रचित्त था** और वह उन लोगों में से नहीं था जो दूसरों को अल्लाह का समकक्ष ठहराते हैं (अर्थात बहुदेववादी).

136 कहो, हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस (आसमानी-संदेश) पर ईमान लाए जो हमारी तरफ़ उतारा गया. और उस पर भी जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब और उसकी औलाद पर उतारा गया और जो मिला मूसा और ईसा को और जो मिला सब पैग़ंबरों को उनके रब की ओर से. हम उनमें से किसी के बीच

अन्तर नहीं करते और हम अल्लाह ही के आज्ञाकारी हैं.

137 **फिर अगर वे ईमान लाएँ जिस तरह तुम ईमान लाए हो तो निस्संदेह वे सन्मार्ग पा गए और अगर वे फिर जाएँ तो अब वे दुराग्रह पर हैं. तो तुम्हारी ओर से अल्लाह उनके लिए पर्याप्त है और वह सुनने वाला, जानने वाला है.**

138 **कहो, हमने अपनाया अल्लाह का रंग (अर्थात हमने ईश्वरीय इच्छा के अनुरूप जीवन जीने का निश्चय किया) और अल्लाह के रंग से किसका रंग अच्छा है और हम उसी की इबादत करने वाले हैं.**

139 **कहो, क्या तुम अल्लाह के संबंध में हमसे झगड़ते हो, हालाँकि वह हमारा रब भी है और तुम्हारा रब भी. हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म. और हम पूर्ण समर्पण के साथ उसी के हो चुके हैं.**

140 क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उसकी संतान सब यहूदी या ईसाई थे. **कहो कि तुम अधिक जानते हो या अल्लाह.** और उससे बड़ा ज़ालिम और कौन होगा जो उस गवाही को (अर्थात उस सत्य को) छुपाए जो अल्लाह की ओर से उसके पास आया हुआ है. और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे अनभिज्ञ नहीं.

141 यह एक गिरोह था जो गुज़र गया. उसे मिलेगा जो उसने कमाया और तुम्हें मिलेगा जो तुमने कमाया. और तुमसे उनके किए हुए की पूछ न होगी.

पारा – 2 142 अब मूर्ख लोग कहेंगे कि मुसलमानों को किस चीज़ ने उनके क़िबले (प्रार्थना-केंद्र) से फेर दिया जिसकी (ओर रुख़ करके वे इबादत किया करते) थे. कहो कि पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं. वह जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखाता है.

143 और इस तरह हमने तुम्हें बीच का समुदाय बना दिया, ताकि तुम हो लोगों पर (सत्य की) साक्ष देने वाले और (हमारा) पैग़ंबर हो तुम पर (सत्य की) साक्ष देने वाला. और जिस क़िबले पर तुम थे, हमने उसे सिर्फ़ इसलिए ठहराया था कि हम जान लें कि कौन पैग़ंबर का अनुसरण करता है और कौन उससे उलटे पांव फिर जाता है. निस्संदेह यह बात भारी है, लेकिन उन लोगों पर नहीं जिन्हें अल्लाह ने सन्मार्ग दिखाया है. और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान को नष्ट कर दे. निस्संदेह अल्लाह लोगों के साथ स्नेह करने वाला, दया करने वाला है.

144 हम तुम्हारे चेहरे का बार—बार आसमान की तरफ़ उठना देख रहे हैं. तो हम तुम्हें उसी क़िबले की ओर फेर देंगे जिसे तुम पसंद करते हो. अब अपना रुख़ मसजिदे-हराम (काबा) की ओर फेर दो. और तुम जहाँ कहीं भी हो अपने रुख़ को उसी की ओर करो. और पूर्ववर्ती ग्रंथ- धारक भली-भाँति जानते हैं कि यह सत्य है और उनके रब की ओर से है. और अल्लाह अनभिज्ञ नहीं उससे जो वे कर रहे हैं. 145 और अगर तुम इन पूर्ववर्ती ग्रंथ-धारकों के सामने सभी तर्क प्रस्तुत कर दो तब भी वे तुम्हारे क़िबले को नहीं मानेंगे. और न तुम उनके क़िबले का अनुसरण कर सकते हो. और न वे स्वयं एक दूसरे के क़िबले को मानते हैं. और इस ज्ञान के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है, अगर तुम उनकी इच्छाओं का अनुसरण करोगे तो निस्संदेह तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे. 146 जिन्हें हमने किताब दी है वे इसे इस तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं. और उनमें से एक गिरोह सत्य को छुपा रहा है, हालाँकि वह उसे जानता है.

147 सत्य वह है जो तेरा रब कहे. तो तुम कदापि संदेह करने वालों में से न बनो.
148 हर एक के लिए एक रुख़ है जिधर वह मुँह करता है. तो तुम भलाइयों की
ओर दौड़ो. तुम जहाँ कहीं होंगे अल्लाह तुम सबको ले आएगा. निस्संदेह अल्लाह सब कुछ
कर सकता है. 149 और तुम जहाँ से भी निकलो (नमाज़ अदा करने के लिए) अपना
रुख़ मसजिदे-हराम की ओर (अर्थात काबे की ओर) करो. निस्संदेह यह सत्य है,
तुम्हारे रब की ओर से है. और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे अनभिज्ञ नहीं. 150
और तुम जहाँ से भी निकलो अपना रुख़ मसजिदे-हराम की ओर करो और तुम जहाँ भी हो अपना रुख़ उसी की ओर रखो, ताकि लोगों को तुम्हारे ऊपर कोई हुज्जत बाक़ी न रहे (अर्थात लोग तुम्हारे विरुद्ध वादविवाद न कर सकें),सिवाय उन लोगों के जो उनमें अत्याचारी हैं. तो तुम उनसे न डरो और मुझसे डरो, ताकि मैं अपनी नेमत (कृपा) तुम्हारे ऊपर पूरी कर दूँ, ताकि तुम सन्मार्ग पाओ.

151 जिस तरह हमने तुम्हारे बीच एक पैग़ंबर तुम्हीं में से भेजा जो तुम्हें हमारे संदेश पढ़कर सुनाता है और तुम्हारी (मानसिक) अशुद्धियों को पाक करता है और तुम्हें किताब की और विवेकपूर्ण ज्ञान की शिक्षा देता है (अर्थात तुम्हें ईश-वाणी सुनाता है और उसमें के गहन संदेश को स्पष्ट करता है) और वह तुम्हें उन चीज़ों की शिक्षा दे रहा है जिन्हें तुम
नहीं जानते थे. 152 तो तुम मुझे याद रखो, मैं तुम्हें याद रखूंगा. और मेरे प्रति कृतज्ञ
बनना, कृतघ्न न बनना.

153 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! सहनशीलता और नमाज़ से मदद हासिल करो. निस्संदेह अल्लाह सहनशीलता रखने वाले लोगों के साथ है.

154 और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएँ उन्हें मुर्दा मत कहो, बल्कि वे जीवित हैं,
मगर तुम्हें यह बात ज्ञात नहीं. 155 और हम ज़रूर तुम्हें परीक्षा में डालेंगे कुछ डर और

भूख से और मालों व जानों और फलों की कमी से. और दृढ़ता का परिचय देने वालों को शुभ-सूचना दे दो

156 जिनका हाल यह है कि जब उन्हें कोई मुसीबत पहुँचती है तो वे कहते हैं, हम अल्लाह के हैं और हम उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं. 157 यही लोग हैं जिनके ऊपर उनके रब की शाबाशियाँ (विशेष कृपा) हैं और रहमत (दया) है. और यही लोग हैं जो सन्मार्ग पर हैं.

158 (मक्का स्थित दो पहाड़ियाँ) सफ़ा और मरवा निस्संदेह अल्लाह की निशानियों में से हैं. तो जो व्यक्ति बैतुल्लाह (काबा) का हज करे या उमरा करे तो उस पर कोई दोष नहीं कि वह उनका तवाफ़ (परिक्रमा) करे और जो कोई शौक़ से कुछ नेकी करे तो अल्लाह गुण-ग्राहक है, जानने वाला है. 159 जो लोग छुपाते हैं हमारी उतारी हुई खुली निशानियों को और हमारे मार्गदर्शन को, बाद इसके कि हम उसे लोगों के लिए किताब में खोल चुके हैं तो यही लोग हैं जिन पर अल्लाह की फिटकार है और फिटकारने वाले उन्हें फिटकारते हैं. 160 अलबत्ता जिन्होंने क्षमा याचना की और सुधार कर लिया और (अल्लाह का संदेश) स्पष्ट रूप से (लोगों को) बता दिया. तो उन्हें मैं क्षमा कर दूँगा और मैं हूँ क्षमा करने वाला, मेहरबान. 161 निस्संदेह, जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया और उसी अवस्था में मर गए, तो वही लोग हैं कि उन पर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और आदमियों की, सबकी फिटकार है. 162 उसी अवस्था में वे हमेशा रहेंगे. उन पर से यातना हल्की नहीं की जाएगी और न उन्हें (सुधार के लिए कोई) अवकाश दिया जाएगा.

163 और तुम्हारा माबूद (पूज्य प्रभु) एक ही माबूद (पूज्य प्रभु) है. उसके सिवा कोई माबूद नहीं. वह बड़ा मेहरबान है, दयावान है. 164 निस्संदेह आसमानों और ज़मीन की बनावट में और रात व दिन के आने जाने में और उन कश्तियों में जो इंसानों के काम आने वाली चीज़ें लेकर समुंदर में चलती हैं और उस पानी में जिस को अल्लाह ने

आसमान से उतारा, फिर उससे मृत ज़मीन को जीवन प्रदान किया, और उसने ज़मीन में हर प्रकार के जीवधारी फैला दिए. और हवाओं के चलने में और बादलों में जो आसमान और ज़मीन के बीच (उसके) हुक्म के अधीन हैं, उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं.

165 और कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को अल्लाह के बराबर ठहराते हैं. वे उनसे ऐसी मुहब्बत रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से रखनी चाहिए. और जो ईमान लाए हैं वे सबसे ज़्यादा अल्लाह से मुहब्बत रखने वाले हैं. और अगर ये अत्याचारी उस समय को देख लें, जबकि वे यातना को देखेंगे (तो उन्हें यह स्पष्ट हो जाता कि) सारी शक्ति अल्लाह ही के पास है और अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है.

166 जबकि वे लोग जिनके कहने पर दूसरे चलते थे (अर्थात लीडर व रहनुमा) उन लोगों से अलग हो जाएंगे जो उनके कहने पर चलते थे (अर्थात अपने अनुयायियों से). यातना उनके सामने होगी और उनके हर प्रकार के संबंध टूट चुके होंगे. 167 वे लोग जो (अपने नायकों के) पीछे चलते थे (अर्थात अनुयायी) कहेंगे, काश! हमें दुनिया की ओर (एक बार) वापसी मिल जाती तो हम भी उनसे अलग हो जाते, जैसे ये हमसे अलग हो गए. इस तरह अल्लाह उनके कर्मों को पश्चाताप बनाकर उन्हें दिखाएगा (अर्थात अपने कर्मों को देखकर उन्हें पीढ़ा होगी, पश्चात्ताप होगा) और वे आग से निकल नहीं सकेंगे.

168 लोगो! ज़मीन की चीज़ों में से वैध और स्वच्छ एवं शुद्ध चीज़ें खाओ और शैतान के पद्-चिन्हों पर मत चलो, निस्संदेह वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है. 169 वह तुम को सिर्फ़ बुरे काम और अश्लीलता की प्रेरणा देता है और इस बात की, कि तुम अल्लाह के संबंध में ऐसी बातें कहो जिनका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं.

170 और जब उनसे कहा जाता है कि उस पर चलो जो अल्लाह ने उतारा है तो वे कहते हैं कि हम उस पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है. क्या उस स्थिति में भी कि उनके बाप-दादा न बुद्धि से काम लेते हों और न सन्मार्ग जानते हों.
171 और इन सत्य का इन्कार करने वालों का उदाहरण ऐसा है, जैसे कोई व्यक्ति ऐसे पशु के पीछे चिल्ला रहा हो जो बुलाने और पुकारने (की आवाज़) के सिवा और कुछ नहीं सुनता. ये बहरे हैं, गूँगे हैं, अंधे हैं. वे कुछ नहीं समझते.

172 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! हमारी दी हुई स्वच्छ (तथा शुद्ध) चीज़ों को खाओ और (इन सारी चीज़ों के देने वाले) अल्लाह के प्रति अपना आभार-भाव व्यक्त करो, यदी तुम उसकी उपासना (इबादत) करने वाले हो. 173 अल्लाह ने तुम पर हराम किया है (अर्थात अवैध ठहराया है) मात्र मृत पशु के (मांस) को (अर्थात बलि न दिया हुआ मृत) और ख़ून को और सूअर के मांस को और उसको (भी) जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो. लेकिन जिस व्यक्ति को (अवैध चीज़ों के प्रयोग के लिए) विवश होना पड़े, लेकिन वह न तो (अवैध-चीज़ों का) इच्छुक हो और न सीमा का उल्लंघन करने वाला हो तो ऐसे व्यक्ति पर कोई गुनाह नहीं. निस्संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला है, दया करने वाला है. 174 जो लोग उस चीज़ को छुपाते हैं जो अल्लाह ने अपनी किताब में उतारी है और थोड़ा सा (सांसारिक) लाभ प्राप्त करने के लिए उसकी भेंट चढ़ाते हैं, वे अपने पेट में सिर्फ़ आग भर रहे हैं. क़यामत के दिन (अर्थात दोबारा जीवित उठाए जाने के दिन) अल्लाह न उनसे बात करेगा और न उन्हें शुद्ध करेगा और उनके लिए तो दुःखदायी सज़ा है. 175 यही वे लोग हैं जिन्होंने मार्गदर्शन के बदले पथभ्रष्टता का सौदा किया और क्षमा के बदले सख़्त सज़ा का, कैसा विचित्र साहस है उनका कि जहन्नम की यातनाएँ सहने को तैयार हैं. 176 यह इसलिए कि अल्लाह ने अपनी

किताब को ठीक—ठीक उतारा, लेकिन जिन लोगों ने किताब में कई रास्ते निकाले (अर्थात किताब के संबंध में मतभेद किए) वह हठधर्मिता में दूर जा पड़े.

177 सत्कर्म यह नहीं कि तुम अपने चेहरे पूर्व की ओर या पश्चिम की ओर कर लो, बल्कि सत्कर्म यह है कि इंसान ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और फ़रिश्तों पर और किताब पर और पैग़म्बरों पर. और (अपना प्रिय) धन दे अल्लाह से मुहब्बत की ख़ातिर अपने संबंधियों को और अनाथों को और ज़रूरतमंदों को और मुसाफ़िरों को और माँगने वालों को (अर्थात भिक्षुकों को) और गरदनें छुड़ाने में (अर्थात दासों को दासता से मुक्त करने हेतु). और नित्य नमाज़ का पालन करे और ज़कात दे (दान दे) और जब भी प्रण कर ले तो उसको पूरा करे. और धैर्य से काम लेने वाले हों कठिनाई के समय और विपत्ति तथा युद्ध के समय में, यही लोग हैं जो (अपने कथन में) सच्चे सिद्ध हुए. और यही हैं ख़ुदा के संबंध से (हमेशा) सचेत (conscious) रहने वाले.

178 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! हत्या किए गए लोगों के मामले में बराबर का बदला लेना तुम्हारा कर्तव्य ठहराया गया है. आज़ाद व्यक्ति के बदले आज़ाद व्यक्ति, ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम, औरत के बदले औरत(बदला लेते हुए यह नियम होगा). फिर अगर हत्यारे के साथ उसका भाई (अर्थात बदला लेने वाला) कुछ क्षमा करने को तैयार हो जाए तो चाहिए कि भले मार्ग का अनुसरण किया जाए. और (हत्या की एवज़ में दी जाने वाली राशी या ख़ूंबहा) उत्तम रीति से अदा करे. (इस विकल्प का होना) तुम्हारे रब की ओर से छूट एवं दयालुता है. अब इसके बाद भी जो व्यक्ति सीमा का उल्लंघन करे उसके लिए दर्दनाक सज़ा है. 179 ऐ बुद्धि वालो! हत्या का बदला (क़िसास) लेने में तुम्हारे लिए ज़िंदगी (का सामान) है, यह (हुक्म) इसलिए है कि तुम ख़ुदा के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनो. 180 (ऐ ईमान वालों!) तुम पर यह अनिवार्य किया जाता है कि

जब तुम में से किसी की मौत का वक़्त आ जाए और वह अपने पीछे संपत्ति छोड़ रहा हो तो वह सामान्य नियम के अनुसार वसीयत कर दे (अपना इच्छा-पत्र बना दे),अपने माता-पिता के लिए और संबंधियों के लिए. यह करना आवश्यक है अल्लाह के प्रति सचेत (एवं जवाबदेह रहने वाले) लोगों के लिए. 181 फिर जो कोई वसीयत (मरने वाले का इच्छा-पत्र) सुनने के बाद उसे बदल डाले तो उसका गुनाह उन लोगों पर होगा जिन्होंने उसे बदला, निस्संदेह अल्लाह सुनने वाला है, जानने वाला है. 182 हाँ, जिसे वसीयत (इच्छा-पत्र) करने वाले के संबंध में यह संदेह हो कि वसीयत-कर्ता से ग़लती हुई है या (जान-बूझकर) उसने अन्याय किया है. तो वह (संदेह करने वाला व्यक्ति) आपस में समझौता करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं. अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है.

183 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो (जो आस्थावान बने हो)! तुम पर (रमज़ान का) रोज़ा अनिवार्य किया गया, जिस प्रकार तुम से पहले लोगों पर अनिवार्य किया गया था, यह इसलिए की तुम अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनो. 184 गिनती के कुछ दिन. फिर तुम में जो कोई बीमार हो या सफ़र में हो तो वह दूसरे दिनों में उतनी ही संख्या पूरी कर ले. फिर जो रोज़ा रख सकते हैं (लेकिन रोजा रखना उन्हें कष्टदायी हो) तो उन पर एक रोज़े का बदला एक निर्धन (मिस्कीन) को खाना खिलाना है. और जो कोई स्वेच्छा से और अधिक पुण्य-कर्म करे तो वह उसके लिए बेहतर है. और तुम (स्वयं) रोज़ा रखो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, यदि तुम समझो.

185 रमज़ान वह महीना है जिसमें क़ुरआन उतारा गया, (ख़ुदा की ओर से) मार्गदर्शन है समस्त मानव जाति के लिए और सन्मार्ग की स्पष्ट निशानियाँ हैं और सत्य तथा असत्य के बीच अंतर करने वाली कसौटी है. तो तुम में से जो कोई इस महीने को पाए वह इस महीने में रोज़े रखे. लेकिन जो बीमार हो या यात्रा पर हो, तो वह अन्य दिनों में (रोज़ा रख

कर) उस संख्या को पूरी कर ले. अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती करना नहीं चाहता. यह (विकल्प) इसलिए रखा गया है कि तुम रोज़ों की संख्या पूरी कर लो और इस बात पर अल्लाह की महानता का वर्णन करो कि उसने तुम्हें सन्मार्ग बताया,(ऐसा करो,) ताकि तुम उसके प्रति आभार व्यक्त करने वाले बनो.

186 और जब मेरे बंदे (उपासक) तुम से मेरे बारे में पूछें तो मैं उनसे नज़दिक हूँ, (मुझे) पुकारने वाले की पुकार का उत्तर देता हूँ, जब भी वह मुझे पुकारता है. तो चाहिए कि वे मेरा हुक्म मानें और मुझ पर दृढ़तापूर्वक विश्वास रखें, ताकि वे सन्मार्ग पाएं.

187 तुम्हारे लिए रोज़े की रात में अपनी पत्नियों के पास जाना वैध (जायज़) किया गया है. वे तुम्हारे लिए वस्त्र (की तरह) हैं और तुम उनके लिए वस्त्र (की तरह) हो. अल्लाह ने जाना कि तुम अपने आप से छल कर रहे थे तो उसने तुम पर कृपा की और तुम्हें क्षमा कर दिया. तो अब तुम उनसे मिलो और चाहो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए नियत कर दिया है. और खाओ और पियो, यहाँ तक कि प्रातःकाल की सफ़ेद धारी, काली धारी से अलग हो जाए. फिर पूरा करो रोज़ा रात तक. और जब तुम मस्जिद में एतकाफ़ में हो (एतक़ाफ़ अर्थात रोज़मर्रा के जीवन से अपने आपको पूर्णता अलग करके पूर्ण समर्पण के साथ मस्जिदों में रहकर की जाने वाली इबादत) तो तुम अपनी पत्नियों के पास न जाओ. यह अल्लाह की (तुम्हारे लिए निश्चित की हुई) सीमाएं हैं, तो तुम उनके निकट न जाओ. इस तरह अल्लाह अपने संदेश लोगों के लिए स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है, ताकि लोग अल्लाह के प्रति सचेत (एवं जवाबदेह) बनें. 188 और तुम आपस में एक दूसरे की संपत्ती का अनधिकृत रूप से भक्षण न करो. और (उसको हड़पने हेतु) उस (संपत्ती विवाद) को प्रशासकों तक न ले जाओ, कि तुम दूसरों की संपत्ती का कोई भाग अन्यायपूर्वक हड़प कर सको, हालाँकि तुम उस (संपत्ती के संबंध से सत्य) को जानते हो.

189 (ऐ पैग़ंबर!) लोग तुमसे चाँद की घटती-बढ़ती शकलों के बारे में पूछते हैं. (आप) कह दीजिए कि वह (शकलें) लोगों के लिए समय (तथा तिथि) निर्धारण हेतू हैं और हज के हेतु. यह कोई सत्कर्म (नेकी) नहीं कि तुम घरों में आओ छत पर से, बल्कि सत्कर्म यह है कि आदमी अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बना रहे. घरों में उनके दरवाज़ों से आओ और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो, ताकि तुम सफलता प्राप्त करने वाले बनो. 190 और अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो जो लड़ते हैं तुमसे. और सीमा का उल्लंघन न करो, निस्संदेह अल्लाह सीमा का उल्लंघन करने वालों को पसंद नहीं करता.

191 और (जिन्होंने तुम्हारे विरुद्ध युद्ध छेड़ रखा है) उन्हें जहाँ कहीं पाओ, मार गिराओ और निकाल दो उन्हें, जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला. (याद रहे कि) फ़ितना (अर्थात उत्पीड़न) (ख़ुदा की नज़र में) हत्या करने से अधिक बुरा (कृत्य) है. और उनसे मस्जिदे-हराम (अर्थात काबा) के पास युद्ध न करो, जब तक वह तुमसे वहाँ युद्ध न छेड़ें. हाँ, अगर वह तुमसे युद्ध छेड़ें तो उन्हें मार गिराओ. यही सज़ा है सत्य का इन्कार करने वालों की. 192 फिर अगर वे बाज़ आ जाएं (अर्थात वे अपनी उपद्रवी कारवाइयों को रोक दें) तो अल्लाह सदैव क्षमाशील एवं दयावान है. 193 और उनसे युद्ध करो, यहाँ तक कि (मज़हब के आधार पर किया जाने वाला) उत्पीड़न (religious persecution) समाप्त हो जाए और मज़हब (दीन)अल्लाह का हो जाए. फिर अगर वे बाज़ आ जाएं तो उसके बाद सख़्ती नहीं, मगर सिर्फ़ अत्याचारियों पर.

194 हुरमत वाला महीना (अर्थात वह महीना जिस में युद्ध अथवा हिंसा करना निषिद्ध है) हुरमत वाले महीने का बदला है; और हुरमतों (आदर-पात्र चीज़ों) के (अनादर) का भी क़िसास (समान बदला) है. जिसने तुम पर अत्याचार किया, तो तुम भी उसके अत्याचार का उससे समान बदला ले लो. और अल्लाह से डरो और जान लो कि

अल्लाह उन लोगों के साथ है जो उसके प्रति सजग (एवं उत्तरदायी) रहते हैं. 195 और अल्लाह के मार्ग में (अपना धन) खर्च करो और (खर्च न करके) अपने आपको तबाही में न डालो. और अच्छी तरह कार्य करो, अल्लाह अच्छी तरह कार्य करने वालों को पसंद करता है.

196 और हज एवं उमरा अल्लाह के लिए पूरा करो. फिर यदि तुम रोक दिए जाओ तो जो क़ुर्बानी (बलि) का जानवर (सहजता के साथ) उपलब्ध हो, वह क़ुर्बानी के लिए प्रस्तुत कर दो. और अपने सिरों का मुंडन न कराओ, जब तक क़ुर्बानी अपने ठिकाने पर न पहुँच जाए. तुम में जो कोई बीमार हो या उसके सिर में कोई तकलीफ़ हो तो वह (सिर न मुंडवाने के एवज़) प्रतिदान दे, रोजा, सदक़ा या क़ुर्बानी का. और जब अमन की हालत हो और कोई हज के साथ उमरा का लाभ भी प्राप्त करना चाहे तो वह क़ुर्बानी प्रस्तुत करे जो उसे उपलब्ध हो. फिर जिसे उपलब्ध न हो तो वह हज के दिनों में तीन दिन के रोज़े रखे और सात दिन के रोज़े जब तुम (अपने) घरों को लौटो. यह पूरे दस हुए. यह (आदेश) उस व्यक्ति के लिए है जिसका परिवार मस्जिदे हराम (अर्थात काबा) के निकट न बसा हुआ हो. अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह (अवज्ञाकारियों को) कड़ी सज़ा देने वाला है.

197 हज के निर्धारित महीने हैं. तो जो कोई उन में हज का इरादा (निश्चय) कर ले तो फिर उसको हज के दिनों में न कोई अश्लील बात करनी है और न गुनाह एवं लड़ाई-झगड़े की बात. और जो भले कर्म तुम करोगे, अल्लाह उसको जानता है. और तुम यात्रा सामग्री (रास्ते का सामान) लो सबसे अच्छी यात्रा सामग्री ईश-भय (अर्थात अल्लाह का डर) है. ऐ बुद्धि वालो! मेरे प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनो.

198 यह कोई गुनाह की (हरज की) बात नहीं कि तुम (हज के साथ-साथ) अपने रब की कृपा तलाश करो. फिर जब तुम लोग अरफ़ात से वापस हो जाओ तो अल्लाह को

याद करो मशअरे-हराम के पास. और उसको याद करो जिस तरह उसने तुम्हें बताया है. उसके मार्गदर्शन से पहले तुम निस्संदेह भटके हुए लोगों में से थे. 199 फिर (तवाफ़ अर्थात काबे की परिक्रमा के लिए) जहाँ से सब लोग पलटते हैं वहाँ से तुम भी पलटो और अल्लाह से क्षमा-याचना करो , निस्संदेह अल्लाह अत्यंत क्षमाशील और दया करने वाला है. 200 फिर जब तुम हज की प्रक्रिया (अर्थात हज के विधि) पूरे कर लो तो अल्लाह को याद करो जिस तरह तुम पहले अपने बाप-दादा को याद करते थे, बल्कि उससे भी अधिक. लोगों में कोई आदमी ऐसा है जो कहता है, ऐ हमारे रब! हमें इसी दुनिया में दे दे, तो ऐसे आदमी का मृत्यु-पश्चात जीवन में कोई हिस्सा नहीं.

201 और लोगों में कोई ऐसा भी है जो कहता है कि ऐ हमारे रब! हमें इस दुनिया में भलाई दे और हमें मृत्यु-पश्चात जीवन में भी भलाई दे और हमें आग की यातना से

बचा. 202 ऐसे ही लोगों के लिए हिस्सा है उनके किए का और अल्लाह शीघ्र ही हिसाब लेने वाला है. 203 और अल्लाह को याद करो (हज के इन) निर्धारित दिनों में. फिर जो व्यक्ति जल्दी करे और दो दिन में (मिना से) मक्का वापस आ जाए तो उस पर कोई गुनाह नहीं. और जो व्यक्ति (कुछ देर) ज़्यादा रुक कर वापस आए उस पर भी कोई गुनाह नहीं. यह उसके लिए है जो अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहे. और तुम अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो और ख़ूब जान लो कि तुम (एक दिन)उसके पास जमा किए जाओगे.

204 और लोगों में कोई ऐसा भी है कि उसकी बात इस सांसारिक जीवन में तुम्हें भली प्रतीत होती है. और वह अपने दिल की बात पर अल्लाह को गवाह बनाता है. हालाँकि वह बहुत झगड़ालू है.

205 और जब वह (सत्य की ओर) पीठ फेरता है तो वह इस प्रयास में होता है कि पृथ्वी पर उपद्रव फैलाए और खेतों तथा जानों को नष्ट करे, हालाँकि अल्लाह उपद्रव को पसंद नहीं करता.

206 और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो प्रतिष्ठा की भावना उसको गुनाह पर (असत्य पर) जमा देती है तो ऐसे व्यक्ति के लिए जहन्नम पर्याप्त है. और वह बहुत बुरा ठिकाना है.

207 और लोगों में कोई ऐसा भी है जो अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अपना सारा जीवन समर्पित कर देता है. अल्लाह अपने बंदों पर अपार कृपा करने वाला है.

208 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! इस्लाम में पूरी तरह से दाख़िल हो जाओ (अर्थात अल्लाह की इच्छा को पूर्णतः समर्पित हो जाओ) और शैतान के पद-चिन्हों पर मत चलो. निस्संदेह, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है (अर्थात वह दुश्मन के सिवा और कुछ नहीं है). 209 यदि तुम (सत्य के) इन स्पष्ट प्रमाणों के बाद जो तुम्हारे पास आ चुके हैं (सत्य

से) विचलित हो गए तो जान रखो अल्लाह प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है. 210 क्या लोग इस प्रतीक्षा में है कि अल्लाह (स्वयं) बादलों की छाया में आए और उसके साथ फरिश्ते भी आएँ और मामले का फ़ैसला कर दिया जाए. और सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटाए जाते हैं. 211 इसराईल की संतान से पूछो हमने उन्हें कितनी खुली-खुली निशानियाँ दीं. और जो कोई अल्लाह की नेमत को बदल डाले, जबकि वह उसके पास आ चुकी हो तो निस्संदेह अल्लाह (ऐसे अपराधियों को) कड़ी सज़ा देने वाला है. 212 जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया उनके लिए इस दुनिया की ज़िंदगी को मनमोहक बना दिया गया. और वे ईमान लाने वाले लोगों पर हँसते हैं. लेकिन जो लोग अल्लाह के प्रति सजग (परहेज़गार) हैं वे क़यामत के दिन उन (इन्कार करने वालों) की तुलना में उच्च स्थान पर होंगे. और अल्लाह जिसे चाहता है उदारतापूर्वक (बेहिसाब) जीविका प्रदान करता है.

213 (मानवजाति के आरंभ काल में) सारे लोग (विभिन्न संप्रदायों से मुक्त) एक ही उम्मत (समुदाय) थे (फिर उन्होंने आपस में मतभेद किया) तो अल्लाह ने पैग़ंबरों को भेजा शुभ-सूचना देने वाले और चेतावनी देने वाले बनाकर. और उनके साथ उतारी किताब सत्य के साथ, ताकि वह फ़ैसला कर दे उन बातों का जिनमें लोग मतभेद कर रहे हैं. और यह मतभेद उन्हीं लोगों ने किए जिन्हें सत्य का ज्ञान दिया गया था. बाद इसके कि उनके पास स्पष्ट रूप में मार्गदर्शन आ चुका था, (फिर भी उन्होंने मतभेद किया) सिर्फ़ आपस की हठधर्मी (दुराग्रह) के कारण. तो अल्लाह ने अपनी कृपा से सत्य के मामले में ईमान वालों को मार्ग दिखाया जिसमें वह मतभेद कर रहे थे. अल्लाह जिसको चाहता है सीधा मार्ग दिखा देता है.

214 क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम यूँ ही जन्नत में दाख़िल हो जाओगे जबकि तुम पर अभी वह परिस्थितियाँ गुज़री ही नहीं जो तुमसे पहले के लोगों पर गुज़री

थीं. उन्हें कठिनाई और पीड़ा पहुँची और वे हिला दिए गए, यहाँ तक पैग़ंबर और उसके साथ ईमान लाने वाले पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी.(तब उन्हें कहा गया) हाँ, अल्लाह की मदद क़रीब है (बस आने को है).

215 लोग तुमसे पूछते हैं कि वह क्या खर्च करें. (पैग़ंबर!) आप कह दीजिए, जो धन तुम खर्च करो तो उसमें अधिकार है तुम्हारे माता-पिता का और संबंधियों का और अनाथों का और निर्धनों का और मुसाफ़िरों का. और जो भी सत्कर्म तुम करोगे, अल्लाह उसे ख़ूब जानता है. 216 (ऐ ईमान वालो!) (रक्षात्मक) युद्ध करना तुम्हारा कर्तव्य ठहराया गया है, जबकि वह तुम्हें अप्रिय लगता है. हो सकता है कि तुम एक चीज़ को नापसंद करो जबकि वह तुम्हारे लिए भली हो. और हो सकता है कि तुम एक चीज़ को पसंद करो, जबकि वह तुम्हारे लिए बुरी हो. अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते.

217 (पैग़ंबर!) लोग तुमसे हुरमत वाले महीने (अर्थात वह महीना जिस में युद्ध एवं हिंसा निषिद्ध है) के संबंध में पूछते हैं कि उसमें युद्ध करना कैसा है. कह दो, उसमें युद्ध करना बहुत बुरा है. लेकिन अल्लाह के मार्ग से रोकना और अल्लाह का इन्कार करना और मस्जिदे हराम (अर्थात काबा) में जाने से लोगों को रोकना और (मक्का के) लोगों को वहाँ से निकालना अल्लाह की दृष्टि में इससे भी अधिक बुरा है. और उत्पीड़न करना, हत्या करने से भी ज़्यादा बुरा कृत्य है. और यह (सत्य का इन्कार करने वाले) लोग तुमसे लड़ने से बाज़ नहीं आएंगे (अर्थात वे तुमसे निरंतर लड़ते रहेंगे), यहाँ तक कि अगर तुम पर क़ाबू पाएँ तो तुम्हें अपना मज़हब त्यागने लगाएंगे. और तुममें से जो कोई अपने मज़हब को त्याग देगा और सत्य के इन्कार पर मरेगा तो ऐसे लोगों के कर्म नष्ट हो गए, इस दुनिया में भी और मृत्यु-पश्चात दुनिया में भी. और यही लोग (जहन्नम की) आग में पड़ने वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे.

218 और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने (अल्लाह के मार्ग में) अपना घर-बार छोड़ा (अर्थात हिजरत की) और अल्लाह के मार्ग में अपने प्रयत्नों की पराकाष्ठा की (अर्थात जिहाद किया). यही लोग अल्लाह से कृपा की अपेक्षा रखते हैं. और अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है.

219 (पैग़ंबर!)लोग तुम से शराब और जुवे के बारे में पूछते हैं.(आप) कह दीजिए, इन दोनों चीज़ों में बड़ा पाप है, यद्यपि इनमें लोगों के लिए कुछ लाभ भी हैं, लेकिन उनका नुक़सान (अर्थात पाप) बहुत अधिक है उनके लाभ से.

और लोग तुम से पूछते हैं कि (अल्लाह के मार्ग में) क्या खर्च करें? कह दो, जो तुम्हारी आवश्यकता से अधिक (surplus) हो. इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने संदेश स्पष्ट करता है, ताकि तुम चिंतन करो,
220 वर्तमान दुनिया और मृत्यु-पश्चात दुनिया दोनों के बारे में. और (ऐ पैग़ंबर!) लोग तुम से अनाथों के बारे में पूछते हैं, कह दो, जिसमें उनकी भलाई हो (उनके संबंध से) उसी को अपनाना बेहतर है. यदि तुम उन्हें अपने साथ शामिल कर लो तो वे तुम्हारे भाई ही हैं. और अल्लाह जानता है कि कौन बिगाड़ करने वाला है और कौन सुधार करने वाला. अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें मुसीबत में डाल देता. निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है.

221 उन औरतों से विवाह न करो जो दूसरों को अल्लाह का साझीदार ठहराती हैं (अर्थात बहुदेववादी औरतें) उस वक़्त तक नहीं, जब तक वे ईमान न लाएँ. एक ईमान वाली (अर्थात अल्लाह को मानने वाली) दासी अधिक अच्छी है एक बहुदेववादी (आज़ाद) औरत से, यद्यपि वह तुम्हें अच्छी लगती हो. और (ऐ ईमान वालो!) अपनी औरतों का विवाह उन पुरुषों से मत करो जो दूसरों को अल्लाह का साझीदार ठहराते हैं (अर्थात बहुदेववादी पुरुष),जब तक वे ईमान न लाएँ. (विवाह करने के लिए) ईमान

लाया हुआ ग़ुलाम अधिक अच्छा है, ईमान न लाए हुए आज़ाद व्यक्ति से, यद्यपि वह तुम्हें अच्छा लगता हो.
ये (बहुदेववादी) लोग (इंसानों को) आग की ओर बुलाते हैं और अल्लाह (इंसानों को) जन्नत (प्राप्ति) तथा क्षमा-प्राप्ति की ओर बुलाता है. वह अपने संदेश लोगों के लिए स्पष्ट रूप से बयान करता है, ताकि वे उपदेश ग्रहण करें.

222 और वह तुमसे (स्त्रियों के) मासिक स्राव के संबंध में पूछते हैं. कह दो कि वह एक गंदगी की अवस्था है. उस अवस्था में तुम औरतों से अलग रहो. जब तक वे पाक-साफ़ न हो जाएँ, उनके निकट न जाओ. फिर जब वे अच्छी तरह पाक-साफ़ हो जाएं तो उनके पास जाओ, जिस तरह जाने का अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है. अल्लाह पसंद करता है क्षमा-याचना करते हुए (सन्मार्ग की ओर) पलटने वालों को और वह पसंद करता है पाक-साफ़ रहने वालों को. 223 तुम्हारी औरतें तुम्हारे लिए खेती की तरह हैं. तो अपनी खेती में जिस तरह चाहो, जाओ और अपने लिए (सत्कर्मों को) आगे भेजो और अल्लाह के प्रति (हमेशा) सचेत (एवं जवाबदेह) रहो और जान लो कि तुम्हें अवश्य उससे मिलना है. और ईमान वालों को शुभ-सूचना दे दो.

224 और अल्लाह के नाम को ऐसी क़समें खाने के लिए इस्तेमाल न करो कि (उसको) बहाना बनाकर तुम भले काम करने से रुक जाओ और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) न रह पाओ और (परिणाम-स्वरूप) लोगों के बीच सुलह-समझौता न कराओ. अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला है. 225 अल्लाह तुम्हारी (बिना सोचे-समझे) खाई हुई क़समों पर तुम्हें नहीं पकड़ता, लेकिन वह तुम्हें उस काम पर पकड़ता है जो तुम दिल में निश्चय करके करते हो. और अल्लाह क्षमाशील एवं सहनशील है. 226 जो लोग अपनी औरतों से न मिलने की क़सम खा लें, तो उनके लिए चार महीने तक का अवसर है. फिर यदि वह (अपनी पत्नी की ओर) लौट आएं तो

अल्लाह क्षमा करने वाला और दयावान है. 227 और यदि वे तलाक़ का फ़ैसला करें तो (वह यह जान लें कि) निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है. 228 और तलाक़ दी हुई औरतें तीन बार मासिक-स्त्राव आने तक अपने आपको रोके रखें. और यदि वह अल्लाह पर और मृत्यु-पश्चात जीवन पर विश्वास रखती हैं तो उनके लिए उचित (जायज़) नहीं कि वे उस चीज़ को छिपाएं जो अल्लाह ने सृजित की उनके पेट में और इस कालावधि में उनके पति उन्हें फिर से (पत्नी के रूप में) वापस लौटा लेने का अधिकार रखते हैं, यदि वह संबंधों को ठीक करना चाहें. और उन औरतों के लिए जिस प्रकार सामान्य नियम के अनुसार कुछ अधिकार हैं, उसी सामान्य नियम के अनुसार उन पर दायित्व हैं, लेकिन पुरुषों को उन पर एक दर्जा प्राप्त है. अल्लाह प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है.

229 तलाक़ दो बार है. फिर उचित रीति से (पत्नी को) रख लेना है या अच्छे ढंग से विदा कर देना. और तुम्हारे लिए यह बात किसी भी तरह उचित (जायज़) नहीं कि तुमने जो कुछ उन औरतों को दिया है, उसमें से कुछ ले लो, सिवाय इसके कि दोनों को यह आशंका हो कि वे अल्लाह की सीमाओं पर जमे न रह सकेंगे (तो ऐसी परिस्थिती इस संबंध में अपवाद हो सकती है). फिर यदि तुम्हें यह आशंका हो कि वे अल्लाह की सीमाओं का पालन न कर सकेंगे, तो जो-कुछ देकर पत्नी (अपने पति से) छुटकारा प्राप्त करना चाहे तो उसमें उन दोनों के लिए कोई दोष नहीं. यह अल्लाह की (निर्धारित की हुई) सीमाएँ हैं. तो उनका उल्लंघन मत करो. जो कोई अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करे तो ऐसे ही लोग अत्याचारी हैं. 230 फिर अगर पति (पत्नी को अंततःतीसरी बार) तलाक़ दे दे तो उसके बाद वह औरत उसके लिए वैध (हलाल) नहीं, जब तक कि वह किसी दूसरे मर्द से विवाह न करे. फिर यदि (ऐसी परिस्थिती उत्पन्न होती हो कि) वह (दूसरा) पति भी उसको तलाक़ दे दे, तब उन दोनों पर (अर्थात पूर्व-पति एवं पूर्व-पत्नी पर) इस बारें में

कोई दोष नहीं कि वे (पुनर्विवाह करके) एक-दूसरे की ओर फिर से लौट आएं, लेकिन इस शर्त पर कि उन्हें यह विश्वास हो कि वे अल्लाह की (निर्धारित की हुई) सीमाओं का पालन करेंगे. यह अल्लाह की (निर्धारित की हुई) सीमाएं हैं, जिन्हें वह ज्ञान रखने वाले लोगों के लिए स्पष्ट रूप से बयान कर रहा है. 231 जब तुम औरतों को तलाक़ दे दो और वे निर्धारित प्रतीक्षा-काल (अर्थात इद्दत) तक पहुँच जाएं तो उन्हें या तो उचित रीति से रोक लो अथवा उन्हें उचित रीति से विदा कर दो. उन्हें कष्ट पहुँचाने के उद्देश्य से न रोको कि तुम उन पर अत्याचार करो. और जो ऐसा करेगा उसने अपना ही बुरा किया. तुम अल्लाह के संदेशों से उपहास न करो और याद करो अल्लाह के उन उपकारों को जो उसने तुम पर किए हैं. और (दृढ़तापूर्वक पकड़े रहो) उस ग्रंथ एवं विवेकपूर्ण ज्ञान को जो तुम्हारे प्रबोधन (नसीहत) के लिए उसने अवतरित किया है. और अल्लाह के प्रति (हमेशा) सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है.

232 और जब तुम अपनी औरतों को तलाक़ दे चुको और वे अपना प्रतीक्षा-काल (अर्थात इद्दत) पूरी कर लें तो फिर उन्हें अपने (नये) पतियों से विवाह करने से न रोको, जबकि वे सामान्य नियम के अनुसार (विवाह करने हेतू) आपस में सहमत हो जाएं. यह उपदेश दिया जाता है तुम में से हर उस व्यक्ति को जो अल्लाह पर और मृत्यु-पश्चात जीवन पर विश्वास रखता है. यह तुम्हारे लिए पाक एवं सुथरा तरीक़ा है. अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते.233 और (तलाक़शुदा) माताएँ अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष तक स्तनपान कराएँ (अर्थात दूध पिलाएँ). यह (उपदेश) उन लोगों के लिए है जो पूरी मुद्दत तक स्तनपान कराना चाहते हों. और जिसका बच्चा है (अर्थात बच्चे के पिता पर) सामान्य नियम के अनुसार उन माताओं के खाने और कपड़े का दायित्व है. किसी पर बोझ नहीं डाला जाता, लेकिन उसकी क्षमता के अनुसार. न किसी माँ को उसके बच्चे के

कारण कष्ट दिया जाए और न किसी पिता को उसके बच्चे के कारण कष्ट दिया जाए. और यही दायित्व उत्तराधिकारी पर भी है (अर्थात बच्चे के बाप की मृत्यु होने पर जो भी बच्चे का अभिभावक होगा उस पर भी यही दायित्व है). लेकिन दोनों पक्ष परस्पर सहमती एवं परामर्श से (दो वर्ष से पूर्व ही) बच्चे का दूध छुड़ाना चाहे तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं. और यदि तुम अपने बच्चे को किसी और से दूध पिलाना चाहो, तब भी तुम्हारे ऊपर कोई दोष नहीं. सिर्फ़ शर्त यह है कि तुम रीति के अनुसार उसे वह अदा कर दो जो कुछ (मुआवज़ा) देने का तुमने निश्चित किया था. और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो और जान रखो कि जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसको देख रहा है.

234 तुममें से जिन लोगों की मृत्यु हो जाए और जो अपने पीछे अपनी पत्नियाँ छोड़ जाएँ. तो उन (विधवा) पत्नियों को चाहिए कि वे अपने आपको चार महीने दस दिन तक रोके रखें. फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुँचे तो जो कुछ वे अपने बारे में रीति के अनुसार करें, उसका तुम पर कोई गुनाह नहीं. और तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उसको जानता है. 235 और तुम्हारे लिए इस बात में कोई गुनाह नहीं कि इन (विधवा) औरतों को (विवाह का) संदेश किसी संकेत के रूप में दो या (उनसे विवाह करने की इच्छा को) अपने दिल में छिपाए रखो. अल्लाह जानता है कि उनका विचार तुम्हारे दिल में अवश्य आएगा. लेकिन ख़ुफ़िया तौर पर उन्हें (विवाह) का वचन न दो, मगर तुम उनसे सामान्य रीति के अनुसार कोई बात कह सकते हो. और उनसे विवाह करने का निश्चय उस समय तक न करो जब तक निर्धारित अवधी (इद्दत) पूरी न हो जाए. और (यह वास्तविकता) जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है. तो उसके प्रति (हमेशा) सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो और जान लो कि अल्लाह क्षमाशील एवं सहनशील है. 236 यदि तुम औरतों को ऐसी स्थिती में तलाक़ दो कि उन्हें न तुमने हाथ लगाया है और न उनके लिए कुछ महर निर्धारित किया है, तो इस संबंध में तुम पर कोई दोष नहीं. हाँ, उन्हें

रीति के अनुसार कुछ सामान दे दो. समृद्ध व्यक्ति अपने सामर्थ्य के अनुसार दे और गरीब अपने सामर्थ्य के अनुसार दे. यह नेकी करने वालों पर अनिवार्य है. 237 और यदि तुम उन्हें तलाक़ दो, इससे पहले कि उन्हें हाथ लगाओ और तुम यदि उनके लिए महर निश्चित कर चुके थे, तो ऐसी स्थिती में तुमने जितना महर निश्चित किया था उसका आधा अदा कर दो. यह और बात है कि वे (औरतें महर न लें और) माफ़ कर दें या वह पुरुष जिसके हाथ में विवाह की बागडोर है, माफ़ कर दे(अर्थात पूरा महर दे दे). तुम्हारा माफ़ कर देना ख़ुदा के प्रति (तुम्हारी) सजगता (एवं उत्तरदायित्व) के भाव से अधिक निकट है. और आपस में सद्व्यवहार (एवं परोपकार) करना न भूलो. जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है.

238 सतर्कता के साथ नमाज़ों को पूरा करो; और (विशेष रूप से) बीच की नमाज़ को और अल्लाह के सामने समर्पण एवं विनय-भाव के साथ खड़े हो. 239 (अशांत स्थिति के चलते) यदि तुम्हें किसी ख़तरे की आशंका हो तो पैदल या सवारी पर नमाज़ पढ़ लो. फिर जब शांती की स्थिति आ जाए तो अल्लाह को उस तरीक़े से याद करो जो उसने तुम्हें सिखाया है, जिसको तुम पहले नहीं जानते थे.

240 और तुममें से जो लोग मर जाएं और (अपने पीछे) पत्नियाँ छोड़ रहे हों, तो वह अपनी पत्नियों के संबंध से वसीयत कर दें (अपने इच्छा-पत्र में लिख दें) कि एक वर्ष तक उन्हें घर में रखकर (ज़रूरते-ज़िंदगी का) खर्च दिया जाए. फिर यदि वह स्वयं घर छोड़ दें, तो जो कुछ वह अपने संबंध में रीति के अनुसार करें, उसका तुम पर कोई दोष नहीं. अल्लाह सर्वशक्तिमान एवं बुद्धिमान है. 241 और तलाक़ दी हुई औरतों को भी उचित ढंग से कुछ-न-कुछ देकर विदा किया जाए. यह अनिवार्य है उन लोगों के लिए जो अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) हैं. 242 इस तरह अल्लाह अपने आदेश स्पष्ट रूप से बयान करता है, ताकि तुम अपनी बुद्धि से काम लो.

243 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से मौत के डर से भाग खड़े हुए और वे हजारों की संख्या में थे? अल्लाह ने उनसे कहा कि मर जाओ फिर अल्लाह ने उन्हें (दोबारा) जीवित किया. निस्संदेह! अल्लाह लोगों पर दया करने वाला है. लेकिन अधिकतर लोग (अल्लाह के प्रति) आभार व्यक्त नहीं करते. 244 और अल्लाह के मार्ग में (रक्षात्मक) युद्ध करो. तथा ख़ूब जान रखो कि अल्लाह सब कुछ सुनने वाला है और सब कुछ जानने वाला है. 245 कौन है तुममें जो अल्लाह को उत्तम ऋण दे कि अल्लाह उसको बढ़ा कर उसके लिए कई गुना कर दे. अल्लाह ही (तुम पर) निर्धनता (तंगी) की अवस्था लाता है और वही (तुम्हें) संपन्नता प्रदान करता है. और (अंततः) तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे.

246 क्या तुमने उन सरदारों के संबंध में नहीं जाना जो मूसा के बाद इसराईल की संतान में से थे. उन्होंने अपने पैग़ंबर से कहा कि हमारे लिए एक राजा (शासक) नियुक्त कर दीजिए, ताकि हम अल्लाह के मार्ग में लड़ें. (इस पर) पैग़ंबर ने उत्तर दिया, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें युद्ध का आदेश दिया जाए, फिर तुम न लड़ो. उन्होंने कहा, भला यह कैसे हो सकता है कि हम न लड़ें अल्लाह के मार्ग में, जबकि हमें अपने घरों से निकाला गया है और हमें अपने बाल-बच्चों से जुदा किया गया है. लेकिन जब उन्हें युद्ध का आदेश हुआ तो थोड़े लोगों के सिवा सब (उस आदेश से) विमुख हो गए. और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है. 247 उनके पैग़ंबर ने उनसे कहा, अल्लाह ने तालूत को तुम्हारे लिए बादशाह (शासक) नियुक्त किया है. उन्होंने कहा, उसको हमारे ऊपर शासन करने का अधिकार कैसे मिल सकता है, जबकि शासन करने के लिए उसकी तुलना में हम अधिक पात्र हैं. इसी तरह वह कोई अति धन-संपन्न व्यक्ति नहीं है. (इस पर) पैग़ंबर ने कहा, अल्लाह ने तुम्हारे मुक़ाबले में तालूत को चुना है. और उसको ज्ञान तथा शारीरिक सामर्थ्य में (तुमसे अधिक) श्रेष्ठता प्रदान की है. और अल्लाह जिसके

लिए चाहता है अपना राज्य (अर्थात शासन करने का अधिकार) प्रदान करता है. अल्लाह सब पर नियंत्रण रखने वाला (अर्थात समस्त सृष्टि का नियंत्रक) है और सब कुछ जानने वाला (अर्थात सर्वज्ञानी) है. 248 और उनके पैग़ंबर ने उनसे कहा कि तालूत के बादशाह नियुक्त होने की निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह संदूक़ आ जाएगा जिसमें तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे लिए मन की शांति का सामान है और उसमें मूसा और हारून के अनुयायियों की छोड़ी हुई स्मृतियाँ (अर्थात यादगार चीज़ें) हैं. इस संदूक़ को फ़रिश्ते ले आएंगे. उसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है, यदि तुम विश्वास रखने वाले हो.

249 फिर जब तालूत अपनी सेनाओं को लेकर चला तो उसने कहा, अल्लाह एक नदी के माध्यम से अवश्य तुम्हारी परीक्षा लेने वाला है, तो जिसने उसका पानी पिया, वह मेरा साथी नहीं. जो उसको न चखे, वही मेरा साथी है. मगर यह कि कोई अपने हाथ से एक-आध चुल्लू भर ले (तो उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं,) लेकिन थोड़े लोगों के सिवा सब ने उस नदी से ख़ूब पानी पिया. फिर जब तालूत और जो उसके साथ ईमान पर जमे थे, नदी पार चुके तो वह लोग बोले (जिन्होंने उस नदी से ख़ूब पानी पिया था) कि आज हममें जालूत और उसकी सेनाओं से लड़ने की शक्ति नहीं. लेकिन जो लोग यह जानते थे कि वह अल्लाह से मिलने वाले हैं, उन्होंने कहा, कई बार ऐसा हुआ है कि छोटे समूह अल्लाह के आदेश से बड़े समूह पर विजय प्राप्त कर चुके हैं. और अल्लाह उन लोगों के साथ है जो धैर्य का परिचय देते हैं.

250 और जब जालूत तथा उसकी सेनाओं से (दृढ़ता का परिचय देने वाले) ईमान वालों का सामना हुआ तो उन्होंने (ख़ुदा से) दुआ की, ऐ हमारे रब! तू हमें अधिक से अधिक धैर्य प्रदान कर और हमारे क़दमों को (तेरे मार्ग में) स्थैर्य प्रदान कर और उन लोगों के विरुद्ध हमें तेरी ओर से सहायता प्रदान कर जो सत्य को नकारते हैं. 251 फिर उन्होंने (अर्थात ईमान वालों ने) अल्लाह के आदेश से (उन सत्य नकारने वालों) को पराजित किया और दाऊद ने जालूत को मार डाला. और अल्लाह ने दाऊद को हुकुमत एवं

हिकमत (सत्ता एवं बुद्धिमानी) प्रदान की और जिन-जिन चीज़ों का चाहा उसको ज्ञान प्रदान किया. और यदि अल्लाह कुछ लोगों के द्वारा दूसरे कुछ लोगों को हटाता न रहे (अर्थात अल्लाह की ऐसी नीति न होती) तो धरती उपद्रव से भर जाती. लेकिन अल्लाह संसार वालों पर अत्यंत कृपाशील है.

252 यह अल्लाह के संदेश हैं, जो हम तुम्हें सुना रहे हैं, सत्य के साथ (अर्थात सत्य स्पष्ट करने हेतु) और (ऐ मुहम्मद!) इस में कुछ संदेह नहीं कि तुम पैग़ंबरों में से हो.

253 उन पैग़ंबरों में हमने कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता प्रदान की, उनमें कोई ऐसा भी था जिससे स्वयं अल्लाह ने बात की और उनमें से कुछ पैग़ंबरों को (परिस्थितियों के अनुरूप कुछ मामलों में) उच्च स्थान प्रदान किए. और हमने मरियम-पुत्र ईसा को सत्य के स्पष्ट प्रमाण प्रदान किए (अर्थात खुली निशानियाँ दी) और हमने ईसा की सहायता रूहुल-क़ुदुस (अर्थात उच्च दर्जा प्राप्त फ़रिश्ते) के द्वारा की.

अल्लाह यदि चाहता तो बाद के लोग उनके पास सत्य के स्पष्ट प्रमाण आ चुकने के बाद आपस में न लड़ते, लेकिन उन्होंने (आपस में) मतभेद किया उनमें से कोई ईमान लाया और किसी ने सत्य का इन्कार किया. यदि अल्लाह चाहता तो वे (आपस में कदापि) न लड़ते. लेकिन अल्लाह करता है जो वह चाहता है.

254 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! हमने तुम्हें जो कुछ धन-सामग्री प्रदान की है उसमें से (अल्लाह को प्रसन्न करने वाले कार्यों में) खर्च करो. उस दिन के आने से पहले जिस में न किसी प्रकार का व्यापारिक लेन-देन होगा और उस दिन न कोई मित्रता काम आएगी और न कोई मध्यस्थता (सिफ़ारिश) काम आएगी. जो लोग सत्य का इन्कार करते हैं, वही अत्याचारी हैं.

255 अल्लाह वह है जिस के सिवा दूसरा कोई भी पूजा के योग्य नहीं. वह निरंतर जिवंत है(अर्थात अनादि-अनंत अस्तित्वमान है). वह संपूर्ण सृष्टी को (बनाने वाला एवं)

संभालने वाला है. उसे न नींद आती है और न ऊँघ आती है. ज़मीन और आसमानों में जो कुछ है सब उसी का है. कौन है जो उसकी अनुमति के बिना उसके यहाँ सिफ़ारिश कर सके. वह जानता है जो लोगों के सामने है और वह उसे भी जानता है जो उनसे ओझल (अदृश्य) है. और वे उसके ज्ञान में से कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते, सिवाय इसके कि किसी चीज़ का ज्ञान वह स्वयं ही उनको देना चाहे. उसकी सत्ता आसमानों एवं ज़मीन पर (अर्थात समस्त सृष्टी पर) छाई हुई है, वह (समस्त सृष्टी) को थामने से (कदापि) नहीं थकता. वही है (अकेला) सर्वोच्च और वही है (अकेला) महिमावान!

256 मज़हब (दीन) के संबंध में किसी प्रकार की ज़बरदस्ती नहीं. सन्मार्ग, पथभ्रष्टता से अलग हो चुका है. अब जो कोई शैतान का इन्कार करे और अल्लाह पर ईमान लाए, तो उसने ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटने वाला नहीं. अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और सर्वज्ञानी है.

257 अल्लाह उन लोगों का संरक्षक-मित्र है जो ईमान लाए. वह उन्हें अँधेरों से निकाल कर उजाले की ओर लाता है. और जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया उनके मित्र शैतान हैं. वह उन्हें उजाले से निकाल कर अँधेरों की ओर ले जाते हैं. यह आग में जाने वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे.

258 क्या तुमने उस व्यक्ति के बारे में नहीं सुना, जिसने इब्राहीम से उसके रब के बारे में वादविवाद किया. क्योंकि अल्लाह ने उसको सत्ता प्रदान की थी. जब इब्राहीम ने कहा, मेरा रब वह है, जो जीवन तथा मृत्यु देता है. (इस पर) उस ने कहा, मैं भी जीवन तथा मृत्यु देता हूँ. फिर इब्राहीम ने कहा, अल्लाह सूरज को पूरब से निकालता है, तू उसको पश्चिम से निकाल दे. इस पर वह सत्य का इन्कारी हक्का-बक्का रह गया. और अल्लाह अत्याचारियों को मार्ग नहीं दिखाता.

259 अथवा (तुमने) उस व्यक्ति जैसा (कोई देखा है) जो एक बस्ती से गुज़रा और वह बस्ती अपनी छतों पर औंधी गिरी पड़ी थी. उसने कहा, यह आबादी जो नष्ट हो चुकी है, इसको अल्लाह दोबारा किस प्रकार जीवित करेगा. (इस पर) अल्लाह ने उसे सौ वर्ष तक मौत दे दी, फिर (सौ वर्ष पश्चात) उसे पुनर्जीवित किया. अल्लाह ने पूछा, तुम कितने समय तक इस स्थिती में रहे? उसने कहा, एक दिन या एक दिन से कुछ कम. अल्लाह ने कहा नहीं, बल्कि तुम (मृत-अवस्था में) सौ वर्ष रहे हो. अब तुम अपने खाने-पीने की चीज़ों को देखो कि वह सड़ी नहीं हैं और अपने गधे को देखो. (हमने तुम्हारे साथ यह इसलिए किया,) ताकि हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दें. और हड्डियों की ओर देखो, किस तरह हम उनका ढाँचा खड़ा करते हैं, फिर उन पर माँस चढ़ाते हैं. जब उस पर यह स्पष्ट हो गया तो उसने कहा, मैंने (अब) जाना है कि निस्संदेह, अल्लाह सब कुछ करने की क्षमता रखता है. 260 और जब इब्राहीम ने कहा कि ऐ मेरे रब! मुझको दिखा दे कि तू मुर्दों को किस प्रकार जीवित करेगा. अल्लाह ने कहा, क्या तुम्हें (इस पर) विश्वास नहीं? इब्राहीम ने कहा, क्यों नहीं, लेकिन इसलिए कि मेरे दिल को संतुष्टि मिल जाए. अल्लाह ने कहा, चार पक्षी लो और उनको अपने साथ मानुस कर लो (अर्थात उन्हें तुम्हारी आज्ञा का पालन करना सिखाओ), फिर उनमें से हर एक को अलग-अलग पहाड़ी पर रख दो, फिर उन्हें पुकारो. वह तुम्हारे पास दौड़ते हुए चले आएंगे. और जान लो कि अल्लाह प्रभुत्वशाली और बुद्धिमान है.

261 और जो लोग अपना धन अल्लाह के मार्ग में खर्च करते हैं, उनका उदाहरण ऐसा है, जैसे एक दाना हो जिससे सात बालियाँ पैदा हों, हर बाली में सौ दाने हों. और अल्लाह (अधिकाधिक) बढ़ाता है जिसके लिए चाहता है. अल्लाह अत्यंत उदार है तथा सर्वज्ञानी है. 262 जो लोग अपना धन अल्लाह के मार्ग में खर्च करते हैं. फिर खर्च करने के बाद न तो एहसान (उपकार) जताते हैं और न कष्ट पहुँचाते हैं. उनके लिए उनके रब के पास (अच्छा) बदला है और वे (वहाँ) न कभी भयग्रस्त होंगे और न वह दुःखी होंगे.

263 भली बात कहना और क्षमा से काम लेना उस दानकार्य से बेहतर है, जिसके बाद कष्ट देना हो. अल्लाह निस्पृह है और सहनशील है. 264 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! (उपकार करने के बाद) उपकार जता कर और कष्ट पहुँचा कर अपने दान-कार्य को उस व्यक्ति की तरह नष्ट न करो जो अपना धन दिखावे के लिए खर्च करता है और वह अल्लाह पर और मृत्यु-पश्चात जीवन पर विश्वास नहीं रखता. तो इस प्रकार के व्यक्ति (के खर्च) का उदाहरण ऐसा है, जैसे एक चट्टान हो, जिस पर कुछ मिट्टी हो, फिर उस पर मुसलाधार वर्षा हो और वह उसको पूर्णतः साफ़ कर दे. ऐसे लोगों को अपनी कमाई कुछ भी हाथ न लगेगी. और अल्लाह सत्य का इन्कार करने वालों को मार्ग नहीं दिखाता.

265 लेकिन इसके विपरीत जो लोग अपना धन अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करते हेतु और अपने आपको (ईश-प्रसन्नता के मार्ग पर दृढ़तापूर्वक) जमा देने हेतु खर्च करते हैं, उनका उदाहरण उस बाग़ के समान है जो उँचे स्थान पर हो, जिस पर ज़ोर की वर्षा हुई तो वह दुगना फल लाया. और यदि ज़ोर की वर्षा न भी हो, तो हल्की फुहार ही पर्याप्त है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है. 266 क्या तुममें से कोई यह पसंद करेगा कि उसके पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, उसके पास से नहरें बहती हों (जिससे वह सिंचित होता हो) उसमें उसके लिए हर प्रकार के फल हों और वह (अर्थात उस बाग़ का मालिक) बूढ़ा हो जाए और उसके बच्चे अभी कमज़ोर हों. तब उस बाग़ पर एक ऐसा चक्रवात आए जिसमें आग हो और वह बाग़ (चक्रवात की चपेट में आकर) जल जाए. इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी निशानियाँ स्पष्ट रूप में बयान करता है, ताकि तुम (उन पर) चिंतन करो.

267 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! (हमारे मार्ग में) खर्च करो, अच्छी चीज़ें उसमें से जो कुछ तुमने कमाया है और जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाला है. और बेकार (तथा घटिया) चीज़ का इरादा न करो कि उसमें से खर्च करो. हालाँकि तुम कभी उस

(घटिया चीज़) को अपने लिए लेने वाले नहीं. (अगर कभी) लेंगे तो बड़े ही नागवारी के साथ लेंगे. और जान लो कि अल्लाह निस्पृह (तथा आत्मनिर्भर) है और केवल वही स्तुति के योग्य है. 268 शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है और अश्लीलता की प्रेरणा देता है. लेकिन अल्लाह तुम्हें अपनी कृपा प्रदान करने का और तुम्हें क्षमादान देने का वादा करता है. अल्लाह असीम है, सर्वज्ञानी है. 269 अल्लाह जिसको चाहता है बुद्धिमानी (अर्थात चीज़ों की हक़ीक़त जान लेने की योग्यता) प्रदान करता है और जिसको बुद्धिमानी प्रदान की गयी उसको बहुत बड़ी दौलत मिल गयी. और वही लोग उपदेश ग्रहण करते हैं जो सूझ-बूझ वाले हैं.

270 और तुम जो खर्च करते हो और जो मन्नत मानते हो अल्लाह उसको भली-भाँति जानता है. और अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं. 271 जो दान तुम देते हो वह खुले रूप से दो, तब भी अच्छा है और यदि तुम उसे छिपाकर निर्धन (ज़रूरतमंद) लोगों को दो तब यह तुम्हारे लिए और भी अधिक अच्छा है. (इस प्रकार) अल्लाह तुम्हारे पाप-कर्मों को तुमसे दूर कर देगा. और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसको जानता है. 272 लोगों को सन्मार्ग पर लाना, तुम्हारा दायित्व नहीं है, बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है सन्मार्ग प्रदान करता है. और जो धन तुम खर्च करोगे, अपने ही लिए खर्च करोगे. और तुम धन न खर्च करो, मगर अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए. और तुम (अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने हेतु) जो धन भी खर्च करोगे, वह तुम्हें पूरा-पूरा लौटा दिया जाएगा और तुम्हारे लिए उसमें कमी नहीं की जाएगी. 273 मुख्य रूप से दान उन वंचितों के लिए है जो अल्लाह के मार्ग में (इस प्रकार) घिर चुके (एवं लीन हो चुके) हैं कि (वे) अपनी (व्यक्तिगत) जीविका प्राप्त करने के लिए ज़मीन पर दौड़-धूप नहीं कर सकते. बेख़बर व्यक्ति, उनके न माँगने के कारण, उन्हें धनवान समझता है. तुम उन्हें उनके चेहरों से पहचान सकते हो. वह लोगों से लिपट कर नहीं माँगते. और जो धन तुम खर्च करोगे,

अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है. 274 जो लोग अपना धन रात व दिन, छिपे और खुले रूप में खर्च करते हैं, उनके लिए उनके रब के पास (अच्छा) प्रतिफल है. वहाँ उन्हें न किसी प्रकार का भय होगा और न वे कभी दुःखी होंगे.

275 जो लोग ब्याज (सूद) खाते हैं, वह क़यामत के दिन न उठेंगे, मगर उस व्यक्ति की तरह जिसको शैतान ने अपने स्पर्श से बावला बना दिया हो. यह इसलिए कि उन्होंने कहा, व्यापार करना भी वैसा ही है जैसा ब्याज लेना, हालाँकि अल्लाह ने व्यापार करने को वैध (हलाल) ठहराया है, जबकि ब्याज को अवैध (हराम) ठहराया है. फिर जिस व्यक्ति के पास उसके रब की ओर से यह उपदेश पहुँचे और वह उससे रुक जाए तो जो कुछ वह पहले ले चुका, वह उसके लिए है. और अब उसका मामला अल्लाह के हवाले है. और जो व्यक्ति फिर वही करे, तो ऐसे ही लोग जहन्नम में जाने वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे. 276 अल्लाह ब्याज को घटाता है (अर्थात उसमें बरकत एवं रहमत नहीं होती) और दान-कृत्य को बढ़ाता है. और अल्लाह किसी अकृतज्ञ (अर्थात एहसान-फ़रामोश) तथा दुराचारी को पसंद नहीं करता. 277 हाँ, जो लोग ईमान लाए और उन्होंने भले कर्म किए और नियमित रूप से नमाज़ अदा की और ज़कात अदा की (अर्थात दान-कार्य किया), निस्संदेह, उनके लिए उनके रब के पास (अच्छा) प्रतिफल है. वहाँ उन्हें न किसी प्रकार का भय होगा और न वे कभी दुःखी होंगे.

278 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहो और जो ब्याज़ बाक़ी रह गया है, उसको छोड़ दो, यदि तुम सचमुच अल्लाह में आस्था रखने वाले हो. 279 यदि तुम ऐसा नहीं करते तो सावधान हो जाओ, अल्लाह और उसके पैग़ंबर (संदेशवाहक) की ओर से (तुम्हारे विरुद्ध) युद्ध की घोषणा है. और यदि तुम तौबा कर लो (अर्थात पश्चाताप करते हुए ख़ुदा के उपदेश की ओर पलट आओ) तो अपना मूल धन प्राप्त करने का तुम्हें अधिकार है. न तुम किसी पर अन्याय करो और न तुम पर

अन्याय किया जाए. 280 और यदि (ऋण लेने वाला) तंगी में हो तो उसकी (आर्थिक) स्थिती अच्छी होने तक उसको समय दो. और यदि (तुम्हारा मूल धन भी) दान के रूप में छोड़ दो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, यदि तुम समझो. 281 और उस दिन के प्रति सजग रहो जिस दिन तुम अल्लाह की ओर लौटाए जाओगे. फिर प्रत्येक व्यक्ति को उसके किए का (अर्थात कर्मों का) पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा. और उनके साथ बिल्कुल भी अन्याय नहीं होगा.

282 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! यदि तुम किसी निर्धारित अवधि के लिए आपस में उधार का लेन-देन करो तो उसे लिख लिया करो. उसे लिखे तुममें से कोई लिखने वाला न्याय के साथ. और लिखने (की योग्यता रखने वाला) लिखने से मना न करे, जैसा अल्लाह ने उसको सिखाया है, उसी तरह उसको चाहिए कि लिख दे. और वह व्यक्ति लिखवाए जिस पर (अदायगी) का दायित्व आता है. और वह अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहे जो उसका रब है. और (लिखते समय) वह उसमें कोई कमी (बेशी) न करे. और यदि क़र्ज़ लेने वाला कम समझ हो या कमज़ोर हो या स्वयं (दस्तावेज़) लिखवाने की क्षमता न रखता हो, तो चाहिए कि उसका अभिभावक न्याय के साथ लिखवा दे. और अपने पुरुषों में से दोनों को गवाह बना लो. और यदि दो पुरुष न हों तो एक पुरुष और दो स्त्रियों को गवाह बना लो, उन लोगों में से जिन्हें तुम पसंद करते हो, ताकि यदि एक स्त्री भूल जाए तो दूसरी उसे याद दिला दे. और गवाह मना न करे, जब वह (गवाही के लिए) बुलाए जाएँ. लेन-देन छोटा हो या बड़ा, अवधि निर्धारण के साथ उसको लिखने में सुस्ती न करो. यह लिख लेना अल्लाह की दृष्टि से अधिक न्यायसंगत है और गवाही को अधिक विश्वसनीय बनाने वाला तरीक़ा है. और इससे तुम्हारे किसी संदेह में न पड़ने की अधिक संभावना है. हाँ, यदि कोई लेन-देन हाथों-हाथ (अर्थात नक़द) हो, जो तुम आपस में करते हो, तो उसके न लिखने में तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं.

लेकिन जब तुम सौदा करो तो गवाह बना लिया करो. और किसी लिखने वाले को या गवाह को कष्ट न पहुँचाया जाए. और यदि ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए पाप की बात होगी और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो. अल्लाह तुम्हें (यह बातें) सिखा रहा है. अल्लाह प्रत्येक बात को भली-भाँति जानता है.

283 और यदि तुम सफ़र में हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो गिरवी रखने की चीज़ें गिरवी रखकर मामला किया जाए. और यदि तुममें से कोई दूसरे पर भरोसा करके (उसके साथ मामला करे) तो चाहिए कि जिस पर भरोसा किया गया, वह भरोसे को पूरा करे और वह अल्लाह से डरे जो उसका रब है. और गवाही को न छिपाओ, जो उसे छिपाएगा, (वह ऐसा व्यक्ति है) जिसका मन पापी है. और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसको जानने वाला है.

284 अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है. और जो कुछ ज़मीन में है. तुम अपने दिल की बातों को अभिव्यक्त करो या छिपाओ. अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा. फिर वह जिसे चाहेगा क्षमा करेगा और जिसे चाहेगा सज़ा देगा. अल्लाह हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है.

285 पैग़ंबर उस (मार्गदर्शन) पर ईमान लाया है जो उसके रब की ओर से उस पर प्रकट किया गया है और ईमान लाने वाले भी ईमान लाए. सब ईमान लाए अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके पैग़ंबरों पर. (वे ईमान लाने वाले बंदे कहते हैं,) हम उसके पैग़ंबरों में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते; और वे कहते हैं, हमने सुना और आज्ञापालन स्वीकार किया. हम तुझसे क्षमा चाहते हैं, ऐ हमारे रब! हमें तेरी ही ओर लौट कर आना है.

286 अल्लाह किसी पर भी उसकी शक्ति से अधिक कोई जिम्मेदारी का भार नहीं डालता. हर किसी को वही मिलेगा जो उसने कमाया. और उस पर पड़ेगा वही जो उसने

किया. (ईमान वाले ख़ुदा से इस प्रकार दुआएँ करते हैं) ऐ हमारे रब! यदि हमसे कोई भूल हो जाए अथवा हम ग़लती कर बैठें तो हमारी पकड़ न कीजियो! हमारे प्रभू! हम पर बोझ न डालियो जैसे तूने हमसे पहले लोगों पर बोझ डाले थे! ऐ हमारे प्रभू! जिस बोझ को उठाने की सामर्थ्य हममें नहीं है, वह हमसे न उठवा! और हमें क्षमा कर और हम पर दया कर, तू हमारा स्वामी है (हमारा सब कुछ तेरे हाथ में है). तो तू सत्य का इन्कार करने वाले लोगों के मुक़ाबले में हमारी सहायता कर.

सूरह–3. आले-इमरान

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अलिफ़० लाम० मीम०. 2 **अल्लाह वह है जिस के सिवा दूसरा कोई भी पूजा के योग्य नहीं. वह निरंतर जिवंत है (अनादि-अनंत अस्तित्वमान है) और संपूर्ण सृष्टी का (बनाने वाला एवं) संभालने वाला है.**

नोटः- इस प्रकार का वक्तव्य वही दे सकता है जो संपूर्ण सृष्टी का वास्तविक सृजनकर्ता हो. वास्तविक सृजनकर्ता के सिवा अन्य कोई भी संपूर्ण सृष्टी को संभालने का वक्तव्य नहीं दे सकता.

3 उसने तुम पर किताब उतारी सत्य के साथ, जो पुष्टी करने वाली है उन किताबों की जो इससे पूर्व उतारी गयी थी. उसने (इस क़ुरआन से पहले) तौरात और इंजील इन (दिव्य ग्रंथों) को उतारा 4 इससे पहले के लोगों के मार्गदर्शन के लिए अल्लाह ने (अपने ग्रंथों के रूप में) (सत्य एवं असत्य में अंतर करने वाली) कसौटी उतारी. अब जो लोग अल्लाह के संदेशों को मानने से इन्कार करें, निश्चित रूप से उनके लिए कड़ी यातना है. और अल्लाह प्रभुत्वशाली है, बदला लेने वाला है.

5 निस्संदेह, ज़मीन और आसमान की कोई चीज़ अल्लाह से छिपी हुई नहीं. 6 वही तो है जो तुम्हारे रूप बनाता है माँ के पेट में, जिस तरह चाहता है. उसके सिवा दूसरा कोई भी पूजा के योग्य नहीं. वही प्रभुत्वशाली है, वही बुद्धिमान है.

नोटः- माँओं के पेटों में विभिन्न रूपों वाले इंसानों का बनना यह इंसानों द्वारा घटित हो रही घटना नहीं है. निस्संदेह यह घटना वही घटित कर रहा है जो इंसान का वास्तविक सृजनहार है.

जो इंसान का वास्तविक सृजनहार है. वही इंसान का वास्तविक उपास्य है. वही इसके पात्र है कि उसकी उपासना की जाए. लेकिन वर्तमान परीक्षा की दुनिया में बहुत से लोगों ने उन्हें उपास्य बना रखा है जो वास्तव में उपास्य हैं ही नहीं, उन उपास्यों ने उन्हें नहीं बनाया जिन्हें वे पूज रहे हैं, बल्कि वे तथाकथित उपास्य भी सच्चे सृजनकर्ता के द्वारा बनाए गए हैं.

7 वही अल्लाह है जिसने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी उसमें कुछ संदेश-वचन स्पष्ट (तथा मूलभूत) हैं, यह किताब का असल है (अर्थात बुनियाद है). दूसरे (प्रकार के) संदेश-वचन वह हैं जिनमें मिसालों के ज़रीए से बात बतायी गयी है. तो जिन लोगों के दिलों में टेढ़ापन (कुटिलता एवं गुमराही) है, वे इन मिसालों वाले संदेश-वचनों के पीछे पड़ जाते हैं, बिगाड़ की तलाश में (अर्थात भ्रांति निर्माण करने हेतु प्रयास करते हैं.) और (मनमाना) अर्थ निकालने का प्रयास करते रहते हैं. जबकि (वास्तविकता यह है कि) उनका वास्तविक अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता. लेकिन जो लोग गहरा ज्ञान रखने वाले हैं) वे कहते हैं, हम उस पर ईमान लाए. सब हमारे रब की ओर से है. और उपदेश ग्रहण केवल वही लोग करते हैं जो बुद्धि (का उपयोग करने) वाले हैं. 8 (वे

अल्लाह से दुआ करते हैं) ऐ हमारे रब! हमारे दिलों को अब सन्मार्ग से विचलित न होने दे, जबकि तू हमें सीधा मार्ग दिखा चुका है. (ऐ प्रभू!) हमें अपने पास से दयालुता प्रदान कर!

निस्संदेह, तू ही सब कुछ प्रदान करने वाला है. 9 ऐ हमारे रब! **तू सब लोगों को एक दिन इकट्ठा करने वाला है, जिसके आने में कोई संदेह नहीं. निस्संदेह, अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध नहीं करता.**

नोटः- क़यामत का आना, अल्लाह की अदालत का क़ायम होना, सारे इंसानों को इकट्ठा करके उनसे ज़िंदगी का हिसाब लेना यह घटना अवश्य घटित होने वाली है, क्योंकि यह अल्लाह का वादा है. और अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध कभी नहीं करता.

10 जिन लोगों ने सत्य का इन्कार करने की नीति अपनाई, निस्संदेह उनका धन तथा उनकी संतान अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ काम न आएगी. यही लोग जहन्नम की आग का ईंधन बनेंगे
11 उनका अंजाम वैसा ही होगा जैसा (फ़िरऔन एवं) फ़िरऔन के अनुयायियों का हुआ. और उनसे पहले के (इन्कार करने वालों का) हुआ. उन्होंने हमारी संदेश-सूचक निशानियों को झुठलाया. इस पर अल्लाह ने उनके अपराधों के कारण उन्हें पकड़ लिया. और अल्लाह (अपराधियों को) कड़ी सज़ा देने वाला है.
12 **(पैग़ंबर!) उन लोगों से कह दो, जो सत्य के इन्कार पर अड़े हैं कि तुम्हें अवश्य पराजित किया जाएगा** और जहन्नम की ओर एकत्रित करके लाया जाएगा जो बहुत ही बुरी जगह है.

नोटः- वर्तमान दुनिया में इंसान सत्य का इन्कार करने के लिए स्वतंत्र है, लेकिन यह अवस्था हमेशा रहने वाली नहीं है. निस्संदेह एक दिन आने वाला है जिस दिन सच्चाई का स्वीकार करने वालों को पुरस्कारित किया जाए और सत्य का इन्कार करने वालों को सज़ा दी जाए.

13 निस्संदेह तुम्हारे लिए उन दो समूहों में शिक्षाप्रद निशानी है, जिनमें (बद्र के स्थान पर) मुठभेड़ हुई. एक समूह अल्लाह के मार्ग में लड़ रहा था, दूसरा सत्य का इन्कार करने वाला समूह था. यह इन्कार करने वाले उन (ईमान वालों) को (अपने से) दो गुना देखते थे अल्लाह अपनी सहायता से जिसे चाहता है शक्ति प्रदान करता है. इसमें आँख वालों के लिए बड़ी सीख है.

14 **लोगों की चाह की चीज़ें, जैसे... औरतें, बेटे, सोने-चाँदी के ढेर, (चुने हुए) घोड़े, मवेशी और खेती (आदि चीज़ें) उनके लिए आकर्षित बनाई गयी हैं.** लेकिन **यह सब इस दुनिया की (चंद दिन की) ज़िंदगी के सामान हैं. और अल्लाह ही के पास अच्छा ठिकाना है.**
15 **कहो, क्या मैं तुम्हें बताऊँ इससे ज़्यादा उत्तम चीज़? जो लोग अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनेंगे. तो उनके लिए उनके रब के पास ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. वह उन (बागों) में हमेशा रहेंगे** (अर्थात वहाँ उन्हें शाश्वत जीवन प्राप्त होगा). वहाँ (उनके लिए) निर्मल (मन तथा चरित्र वाले) जीवनसाथी होंगे. और (सबसे बड़ी चीज़) उन्हें अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी. अल्लाह अपने बंदों पर पूरी तरह नज़र रखे हुए है.
16 जो कहते हैं, ऐ हमारे रब! हम ईमान ले आए, तू हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे! और हमें आग की यातना से बचा.
17 वे धैर्यवान, सत्यवान एवं आज्ञाकारी हैं. और (अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति हेतु) अपना धन खर्च करने वाले हैं. और

रात की अंतिम घड़ियों में (अर्थात प्रातःकाल से पूर्व समय में) अपने (गुनाहों से) माफ़ी के लिए याचना करते हैं.

18 **स्वयं अल्लाह गवाही देता है कि उसके सिवा दूसरा कोई भी उपासना के योग्य नहीं. ऐसी ही गवाही सारे फ़रिश्ते और सारे ज्ञानवान देते हैं** (कि अल्लाह के सिवा दूसरा कोई भी उपासना के योग्य नहीं). वह क़ायम (अर्थात स्थापित) करने वाला है न्याय का. उस शक्तिमान एवं बुद्धिमान के सिवा दूसरा कोई भी उपासना के योग्य नहीं.

नोटः- उपासना के योग्य कौन है, यह इंसान स्वयं अपने दिमाग से निश्चित नहीं कर सकता और न वह उपासना-पद्धती को निश्चित कर सकता है. यह उपासनायोग्य हस्ती ही बता सकती है कि वह उपासनायोग्य है. और उसी ने अपने पैग़ंबर के माध्यम से व्यवहारिक स्तर पर उपासना-पद्धती भी बतायी है. लेकिन मानवीय इतिहास में परीक्षा हेतु प्राप्त स्वातंत्र्य का दुरुपयोग करते हुए स्वयं इंसान ने वास्तविक उपासनायोग्य हस्ती को छोड़कर केवल अपनी कल्पनाओं तथा बाप-दादा की निराधार एवं तर्कहीन परंपराओं के आधार पर ख़ुदा के सिवा दूसरों को पूजना शुरू किया, विविध पूजा-पद्धतिओं का निर्माण किया. लेकिन लोगों के इन कृत्यों के कारण सच्चाई नहीं बदल सकती. सच्चाई को कोई माने या कोई मानने से इन्कार कर दे, तब भी सच्चाई अपनी जगह अटल होती है.

19 **अल्लाह के अनुसार (सत्य तथा एकमात्र) मज़हब सिर्फ़ इस्लाम (समर्पण-धर्म) है (अर्थात अल्लाह की इच्छाओं पूर्णतः समर्पित हो जाना).** लेकिन पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वालों ने इस संबंध में जो मतभेद किया, केवल आपस की हठधर्मी के कारण किया, इसके बावजूद भी, जबकि उन्हें सत्य का ज्ञान पहुँच चुका था. और जो अल्लाह के संदेशों के

द्वारा प्रकट होने वाले सत्य को झुठलाएगा, (तो उसे जान लेना चाहिए कि) निस्संदेह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है.

नोटः- वर्तमान दुनिया में विविध मज़हब तथा पंथ पाए जाते हैं. यह सारे पंथ सृष्टा के बताए हुए हरगिज़ नहीं हैं. यह बात सहजबुद्धि से भी समझी जा सकती है कि इंसानों का मालिक इंसानों को अनेकों मार्ग नहीं बता सकता. उसने सारे इंसानों को हमेशा एक ही मार्ग दिखाया. वह मार्ग है उसकी इच्छाओं को समर्पित होकर जीवन व्यतीत करना. यही मार्ग दिखाने के लिए उसकी ओर से सारे पैग़ंबर भेजे गए. अब यही मार्ग केवल क़ुरआन में पूर्ण रूप से सुरक्षित है. लेकिन इंसानों ने परीक्षा हेतु प्राप्त स्वातंत्र का दुरुपयोग करते हुए, रब-चाही ज़िंदगी के बजाय मनचाही ज़िंदगी जीने के लिए तथा उत्तरदायित्व से फ़रार प्राप्त करने के लिए अनेकों मार्ग का आविष्कार किया, और इस पाप को इन सुंदर शब्दों से ढ़कने का काम किया कि सारे रास्ते ख़ुदा की तरफ़ ही जाते हैं. नहीं, हरगिज़ नहीं ख़ुदा की तरफ़ तो सिर्फ़ और सिर्फ़ ख़ुदा का बताया हुआ रास्ता ही जाता है न कि दूसरा कोई रास्ता.

20 (पैग़ंबर!) फिर यदि वह तुमसे इस संबंध में वादविवाद करें तो उनसे कह दो कि मैंने और मेरा अनुसरण करने वालों ने अपने आपको अल्लाह को समर्पित कर दिया है. (और ऐ पैग़ंबर!) पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वालों से तथा उनसे जिन्हें पहले आसमानी-ग्रंथ नहीं दिया गया था, पूछो, **क्या तुम भी उसी तरह इस्लाम को अपनाते हो (जिस तरह हमने अपनाया है)? यदि वह (पैग़ंबर तथा उनके अनुयायियों की तरह) इस्लाम को अपनाते हैं तो उन्होंने सन्मार्ग प्राप्त कर लिया.** और यदि वे इससे मुँह मोड़ें, तो तुम पर केवल (हमारा) संदेश पहुँचाने का दायित्व है.

नोटः- सन्मार्ग या ख़ुदा की ओर जाने वाला मार्ग, न तो बाप-दादा का बताया हुआ मार्ग है और न इंसानों की कल्पनाओं पर आधारित मार्ग, बल्कि वह स्वयं सृष्टा का बताया हुआ और व्यावहारिक स्तर पर उसके पैग़ंबर ने अनुसरण किया हुआ मार्ग है.

21 जो लोग अल्लाह के संदेशों द्वारा प्रकट होने वाले सत्य को नकारते हैं और (उसके) संदेशवाहकों की अन्यायपूर्वक हत्या करते हैं और उन लोगों की भी हत्या करते हैं जो दूसरों को न्यायी (आचरण करने का) उपदेश देते हैं. ऐसे (अत्याचारियों) को दुःखदायी सज़ा की सूचना दे दो.22 यही वे लोग हैं जिनके कर्म इस दुनिया में और मृत्यु-पश्चात दुनिया में भी नष्ट हो गए, और उनके लिए कोई सहायक नहीं.

23 क्या तुमने उन लोगों के संबंध से नहीं जाना जिन्हें अल्लाह की किताब से कुछ हिस्सा मिला था. उन्हें जब अल्लाह की किताब की ओर बुलाया जाता है, ताकि अल्लाह की किताब उनके बीच फ़ैसला करे तो उनमें से एक समूह मुँह फेर लेता है, बेपरवाही के साथ. 24 यह (बेपरवाही) इस कारण है कि वे कहते हैं, जहन्नम की आग हमें गिनती के कुछ दिनों के सिवा छू ही नहीं सकती. (लेकिन वास्तविकता यह है कि) उनकी अपनी मनगढ़ंत धारणाओं ने उन्हें अपने मज़हब के संबंध में धोके में डाल रखा है. 25 फिर उस समय उनकी क्या दशा होगी, जब हम उन्हें **उस दिन इकट्ठा करेंगे, जिसके आने में कोई संदेह नहीं. उस दिन प्रत्येक व्यक्ति को जो कुछ उसने किया है उसका पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा. और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा.**

नोटः- यह दुनिया अंधेर नगरी चौपट राज नहीं है. इस अर्थपूर्ण दुनिया को बनाने वाले ने इसको अर्थपूर्ण उद्देश्य के साथ बनाया है. इस अर्थपूर्ण दुनिया का अर्थ-शून्य अंत नहीं हो

सकता, इसीलिए एक दिन आना ज़रूरी है, जब भले कर्म करने वालों को पुरस्कारित किया जाए और बुरे कर्म करने वालों को दंडित किया जाए.

26 तुम कहो, ऐ अल्लाह, समस्त साम्राज्य के स्वामी! तू जिसे चाहे सत्ता प्रदान करे और जिससे चाहे सत्ता छीन ले. तू जिसे चाहे सम्मानित करे और जिसे चाहे अपमानित करे. हर प्रकार की

भलाई तेरे हाथ में है. निस्संदेह तू हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है. 27 **तू रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करता है और तू निर्जीव में से सजीव तथा सजीव में से निर्जीव को निकालता है.** और तू जिसे चाहता है बेहिसाब जीविका प्रदान करता है.

नोटः- जब संपूर्ण सृष्टी परिपूर्ण संतुलन के साथ कार्य करती है तब रात और दिन आते हैं. इस असीम सृष्टी को परिपूर्ण संतुलन के साथ कार्यरत रखे ऐसा ख़ुदा के सिवा दूसरा कौन हो सकता है. इसी प्रकार निर्जीव में से सजीव तथा सजीव में से निर्जीव को ख़ुदा के सिवा दूसरा कौन निकाल सकता है? यह घटनाएँ कोई काल्पनिक घटनाएँ नहीं हैं. यह वह घटनाएँ हैं जिसका हर आदमी अपने आस-पास हर रोज़ अनुभव कर सकता है. जैसे – मृत ज़मीन एवं निर्जीव बीज से जिवंत वृक्ष का निकल आना, इसी तरह जो जिवंत है उनका मृत हो जाना.

फिर किसी को क्योंकर इस पर संदेह होना चाहिए कि जो घटना हमारे आस-पास, बार-बार हो रही है, वह सारे मृत इंसानों के साथ भी घटित होगी और उन सबको अंतिम फ़ैसले के लिए ख़ुदा की अदालत में इकट्ठा किया जाएगा.

28 ईमान वालों को चाहिए कि वह ईमान वालों को छोड़कर सत्य का इन्कार करने वालों को अपना मित्र न बनाएँ. और जो व्यक्ति ऐसा करेगा तो अल्लाह से उसका कोई संबंध नहीं. लेकिन ऐसी (अपवादात्मक) स्थिति में कि तुम्हें उनसे अंदेशा हो और तुम

उनसे बचाव करना चाहो (अर्थात आत्मरक्षा की नीति के अंतर्गत ऐसा करने पर, तुम पर दोष नहीं). और अल्लाह तुम्हें स्वयं अपने से डराता है. **और तुम्हें अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है.** 29 **कह दो, कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, तुम उसे छिपाओ या प्रकट करो. अल्लाह उसको जानता है. वह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है. अल्लाह हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है.**

नोटः- दिलों का बनाने वाला दिलों के अंदर की सारी बातों को क्यों नहीं जानेगा. ज़मीन व आसमान का बनाने वाला, ज़मीन व आसमान की हर चीज़ को क्यों नहीं जानेगा. हर चीज़ के बनाने वाले का हर चीज़ पर प्रभुत्व क्यों नहीं होगा.

क़ुरआन में ख़ुदा के जिन गुणों का वर्णन है ,ऐसा गुणवान सिर्फ़ ख़ुदा ही हो सकता है. उसको ऐसा ही गुणवान होना चाहिए. अब ज़मीन पर सिर्फ़ क़ुरआन ही एक ऐसी किताब है जिसमें ख़ुदा का असल परिचय उपलब्ध है. अब क़ुरआन के सिवा किसी भी किताब में ख़ुदा का असल परिचय उपलब्ध नहीं है, क्योंकि क़ुरआन ख़ुदा की एकमात्र किताब है जो पूर्ण रूप से सुरक्षित है और सिर्फ़ ख़ुदा ही स्वयं अपना असल परिचय करा सकता है.

30 **वह दिन आने वाला है जब प्रत्येक व्यक्ति अपने भले कर्म को अपने सामने पाएगा और जो बुरा कर्म किया होगा उसको भी अपने सामने पाएगा. उस दिन प्रत्येक व्यक्ति यह चाहेगा कि काश! यह दिन उससे बहुत दूर होता.** अल्लाह तुम्हें स्वयं अपने से डराता है. और अल्लाह अपने बंदों पर अत्यंत दयावान है.

नोटः- इस्लाम पूरी तरह उत्तरदायित्व की स्वाभाविक संकल्पना पर आधारित मज़हब है. इसके विपरीत दुनिया में जो दूसरे मज़हब हैं उनके यहाँ उत्तरदायित्व की संकल्पना मौजूद नहीं.

31 कहो, यदि तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरा अनुसरण करो. अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा. और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा. अल्लाह अत्यंत क्षमाशील एवं दयावान है.

32 **उनसे कहो कि अल्लाह का आज्ञापालन करो और पैग़ंबर का आज्ञापालन करो, फिर यदि वे मुँह मोड़ें तो (याद रखो कि) अल्लाह सत्य का इन्कार करने वालों को पसंद नहीं करता.**

नोटः- पैग़ंबर का आज्ञापालन करना वास्तव में अल्लाह का ही आज्ञापालन करना है, क्योंकि पैग़ंबर अपने जी से नहीं बोलता. वह जो बोलता है ख़ुदा के मार्गदर्शन के अंतर्गत बोलता है. पैग़ंबर का आज्ञापालन इसलिए भी आवश्यक है, क्योंकि वह ख़ुदा के मार्गदर्शन का व्यवहारिक नमुना होता है.

33 निस्संदेह अल्लाह ने आदम को और नूह को और इब्राहीम तथा इमरान की
संतान को सारे संसार के लोगों में से चुना. 34 इनमें से कुछ, कुछ की संतान हैं. अल्लाह
सब कुछ सुनने वाला है, सब कुछ जानने वाला है. 35 (याद करो) जब इमरान की पत्नी
ने कहा, ऐ मेरे रब! मैं इस बच्चे को, जो मेरे पेट में है, तुझे अर्पित करती हूँ, वह तेरे ही
काम के लिए समर्पित रहेगा तो तू मेरी ओर से

(उसे) स्वीकार कर. निस्संदेह **तू सब कुछ सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला है.**

नोटः- सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला, सब कुछ जानने वाला ख़ुदा के संबंध से इन शब्दों का प्रयोग क़ुरआन में बार-बार हुआ है. निस्संदेह ख़ुदा को ऐसा ही होना चाहिए. ख़ुदा के सिवा दूसरा कोई भी ऐसा नहीं हो सकता.

36 फिर जब उसने (अर्थात इमरान की पत्नी ने) अपत्य को जन्म दिया, तो उसने कहा ऐ हमारे रब! मैंने तो लड़की को जन्म दिया है. और अल्लाह भली-भाँति जानता है कि उसने क्या जन्म दिया है. और लड़का लड़की की तरह नहीं होता. और (ऐ प्रभू!) मैंने इसका नाम मरियम रखा है और मैं इसको तथा इसकी संतान को फिटकारे हुए शैतान से बचने के लिए तेरी शरण में देती हूँ. 37 तो उसके रब ने अच्छी तरह उसका स्वीकार किया और अच्छे ढंग से उसका पालन-पोषण किया और ज़करिया को उसका अभिभावक बनाया. जब कभी ज़करिया **उसके पास कमरे में (अर्थात उपासना प्रकोष्ठ में) आता तो उसके पास जीविका पाता.** ज़करिया ने पूछा, ऐ मरियम! यह चीज़ तुम्हें कहाँ से मिलती है? (इस पर) मरियम ने कहा, यह अल्लाह की ओर से है. निस्संदेह, अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब जीविका प्रदान करता है.

नोटः- 'उसके पास जीविका पाता' से तात्पर्य खाने-पीने की चीज़ें नहीं हैं, बल्कि आध्यात्मिक एवं गहरी विवेकपूर्ण (spiritual wisdom) की बातें हैं. जो वह ज़करिया से साझा करती थी.

हक़ीक़त यह है कि इंसान एक वैचारिक प्राणी होने के कारण भौतिक जीविका के साथ उसे आध्यात्मिक जीविका (spiritual food) की भी आवश्यकता है.

38 उस समय ज़करिया ने अपने रब को पुकारा उसने कहा, ऐ मेरे रब! तू मुझे अपनी (विशेष कृपा) से नेक संतान प्रदान कर. निस्संदेह, तू दुआ का सुनने वाला है. 39 फिर (अल्लाह की ओर से) फ़रिश्तों ने (दुआ के जवाब में) उसको पुकारा, जबकि वह

उपासना प्रकोष्ठ में नमाज़ अदा कर रहा था. (फ़रिश्तों ने कहा,) अल्लाह तुझे यहया की शुभ-सूचना देता है. जो अल्लाह की वाणी की पुष्टि करने वाला होगा और सरदार होगा और अत्यंत संयमी होगा और ख़ुदा का संदेशवाहक होगा और वह नेक लोगों में से होगा.
40 (इस पर) ज़करिया ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे यहाँ लड़का किस तरह होगा, जबकि मैं बूढ़ा हो चुका हूँ और मेरी पत्नी बाँझ है. जवाब मिला, ऐसा ही होगा,

अल्लाह जो चाहता है, करता है.

> **नोटः-** जो चाहे वह करने की सामर्थ्य अल्लाह के सिवा अन्य किसी के पास नहीं. निस्संदेह यह सच्चे तथा सर्वोच्च सामर्थ्यवान का परिचय है.

41 ज़करिया ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी निश्चित कर दे. जवाब मिला, तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से बात न कर सकोगे, सिवाय इशारे के. (इस दौरान) अपने रब का भरपूर स्मरण करते रहना. और शाम व सुबह उसका स्तुतिगान करते रहना.
42 और जब फ़रिश्तों ने कहा, ऐ मरियम! अल्लाह ने तुम्हें चुना है और तुम्हें निर्मलता (तथा सच्चरित्रता) प्रदान की है. और दुनिया की तमाम औरतों में तुम्हें प्रधानता दी है.
43 ऐ मरियम! अपने रब का आज्ञापालन करो और (अपने रब के आगे) अपना सर झुका दो सजदे में और (नमाज़ में) झुकने वालों के साथ झुक जाओ.
44 (पैग़ंबर!) यह अदृश्य से दी जा रही सुचनाएँ हैं **जो हम तुम्हारी और प्रकट कर रहे हैं और तुम उस समय उनके पास उपस्थित नहीं थे,**

जब उस उपासना-ग्रह के सेवक, मरियम का अभिभावक (पालन-पोषण करने वाला) कौन होगा यह सुनिश्चित करने के लिए चिट्ठियाँ डाल रहे थे. और न तुम उस समय उनके पास उपस्थित थे, जब वह आपस में झगड़ रहे थे.

नोटः- हज़रत मुहम्मद साहब इन घटनाओं के सैकड़ों साल बाद पैदा हुए. लेकिन यह ख़बरें उस सच्चे स्वामी की तरफ़ से सुनाई गयीं जिसकी संपूर्ण मानवीय इतिहास पर नज़र है.

45 और याद करो जब फ़रिश्तों ने कहा, ऐ मरियम! **अल्लाह तुमको अपने एक आदेश के द्वारा (तुम्हें सुपुत्र होने की) शुभ-सूचना देता है. उसका नाम मरियम-पुत्र ईसा-मसीह होगा.** वह वर्तमान दुनिया में और मृत्यु-पश्चात दुनिया में सम्मानित (एवं चुने हुए लोगों में से) होगा और अल्लाह का सामीप्य प्राप्त किए हुए लोगों में से होगा.

नोटः- ईसा-मसीह के संबंध से सत्य यह है कि वह ख़ुदा-पुत्र नहीं, बल्कि मरियम-पुत्र थे. लेकिन जिन लोगों ने उस ख़ुदा को नहीं जाना, जो सर्वशक्तिमान, स्वयंपूर्ण, आत्मनिर्भर और सबकी आवश्यकताएँ पूरी करने वाला और स्वयं हर चीज़ से निस्पृह एवं निर्लोभ है, तो उन्होंने अपने स्वार्थ की नई दुकान खोलने के लिए ख़ुदा पर भयानक बड़ा झूठ रचा. क़ुरआन जो कि ख़ुदा का सुरक्षित मार्गदर्शन है, ईसा-मसीह के सत्य को स्पष्ट कर रहा है.

46 (फ़रिश्तों ने आगे कहा,) वह लोगों से बातें करेगा जब माँ की गोद में होगा और
बड़ा होकर भी; और वह नेक लोगों में से होगा. 47 मरियम ने कहा, ऐ मेरे रब! मुझे
किस तरह लड़का होगा, जबकि किसी मर्द ने मुझे हाथ नहीं लगाया. (इस पर) जवाब
मिला, ऐसा ही होगा, **अल्लाह जो चाहता है उसका सृजन करता है.**

जब वह किसी काम के करने का निर्णय लेता है, तो बस कहता है कि हो जा, तो वह हो जाता है.

नोटः- यह अल्लाह की शान है कि वह जो चाहे और जिस तरह चाहे किसी भी चीज़ का सृजन कर सकता है. अल्लाह चाहे तो मिट्टी से इंसान बना दे, फिर चाहे तो इंसान में से इंसान निकाले. यदि वह चाहे तो बच्चा पैदा होने के साथ ही बात करने लग जाए और वह चाहे तो बच्चा इंसानों के बीच बड़ा होते हुए बात करना सीखे. वह चाहे तो आग से जलाकर राख कर दे और चाहे तो आग को आदेश दे कि ऐ आग! तू इब्राहीम पर थंडी हो जा. इस तरह ख़ुदा की शान का प्रकटीकरण असीम सृष्टी में अनगिनत रूपों में हो रहा है. अब इंसान को चाहिए था कि वह ख़ुदा की शान को जाने और समझे. लेकिन इंसानों में से अधिकतर इंसान ख़ुदा को जानने में नाकाम रहे.

ईसा मसीह के संदर्भ में जो मामला ख़ुदा की शान को समझने का मामला था, लेकिन इंसानों ने उसको ख़ुदा पर झूठ गढ़ने के लिए इस्तेमाल किया.

48 और अल्लाह उसको किताब एवं हिकमत की बातें सिखाएगा और तौरात तथा इंजील
सिखाएगा.49 और (अल्लाह) उसे इस्राईल की संतान की ओर अपना पैग़ंबर बनाकर
भेजेगा. (जब वह पैग़ंबर की हैसियत से बनी इस्राईल के पास आया तो उसने कहा,) मैं तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे पास निशानी लेकर आया हूँ. मैं तुम्हारे सामने मिट्टी से परिंदे की शकल की एक प्रतिमा बनाता हूँ और उसमें फूँक मारता हूँ तो वह अल्लाह के आदेश से (जीवित) पक्षी बन जाती है. और मैं अल्लाह के आदेश से जन्मजात अंधे और कोढ़ी को अच्छा करता हूँ और मैं अल्लाह के आदेश से मृत को जीवित करता हूँ. और मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम क्या खाते हो और अपने घरों में क्या इकट्ठा करके रखते हो. निस्संदेह
इसमें तुम्हारे लिए संदेश-सूचक निशानी है यदि तुम विश्वास रखने वाले हो. 50 और मैं
पुष्टि करने वाला हूँ तौरात की जो मुझसे पहले की (आसमानी) किताब है. और मैं

इसलिए आया हूँ कि कुछ ऐसी चीज़ें जो तुम्हारे लिए (ख़ुदा के दीन में मिलावट होने के कारण) हराम (निषिद्ध) कर दी गयी थीं उन्हें तुम्हारे लिए वैध (हलाल) कर दूँ. और मैं तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे पास निशानी लेकर आया हूँ. तो तुम अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो और मेरी आज्ञा का पालन करो. 51 **निस्संदेह, अल्लाह मेरा रब है. और तुम्हारा भी, तो उसी की इबादत (उपासना एवं आज्ञापालन) करो यही सीधा रास्ता है.**

नोटः- ईसा-मसीह और दूसरे सारे पैग़ंबर ख़ुदा की ओर से यही पैग़ाम लेकर आए कि अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा भी, और अल्लाह के सिवा दूसरा कोई भी इबादत के योग्य नहीं है. तो तुम उसी की इबादत करना यही एकमात्र सीधा रास्ता है.

लेकिन परीक्षा हेतु स्वातंत्र्य प्राप्त इंसान, ख़ुदा के दीन में किस तरह बिगाड़ निर्माण कर सकता है, इसके उदाहरण स्वयं ईसा मसीह हैं. ईसा मसीह मरियम के पुत्र थे और ख़ुदा के पैग़ंबर थे. लेकिन इंसानों ने ख़ुदा के पैग़ंबर को ख़ुदा का पुत्र क़रार दे दिया. ऐसा ही तरह-तरह का जुर्म संपूर्ण मानवीय इतिहास में पैगंबरों के संबंध से किया गया.

52 फिर जब ईसा को उनके इन्कार का बोध हो गया तो उसने कहा कि कौन मेरा सहायक बनता है अल्लाह के मार्ग में? हवारियों ने (ईसा के शिष्यों ने) कहा, हम होंगे अल्लाह (के मार्ग में आपके) सहायक. हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और हम अल्लाह की आज्ञाओं का पालन करने वाले हैं. 53 (फिर उन्होंने ख़ुदा से प्रार्थना की) ऐ हमारे रब! जो कुछ तूने उतारा है उस पर हम ईमान लाए. और हम इस पैग़ंबर का अनुसरण करते हैं

तो तू हमें (सत्य की) गवाही देने वालों में लिख ले. 54 फिर बनी इसराईल (मसीह के विरुद्ध) गुप्त साजिश करने लगे, तो अल्लाह ने भी अपना गुप्त उपाय किया और अल्लाह सबसे अच्छा उपाय करने वाला है. 55 जब अल्लाह ने कहा, ऐ ईसा! मैं तुझे वापस लेने वाला हूँ और तुझे अपनी ओर उठा लेने वाला हूँ और जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया उनसे तुझे पाक (एवं मुक्त) करने वाला हूँ. और जिन लोगों ने तेरा अनुसरण किया, उन्हें क़यामत तक उन लोगों पर वर्चस्व देने वाला हूँ, जिन्होंने सत्य का इन्कार किया फिर अंततः मेरी ही ओर होगी तुम सबकी वापसी. तो मैं तुम्हारे बीच उन चीज़ों के संबंध में निर्णय करूँगा जिनमें तुम मतभेद करते थे. 56 फिर जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया, उन्हें (वर्तमान) दुनिया तथा मृत्यु-पश्चात दुनिया में कठोर सज़ा दूँगा और उनका कोई सहायक नहीं होगा. 57 और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने भले कर्म किए, उन्हें अल्लाह (उनके कर्मों का) पूरा-पूरा प्रतिफल देगा. और अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता. 58 (पैग़ंबर!) ये हैं (हमारे) संदेश तथा (हमारी ओर से) विवेकपूर्ण बातें जो हम तुम्हें सुना रहे हैं.

59 **निस्संदेह, अल्लाह की दृष्टि में ईसा का उदाहरण आदम जैसा है. अल्लाह ने आदम को मिट्टी से बनाया, फिर उसको हुक्म दिया कि हो जा, तो वह हो गया.**

नोटः- अल्लाह ने आदम को माँ-बाप के बग़ैर बनाया और ईसा को बाप के बग़ैर. यह अल्लाह की शान तथा उसके सामर्थ्य का मामला है, इसके सिवा और कुछ नहीं.

सारे इंसान जो पैदा हुए और हो रहे हैं, वे ख़ुदा के द्वारा स्थापित एक नियम के अंतर्गत पैदा हो रहे हैं. लेकिन जहाँ तक हज़रत आदम और ईसा का प्रश्न है उनकी पैदाइश स्थापित नियम से हटकर हुयी है. ख़ुदा ऐसा सामर्थ्यवान है कि वह किसी नियम को स्थापित कर सकता है और वह उस नियम को बदल भी सकता है. किसी नियम को स्थापित करने और उसको बदलने के लिए उसका एक आदेश पर्याप्त होता है.

यहाँ सोचने तथा समझने की बात यह है कि ईसा को ख़ुदा का बेटा बताने वाले स्वयं आदम को ख़ुदा का बेटा नहीं मानते, जो कि बग़ैर माँ-बाप के पैदा हुए, फिर बग़ैर बाप के पैदा होने से क्या ईसा बेटा हो जाएंगे? सत्य यह है कि दोनों हज़रत आदम और हज़रत ईसा ख़ुदा के हुक्म से पैदा हुए. बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं है, बल्कि हर औरत और हर मर्द ख़ुदा के ही हुक्म से पैदा होते हैं. जैसा कि फ़रमाया, **आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है, वह जो चाहता है सृजित करता है. वह जिसे चाहता है बेटियाँ प्रदान करता है और जिसे चाहता है बेटे प्रदान करता है या जिसके लिए चाहता है दोनों प्रदान करता है, बेटे भी और बेटियाँ भी. और जिसे चाहता है निःसंतान रखता है. निस्संदेह वह सब कुछ जानने वाला है, सामर्थ्यशाली है.** (क़ुरआन 42:49,50)

इसी तरह हज़रत मरियम जब अपने माँ के पेट में थीं तो हज़रत मरियम की माँ चाहती थी कि उन्हें लड़का हो, जिसे वह ख़ुदा के मिशन के लिए समर्पित कर दे, लेकिन लड़के की चाहत के पश्चात उन्हें लड़का नहीं, लड़की हुई जिसका नाम उन्होंने मरियम रखा.

यहाँ समझने की एक और बात यह है कि न तो ख़ुदा ने स्वयं ईसा को अपना बेटा बताया है और न स्वयं ईसा ने अपने को ख़ुदा का पुत्र बताया है. बल्कि ख़ुदा ने अपने बारे में कहा **कहो, वह अल्लाह एक है. अल्लाह निस्पृह है. न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान .और कोई उसके बराबरी का नहीं.**(क़ुरआन सूरह 112)

और ईसा ने कहा, **निस्संदेह, अल्लाह मेरा रब है. और तुम्हारा रब भी, तो उसी की इबादत (उपासना एवं आज्ञापालन) करो, यही सीधा रास्ता है.** (क़ुरआन 3:51)

वास्तविकता यह है कि जो लोग ख़ुदा की शान तथा उसके सामर्थ्य को नहीं समझते, वह अपने दिमाग़ से झूठ गढ़ते है.

60 **(पैग़ंबर!) यह है सत्य, तुम्हारे रब की ओर से, तो तुम संदेह करने वालों में से न होना.**

नोटः- क़ुरआन ख़ुदा का अंतिम एवं सुरक्षित मार्गदर्शन है. क़ुरआन ने ईसा मसीह के संबंध से गढ़े गए झूठ का खंडन करते हुए सत्य को प्रस्तुत कर दिया है.

61 यह ज्ञान आ जाने के बाद, अब जो कोई इस संबंध में तुमसे वादविवाद करे तो उनसे कहो कि आओ हम और तुम अपने-अपने बेटों और स्त्रियों को बुला लें और हम और तुम स्वयं भी एकत्र हों, फिर हम मिलकर अल्लाह से यह दुआ करें कि जो झूठा हो उस पर अल्लाह की फिटकार हो.

नोटः- ऐसी बात अल्लाह का सच्चा संदेशवाहक ही कह सकता है.

62 निस्संदेह, यह सच्ची घटनाओं का वर्णन है. और अल्लाह के सिवा दूसरा कोई भी उपासना के योग्य नहीं. अल्लाह ही प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है. 63 फिर यदि वे लोग (मुक़ाबले के लिए) मुँह मोड़ें, तो (तुम जान लो कि) निस्संदेह अल्लाह उपद्रवकारियों को ख़ूब जानता है.

64 (पैग़ंबर!) पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वालों (अर्थात यहूदी तथा ईसाइयों) से कहो, **आओ एक ऐसी बात की ओर जो हमारे और तुम्हारे**

बीच समान रूप से मान्य है कि हम अल्लाह के सिवा अन्य किसी की इबादत न करें और किसी को उसका साझी न ठहराएँ. और हममें से कोई किसी दूसरे को अल्लाह के सिवा रब न बनाएँ. फिर यदि इस (आवाहन) से वे मुँह मोड़ें तो साफ़ कह दो, तुम गवाह रहो, हम तो अल्लाह को समर्पित हैं.

नोटः- एकेश्वरवाद की शिक्षा न सिर्फ़ पैग़ंबर मुहम्मद स. ने दी, बल्कि सारे पैग़ंबरों की यही असल शिक्षा थी. यही कारण है कि अब तौरात और बायबल अपने मूल रूप में as it is मौजूद न होते हुए भी उनमें एकेश्वरवाद की शिक्षा एक प्रस्थापित सत्य के रूप में मौजूद है. इस प्रस्थापित सत्य की कसौटी से जांचा जाए तो केवल इस्लाम ही सुरक्षित मज़हब होने की बात पूर्ण रूप से सिद्ध हो जाती है, न कि ख्रिस्ती तथा यहूदी मज़हब.

एकेश्वरवाद का अर्थ यह है कि अल्लाह को एक माना जाए और सिर्फ़ उसी की इबादत (उपासना) की जाए. उसकी ईश्वरत्व (Divinity) में किसी को भागीदार न ठहराया जाए. किसी इंसान को वह स्थान नहीं दिया जाए जो सिर्फ़ समस्त सृष्टी के मालिक

के ही लिए है. अब यह एकेश्वरवाद अपने असली रूप में सिर्फ़ क़ुरआन तथा इस्लाम में मौजूद है. दूसरे धर्मों ने वैचारिक स्तर पर एकेश्वरवाद को मान्य करते हुए भी, व्यवहारिक स्तर पर उन्होंने वह सब कुछ अपना लिया जो एकेश्वरवाद के बिल्कुल ख़िलाफ़ था. अपनी ज़बान से ख़ुदा को रब कहते हुए भी, उन्होंने व्यवहारिक स्तर पर अपने पैग़ंबरों तथा बड़ों को रब दर्जा दे दिया.

65 पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वालो! तुम इब्राहीम के संबंध में (हमसे) क्यों बहस करते हो, जबकि तौरात और इंजील (यह ग्रंथ) उसके बाद प्रकट किए गए हैं. क्या तुम यह बात नहीं समझते? 66 तुम लोग जिन चीज़ों का ज्ञान रखते हो, तुम उनमें तो ख़ूब बहसें कर चुके, अब उस विषय के संबंध से क्यों बहस करते हो जिसका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं. अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते. 67 इब्राहीम (के संबंध से सत्य यह है कि वह) न तो यहूदी था और न ईसाई था, बल्कि वह (हर प्रकार के असत्य से स्वयं को अलग करके ख़ुदा को पूर्णतः) समर्पित था एवं उसकी आज्ञाओं का पालन करने वाला था. और वह उन लोगों में से नहीं था जो ख़ुदा का साझीदार ठहराते हैं. 68 निस्संदेह, लोगों में इब्राहीम से निकटवर्ती (अर्थात सच्चा ताल्लुक़ रखने वाले) वह लोग हैं जो उसका अनुसरण करते हैं और यह पैग़ंबर (अर्थात हज़रत मुहम्मद) और वह जो अब इस पैग़ंबर पर (अर्थात हज़रत मुहम्मद स. पर) ईमान लाए; और अल्लाह ईमान वालों का साथी है.

नोटः- मौजूदा ज़माने में ऐसे बहुत से शब्दों के बाज़ीगर पाए जाते हैं. वह शब्दों में निकटता ढूँढ़ते रहते हैं. जैसे कोई कहता है कि राम-रहीम एक है, कोई कहता है कि इबराहीम में राम शब्द मौजूद है. कोई कहता है काबा और काशी एक है. अक्षरों की समानता और शब्दों के उच्चारण में साम्य बताने का प्रयास करने से वास्तविकताएँ नहीं बदलती. ऐसा करना तर्कहीन एवं बुद्धिहीन कृत्य मात्र है.

> ख़ुदा का बंदा वही है जिसे सच्चे मायने में ख़ुदा की प्राप्ति हो जाए और जो सच्चे मायने में गंभीरतापूर्वक पैग़ंबर का अनुसरण करे, वही पैग़ंबर का अनुयायी है. जो सत्य को पाने के संबंध से गंभीर है वही सत्य का सच्चा खोजी है और ऐसा ही आदमी सत्य को पा सकता है.

69 (ऐ ईमान वालो!) पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वालों में से कुछ लोग चाहते हैं कि वह किसी तरह तुम्हें सीधे रास्ते से हटा दें. लेकिन (सच तो यह है कि) वे स्वयं अपने आपको ही भटका रहे हैं, पर वे समझते नहीं. 70 पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वालो! तुम अल्लाह के संदेशों को क्यों नकारते हो, हालाँकि तुम (स्वयं सत्य) की गवाही देते रहे हो. 71 पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वालो! तुम सच में झूठ को क्यों मिलाते हो? और सत्य को क्यों छिपाते हो, जबकि तुम उसे जानते हो.

72 और पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वालों में कुछ लोग (आपस में एक-दूसरे से) कहते हैं कि ईमान वालों पर जो कुछ (ख़ुदा की ओर) से उतरा, उस पर सुबह को ईमान लाओ और शाम को उससे इनकार कर दो, शायद (इस युक्ति से) ये (मुसलमान) भी अपने ईमान से फिर जाएंगे. 73 और (यह पूर्ववर्ती ग्रंथ वाले आपस में कहते हैं कि) जो अपने मज़हब का अनुयायी हो उसके सिवा किसी की बात न मानो. (पैग़ंबर!) आप कह दीजिए,

जो मार्ग अल्लाह दिखाए वही सन्मार्ग है.

नोटः- सन्मार्ग अर्थात इंसानों की भलाई एवं सफलता का मार्ग सिर्फ़ और सिर्फ़ वही दिखा सकता है जिसने इंसानों को बनाया. सृजनकर्ता के बताए हुए मार्ग के सिवा सारे मार्ग भ्रष्ट तथा इंसान को गुमराह करने वाले मार्ग हैं.

इसी तरह किसी मज़हब-विशेष का लेबल लगा लेने से कोई सन्मार्गी नहीं बन जाता. सन्मार्गी बनने के लिए उस मार्ग पर चलना पड़ेगा जो स्वयं इंसान के बनाने वाले ने इंसान को बताया है.

वर्तमान दुनिया में इंसान की यही परीक्षा हो रही है कि जब उसके सामने कई मार्ग उपलब्ध हैं तो वह यह जानें कि मेरे वास्तविक सृजनकर्ता का बताया हुआ मार्ग कौनसा है. क्योंकि सृजनकर्ता का बताया हुआ मार्ग, एक ही मार्ग है और वही सफलता का मार्ग है.

(लेकिन तुम्हें यह असंभव लगता है कि) तुम्हारे सिवा किसी और पर आसमानी-ग्रंथ प्रकट हो सकता है, जिस प्रकार तुम पर प्रकट हुआ था; या दूसरों को तुम्हारे रब के पास प्रस्तुत करने के लिए तुम्हारे विरुद्ध ठोस प्रमाण मिल जाएँ. (पैग़ंबर!) इनसे कहो, कृपा तो अल्लाह के हाथ में है, वह जिसे चाहता है प्रदान करता है. अल्लाह अत्यंत उदार एवं सर्वज्ञानी है. 74 वह जिसे चाहता है अपनी दयालुता के लिए खास कर लेता है. अल्लाह बहुत कृपा करने वाला है. 75 पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वालों में कोई ऐसा भी है कि यदि तुम उसके पास अमानत के तौर पर ढेर सारा धन रखो तो वह (माँगते ही) तुम्हारा धन तुम्हें वापस लौटा देगा. और उनमें कोई ऐसा भी है कि यदि तुम उसके पास अमानत के तौर पर (केवल) एक दीनार भी रखो तो वह तुम्हें वापस नहीं लौटाएगा, जब तक कि तुम उसके सर पर सवार न हो जाओ. इस(नैतिक दुर्दशा) का कारण यह है कि वे कहते हैं कि जो पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वाले नहीं हैं, उनके संबंध में हम पर कोई इल्ज़ाम नहीं आ सकता. इस तरह वे (स्वयं) झूठ गढ़कर उसका संबंध अल्लाह से जोड़ देते हैं. हालाँकि उन्हें मालूम है (कि ऐसी कोई बात अल्लाह ने नहीं कहीं है). 76 हाँ, जो कोई

अपने प्रण को पूरा करे और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहे तो निस्संदेह, अल्लाह को ऐसे लोग प्रिय हैं जो उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहते हैं.

77 रहे वे लोग जो अल्लाह से किए हुए प्रण को और अपनी क़समों को मामूली मूल्य पर बेच डालते हैं, यह वे लोग हैं जिनका मृत्यु-पश्चात जीवन में कोई हिस्सा नहीं. अल्लाह क़यामत के दिन (जब उसकी अदालत क़ायम होगी) न तो उनसे बात करेगा और न उनकी ओर देखेगा. और न उनको स्वच्छ (एवं शुद्ध) करेगा (अर्थात उन्हें पाप-मुक्त नहीं करेगा). उनके लिए तो बस कष्टप्रद सज़ा है. 78 और उनमें निश्चित रूप से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो (ख़ुदा की) किताब पढ़ते हुए (अर्थात शब्दों का उच्चारण करते हुए) अपनी ज़बानों को (इस तरह चतुरता के साथ) मरोड़ते हैं कि तुम्हें लगे कि जो कुछ वे पढ़ रहे है वह (आसमानी) किताब का ही भाग है, हालाँकि वह (आसमानी) किताब का भाग नहीं होता. और वे कहते हैं कि यह (जो कुछ हम पढ़ रहे हैं) अल्लाह की ओर से है, हालाँकि वह अल्लाह की ओर से नहीं होता. वे जान-बूझकर झूठ बात को अल्लाह से जोड़ देते हैं.

79 **किसी इंसान का यह काम नहीं कि जिसे अल्लाह (अपनी) किताब तथा बुद्धिमानी प्रदान करे और उसको अपना संदेशवाहक नियुक्त करे, फिर वह लोगों से यह कहे कि तुम अल्लाह को छोड़कर मेरी इबादत करो. (वह ऐसा हरगिज़ नहीं कहेगा,) बल्कि वह तो यही करेगा कि तुम अल्लाह वाले बनो. जैसा कि ख़ुदा की किताब की शिक्षा है जिसे तुम दूसरों को पढ़ाते हो और स्वयं भी पढ़ते हो.** 80 **इसी तरह (हमारा) पैग़ंबर तुम्हें ऐसा हुक्म कदापि नहीं दे सकता कि तुम फ़रिश्तों तथा पैग़ंबरों को अपने रब बना लो.** क्या यह संभव है कि

पैग़ंबर तुम्हें सत्य का इन्कार करने का आदेश देगा, जबकि तुम ख़ुदा की आज्ञाओं का पालन करने वाले (अर्थात मुस्लिम) बन चुके होंगे.

नोटः- हर पैग़ंबर इंसानों की तरफ़ इसलिए भेजा गया कि वह इंसानों को उनके वास्तविक सृजनकर्ता से जोड़े, वह इंसानों को अल्लाह वाले तथा उसके प्रति सचेत एवं जवाबदेह बनने की शिक्षा दे. पैग़ंबर के लिए यह कदापि संभव नहीं कि वह इस शिक्षा के सिवा कोई दूसरा कार्य करे. लेकिन संपूर्ण मानवीय इतिहास में पैग़ंबरों के समकालीन बहुसंख्य लोगों ने पैग़ंबरों की शिक्षा को मानने से इन्कार कर दिया. क्योंकि पैग़ंबर की बात मानने पर लोगों को एक ख़ुदा के प्रति उत्तरदायी बनना पड़ता है, इसीलिए लोगों ने कई तथ्यहीन ख़ुदाओं को निराधार तौर पर गढ़ा, किसी ने पैग़ंबरों के बाद पैग़ंबरों को स्वयं ख़ुदा का अवतार ठहराया, किसी ने फ़रिश्तों को विभिन्न कार्य करने वाले अलग-अलग ख़ुदा बना डाले. अब चूंकि क़ुरआन ख़ुदा का अंतिम एवं सुरक्षित मार्गदर्शन होने के कारण पैग़ंबरों के संबंध से सत्य को स्पष्ट कर रहा है.

81 (और याद करो उस समय को) जब अल्लाह ने पैग़ंबरों से (तथा उनके माध्यम
से पूर्ववर्ती ग्रंथों का अनुसरण करने वालों से) यह प्रतिज्ञा ली कि मैंने तुम्हें किताब और
बुद्धिमानी प्रदान की है. फिर तुम्हारे पास (हमारा अंतिम) संदेशवाहक आए जो पुष्टि करे
उस सत्य की जो तुम्हारे पास पहले से है. तो (ख़ुदा को तुमसे यह अपेक्षित है कि) तुम
उस पर ईमान लाओगे और उसकी सहायता करोगे. (इसके बाद) फिर अल्लाह ने कहा,
क्या तुम इसको स्वीकार करते हो और क्या तुम मेरी ओर से इस वचन की ज़िम्मेदारी
उठाते हो. (इस पर) उन्होंने कहा, (हाँ,) हम वचनबद्ध हैं. फिर अल्लाह ने कहा, अब तुम
(सब) गवाह रहो और मैं (स्वयं) भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ.
82 इसके बाद जो अपने
वचन से फिर जाए तो ऐसे ही लोग निश्चित रूप से अवज्ञाकारी हैं.

83 **क्या ये लोग अल्लाह के (बताए हुए) मज़हब के सिवा कोई और मज़हब चाहते हैं. लेकिन आसमान और ज़मीन में जो कोई है (उनकी वास्तविकता यह है कि वे) इच्छा तथा अनिच्छा से अल्लाह ही को समर्पित हैं (अर्थात उसके आज्ञाकारी हैं) और सबको उसी की ओर लौटना है.**

नोटः- अल्लाह का बताया हुआ सीधा रास्ता (अर्थात मज़हब) एक ही है. और वह है, संपूर्ण समर्पण के साथ अल्लाह के बन जाना, उसकी प्रसन्नता-प्राप्ति को अपने जीवन का उद्देश्य बनाकर जीवन व्यतीत करना. उसके प्रति सदैव सचेत एवं उत्तरदायी बने रहना. और समस्त सृष्टि इसी समर्पण-धर्म का पालन कर रही है. लेकिन समस्त सृष्टि में यह केवल इंसान है जिसे परीक्षा हेतु सीमित समय के लिए विचार-स्वातंत्र्य, निर्णय-स्वातंत्र्य तथा कृत्य-स्वातंत्र्य दिया गया है. संपूर्ण मानवीय इतिहास में इसी प्राप्त स्वातंत्र्य का, अल्पसंख्यक अपवाद के सिवा बहुसंख्यक इंसानों ने दुरुपयोग किया और उत्तरदायित्व से फ़रार प्राप्त करने के लिए नए-नए धर्मों का आविष्कार किया. लेकिन एक वक़्त आने वाला है जब इंसानों को परीक्षा हेतु प्रदान किए गए स्वातंत्र्य को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया जाएगा और उनके कृत्यों के अनुरूप निर्णय करने के लिए उन सबको ख़ुदा की अदालत में लाया जाएगा.

84 (पैग़ंबर!) कहो, हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस पर (ईमान लाए) जो हमारी ओर प्रकट किया गया. और (उस पर भी ईमान लाए) जो उतारा गया इब्राहीम पर, इस्माईल पर, इस्हाक़ पर और याक़ूब पर और याक़ूब की संतान पर और जो (संदेश-ग्रंथ) प्रदान किया गया मूसा को और ईसा तथा अन्य पैग़ंबरों को उनके रब की ओर से.

हम एक पैग़ंबर तथा दूसरे पैग़ंबर के बीच अंतर **नहीं करते. और हम अल्लाह को समर्पित हैं.** 85 **और जो व्यक्ति इस्लाम (अर्थात समर्पण-धर्म) के सिवा किसी अन्य मज़हब को चाहेगा तो वह उससे कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा. और वह मृत्यु-पश्चात दुनिया में नुक़सान उठाने वाले लोगों में से होगा.**

नोटः- ख़ुदा का बताया हुआ एक ही रास्ता है जो सीधे ख़ुदा तक जाता है. और वह है पूरी तरह ख़ुदा को समर्पित हो जाना. जिस किसी को यह रास्ता मंजूर नहीं तो वह यह जान ले कि ख़ुदा को भी इसके सिवा अन्य कोई रास्ता मंजूर नहीं.

86 अल्लाह क्यों ऐसे लोगों को सन्मार्ग दिखाएगा जिन्होंने ईमान लाने के बाद सत्य का इन्कार करने की नीति अपनाई. जबकि वे यह गवाही दे चुके थे कि यह पैग़ंबर सच्चा है. और उनके पास खुली निशानियाँ आ चुकी थीं. और अल्लाह अत्याचारियों का मार्गदर्शन नहीं करता. 87 ऐसे लोगों का दंड यह है कि उन पर अल्लाह की, उसके फ़रिश्तों की और समस्त मनुष्यों की फिटकार है. 88 वह इसी (फिटकार वाली) अवस्था में सदैव रहेंगे, न उनकी सज़ा में कमी की जाएगी और न उन्हें मोहलत दी जाएगी. 89 हाँ, वे लोग बच जाएंगे जो पश्चाताप करते हुए (सन्मार्ग की ओर) पलट आए थे और उन्होंने अपना सुधार कर लिया था. निस्संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है. 90 निस्संदेह, जिन लोगों ने ईमान ला चुकने के बाद सत्य का इन्कार किया और सत्य के प्रति उनका इन्कार (उनके दुराग्रह के कारण) और अधिक बढ़ता गया. ऐसे लोगों की क्षमा-याचना कदापि स्वीकार नहीं की जाएगी. यही लोग पक्के पथ-भ्रष्ट हैं. 91 **निस्संदेह, जिन लोगों ने सत्य का इन्कार करने की ठान ली और इसी इन्कार की अवस्था में उनकी मृत्यु हुई, उनमें से कोई यदि अपने आपको सज़ा से बचाने के**

लिए पृथ्वी के बराबर भी सोना बदले में दे दे तो (उससे) वह स्वीकार न किया जाएगा. ऐसे लोगों के लिए दर्दनाक सज़ा है और वे अपना कोई मददगार न पाएंगे.

नोटः- हक़ीक़त यह है कि असत्य का अंजाम ऐसी चीज़ है जिससे बच निकलने का कोई रास्ता नहीं.

पारा – 4

92 (लेकिन जहाँ तक तुम्हारी बात है, ऐ ईमान वालो!) तुम (वास्तव में) नेकी के (वांछित) दर्जे को नहीं प्राप्त कर सकते, जब तक तुम उन चीज़ों में से (अल्लाह के मार्ग में) न खर्च करो जिन्हें तुम प्रिय रखते हो. और जो कुछ तुम खर्च करोगे, अल्लाह उससे अनभिज्ञ नहीं.

93 खाने की सारी चीज़ें (जो इस्लामी शरीअत में) वैध (हलाल) हैं, इसराईल की संतान के लिए भी हलाल थीं, सिवा उन चीज़ों के जिन्हें इसराईल ने स्वयं तौरात के उतारे जाने से पूर्व अपने लिए अवैध (हराम) ठहरा लिया था. उनसे कहो, यदि तुम सच्चे हो तो तौरात लाओ और उसे पढ़ो.

94 इसके बाद भी जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ें, तो ऐसे ही लोग अत्याचारी हैं. 95
कहो, अल्लाह ने सच कहा है. अब इब्राहीम के पंथ का अनुसरण करो जो पूर्ण समर्पण के

साथ अल्लाह का हो चुका था. वह उन लोगों में से नहीं था तो अल्लाह का साझीदार ठहराते हैं.

नोटः- हज़रत इब्राहीम जिस रास्ते पर चले वह स्वयं अल्लाह का बताया हुआ रास्ता है, अल्लाह का बताया हुआ रास्ता ही अल्लाह तक पहुँचता है, न की दूसरे रास्ते.

96 निस्संदेह, जो पहला उपासना-गृह (अर्थात काबा) जो लोगों के लिए बनाया गया, वह वही है जो मक्का में स्थित है. जो सारे संसार वालों के लिए कृपा एवं मार्गदर्शन का केंद्र है. 97 उसमें खुली हुई निशानियाँ हैं, इब्राहीम का उपासना स्थान है. जो उसमें प्रवेश करे वह सुरक्षित हो गया (अर्थात उसको मन की शांति की प्राप्ति होगी). लोगों पर (अर्थात ईमान वालों) पर अल्लाह का यह हक़ है कि जो कोई इस घर तक पहुँचने की सामर्थ्य रखता हो, वह इसका हज करे. और जो (इस आदेश के पालन से) इन्कार करे तो (वह यह जान ले कि) अल्लाह तमाम दुनिया वालों से बेपरवाह(निस्पृह) है. 98 कहो, ऐ पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वालो! तुम अल्लाह के संदेशों के (द्वारा प्रकट सत्य) का स्वीकार करने से क्यों इन्कार करते हो? हालाँकि अल्लाह उसे देख रहा है जो कुछ तुम करते हो. 99 कहो, ऐ पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वालो! तुम ईमान लाने वालों को अल्लाह के मार्ग से क्यों रोकते हो? और उसमें टेढ़ापन तलाश करने का प्रयास क्यों करते हो? हालाँकि (अल्लाह का मार्ग ही सन्मार्ग है) इसके तुम स्वयं गवाह हो. और जो कुछ तुम कर रहे हो उससे अल्लाह अनभिज्ञ नहीं.

100 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वालों में कुछ लोग ऐसे हैं, यदि तुम उनकी बात मान लोगे तो वे तुम्हें तुम्हारे ईमान के बाद, सत्य का इन्कारी बना देंगे. 101 और अब तुम सत्य का इन्कार कैसे कर सकते हो, जबकि तुम्हें अल्लाह के संदेश पढ़ कर सुनाए जा रहे हैं. और तुम्हारे बीच अल्लाह का पैग़ंबर मौजूद है. **और जो व्यक्ति अल्लाह (के मार्गदर्शन) को मजबूती के साथ पकड़ले, तो उसने**

सन्मार्ग प्राप्त कर लिया. 102 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहो, जैसा कि (गंभीरतापूर्वक) उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहना चाहिए. और तुम्हें मृत्यु न आए, लेकिन इस स्थिती में कि तुम उसके आज्ञाकारी हो. 103 और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को (अर्थात अल्लाह के मार्गदर्शक ग्रंथ को) दृढ़तापूर्वक पकड़ लो. और (आपस में) फूट न डालो और अल्लाह की उस कृपा को याद करो जो उसने तुम पर की है. तुम एक-दूसरे के शत्रु थे. फिर उसने तुम्हारे दिलों में (एक-दूसरे के प्रति) प्रेम की भावना डाल दी. तो तुम उसकी कृपा से भाई-भाई बन गए. और तुम आग के गढ़े के किनारे खड़े थे तो अल्लाह ने तुम्हें उससे बचा लिया. इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने संदेश स्पष्ट करता है, ताकि तुम्हें सन्मार्ग प्राप्त हो.
104 और (ऐ ईमान वालो!) तुममें एक ऐसा समूह अवश्य होना चाहिए, जो (लोगों को) नेकी की ओर बुलाए और भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके. ऐसे लोग ही सफलता प्राप्त करने वाले हैं.

105 कहीं तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जो संप्रदायों में बट गए और आपस में मतभेद कर लिया, इसके बावजूद कि उनके पास सत्य के स्पष्ट प्रमाण आ चुके थे. यही वह लोग हैं जिनके लिए (मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में) सख़्त सज़ा है. 106 (फ़ैसले के) दिन जब कुछ चेहरे चमकदार होंगे और कुछ चेहरे काले होंगे, तो जिनके चेहरे काले होंगे (उनसे कहा जाएगा कि) तुम ईमान ला चुकने के बाद, सत्य के इन्कारी बन गए. अच्छा तो अब चखो सज़ा सत्य का इन्कार करने के कारण. 107 और जिनके चेहरे (ख़ुशी से) चमक रहे होंगे, वे अल्लाह की रहमत (दयालुता) की छाया में होंगे. वे उसमें हमेशा रहेंगे. 108 यह अल्लाह के संदेश हैं, जो हम तुम्हें सच्चाई के साथ सुना रहे हैं. और अल्लाह दुनिया वालों पर ज़ुल्म करने का कोई इरादा नहीं रखता. 109 **ज़मीन**

और आसमान की सारी चीज़ों का मालिक अल्लाह है.

और सारे मामले अल्लाह ही के समक्ष लाए जाते हैं. 110 (ईमान वालो!) तुम सर्वोत्तम समुदाय हो, जिसे लोगों (की भलाई) के लिए निकाला गया है. तुम भलाई का आदेश देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो. और यदि पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वाले भी (इस अंतिम संदेश ग्रंथ पर) ईमान लाते तो उनके लिए बेहतर होता. उनमें से कुछ ईमान वाले हैं, लेकिन उनमें अधिकतर अवज्ञाकारी हैं. 111 वे लोग, सिवाय थोड़ा कष्ट पहुँचाने के तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते. और यदि वे तुमसे युद्ध करेंगे तो तुम्हें पीठ दिखाएंगे. फिर उन्हें कहीं से सहायता भी न मिल सकेगी. 112 वे जहाँ कहीं पाए जाएंगे, वे अपमानित होंगे, सिवा इसके कि अल्लाह की ओर से (शरण देने का) कोई वादा हो या लोगों की ओर से (शरण देने का) कोई वादा. उन्होंने (अपने बुरे कृत्यों द्वारा) अल्लाह के क्रोध को अपने ऊपर आमंत्रित किया, (परिणामतः) उन पर थोप दी गयी मुहताजी (एवं पराधीनता), यह इस कारण कि वे अल्लाह के संदेशों द्वारा प्रकट सत्य को नकारते थे और उन्होंने पैग़ंबरों की अन्यायपूर्वक हत्या की. उनके साथ ऐसा इसलिए किया गया, क्योंकि उन्होंने अवज्ञा की और वे अपनी सीमाओं का उल्लंघन करते रहे.

113 पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वाले सभी एक जैसे नहीं हैं. उनमें एक समूह है जो अपनी प्रतिज्ञा पर क़ायम है. ये रात की घड़ियों में अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और उसके आगे सजदा करते हैं. 114 वे अल्लाह पर और (कर्मों के अनुरूप) मृत्यु-पश्चात शाश्वत सज़ा या इनाम दिए जाने पर विश्वास रखते हैं. वे भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं. और भले कर्म करने में अग्रसर रहते हैं. यही नेक लोग हैं. 115 जो नेकी भी वह करेंगे उसकी उपेक्षा (अवहेलना) नहीं की जाएगी. और अल्लाह उसके प्रति सचेत (तथा उत्तरदायी) रहने वालों को भली-भाँति जानता है. 116जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया, तो ऐसे लोगों की संपत्ति तथा संतान अल्लाह के मुक़ाबले में, निस्संदेह,

उनके कुछ काम न आएंगी. यही लोग जहन्नम की आग में पड़ने वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे. 117 वह इस दुनिया की ज़िंदगी में जो कुछ खर्च करते है उसका उदाहरण उस हवा जैसा है जिसमें बहुत ज़्यादा ठंडक हो, वह उन लोगों की खेती पर चले जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया है. फिर वह उसको नष्ट कर डाले. अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे स्वयं अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे हैं.

118 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अपने लोगों के सिवा दूसरों को अपने भेद जानने वाले (क़रीबी राज़दार) मत बनाओ. वे तुम्हें नुक़सान पहुँचाने में कोई कसर बाक़ी नहीं रखते. उन्हें उतनी ही ख़ुशी होती है, तुम जितना ज़्यादा कष्ट पाओ. (तुम्हारे प्रति) उनकी शत्रुता उनके मुँह से निकल पड़ती है, और जो उनके दिलों में है वह इससे भी बहुत अधिक है. हमने तुम्हारे लिए संदेशयुक्त निशानियाँ खोल कर प्रकट कर दी हैं, यदि तुम बुद्धि से काम लेते हो. 119 तुम उनसे मुहब्बत रखते हो, लेकिन वे तुमसे मुहब्बत नहीं रखते. हालाँकि तुम सब आसमानी किताबों को मानते हो. और जब वह तुमसे मिलते हैं. तो कहते हैं कि हम ईमान लाए और जब वे तुम से अलग होते हैं तो तुम पर क्रोध से उँगलियाँ काटते हैं. कह दो, तुम अपने क्रोध में मर जाओ. निस्संदेह, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है जो दिलों में है.

120 **यदि तुम्हारा कुछ भला होता है तो उससे उन्हें दुख होता है. और यदि तुम पर कोई मुसीबत आती है तो वे ख़ुश होते हैं. यदि तुम संयम रखो और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो तो उनकी कोई चाल तुम्हें कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकती. वे जो कुछ कर रहे हैं, अल्लाह उसे अपने घेरे में लिए हुए है.**

नोटः- वर्तमान दुनिया में इंसान को अगरचे कृत्य-स्वातंत्र्य प्राप्त है, लेकिन इंसान ख़ुदा के घेरे में है. उसे परीक्षा हेतु सिर्फ़ सीमित स्वातंत्र्य दिया गया है.

121 (और याद करो) जब तुम सुबह के समय अपने घर से निकले और ईमान वालों को युद्ध के स्थानों पर नियुक्त किया. अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला है.
122 और याद करो जब तुममें से दो समूहों ने साहस छोड़कर (युद्ध-भूमी से वापस लौटने का) इरादा कर लिया, हालाँकि अल्लाह उन दोनों समूहों की सहायता करने वाला था. और ईमान वालों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा करें.
123 (इससे पहले) बद्र (की लड़ाई) में अल्लाह तुम्हारी सहायता कर चुका है, हालाँकि उस समय तुम बहुत कमज़ोर थे. तो तुम अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो, ताकि तुम उसका आभार व्यक्त करने वाले बनो.
124 (उस समय को भी याद करो) जब तुम ईमान वालों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए यह पर्याप्त नहीं, तुम्हारा रब तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार कर तुम्हारी सहायता करे.
125 क्यों नहीं! (ख़ुदा ऐसा ज़रूर करेगा,) यदि तुम संयम का परिचय दो और ख़ुदा के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो और (यदि) दुश्मन तुम पर अचानक चढ़ाई करे तो तुम्हारा रब पाँच हज़ार चिह्नित किए हुए फ़रिश्तों से तुम्हारी सहायता करेगा.
126 अल्लाह ने यह बात तुम्हें सिर्फ इसलिए बता दी, ताकि

तुम्हारे लिए शुभ-सूचना हो और तुम्हारे दिल उससे संतुष्ट हो जाएँ. और सहायता तो अल्लाह ही के पास से आती है जो प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है. 127 यह (सहायता इसलिए की जाएगी) ताकि (अल्लाह) सत्य का इन्कार करने वाले लोगों के एक भाग को काट दे (अर्थात मिटा दे) या उन्हें अपमानित कर दे कि वे (अपने उद्देश्य में) असफल होकर लौटें. 128 (पैग़ंबर!) तुम्हें इस संबंध में कोई अधिकार नहीं है, (यह केवल अल्लाह का अधिकार है कि) अल्लाह चाहे तो (उनके पश्चाताप को स्वीकार करते हुए) उन्हें क्षमा करे या उन्हें सज़ा दे. निश्चित रूप से वे अत्याचारी लोग हैं.

129 ज़मीन व आसमानों में जो कुछ है उसका मालिक अल्लाह है. (उसी के अधिकार में है कि) वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे सज़ा दे. अल्लाह अत्यंत क्षमाशील एवं दयावान है.

130 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! ब्याज कई-कई गुना बढ़ा कर न खाओ और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो, ताकि तुम सफलता प्राप्त करने वाले बनो. 131 और उस आग के संबंध से सावधान हो जाओ जो सत्य का इन्कार करने वालों के लिए तैयार की गयी है. 132 और अल्लाह तथा उसके पैग़ंबर की आज्ञा का पालन करो, ताकि तुम पर कृपा की जाए.

133 और दौड़ो अपने रब की क्षमा-प्राप्ति की ओर तथा उस जन्नत की ओर जो आसमान तथा पृथ्वी जैसी विशाल है. वह तैयार की गयी है अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहने वालों के लिए. 134 जो (अल्लाह के मार्ग में) खर्च करते हैं संपन्नता की अवस्था में और तंगी की अवस्था में भी. और जो अपने गुस्से को पी जाने वाले हैं और लोगों के साथ क्षमाशीलता से काम लेने वाले हैं. अल्लाह को ऐसे ही नेक लोग प्रिय हैं. 135 इन लोगों से यदि कभी कोई खुली बुराई हो जाती है या ये अपने आप पर कभी अत्याचार कर बैठते हैं, तो तुरन्त उन्हें अल्लाह की याद आती है और वे अपने गुनाहों की

माफ़ी माँगने लगते हैं. (वे जानते हैं कि) अल्लाह के सिवा और कौन है जो गुनाहों को माफ़ कर सके. और वे जानते-बूझते अपनी (ग़लती को सही ठहराने के लिए) आग्रह नहीं करते. 136 ये वे लोग हैं कि उनका बदला उनके रब की ओर से यह है कि वह उन्हें क्षमा कर देगा और ऐसे बागों में उन्हें दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और वे उसमें हमेशा रहेंगे. कैसा अच्छा प्रतिफल है अच्छे कर्म करने वालों का!

137 तुमसे पहले (विभिन्न समुदायों से संबंधित) बहुत सी मिसालें बीत चुकी हैं, तो धरती पर चल फिर कर देखो कि क्या परिणाम हुआ सत्य को झुठलाने वालों का. 138

यह क़ुरआन सारे इंसानों के लिए प्रतिपादन है और ख़ुदा के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहने वाले लोगों के लिए मार्गदर्शन तथा उपदेश है.

139 और तुम हिम्मत न हारो और दुःखी न हो, यदि तुम (वास्तव में) ईमान वाले हो तो तुम ही प्रभावी रहोगे. 140 यदि (इस बार) तुम्हें चोट लगी है तो (इससे पहले) तुम्हारे शत्रु को भी वैसी ही चोट लग चुकी है. और हम ऐसे (सुख तथा दुःख के) दिन लोगों पर बदलते रहते हैं, ताकि अल्लाह यह देख ले कि (तुममें सच्चे) ईमान वाले कौन हैं और तुममें से कुछ लोगों को (सत्य की) गवाही देने वाले बनाए. और अल्लाह अत्याचारियों को पसंद नहीं करता. 141 (यह परीक्षा) इसलिए कि अल्लाह ईमान वालों को छाँट ले और सत्य का इन्कार करने वालों को मिटा दे. 142 क्या तुम ने यह समझ रखा है कि तुम यूँ ही जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, हालाँकि अभी अल्लाह ने उन लोगों को (परीक्षा के द्वारा) परखा ही नहीं कि तुममें वे कौन लोग हैं जो (अल्लाह के मार्ग में) कड़ा प्रयास करने वाले हैं और वे कौन हैं जो धैर्य के साथ (अल्लाह के मार्ग पर) क़ायम रहने वाले हैं. 143 तुम (अल्लाह के मार्ग में लड़ते हुए) मृत्यु को गले लगाने की कामना

कर रहे थे, जबकि ऐसा अवसर तुम्हारे लिए नहीं आया था. (लो, वह अवसर) अब तुम्हारे सामने है और तुमने उसे (अपनी) खुली आँखों से देख लिया है.

144 **मुहम्मद इसके सिवा कुछ नहीं कि वह एक पैग़ंबर हैं. उनसे पहले भी बहुत से पैग़ंबर हो चुके हैं, फिर यदि उनकी मृत्यु हो जाए या उनकी हत्या कर दी जाए, तो क्या तुम उलटे पाँव फिर जाओगे (अर्थात क्या तुम अपने ईमान से फिर जाओगे)? और जो कोई उलटे पाँव फिरेगा वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा. और अल्लाह उन लोगों को (अवश्य) प्रतिफल प्रदान करेगा जो उसके प्रति कृतज्ञ बने हुए हैं.**

नोटः- ख़ुदा को पाने का नाम 'ईमान' है और ख़ुदा को पाना सबसे बड़ी हक़ीक़त को पाना है. जिन लोगों ने सच्चे मायने में ख़ुदा को पाया है तो अब कोई भी कारण (excuse) उन्हें ख़ुदा से दूर नहीं कर सकता.

संदेशवाहक का काम तो संदेश पहुँचाना है. कोई ईमान लाने वाला संदेशवाहक के लिए ईमान नहीं लाता, बल्कि उस ख़ुदा पर ईमान लाता है, जिसने उसको बनाया है; और बंदा उसका हर लमहा ज़रूरतमंद है.

145 **और कोई भी जीव अल्लाह के आदेश के बिना मर नहीं सकता. यह अल्लाह का लिखा हुआ वादा है. (अब) जो व्यक्ति इसी दुनिया का लाभ चाहता है, हम उसको इसी दुनिया में से देते हैं. और जो व्यक्ति मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन का लाभ चाहता है, हम उसे उसमें से दे देते हैं. हमारे प्रति कृतज्ञ बने हुए लोगों को हम उनका प्रतिफल अवश्य प्रदान करेंगे.**

नोटः- हर जीवधारी की मौत उसी के हाथ में है जिसने उसको ज़िंदगी दी है. कोई जीव अल्लाह के आदेश के बिना मर नहीं सकता. क़ुरआन का यह शक्तिशाली वक्तव्य सच्चे सृजनकर्ता का परिचय करा रहा है, इसी के साथ वह इंसान के संबंध से ख़ुदा की योजना को स्पष्ट कर रहा है.

इंसान के लिए वर्तमान ज़िंदगी जीने का एक प्रकार यह है कि इंसान ज़िंदगी की हक़ीक़त जाने बग़ैर इसी दुनिया की ज़िंदगी को सब कुछ समझ कर जिए. और दूसरा यह कि इंसान यह जान ले कि वर्तमान सीमित जीवन केवल परीक्षा हेतु है और वास्तविक और असीम जीवन इंसान को मृत्यु-पश्चात प्राप्त होने वाला है. जिसकी तैयारी इंसान को इसी सीमित जीवन में करनी है. जो लोग तैयारी करने के कालखंड में तैयारी नहीं करेंगे, वे परिणाम के दिन निश्चित रूप से असफल होंगे.

146 इससे पहले कितने ही पैग़ंबर ऐसे हुए हैं जिनके साथ मिलकर बहुत से अल्लाह वालों ने (अल्लाह के मार्ग में) युद्ध किया. अल्लाह के मार्ग में जो मुसीबत उन्हें पहुँची, उससे वे न तो हताश हुए और न उन्होंने दुर्बलता दिखाई, और न ऐसा हुआ कि वे दबे हों. और अल्लाह दृढ़तापूर्वक जमे रहने वाले लोगों को पसंद करता है. 147 (इन परिस्थितिओं में) उनके मुँह से इसके सिवा कुछ और नहीं निकला कि ऐ हमारे रब! हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे. हमारे काम में हमसे जो भी मर्यादाओं का उल्लंघन हुआ है उसे माफ़ कर दे. और हमारे क़दम जमाए रख और सत्य का इन्कार करने वालों के मुक़ाबले में हमारी सहायता कर. 148 तो अल्लाह ने उन्हें वर्तमान दुनिया में भी अच्छा प्रतिफल दिया और मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में भी अच्छा प्रतिफल. और अल्लाह को ऐसे ही नेकी करने वाले लोग प्रिय हैं.

149 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! यदि तुम उन लोगों की बात मानोगे जो सत्य का इन्कार करते हैं तो वे तुम्हें उलटे पाँव फेर देंगे. फिर तुम विफल होकर रह जाओगे. 150

(लेकिन ऐ ईमान वालो!) तुम्हारा संरक्षक-मित्र तो अल्लाह है, और वही (तुम्हारा) सबसे अच्छा सहायक है. 151
जो लोग सत्य का इन्कार करने वाले हैं, हम उनके दिलों में धाक बिठा देंगे, क्योंकि **उन्होंने ऐसी चीज़ को अल्लाह का साझीदार ठहराया जिसके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा** उनका ठिकाना (जहन्नम की) आग है. और वह बुरा ठिकाना है अत्याचारियों के लिए.

नोटः- अल्लाह के सिवा दूसरों को पूजना या अल्लाह के साथ दूसरों को साझीदार ठहराना, यह वह कृत्य हैं जिनकी पुष्टि के लिए, ऐसा करने वालों के पास कोई प्रमाण नहीं. यह निराधार एवं अत्याचारी कृत्य हैं जिनका अंजाम जहन्नम है.

152 अल्लाह ने तुमसे (सहायता का जो) वादा किया था, उसको पूरा किया, जबकि तुम उसकी अनुज्ञा से उन्हें क़तल कर रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम स्वयं ढीले पड़ गए और तुमने मतभेद किया और तुम (पैग़ंबर के) कहने पर न चले, जबकि अल्लाह ने तुम्हें वह चीज़ दिखा दी थी जिसे तुम चाहते थे. तुममें से कुछ लोग दुनिया चाहते थे और कुछ मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन (की सफलता) चाहते थे. फिर अल्लाह ने (सत्य नकारने वाले) उन लोगों के मुक़ाबले से तुम्हें हटा दिया, ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले. और अल्लाह ने तुम्हें क्षमा कर दिया. क्योंकि अल्लाह ईमान वालों पर बहुत कृपा करने वाला है.
153 याद करो, जब तुम भागे चले जा रहे थे और किसी को मुड़कर देखते तक न थे

और (ख़ुदा का) पैग़ंबर तुम्हें पीछे से पुकार रहा था (वह उस तुकड़ी के साथ था जो भागी नहीं थी). फिर अल्लाह ने (तुम्हारे इस रवैय्ये के कारण) तुम्हें दुःख पर दुःख दिया, ताकि (आगे के लिए तुम्हें यह शिक्षा मिले कि) तुम निराश न हो उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से चूक गयी. और न उस मुसीबत पर (निराश होना) जो तुम पर पड़े. और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको जानता है.

154 फिर अल्लाह ने इस दुःख के बाद तुम पर मन की शांति उतारी, (अर्थात ऐसी निश्चिंतता की सी स्थिती पैदा कर दी) कि तुम में से कुछ लोग ऊँघने लगे; और एक समूह वह था जिसको अपने प्राणों की चिंता पड़ी हुई थी. वह अल्लाह के बारे में तरह-तरह के अज्ञानपूर्ण विचार करने लगा जो सत्य के सर्वथा विपरीत थे. वे कहते थे कि इस मामले में क्या हमें भी कुछ अधिकार है. कह दो, सारा मामला अल्लाह के अधिकार में है. वे अपने दिलों में ऐसी बात छुपाए हुए हैं जो तुम पर प्रकट नहीं करते. वह कहते हैं कि यदि इस मामले में हमें भी कुछ अधिकार होता तो हम यहाँ मारे न जाते. कहो, यदि तुम अपने घरों में भी होते, तो जिन लोगों की मौत लिखी हुई थी, वह स्वयं अपने मारे जाने की जगहों की और निकल आते. यह तो इसलिए था कि जो कुछ तुम्हारे मन में है, अल्लाह उसे जाँच ले और जो (खोट) तुम्हारे दिलों में है उसे छाँट दे. अल्लाह दिलों का हाल भली-भाँति जानता है. 155 तुममें से जो लोग पीठ फेर गए थे उस दिन, जब दो समूहों में मुठभेड़ हुई. उन्हें शैतान ने उनके कुछ कर्मों के कारण फिसला दिया था. अल्लाह ने उन्हें क्षमा की. निस्संदेह , अल्लाह क्षमाशील एवं दयावान है.

156 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने सत्य का इन्कार किया, वे अपने उन भाइयों के संबंध में, जबकि वे (ख़ुदा के मार्ग में) सफ़र या युद्ध के लिए निकलते हैं (और उन्हें वहाँ मृत्यु आ जाए तो सत्य नकारने वाले) कहते हैं कि यदि वह हमारे पास रहते, तो न मरते और न मारे जाते. अल्लाह इस प्रकार की बातों

को उनके दिलों में पश्चाताप का कारण बना देता है. अल्लाह ही जीवन प्रदान करने वाला और मृत्यु देने वाला है. और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है. 157 और यदि तुम अल्लाह के मार्ग में मारे जाओ या तुम्हें मृत्यु आ जाए, तो अल्लाह का क्षमादान तथा उसकी दयालुता (जो तुम्हें प्राप्त होगी) उन सारी चीज़ों से उत्तम है जिन्हें ये (सत्य का इन्कार करने वाले) लोग इकट्ठा कर रहे हैं. 158 चाहे तुम्हारी मृत्यु हुई हो या तुम मारे गए हो, तुम्हें निश्चित रूप से अल्लाह ही के पास इकट्ठा किया जाएगा. 159 (पैग़ंबर!)यह अल्लाह की बड़ी दयालुता है कि तुम इन लोगों के प्रति बहुत नर्म स्वभाव के हो, यदि तुम कठोर स्वभाव तथा कठोर दिल के होते तो यह लोग तुम्हारे पास से भाग जाते. तो तुम उन्हें क्षमा कर दो और उनके लिए (अल्लाह से) क्षमा के लिए प्रार्थना करो और मामलों में उनसे परामर्श कर लिया करो. फिर जब (किसी मामले में) फ़ैसला कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो. निस्संदेह, अल्लाह को वह लोग प्रिय हैं जो उस पर भरोसा करते हैं.

नोटः- इस संदेश-वचन में पैग़ंबर के व्यक्तित्व को स्पष्ट किया गया है. पैग़ंबर साहब इंसानों के प्रति दयालु एवं क्षमाशील स्वभाव रखने वाले थे. हक़ीक़त यह है कि जो विचारधारा हज़रत मुहम्मद स. लेकर आए थे. वह दया, करुणा, क्षमा वाली विचारधारा है. और आपका व्यक्तित्व इसी विचारधारा का व्यवहारिक प्रकटीकरण था.

160 (ईमान वालो!) **यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे तो तुम्हें कोई पराभूत नहीं कर सकता. और यदि वह तुम्हें छोड़ दे, तो उसके बाद कौन है जो तुम्हारी सहायता कर सकता हो.** और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए.

नोटः- यह संदेश-वचन सर्वोच्च शक्तिमान का परिचय है. जिसके साथ सर्वोच्च शक्तिमान हो उसे कौन पराभूत कर सकता है.

161 यह किसी पैग़ंबर के लिए संभव नहीं कि वह (किसी का अहित करने हेतु) कुछ छुपाए रखे. तो जो कोई छिपाएगा वह अपनी छिपाई हुई चीज़ को क़यामत के दिन हाज़िर करेगा. फिर प्रत्येक व्यक्ति को उसके किए का पूरा-पूरा बदला मिलेगा. और उन पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा. 162 जो व्यक्ति अल्लाह की इच्छा के अनुसार चलता है, क्या वह उस जैसा हो सकता है, जो अल्लाह का प्रकोप लेकर लौटा और जिसका ठिकाना जहन्नम है, और वह क्या ही बुरा ठिकाना है. 163 अल्लाह के यहाँ उनके अलग-अलग दर्जे हैं. और जो कुछ वे कर रहे हैं, अल्लाह उसे देख रहा है. 164 निस्संदेह, अल्लाह ने ईमान वालों पर यह बहुत बड़ा एहसान किया कि उसने स्वयं उन्हीं में से एक ऐसा पैग़ंबर उठाया जो उन्हें उसके संदेशों को सुनाता है और (उनके दिलों से) अशुद्धियों को दूर करता है और उन्हें किताब की शिक्षा देता है और (उसमें मौजूद) विवेकपूर्ण बातों को उन पर स्पष्ट करता है. निस्संदेह, इससे पहले वे लोग खुली हुई पथभ्रष्टता में लिप्त थे.

165 (उहद की पराजय के स्वरूप में) जब तुम पर मुसीबत आ पड़ी तो तुम कहने लगे, यह कहाँ से आ गयी, हालाँकि (बद्र की लड़ाई में) इससे दोगुनी मुसीबत तुम्हारे हाथों (विरोधी पक्ष पर) पड़ चुकी है. (पैग़ंबर) इनसे कहो, यह स्वयं तुम्हारी अपनी लाई हुयी है. निस्संदेह, अल्लाह हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है. 166 और दोनों पक्षों के मुठभेड़ के दिन जो मुसीबत तुम्हें पहुँची, अल्लाह के अनुज्ञा से ही पहुँची, यह इसलिए कि अल्लाह यह स्पष्ट कर दे कि (वास्तव में) ईमान वाले कौन हैं. 167 और यह इसलिए कि अल्लाह यह भी स्पष्ट कर दे कि कपटाचारी कौन हैं. जब इनसे कहा गया कि आओ, अल्लाह के मार्ग में लड़ो या दुश्मनों के आक्रमण को रोको. (इस पर) उन्होंने कहा, यदि हम जानते कि युद्ध होना है तो हम अवश्य तुम्हारे साथ चलते. यह लोग उस दिन ईमान से ज़्यादा इन्कार के निकट थे. वह अपने मुँह से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं होती और अल्लाह उस चीज़ को भली-भाँति जानता है जिसको वह छिपाते हैं. 168 यह लोग तो

स्वयं बैठे रहे और उनके जो भाई-बंधु (लड़ने गए तथा मारे गए) उनके बारें में कह दिया कि यदि वह हमारी बात मान लेते तो मारे न जाते. **इनसे कहो कि यदि तुम अपनी बात में सच्चे हो तो अब स्वयं अपने ऊपर से मृत्यु को टाल दो.**

नोटः- निस्संदेह! यह वक्तव्य उसकी ओर से है जिसके हाथ में इंसान के जीवन और मृत्यु की डोर है. इस वक्तव्य में मौजूद निर्णायक वाणी इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि यह सच्चे स्वामी के सिवा दूसरे किसी का वक्तव्य नहीं हो सकता.

169 और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गए उन्हें मुर्दा न समझो, बल्कि वह जीवित हैं अपने रब के पास, और उन्हें (वहाँ) आजीविका मिल रही है. 170 और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें अपनी कृपा से दिया है उस पर वे ख़ुश हैं. और उन लोगों के संबंध से उन्हें शुभ-सूचना प्राप्त हो रही है जो उनके पीछे हैं (अर्थात अभी इसी दुनिया में हैं) और अभी वहाँ (अर्थात मृत्यु-पश्चात दुनिया में) नहीं पहुँचे हैं, उनके लिए भी (मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में) न किसी प्रकार का भय होगा और न वे कभी दुःखी होंगे. 171 वे अल्लाह की ओर से प्राप्त हो रही नेमतों पर और उसकी कृपा पर ख़ुश हो रहे हैं और इस पर भी कि अल्लाह ईमान वालों (के कर्मों) का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता. 172 जिन लोगों ने घाव खाने के बाद भी अल्लाह और उसके पैग़ंबर की पुकार को स्वीकार किया, उनमें जो लोग नेक कर्म करने वाले तथा अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहने वाले हैं, उनके लिए बड़ा प्रतिफल है. 173 ये वे (सदाचारी) लोग हैं जिनसे लोगों ने कहा कि शत्रु ने तुम्हारे विरुद्ध बड़ी शक्ति (फ़ौजें) एकत्र कर ली है, तो तुम उनसे डरो. तो इस बात ने उनके ईमान को और बढ़ा दिया. और उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह हमारे

लिए पर्याप्त है और वह सबसे अच्छा कार्य-साधक है. 174 अंततः वे (युद्धभूमि से) अल्लाह की नेमत (अनुग्रह) और उसकी कृपा के साथ वापस आए, किसी प्रकार की बुराई से उनका सामना नहीं हुआ. और वे अल्लाह की प्रसन्नता-प्राप्ति के मार्ग पर चले. अल्लाह बड़ी ही उदार कृपा वाला है. 175 यह तो शैतान है जो तुम्हें अपने साथियों से डराता है. तो तुम उनसे न डरो, बल्कि मुझसे डरो, यदि तुम (वास्तव में) ईमान वाले हो.

176 और जो लोग सत्य के इन्कार में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की तत्परता दिखा रहे हैं, (पैग़ंबर!) उनकी यह गतिविधियाँ तुम्हें दुःखी न करें, **वह अल्लाह का कुछ बिगाड़ नहीं सकते.** अल्लाह चाहता है कि मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन (की नेमतों) में उनका कोई हिस्सा न हो. उनके लिए सख़्त सज़ा है.

नोटः- निस्संदेह! यह सच्चे शक्तिमान का वक्तव्य है, उसके जैसा शक्तिमान दूसरा कोई नहीं! न उससे कोई बड़ा है और न कोई उसके बराबरी का.

177 निस्संदेह, जिन लोगों ने ईमान के बदले इन्कार को ख़रीदा है, वे अल्लाह का कुछ बिगाड़ नहीं सकते. उनके लिए दुःखदायी यातना है. 178 **जो लोग सत्य का इन्कार करने पर आग्रही हैं वे यह न समझे** कि हम जो उनको ढील दे रहे हैं. यह उनके लिए अच्छी है. यह ढील तो हम उन्हें इसलिए दे रहे हैं कि वे गुनाहों में और अधिक बढ़ जाएँ. और उनके लिए अपमानजनक सज़ा है.

नोटः- कुछ लोग यह कहते हैं कि यदि इस दुनिया को कृपावंत ख़ुदा चला रहा है तो यहाँ अन्याय एवं अत्याचार क्यों हो रहा है? दुनिया इंसानी फ़साद से क्यों भर गयी है?..... इसका कारण इंसान को परीक्षा हेतु प्राप्त स्वातंत्र्य है. स्वातंत्र्य इसलिए आवश्यक है कि स्वातंत्र्य नहीं तो परीक्षा भी नहीं. अब जबकि स्वातंत्र्य होगा तो उसका दुरुपयोग भी होगा

और इसी दुरुपयोग के परिणाम-स्वरूप इंसानी दुनिया में अन्याय एवं अत्याचार पाया जाता है. लेकिन यह स्वातंत्र्य हमेशा के लिए नहीं है. बहुत जल्द तमाम इंसानों को गिरफ़्तार करके ख़ुदा की अदालत में प्रस्तुत किया जाएगा, जहाँ उनके शाश्वत भविष्य का फ़ैसला होगा.

179 अल्लाह ऐसा नहीं कि ईमान वालों को उस हालत पर छोड़ दे जिस हालत में तुम अब हो, जब तक कि अच्छे (अर्थात सच्चे) लोगों को दुष्टों से (अर्थात कपटाचारियों से) अलग न कर दे. और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हें ग़ैब की बातें (अर्थात अदृश्य दुनिया से संबंधित बातें) बताए. बल्कि अल्लाह (अदृश्य से संबंधित सूचनाएँ) देने के लिए पैग़ंबरों में से जिस को चाहता चुन लेता है. तो तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके पैग़ंबरों पर. और यदि तुम अल्लाह पर ईमान लाओ और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो तो तुम्हें बड़ा प्रतिफल प्राप्त होगा.

180 जो लोग उस चीज़ में कृपणता से काम लेते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपनी कृपा से प्रदान की है. वह कदापि यह न समझे कि यह (कृपणता) उनके लिए अच्छी है. नहीं! यह उनके लिए बहुत ही बुरी है. जिस चीज़ में वे कंजूसी (कृपणता) दिखा रहे हैं, वही चीज़ क़यामत के दिन उनके लिए गले का तौक़ (अर्थात वह भारी चीज़ जो अपराधियों के गले में डाली जाती है) बन जाएगी. और ज़मीन व आसमान की विरासत (स्वामित्व) अल्लाह ही के लिए है. और जो कुछ तुम करते
हो, अल्लाह उसे जानता है. 181 निस्संदेह, अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन ली है, जिन्होंने कहा कि अल्लाह निर्धन है और हम धनवान हैं. **उनके इस कथन को हम लिख लेंगे.** और वे पैग़ंबरों की अन्यायपूर्वक हत्या करते रहे

उसको भी (उनके कर्म-पत्र में लिखा जाएगा). (फिर फ़ैसले के दिन) हम उनसे कहेंगे कि अब आग की यातना चखो.

नोटः- वर्तमान परीक्षारूपी दुनिया में सर्व सामर्थ्यवान ख़ुदा इंसान के दुराचार पर उसकी तुरंत पकड़ नहीं करता. सत्य का इन्कार करने वालों ने ख़ुदा के संबंध से इतनी ख़तरनाक बात कही, कि अल्लाह निर्धन है और हम धनवान हैं तो इस पर ख़ुदा का यही रिस्पॉन्स था कि अभी इस दुष्कृत्य को उनके कर्म-पत्र में रेकॉर्ड कर दिया जाएगा और जब फ़ैसले का समय आएगा, तब उनसे कहा जाएगा, अब आग की यातना चखो.

दुनिया भर में ख़ुदा के क्रोध को भड़काने वाले असंख्य अपराध हो रहे हैं, लेकिन ख़ुदा इंसानों को नियत कालावधी तक ढील दिए हुए है. यह ख़ुदा की योजना का हिस्सा है.

कुछ लोग ईश-निंदा के नाम से ईश-निंदा करने वाले को मार डालने, काट डालने के फ़तवे देते हैं, लेकिन क़ुरआन के इस संदेश-वचन की रोशनी में यह बात स्पष्ट होती है कि इस प्रकार के तमाम फ़तवे पूर्णता ग़लत हैं. ईश-निंदा के कृत्य को ख़ुदा उस इंसान के कर्म-पत्र में लिख देता है और मृत्यु-पश्चात जब ख़ुदा की अदालत लगेगी तब स्वयं ख़ुदा इस मामले का फ़ैसला करेगा. किसी को यह हक़ नहीं कि जिस चीज़ का फ़ैसला ख़ुदा अपनी अदालत में करने वाला है उस पर फ़तवे-बाज़ी करने लगे. फिर मामला ख़ुदा के संबंध से अपशब्द कहे जाने का हो या पैग़ंबर साहब के संबंध से अपशब्द कहे जाने का.

182 (उनसे कहा जाएगा,) यह (सज़ा) तुम्हारे अपने हाथों की कमाई है और अल्लाह अपने बंदों पर अन्याय करने वाला नहीं. 183 जो लोग कहते हैं कि अल्लाह ने हमें आदेश दिया है कि हम किसी पैग़ंबर को न मानें, जब तक वह (पैग़ंबर) हमारे सामने ऐसी क़ुर्बानी (बलि) प्रस्तुत न करे, जिसे (ग़ैबी तथा चमत्कारिक अग्नि प्रकट होकर) खाले. उनसे कहो कि मुझसे पहले तुम्हारे पास पैग़ंबर आए, स्पष्ट निशानियाँ लेकर और वह चीज़ भी लेकर जिस के लिए तुम कह रहे हो. फिर यदि तुम सच्चे हो तो तुमने उन पैग़ंबरों की हत्या क्यों की? 184 **तो यदि अब ये तुम्हें झुठलाते हैं तो तुमसे पहले भी बहुत**

से पैग़ंबर झुठलाए जा चुके हैं, जो खुली निशानियाँ तथा संदेश-ग्रंथ और स्पष्ट रूप से (सन्मार्ग) दिखाने वाली किताब लेकर आए थे.

नोटः- मानवीय इतिहास में ख़ुदा के संदेशवाहक ख़ुदा का मार्गदर्शन लेकर बार-बार आते रहे. लेकिन परीक्षा हेतु प्राप्त स्वातंत्र्य का दुरुपयोग करते हुए इंसान ने ख़ुदा के संदेशवाहकों को झुठलाया.

185 **हर व्यक्ति को मृत्यु का स्वाद चखना है. और तुम्हें तो बस क़यामत के दिन ही (तुम्हारे कर्मों का) पूरा-पूरा प्रतिफल दिया जाएगा. जिसे (जहन्नम की) आग से दूर रखा जाए और उसे जन्नत में दाख़िल किया जाए, वही सफल रहा. और जहाँ तक वर्तमान दुनिया के जीवन की बात है, तो यह सिर्फ़ धोखे की सामग्री है.**

नोटः- मृत्यु जीवन का सबसे अटल सत्य है, जिसका इन्कार कोई नहीं कर सकता. लेकिन इसी के साथ यह भी बहुत बड़ा सत्य है कि लोग इस प्रकार जीवन व्यतीत कर रहे हैं, जैसे उन्हें कभी मरना ही नहीं है. इसीलिए वे जीवन के सत्य के संबंध से गंभीर नहीं हैं. लेकिन लोगों को यह जान लेना चाहिए कि मृत्यु के संबंध से न सोचने से मृत्यु टलने वाली नहीं.

मृत्यु के बाद जीवन का जो परिणाम सामने आने वाला है वह टलने वाला नहीं. हर इंसान की समझदारी तथा भलाई इसी में है कि वह जीवन समाप्त होने से पहले प्राथमिकता के साथ जीवन का सत्य जान ले. और वह यह कि जीवन देने वाले के मार्गदर्शन को प्राप्त कर ले. फिर जीवन देने वाले के मार्गदर्शन के अनुरूप जीवन व्यतीत करे, तभी यह जीवन सफल हो सकता है.

186 (ईमान वालो!) तुम्हारे माल और तुम्हारी जान के संबंध में अवश्य तुम्हें परीक्षा से गुज़रना पड़ेगा. और तुम, उन लोगों से जो पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करते हैं और वे जो ख़ुदा का साझीदार ठहराते हैं, बहुत सी कष्टदायी बातें सुनोगे. यदि तुम धैर्य से काम लो और ख़ुदा के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी बने) रहो, तो यह काम (निस्संदेह) साहस के कामों में से है.

187 और जब अल्लाह ने पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वालों से प्रतिज्ञा ली थी कि तुम अल्लाह की किताब को पूर्ण रूप से लोगों के सामने प्रस्तुत करोगे और उसे नहीं छिपाओगे. लेकिन उन्होंने उसे पीठ पीछे डाल दिया और थोड़ी क़ीमत पर उसे बेच डाला. कैसी बुरी चीज़ है जिसको वे ख़रीद रहे हैं.

188 और जो लोग अपने उन कृत्यों पर (अर्थात बुरे कृत्यों पर) ख़ुश हैं और चाहते हैं कि जो काम उन्होंने नहीं किए उसके लिए उनकी प्रशंसा की जाए, उन्हें सज़ा से
सुरक्षित न समझो. उनके लिए दुखदायी सज़ा है.189 आसमानों और ज़मीन का मालिक
(अर्थात समस्त सृष्टि का बादशाह) अल्लाह है. अल्लाह को हर चीज़ पर संपूर्ण प्रभुत्व प्राप्त है.

190 निस्संदेह, आसमानों और पृथ्वी की रचना करने में और रात व दिन के एक के बाद एक आने में बुद्धि वालों के लिए संदेश-युक्त निशानियाँ हैं.

191 **जो खड़े, बैठे और अपने पहलुओं पर लेटे हुए अल्लाह को याद करते रहते हैं और आसमानों तथा ज़मीन की रचना पर चिंतन करते रहते हैं (इस चिंतन के परिणाम-स्वरूप)**

वे पुकार उठते हैं, ऐ हमारे रब, तूने यह सब कुछ व्यर्थ (तथा निरुद्देश्य) नहीं बनाया. (ऐ प्रभु!) महिमावान है तू! तू हमें आग की यातना से बचा ले!

नोटः- अर्थपूर्ण सृष्टी का अर्थशून्य अंत नहीं हो सकता. इसीलिए इंसाफ का दिन आना आवश्यक है, ताकि अच्छे कर्म करने वालों को पुरस्कारित किया जाए और दुष्टों को दंडित किया जाए.

इस्लाम इंसान को ख़ुदा की जिस याद की शिक्षा देता है वह चिंतन वाली याद है, न कि जाप वाली याद. जाप वाली याद की हक़ीक़त इससे अधिक कुछ नहीं कि वह टेप-रेकॉर्डर की तरह है. जबकि इंसान टेप-रेकॉर्डर नहीं, बल्कि एक विवेकवान जीवधारी है. विवेकवान इंसान को चाहिए कि जीवन के हर मोड़ पर ख़ुदा को चिंतनपूर्वक याद करे.

192 ऐ हमारे रब! तूने जिसे आग में डाला, उसे वास्तव में (तूने हमेशा के लिए) तिरस्कृत कर दिया. (निस्संदेह!) अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं!

193 ऐ हमारे रब! हमने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की ओर बुला रहा था. (वह कह रहा था कि) अपने रब पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आए. ऐ प्रभु! हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे! और हमारी बुराइयों को हमसे दूर कर दे! और (ऐ प्रभु!) हमारा अंत नेक लोगों के साथ कर!

194 ऐ हमारे रब! तूने अपने पैग़ंबरों के माध्यम से हमसे जिस चीज़ के वादे किए हैं, वह हमें प्रदान कर और क़यामत के दिन हमें अपमानित न कर! निस्संदेह, तू अपने वादे के विपरीत करने वाला नहीं है!

195 उनके रब ने उनकी दुआ स्वीकृत की (और कहा कि) मैं तुममें से किसी के कर्म को नष्ट करने वाला नहीं, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री. तुम सब आपस में एक-दूसरे से हो. तो जिन लोगों ने (अल्लाह के मार्ग में अपना) घर-बार छोड़ा और जो अपने घरों से निकाले गए और मेरे मार्ग में सताए गए और वे (मेरे लिए) लड़े और मारे गए. मैं उनकी बुराइयाँ उनसे अवश्य दूर कर दूँगा और उन्हें ऐसे बागों में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. यह उनका बदला (इनाम) है अल्लाह के यहाँ. और सबसे अच्छा बदला अल्लाह ही के पास है.

196 (ऐ पैग़ंबर!) सत्य का इन्कार करने वाले लोग ज़मीन पर जो गतिविधियाँ कर रहे हैं,
उससे वे तुम्हें किसी धोके में न डाल पाएँ. 197 (अपनी गतिविधियों द्वारा जो वे पा रहे
हैं) यह थोड़ा सा लाभ है. फिर उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना
है. 198 लेकिन इसके विपरीत जो लोग अपने रब के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने
रहते हैं, उनके लिए ऐसे बाग़ होंगे जिनमें नहरें बहती होंगी, वह उसमें हमेशा रहेंगे. यह
अल्लाह की ओर से उनका अतिथि-सत्कार होगा. और जो कुछ अल्लाह के पास है, नेक
लोगों के लिए वही सबसे उत्तम है. 199 निस्संदेह, पूर्ववर्ती ग्रंथ का अनुसरण करने वालों
में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं. और इस ग्रंथ को (अर्थात क़ुरआन को)
भी मानते हैं और उस ग्रंथ को मानते हैं जो इससे पहले स्वयं उनकी ओर भेजा गया था.
(उनका हाल यह है कि) उनके दिल अल्लाह के आगे झुके हुए हैं. और वे थोड़े से लाभ-
प्राप्ति के लिए अल्लाह के संदेशों का सौदा नहीं करते. उनके लिए उनके रब के पास
(अच्छा) प्रतिफल है और अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है.200 ऐ लोगो जो ईमान

लाए हो! धैर्य से काम लो और मुक़ाबला करने में दृढ़ता का परिचय दो और डटे रहो और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी बने) रहो, ताकि तुम सफलता प्राप्त कर सको.

सूरह–4. अन–निसा

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 **ऐ लोगो! अपने रब के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनो, जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया. फिर उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें (दुनिया में) फैला दिए. और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो, जिसके वास्ते से तुम एक-दूसरे से सहायता चाहते हो. और रिश्ते-नातों के संबंध से भी (उन्हें अच्छे रखने हेतु) सतर्क रहो. निस्संदेह, तुम अल्लाह के निरीक्षण में हो.**

2 और अनाथों को उनका माल सौंप दो. और अच्छे माल को बुरे माल से न
बदलो. और उनके माल, अपने माल के साथ मिलाकर न खा जाओ. यह बहुत बड़ा
अपराध है. 3 और यदि तुम्हें यह आशंका हो कि तुम अनाथों (अनाथ लड़कियों) के
साथ न्याय न कर सकोगे, तो औरतों में से जो तुम्हें पसंद हो, **उनमें से दो-दो, तीन-तीन, चार-चार से विवाह कर लो.** लेकिन यदि तुम्हें यह आशंका हो कि तुम उनके साथ एक जैसा न्यायपूर्ण व्यवहार न कर सकोगे तो एक ही विवाह करो (अर्थात एक ही पत्नी रखो). या जो दासी तुम्हारे स्वामित्व में हो उससे विवाह कर लो. इससे तुम न्याय से न हटने की अधिक संभावना है.

नोटः- इस्लाम एक स्वाभाविक धर्म है. स्वाभाविक धर्म में कोई अस्वाभाविक बात या अस्वाभाविक आदेश संभव नहीं. यहाँ कई विवाह करने की जो अनुमति है, यह स्थायी-

रूपी अनुमति कदापि नहीं है. क्योंकि ऐसी स्थायी अनुमति व्यवहारिक नहीं हो सकती. ऐसी अनुमति स्थायी रूप में व्यवहारिक तभी संभव थी जब मानवीय समाज में पुरुषों के मुक़ाबले कई गुना औरतें हमेशा मौजूद हों.

यह संदेशवचन उस समय प्रकट हुआ, जब उहद की लड़ाई में कई पुरुष मारे गए थे और मदीना में औरतें surplus और निराधार हो गयी थीं. उन औरतों को आधार देने के लिए इस प्रकार की प्रासंगिक अनुमति दी गयी थी. वह भी इस शर्त पर की सबके साथ समान रूप से न्यायपूर्ण व्यवहार किया जाए.

4 और स्त्रियों को उनके महर ख़ुशी से अदा करो. हाँ, यदि वे स्वयं अपनी ख़ुशी से उसमें से कुछ तुम्हारे लिए छोड़ दें, तो उसे तुम (अच्छा और पाक समझकर) हँसी-ख़ुशी से खाओ.

5 और नासमझों को अपनी वह पूँजी न दो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए आत्मनिर्भरता का माध्यम बनाया है. हाँ, उन्हें उसमें से खिलाते और पहनाते रहो और उनसे भलाई की बात कहो. 6 और अनाथों को जाँचते रहो, यहाँ तक कि जब वे विवाह की आयु को पहुँच जाएँ, फिर यदि तुम देखो कि उनमें सूझ-बूझ आ गयी है, तो उन्हें उनके माल सौंप दो. और इस विचार से कि वे बड़े होकर (अपने अधिकार की माँग करेंगे) तुम उनके माल अनुचित रूप से उड़ाकर और जल्दी करके न खा जाओ. (और अनाथ का) जो (अभिभावक) धनवान हो, उसे तो (अनाथ के माल के प्रयोग से) स्वयं को पूर्णतः दूर रखना चाहिए, और जो (अभिभावक) निर्धन हो, वह उचित रीति से (उसमें से) कुछ खा सकता है. फिर जब तुम उनके माल उन्हें सौंपने लगो तो कुछ लोगों को इस पर गवाह बना लो. और अल्लाह हिसाब लेने के लिए पर्याप्त है. 7 माँ-बाप तथा संबंधियों की विरासत में पुरुषों का भी हिस्सा है और माँ-बाप तथा संबंधियों की विरासत में स्त्रियों का भी हिस्सा है, चाहे थोड़ा हो या बहुत. यह (अल्लाह के द्वारा) निर्धारित किया हुआ हिस्सा है. 8 और जब (पैतृक संपत्ती के) बँटवारे के समय (जो हक़दार नहीं हैं

ऐसे) संबंधी और अनाथ और निर्धन उपस्थित हों तो उन्हें भी उसमें से कुछ दे दो और उनसे सहानुभूतीपूर्वक बात करो. 9 और लोगों को डरना चाहिए कि यदि वे स्वयं अपने पीछे कमज़ोर बच्चे छोड़ जाते तो उन्हें अपने बच्चों के संबंध से कितनी चिंता होती. तो उन्हें चाहिए की अल्लाह के प्रति सजग (एवं उत्तरदायी) रहें और बात सीधी कहें. 10 **जो लोग अनाथों का माल अन्यायपूर्ण रूप से खाते हैं, वे वास्तव में अपने पेटों में आग भर रहे हैं और वे अवश्य भड़कती हुई आग में डाले जाएंगे.**

नोटः- क़ुरआन की विचारधारा वास्तविक उत्तरदायित्व की भावना पैदा करने वाली शक्तिशाली विचारधारा है.

11 (ऐ ईमान वालो!) अल्लाह तुम्हें तुम्हारी संतान के संबंध में आदेश देता है कि एक पुरुष का हिस्सा दो स्त्रियों के हिस्से के बराबर है. यदि स्त्रियाँ दो से अधिक हों तो उनके लिए दो तिहाई हिस्सा है उस संपत्ती का जो मृतक छोड़ गया है. और यदि वह अकेली है तो उसके लिए आधा हिस्सा है. और मृतक के माता-पिता को दोनों में से प्रत्येक के लिए छठवाँ हिस्सा है उस संपत्ती का, जो वह छोड़ गया है, (माता-पिता का) यह हिस्सा इस शर्त पर है कि मृतक की संतान हो. और यदि मृतक की संतान न हो और उसके माता-पिता ही उसके वारिस हों तो उसकी माँ का एक तिहाई हिस्सा है (अर्थात दो-तिहाई हिस्सा पिता का होगा). और यदि मृतक के भाई-बहन हों तो उसकी माँ के लिए छठवाँ हिस्सा है. यह हिस्से मृतक की वसीयत पूरी करने के बाद और जो क़र्ज़ उस पर हो उसे अदा करने के बाद निकाले जाएंगे. तुम्हारे बाप हों या तुम्हारे बेटे, तुम नहीं जानते कि उनमें सबसे लाभप्रद कौन है. यह अल्लाह का निर्धारित किया हुआ हिस्सा है. निस्संदेह, अल्लाह ज्ञान वाला तथा विवेक वाला है. 12 और तुम्हारी पत्नियों ने अपने पश्चात जो कुछ छोड़ा हो, उसमें तुम्हारा आधा हिस्सा है, लेकिन उस स्थिती में कि

उनकी कोई संतान नहीं. और यदि उनकी संतान हो तो वे जो छोड़ जाएँ उसमें तुम्हारा चौथाई हिस्सा होगा. यह (हिस्से उनकी) वसीयत पूरी करने के बाद जो उन्होंने कर रखी है तथा (उन पर कोई) ऋण हो तो उसकी अदायगी के बाद (बचे हुए माल में से) होंगे. और जो कुछ तुम छोड़ जाओ उसमें (तुम्हारी) पत्नियों का चौथाई हिस्सा है, यह तब, जब तुम्हारी संतान नहीं है. और यदि तुम्हारी संतान है तो जो कुछ तुम छोड़ जाओ उसमें (तुम्हारी) पत्नियों का आठवाँ हिस्सा होगा, यह हिस्से तुमने की हुई वसीयत पूरी करने के बाद तथा (तुम पर कोई) ऋण हो तो उसकी अदायगी के बाद किए जाएंगे.

और यदि ऐसा हो कि मृतक पुरुष तथा मृतक स्त्री की न तो संतान हो और न उसके माता-पिता जीवित हों, लेकिन यदि उस मृतक के एक भाई या एक बहन हो तो दोनों में से प्रत्येक के लिए छठा हिस्सा है. और यदि वे (भाई-बहन) इससे अधिक हों तो वे एक तिहाई हिस्से में सब साझीदार होंगे. यह हिस्से (मृतक के द्वारा की गयी) वसीयत पूरी करने के बाद तथा (मृतक पर) कोई ऋण हो तो उसकी अदायगी के बाद निकाले जाएंगे, बस शर्त यह है कि (बँटवारे के माध्यम से) किसी को हानि न पहुँचाई जाए. यह आदेश अल्लाह की ओर से है. और अल्लाह सर्वज्ञानी तथा सहनशील है.

13 यह अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाएँ हैं. और जो कोई अल्लाह और उसके पैग़ंबर के आदेशों का पालन करेगा, उसे अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उसमें वह सदैव रहेगा, और यही बड़ी सफलता है. 14 लेकिन जो व्यक्ति अल्लाह और उसके पैग़ंबर के आदेशों का पालन नहीं करेगा और अल्लाह की (निर्धारित की हुई) सीमाओं का उल्लंघन करेगा, उसे अल्लाह आग में डालेगा, जिसमें वह हमेशा रहेगा. और उसके लिए अपमानजनक सज़ा है.

15 और तुम्हारी स्त्रियों में से जो व्यभिचार कर बैठें, उन पर अपने में से चार आदमियों की गवाही लो. फिर यदि वे गवाही दे दें, तो उन स्त्रियों को घर में बंद रखो,

यहाँ तक कि उन्हें मृत्यु आ जाए या फिर अल्लाह उनके लिए कोई रास्ता निकाल दे. 16 और तुममें से दोनों जो यह (अश्लील) कर्म करें, तो उन दोनों को सज़ा दो. फिर यदि वे पश्चाताप करते हुए अपना सुधार कर लें तो उन्हें छोड़ दो. निस्संदेह, अल्लाह पश्चाताप का स्वीकार करने वाला तथा दयावान है. 17 पश्चाताप, जिसे स्वीकार करना अल्लाह के ज़िम्मे है, वह केवल उन्हीं लोगों का है, जो नासमझी के कारण कोई बुरा कृत्य कर बैठते हैं, फिर तुरंत ही पश्चाताप करते हुए (सुधार की ओर) पलटते हैं. ऐसे ही लोगों का पश्चाताप अल्लाह स्वीकार करता है. और अल्लाह सर्वज्ञानी एवं बुद्धिमान है. 18 लेकिन ऐसे लोगों से पश्चात्ताप का स्वीकार नहीं किया जाएगा जो निरंतर बुरे कर्म किये चले जाते हैं, यहाँ तक उनमें से किसी की मृत्यु का समय आ जाता है तो तब वह कहने लगता है कि मैं अब सचमुच पश्चाताप करता हूँ. और इसी प्रकार न उन लोगों का 'पश्चाताप' पश्चाताप है जो मरते दम तक सत्य को नकारते रहे. ऐसे लोगों के लिए हमने दुःखदायी यातना तैयार कर रखी है.

19 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम्हारे लिए यह वैध नहीं कि तुम ज़बरदस्ती औरतों के वारिस बन बैठो. और न उन्हें इस उद्देश्य से रोके रखो कि तुमने जो कुछ उन्हें दिया है उसका कुछ हिस्सा उनसे ले लो. लेकिन यदि वे स्पष्ट रूप से कोई अश्लील कर्म कर बैठें तो दूसरी बात है. और उनके साथ भले तरीक़े से जीवन व्यतीत करो. यदि वे तुम्हें नापसंद हो, तो हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें पसंद न हो, लेकिन अल्लाह ने उसमें तुम्हारे लिए बहुत बड़ी भलाई रख दी हो. 20 और यदि तुमने एक पत्नी की जगह दूसरी पत्नी के ले आने का इरादा कर लिया हो तो चाहे तुमने उसे ढेर-सा माल ही क्यों न दिया हो, उसमें से कुछ वापस न लेना. क्या तुम उन पर झूठा आरोप लगाकर तथा खुले रूप में अत्याचार करके वापस लोगे? 21 और तुम किस प्रकार उस (धन) को वापस ले सकते हो, जबकि तुम एक-दूसरे से पति-पत्नी के संबंध स्थापित कर चुके हो. और वह तुम से

दृढ़ प्रतिज्ञा ले चुकी हैं. 22 और उन औरतों से कदापि विवाह न करो जिनसे तुम्हारे बाप विवाह कर चुके हैं (अर्थात सौतेली माँ से), लेकिन जो पहले हो चुका सो हो चुका. निस्संदेह, यह निर्लज्जता तथा घृणा की बात है और बुरी रीति है.

23 तुम पर हराम (निषिद्ध) हैं तुम्हारी माएँ, तुम्हारी बेटियाँ, तुम्हारी बहनें, तुम्हारी फुफियाँ, तुम्हारी मौसियाँ, तुम्हारी भतीजियाँ और भान्जियाँ और तुम्हारी वह माएँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया और दूध के रिश्ते से तुम्हारी बहनें और तुम्हारे पत्नियों की माएँ और उनकी बेटियाँ (अर्थात तुम्हारी सौतेली बेटियाँ) जो तुम्हारे पालन-पोषण में हैं. और जो तुम्हारे उन पत्नियों से हैं जिनसे तुम (अब) वैवाहिक संबंध स्थापित किए हुए हो. लेकिन यदि तुमने उनसे विवाहोत्तर पती-पत्नी के संबंध स्थापित न किए हों (तो उनकी बेटियों से) विवाह करने में तुम पर कोई गुनाह नहीं. (और हराम है तुम पर) तुम्हारे उन बेटों की पत्नियाँ जो तुम्हारी संतान हो और यह भी (हराम है) कि तुम दो बहनों को (अपनी पत्नियों के रूप में) इकट्ठा करो. लेकिन (इस मार्गदर्शन से) पहले जो हो चुका सो हो चुका. निस्संदेह, अल्लाह अत्यंत क्षमाशील एवं दयावान है.

पारा – 5

24 और वे औरतें भी हराम (अर्थात विवाह के लिए निषिद्ध) हैं, जो किसी दूसरे से विवाहित हों, लेकिन (इस संबंध में अपवाद) यह कि वे युद्ध-बंदी

के रूप में तुम्हारे क़ब्ज़े में आएँ (तो ऐसी स्त्रियों से तुम विवाह कर सकते हो). यह अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है. (जिनका ऊपर उल्लेख आ चुका है) उनके अतिरिक्त जो औरतें हैं वे सब तुम्हारे लिए वैध (हलाल) हैं, शर्त यह है कि अपने माल के द्वारा उन्हें प्राप्त करो. वह यह कि तुम उनसे विवाह करो न कि व्यभिचार करने लगो. फिर जो दांपत्य जीवन का लाभ तुम उनसे लो, उसके बदले उनका निश्चित किया हुआ महर अदा करो. और महर निश्चित करने के बाद परस्पर सहमती से तुम्हारे बीच कोई समझौता हो जाए तो इसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं. निस्संदेह, अल्लाह सर्वज्ञानी तथा बुद्धिमान है. 25 और तुममें से जो व्यक्ति उस स्थिती में न हो कि वह आज़ाद तथा पाकदामन (अर्थात सच्चरित्र) ईमान वाली औरतों से विवाह कर सके तो उसे चाहिए कि वह तुम्हारी उन ईमान वाली दासियों में से किसी के साथ विवाह कर ले जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं. अल्लाह तुम्हारे ईमान को भली-भाँति जानता है. तुम सब आपस में एक-दूसरे से संबंधित हो. तो उनके मालिकों की अनुमति से तुम उनसे विवाह कर लो. और सामान्य रीति के अनुसार उन्हें उनके महर अदा कर दो. इस तरह उनसे विवाह करके उन्हें विवाह के बंधन में लाया जाए, न कि स्वच्छंद कामुकता को अपनाया जाए और न चोरी-छुपे अवैध संबंध बनाएँ. फिर जब वे विवाह के बंधन में आ जाएँ और उसके बाद कोई अश्लील कर्म कर बैठें तो उनके लिए उस सज़ा की आधी सज़ा है जो (इस प्रकार के कृत्य करने वाली) स्वतंत्र स्त्रियों के लिए निर्धारित है. यह (दासियों से विवाह करने का विकल्प) तुममें से उस व्यक्ति के लिए है जिसे (विवाह न करने की अवस्था में) गुनाह में लिप्त होने की आशंका हो. और यदि तुम धैर्य से काम लो तो यह तुम्हारे लिए अधिक उत्तम है. और अल्लाह क्षमाशील एवं दयावान है.

26 अल्लाह चाहता है कि (यह सब) चीज़ें तुम्हारे लिए स्पष्ट कर दें और तुम्हें उन (सदाचारी) लोगों के रास्ते बताएँ जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं. और (वह चाहता है कि)

तुम पर (अपनी) कृपादृष्टी डाले. अल्लाह सर्वज्ञानी तथा बुद्धिमान है. 27 हाँ, अल्लाह तो तुम्हारी ओर अपनी दयालुता के साथ पलटना चाहता है, लेकिन जो लोग अपनी इच्छाओं का अनुसरण कर रहे हैं, वे चाहते हैं कि तुम सन्मार्ग से विचलित होकर दूर निकल जाओ.

28 अल्लाह चाहता है कि तुम पर से बोझ-हल्का करे, क्योंकि इंसान कमज़ोर बनाया गया है.

29 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! आपस में एक-दूसरे का माल अवैध रूप से न खाओ. सिवाय इसके कि तुम्हारी परस्पर सहमति से लेन-देन का व्यवहार हो. और आपस में एक-दूसरे की हत्या न करो. निस्संदेह, अल्लाह तुम पर अत्यंत दयावान है. 30 और जो कोई विद्रोह एवं अत्याचार के साथ ऐसा करेगा उसे हम अवश्य आग में डालेंगे और यह अल्लाह के लिए आसान है. 31 यदि तुम उन बड़े-बड़े गुनाहों से बचते रहे, जिनसे तुम्हें मना किया जा रहा है तो हम तुम्हारी छोटी-छोटी ग़लतियों को तुम्हारे (कर्म-पत्र) से हटा देंगे. और तुम्हें सम्मान की जगह (अर्थात जन्नत) में दाख़िल करेंगे. 32 जो कुछ अल्लाह ने तुममें से किसी को दूसरों के मुक़ाबले में अधिक दिया है, तुम उसकी कामना न करो. **पुरुषों ने जो कुछ कमाया है उसके अनुसार उनका हिस्सा है और स्त्रियों ने जो कुछ कमाया है उसके अनुसार उनका हिस्सा है.** और अल्लाह से उसकी कृपा प्राप्त करने के लिए याचना करो. निस्संदेह, अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है.

नोटः- सम्मान, प्रतिफल और परिणाम के मामले में इस्लाम स्त्री और पुरुष में कोई अंतर नहीं करता.

लेकिन जहाँ तक जीवन की विभिन्न व्यवहारिक भूमिकाओं का संबंध है स्त्री और पुरुष में स्वाभाविक अंतर मौजूद है. हक़ीक़त यह है कि व्यवहारिक जीवन में स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के लिए पूरक हैं न कि समान.

33 और हमने माता-पिता तथा निकट-संबंधियों के (पीछे) छोड़े हुए माल में हर एक के लिए वारिस निर्धारित कर दिए हैं. और जिन लोगों को तुम वचन दे चुके हो, उन्हें भी उनका हिस्सा दो. निस्संदेह! अल्लाह के सामने है हर चीज़.

34 पुरुष, स्त्रियों के संरक्षक हैं, इसलिए कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर विशिष्टता प्रदान की है, और इसलिए भी कि पुरुष, स्त्रियों पर अपना धन खर्च करते हैं. जो नेक स्त्रियाँ हैं, वह आज्ञापालन करने वाली तथा रहस्यों की रक्षा करने वाली होती हैं. इसलिए कि अल्लाह रहस्यों की रक्षा करने का आदेश देता है. और जिन स्त्रियों से तुम्हें अवज्ञा की आशंका हो तो उन्हें समझाओ और (फिर भी अवज्ञा जारी रखने पर) उन्हें बिस्तरों में अकेली छोड़ दो **और (अंतिम उपाय के रूप में सुधार हेतु) उन्हें सज़ा दो.** फिर यदि वे तुम्हारा आज्ञापालन करने लगें तो उनके विरुद्ध कोई आरोप का रास्ता न तलाश करो. निस्संदेह! अल्लाह सर्वोच्च है, सबसे महान है.

नोटः- क़ुरआन में मौजूद औरत को मारने की बात को बहुत ज़्यादा misinterpret किया गया है. हक़ीक़त यह है कि इस दुनिया में हर औरत और मर्द आज़ाद हैं. आज़ादी होगी तो दुरुपयोग भी होगा. घर का जो ज़िम्मेदार मुखिया होता है वह ऐसे ही दुरुपयोग को न सिर्फ़ पत्नी के मामले में control करता है, बल्कि घर के दूसरे members के मामले में भी control करता है. बस इतनी सी चीज़ है जिसे स्त्री-पुरुष समानता और असमानता के चश्मे से देखा गया है.

दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह कि यहाँ मारना न दुश्मनी का मारना है और न हात-पैर तोड़ना. और तो और इसकी सिर्फ़ सुधार के last resort के तौर पर इजाज़त दी गयी है. और यह इजाज़त भी सशर्त है. पहले समझाना है, न मानने पर नाराज़गी व्यक्त करने के लिए दूरी बनाना है फिर भी न माने तो सुधार के last resort के तौर पर सज़ा दी जा सकती है. फिर इसके तुरंत बाद कहा गया कि यदि उन्हें बात समझ में आ जाए तो पती को उनके विरुद्ध दोषारोपण करने की अर्थात पुरानी बातें कुरेदने की हरगिज़ इजाज़त नहीं.

समझने की एक महत्वपूर्ण बात यह है कि पति घर का मुखिया और ज़िम्मेदार होता है. वह घर की सारी देखभाल करता है. वह मेहनत से पैसा कमाता है और अपने बीवी-बच्चों पर खर्च करता है. वह अपने घर वालों का सच्चा हितैषी होता है. इन्हीं कारणों के चलते ख़ुदा ने घर के मुखिया के तौर पर पती को घर की गाड़ी को नियंत्रित और सुव्यवस्थित बनाए रखने के लिए कुछ अधिकार सशर्त तौर पर दिए हैं. इन अधिकारों का उद्देश्य घर की भलाई है न कि अत्याचार की छूट. हक़ीक़त यह है कि विवाहबंधन समाप्त करना इतनी ज़्यादा बुरी चीज़ है कि उसके मुक़ाबले में सुधार हेतु जो भी कोशिश की जा सकती है की जानी चाहिए. सुधार हेतु सज़ा एक अस्थायी चीज़ है, लेकिन बिगाड़ के चलते यदि विवाहबंधन समाप्त हो जाता है तो वह संपूर्ण जीवन को प्रभावित करता है.

हक़ीक़त यह है कि आज़ाद इंसान को अपने रवैय्ये को सही रखने के लिए उसे डर का होना आवश्यक है. किसी भी इन्स्टिटूशन में मुखिया का रोल इसीलिए होता है कि उसके अंडर में रहने वाले लोग उसके प्रति उत्तरदायी रहें. घर भी एक इन्स्टिटूशन है. चाहे मामला पत्नी का हो या बेटा-बेटी का या घर के किसी अन्य सदस्य का, घर के मुखिया का डर एक अच्छे उद्देश्य के लिए आवश्यक है. **वास्तव में यह हित-चिंतन की घटना है जिसे misinterpret करने वाले अत्याचार की घटना का रंग देते हैं.**

पैग़ंबरे-इस्लाम ने अपने अंतिम व्याख्यान में अपने अनुयायियों को यह स्पष्ट आदेश दिया था, ऐ लोगो! अपनी पत्नियों के मामले में अल्लाह से डरो; और अल्लाह से डरने वाला किसी के साथ अन्याय व अत्याचार नहीं कर सकता.

35 **और यदि तुम्हें पति-पत्नी के बीच संबंधों के बिगड़ने की आशंका हो तो पति के संबंधियों में से एक फ़ैसला करने वाला मध्यस्थ और पत्नी के संबंधियों में से एक फ़ैसला करने वाला मध्यस्थ नियुक्त करो. यदि वे दोनों सुधार चाहेंगे तो अल्लाह उनके बीच मेल-मिलाप का रास्ता निकाल देगा. निस्संदेह! अल्लाह सब कुछ जानने वाला और हर चीज़ की ख़बर रखने वाला है.**

नोटः- मारना सुधार हेतु परिणामकारक सिद्ध होने वाला हो तभी मारने की इजाज़त है. यदि वह परिणामकारक साबित न होने वाला हो, तो ऐसी स्थिती में मध्यस्थ को नियुक्त करके समस्या का समाधान तलाशने को कहा गया है. यह तमाम विकल्प उस तलाक़-रूपी सबसे बड़ी बुराई से बचने हेतु हैं, जिसके द्वारा विवाह बंधन समाप्त होने वाला हो. विवाह-बंधन समाप्त करने के विकल्प के मुक़ाबले में ऊपर बताए गए तमाम विकल्प अच्छे विकल्प हैं.

इन तमाम विकल्पों की रोशनी में यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम में प्रस्तुत मार्गदर्शन इंसान के सच्चे मालिक का मार्गदर्शन है और उसे अपनाने में ही इंसान की भलाई है.

36 और अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज़ को उसका साझीदार न बनाओ.
और अच्छा व्यवहार करो माता-पिता के साथ तथा संबंधियों के साथ तथा अनाथों एवं
निर्धनों के साथ और क़रीबी पड़ोसी के साथ तथा अपरिचित पड़ोसी के साथ और पास में
रहने वाले व्यक्ति के साथ और मुसाफ़िर के साथ और उनके साथ जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों
(अर्थात दास तथा दासी के साथ). निस्संदेह! अल्लाह ऐसे आदमी को पसंद नहीं करता
जो अपने अहं में चूर हो और जो डींगें मारता हो. 37 (और ऐसे लोग भी अल्लाह को
पसंद नहीं,) जो स्वयं कृपणता पूर्वक व्यवहार करते हैं और दूसरों को भी कृपणता
सिखाते हैं और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें अपनी कृपा से दे रखा है उसे छिपाते हैं और हमने
सत्य का इन्कार करने वालों के लिए अपमानजनक सज़ा तैयार कर रखी है.

38 और (वे लोग भी अल्लाह को पसंद नहीं) जो अपना धन केवल लोगों को दिखाने हेतु खर्च करते हैं और वे अल्लाह पर तथा मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन पर विश्वास नहीं रखते. और जिसका साथी शैतान बन जाए तो वह बहुत ही बुरा साथी है. 39 उनका क्या (नुक़सान) हो जाता यदि वे अल्लाह पर और मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन पर विश्वास करने वाले बनते और अल्लाह ने जो कुछ उन्हें दे रखा है उसमें से (अल्लाह की प्रसन्नता के लिए) खर्च करते. अल्लाह उन्हें भली-भाँति जानता है.

नोटः- इंसान को चाहिए कि वह अपने मालिक के मार्गदर्शन में चले और अपने मालिक की प्रसन्नता को अपने जीवन का उद्देश्य बनाए. ऐसा ही इंसान मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में सफल होने वाला है. इसके विपरीत जो शैतान को अपना मार्गदर्शक बनाए, निस्संदेह वह हमेशा के लिए बर्बाद होने वाला है.

जो लोग उन्हें प्राप्त धन को अपने स्वामित्व की चीज़ समझते हैं और इस सत्य से ग़ाफ़िल हैं कि जो धन उनके पास है वह किसी के देने से उन्हें प्राप्त हुआ है. ऐसे लोग उस धन से इस तरह चिमटे रहते हैं जैसे उनका धन हमेशा उनके साथ रहने वाला है.

40 निस्संदेह! अल्लाह किसी पर ज़रा सा भी अन्याय नहीं करता. यदि किसी ने नेकी की हो तो वह उसे दोगुना कर देता है. और अपनी ओर से बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करता है.

41 फिर उस समय (अपराधियों का) क्या हाल होगा. जब हम हर समुदाय में से एक गवाह लाएंगे और (पैग़ंबर!) तुम्हें उन लोगों पर (अर्थात सारे गवाहों पर) गवाह बनाकर खड़ा करेंगे. 42 **वे लोग जिन्होंने सत्य का इन्कार किया था और पैग़ंबर की बात नहीं मानी थी,** उस दिन चाहेंगे कि उन्हें धरती में समोकर उसे बराबर कर दिया जाए. और वे अल्लाह से कोई बात छिपा न सकेंगे.

नोटः- समस्त मानवीय इतिहास में ख़ुदा की ओर से मार्गदर्शन लेकर बार-बार पैग़ंबर आते रहे. लेकिन थोडे से लोगों के सिवा बहुसंख्य लोग उनका इन्कार करते रहे.

ख़ुदा की ओर से आए हुए सत्य का तथा ख़ुदा के प्रतिनिधी का इन्कार करना कितना ख़तरनाक है, यह इस संदेश-वचन में स्पष्ट किया गया है.

43 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जब तुम नशे की हालत में हो, तो नमाज़ के निकट न जाना, उस समय तक (न जाना) जब तक, तुम जो कुछ कह रहे हो उसे समझने लगो. और इसी प्रकार (शारीरिक) अस्वच्छता की अवस्था में भी नमाज़ के निकट न जाओ, जब तक स्नान न कर लो, सिवाय इसके कि तुम सफ़र में हो.

और यदि तुम बीमार हो या यात्रा कर रहे हो और तुममें से कोई शौच करके आया हो और तुमने औरतों के साथ (पति–पत्नी के) संबंध स्थापित किए हों, फिर यदि तुम्हें पानी न मिले तो साफ़ मिट्टी से तैमुम कर लो (तैमुम अर्थात पानी उपलब्ध न होने पर

या बीमारी की अवस्था में स्वयं को पाक करने की एक विधि) और साफ़ मिट्टी से अपने चेहरों और हाथों पर मसह कर लो (अर्थात हाथ फेर लो). निस्संदेह! अल्लाह नरमी से काम लेने वाला तथा क्षमाशील है.

44 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब से हिस्सा मिला था, वे पथभ्रष्टता को खरीद रहे हैं और चाहते हैं कि तुम भी सन्मार्ग से हट जाओ. 45 अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है और अल्लाह तुम्हारे संरक्षण के लिए पर्याप्त है और अल्लाह तुम्हारी सहायता के लिए भी पर्याप्त है. 46 यहूदियों में कुछ लोग ऐसे हैं जो (ख़ुदा की ओर से) प्रकट शब्दों को (उनके संदर्भ से हटा कर) कुछ और ही (विकृत) अर्थ दे देते हैं और कहते हैं कि हमने सुना लेकिन हम नहीं मानते. और कहते हैं कि सुनने (की नौटंकी) करो, लेकिन सुनो नहीं. और कहते हैं, (ऐ मुहम्मद!) हमारी बात ध्यानपूर्वक सुनो. इस प्रकार वे अपनी ज़बानों को मोड़ कर कहते हैं 'राईना' (अर्थात ऐ हमारे चरवाहे!) यह सब दीन (मज़हब) पर चोट करने के लिए.

यदि वे कहते, हमने सुना और माना, और सुनिए और हमारी ओर ध्यान दीजिए तो यह उनके लिए अधिक अच्छा और उचित होता. लेकिन उनके सत्य नकारने के कारण, उन पर अल्लाह की फिटकार है. तो अब वह ईमान नहीं लाएंगे, लेकिन बहुत कम.

47 पूर्ववर्ती किताब का अनुसरण करने वालो! इस किताब को मानो जो अब हमने उतारी है, पुष्टि करने वाली है उस किताब की जो तुम्हारे पास पहले से है. (इस पर ईमान ले आओ) इससे पहले कि हम चेहरों को मिटा दें, फिर उन्हें उलट दें पीठ की ओर, या उन पर फिटकार करें जैसे हमने फिटकार की थी सबत (शनिवार का नियम तोड़ने) वालों पर. और अल्लाह का हुक्म तो पूरा होकर रहता है.

48 **अल्लाह इस (कृत्य) को कदापि माफ़ नहीं करेगा कि किसी को उसका साझी ठहराया जाए, लेकिन इसके सिवा जो भी (बुरे कर्म)**

हैं, वह जिसके लिए चाहेगा, माफ़ कर देगा. **और जिसने अल्लाह का साझीदार ठहराया उसने बहुत बड़ा झूठ गढ़कर महापाप को अंजाम दिया.**

नोटः- अल्लाह का साझीदार ठहराना क्या है ? वह यह है कि हर इंसान के अंदर स्वभावतः अपने सृष्टा के प्रति जो उपासना-भाव है, उसको सृष्टा के सिवा दूसरों की ओर मोड़ना. यह इंसान के अंदर मौजूद सच्चे भाव का दुरुपयोग करना है (This is a wrong application of the right feeling.).सच्चाई यह है कि ख़ुदा को पाना इंसान की सबसे बड़ी आवश्यकता है. ख़ुदा को पाने का भाव इंसान के स्वभाव में इस तरह मौजूद है कि कोई व्यक्ति ख़ुदा के बग़ैर रह नहीं सकता. इंसान की पथभ्रष्टता ख़ुदा को छोड़ना नहीं है, बल्कि वास्तविक ख़ुदा की जगह किसी स्वयं-कल्पित एवं अवास्तविक ख़ुदा को अपना ख़ुदा बना लेना है. यह ऐसा महापाप है जिसके लिए कोई माफ़ी नहीं.

49 क्या तुम्हें उन लोगों के बारे में मालूम नहीं, जो अपने आपको (बहुत ही) निर्मल (पावन) समझते हैं, हालाँकि अल्लाह ही निर्मलता प्रदान करता है जिसको चाहता है. और उन पर ज़रा सा भी अन्याय नहीं होगा. 50 देखो! वे किस प्रकार अल्लाह पर झूठ गढ़ रहे हैं. और (उनके स्पष्ट रूप से गुनाहगार) होने के लिए यही गुनाह पर्याप्त है.

51 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक भाग दिया गया था, लेकिन वे (जादू वग़ैरा जैसी) अंध-विश्वासपूर्ण अवास्तविक चीज़ों पर विश्वास करते हैं तथा (असत्य की ओर प्रेरणा देने वाली) शैतानी शक्तियों को मानते हैं. और सत्य का इन्कार करने वाले लोगों के संबंध से कहते हैं कि वे ईमान वालों से ज़्यादा सही रास्ते पर हैं. 52 (लेकिन वास्तव में) यही वे लोग हैं, जिन पर अल्लाह ने फिटकार की है और जिस पर अल्लाह की फिटकार हो, तुम उसका कोई सहायक कदापि नहीं पा सकते. 53

क्या अल्लाह की सत्ता में इनका भी कुछ हस्तक्षेप है? यदि ऐसा होता तो ये लोगों को तिल बराबर भी कुछ न देते. 54 या फिर क्या यह लोग केवल इसलिए द्वेष-भाव रखते हैं कि अल्लाह ने उन्हें अपना अनुग्रह प्रदान किया है. हमने इब्राहीम के लोगों को किताब और बुद्धिमानी प्रदान की और हमने उन्हें बड़ा साम्राज्य भी दिया है. 55 फिर उनमें से कोई उस पर ईमान लाया और किसी ने उससे मुँह मोड़ा और मुँह मोड़ने वालों के लिए तो बस जहन्नम की भड़कती हुई आग ही पर्याप्त है. 56 जिन लोगों ने हमारे संदेशों द्वारा प्रकट होने वाले सत्य को झुठलाया, निश्चय ही उन्हें हम आग में झोंक देंगे. जब उनके शरीर की त्वचा जल जाएगी तो हम उस जली हुई त्वचा की जगह दूसरी नई त्वचा (बार-बार) लाते रहेंगे, ताकि वे यातना चखते रहें. निस्संदेह, अल्लाह सामर्थ्यवान तथा बुद्धिमान है. 57 और जो लोग ईमान लाए तथा उन्होंने अच्छे कर्म किए तो हम उन्हें ऐसे बागों में प्रवेश देंगे, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उसमें वे हमेशा रहेंगे. वहाँ उनके लिए निर्मल जीवनसाथी होंगे. और उन्हें हम घनी छाँव में रखेंगे.

58 (ईमान वालो!) अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि अमानतें (विश्वास पर रखी हुई चीज़ें) उनके वास्तविक मालिकों तक पहुँचा दो. और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो तो न्यायपूर्वक फ़ैसला करो. अल्लाह जिस बात का तुम्हें उपदेश देता है, निश्चय ही वह बहुत उत्तम है. निस्संदेह! अल्लाह सब कुछ सुनने वाला तथा सब कुछ देखने वाला है. 59 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह का आज्ञापालन करो और पैग़ंबर का आज्ञापालन करो और उसकी भी (आज्ञा का पालन करो) जो तुममें अधिकार-पद पर है. फिर यदि तुम्हारे बीच किसी मामले में मतभेद हो जाए तो उस मामले को अल्लाह और पैग़ंबर की ओर लौटाओ, यदि तुम अल्लाह एवं मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन पर विश्वास रखते हो. यही बात उत्तम है और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छी है. 60 क्या तुम उन लोगों से अवगत नहीं जो दावा तो यह करते हैं कि वे उस ईश-संदेश पर ईमान रखते हैं जो तुम्हारी ओर

प्रकट किया गया और जो तुमसे पहले प्रकट किया गया. लेकिन वे चाहते हैं कि अपने मामले को शैतानी शक्तियों के पास ले जाकर फ़ैसला कराएँ. हालाँकि उन्हें हुक्म दिया गया है कि वे शैतानी शक्तियों को नकारें. लेकिन शैतान चाहता है कि उन्हें घोर पथभ्रष्टता में डाल दे. 61 और जब उनसे कहा जाता है कि आओ उस चीज़ की ओर जो अल्लाह ने उतारी है और पैग़ंबर की ओर, तो तुम देखोगे कि कपटाचारी तुमसे कतरा जाते हैं. 62 फिर उस समय क्या होगा, जब उनके हाथों की लाई हुई मुसीबत उन पर आ पड़ेगी. उस वक़्त ये तुम्हारे पास क़समें खाते हुए आएंगे कि ख़ुदा की क़सम, हम तो मात्र भलाई और मिलाप के इच्छुक थे. 63 इन लोगों के दिलों में जो कुछ है अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है. तो तुम उनकी बातों की ओर ध्यान न दो (उनसे न उलझो), उन्हें नसीहत करो और उनसे ऐसी बात कहो जो दिलों में उतर जाए.

64 हमने जो भी पैग़ंबर भेजा इसीलिए भेजा कि अल्लाह के आदेश के अनुसार उसका आज्ञापालन किया जाए. और जब उन्होंने (बुरे कर्म करके) अपने आप पर अत्याचार किया था, यदि वे तुम्हारे पास आते और अल्लाह से क्षमा माँगते और पैग़ंबर भी उनके लिए (अल्लाह से उन्हें) क्षमा करने की प्रार्थना करता तो वे अवश्य अल्लाह को क्षमा करने वाला तथा दया करने वाला पाते. 65 हाँ! (पैग़ंबर!) तुम्हारे रब की क़सम! ये कभी ईमान वाले नहीं हो सकते, जब तक वे अपने आपसी झगड़ों में तुम्हें फ़ैसला करने वाला न मान लें, फिर जो फ़ैसला तुम करो, उस पर ये अपने दिलों में कोई तंगी न पाएँ और उसे पूरी तरह स्वीकार कर लें. 66 और यदि हम उन्हें हुक्म देते कि अपनी जानों को क़ुरबान करो और अपने घर-बार छोड़ो, तो उनमें से थोड़े ही ऐसा करते. और यदि ये लोग वह करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो उनके लिए यह निश्चित रूप से बेहतर होता और इससे उनके ईमान को और अधिक दृढ़ता प्राप्त होती. 67 और ऐसा करने पर, तब हम उन्हें अपने पास से बड़ा प्रतिफल अवश्य प्रदान करते. 68 और हम

उन्हें सीधा (अर्थात सफलता का) रास्ता दिखाते. 69 और जो अल्लाह और पैग़ंबर की आज्ञा का पालन करेगा, वह उन लोगों के साथ होगा जिन्हें अल्लाह ने पुरस्कृत किया, अर्थात — पैग़ंबर और सत्य का साथ देने वाले लोग तथा दूसरों पर सत्य की साक्ष देने वाले लोग और सत्कर्म करने वाले लोग. और क्या ही अच्छे साथी हैं ये! 70 यह है अल्लाह की कृपा और अल्लाह जैसा ज्ञानवान दूसरा कोई नहीं.

71 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! (किसी भी आक्रमण के विरुद्ध आत्मरक्षा करने हेतु सचेत रहो और) अपनी रक्षा के सामान अपने पास लिए रहो. और परिस्थिती के अनुसार अलग-अलग तुकड़ियों के रूप में निकलो या इकट्ठे निकलो. 72 और तुममें निश्चित रूप से कोई ऐसा भी है जो पीछे रह जाता है. फिर यदि तुम्हें कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहता है कि अल्लाह ने मुझ पर यह कृपा की, कि मैं उन लोगों के साथ नहीं गया. 73 और यदि अल्लाह की ओर से तुम पर अनुग्रह हो तो कहता है (और इस तरह कहता है) कि मानो तुम्हारे और उसके बीच कोई मुहब्बत (आत्मीयता) का संबंध नहीं, कि काश! मैं भी उनके साथ होता तो बड़ी सफलता प्राप्त करता. 74 **तो चाहिए कि अल्लाह के मार्ग में लड़ें वे लोग जो मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन के बदले (वर्तमान) दुनिया के जीवन को बेच देते हैं. और जो व्यक्ति अल्लाह के मार्ग में लड़े, फिर वह मारा जाए या विजय प्राप्त करे, तो हम उसे शीघ्र ही बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे.**

नोटः-जिन लोगों ने जीवन के सत्य को गंभीरतापूर्वक जान लिया, उन्हीं लोगों के लिए यह संभव है कि वे मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए वर्तमान क्षणभंगुर जीवन ख़ुदा को पूर्णतः समर्पित कर दें.

75 और तुम्हें क्या हुआ कि तुम युद्ध नहीं करते अल्लाह के मार्ग में — उन कमज़ोर पुरुषों, औरतों और बच्चों के लिए, जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब! तू हमें इस बस्ती से निकाल जिसके निवासी अत्याचारी हैं और हमारे लिए अपनी ओर से तू कोई रक्षणकर्ता नियुक्त कर दे और हमारे लिए अपनी ओर से तू कोई सहायक नियुक्त कर. 76 जिन लोगों ने ईमान (विश्वास एवं आस्था) का मार्ग अपनाया है, वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं और जिन्होंने सत्य का इन्कार किया वे ताग़ूत (अर्थात शैतान) के मार्ग में लड़ते हैं. तो (ऐ ईमान वालो!) तुम शैतान के साथियों से लड़ो. निस्संदेह, शैतान की चाल बहुत कमज़ोर है.

77 क्या तुम उन लोगों से अवगत नहीं जिन्हें कहा गया था कि अपने हाथ रोके रखो और नमाज़ का विधिवत पालन करो तथा ज़कात दिया करो (लेकिन तब वे निजी कारणों के लिए लड़ाइयों पर उतारू थे). लेकिन अब, जबकि उन्हें (अल्लाह के मार्ग में) लड़ने का आदेश दिया गया तो उनमें से कुछ लोगों का हाल यह हुआ कि वे लोगों से ऐसे डरने लगे जिस प्रकार अल्लाह से डरना चाहिए, या उससे भी अधिक. और वे कहते हैं, ऐ हमारे रब! तूने हम पर युद्ध क्यों अनिवार्य कर दिया? क्यों न तूने हमें कुछ और समय के लिए ढील दी (अर्थात युद्ध को अभी टाल क्यों न दिया). (पैग़ंबर!) **इनसे कहो, (वर्तमान) दुनिया का लाभ बहुत थोड़ा है और मृत्यु-पश्चात शाश्वत दुनिया बेहतर है, और उस व्यक्ति के लिए है, जो ख़ुदा के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बना रहता है.** और तुम्हारे साथ ज़रा सा भी अन्याय नहीं किया

जाएगा. 78 **तुम जहाँ कहीं भी होंगे, मृत्यु तुम्हें आकर रहेगी, भले ही तुम मज़बूत क़िलों में ही (क्यों न) हो.**

नोटः- मौत ज़िंदगी की सबसे स्पष्ट, सबसे बड़ी, सबसे अटल सच्चाई है. न किसी राजा के लिए और न किसी रंक के लिए मौत का इन्कार संभव है. लेकिन इसी के साथ यह भी सच्चाई है कि राजा से लेकर रंक तक लगभग सभी लोग जीवन का सत्य भूलकर, इस प्रकार जीवन व्यतीत कर रहे हैं. जैसे उन्हें कभी मरना ही नहीं है. उनका आचरण इस बात का परिचायक है कि उन्हें कभी मौत आने वाली नहीं है. लेकिन इंसान यदि जीवन के सत्य तथा उसके उद्देश्य के प्रति थोड़ा भी गंभीर हो तो वह यह जान लेगा कि ज़िंदगी तथा मौत की हक़ीक़त को और ज़िंदगी तथा मौत देने वाले को हरगिज़ नज़रंदाज़ नहीं किया जा सकता.

यदि उन्हें कोई भलाई पहुँचती है तो (उनमें से कुछ) कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है. लेकिन यदि उनके साथ कुछ बुरा (अर्थात अवांछित) घटित होता है तो (पैग़ंबर! तुम्हें) कहते हैं कि यह तुम्हारे कारण है. उनसे कहो, सब कुछ अल्लाह की ओर से है. आख़िर इन लोगों को क्या हो गया है कि कोई बात इनकी समझ में नहीं आती.

79 (ऐ इंसान!) जो भलाई भी तुझे पहुँचती है (अर्थात जो भी भली घटना तेरे साथ घटित होती है) अल्लाह की कृपा से होती है और जो विपत्ति तुझ पर आती है तेरे अपने ही कारण से है (अर्थात अल्लाह के अटल क़ानूनों के परिणाम-स्वरूप).

(ऐ मुहम्मद!) हमने तुम्हें लोगों के लिए पैग़ंबर बनाकर भेजा है. और इस पर अल्लाह की गवाही पर्याप्त है.

80 जिसने पैग़ंबर की आज्ञा का पालन किया, उसने (वास्तव में) अल्लाह की आज्ञा का पालन किया. और जिसने (आज्ञापालन से) मुँह मोड़ा. तो हमने तुम्हें उन पर देख-रेख करने वाला बनाकर नहीं भेजा है. 81 और यह लोग (तुम्हारे सामने) कहते हैं कि हम आज्ञा का पालन करने वाले हैं, लेकिन जब वे तुम्हारे पास से चले जाते हैं तो

उनमें से कुछ लोग रात को जमा होकर तुम्हारी बातों के विरुद्ध गुप्त मंत्रणा करते हैं. जो कुछ गुप्त मंत्रणा वे करते हैं अल्लाह उसे लिख रहा है. तो तुम उनकी ओर ध्यान न दो और अल्लाह पर दृढ़तापूर्वक विश्वास रखो और जिस पर दृढ़तापूर्वक विश्वास किया जाए ऐसा अल्लाह के सिवा दूसरा कोई नहीं.

82 **क्या ये लोग क़ुरआन पर गंभीरतापूर्वक चिंतन नहीं करते? यदि यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो वे इसमें निश्चय ही बहुत सी परस्पर-विरोधी बातें पाते.**

नोटः- क़ुरआन सच्चे ख़ुदा की वाणी होने का स्पष्ट प्रमाण यह है कि उसका कोई भी वक्तव्य स्थापित सत्य (Established Truth) के विरुद्ध नहीं है. इसमें कोई ऐसी बात नहीं है जो मानवीय स्वभाव के विरुद्ध हो. इसमें कोई ऐसा वक्तव्य नहीं है जो पूर्ववर्ती आसमानी किताबों द्वारा जानी गयी किसी हक़ीक़त के विरुद्ध जाता हो. इसी तरह इसमें कोई ऐसा संकेत तक नहीं है जो निरीक्षण एवं परिक्षण द्वारा प्राप्त ज्ञान से विसंगत हो. क़ुरआन का विवेकपूर्ण सच्चाइयों से पूर्णतः सुसंगत होना इस बात का स्पष्ट तथा संदेहरहित प्रमाण है कि क़ुरआन सच्चे ख़ुदा की ओर से आया हुआ मार्गदर्शक-ग्रंथ है.

तथापि कोई भी ‘सच्चाई’ इंसान को सच्चाई नज़र आए इस पर निर्भर करता है कि इंसान गंभीरतापूर्वक उसे समझने का प्रयास करे. क़ुरआन परस्पर-विरोधी बातों से पूर्णतः मुक्त है, यह उस इंसान को नज़र आएगा जो क़ुरआन में चिंतन तथा मनन करेगा. जो इंसान चिंतन तथा मनन करना न चाहे, उसके लिए निराधार आक्षेप करने का दरवाज़ा उस समय

तक खुला रहेगा, जब क़यामत आकर इंसान को परीक्षा हेतु दिए गए स्वातंत्र्य को समाप्त न कर दे.

83 और जब भी उन्हें शांति या भय की वार्ता (अर्थात शत्रु से कोई ख़तरा होने की या ख़तरा न होने की वार्ता) पहुँचती है तो वे उसे फैला देते हैं और अगर वे उस वार्ता को पैग़ंबर या अपने ज़िम्मेदार लोगों तक पहुँचाते तो उनमें से जो लोग जाँच करने वाले हैं, वे उस वार्ता की वास्तविकता जान लेते. और यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दयालुता न होती तो कुछ लोगों के सिवा तुम सब शैतान के पीछे चल पड़ते.

84 तो तुम अल्लाह के मार्ग में लड़ो. (पैग़ंबर!) तुम स्वयं अपने सिवा किसी और के लिए ज़िम्मेदार नहीं हो. और तुम ईमान वालों को (अल्लाह के मार्ग में लड़ने के लिए) प्रेरित करो. हो सकता है कि अल्लाह सत्य का इन्कार करने वालों का ज़ोर तोड़ दे. और अल्लाह सबसे ज़्यादा ज़ोर रखने वाला है और वह (अपराधियों को) बहुत कठोर दंड देने वाला है. 85 जो व्यक्ति भले कार्य के लिए सिफ़ारिश करेगा वह उस (के अच्छे परिणामों) में साझीदार होगा और जो व्यक्ति बुरे कार्य के लिए सिफ़ारिश करेगा वह उस (के बुरे परिणामों) में साझीदार होगा. अल्लाह हर चीज़ पर अपनी नज़र रखे हुए है. 86
और जब कोई तुम्हें दुआ दे तो तुम भी (जवाब में) उसे दुआ दो, उससे अच्छी दुआ या वैसी ही दुआ. निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है.

87 अल्लाह वह है, जिसके सिवा दूसरा कोई भी पूजा (अर्थात इबादत) के योग्य नहीं. वह तुम सबको क़यामत

के दिन ज़रूर जमा करेगा, जिसके आने में कोई संदेह नहीं. और अल्लाह की बात से बढ़कर सच्ची बात और किसकी हो सकती है.

नोटः-'क़यामत का आना','ख़ुदा की अदालत में सारे इंसानों को हिसाब के लिए जमा किया जाना' यह सारी चीज़ें आज की परीक्षारूपी दुनिया में परदे में हैं, लेकिन यह ख़ुदा का वादा है जो ज़रूर पूरा होकर रहेगा.

अल्लाह कहता है कि उसके सिवा दूसरा कोई पूजा के योग्य नहीं, उसके सिवा इस कायनात का दूसरा कोई सृजनकर्ता एवं संचालन-कर्ता नहीं. सारे इंसानों की डोर उसी के हाथ में है. इंसानों की भलाई इसी में है कि वे अपने मालिक की बात मानें. वर्तमान परीक्षारूपी दुनिया में यह संदेश उपदेश-मात्र है. लेकिन एक दिन आने वाला है जिस दिन सारे इंसानों का रब सारे इंसानों के सामने आएगा और सारे इंसानों को जमा करके उनसे उनके जीवन का हिसाब लेगा. यह होना ही है — यह ख़ुदा का वादा है.

88 तुम्हें क्या हो गया है कि तुम कपटाचारियों के विषय में दो गिरोह हो रहे हो (अर्थात

आपस में मतभेद कर रहे हो), हालाँकि स्वयं अल्लाह ने उन्हें उनके कृत्यों के कारण (इन्कार की ओर) पलटा दिया है. क्या तुम चाहते हो कि उसे

सन्मार्ग पर लाओ जिसे स्वयं अल्लाह ने भटका दिया है. और जिसे अल्लाह भटका दे तुम कदापि उसके लिए कोई मार्ग नहीं पा सकते.

नोटः- सन्मार्ग प्राप्ति के लिए ख़ुदा का अटल तथा स्वाभाविक क़ानून है, और ख़ुदा अपने क़ानून से हटकर किसी को सन्मार्ग नहीं दिखाता. किसी को सन्मार्ग दिखाने के लिए ख़ुदा अपने क़ानून को नहीं बदलता. वह क़ानून है, सत्य प्राप्ति के लिए सत्य के गंभीर खोजी बनना और स्वाभाविक स्तर पर अपने प्रभु से मार्गदर्शन की याचना करना. जो लोग अपने निजी स्वार्थ-प्राप्ति के विषय में तो गंभीर एवं खोजी बने हुए हैं, लेकिन वे ख़ुदा और ख़ुदा की ओर जाने वाले मार्ग के संबंध में गंभीर एवं खोजी नहीं हैं, तो ऐसे लोग इस परीक्षारूपी दुनिया में कभी भी ख़ुदा को नहीं पा सकते.

89 वे तो यह चाहते हैं कि जिस तरह उन्होंने सत्य का इन्कार किया तुम भी इन्कार करने वाले बन जाओ, ताकि तुम और वे सब बराबर हो जाएं. तो तुम उनमें से किसी को अपना मित्र न बनाओ, जब तक कि वे अल्लाह के मार्ग में अपना घर-बार न छोड़े. फिर यदि वे (ऐसा करने से) मुँह मोड़े तो उन्हें पकड़ो और उन्हें क़तल करो जहाँ कहीं उन्हें पाओ. और उनमें से न तो किसी को अपना मित्र बनाओ और न सहायक.

नोटः- यह आदेश केवल उन चरम सीमा को पहुँचे हुए कपटाचारियों के संबंध से है जो ईमान वालों के साथ छल तथा कपट का 'खेल' खेल रहे हैं.

90 लेकिन इस आदेश में अपवाद उन लोगों का है जिनका संबंध किसी ऐसी क़ौम से हो जिसके साथ तुम्हारा समझौता (अर्थात शांति-करार) हो. और वह लोग भी अपवाद हैं जो तुम्हारे पास इस मनःस्थिति के साथ आते हैं कि वे न तुम से लड़ना चाहते हैं और न अपनी क़ौम से लड़ना चाहते हैं. और यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर वर्चस्व दे देता तो फिर वे अवश्य तुमसे लड़ते. तो अब **यदि वे तुमसे अपने आपको रोके रहें**

और तुम्हारे विरुद्ध युद्ध न छेडें और तुम्हारे साथ समझौते का मामला करें तो अल्लाह तुम्हें भी उनके विरुद्ध किसी भी प्रकार के आक्रमण की अनुमति नहीं देता.

नोटः- जो लोग शांति-करार किए हुए हों और जो लड़ाई न चाहते हों ऐसों से लड़ने का आदेश इस्लाम कदापि नहीं देता.

इस्लाम में आक्रमणकारी युद्ध (offensive war) के लिए किसी भी प्रकार का स्थान नहीं. इस्लाम में सिर्फ़ आत्मरक्षा के लिए अपरिहार्य युद्ध (defensive & unavoidable war) की अनुमति है. और वह भी केवल सुस्थापित इस्लामी शासन को. इसी प्रकार गोरिल्ला वार, प्रॉक्सी वॉर से इस्लाम का दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं. यह इसलिए कि इस्लाम एक विचारधारा पर आधारित एक मिशन है. इस्लाम का मिशन लोगों से लड़ना या उनकी गरदनें मारना नहीं है. बल्कि इस्लाम का मिशन इंसान को उसके सच्चे मालिक से जोड़ना है और उससे संबंधित उसके मालिक की योजना से उसे अवगत कराना है. ऐसे मिशन में हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता. यह पूर्ण रूप से एक शांततापूर्ण वैचारिक मिशन है.

91 दूसरे कुछ ऐसे लोगों को भी तुम पाओगे जो चाहते हैं कि तुमसे भी अमन में रहें और अपनी क़ौम से भी अमन में रहें. लेकिन जब कभी उपद्रव का अवसर पाते हैं. तो (उपद्रव मचाने के लिए) उसकी ओर दौड़ पड़ते हैं. **यदि ये तुमसे अपने आपको**

रोके न रहें और तुमसे शांति-करार के लिए तैयार न हों और (तुमसे) अपने हाथ न रोकें, तो जहाँ कहीं वे मिले उन्हें पकड़ो और उन्हें क़तल करो. यही वे लोग हैं जिनके विरुद्ध हमने तुम्हें स्पष्ट रूप से अधिकार दे दिया है.

नोटः- इस्लाम कभी लड़ाई को प्राथमिकता नहीं देता. इस्लाम हमेशा शांति-करार को प्राथमिकता देता है. पैग़ंबर साहब के ज़माने में लड़ाई की जो घटनाएँ घटीं, उनकी हक़ीक़त यह है कि इन्कार करने वालों ने इन्कार से आगे बढ़ कर सत्यवादियों को और उनके मिशन को मिटा देने का प्रयास किया, इसी के परिणाम-स्वरूप आत्मरक्षा हेतु कुछ लड़ाइयाँ घटित हुयीं.

92 **किसी ईमान वाले का यह काम कदापि नहीं हो सकता कि वह दूसरे ईमान वाले की हत्या करे, लेकिन यह कि ग़लती से ऐसा हो जाए. और कोई व्यक्ति यदि ग़लती से किसी ईमान वाले को मार डाले तो (उसे चाहिए कि) एक ईमान वाले ग़ुलाम को स्वतंत्र करे और जिस (ईमान वाले) की हत्या हुई उसके वारिसों को आर्थिक हरजाना (ख़ून-बहा) दे, मगर यह कि (वे वारिस) ख़ून-बहा माफ़ कर दे (तो और बात है). और यदि मारा गया व्यक्ति ऐसी क़ौम से था जो तुम्हारी दुश्मन है और वह स्वयं ईमान वाला था तो (क़तल की ग़लती जिससे हुई) वह एक ग़ुलाम को स्वतंत्र करे. और यदि (मारा गया व्यक्ति) ऐसी क़ौम से था कि तुम्हारे और उसके दरमियान समझौता हो तो उसके वारिसों को ख़ून-बहा** (blood-money) **दिया जाए और एक ईमान वाले ग़ुलाम को स्वतंत्र किया जाए. फिर जो ऐसा करने में असमर्थ हो तो, वह निरंतर दो महीने के रोज़े रखे. यह अल्लाह की ओर से निश्चित किया हुआ उसकी ओर पलट आने का तरीका है.**

और अल्लाह सर्वज्ञानी तथा बुद्धिमान है. 93 **और जो व्यक्ति जान-बूझ कर किसी ईमान वाले को मार डाले तो उसका प्रतिफल (अर्थात उसकी सज़ा) जहन्नम है और वह उसमें हमेशा रहेगा और उस पर अल्लाह का प्रकोप तथा फिटकार है और अल्लाह ने उसके लिए बड़ी यातना तैयार कर रखी है.**

नोटः- जानबूझकर बुराई करना तो अक्षम्य अपराध है. लेकिन यदि बिना किसी उद्देश्य के ग़लत काम हो जाए, तब भी 'ग़लत काम' ग़लत काम ही है. और उसके कर्ता को तीव्र पश्चात्ताप होना चाहिए. इसीलिए व्यवहारिक स्तर पर उसे पश्चात्ताप करने का आदेश दिया गया है. उसे ग़ुलाम को आज़ाद करना होगा या फिर उसको रोज़े रखने होंगे. क्योंकि इंसान के द्वारा निरुद्देश्य रूप में भी घटित ग़लत काम के संबंध से यदि तीव्र पश्चात्ताप न किया जाए तो वह कृत्य रिपिट होने की संभावना बनी रहेगी.

94 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जब तुम अल्लाह के मार्ग में निकलो तो (दोस्त तथा दुश्मन के संबंध में) अच्छी तरह जाँच कर लो. और जो व्यक्ति सलाम से तुम्हारा अभिवादन करे, उसे यह न कहो कि तुम ईमान वाले नहीं. **तुम इसी जीवन के क्षणभंगूर लाभ की बहुत लालसा रखते हो, लेकिन अल्लाह के पास (शाश्वत-रूपी सुखदायी) वस्तुएँ बेहिसाब मात्रा में हैं.** पहले तुम भी ऐसे ही थे, फिर अल्लाह ने तुम पर कृपा की, तो जाँच कर लिया करो. जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है.

नोटः- क़ुरआन कोई उपदेश देते हुए बार-बार इंसान को उसके असल जीवन की याद दिलाता है. ताकि इंसान वर्तमान जीवन के फ़रेबी आकर्षणों से ऊपर उठ कर वास्तविक एवं शाश्वत जीवन को हमेशा याद रखे.

95 ईमान वालों में से जो लोग बिना किसी मजबूरी के अपने घरों में बैठे रहते हैं और वे ईमान वाले जो अपने मालों तथा जानों के साथ अल्लाह के मार्ग में जी-तोड़ कोशिश (अर्थात जिहाद) करते हैं, यह दोनों (अल्लाह की नज़र में) समान नहीं हो सकते. अल्लाह ने बैठे रहने वालों की तुलना में, अपने मालों तथा अपनी जानों से अल्लाह के मार्ग में जी-तोड़ कोशिश करने वालों का दर्जा बढ़ा रखा है. हालाँकि हर (ईमान वाले) से अल्लाह ने भलाई का वादा किया है. लेकिन अल्लाह ने बैठे रहने वालों की अपेक्षा जी-तोड़ कोशिश करने वालों का बदला (प्रतिफल) बहुत बड़ा दिया है. 96 उनके लिए अल्लाह के यहाँ बड़े दर्जे हैं और क्षमा एवं दयालुता है. और अल्लाह बड़ा क्षमाशील एवं दयावान है.

97 जो लोग (बुरे कृत्य करके) अपने आप पर अत्याचार कर रहे हैं, जब फ़रिश्ते इस हालत में उनके प्राण निकालेंगे तो वे उनसे पूछेंगे कि तुम किस हाल में थे. वे जवाब देंगे, हम पृथ्वी पर असहाय अवस्था में थे (अर्थात हम जिस वातावरण में थे वहाँ बुराइयाँ करने पर मजबूर थे). इस पर फ़रिश्ते कहेंगे, क्या अल्लाह की ज़मीन विशाल नहीं थी कि तुम उसमें अपना वतन छोड़कर कहीं और चले जाते. ये वे लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है. 98 हाँ, जो मर्द, औरतें और बच्चे वास्तव में असहाय हैं और निकलने का कोई मार्ग तथा साधन नहीं पाते. 99 तो संभव है कि अल्लाह ऐसे लोगों को क्षमा कर दे. अल्लाह क्षमाशील एवं दयावान है. 100 और जो कोई अपना घर-बार छोड़कर अल्लाह के मार्ग में निकलेगा, वह धरती पर आश्रय के लिए बहुत जगह और (जीवनयापन करने के लिए) बहुत सी संभावनाएँ पाएगा और जो व्यक्ति अपना घर-बार छोड़कर अल्लाह और उसके पैग़ंबर की और निकले (अर्थात हिजरत करे), फिर (रास्ते में ही) उसे मृत्यू आ जाए तो उसे प्रतिफल प्रदान करना अल्लाह का ज़िम्मा हो गया (अर्थात उसे इनाम प्राप्त होना निश्चित है). अल्लाह बहुत क्षमाशील एवं दयावान है.

101 (ऐ ईमान वालो!) जब तुम यात्रा कर रहे हो तो तुम पर कोई दोष नहीं कि तुम नमाज़ में कमी करो, यदि तुम्हें भय हो कि सत्य का इन्कार करने वाले लोग तुम्हें सताएंगे. निस्संदेह, सत्य का इन्कार करने वाले लोग स्पष्ट रूप से तुम्हारे शत्रु हैं. 102 और जब तुम ईमान वालों के बीच हो और (युद्ध की हालत में) सामूहिक नमाज़ का नेतृत्व कर रहे हो, तो चाहिए कि उनमें से एक समूह तुम्हारे साथ खड़ा हो और वह अपने हथियार लिए हुए हो. फिर जब वह सजदा कर चुके तो वह तुम्हारे पास से पीछे चला जाए और दूसरा समूह जिसने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी है, वह आकर तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े और उसे भी चाहिए कि वह अपने बचाव का सामान और हथियार लिए रहे. सत्य का इन्कार करने वाले तो चाहते हैं कि तुम अपने हथियारों तथा अपने सामान से किसी तरह ग़ाफ़िल (असावधान) हो जाओ तो वे तुम पर अचानक टूट पड़ें. और यदि वर्षा के कारण (हथियार साथ लिए रहने में) तुम्हें कष्ट होता हो या तुम बीमार हो तो तुम्हारे लिए कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने हथियार (उतार कर) रख दो. लेकिन फिर भी पूरी सावधानी से काम लो. निस्संदेह, अल्लाह ने सत्य का इन्कार करने वाले लोगों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है. 103 फिर जब नमाज़ पूरी कर चुको तो खड़े, बैठे और लेटे (हर हाल में) अल्लाह को याद करो. और जब तुम सुरक्षित (अर्थात ख़तरे से मुक्त) स्थिति में हो तो विधिवत नमाज़ पूरी करो. निस्संदेह, नमाज़ ईमान वालों को निर्धारित समय पर अदा करना अनिवार्य है. 104 और क़ौम का (अर्थात शत्रु-समूह का) पीछा करने में कमज़ोरी न दिखाओ. यदि तुम्हें कष्ट होता है, तो जिस प्रकार (तुम्हें कष्ट होता है) उन्हें भी कष्ट होता है. और तुम अल्लाह से उस चीज़ के उम्मीदवार हो जिसके वे उम्मीदवार नहीं. और अल्लाह सर्वज्ञानी एवं बुद्धिमान है.

105 निस्संदेह, हमने यह किताब सत्य के साथ तुम्हारी ओर अवतरित की है, ताकि तुम अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें सिखाया है (अर्थात तुम्हारा मार्गदर्शन किया है) उसके

अनुसार लोगों के बीच फ़ैसला करो. और तुम विश्वासघात करने वाले लोगों के समर्थन में न उतरो. 106 और अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो. निस्संदेह, अल्लाह क्षमाशील एवं दयावान है. 107 और तुम उन लोगों के समर्थन में न उतरो जो स्वयं अपने आप से विश्वासघात करते हैं. निस्संदेह, अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसंद नहीं करता जो विश्वासघात करने वाला तथा (अन्य) पापों में लिप्त हो.

108 (बुरे कर्म करते हुए) वे लोगों से शरमाते हैं और अल्लाह से नहीं शरमाते. हालाँकि वह उनके साथ होता है, जब वे ऐसी बात की गुप्त मंत्रणा करते हैं जिससे अल्लाह प्रसन्न नहीं. और जो कुछ वह करते हैं, अल्लाह उसे घेरे हुए है (अर्थात वे स्वतंत्र होते हुए भी उनकी डोर पूर्णता अल्लाह के हाथ में है).

109 हाँ, तुम वे लोग हो जो उनका पक्ष लेकर इस दुनिया के जीवन में झगड़ते रहे, **लेकिन क़यामत के दिन कौन उनके लिए अल्लाह से झगड़ा करेगा? या कौन होगा जो अल्लाह से उन्हें बचाए.** 110 और कोई व्यक्ति बुरा काम कर बैठे या अपने आप ज़ुल्म करे, फिर अल्लाह से (अपने पापों की) क्षमा माँगे तो वह अल्लाह को क्षमा करने वाला और दया करने वाला पाएगा.

नोटः- वर्तमान दुनिया में इंसान को परीक्षा हेतु सीमित स्वातंत्र्य प्राप्त है. अब यहाँ यह स्वयं इंसान के ऊपर है कि वह सत्य का पक्षधर बने या असत्य का पक्षधर. लेकिन वह वक्त बहुत जल्द आने वाला है जब सारे इंसानों को सच्चे ख़ुदा की अदालत में खड़ा किया जाएगा. वहाँ कौन असत्य का पक्षधर बनकर खड़ा होगा और कौन सच्चे ख़ुदा की अदालत

में झूठ की वकालत करेगा और कौन सर्वोच्च शक्तिमान से अपराधी को बचा सकेगा? सोचिए!

111 और जो कोई बुरा कर्म करे तो उसके इस कर्म का परिणाम उसी पर पड़ेगा. और अल्लाह सब कुछ जानने वाला तथा बुद्धिमान है. 112 और कोई ग़लत काम या गुनाह का काम करे और फिर उसका आरोप किसी निर्दोष पर लगा दे तो उसने निश्चित रूप से झूठे आरोप का और स्पष्ट गुनाह का बोझ स्वयं अपने सर ले लिया. 113 यदि तुम पर अल्लाह की कृपा तथा उसकी दयालुता न होती (तो तुम सन्मार्ग पर जमे न होते, क्योंकि) उनमें से एक समूह ने इस बात का दृढ़ संकल्प कर लिया था कि वह तुम्हें पथभ्रष्ट करके रहेगा. हालाँकि वास्तव में वह स्वयं अपने आपको पथभ्रष्ट कर रहे हैं. और वह तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते. और अल्लाह ने तुम पर किताब उतारी और तुम्हें बुद्धिमानी प्रदान की और तुम्हें वह चीज़ सिखाई जिसे तुम नहीं जानते थे और तुम पर अल्लाह की बड़ी कृपा है.

114 वह जो कुछ गुप्त बातें कर रहे हैं उनमें से अधिकतर में कोई भलाई नहीं. भलाई वाली बात तो मात्र उसकी है जो दान-कार्य करने को कहे या कोई नेक काम करने को कहे या लोगों के बीच सुधार करने की बात करे. और जो कोई अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ऐसा करे तो

उसे हम बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे. 115 **और जो व्यक्ति, मार्गदर्शन स्पष्ट रूप से उसके सामने आ जाने के बाद भी पैग़ंबर का विरोध करेगा और ईमान वालों के मार्ग को छोड़कर किसी अन्य मार्ग पर चलेगा तो**

उसे हम उसी मार्ग पर चलाएंगे जिसको उसने स्वयं अपनाया है. फिर उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे और वह बहुत बुरा ठिकाना है.

नोटः- ख़ुदा ने अपने मार्गदर्शन के ज़रीए उस तक पहुँचने वाला रास्ता इंसान के सामने स्पष्ट कर दिया है. और पैग़ंबर के माध्यम से उसका व्यवहारिक नमुना भी प्रस्तुत कर दिया है. इसी के साथ ख़ुदा ने इंसान को परीक्षा हेतु सीमित कृत्य-स्वातंत्र्य दिया है. यही कारण है कि ख़ुदा का स्पष्ट मार्गदर्शन उपलब्ध होने के पश्चात भी अधिकतर लोग अन्य रास्तों पर चल पड़ते हैं. और शैतान उन्हें झूठी ख़ुशी का यह डोज़ देता है कि सारे रास्ते ख़ुदा के पास ही जाने वाले हैं. लेकिन ख़ुदा अपनी किताब में यह स्पष्ट कर रहा है कि ख़ुदा के बताए हुए एकमात्र रास्ते के सिवा सारे रास्ते इंसान को सिर्फ़ और सिर्फ़ जहन्नम में पहुँचाने वाले हैं.

116 **निस्संदेह, अल्लाह इस (पाप) को माफ़ नहीं करेगा कि उसका साझीदार ठहराया जाए. लेकिन इसके सिवा दूसरे गुनाहों को, वह जिसके लिए चाहेगा, क्षमा कर देगा, जिसने अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठहराया वह पथभ्रष्टता में बहुत दूर निकल गया.**

नोटः- ख़ुदा इंसानों का सृजनकर्ता तथा मालिक है. सारे निर्णय के अधिकार सिर्फ ख़ुदा को प्राप्त हैं. इंसान को उसी ने बनाया है, उसी ने इस सृष्टी (universe) की रचना की है. वही इंसान को जीवन व मृत्यु देता है . वही इंसान का पालन-पोषण कर रहा है. उसी के हाथ में इंसान की डोर है.

वर्तमान दुनिया परीक्षा हेतु है. यहाँ इंसान को पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ जीवनयापन करना है. लेकिन इंसान उत्तरदायित्व से फ़रार प्राप्त करने के लिए स्वयं अपनी ओर से ख़ुदा के और उसके बीच मध्यस्थ तथा ख़ुदा का साझीदार ठहराने लगता है. यह ख़ुदा के संबंध से झूठ गढ़ना है, यह अपराध क्षमायोग्य नहीं है.

117 **वे (बहुदेववादी लोग) अल्लाह को छोड़कर देवी-देवताओं को पुकारते हैं लेकिन (वास्तव में) उनका यह पुकारना केवल विद्रोही शैतान को पुकारना है.**

118 **(जबकि) शैतान पर तो अल्लाह की ओर से फिटकार है. शैतान ने (अल्लाह से) कहा था, मैं तेरे बंदों में से एक निश्चित हिस्सा लेकर रहूँगा.**

नोटः- शैतान इंसान का सिर्फ़ और सिर्फ़ दुश्मन है और यह दुश्मन छुपा हुआ दुश्मन है जो इंसान के शरीर पर नहीं, बल्कि मन पर वार करता है. ऐसे छुपे दुश्मन से इंसान को उसके वास्तविक मालिक के सिवा अन्य कोई सचेत नहीं कर सकता था. इंसान का मालिक इंसान को अपनी किताब के द्वारा उसके छुपे शत्रु से सचेत कर रहा है, ताकि इंसान इस छुपे दुश्मन से अपने आपको बचा सके.

शैतान का मिशन यह है कि वह इंसान को उसके सृजनकर्ता तथा पालनकर्ता से दूर कर दे और विभिन्न गुमराहियों में लिप्त कर दे, ताकि इंसान अपने मालिक से कट जाए और नाकाम होकर रह जाए.

इस परीक्षारूपी दुनिया में अगरचे शैतान को, इंसान को पथभ्रष्ट करने की छूट प्राप्त है, लेकिन इंसान के मालिक ने इंसान के मार्गदर्शन की संपूर्ण व्यवस्था की है. अब यह स्वयं इंसान पर निर्भर करता है कि वह किस मार्ग का अंगीकार करे. शैतान के मार्ग का अंगीकार

करके इंसान कभी अपने मालिक को नहीं पा सकता. अपने मालिक को पाने के लिए मालिक के बताए हुए रास्ते को अपनाना होगा.

119 (शैतान आगे कहता है) **मैं उन्हें अवश्य बहकाऊँगा, उनके मन में (बुरी) आशाएँ अवश्य जागृत करूँगा. और मैं उन्हें अवश्य (अंधविश्वास पर) उभारूँगा तो वे अवश्य जानवरों के कान काटेंगे. और मैं उन्हें अवश्य प्रेरित करूँगा तो वे अल्लाह की बनावट को बदलेंगे.** **तो जो व्यक्ति अल्लाह को छोड़कर शैतान को अपना साथी (तथा मार्गदर्शक) बनाए, तो वह स्पष्ट रूप से घाटे में पड़ गया.** 120 **शैतान उनसे वादे करता है और वह उनमें व्यर्थ आशाएँ जागृत करता है और शैतान के सभी वादे धोके के सिवा और कुछ नहीं.**

नोटः- आयत 119 में अरब में प्रचालित एक अंधविश्वास की ओर संकेत है. लेकिन वास्तव में दुनिया भर में जो-जो अंधविश्वास पाए जाते हैं वह सब शैतान की देन है. शैतान सारी अंध तथा अवास्तविक आस्थाओं का जन्मदाता है.

121 ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है और वह उससे बचने का कोई मार्ग नहीं पाएंगे.
122 और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने भले कर्म किए, उन्हें हम ऐसे बागों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जिनमें वे हमेशा रहेंगे. **यह अल्लाह का सच्चा वादा है और अल्लाह से बढ़कर अपनी बात में कौन सच्चा हो सकता है.**

नोटः- क़ुरआन का यह वक्तव्य सर्वोच्च सत्यवान का परिचय कराने वाला वक्तव्य है. जिसकी हर बात अंतिम है, जिसकी हर बात सच्ची है.

123 (जन्नत की प्राप्ति) न तुम्हारी स्वयं-कल्पित इच्छाओं पर निर्भर है और न पूर्ववर्ती किताब वालों की (स्वयं-कल्पित) इच्छाओं पर. जो कोई भी बुरा करेगा उसका प्रतिफल पाएगा. और वह अल्लाह के मुक़ाबले में अपने लिए कोई समर्थक तथा सहायक
न पा सकेगा. 124 और जो भले कर्म करेगा, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, यदि वह ईमान रखने वाला है, तो ऐसे ही लोग जन्नत में
दाख़िल होंगे, और उन पर ज़रा भी अन्याय नहीं होगा. 125 **और उससे बेहतर किसका मज़हब है जिसने पूरी तरह अपने आपको अल्लाह के सुपुर्द कर दिया और वह सत्कर्म करने वाला भी हो. और वह अनुसरण करता हो इब्राहीम के मार्ग का जो सबसे अलग होकर पूरी तरह अल्लाह का हो**

चुका था और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना मित्र (अर्थात अल्लाह के सान्निध्य में स्थान पाने वाला) बना लिया था.

> **नोटः-** अल्लाह ने सारे इंसानों को एक ही मज़हब बताया है और सारे इंसानों की ओर से भी उसको केवल उसी मज़हब का अनुसरण स्वीकृत है और वह मज़हब है **'अपने आपको अपने मालिक के सुपुर्द कर देना.'**
>
> वर्तमान दुनिया में ख़ुदा ने एक तरफ़ इंसान को परीक्षा हेतु सीमित आज़ादी दी है तो दूसरी तरफ़ अपनी पसंद के रास्ते से इंसान को अवगत करा दिया है. और ख़ुदा के पैग़ंबरों ने उस रास्ते का व्यवहारिक स्तर पर अनुसरण करके इंसानों को उसका व्यवहारिक दर्शन करा दिया है. अब यह स्वयं इंसान के अपने ऊपर है कि वह किस मार्ग को अपनाता है.

126 **और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन पर है सब कुछ अल्लाह का है और अल्लाह ने हर चीज़ को अपने घेरे में (अर्थात अपने नियंत्रण में) ले रखा है.**

> **नोटः-** समस्त सृष्टी को और उसमें जो कुछ है उसको अल्लाह ने बनाया है. जैसा कि स्पष्ट है कि उनका बनाने वाला ही उनका वास्तविक मालिक होगा. लेकिन वर्तमान दुनिया में इंसान की परीक्षा हो रही है. यद्यपि परीक्षा हेतु इंसान को स्वातंत्र्य प्राप्त है, लेकिन इंसान ख़ुदा के घेरे से बाहर नहीं.

127 लोग तुमसे स्त्रियों के विषय में (मज़हब का) आदेश पूछते हैं. (उनसे) कह दो, अल्लाह तुम्हें उनके संबंध से आदेश देता है और (इसी के साथ वह आदेश भी याद दिलाता है) जो पहले से तुम्हें इस किताब में उन अनाथ लड़कियों के बारे में पढ़कर सुनाए जाते रहे हैं, जिन्हें तुम वह नहीं देते जो उनके लिए लिखा गया है और चाहते हो

कि उनसे विवाह कर लो. और असहाय बच्चों के बारे में यह आदेश है कि तुम अनाथों के साथ न्याय करो. और जो भी भला कर्म तुम करो, निस्संदेह, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है. 128 और यदि किसी स्त्री को अपने पति की ओर से दुर्व्यवहार तथा विरक्ति (उदासीनता) की आशंका हो, तो इसमें पति और पत्नी पर कोई दोष नहीं कि वे दोनों आपस में मेल-मिलाप की कोई राह निकाल लें. (हाँ!) मेल-मिलाप (अर्थात समझौते) की राह निकालना अच्छी चीज़ है. और लालच मनुष्य के स्वभाव में बसा हुआ है. और यदि तुम अच्छा व्यवहार करो और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो (तो यह तुम्हारे ही लिए बेहतर है) निस्संदेह, अल्लाह वह सब कुछ जानता है जो तुम करते हो. 129 और तुम चाहे कितना ही चाहो तुम अपनी पत्नियों के साथ परिपूर्ण रूप से समान न्यायपूर्वक व्यवहार नहीं कर सकते, तो तुम एक पत्नी की ओर ही इस तरह न झुक जाओ कि दूसरी को अधर में लटकता छोड़ दो. लेकिन यदि तुम अपना व्यवहार ठीक कर लो और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो तो अल्लाह क्षमाशील एवं दयावान है. 130 और यदि पति-पत्नी (विवाह बंधन समाप्त करके अंततः) एक-दूसरे से अलग ही हो जाएँ तो अल्लाह अपनी उदारता से हर एक को एक-दूसरे से बेपरवा (अर्थात आत्मनिर्भर) बना देगा. अल्लाह असीम उदार तथा बुद्धिमान है.

131 **और जो कुछ आसमानों में है और जो**

कुछ धरती पर है, सब अल्लाह का है.

और हमने तुमसे पहले पूर्ववर्ती किताब वालों को आदेश दिया था और हम तुम्हें भी यह आदेश देते हैं कि अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो. और यदि तुमने (अल्लाह के आदेशों को) नकारा तो (स्मरण रहे कि) अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ धरती पर है. और अल्लाह निस्पृह है तथा हर प्रकार की प्रशंसा के लिए वही पात्र है.

132 **और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ धरती पर है (अर्थात जो कुछ संपूर्ण सृष्टि में है) सब अल्लाह का है. और अल्लाह जैसा विश्वसनीय दूसरा कोई नहीं.**

> **नोटः-** सृष्टि (universe) के वास्तविक मालिक के सिवा अन्य कोई भी इस प्रकार का वक्तव्य दे ही नहीं सकता. जो वास्तव वह में समस्त सृष्टि का मालिक न हो, वह इस प्रकार की बोली बोल ही नहीं सकता.

133 **ऐ लोगो! यदि वह चाहे तो तुम सबको हटाकर, तुम्हारी जगह दूसरों को ले आए, और अल्लाह ऐसा करने की सामर्थ्य रखता है.**

नोटः- इस प्रकार का वक्तव्य वही दे सकता है जिसने इंसानों को धरती पर बसाया है. और जो वास्तव में धरती का मालिक है उसके सिवा दूसरा कोई भी इस प्रकार का वक्तव्य नहीं दे सकता . यह और इस प्रकार के वक्तव्य निश्चित रूप से इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि 'कुरआन' इंसानों तथा समस्त सृष्टी के मालिक की किताब है.

134 **जो व्यक्ति केवल इसी दुनिया के (क्षणभंगूर) प्रतिफल की इच्छा रखता हो (तो वह यह जान ले कि) अल्लाह के पास दुनिया का प्रतिफल भी है और मृत्यु-पश्चात शाश्वत दुनिया का प्रतिफल भी. अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है.**

नोटः- जो लोग जीवन की हक़ीक़त को भूलकर, इसी दुनिया के जीवन को सब कुछ समझ कर जीवन व्यतीत कर रहे हैं, वे अपने कामों के प्रतिफल इसी क्षणभंगूर जीवन में पाते हैं.

दूसरे लोग वे हैं जो जीवन के सत्य को जान कर, जीवन देने वाले के मार्गदर्शन में जीवन व्यतीत करते हैं तो ऐसे लोग मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में शाश्वत-रूपी प्रतिफल पाएंगे.

अब यह स्वयं इंसान के ऊपर है कि उसे कौनसा प्रतिफल चाहिए.

135 **ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम पूरी तरह न्याय पर अडिग रहने वाले और अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बन जाओ. फिर चाहे वह गवाही स्वयं तुम्हारे अपने ही विरुद्ध या तुम्हारे माता-पिता और रिश्तेदारों के ही विरुद्ध क्यों न हो.**

(और जिसके संबंध से साक्ष दी जा रही है) यदि वह धनवान हो या निर्धन, अल्लाह तुमसे अधिक उन दोनों का हितैषी है. तो तुम न्याय करने में अपनी इच्छाओं का पालन न करो. और यदि (गवाही के संबंध से) तुम हेर-फेर करोगे या (सत्य प्रकट करने से) कतराओगे तो (याद रखो) जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखने वाला है.

नोटः- क़ुरआन जिस 'ईमान' की बात करता है वह कोई अंधी आस्था या कोई बाप-दादा की परंपराओं पर आधारित अंधविश्वास नहीं है, बल्कि यह सत्य की प्राप्ति है जो किसी सत्य के गंभीर खोजी को होती है. यहाँ ईमान वाले को जिस आचरण का आदेश दिया जा रहा है उसकी अपेक्षा किसी अंधविश्वास रखने वाले तथा बाप-दादा से चली आ रही निराधार परंपराओं का पालन करने वाले व्यक्ति से कदापि संभव नहीं है. यह आचरण सिर्फ उस इंसान के लिए संभव है जो सच्चे ख़ुदा को पा लेता हो और वह सच्चे ख़ुदा के प्रति सचेत एवं उत्तरदायी बन जाता हो. ऐसा व्यक्ति सत्य एवं न्याय का इस प्रकार समर्थक बन जाता है कि फिर यह समर्थन चाहे उसके स्वयं अपने विरुद्ध हो, चाहे उसके माता-पिता के विरुद्ध हो, चाहे उसके प्रियजन के विरुद्ध हो.

136 ऐ ईमान वालो! (सत्य निष्ठा के साथ) ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके पैग़ंबर पर और उस किताब पर जो अल्लाह ने अपने पैग़ंबर पर उतारी है और हर उस किताब पर जिसे वह इस (क़ुरआन) से पहले उतार चुका है और जो व्यक्ति अल्लाह का इन्कार करे और उसके फ़रिश्तों का और उसकी किताबों का और उसके पैग़ंबरों का और अंतिम दिन का इन्कार करे तो वह भटक कर (सन्मार्ग से) बहुत दूर जा पड़ा.
137 और जो लोग ईमान लाए, फिर इन्कार किया. फिर ईमान लाए, फिर इन्कार किया, फिर इन्कार में बढ़ते चले गए, तो अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा और न कभी उन्हें सीधा रास्ता दिखाएगा.
138 कपटाचारियों को यह समाचार सुना दो कि उनके लिए दुःखदायी सज़ा है.
139 जो ईमान वालों को छोड़कर सत्य का इनकार करने वालों को अपना मित्र बनाते

हैं. क्या ये सम्मान की चाह में उनके पास जाते हैं, हालाँकि सम्मान सारा का सारा अल्लाह ही के लिए है.

140 और अल्लाह अपनी किताब में तुम पर यह आदेश अवतरित कर चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह के संदेशों का इन्कार किया जा रहा है और उनका उपहास किया जा रहा है तो तुम ऐसे लोगों के साथ मत बैठो, जब तक कि वे किसी दूसरी बात में लग न जाएँ, अन्यथा तुम भी

उन्हीं जैसे होंगे. **निस्संदेह, अल्लाह कपटाचारियों को और सत्य का इन्कार करने वालों को जहन्नम में इकट्ठा करने वाला है.**

नोटः- क़ुरआन के यह शब्द अपने आप इस बात का प्रमाण हैं कि यह सबसे बड़े न्यायाधीश की वाणी है. यह किसी इंसान की वाणी हरगिज़ नहीं.

141 ये कपटाचारी लोग तुम्हारे संबंध से प्रतीक्षा कर रहे हैं. यदि अल्लाह की ओर से तुम्हें विजय प्राप्त होती है, तो कहेंगे, क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और यदि सत्य का इन्कार करने वाले लोगों का पल्ला कुछ भारी रहा तो उनसे कहेंगे कि क्या हम तुम्हारे विरुद्ध लड़ने पर समर्थ न थे? फिर भी हमने तुम्हें ईमान वालों से बचाया. तो अल्लाह ही तुम लोगों के बीच क़यामत के दिन फ़ैसला करेगा. और अल्लाह सत्य का इन्कार करने वालों को, ईमान वालों के मुक़ाबले में कोई रास्ता हरगिज़ नहीं देगा.

142 ये कपटाचारी अल्लाह के साथ धोखेबाज़ी कर रहे हैं, हालाँकि वास्तव में अल्लाह ही ने उन्हें धोके में डाल रखा है. जब वे नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो अरुचि के

साथ खड़े होते हैं. (उनका नमाज़ में खड़ा होना) केवल लोगों को दिखाने के लिए है; और वे अल्लाह को कम ही याद करते हैं.
143 वे दोनों के बीच (अर्थात ईमान एवं इन्कार के बीच) लटक रहे हैं, न इधर के है और न उधर के **और जिसे अल्लाह भटका दे तुम उसके लिए कोई मार्ग नहीं पा सकते.**

नोटः- 'अल्लाह का मार्गदर्शन' अल्लाह के द्वारा स्थापित किए हुए नियम के अनुसार ही किसी को प्राप्त होगा. और वह नियम है कि स्वयं इंसान उसे पाने के संबंध से सजगता एवं गंभीरता का परिचय दे. अल्लाह इस परीक्षारूपी दुनिया में अपना मार्गदर्शन किसी पर जबरदस्ती नहीं थोपता. अब यह स्वयं इंसान के ऊपर है कि वह अल्लाह के मार्गदर्शन के द्वार अपने लिए खुलवाना चाहता है या उन्हें अपने लिए बंद रखना चाहता है.

144 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! ईमान वालों को छोड़कर सत्य का इन्कार करने वालों को अपना मित्र न बनाओ. क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह को अपने ही विरुद्ध स्पष्ट प्रमाण दे दो. 145 निस्संदेह, कपटाचारी जहन्नम के सबसे नीचे के वर्ग में होंगे (अर्थात सबसे अधिक यातना पाने वालों में होंगे) **और तुम उनका कोई सहायक न पाओगे.**

नोटः- जिनका सहायक ख़ुदा न हो उनका कोई सहायक नहीं हो सकता. जिन्हें स्वयं ख़ुदा ने हमेशा के लिए अपनी कृपा से दूर कर दिया हो, उन्हें कहीं कोई कृपा-छत्र प्राप्त नहीं हो सकता.

146 हाँ, जो लोग पश्चात्ताप के साथ (ख़ुदा की ओर) पलटें और अपना सुधार कर लें और दृढ़तापूर्वक अल्लाह का दामन थाम लें (अर्थात अल्लाह के बताए हुए मार्ग पर

दृढ़तापूर्वक चलने लगें) और वे अपने मज़हब (दीन) में अल्लाह ही के हो रहे हों (अर्थात अल्लाह के बन जाना उनका मज़हब हो) तो यह लोग (शाश्वत जीवन में) ईमान वालों के साथ होंगे. और अल्लाह ईमान वालों को ज़रूर बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा. 147 आख़िर अल्लाह को क्या पड़ी है कि तुम्हें अकारण सज़ा दे, यदि तुम उसके प्रति कृतज्ञता दिखलाओ और उस पर ईमान लाओ. अल्लाह सदैव गुणग्राहक (अर्थात गुणों की क़दर करने वाला) है, सब कुछ जानने वाला है.

पारा – 6

148 अल्लाह इस बात को पसंद नहीं करता कि आदमी अपशब्दों का प्रयोग करे, सिवाय इसके कि किसी पर अत्याचार किया गया हो. अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला है. 149 यदि तुम खुले रूप में नेक कर्म करो या उसे छुपाओ (सब अल्लाह के सामने है) या तुम यदि किसी बुराई को क्षमा कर दो, तो अल्लाह भी क्षमा करने वाला है, सामर्थ्यवान है. 150 निस्संदेह, जो लोग अल्लाह और उसके पैग़ंबरों का इन्कार करते हैं और चाहते है कि अल्लाह और उसके पैग़ंबरों के बीच अंतर करें; और कहते हैं कि हम किसी को मानेंगे और किसी को न मानेंगे इस प्रकार वे चाहते हैं कि बीच का कोई (नया) मार्ग निकालें. 151 (निस्संदेह!) यही लोग सत्य का इन्कार करने पर तुले हुए हैं और हमने सत्य का इन्कार करने वालों के लिए अपमानजनक सज़ा तैयार कर रखी है. 152 और जो लोग अल्लाह और उसके पैग़ंबरों पर ईमान लाए और उन्होंने उनमें से किसी के बीच भी अंतर नहीं किया. अल्लाह ऐसे लोगों को जल्द ही

उनका प्रतिफल (reward) प्रदान करेगा. और अल्लाह बड़ा ही क्षमाशील एवं दयावान है.

153 (पैग़ंबर!) पूर्ववर्ती किताब का अनुसरण करने वाले (अर्थात यहूदी एवं ईसाई) तुमसे यह माँग करते हैं कि तुम उन पर आसमान से एक (लिखी-लिखाई) किताब अवतरित कराओ. तो इससे बड़ी (अपराधपूर्ण) माँग वे पहले मूसा से कर चुके हैं. (मूसा से इन्होंने कहा था कि) हमें अल्लाह को प्रत्यक्ष रूप से (अर्थात आमने-सामने) दिखा दो. उनकी इस दुष्टता के परिणाम-स्वरूप उन पर बिजली टूट पड़ी थी. फिर उसके बाद, **उन्होंने बछड़े को अपना उपास्य बना लिया, हालाँकि सत्य के सारे स्पष्ट प्रमाण उनके पास आ चुके थे.** इस पर भी हमने उन्हें क्षमा किया. और हमने मूसा को (सत्य के) स्पष्ट प्रमाण प्रदान किए.

नोटः- वर्तमान दुनिया में सत्य के सारे प्रमाण स्पष्ट रूप से सामने आ जाने के बावजूद भी इंसान को यहाँ आज़ादी प्राप्त है कि वह सत्य का इन्कार कर दे. वह उसको अपना उपास्य बना ले जो वास्तव में उपास्य है ही नहीं. लेकिन यह आज़ादी सीमित है और परीक्षा हेतु है. एक दिन आने वाला है, जब सत्य का इन्कार करने वाले सत्य को मानने पर मजबूर होंगे, लेकिन उस मानने का उन्हें कुछ फ़ायदा नहीं होगा.

इंसान वर्तमान दुनिया में ऐसा क्यों करता है कि वह अवास्तविक उपास्य को अपना उपास्य बनाता है. उसका प्रमुख कारण यह है कि वह उत्तरदायित्व से दूर भागना चाहता है. किसी पत्थर को या किसी बछड़े को या किसी भी ‘ग़ैर-उपास्य’ को उपास्य बनाकर वह उत्तरदायित्व से स्वयं को आज़ाद समझता है. समस्त मानवीय इतिहास में यही अपराध इंसान करता रहा है.

सत्य यही है और इसे ही सत्य होना चाहिए कि इंसान का ख़ुदा एक ज़िंदा ख़ुदा है और सर्वशक्तिमान ख़ुदा है. उसी ने इंसान को बनाया है. वही इंसान का पालन-पोषण कर रहा है और उसी के प्रति इंसान उत्तरदायी है.

154 और हमने उन पर तूर पर्वत को उठाया उनसे प्रतिज्ञा लेने के लिए और हमने उनसे कहा, (बस्ती में) उसके दरवाज़े से (नम्रतापूर्वक) सर झुकाए हुए प्रवेश करना और उनसे कहा कि सबत के विषय में (अर्थात 'शनिवार' का दिन इबादत के लिए खास रखने के विषय में) सीमा का उल्लंघन न करना. इस पर हमने उनसे दृढ़ प्रतिज्ञा ली.

155 तो फिर उन्हें जो सज़ा मिली वह इस कारण मिली कि उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा को भंग किया और इस कारण कि उन्होंने अल्लाह के संदेशों को मानने से इन्कार किया और इस कारण कि उन्होंने पैग़ंबरों की अन्यायपूर्वक हत्या की और इस बात को कहने के कारण कि हमारे दिल तो बंद हैं (अर्थात हमारे दिलों पर तुम्हारी बात का कोई प्रभाव नहीं हो सकता). (नहीं!) बल्कि उनके द्वारा सत्य नकारने के कारण, (स्वयं) अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है. इसलिए ये बहुत कम ईमान लाते हैं. 156 और सत्य का इन्कार करने तथा मरियम पर झूठा आरोप (लांछन) लगाने के कारण (ये ख़ुदा की ओर से फिटकारे गए). 157 और उनके इस कथन के कारण (उन पर फिटकार पड़ी) कि हमने मरियम-पुत्र ईसा मसीह जो (स्वयं को) अल्लाह का पैग़ंबर (बताता था) उसकी हत्या कर दी. (लेकिन वास्तविकता इसके विपरीत है वह यह कि) उन्होंने न उसकी हत्या की और न उसे सूली पर चढ़ाया, बल्कि मामला उनके लिए संदिग्ध कर दिया गया. और जो लोग इस विषय में मतभेद कर रहे हैं, वे वास्तव में संदेह में पड़े हुए हैं. उनके पास इस विषय का कोई ज्ञान नहीं, वे सिर्फ़ अटकल का अनुसरण कर रहे हैं. (सत्य यह है कि) उन्होंने मसीह की हत्या की ही नहीं, 158 बल्कि अल्लाह ने (सम्मानपूर्वक) उसको अपनी ओर उठा लिया. (निस्संदेह!) अल्लाह प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है.

159 पूर्ववर्ती किताब वालों में से कोई ऐसा न होगा जो अपनी मृत्यु से पूर्व मसीह के संबंध से जो (सत्य है) उसको नहीं माना होगा. और पुनरुत्थान (अर्थात उठाए जाने) के दिन (स्वयं) मसीह उनके विरुद्ध सत्य की गवाही देगा. 160 (सारांश यह कि) यहूदियों के इसी अन्यायपूर्ण आचरण के कारण हमने बहुत सी अच्छी चीज़ें उनके लिए निषिद्ध कर दीं जो पहले उनके लिए वैध थीं. और इस कारण (उनके साथ यह किया गया कि) वे लोगों को अल्लाह के मार्ग से बहुत रोकते थे. 161 और इस कारण कि वे ब्याज लेते थे, जबकि इससे उन्हें मना किया गया था. और इस कारण कि वे लोगों का माल अवैध रूप से डकार जाते. तो उनमें से जो लोग सत्य का इन्कार करने वाले हैं उनके लिए हमने दर्दनाक सज़ा तैयार कर रखी है. 162 लेकिन इन (यहूदियों) में से जो लोग ज्ञान में पक्के हैं और ईमान रखने वाले हैं. और वे उस (ईश-संदेश) पर ईमान लाते हैं जो तुम्हारी ओर उतारा गया है और जो तुमसे पहले उतारा गया और जो नमाज़ का (नित्य) पालन करने वाले हैं और ज़कात देने वाले (अर्थात दान-कार्य करने वाले) हैं. और अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखने वाले हैं, यही वे लोग हैं जिन्हें हम शीघ्र ही बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे.

163 (ऐ मुहम्मद!) हमने तुम पर (हमारा) संदेश प्रकट किया है जिस तरह हमने नूह पर तथा उसके बाद दूसरे पैग़ंबरों पर (हमारा) संदेश प्रकट किया था. और हमने इब्राहीम, इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब और याक़ूब की संतान और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलेमान पर (हमारा) संदेश प्रकट किया था और हमने दाऊद को 'ज़ुबूर' यह ग्रंथ प्रदान किया था. 164 और (मानवीय इतिहास में) कितने ही पैग़ंबर (अर्थात ईश-संदेशवाहक) हुए जिनका वृत्तांत हम तुम्हें पहले सुना चुके हैं और ऐसे पैग़ंबर भी हैं जिनका वृत्तांत हमने तुम्हें नहीं सुनाया है. (उन सबकी ओर हमने

हमारा संदेश भेजा) **और अल्लाह ने मूसा से प्रत्यक्ष बात की जैसे बात की जाती है.**

नोटः- क़ुरआन जिस ख़ुदा को प्रस्तुत करता है वह एक ज़िंदा और विवेकवान तथा स्वयं अपना सबसे अलग अस्तित्व रखने वाला (अर्थात Personal God) है, जो देखता है, सुनता है, बात करता है, अपना संदेश भेजता है. यह वैसा ख़ुदा नहीं है, जैसा कुछ लोगों की ख़ुदा के संबंध से निराधार धारणा है कि वे कहते हैं कि कण-कण में भगवान होता है और वह निर्गुण, निराकार होता है. निस्संदेह! यह ख़ुदा के संबंध से निराधार एवं असत्य पर आधारित धारणा है.

ख़ुदा के संबंध से सत्य यह है कि ख़ुदा अनगिनत गुणों का मालिक है और हर गुण उसका असीम है. वह ऐसा है कि उस जैसा दूसरा कोई नहीं.

165 **अल्लाह ने पैग़ंबरों को शुभ-सूचना देने वाले और चेतावनी देने वाले बनाकर भेजा, ताकि पैग़ंबरों को भेजे जाने के बाद लोगों के पास अल्लाह के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए कोई तर्क (अथवा बहाना) न रहे (कि वे उसकी योजना से अनभिज्ञ थे). और अल्लाह प्रभुत्वशाली और बुद्धिमान है.**

नोटः- इस्लाम के अनुसार ख़ुदा अपनी बात बताने के लिए स्वयं अवतार नहीं लेता, बल्कि वह पैग़ंबरों को भेज कर इंसानों को उनके संबंध से अपनी योजना से अवगत कराता है. इसी योजना के अंतर्गत संपूर्ण मानवीय इतिहास में ख़ुदा की ओर से अनेकों पैग़ंबर आते रहे और किताबें भेजी जाती रहीं. चूँकि यह दुनिया हमेशा के लिए नहीं है, तो ख़ुदा ने अपनी योजना के अंतर्गत 'मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल-मुतल्लिब' को अंतिम पैग़ंबर बनाया और अंतिम ग्रंथ क़ुरआन को उन पर अवतरित किया और उसकी संपूर्ण सुरक्षा की स्वयं ज़िम्मेदारी ली. इस प्रकार कयामत तक के इंसानों के लिए मालिक ने मार्गदर्शन की व्यवस्था कर दी है.

इस व्यवस्था के बाद कोई भी ख़ुदा की अदालत में यह बहाना प्रस्तुत नहीं कर सकता कि ख़ुदाया! मुझे तेरी योजना के संबंध से कुछ भी पता नहीं था. मैं नहीं जानता था कि तूने इंसान को क्यों बनाया और उसको ज़मीन पर क्यों बसाया?

166 (लोगों का response जो भी हो) लेकिन स्वयं **अल्लाह उस पर गवाह है जो कुछ उसने तुम्हारे ऊपर उतारा है, उसने उसको**

अपने ज्ञान से उतारा है और इस बात की गवाही फ़रिश्ते भी देते हैं, यद्यपि अल्लाह गवाही के लिए पर्याप्त है.

> **नोटः-** 'क़ुरआन को अल्लाह ने अपने ज्ञान से उतारा है', क़ुरआन प्रकट होकर 1400 से अधिक वर्ष हो गए, लेकिन आज भी क़ुरआन उतना ही प्रासंगिक (relevant) है जितना वह उस वक्त था जब वह प्रकट किया गया. क़ुरआन में ऐसी कोई बात नहीं है जो किसी वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा स्थापित सत्य से टकराती हो. (For more details, read, Maurice Bucaile's book, 'Quran, Bible & Science').
>
> क़ुरआन का हर ज़माने के लिए प्रासंगिक होना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि यह उस सर्वोच्च ज्ञानवान का कलाम है जिसका ज्ञान time & space के beyond है.

167 और जिन लोगों ने (अल्लाह की ओर से प्रकट) सत्य का इन्कार किया और दूसरों को
अल्लाह के मार्ग से रोका. वह निश्चय ही भटक कर बहुत दूर निकल गए, 168 जो लोग
सत्य का इन्कार करने पर अड़े रहे और अत्याचारी कृत्य करते रहे, अल्लाह ऐसे लोगों को
कदापि क्षमा नहीं करेगा और न उन्हें कोई रास्ता दिखाएगा, 169 सिवाय जहन्नम के रास्ते
के, जिसमें वे हमेशा पड़े रहेंगे और यह अल्लाह के लिए आसान है.

> **नोटः-** ख़ुदा हठधर्मी लोगों को सत्य का स्वीकार करने के लिए विवश नहीं करता, इसीलिए वे लोग स्वयं अपने द्वारा चयन किए हुए जहन्नम के रास्ते पर चलते रहते हैं.

170 **ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से, पैग़ंबर सत्य का संदेश लेकर आया है, तो तुम उसको मान लो, यही तुम्हारे लिए उत्तम है और यदि तुम**

सत्य का अस्वीकार करोगे तो जान रखो, आसमानों में और धरती पर (अर्थात समस्त सृष्टी में) जो कुछ है निस्संदेह सब अल्लाह का है **और अल्लाह सब कुछ जानने वाला तथा बुद्धिमान है.**

नोटः- जहाँ तक लोगों की वास्तविक भलाई का संबंध है, लोगों के लिए अपने रब की ओर से आए हुए मार्गदर्शन को स्वीकार करने के मामले में दूसरा कोई विकल्प नहीं है. लेकिन वर्तमान दुनिया में इंसानों के रब ने इंसानों को जाँचने के लिए, उन्हें सीमित स्वातंत्र्य दे रखा है. यही कारण है कि इतिहास में बहुसंख्य लोगों ने अपने रब की ओर से आए हुए सत्य को स्वीकार नहीं किया.

लेकिन इंसान को समझना चाहिए कि उस ख़ुदा को न मानकर इंसान कहाँ जाएगा, जिसका सब कुछ है जो समस्त सृष्टि में है. उस ख़ुदा का इन्कार करके इंसान कहाँ शरण लेगा जो समस्त सृष्टि का वास्तविक मालिक है.

171 **ऐ पूर्ववर्ती किताब का अनुसरण करने वालो! मज़हब के मामले में अतिरेक करने वाले न बनो और अल्लाह के संबंध से सत्य के सिवा कुछ न कहो.** मरियम-पुत्र ईसा मसीह (इसके सिवा अन्य कुछ नहीं था) कि वह सिर्फ़ अल्लाह का संदेशवाहक था और अल्लाह की ओर से एक (आदेश-रूपी) फ़रमान था, जिसे उसने मरियम की ओर भेजा था और वह अल्लाह की ओर से एक आत्मा था. तो तुम अल्लाह और उसके पैग़ंबरों पर ईमान लाओ और यह न कहो कि अल्लाह तीन हैं. इस (असत्य से) बाज़ आ जाओ, यही तुम्हारे लिए उत्तम है. पूजा (उपासना) के योग्य तो केवल अकेला अल्लाह है. उस महिमावान के लिए यह अशोभनीय है कि उसका कोई पुत्र हो. आसमानों में और धरती पर (अर्थात समस्त सृष्टी में) जो कुछ है सब उसी का है. और अल्लाह के जैसा दूसरा कोई भी कार्यसाधक नहीं.

नोटः- संपूर्ण मानवीय इतिहास में इंसान मज़हब के नाम पर ऐसे अतिरेकपूर्ण कृत्ये करता रहा जिनका मज़हब से कोई वास्तविक संबंध नहीं था. ईसा मसीह ख़ुदा के उसी तरह पैग़ंबर थे, जैसे दूसरे पैग़ंबर. उनकी असल हैसियत यही थी कि वे सिर्फ पैग़ंबर थे और दूसरे इंसानों की तरह एक इंसान थे. लेकिन उनकी पैदाइश अपवादात्मक पैदाइश थी कि वे बग़ैर बाप के पैदा किए गए थे, जो की ख़ुदा की शान एवं सामर्थ्य का मामला था. लेकिन लोगों ने स्वयं अपनी तरफ़ से यह कह दिया कि वह ख़ुदा के बेटे हैं. इस असत्य में और असत्य को जोड़ा गया कि अल्लाह तीन हैं — फिर कहा गया कि तीनों का एकरूप ईसा मसीह है. क़ुरआन जो कि ख़ुदा का अंतिम एवं सुरक्षित मार्गदर्शन है — इन झूठी बातों का खंडन कर रहा है.

172 **मसीह को अल्लाह का बंदा बनने से कदापि संकोच न होगा और न अल्लाह के निकटवर्ती फ़रिश्तों को बंदा बनने से संकोच होगा और जो अल्लाह की बंदगी से संकोच करेगा और घमंड करेगा तो अल्लाह सबको अवश्य अपने सामने हाज़िर करेगा.** 173 फिर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए तो अल्लाह उन्हें (उनके कर्मों का) पूरा-पूरा प्रतिफल प्रदान करेगा और अपनी कृपा से उन्हें और अधिक भी प्रदान करेगा. और जिन लोगों ने (अल्लाह की बंदगी से) संकोच किया होगा और घमंड किया होगा, उन्हें अल्लाह दुखदायी सज़ा देगा और वे अल्लाह के मुक़ाबले में न किसी को अपना समर्थक पाएंगे और न कोई उनका सहायक होगा.

नोटः- ख़ुदा और उसकी रचना के दरमियान जो संबंध है वह मालिक और ग़ुलाम (अर्थात दास) का संबंध है. इंसान और सारी सृष्टि ख़ुदा की निर्मिती है, अर्थात वह सब, ख़ुदा के ग़ुलाम हैं, इसके सिवा कुछ नहीं. न कोई ख़ुदा का बेटा है और न कोई ख़ुदा का बाप है और न कोई ख़ुदा का अंश है, सब ख़ुदा के सिर्फ़ ग़ुलाम हैं — और ख़ुदा सबका मालिक है.

174 ऐ लोगो! (इस क़ुरआन के माध्यम से) तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य का स्पष्ट प्रमाण आ चुका है, इस प्रकार हमने तुम्हारे पास ऐसी रोशनी भेज दी है जो तुम्हें साफ़-साफ़ रास्ता बताने वाली है. 175 तो अब जो लोग अल्लाह पर ईमान लाएंगे और उसे मज़बूती के साथ पकड़े रहेंगे (अर्थात दृढ़तापूर्वक ईमान पर क़ायम रहेंगे) तो उन्हें अल्लाह अवश्य अपनी दया तथा कृपा के छत्र में जगह देगा और **उन्हें**

उसकी ओर जाने वाला सीधा मार्ग दिखाएगा.

नोटः- इंसानों के मार्गदर्शन की व्यवस्था इंसानों के रब के द्वारा ही हो सकती थी, जो कि हो चुकी है. चूँकि वर्तमान दुनिया परीक्षा के लिए है, इसलिए यहाँ मार्गदर्शन की व्यवस्था हो चुकने के बावजूद भी, मार्गदर्शन का स्वीकार अथवा अस्वीकार इंसान के अपने ऊपर है. लेकिन दोनों कृत्यों का परिणाम एक जैसा नहीं.

176 (पैग़ंबर!) लोग तुमसे कलाला के संबंध से धर्मादेश पूछते हैं. (कलाला अर्थात वह मृतक जिसकी न कोई संतान हो और न उसके माँ-बाप जीवित हों.) उनसे कह दो, अल्लाह तुमको कलाला के संबंध से आदेश देता है. यदि किसी आदमी की मृत्यु हो जाए और उसकी कोई संतान न हो, लेकिन यदि उसकी एक बहन हो तो उसके लिए मृतक के छोड़े हुए माल का आधा हिस्सा है और यदि बहन निःसंतान मर जाए तो भाई उसका वारिस होगा. और यदि मृतक की वारिस दो बहनें हों तो मृतक ने जो कुछ छोड़ा है, उसमें से उनके लिए दो-तिहाई होगा और यदि कई भाई-बहन वारिस हों तो एक पुरुष का हिस्सा दो स्त्रियों के बराबर होगा.

इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए यह सब स्पष्ट कर रहा है, ताकि तुम न भटको. और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखता है.

नोटः- हर चीज़ की जिसने रचना की, वही हर चीज़ का असली जानकार होगा. यह सारा मार्गदर्शन उसकी ओर से है जिसने हर चीज़ की रचना की. अब इससे बेहतर मार्गदर्शन और

किसका हो सकता है. अब जो कोई अपने सृजनकर्ता तथा स्वामी के मार्गदर्शन पर न चले तो उसका अंजाम भटकने के सिवा और कुछ नहीं हो सकता.

सूरह–5. अल–माइदा

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करो. तुम्हारे लिए चौपायों
कि प्रजाति के सभी जानवर वैध (हलाल) किए गए हैं, सिवाय उनके जिनका उल्लेख
आगे किया जा रहा है, लेकिन इहराम की अवस्था में (अर्थात हज एवं उमरा करने के
लिए धारण किए जाने वाले परिधान में) शिकार करने को वैध न समझो. निस्संदेह!
अल्लाह जो चाहता है, आदेश देता है.
2 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अनादर न करो
अल्लाह की निशानियों का और न निषिद्ध महीनों का और न बलि (अर्थात क़ुर्बानी) के
जानवरों का और न उन जानवरों का अनादर करो जिनकी गरदनों में (अल्लाह को अर्पित
किए जाने के संकेत के तौर पर) पट्टे पड़े हुए हैं और न उन लोगों का अनादर करो जो
अपने रब की कृपा और उसकी प्रसन्नता प्राप्ति के लिए प्रतिष्ठित घर (अर्थात काबा) की
ओर निकले हों.

हाँ! जब इहराम की हालत समाप्त हो जाए तो तुम शिकार कर सकते हो और ऐसा न हो कि एक समूह से तुम्हारी शत्रुता, जिसने तुम्हारे लिए प्रतिष्ठित घर (अर्थात काबा) का रास्ता बंद कर दिया था, तुम्हें इस बात पर उभारे कि तुम अन्याय करने लगो, तुम भलाई तथा ईश-भय के काम में एक-दूसरे का सहयोग करो. और गुनाह तथा अत्याचार के मामले में एक-दूसरे का सहयोग न करो. और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो. निस्संदेह! अल्लाह दंड देने के मामले में (भी) कठोर है.

3 तुम्हारे लिए अवैध (निषिद्ध) किया गया, मुर्दार (अर्थात स्वाभाविक मौत मरा हुआ प्राणी का मांस) और ख़ून और सुअर का मांस और वह जानवर जिसे बलि देते हुए अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो. और वह जानवर जो गला घोटकर या चोट खाकर या ऊँचाई से गिरकर मरा हो या (किसी दूसरे प्राणी के द्वारा) सींग मारने से मरा हो या वह जिसे दरिंदे ने फाड़ा हो, सिवाय उसके जिसे तुमने (ज़िंदा पाकर) उसको ज़बह कर लिया हो. और वह (भी अवैध है) जो किसी आस्ताने (देवस्थान) पर ज़बह किया गया हो (अर्थात बलि दिया गया हो). इसके साथ यह भी हराम (अवैध) है कि तुम पाँसों के द्वारा बँटवारा करो. यह अवज्ञापूर्ण कृत्य है. आज सत्य का इन्कार करने वाले तुम्हारे मज़हब (को नुक़सान पहुँचाने) के बारे में निराश हो चुके हैं तो तुम उनसे न डरो, बल्कि मुझसे डरो. **आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे मज़हब को परिपूर्ण कर दिया (अर्थात हमेशा के लिए सुरक्षित कर दिया). इस प्रकार मैंने तुम पर अपनी कृपा पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को तुम्हारे मज़हब की हैसियत से पसंद कर लिया (इस्लाम अर्थात अल्लाह को समर्पित होकर जीवन व्यतीत करना).**

नोटः- मानवीय इतिहास में अल्लाह की ओर से बार-बार जो मार्गदर्शन आता रहा — वह भी इस्लाम ही था, लेकिन क़ुरआन के रूप में उसका सुरक्षित version क़यामत तक के इंसानों के लिए ख़ुदा की ओर से भेजा गया. ख़ुदा को समर्पित जीवन पद्धती का नाम ही 'इस्लाम' है.

तो जो व्यक्ति भूख से मजबूर होकर (निषिद्ध चीज़ों में से कुछ खाले), लेकिन गुनाह करने में उसे कोई रुचि न हो तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है.

4 (पैग़ंबर!) लोग तुमसे पूछते हैं कि उनके लिए क्या वैध किया गया है? उनसे कहो, तुम्हारे लिए स्वच्छ तथा शुद्ध चीज़ें वैध कर दी गयी हैं. और जिन शिकारी जानवरों को तुमने सधाया हो, जिन्हें तुम अल्लाह ने तुम्हें दिए हुए ज्ञान के आधार पर शिकार करने की ट्रेनिंग दिया करते हो. वे जिस जानवर को तुम्हारे लिए पकड़ रखें, उसको भी तुम खा सकते हो और उस पर अल्लाह का नाम लो. और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो. निस्संदेह अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है.
5 आज तुम्हारे लिए सारी अच्छी चीज़ें वैध कर दी गयी हैं. पूर्ववर्ती किताब का अनुसरण करने वालों का खाना तुम्हारे लिए वैध है और तुम्हारा खाना उनके लिए वैध है. और वैध हैं तुम्हारे लिए (अर्थात विवाह करने के लिए वैध) सच्चरित्र औरतें — ईमान वाली औरतों में से और उन लोगों में से सच्चरित्र औरतें जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गयी थी, बस शर्त यह है कि तुम उनके महर अदा करके उन्हें (विधिवत) विवाह के शुद्ध बंधन में लाओ. न यह कि (उनके साथ खुले रूप से) स्वच्छंद काम तृप्ति में लिप्त हो और न चोरी-छुपे याराना करने लगो. जो व्यक्ति ईमान के बावजूद (अपने कृत्य से ईमान का) इन्कार करेगा तो उसका सारा किया-धरा बरबाद हो जाएगा और मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में वह घाटा उठाने वाले लोगों में से होगा.

6 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो (नमाज़ प्रारंभ करने से पहले) अपने चेहरों को और हाथों को कुहनियों तक धो लिया करो. और अपने हाथ भिगोकर अपने सिरों पर फेर लो. और अपने पैरों को भी टखनों तक धो लो. और यदि तुम नापाकी की हालत में हो तो स्नान करके पाक-साफ़ हो जाओ. लेकिन यदि तुम बीमार हो या यात्रा कर रहे हो या तुममें से कोई आदमी शौच से हो आया हो या तुमने पत्नियों के साथ (पति-पत्नी के) संबंध स्थापित किए

हों, फिर यदि तुम्हें पानी न मिले तो साफ़ मिट्टी से काम लो. उस पर हाथ मार कर अपने मुँह और हाथों पर फेर लो. (यह विकल्प इसलिए है कि) **अल्लाह तुम्हें किसी परेशानी में नहीं डालना चाहता.** बल्कि वह चाहता है कि तुम्हें स्वच्छ तथा निर्मल करे (अर्थात तन व मन से निर्मल) और अपनी कृपा तुम पर पूरी कर दे. ताकि तुम उसके प्रति आभार व्यक्त करने वाले बनो.

नोटः- इस्लाम कृपा तथा दयालुता का मज़हब है. इस्लाम किसी को विवश करने तथा परेशानी में डालने का मज़हब नहीं.

7 और अल्लाह के उस अनुग्रह को याद करो जो उसने तुम पर किया है और उस प्रतिज्ञा को भी याद रखो जो उसने तुमसे ली है — जब तुमने कहा था, हमने सुना और आज्ञापालन स्वीकार

किया. और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो. **निस्संदेह! अल्लाह वह सब कुछ जानता है जो तुम्हारे दिलों में है.**

नोटः- निस्संदेह! इस प्रकार का वक्तव्य वही दे सकता है जो दिलों का बनाने वाला है.

8 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह के लिए दृढ़तापूर्वक सत्य पर जमे रहने वाले और न्याय की गवाही देने वाले बनो. और ऐसा न हो कि किसी समूह से तुम्हारी शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभारे कि तुम न्याय न करो. न्याय करो, (क्योंकि न्यायपूर्ण व्यवहार) ख़ुदा के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) होने से अधिक निकटता रखता है. तो अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो. निस्संदेह! अल्लाह वह सब जानता है जो कुछ तुम करते हो.

नोटः- इस्लाम अपने मानने वालों को न्यायपूर्वक आचरण का आदेश देता है, जिसका उल्लेख इस संदेश-वचन में किया गया है.

9 जो लोग ईमान लाए और उन्होंने भले कर्म किए उनसे अल्लाह का वादा है कि वह उनकी

ग़लतियों को माफ़ कर देगा और उन्हें बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा.
10 **जो लोग सत्य का इन्कार करने पर तुले हुए हैं और हमारी संदेशयुक्त निशानियों को झूठा ठहराते हैं, तो यही वे लोग हैं जो जहन्नम के निवासी होंगे.**

नोटः- सत्य का इन्कार करने की सज़ा इस दुनिया में इंसान को तुरंत नहीं मिलती, यही कारण है कि इंसान सत्य को नकारता रहता है, लेकिन मौत के बाद इस कृत्य की भयानक सज़ा सामने आने वाली है.

11 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह के उस अनुग्रह को याद करो जो उसने तुम पर किया है, जबकि (तुमसे शत्रुत्व रखने वाला) एक समूह तुम पर आक्रमण करने को ही

था कि अल्लाह ने उनके हाथ तुमसे रोक दिए. और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो और ईमान वालों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रखें.

12 और अल्लाह ने इसराईल की संतान से प्रण लिया था और अल्लाह ने उनमें बारह निरीक्षक नियुक्त किए थे. और अल्लाह ने उनसे कहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, यदि तुम नित्य नमाज़ को अदा करते रहोगे और ज़कात अदा करोगे (अर्थात दानकार्य करोगे) और मेरे पैग़ंबरों पर विश्वास रखोगे और उनकी सहायता करोगे. और अल्लाह को अच्छा ऋण दोगे. तो मैं अवश्य तुमसे तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर दूँगा और तुम्हें निश्चय ही ऐसे बागों में दाख़िल करूँगा. जिनके नीचे

नहरें बह रही होंगी. **फिर इस (मार्गदर्शन) के बाद जो कोई सत्य का इन्कार करेगा तो वह सीधे रास्ते से भटक गया.**

नोटः- इंसान के मालिक ने इंसान को बनाकर अँधेरों में भटकते रहने के छोड़ नहीं दिया, बल्कि उसके मार्गदर्शन की पूरी व्यवस्था की.

अब जिसको अपने मालिक का मार्गदर्शन सिर्फ़ इसलिए मंजूर न हो कि उसके और उसके मालिक के बीच परीक्षा हेतु पर्दा है और उसे परीक्षा हेतु स्वातंत्र्य प्राप्त है. तो जिस इंसान ने अपने मालिक के मार्गदर्शन को नकार दिया हो, तो ऐसे इंसान को कहीं से कोई मार्गदर्शन प्राप्त होने वाला नहीं. ऐसे इंसान का सीधे रास्ते से भटक जाना अटल है.

13 तो उनके द्वारा बार-बार वचन भंग किए जाने के कारण उन पर हमारी फिटकार पड़ी और हमने उनके दिलों को कठोर कर दिया, तो अब वे (अल्लाह की ओर से प्रकट) शब्दों का उलट-फेर करके बात को कहीं से कहीं ले जाते हैं. उन्हें जो कुछ उपदेश किया

गया था उसका बड़ा भाग वह भुला बैठे . उनमें थोड़े से लोगों के सिवा उनके (बहुसंख्य) लोगों की ओर से तुम्हें विश्वासघात का अनुभव बार-बार होता रहता है. तो उन्हें क्षमा करो और उनकी हरकतों को अनदेखा करते रहो. निस्संदेह! अल्लाह को भले कर्म करने वाले लोग प्रिय हैं.

14 **इसी तरह हमने उन लोगों से भी दृढ़ प्रतिज्ञा ली थी जो कहते हैं कि हम नसरानी (अर्थात ईसाई) हैं, लेकिन उन्हें जो कुछ उपदेश किया गया था, उसका बड़ा हिस्सा वे भी भुला बैठे.** तो हमने क़यामत तक के लिए उनके बीच दुश्मनी और (परस्पर) द्वेष को डाल दिया. अंततः अल्लाह उन्हें उससे अवगत कर देगा जो कुछ वे करते रहे.

नोटः- क़ुरआन से पूर्व अवतरित आसमानी किताबों को सुरक्षित रखने की ज़िम्मेदारी आसमानी किताब के मानने वालों पर थी. लेकिन उन्होंने उसका असल और महत्वपूर्ण हिस्सा भुला दिया. उसके मानने वालों ने उसे सुरक्षित नहीं रखा. और अलग-अलग समूहों ने उसमें मनमर्ज़ी मिलावटें कीं — यही कारण है कि बायबल ख़ुदा की ओर से आने के बावजूद उसमें ख़ुदा का सही तसव्वुर मौजूद नहीं. यही कारण है कि बायबल के मानने वालों ने ख़ुदा के पैग़ंबर को ख़ुदा का बेटा क़रार दे दिया, जबकि स्वयं ईसा मसीह ने ऐसी कोई बात नहीं कहीं थी.

फिर ख़ुदा ने अपनी अंतिम आसमानी किताब को अवतरित करके आसमानी मार्गदर्शन के उस असल हिस्से को स्पष्ट कर दिया जिसे पूर्ववर्ती किताब वालों ने भूला बैठा

था. और इस अंतिम आसमानी किताब को सुरक्षित रखने की ज़िम्मेदारी ख़ुदा ने स्वयं अपने ऊपर ली. अब क़ुरआन-रूपी आसमानी ग्रंथ as it is सुरक्षित रूप में उपलब्ध है. जिसके द्वारा कोई भी इंसान ख़ुदा की वास्तविक संकल्पना को जान सकता है और इंसान के संबंध से ख़ुदा की स्कीम को मालूम कर सकता है.

15 **ऐ पूर्ववर्ती किताब का अनुसरण करने वालो! हमारा संदेशवाहक तुम्हारे पास आ चुका है. वह अल्लाह की किताब की बहुत सी उन बातों को तुम्हारे सामने स्पष्ट कर रहा है जिन्हें तुम छिपाते थे. और बहुत सी बातों की ओर वह अनदेखा करता है, तो (ऐ पूर्ववर्ती किताब वालो!) तो अब तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से (सन्मार्ग बताने वाला) प्रकाश और सत्य को स्पष्ट करने वाली एक किताब आ चुकी है.**

16 इस (किताब) के माध्यम से अल्लाह उन लोगों को **शांती के मार्ग दिखाता है जो उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने के इच्छुक हैं और वह अपनी कृपा से उन्हें अँधेरों से (अर्थात असत्य के अँधेरों से)** निकाल कर (सत्य के) प्रकाश में लाता है और सीधे रास्ते की ओर उनका मार्गदर्शन करता है.

नोटः- जो लोग सच्चे मायने में सत्य को प्राप्त करने के संबंध से गंभीर एवं प्रयासरत होंगे — ऐसे ही लोगों को ख़ुदा सत्य, शांति एवं उसकी प्रसन्नता प्राप्ति का मार्ग दिखाएगा. ऐसे ही लोगों को ख़ुदा असत्य के अँधेरों से निकाल कर सत्य के प्रकाश में लाएगा.

इंसान ख़ुदा की ओर यदि एक क़दम बढ़े तो ख़ुदा उसकी ओर दो क़दम या उससे ज़्यादा क़दम आगे बढ़ेगा. ख़ुदा का मार्गदर्शन किसी को बरसात के पानी की तरह अपने आप नहीं मिलता. ख़ुदा का मार्गदर्शन सत्य के गंभीर खोजी को प्राप्त होता है.

17 **निस्संदेह! उन लोगो ने सत्य का इन्कार किया जिन्होंने कहा, मरियम-पुत्र मसीह ही ख़ुदा है. (पैग़ंबर!) उनसे कहो कि यदि अल्लाह मरियम-पुत्र मसीह को और**

उसकी माँ को और जितने लोग धरती पर हैं उन सबको नष्ट करना चाहे तो कौन है जो अल्लाह को ऐसा करने से रोक सके. अल्लाह ही का साम्राज्य है आसमानों तथा धरती पर और उन पर जो इन दोनों के बीच हैं. वह जो चाहता है उसका सृजन करता है. और अल्लाह सब कुछ करने की सामर्थ्य रखता है.

नोटः- मसीह के संबंध से सत्य यह है कि वह मात्र ख़ुदा का पैग़ंबर (संदेशवाहक) था — इसके सिवा और कुछ नहीं. अब जो लोग कहते हैं कि मसीह ख़ुदा है तो निस्संदेह! वे सत्य का इन्कार करने वाले हैं.

ख़ुदा की ज़ात सबसे अलग है. सबसे महान है. वह न किसी का बेटा है, न किसी का बाप है और न किसी में उसका अंश है. मसीह, मसीह की माँ मरियम और धरती पर जितने लोग हैं सब के सब नष्ट कर दिए जाएँ, तब भी वह अकेला हमेशा बाक़ी रहने वाला है. उस जैसी जबरदस्त ज़ात, उस जैसी प्रभुत्वशाली ज़ात दुसरी कोई नहीं!

क़ुरआन का यह वक्तव्य अपने आप में इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि यह वक्तव्य मसीह का, उसकी माँ का और सारे इंसानों का सृजन करने वाले ख़ुदा का वक्तव्य है. यह उसका वक्तव्य है जिसके हाथ में मसीह की, उसके माँ की और सारे इंसानों की ज़िंदगी तथा मौत की डोर है. यह उसका ही वक्तव्य हो सकता है जो वास्तव में ख़ुदा है और जिसका सब पर संपूर्ण नियंत्रण है. यह वक्तव्य ख़ुदा के सिवा अन्य किसी का नहीं हो सकता.

18 यहूदी और ईसाई कहते हैं कि हम अल्लाह के बेटे हैं और उसके चहेते हैं. तुम उनसे पूछो कि फिर वह तुम्हारे पापों पर तुम्हें दंड क्यों देता है. नहीं! (बात यह नहीं है,)

बल्कि तुम भी वैसे ही इंसान हो जैसे और इंसान अल्लाह ने सृजन किए हैं. वह जिसे चाहता है क्षमा करता है और जिसे चाहता है दंड देता है और आसमानों पर और धरती पर और जो कुछ इन दोनों के बीच में है उस पर अल्लाह ही की प्रभुसत्ता है. और उसी की ओर सबको लौट कर जाना है.

19 ऐ पूर्ववर्ती ग्रंथ को मानने वालो! एक मुद्दत तक पैग़ंबरों के आने का सिलसिला बंद रहने के पश्चात, अब तुम्हारे पास हमारा पैग़ंबर आ चुका है. जो तुम्हारे सामने (सत्य का) संदेश स्पष्ट रूप से बयान कर रहा है, ताकि तुम यह कह न सको कि हमारी ओर कोई शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला नहीं आया. तो देखो, अब तुम्हारे पास शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला आ चुका है. और अल्लाह सब कुछ करने की सामर्थ्य रखता है.

20 और (उस समय का स्मरण करो) जब मूसा ने अपने लोगों से कहा था कि ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह के उस अनुग्रह को याद करो जो उसने तुम पर किया है कि उसने तुममें से अपने पैग़ंबरों को नियुक्त किया. और तुम्हारे हाथ में सत्ता दी. इस प्रकार तुम्हें वह कुछ
दिया जो दुनिया में अन्य किसी को नहीं दिया था. 21 ऐ मेरी क़ौम के लोगो! उस पावन
भूमि में प्रवेश करो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है और अपनी पीठ की ओर न
फिरो, अन्यथा घाटे में पड़ जाओगे. 22 (इस पर) उन्होंने कहा, ऐ मूसा! वहाँ तो बड़े
शक्तिशाली लोग रहते हैं. हम तो वहाँ कदापि नहीं जा सकते, जब तक वे वहाँ से निकल
न जाएँ. यदि वे वहाँ से निकल जाएँ तो हम अवश्य उसमें प्रवेश करेंगे. 23 (लेकिन)
उनमें दो लोग ऐसे थे जो अल्लाह का डर रखने वालों में से थे जिन्हें अल्लाह ने पुरस्कृत किया था, कहा, तुम उन पर चढ़ाई करते हुए शहर के द्वार में प्रवेश करो. जब तुम भीतर पहुँच जाओगे तो तुम ही वर्चस्व प्राप्त करोगे और अल्लाह पर भरोसा रखो यदि तुम ईमान
वाले हो. 24 उन्होंने कहा, ऐ मूसा! जब तक वे लोग वहाँ हैं हम तो वहाँ कदापि नहीं जाएंगे. (यदि तुम्हें उस बस्ती पर चढ़ाई करना ही है तो) तुम और तुम्हारा रब दोनों जाकर लड़ो, हम तो इसी स्थान पर बैठे रहेंगे.

25 (इस पर) मूसा ने अल्लाह से दुआ की, (कहा,) ऐ मेरे रब! स्वयं अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर मेरा कोई अधिकार (अर्थात नियंत्रण) नहीं है, तो तू हमें इन

अवज्ञाकारी लोगों से अलग कर दे. 26 अल्लाह ने कहा, अच्छा तो अब यह भूमि चालीस वर्ष तक इनके लिए निषिद्ध (हराम) है. यह लोग धरती पर भटकते फिरेंगे तो तुम इन अवज्ञाकारी लोगों के बारें में दुःखी न हो.

27 और इन्हें आदम के दो बेटों (हाबिल व क़ाबिल) के संबंध से सच्चा वृतांत सुना दो. जब उन दोनों ने क़ुर्बानी की (बलि दिया), तो उनमें से एक की क़ुर्बानी स्वीकार की गयी और दूसरे की स्वीकार न की गयी. (जिसकी क़ुर्बानी स्वीकृत नहीं हुई) उसने कहा मैं तुझे मार डालूँगा, (जिसकी क़ुर्बानी स्वीकृत हुई) उसने जवाब दिया, **अल्लाह तो मात्र उन्हीं की (क़ुर्बानी) स्वीकृत करता है जो उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहते हैं.**

नोटः- हज़रत मुहम्मद साहब के मानने वालों से क़ुरआन में कहा गया कि अल्लाह को ख़ून और गोश्त नहीं पहुँचता, बल्कि दिलों में अल्लाह के प्रति सचेत एवं उत्तरदायी होने की जो भावना होगी, वह अल्लाह तक पहुँचती है. ठीक इसी बात से मनुष्य जाति की प्रारंभिक पीढ़ी को भी अवगत कराया गया था. इससे स्पष्ट है कि सच्चे ख़ुदा का वास्तविक उपदेश सारे इंसानों के लिए एक ही है.

मानवीय इतिहास में जो सबसे पहले भाई थे (अर्थात आदम की पहली पीढ़ी) उनमें से जिसकी क़ुर्बानी स्वीकार हुई थी, वह अल्लाह के प्रति सचेत एवं उत्तरदायी इंसान था, इसका उदाहरण अगले संदेश-वचन में उपलब्ध है कि जो अल्लाह से डरने वाला था उसने अपने भाई से कहा **कि यदि तू मेरे साथ हिंसा का मामला करता है, लेकिन मैं अल्लाह से डरता हूँ, मैं तेरे साथ हिंसा का मामला नहीं करूँगा.**

यहाँ दो बातें बिल्कुल स्पष्ट हैं कि ख़ुदा ने इंसानों को बिल्कुल आरंभ से ही जो दीन (अर्थात मज़हब) बताया है उसमें निष्पाप इंसान के विरुद्ध हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है

और दूसरी बात ख़ुदा के बताएहुए दीन का आधार (पहले इंसान से लेकर अंतिम इंसान के लिए) उत्तरदायित्व (God-consciousness/accountability) है.

यहाँ इस घटना के द्वारा और एक बात यह भी स्पष्ट होती है कि यह किताब उसकी किताब है जिसकी संपूर्ण इतिहास पर नज़र है. निस्संदेह! यह सच्चे ख़ुदा की किताब है!

28 यदि तुम मेरी हत्या करने के लिए मुझ पर अपना हाथ उठाओगे, तब भी मैं तुम्हारी हत्या करने के लिए अपना हाथ तुम पर नहीं उठाऊँगा. मैं डरता हूँ अल्लाह से जो सारे संसार का रब है.

नोटः- इंसान को जब धरती पर बसाया गया तो बिल्कुल शुरू से ही उसको यह बता दिया गया कि यदि तू अल्लाह से डरने वाला है तो तुझे दूसरे इंसान के प्रति हिंसा नहीं करना है. जिसके अंदर वास्तव में ख़ुदा का डर होगा वह दूसरे इंसान के प्रतिकदापि हिंसा नहीं करेगा.

जो लोग इस्लाम का चोला पहन कर दुनिया में हिंसा का कृत्य कर रहे हैं उनका इस्लाम से कोई संबंध नहीं, फिर वे 'इस्लाम ज़िंदाबाद' या 'नारे तकबीर अल्लाहू-अकबर' के कितने ही नारे क्यों न बुलंद करते हों. यह हिंसा करने वाले इस्लाम के खुले दुश्मन हैं और शैतान के सच्चे साथी हैं — इसके सिवा और कुछ नहीं. शैतान चाहता है कि ज़मीन पर हिंसा एवं अशांति हो, ताकि लोग अपने वास्तविक मालिक को और उसकी स्कीम को जान न सकें और वह जाने बग़ैर ही मर जाएँ, ताकि वे हमेशा के लिए विफल हो जाएँ.

29 **(अहिंसा-प्रिय भाई ने आगे कहा,) मैं चाहता हूँ कि मेरा गुनाह और अपना गुनाह तू ही अपने सिर ले ले, फिर (परिणाम-स्वरूप) तू आग वालों में शामिल हो जाए. (हाँ!) यही प्रतिफल है अत्याचारी लोगों का.**
30 **फिर उसके मन ने उसको अपने भाई की हत्या पर आमादा कर लिया (अर्थात वह हत्या करने के लिए मानसिक तौर पर तैयार हो गया) फिर उसने उसकी हत्या कर डाली. फिर वह नुक़सान उठाने वालों में शामिल हो गया.**

नोटः- इस संदेश-वचन से पता चलता है कि हिंसा करने वाले लोग, अल्लाह के पास कोई इनाम पाने वाले नहीं हैं, बल्कि वह भयानक नुक़सान में पड़ने वाले हैं. सारे इंसान ख़ुदा के बंदे हैं और आदम के बेटे हैं. किसी इंसान ने दूसरे इंसान को ज़िंदगी नहीं दी है, इसीलिए किसी इंसान को यह हक़ नहीं कि वह किसी इंसान को मार डाले.

31 फिर अल्लाह ने एक कौवे को भेजा जो भूमि कुरेदने लगा, ताकि उसे दिखा दे कि वह अपने भाई के शव को किस तरह छिपाए. वह कहने लगा, अफसोस मुझ पर! कि मैं इस कौवे जैसा भी न हो सका कि मैं अपने भाई के शव को छिपा देता. फिर वह (अपने किए पर) शरमिंदा हुआ.

32 इसी कारण हमने इसराईल की संतान पर यह लिख दिया था कि **ख़ून का बदला लेने के सिवा या धरती पर उपद्रवी कृत्यों की**

सज़ा के सिवा किसी इंसान की हत्या करना (हमारी दृष्टि में) ऐसा कृत्य है जैसे उसने सारी मानवता की हत्या कर डाली और जिसने एक इंसान को बचाया तो उसने सारी मानवता को बचा लिया. और हमारे पैग़ंबर (लोगों की ओर) सत्य के स्पष्ट प्रमाण लेकर आए, लेकिन इसके बावजूद भी धरती पर बहुसंख्य लोग ज़्यादती करने वाले हैं.

नोटः- जो भी व्यक्ति या समूह निरपराध लोगों के विरुद्ध हिंसा का कृत्य कर रहा हो तो उसके इस हिंसक कृत्य का संबंध दूसरे किसी भी विचारधारा से हो सकता है, लेकिन उसका संबंध इस्लाम की विचारधारा से बिल्कुल नहीं.

हक़ीक़त यह है कि इंसान ने इंसान को नहीं बनाया. इसलिए किसी इंसान को यह हक़ नहीं कि वह किसी दूसरे इंसान को मारे. इंसान को मृत्यु देने का हक़ केवल उसका है जिसने इंसान को बनाया.

लेकिन अपवादात्मक केस में किसी इंसान को इंसान के द्वारा मारा जाता है तब भी यह उसी की अनुमति के अनुसार होगा, जिसने इंसान को बनाया.

33 जो लोग अल्लाह और उसके पैग़ंबर से लड़ते हैं और धरती पर उपद्रव मचाने के लिए दौड़-धूप करते हैं, उनकी सज़ा यही है कि उनकी हत्या की जाए या वह सूली पर चढ़ाए जाएँ या उनके हाथ-पाँव विपरीत दिशाओं से काट दिए जाएँ या उन्हें देश से निष्कासित किया जाए. यह (सज़ा-रूपी) अपमान उनके लिए इस दुनिया में है और मृत्यु-पश्चात शाश्वत दुनिया में उनके लिए (इससे भी अधिक) कठोर सज़ा है. 34 लेकिन जो लोग, तुम उन पर क़ाबू पाने से पहले, पलट आएँ तो जान लो कि अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है.

35 ऐ ईमान लाने वालो! अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो और उसकी निकटता प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहो. और उसके मार्ग में जी-तोड़ कोशिश करो, ताकि तुम सफलता पाओ. 36 निस्संदेह, जो लोग सत्य का इन्कार करने पर तुले रहे, यदि उनके पास वह सब कुछ हो, जो पृथ्वी पर है और इतना ही और हो, **और वे यह सब कुछ मुक्ति-धन के तौर पर देकर क़यामत के दिन की सज़ा से बचना चाहें, तब भी वह उनसे स्वीकार नहीं किया जाएगा. उनके लिए दुखदायी सज़ा (अटल) है.** 37 वे चाहेंगे कि आग से निकल भागें, मगर वे उससे निकल न सकेंगे. और उनके लिए चिरस्थायी यातना है.

नोटः- क़यामत का दिन शुद्ध न्याय का दिन है. वहाँ इंसान के साथ वही कुछ होगा जिसके लिए इंसान वास्तव में पात्र होगा. वर्तमान दुनिया में लोग अपनी धन-शक्ति के बल पर वह चीज़ भी पा लेते हैं जिसके लिए वह वास्तव में पात्र नहीं होते. लेकिन ख़ुदा की अदालत में किसी अपराधी के लिए किसी भी प्रकार से मुक्ति पाने का कोई रास्ता नहीं. वहाँ कोई अपराधी बच कर नहीं निकल सकता.

38 **चोर चाहे स्त्री हो या पुरुष दोनों के हाथ काट दो.**
यह उनकी कमाई का बदला है. और यह अल्लाह की ओर से ऐसी सज़ा है जिसमें (दूसरों के लिए) सबक़ है. और अल्लाह प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है.
39 फिर जो व्यक्ति अत्याचारी कृत्य करने के बाद (सन्मार्ग की ओर) पलट आए और अपना सुधार कर ले, तो निस्संदेह, अल्लाह भी (क्षमाशीलता के साथ) उसकी ओर ध्यान देगा. निस्संदेह! अल्लाह बड़ा क्षमाशील एवं दयावान है.

नोटः- इस्लाम कृपा वाला धर्म है. जिसमें एक मजबूर इंसान के लिए क्षणिक तौर पर विवशतापूर्वक किया जाने वाला बुरा कार्य क्षमायोग्य होता है. इसलिए किसी को दंड-योग्य ठहराते समय उस बुरे कार्य की हक़ीक़त गंभीरतापूर्वक देखी जाएगी. क्योंकि इस्लाम इंसान को बदलने का मौक़ा देता है. लेकिन जो व्यक्ति साबित-शुदा तौर पर समाज के लिए उपद्रवी बन चुका होगा ऐसे ही चोर के हाथ न्यायव्यवस्था के आदेश के अंतर्गत काटे जाएँगे, न कि कोई किसी को चोर बताकर किसी के हाथ काट सकता है.

40 **क्या तुम नहीं जानते कि आसमानों और धरती (अर्थात समस्त** universe) **के साम्राज्य का स्वामी अल्लाह है. वह जिसे चाहे सज़ा दे और जिसे चाहे क्षमा कर दे. उसे हर चीज़ पर प्रभुत्व प्राप्त है.**

नोटः- ज़मीन और आसमानों का मालिक होने की बात पूरे confidence के साथ वही कर सकता है जो उनका वास्तविक स्वामी हो.

41 पैग़ंबर! वे लोग तुम्हारे लिए दुःख का कारण न बनें जो सत्य नकारने में बड़ी तत्परता दिखा रहे हैं. चाहे वह उनमें से हों जो अपने मुँह से कहते हैं कि हम ईमान लाए, हालाँकि उनके दिल ईमान नहीं लाए. या उनमें से हों जो यहूदी हैं, (जिनका हाल यह है कि) वे झूठ को बड़े उत्साह के साथ सुनते हैं और (उनमें ऐसे भी हैं जो तुम्हारी बातें) उन लोगों के लिए सुनते हैं जो तुम्हारे पास नहीं आते. वह (अल्लाह की ओर से प्रकट किए गए) शब्दों को उनके संदर्भ के बिना तोड़-मरोड़ के प्रस्तुत करते हैं. वह लोगों से कहते हैं कि यदि तुम्हें इस प्रकार का उपदेश मिले तो उसे स्वीकार कर लेना और यदि तुम्हें इस प्रकार का उपदेश न मिले तो उससे बचकर रहना. जिसे अल्लाह परीक्षा में डालना चाहे तो तुम अल्लाह के मुक़ाबले में उसके मामले में कुछ नहीं कर सकते. यही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने शुद्ध करना नहीं चाहा. उनके लिए दुनिया में अपमान है और मृत्यु-पश्चात शाश्वत दुनिया में उनके लिए सख़्त सज़ा है.

42 वे झूठ को बड़ी उत्सुकता के साथ सुनते हैं और हराम माल (अर्थात अनुचित मार्ग से प्राप्त किया हुआ धन) खाते हैं. यदि वे तुम्हारे पास फ़ैसला कराने के लिए (अपने विवाद लेकर) आएँ तो तुम चाहे तो उनके बीच फ़ैसला करो या उन्हें टाल दो. यदि तुम उन्हें टाल दोगे तो वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते. और यदि तुम फ़ैसला करो तो उनके बीच न्याय के अनुसार फ़ैसला करो. निस्संदेह अल्लाह न्याय करने वालों को पसंद करता है. 43 वे तुम्हें कैसे फ़ैसला करने वाला बना सकते हैं, जबकि उनके पास तौरात मौजूद है जिसमें अल्लाह का आदेश लिखा हुआ है और फिर ये उससे मुँह मोड़ रहे हैं. (वास्तविकता यह है कि) यह लोग हरगिज़ ईमान वाले नहीं हैं.

44 **निस्संदेह! हमने तौरात उतारी जिसमें (पथभ्रष्टता का अँधेरा दूर करने वाला) मार्गदर्शन और प्रकाश था. ख़ुदा के पैग़ंबर, जो कि उसके (पूर्णतः) आज्ञाकारी होते हैं, वे तौरात के अनुसार यहूदी लोगों के मामलों का फ़ैसला करते थे, और इसी के अनुसार फ़ैसला करते थे उनके धर्मगुरू तथा धार्मिक विधि-तज्ञ, जिन्हें अल्लाह की किताब को सुरक्षित रखने की ज़िम्मेदारी सौंपी गयी थी और वे इस पर गवाह थे. तो (ऐ इसराईल की संतान!) तुम इंसानों से न डरो, बल्कि मुझसे डरो और तुच्छ लाभ प्राप्ति के लिए मेरे संदेशों का सौदा न करो. और जो कोई उसके अनुसार फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा है — तो ऐसे ही लोग सत्य का इन्कार करने वाले हैं.**

नोटः- क़ुरआन से पहले की आसमानी किताबों को सुरक्षित रखने की ज़िम्मेदारी उनके मानने वालों पर थी, लेकिन उन किताबों के मानने वाले इस परीक्षा में विफल रहे. अब अंतिम आसमानी किताब क़ुरआन की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी स्वयं ख़ुदा ने अपने ऊपर ले रखी है, यही कारण है कि क़ुरआन प्रकट होने के बाद से आज तक वह as it is सुरक्षित है, इसीलिए अब क़यामत तक के इंसानों को ख़ुदा का मार्गदर्शन प्राप्त करने का एकमात्र माध्यम सिर्फ़ क़ुरआन है.

45 तौरात में हमने यहूदियों पर यह हुक्म लिख दिया था कि (किसी से बदला लेते हुए इस प्रकार बदला लिया जाएगा कि) जान के बदले जान और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और सब आघातों के लिए इसी तरह बराबर का बदला है. फिर जिस किसी ने (बदला न लेकर) क्षमादान

का मामला किया तो ऐसा करना उसके लिए (अपने पापों का) प्रायश्चित्त होगा (अर्थात ख़ुदा भी उसके गुनाहों को माफ़ कर देगा).

जो कोई उसके अनुसार फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो ऐसे ही लोग अत्याचारी हैं.

नोटः- ख़ुदा की किताब बंदों के संबंध से ख़ुदा का फ़ैसला होता है. इसलिए आवश्यक होता है कि जीवन के मामलों में उसी के मार्गदर्शन का अनुसरण किया जाए और परस्पर विवादों में उसी के आदेशों के अनुसार फ़ैसला किया जाए. यदि ख़ुदा की किताब को फ़ैसला करने वाली न माना जाए, बल्कि अपने मामलों तथा विवादों का निपटारा अपनी इच्छा तथा स्वार्थ के अधीन रहकर किया जाए, तो यह व्यवहारिक स्तर पर ख़ुदा की किताब का इन्कार करना होगा, फिर दिखावे के लिए लोग ख़ुदा की किताब का कितना ही सम्मान क्यों न करें. ख़ुदा की दृष्टि में उसकी कोई क़ीमत नहीं.

वही लोग वास्तव में ख़ुदा की किताब का सम्मान करने वाले हैं जो अपनी इच्छा तथा अपने स्वार्थ के विरुद्ध भी ख़ुदा की किताब के फ़ैसले को दिल की रज़ामंदी के साथ अपनाते हों.

46 फिर हमने इन पैग़ंबरों के पीछे इनके पद-चिन्हों पर मरियम-पुत्र ईसा मसीह को भेजा
(पूर्व ईश-ग्रंथ) तौरात में से जो कुछ (बे-मिलावटी) ईश-संदेश उनके पास था, वह
उसकी पुष्टि करने वाला था. और हमने उसको इंजील (अर्थात बायबल) यह ग्रंथ प्रदान
किया था — जिसमें मार्गदर्शन तथा (पथभ्रष्टता का अँधेरा दूर करने वाला) प्रकाश था.
यह ग्रंथ (तौरात) में से जो कुछ ईश-संदेश मौजूद था उसकी पुष्टि करने वाला था. उसमें
उन लोगों के लिए मार्गदर्शन तथा उपदेश
था जो अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहते हैं. 47 (आसमानी ग्रंथ) 'इंजील'
(का अनुसरण करने) वालों को चाहिए कि उसके अनुसार फ़ैसला करें जो अल्लाह ने

उसमें उतारा है. तो जो कोई उसके अनुसार फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो यही लोग (वास्तव में) अवज्ञाकारी हैं.

नोटः- वर्तमान बायबल (इंजील) सारा का सारा as it is नहीं है, जैसा कि वह ख़ुदा के पास से आया था. अब ईश्वरीय मार्गदर्शन प्राप्त करने का एकमात्र माध्यम सिर्फ़ क़ुरआन है जो उसी प्रकार as it is है, जैसे वह ख़ुदा की ओर से आया था.

48 (पैग़ंबर!) हमने तुम्हारी ओर सत्य पर आधारित यह ग्रंथ प्रकट किया है. **ख़ुदा के पूर्ववर्ती ग्रंथ में से जो मौजूद है उसकी पुष्टि करने वाला है और उसका रक्षण करने वाला है.**

नोटः- ख़ुदा की बात चाहे वह पूर्ववर्ती किताब से हो, यदि वह अपने मूल रूप में आज भी मौजूद हो तो वह उतनी ही महत्वपूर्ण बात है जितनी महत्वपूर्ण बात अंतिम एवं सुरक्षित किताब 'क़ुरआन' की है. लेकिन पूर्ववर्ती किताब में से कोई बात ख़ुदा की original बात है या नहीं इसकी पुष्टि भी अब क़ुरआन के द्वारा ही होगी.

अब क़यामत तक के इंसानों के लिए सत्य जानने का माध्यम सिर्फ़ क़ुरआन है. इसी के साथ, पूर्ववर्ती किताबों में से जो कुछ मौजूद है उसकी सत्यता प्रमाणित करने की कसौटी भी केवल क़ुरआन है, क्योंकि क़ुरआन ख़ुदा की ओर से आए हुए ग्रंथों में से एकमात्र ग्रंथ है जो पूर्णतः सुरक्षित है. अब **'ख़ुदा का वास्तविक परिचय'**, **'मृत्यु-पश्चात इंसान का अंजाम'**, **'जीवन जीने का ख़ुदा के द्वारा प्रमाणित मार्ग'** यह जानने का एकमात्र माध्यम केवल क़ुरआन है.

तो (पैग़ंबर!) तुम उनके बीच फ़ैसला करो उसके अनुसार जो अल्लाह ने उतारा है. और जो सत्य तुम्हारे पास आया है उसे छोड़कर उनकी इच्छाओं का अनुसरण न करो. हमने तुममें से प्रत्येक के लिए एक मज़हब-विधान तथा एक कर्म-पथ निर्धारित किया है.

अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही समुदाय बना देता, लेकिन अल्लाह ने चाहा कि वह अपने दिये हुए आदेशों में तुम्हारी परीक्षा ले. तो तुम भले कर्म करने में एक-दूसरे से आगे बढो. अंततः तुम सबको अल्लाह ही की ओर पलटकर जाना है. फिर वह तुम्हें उसकी हक़ीक़त बता देगा जिसके संबंध से तुम मतभेद कर रहे हो.

नोटः- अर्थात वह तुम्हें कृत्य-स्वातंत्र्य ही नहीं देता तो फिर तुम विविध मज़हब तथा संप्रदाय का निर्माण कर ही नहीं सकते थे. लेकिन उसने तुम्हारी परीक्षा लेनी चाही — इसी कारण उसने तुम्हें सीमित कृत्य-स्वातंत्र्य दिया है.

इस संदेश-वचन से इस बात का पता चलता है कि ख़ुदा-निर्देशित एक मार्ग (अर्थात मज़हब) को छोड़कर सारे मज़हब तथा संप्रदाय मानव-निर्मित हैं, जो परीक्षा हेतु प्राप्त स्वातंत्र्य के दुरुपयोग के कारण तथा उत्तरदायित्व से फ़रार प्राप्त करने हेतु निर्माण किए गए हैं, क्योंकि उत्तरदायित्व की संकल्पना सिर्फ़ ख़ुदा के द्वारा बताए गए सत्य-मार्ग से संबंधित है.

और जहाँ तक वर्तमान उपलब्ध धर्मों का संबंध है, इस्लाम के सिवा वास्तव में उत्तरदायित्व की संकल्पना कहीं मौजूद नहीं है. इस्लाम ही यह बताता है, बार-बार ज़ोर देकर बताता है कि हर इंसान को अपनी ज़िंदगी का हिसाब देने के लिए अपने मालिक के सामने खड़ा होना है.

> वर्तमान दुनिया में पाए जाने वाले मतभेद इस बात का तक़ाज़ा करते हैं कि वह दिन आए जब सच्चाई से पर्दा उठे और सारे मतभेदों की हक़ीक़त स्पष्ट हो जाए.

49 तो (पैग़ंबर!) उनके बीच उसके अनुसार निर्णय करो जो अल्लाह ने उतारा है और उनकी इच्छाओं का अनुसरण न करो. और उन लोगों से सावधान रहो कि ऐसा न हो कि वे अल्लाह के उतारे हुए किसी आदेश से तुम्हें तनिक भी विचलित कर पाएँ. फिर यदि वे उससे मुँह मोड़े (जो अल्लाह ने उतारा है) तो जान लो कि (अब) अल्लाह उन्हें उनके कुछ गुनाहों का दंड देना चाहता है. और सच्चाई यह है कि लोगों में अधिकतर अवज्ञाकारी हैं.

50 क्या ये लोग (ख़ुदा के मार्गदर्शन को छोड़कर) अज्ञानता के आधार पर फ़ैसला चाहते हैं, लेकिन जो अल्लाह पर विश्वास करने वाले हैं — उनके लिए अल्लाह से बेहतर फ़ैसला करने वाला कौन हो सकता है?

51 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! यहूदियों तथा ईसाइयों को अपना मित्र (भेद जानने वाला) मत बनाओ. वे एक-दूसरे के मित्र हैं और तुममें से जो व्यक्ति उन्हें अपना मित्र बनाएगा तो वह उन्हीं में से होगा. निस्संदेह! अल्लाह अत्याचारियों को मार्ग नहीं दिखाता.

52 तो तुम देखते हो कि जिनके दिलों में (कपटाचार का) रोग है, वे उन्हीं में दौड़-धूप करते फिरते हैं. वे कहते हैं, हमें यह आशंका है कि (यदि हम ईमान वालों के साथ रहे तो) कहीं हम किसी संकट में न फँस जाएँ. तो संभव है कि अल्लाह तुम्हें (स्पष्ट) विजय प्रदान करे या उसकी ओर से कोई विशेष बात प्रकट करे (अर्थात तुम्हारे संबंध से कोई अनुकूल घटना घटित करे) तो यह लोग उस चीज़ पर (अर्थात उस कपटाचार पर) जिसको यह अपने दिलों में छिपाए हुए हैं, लज्जित होंगे.

53 उस समय ईमान लाने वाले लोग कहेंगे, क्या ये वही लोग हैं जो अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाकर विश्वास दिलाते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं, उनके सारे कर्म नष्ट हो गए और वे घाटे में पड़ गए.

नोटः- दुनिया का यह जीवन परीक्षा के लिए है. और ईमान की परीक्षा केवल विजय तथा अनुकूल परिस्थितियों में नहीं होती, बल्कि प्रतिकूल तथा अनुकूल दोनों परिस्थितियों में होती है. अब जो लोग सत्य के लिए सत्य का साथ नहीं देते, बल्कि परिस्थितीनुरूप अपना साथ बदलते रहते हैं. ऐसे लोग ख़ुदा की दृष्टि में सत्य के साथी, अर्थात ईमान वाले नहीं हैं. और जो वास्तव में सत्य का साथ देने वाले नहीं हैं, वे अवश्य बरबाद होने वाले हैं.

54 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुममें से जो व्यक्ति अपने मज़हब (दीन) से फिर जाए तो (वह यह जान ले कि) अल्लाह जल्द ही ऐसे लोगों को उठाएगा जो अल्लाह को प्रिय होंगे और अल्लाह उन्हें प्रिय होगा. जो ईमान वालों के प्रति नर्म (अर्थात सच्ची आत्मियता रखने वाले) होंगे और सत्य के विरोधियों के प्रति सख़्त होंगे. वह अल्लाह के मार्ग में जी-तोड़ प्रयत्न करने वाले होंगे. और वे किसी निंदा करने वाले की निंदा से न डरेंगे. यह अल्लाह की कृपा है वह जिसे चाहता है प्रदान करता है और अल्लाह असीम (शान वाला) है और ज्ञान वाला है.

नोटः- कोई इंसान कपटाचार के साथ उस ख़ुदा का दास बन ही नहीं सकता जो दिलों के सारे हाल को जानने वाला है. ख़ुदा का प्रिय बनने के लिए ख़ुदा को सच्चे मायने में अपने जीवन में सर्वोच्च स्थान देना होगा. ख़ुदा से मैत्री और ख़ुदा के दुश्मनोंसे भी मैत्री साथ-साथ कदापि संभव नहीं. सत्य का अंगीकार उसी समय अर्थपूर्ण है जब आदमी असत्य से अपने आपको पूर्णतः अलग कर ले.

'यह भी ठीक और वह भी ठीक', 'यह भी सही और वह भी सही' ऐसा कुछ लोगों को चल सकता है, लेकिन यह अल्लाह को कदापि स्वीकृत नहीं.

55 (ऐ ईमान लाने वालो!) तुम्हारे मित्र तो केवल अल्लाह और उसका पैग़ंबर और वे लोग हैं जो ईमान लाए हैं, जो नित्य नमाज़ अदा करते हैं और जो जकात (दान) देते हैं
और वे अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं. 56 और जो कोई अल्लाह और उसके पैग़ंबर

और ईमान लाने वालों को अपना मित्र बनाए तो वह यह जान ले कि अल्लाह का दल ही वर्चस्व प्राप्त करने वाला है.

57 ऐ ईमान लाने वालो! उन लोगों को अपना मित्र न बनाओ जिन्होंने तुम्हारे मज़हब को हँसी और खेल बना लिया है — फिर चाहे वह पूर्ववर्ती किताब वाले हों या सत्य का इन्कार करने वाले. **और तुम अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो, यदि तुम (वास्तव में) ईमान रखने वाले हो.**

नोटः- इस संदेश-वचन में ईमान की हक़ीक़त को बताया गया है. अल्लाह के प्रति उत्तरदायित्व का भाव नहीं तो उस आदमी में ईमान भी नहीं. **उत्तरदायित्व से फ़रार ही असत्य के विविध रूपों का उद्गम-स्थान है.**

58 और जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो तो वे लोग उसे हँसी और खेल बनाते हैं. इसका कारण यह है कि वे बुद्धि का उपयोग नहीं करते. 59 उनसे कहो, ऐ पूर्ववर्ती किताब का अनुसरण करने वालो! तुम्हें हमसे सिर्फ इस कारण परेशानी है कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी ओर उतारा गया है और उस पर भी जो हमसे पहले उतारा गया और तुममें से अधिकतर

लोग अवज्ञाकारी हैं. 60 **कहो, क्या मैं तुम्हें बताऊँ, अल्लाह के यहाँ इससे भी बुरा अंजाम (परिणाम) पाने वाले कौन हैं?** वे लोग जिन पर अल्लाह की फिटकार पड़ी और जिन पर उसका प्रकोप हुआ और जिनमें से बंदर और सुअर बना दिए गए और **वे जो (अल्लाह को छोड़कर) शैतानी शक्तियों की उपासना करते रहे.** यह वह लोग हैं जिनका बहुत बुरा दर्जा है और ये सन्मार्ग से भटक कर बहुत दूर निकल गए,

नोटः- यहाँ बंदर और सुअर इन शब्दों का प्रयोग सांकेतिक रूप से किया गया है. जिससे यह बताया जा रहा है कि इंसान जब अपने सृजनकर्ता की ओर पीठ करता है और शैतानी शक्तियों के पीछे दौड़ते हुए इतना आगे निकल जाता है कि अब उसका पलटना संभव नहीं. अब यह वह इंसान है जिसका इस प्रकार नैतिक पतन हो चुका हो कि बंदर की तरह उत्तरदायित्व का भाव उसके अंदर बिल्कुल न रहा हो और सुअर की तरह उसके अंदर अच्छे और बुरे का अंतर समाप्त हो गया हो. मालिक ने तो उसे स्वभावतः सूझ-बूझ रखने वाला, अच्छाई तथा बुराई में अंतर करने वाला इंसान बनाया था, लेकिन वह अपने मालिक को छोड़कर शैतानों के पीछे दौड़ पड़ा तो शरीर से इंसान होते हुए भी वह गुणों के एतबार से बुरे जानवरों की तरह बन गया.

61 और जब वह तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए, हालाँकि वे सत्य का इन्कार करने के इरादे से ही आए थे और सत्य का इन्कार करते हुए चले गए. और अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है जो वे छिपा रहे हैं. 62 उनमें से अधिकतर को तुम देखोगे कि वे गुनाह और ज़ुल्म के कामों में एक-दूसरे से आगे बढ़ रहे हैं और हराम (निषिद्ध) माल खाने के लिए बहुत उत्साही हैं. कैसे बुरे कर्म हैं जो वे कर रहे हैं! 63 **उनके धार्मिक पेशवा और उनके धर्मज्ञानी उन्हें क्यों नहीं रोकते, गुनाह की बात कहने से और हराम माल खाने से? निश्चित रूप से बहुत ही बुरे कृत्य हैं जो वे कर रहे हैं !**

नोटः- ख़ुदा का दीन उत्तरदायित्व की संकल्पना पर आधारित है. अब जो लोग ख़ुदा के बताए हुए असल दीन (मज़हब) को छोड़कर, अपने लिए उत्तरदायित्व से मुक्त मज़हब (दीन) बना लें तो उस धार्मिक समाज का और उसके धर्मगुरू तथा धर्मज्ञानियों का यही हाल हो जाता है जिसका वर्णन यहाँ किया जा रहा है.

आज भी दुनिया भर में मज़हब के नाम पर बड़े-बड़े trust क़ायम हैं जहाँ करोड़ों-अरबों रुपये आते रहते हैं. उत्तरदायित्व से मुक्त मज़हब को मानने वाले लोग बड़ी-बड़ी रक़में इन ट्रस्टों तथा उनके धर्माधिकारियों को देते हैं. इस प्रकार दोनों अपनी-अपनी जगह निश्चिंत रहते हैं — इस प्रकार आम लोगों को प्रतिबंध एवं उत्तरदायित्व से मुक्त एक आसान मज़हब मिल गया, इसलिए वे ख़ुश हैं और मज़हब के पेशवाओं को लोगों की ओर से बड़ी-बड़ी रक़में और नज़रानें मिल रहे हैं, वे भी ख़ुश. लेकिन यह लोग भूल जाते हैं कि यह ख़ुशी और यह नज़रानें और यह रक़में सब ख़त्म हो जाने वाली हैं और इंसान को एक दिन अपने मालिक की अदालत में अपनी ज़िंदगी का हिसाब देने के लिए खड़ा होना है.

64 और यहूदी कहते हैं कि अल्लाह के हाथ बंधे हुए हैं. उन्हीं के हाथ बंध जाएं! और उन पर फिटकार हो, इस बकवास के कारण जो वे करते हैं. नहीं! बल्कि अल्लाह के हाथ तो खुले हुए हैं. वह जिस तरह चाहता है खर्च करता है. और (पैग़ंबर!) तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की ओर से जो कुछ (संदेश) उतरा है, उससे उनमें से अधिकतर लोगों की ढिठाई (विद्रोह) और सत्य के प्रति इन्कार में ही वृद्धि हो रही है. और (उनके सत्य नकारने के परिणाम-स्वरूप) हमने उनके बीच क़यामत तक के लिए शत्रुता और द्वेष डाल दिया है. ये जब कभी युद्ध की आग भड़काते हैं तो अल्लाह उसको बुझा देता है. ये धरती पर बिगाड़ फैलाने की कोशिश कर रहे हैं, जबकि अल्लाह बिगाड़ फैलाने वालों को पसंद नहीं करता.

नोटः- जो लोग सत्य को पाने के प्रति गंभीर नहीं हैं, ऐसे ही लोग इस प्रकार की बातें करते हैं. वर्तमान परीक्षारूपी दुनिया में ऐसे लोग सत्य के प्रति अपनी गंभीरता के अभाव के कारण सत्य को कदापि नहीं पा सकते.

65 यदि पूर्ववर्ती किताब वाले (वास्तव में) ईमान लाते और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनते, तो हम अवश्य उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर देते और उन्हें नेमतों

से भरी जन्नत में दाख़िल करते. 66 और यदि वे (पूर्ववर्ती ग्रंथ) तौरात और इंजील और (अब) जो कुछ (क़ुरआन-रूपी मार्गदर्शन) उनके रब की ओर से भेजा गया उसका पालन करते तो उन्हें खाने-पीने के लिए अपने ऊपर से भी और अपने क़दमों के नीचे से भी (अर्थात ज़मीन व आसमान से) अल्लाह की नेमतें प्राप्त होतीं. कुछ लोग उनमें सीधे रास्ते पर हैं, लेकिन अधिकतर उनमें ऐसे लोग हैं कि वे जो कुछ करते हैं बहुत बुरा है.

नोटः- पूर्ववर्ती किताब वालों में अधिकतर लोग ऐसे थे कि वे वास्तव में ख़ुदा की किताब को मानने वाले नहीं थे. यदि वे वास्तव में पूर्ववर्ती किताबों को मानने वाले होते तो ख़ुदा की अंतिम किताब क़ुरआन को मानने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होती, क्योंकि उन पूर्ववर्ती किताबों में अंतिम पैग़ंबर के आने की भविष्यवाणी मौजूद थी.

67 **पैग़ंबर! तुम्हारे रब की ओर से तुम पर जो कुछ उतारा गया है, उसे लोगों तक पहुँचा दो. यदि तुमने ऐसा नहीं किया तो तुमने अल्लाह का संदेश नहीं पहुँचाया. और अल्लाह तुम्हें लोगों से बचाएगा. निस्संदेह! अल्लाह सत्य का इन्कार करने वालों को मार्ग नहीं दिखाता.**

नोटः- क़ुरआन में जगह-जगह पैग़ंबर को संबोधित किया जाना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि यह पैग़ंबर की वाणी नहीं है, बल्कि यह ख़ुदा की वाणी है जो पैग़ंबर को संबोधित कर रहा है, जिसको उसने अपना संदेश पहुँचाने के मिशन के लिए नियुक्त किया है.

68 **पैग़ंबर! उनसे कहो, ऐ पूर्ववर्ती किताबों को मानने वालो! तुम्हारे मानने को उस वक़्त तक कोई वैध आधार नहीं है, जब तक तुम तौरात तथा इंजील और तुम्हारे रब की ओर से (अब) जो कुछ तुम्हारे ऊपर उतरा है उसका पालन न करो.**

लेकिन (ऐ पैग़ंबर!) तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर जो कुछ अवतरित हुआ है उससे उनमें से अधिकतर के विद्रोह तथा सत्य के इन्कार में निश्चय ही वृद्धि होगी. तो तुम सत्य का इन्कार करने वालों की हालत पर दुःखी न होना.

नोटः- यह दुनिया परीक्षा के लिए है. इसी कारण यहाँ ख़ुदा का मार्गदर्शन स्वीकार करने के लिए किसी को विवश नहीं किया जाता. ख़ुदा के मार्गदर्शन को सकारात्मक या नकारात्मक रिस्पॉन्स देने के लिए लोग यहाँ आज़ाद हैं.

69 निस्संदेह! जो लोग ईमान लाए और जो लोग यहूदी हुए और जो साबी तथा ईसाई, उनमें से जो कोई अल्लाह पर तथा मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन पर ईमान लाए और भले कर्म करे, तो उन्हें (मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में) न किसी प्रकार का भय होगा और न वे वहाँ कभी दुःखी होंगे.

नोटः- जिस इंसान ने सच्चे ख़ुदा के original उपदेश को जिस ज़माने में भी माना हो. और मृत्यु-पश्चात जीवन की सफलता को लक्ष्य बनाकर जीवनयापन किया हो, फिर उसकी पहचान चाहे कुछ भी रही हो वह ख़ुदा के पास सफलता प्राप्त करेगा. ख़ुदा के पास original उपदेश को अपनाने का महत्व है, न कि किसी लेबल को अपनाने का. ख़ुदा के पास हर व्यक्ति का केस व्यक्तिगत स्तर पर देखा जाएगा और इसी आधार पर उसके शाश्वत भविष्य का फ़ैसला होगा. ख़ुदा के पास सच्चाई को पाने की क़ीमत है. मात्र लेबल धारण कर लेने की ख़ुदा के पास कोई क़ीमत नहीं.

70 हमने इसराईल की संतान से दृढ़ प्रतिज्ञा ली और उनकी ओर अपने पैग़ंबरों को भेजा, लेकिन जब भी उनके पास (हमारा) पैग़ंबर (अर्थात संदेशवाहक) कोई ऐसी बात लेकर आया जिसे उनका जी न चाहता था. तो कुछ पैग़ंबरों को उन्होंने झुठलाया और

कुछ पैग़ंबरों की हत्या कर दी. 71 और (अपनी जगह) यह समझते रहे (कि इस अपराध पर) कोई आपदा न आएगी. इस प्रकार वे (अर्थात उनके दिल) अंधे और बहरे बने रहे. फिर अल्लाह ने उन पर अपनी दया-दृष्टि डाली, फिर भी उनमें से अधिकतर अंधे और बहरे बने रहे. अल्लाह देख रहा है जो कुछ वे करते हैं.

72 **निस्संदेह! उन लोगों ने सत्य का इन्कार किया, जिन्होंने कहा मरियम-पुत्र मसीह ही तो अल्लाह है, हालाँकि मसीह ने कहा था, ऐ इसराईल की संतान! अल्लाह की इबादत करो जो मेरा रब है और तुम्हारा रब भी.** जो कोई अल्लाह का साझीदार ठहराएगा उस पर अल्लाह ने जन्नत हराम (अर्थात हमेशा के लिए निषिद्ध) कर दी है और उसका ठिकाना आग है. और ऐसे अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं.

नोटः- मसीह को ख़ुदा बताना या ख़ुदा का बेटा बताना या ख़ुदा का अंश बताना यह बातें सत्य से पूर्णतः असंबंधित हैं. मसीह के संबंध से सत्य यह है कि वह मात्र ख़ुदा के संदेशवाहक थे और उन्होंने सारे संदेशवाहकों की तरह लोगों को यही संदेश दिया कि अल्लाह मेरा रब है, जैसे वह तुम्हारा रब है — उसके सिवा दूसरा कोई रब नहीं — तो हम सबको चाहिए की उसी की इबादत करें.

असल यह कि वास्तविक ख़ुदा को मानने के बाद इंसान को अपनी ज़िंदगी की नींव उत्तरदायित्व पर रखनी पड़ती है और आज़ाद होते हुए भी विविध निर्बंधों (restrictions) के साथ जीवन व्यतीत करना पड़ता है.

लेकिन ज़िंदगी की हक़ीक़त से ग़ाफ़िल बना हुआ इंसान अपने लिए निर्बंधों से मुक्त जीवन चाहता है. इसी का परिणाम यह है कि वह इस प्रकार की असत्य चीज़ों को जन्म देता है, जैसे मसीह को ख़ुदा का बेटा मान लो और यह मान लो कि ख़ुदा ने सारे इंसानों को पापमुक्त करने के लिए अपने बेटे को सूली पर चढ़ाया. अब जो लोग यह मानते हैं, वे पापमुक्त हो चुके हैं. अब वे जैसे चाहे ज़िंदगी जी सकते हैं. उनका कोई हिसाब लेने वाला नहीं. जबकि यह बात न तो ख़ुदा की ओर से प्रमाणित है और न बुद्धि को पटने वाली है. यह कैसे हो सकता है कि पाप कोई करे और उसकी सज़ा कोई दूसरा भुगते.

इस्लाम के अनुसार यह जीवन परीक्षा के लिए है. यहाँ इंसान आज़ाद है. अब जो इंसान आज़ाद होते हुए भी यह छोटी सी ज़िंदगी ख़ुदा के मार्गदर्शन के अनुरूप, उत्तरदायित्व की भावना के साथ व्यतीत करेगा उसे मृत्यु-पश्चात जीवन में ख़ुदा जन्नत-रूपी इनाम प्रदान करेगा और जो लोग ऐसा नहीं करेंगे उन्हें जहन्नम-रूपी सज़ा से दोचार होना पड़ेगा.

73 निस्संदेह! उन लोगों ने भी सत्य का इन्कार किया, जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन में का तीसरा है. हालाँकि **सत्य यह है कि अकेले अल्लाह के सिवा दूसरा कोई भी ख़ुदा नहीं**

है. यदि ये लोग अपनी इन बातों से बाज़ न आएं तो उनमें से जो लोग सत्य का इन्कार करने पर तुले हुए हैं, ऐसों को (परीक्षा की समाप्ति पर) दुःखदायी सज़ा मिलकर रहेगी.

नोटः- ईसाइयों की यह अजीब आस्था उनकी अपनी बनायी हुयी है, जो कि समझ से परे है.

जब इंसान ख़ुदा के मार्गदर्शन से हट जाता है तो ऐसी ही असत्य चीज़ों को गढ़ता है. लेकिन इंसान को ख़ुदा के संबंध से असत्य को गढ़ने का कोई अधिकार नहीं है.

सत्य यह है कि ख़ुदा का वास्तविक परिचय वही होगा जो स्वयं ख़ुदा ने कराया होगा. क़ुरआन ख़ुदा का सुरक्षित मार्गदर्शन है — अब यदि ख़ुदा का किसी को वास्तविक परिचय चाहिए तो वह सिर्फ़ क़ुरआन में मिलेगा, क़ुरआन के सिवा कहीं नहीं.

74 ये लोग अल्लाह की ओर (पश्चाताप के साथ) क्यों नहीं पलटते और उससे क्षमा की
याचना क्यों नहीं करते, जबकि अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दयावान है. 75
मरियम-पुत्र मसीह ख़ुदा के संदेशवाहक के सिवा और कुछ नहीं था. उससे पहले भी बहुत से पैग़ंबर गुज़र चुके हैं. उसकी माँ एक सत्यप्रिय महिला थी. वे (सारे इंसानों की तरह) खाना खाते थे (अर्थात वे भी दूसरे इंसानों की तरह इंसान थे). देखो, हम किस प्रकार उनके सामने इन संदेशों को स्पष्ट रूप से बयान कर रहे हैं. फिर देखो, (हमारे मार्गदर्शन के बावजूद भी) वे किधर बहके जा रहे हैं.

नोटः- सच्चा उपास्य वही हो सकता है जो स्वयं पूर्णतः निस्पृह हो और वह दूसरों को लाभ व हानि पहुँचाने की सामर्थ्य रखता हो. भोजन करना इंसान के मुहताज होने का स्पष्ट सूचक है. जो खाने का मुहताज है वह हर चीज़ का मुहताज है. जो व्यक्ति खाना खाता हो वह स्पष्ट रूप से एक मुहताज अस्तित्व है. ऐसा अस्तित्व ख़ुदा कैसे हो सकता है. यही मामला लाभ व हानि पहुँचाने का है. किसी लाभ की प्राप्ति होना या किसी को नुक़सान की, यह ऐसी घटनाएँ हैं, जिन्हें घटित करने में समस्त सृष्टि में घटित होने वाली बेशुमार घटनाओं की भूमिका होती है. कोई भी इंसान समस्त सृष्टि की घटनाओं को अपने अनुसार नियंत्रित नहीं कर सकता. इसलिए इंसानों में से कोई भी इंसान इंसानों का उपास्य नहीं बन सकता.

76 **उनसे कहो, क्या तुम अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ की इबादत (उपासना) करते हो जो न तुम्हें कोई नुक़सान पहुँचा सकती है और न कोई लाभ.** और सब कुछ सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला सिर्फ़ अल्लाह है.

नोटः- इंसान को सिर्फ उसकी इबादत करना चाहिए जिसके अधिकार में इंसान को नफ़ा तथा नुक़सान पहुँचाने की शक्ति है और जो इंसान की हर बात को सुनता है और उसकी हर चीज़ को जानने वाला है. इंसान की डोर उसी के हाथ में हो सकती है और उसी के हाथ में होना भी चाहिए, जिसने इंसान को बनाया और इसी के साथ उसने इस सृष्टी को बनाया और वही इसको चला रहा है. ऐसी ही ज़ात के हाथ में इंसान का नफ़ा तथा नुक़सान है. अब जो

लोग अपने वास्तविक मालिक को छोड़कर दूसरों को पुकारते हैं — यह अंधविश्वास के सिवा और कुछ नहीं.

77 **कहो, ऐ पूर्ववर्ती किताब के मानने वालो! अपने मज़हब में अतिरेक करने वाले न बनो कि सत्य से हट जाओ** और उन लोगों के विचारों का अनुसरण न करो जो इससे पहले स्वयं पथभ्रष्ट हुए हैं और जिन्होंने बहुत से लोगों को पथभ्रष्ट किया है. और वे सन्मार्ग से भटक गए.

नोटः- क़ुरआन के अनुसार मज़हब में अतिवाद का तरीक़ा अपनाना इतना ज़्यादा ख़तरनाक है कि अतिवादी इंसान सत्य से ही हट जाता है. मज़हब के नाम से अतिवाद का मार्ग पूर्ववर्ती किताब वालों ने भी अपनाया था और अब क़ुरआन के मानने वाले भी अपना रहे हैं.

उदाहरण के तौर पर आसमानी मार्गदर्शन के तहत जिहाद एक वांछित एवं अच्छा कार्य था, जिसके अंतर्गत लोगों को ख़ुदा की विचारधारा से अवगत कराना वांछित था, लेकिन मौजूदा अतिवादियों ने ख़ून-ख़राबे को और जिनसे असहमती है उनकी गरदनें मारने को जिहाद क़रार दे दिया. जिहाद एक वैचारिक संघर्ष था, लेकिन अतिवादियों ने उसे खूनी संघर्ष बना दिया.

ऐसा ही अतिवाद पूर्ववर्ती लोगों ने भी अपनाया था. हज़रत मसीह मरियम के पुत्र और ख़ुदा के पैग़ंबर थे लेकिन अतिवादियों ने उन्हें ख़ुदा का बेटा क़रार दे दिया.

78 इसराईल की संतान में से जो लोग सत्य का इन्कार करने पर तुले रहे, उन पर (पैग़ंबर) दाऊद और (पैग़ंबर) मरियम-पुत्र ईसा मसीह की ज़बान से फिटकार (लानत) की गयी. यह इसलिए कि उन्होंने अवज्ञा की (अर्थात ढिठाई का परिचय दिया) और वे सीमा का उल्लंघन करने वाले थे. 79 उन्होंने एक-दूसरे को बुरे कर्म करने से रोकना छोड़

दिया था. निस्संदेह! बुरा तरीक़ा था जो उन्होंने अपनाया था. 80 तुम उनमें बहुत से लोगों को देखोगे कि वे सत्य का इन्कार करने वालों से मित्रतापूर्ण संबंध रखते हैं. कैसी बुरी चीज़ है जो उन्होंने अपने लिए आगे भेजी जिससे अल्लाह उन पर क्रोधित हुआ, परिणाम-स्वरूप वे सदैव सज़ा भुगतते रहेंगे.

नोटः- इंसान दुनिया में दो ही प्रकार के कर्म कर सकता है. एक अल्लाह को प्रसन्न करने वाले कर्म, तो दूसरे अल्लाह को क्रोधित करने वाले कर्म. इस प्रकार इंसान वर्तमान दुनिया में जो कुछ कर रहा है — उससे उसके शाश्वत भविष्य का निर्माण हो रहा है और वह भविष्य मृत्यु-पश्चात उसके सामने आने वाला है.

81 यदि वे वास्तव में, अल्लाह पर और उसके पैग़ंबर पर और जो कुछ संदेश उस (पैग़ंबर) पर प्रकट किया गया है उस पर विश्वास करने वाले होते तो वे सत्य का इन्कार करने वालों को अपना मित्र न बनाते. लेकिन उनमें अधिकतर अवज्ञाकारी हैं.

82 सब लोगों से बढ़कर तुम ईमान वालों का शत्रु यहूदियों और बहुदेववादियों को पाओगे. और ईमान लाने वालों के साथ मित्रता में सबसे अधिक उन लोगों को पाओगे जो अपने आपको ईसाई कहते हैं. यह इस कारण कि उनमें विद्वान और संत हैं और इस कारण कि वे घमंड नहीं करते.

पारा – 7

83 **और जब वे इस ईश-वाणी को सुनते हैं जो पैग़ंबर पर अवतरित की गयी है तो तुम देखते हो कि उनकी आँखें आँसुओं से छलकने लगती हैं, इस कारण कि उन्होंने सत्य को पहचान लिया. वे पुकार उठते हैं कि ऐ हमारे रब! हम ईमान ले आए तो तू हमें सत्य की गवाही देने वालों में लिख ले.** 84 **और (वे कहते हैं कि) हम क्यों न ईमान लाएँ अल्लाह पर और उस सच्चाई पर जो हमें पहुँची है, जबकि हम यह कामना करते हैं कि हमारा रब हमें सदाचारी लोगों में शामिल करे?**

नोटः- सत्य की प्राप्ति का संबंध किसी व्यक्तिविशेष के घर में या किसी समुदाय विशेष में जन्म लेने से नहीं है. और न सत्य की प्राप्ति का संबंध किसी पैतृक संपत्ती की तरह है कि वह उसके वारिस को अपने आप मिल जाए. क़ुरआन के अनुसार तो ख़ुदा के पैग़ंबर के घर जन्म लेने से भी सत्य की प्राप्ति किसी को अपने आप नहीं हो जाती, बल्कि सत्य की प्राप्ति केवल उस इंसान को होगी जो सत्य को प्राप्त करने के संबंध से गंभीर हो और उसका खोजी बना हुआ हो. लेकिन यह भी समझना ज़रूरी है कि केवल अपनी खोज तथा अपनी व्यक्तिगत कोशिशों के परिणाम-स्वरूप किसी को सत्य की प्राप्ति नहीं हो सकती, क्योंकि

इंसान अनेक मर्यादाओं से बंधा हुआ है. सत्य की प्राप्ति केवल उस खोजी को होगी जो सत्य की खोज करते हुए अपने सृजनकृर्ता के मार्गदर्शन को प्राप्त कर ले. अपने सृजनकर्ता के मार्गदर्शन को पा लेना ही सत्य को पाना है. इससे यह स्पष्ट होता है कि इंसान के भीतर सत्य को पाने की तड़प जागृत हो जाए, फिर वह खोज करते हुए अपने सृजनकर्ता का guidance प्राप्त कर ले. यही वह इंसान है जिसको सत्य की प्राप्ति होगी. और सत्य की प्राप्ति का ही दूसरा नाम ईमानहै.

85 तो अल्लाह उन्हें इस बात के बदले (अर्थात अल्लाह की ओर से आए हुए सत्य को स्वीकार करने के परिणाम-स्वरूप) ऐसे बाग़ प्रदान करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. वह उनमें सदैव रहेंगे. और यही बदला है भले कर्म करने वालों का. 86 जो लोग सत्य का इन्कार करने पर तुले रहे और हमारी संदेशयुक्त निशानियों को झुठलाया, तो यही वे लोग हैं जो जहन्नम वाले हैं.

87 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जिन अच्छी चीज़ों को अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल (अर्थात वैध) ठहराया है, उन्हें तुम हराम (अर्थात अवैध) न ठहराओ. और हद से आगे न बढ़ो. निस्संदेह! अल्लाह उन लोगों को पसंद नहीं करता जो अपनी हद से आगे बढ़ते हैं.

88 और अल्लाह ने तुम्हें जो वैध तथा अच्छी चीज़ें प्रदान की हैं, उनमें से खाओ. और उस अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो जिस पर तुम ईमान लाए हो. 89 तुम जो क़समें अविचारपूर्वक खाते हो उन पर अल्लाह तुम्हारी पकड़ नहीं करता, लेकिन जो क़समें तुम दृढ़तापूर्वक खाते हो उन पर वह अवश्य तुम्हारी पकड़ करेगा. ऐसी क़सम (से मुक्त होने के लिए) प्रायश्चित्त यह है कि दस मोहताजों को औसत दर्जे का खाना खिलाओ जो तुम अपने बाल-बच्चों को खिलाते हो या उन्हें कपड़े पहनाओ या एक ग़ुलाम आज़ाद करो. और जो कोई इसके लिए समर्थ न हो, वह तीन दिन के रोज़े रखे. यह तुम्हारी क़समों का प्रायश्चित्त (पाप-शोधन) है (अर्थात क़सम खाने के पश्चात

उससे मुक्त होने का यह मार्ग है), जब तुम क़सम खा बैठो. और तुम अपने क़समों के प्रति प्रतिबद्ध रहो. इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने आदेश स्पष्ट रूप से बयान करता है, ताकि तुम उसके प्रति आभार व्यक्त करने वाले बनो.

90 ऐ ईमान लाने वालो! शराब, जुआ, देवताओं (तथा बुतों के) स्थान (पर किए जाने वाले कार्य), और पाँसे सब गंदे काम हैं जो शैतान के (द्वारा प्रेरित हैं). तो तुम इनसे बचो, ताकि तुम सफलता प्राप्त करो. 91 शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुवे के माध्यम से तुम्हारे बीच शत्रुता और द्वेष उत्पन्न कर दे और तुम्हें अल्लाह की याद से और नमाज़ से रोक दे, तो फिर क्या तुम इन चीज़ों से रुक जाओगे. 92 अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और पैग़ंबर की आज्ञा का पालन करो और सजग रहो. लेकिन यदि तुमने मुँह मोड़ा तो जान लो कि हमारे पैग़ंबर (अर्थात संदेशवाहक) पर मात्र संदेश स्पष्ट रूप से पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है. 93 जो लोग ईमान लाए और वे अच्छे कर्म करने लगे तो जो वे पहले (निषिद्ध चीज़ें) खा चुके उस पर उनकी पकड़ न होगी (अर्थात उसके लिए उन पर कोई दोष नहीं), लेकिन शर्त यह है कि (अब) वे अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) हों और उस पर ईमान रखें और इसी तरह लगातार उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहें और (दृढ़तापूर्वक) ईमान पर जमे रहें और अल्लाह से डरते रहें और भले कर्म करते रहें. अल्लाह भले कर्म करने वालों को पसंद करता है.

94 **ऐ ईमान लाने वालो! अल्लाह उस शिकार के माध्यम से तुम्हारी अवश्य परीक्षा लेगा. जो बिल्कुल तुम्हारे हाथों और नेज़ों की पहुँच में होगा. ताकि अल्लाह जाने (अर्थात उसे चिह्नित कर सके) कि कौन**

व्यक्ति उससे बिना देखे डरता है. फिर इस (चेतावनी) के बाद जिसने सीमा का उल्लंघन किया तो उसके लिए दुःखदायी सज़ा है.

नोटः- अगरचे यहाँ एक विशिष्ट संदर्भ में बात हो रही है, लेकिन इंसान का सारा जीवन सिर्फ़ परीक्षा के लिए है. इस जीवन में विभिन्न अवस्थाओं से संबंधित इंसान को आदेश दिए गए हैं और ख़ुदा की ओर से यह देखा जा रहा है कि कौन ख़ुदा से बिन देखे डरता है. एक तरफ़ ख़ुदा के आदेश हैं, तो दूसरी तरफ़ इंसान को परीक्षा हेतु कृत्य-स्वातंत्र्य दिया गया है. ऐसी हालत में केवल वही इंसान बुराई से बच सकता है जिसने ख़ुदा को तथा ज़िंदगी की हक़ीक़त को जान लिया हो. जिसने यह जाना हो कि अगरचे सर्वशक्तिमान ख़ुदा आज परदे में है, लेकिन एक दिन आने वाला है जब ज़िंदगी का हिसाब देने के लिए सर्वशक्तिमान ख़ुदा के सामने हर इंसान को खड़ा होना है, जिससे कोई इंसान बचने वाला नहीं.

95 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! इहराम की हालत में (इहराम अर्थात हज एवं उमरा के लिए परिधान किया जाने वाला बिना सिला सफेद कपड़ा) शिकार को न मारो. और तुममें से कोई यदि जानबूझ कर उसे मारे तो उसका बदला उसी तरह का जानवर है, जो जानवर उसने मारा हो. और इसका निर्णय तुममें से दो न्यायप्रिय व्यक्ति करेंगे. और उसे काबा पहुँचा कर क़ुर्बान किया जाएगा. या फिर इसके प्रायश्चित्त के लिए कुछ मोहताजों को भोजन कराना होगा या फिर उसके बराबर रोज़े रखने होंगे, (यह) इसलिए कि वह अपने किए की सज़ा चखे. पहले जो कुछ हो चुका उसे अल्लाह ने क्षमा कर दिया. लेकिन यदि कोई व्यक्ति फिर वही करेगा तो अल्लाह उससे बदला लेगा. अल्लाह प्रभुत्वशाली है, बदला लेने वाला है.

96 **तुम्हारे लिए समुद्र का शिकार करना और उसे खाना वैध कर दिया गया, तुममें (जो स्थानीय हैं) उनके लिए और जो यात्रा कर रहे हैं उनके लिए जीविका के तौर पर. लेकिन जब तक तुम हज के परिधान (इहराम) में हो, ज़मीनी (अर्थात**

अ-समुद्रीय) शिकार तुम पर हराम किया गया है. तो अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो जिसके पास तुम्हें हाज़िर किया जाएगा.

नोटः- धरती पर यह एकमात्र किताब है जो उत्तरदायित्व की बात करती है. जो बताती है कि ऐ इंसानों! तुम्हारे मालिक ने तुम्हारा सृजन करके तुम्हें यूँ ही छोड़ नहीं दिया, बल्कि मृत्यु-पश्चात तुम्हें उसकी ओर लौट कर जाना है और उसे अपने जीवन का हिसाब देना है.

97 अल्लाह ने आदर-योग्य घर काबा को लोगों के लिए क़ायम रहने का साधन बनाया, इसी प्रकार आदर-योग्य महीनों को और क़ुरबानी के जानवरों को और गले में पट्टे पड़े हुए जानवरों को

भी. यह इसलिए कि तुम्हें मालूम हो जाए कि **अल्लाह आसमानों और धरती के सब हालात जानता है. और उसे हर चीज़ का ज्ञान है.**

नोटः- धरती और आसमान के वास्तविक मालिक के सिवा इस प्रकार की बात दूसरा कोई नहीं कह सकता.

98 जान लो कि अल्लाह कठोर दंड देने वाला है और यह कि अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दयावान भी है.

99 **पैग़ंबर पर मात्र संदेश पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है. अल्लाह जानता है जो कुछ तुम प्रकट करते हो और जो कुछ तुम छिपाते हो.**

नोटः- इंसानों के वास्तविक मालिक के सिवा दूसरा कोई भी इस प्रकार की बात नहीं कर सकता.

100 **इनसे कहो, बुरी चीज़ और अच्छी चीज़ समान नहीं हो सकती, चाहे बुरी चीज़ की अधिकता तुम्हें प्रिय ही क्यों न लगे, तो अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनो, ऐ बुद्धि रखने वालो! ताकि तुम सफलता प्राप्त कर सको.**

नोटः- बहुसंख्य इंसानों के बीच असत्य फलने-फुलने से असत्य 'सत्य' नहीं बन जाता. भीड़ या मेजॉरिटी यह निश्चित नहीं कर सकती कि सत्य क्या है और असत्य क्या? सत्य और असत्य जानने की कसौटी सिर्फ़ इंसान के सच्चे मालिक का मार्गदर्शन है.

अल्लाह के प्रति सचेत एवं उत्तरदायी होने का संबंध बुद्धि तथा विवेक से है, न कि अंधविश्वास तथा पूर्वजों की अंध-रीतियों से, जिस आदमी की आस्था — तर्क, विवेक एवं उत्तरदायित्व पर आधारित हो — ऐसा ही आदमी सफलता प्राप्त करने वाला है.

101 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! ऐसी बातों के संबंध से प्रश्न न करो, यदि वह तुम पर प्रकट कर दी जाएँ तो वह तुम्हें अप्रिय लगें. और यदि उनके संबंध से ऐसे समय में

तुम प्रश्न करोगे, जबकि क़ुरआन अवतरित किया जा रहा हो तो वे तुम पर प्रकट कर दी जाएंगी. अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया. अल्लाह क्षमाशील तथा संयमी है. 102 निश्चय ही, तुमसे पहले के लोगों ने इस प्रकार की बातें पूछीं, फिर वे उन्हीं के झुठलाने वाले बन गए. 103 **अल्लाह ने न कोई 'बहिरा', और न कोई 'साएबा', न 'वसीला' और न कोई 'हाम' निश्चित किए हैं, लेकिन जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया, वे अल्लाह पर झूठ बांधते हैं और उनमें से अधिकतर बुद्धि से काम नहीं लेते**.

नोटः- मानवीय इतिहास में अंधविश्वास की निराधार प्रथाएँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली जा रही हैं. उसका मुलभूत कारण यदि कोई है तो वह बुद्धि से काम न लेना है.

इंसानों में पाए जाने वाले विभिन्न बुत इंसानों के द्वारा गढ़े हुए हैं, न कि ख़ुदा ने ऐसा करने को कहा है. निस्संदेह मूर्तिपूजा इंसानों का आविष्कार है, वास्तव में उसे कोई आधार प्राप्त नहीं. प्राचीन अरब में काल्पनिक नामों के बूत हुआ करते थे, आज भी भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न नामों के बुत पाए जाते हैं.

104 और जब उनसे कहा जाता है कि उस (मार्गदर्शन) की ओर आओ जो अल्लाह ने अवतरित

किया है और अल्लाह के पैग़ंबर की ओर आओ. तो **वे कहते हैं कि हमारे लिए वही पर्याप्त है जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है. क्या तब भी (वे अपने बाप-दादा ही का अंधानुकरण करेंगे), जबकि उनके**

बाप-दादा कुछ भी न जानते हों और न सन्मार्ग पर हों.

नोटः- सत्य यह है कि किसी इंसान को यदि सन्मार्ग की प्राप्ति होगी तो उसके मार्गदर्शन के द्वारा होगी जो वास्तव में इंसान का सृजनकर्ता एवं स्वामी है. सृजनकर्ता के मार्गदर्शन को छोड़कर इंसान को कुछ भी मिलेगा, लेकिन सन्मार्ग व सफलता का मार्ग कदापि मिलने वाला नहीं. ख़ुदा का मार्गदर्शन कोई काल्पनिक चीज़ नहीं है. ख़ुदा का पैग़ंबर स्वयं सबसे पहले उस पर कृती करके उसका व्यावहारिक नमुना लोगों के समक्ष प्रस्तुत करता है. लेकिन जो लोग सत्य को सत्य के रूप में न देख पाएँ और बाप-दादा के रास्ते को सब कुछ समझने लगें, वे सत्य को कभी नहीं पा सकते.

जहाँ तक सत्य का संबंध है, सत्य कोई ऐसी चीज़ नहीं है कि वह किसी को बाप-दादा से अपने आप मिल जाए. सत्य की प्राप्ति केवल उस इंसान को होगी जो सत्य का गंभीर खोजी है. इसी तरह सत्य ऐसी चीज़ नहीं है कि आदमी उस पर अंधे कि तरह गिर जाए. यदि किसी के बाप-दादा सन्मार्ग पर हों तब भी, उस इंसान को यह देखना चाहिए कि क्या वह मार्ग वास्तव में सन्मार्ग है.

ऐसा करना केवल उस इंसान के लिए संभव है जो अपनी सहज-बुद्धि से यह जान ले कि सत्य का आधार पूर्वजों द्वारा स्थापित परपंराएँ नहीं हो सकतीं, बल्कि सत्य का आधार इंसान के अपने सृजनकर्ता का मार्गदर्शन है.

क़ुरआन के संबंध से एक चिंतनीय बात यह है कि बाप-दादा के पंथ का अंधानुकरण करने वालों का बहुत ज़्यादा विरोध करने वाली धरती पर एकमात्र किताब सिर्फ़ क़ुरआन है.

105 ऐ ईमान लाने वालो! तुम अपनी चिंता करो, कोई गुमराह होने वाला तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचा सकता, यदि तुम सीधे रास्ते पर हो. **अल्लाह की ओर तुम सबको लौटकर जाना है. फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे.**

नोटः- वास्तविक उत्तरदायित्व की संकल्पना क़ुरआन के सिवा दुनिया के किसी भी किताब में मौजूद नहीं है. उत्तरदायित्व की बुनियाद पर ही इंसानी शख़्सियत का निर्माण सही दिशा में हो सकता है.

106 ऐ ईमान लाने वालो! जब तुममें से किसी की मौत का समय आ जाए, तो वसीयत के समय तुममें से दो न्यायप्रिय व्यक्ति गवाह हों. या यदि तुम यात्रा कर रहे हों और वहाँ मौत की मुसीबत पेश आ जाए तो तुम्हारे (अपनों के सिवा) सिवा अन्य लोगों में से दो गवाह ले लिए जाएँ. फिर यदि तुम्हें कोई संदेह हो जाए तो नमाज़ के बाद दोनों गवाहों को रोक लिया जाए और दोनों गवाह अल्लाह की क़सम खाकर कहें कि हम किसी लाभ प्राप्ति के लिए गवाही का सौदा नहीं करेंगे, चाहे (हमारा) कोई संबंधी ही क्यों न हो और न हम अल्लाह की गवाही को छिपाएंगे. यदि हम ऐसा करें तो निस्संदेह हम गुनाहगारों में से होंगे.
107 फिर यदि पता चल जाए कि उन दो गवाहों ने हक़ मार कर अपने को गुनाह में डाल लिया है, तो उनके स्थान पर दो व्यक्ति उन लोगों में से खड़े हो जाएँ जिनका हक़ पिछले दो गवाहों ने छीनना चाहा था. और वे अल्लाह की क़सम खाकर कहें कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज़्यादा सही है और हमने (इस संबंध में) किसी प्रकार का अन्याय नहीं किया है, यदि हम ऐसा करें तो हम अत्याचारियों में से होंगे.
108 इस तरीक़े से ज़्यादा उम्मीद की जा सकती है कि लोग ठीक-ठीक गवाही देंगे या इस बात

से डरेंगे कि उनकी क़समों के बाद दुसरी क़समों से कहीं उनका खंडन न हो जाए, तो अल्लाह से डरो और सुनो, अल्लाह अवज्ञा करने वालों को मार्ग नहीं दिखाता.
109 जिस दिन अल्लाह सब पैग़ंबरों को जमा करके पूछेगा कि तुम्हें (लोगों की तरफ़ से) क्या जवाब मिला था, वे कहेंगे, हमें कुछ मालूम नहीं, छिपी हुई बातों को जानने वाला तू ही है.

110 जब अल्लाह कहेगा, ऐ मरियम-पुत्र ईसा! मेरे उस अनुग्रह को याद करो जो मैंने तुम पर और तुम्हारी माँ पर किया है. जबकि मैंने पवित्र आत्मा से तुम्हारी सहायता की. तुम शिशुवस्था में भी लोगों से बात करते थे और बड़ी आयु को पहुँचकर भी. और जब मैंने तुम्हें किताब और हिकमत (अर्थात बुद्धिमानी) प्रदान की और तौरात तथा इंजील की शिक्षा दी और (याद करो) जब तुम मेरे आदेश से परिंदे की शकल का मिट्टी का पुतला बनाते और उसमें फूँक मारते थे तो वह मेरे आदेश से परिंदा बन जाता था. और तुम जन्मज़ात अंधे को और कोढ़ी को मेरे आदेश से अच्छा कर देते थे. और जब तुम मुर्दों को मेरे आदेश से निकाल खड़ा करते थे (अर्थात जीवित करते थे). और याद करो जब मैंने तुमसे, इसराईल की संतान को रोके रखा (अर्थात उनसे तुम्हें बचाया), जबकि तुम उनके पास सत्य के स्पष्ट प्रमाण लेकर आए तो उनमें से जो सत्य का इन्कार करने वाले थे, उन्होंने कहा, यह तो इसके सिवा कुछ नहीं कि स्पष्ट जादू है.

111 और याद करो, जब मैंने हवारियों के (अर्थात तुम्हारे साथियों के) दिल में डाला कि मुझ पर ईमान लाओ तथा मेरे पैग़ंबर पर ईमान लाओ, तो उन्होंने कहा, **हम ईमान लाए और तुम गवाह रहो कि हम इस्लाम वाले (अर्थात अल्लाह को समर्पित होने वाले) हैं.**

नोटः- मानवीय इतिहास में ख़ुदा की तरफ़ से जितने भी पैग़ंबर आए उन सब का मज़हब इस्लाम (अर्थात संपूर्ण रूप से अपने वास्तविक मालिक के बन जाना) ही था. क़ुरआन जिस इस्लाम को पेश कर रहा है वह कोई नया इस्लाम नहीं है, बल्कि उसी इस्लाम का सुरक्षित संस्करण (version) है जो सारे पैग़ंबर लेकर आए थे.

112 **जब ईसा के साथियों ने कहा, ऐ मरियम-पुत्र ईसा!** क्या तुम्हारा रब यह कर सकता है कि वह हम पर आसमान से एक (स्वादिष्ट) व्यंजनों से भरा एक थाल उतारे. इस पर ईसा ने कहा, अल्लाह से डरो, यदि तुम ईमान वाले हो.

नोटः- ख़ुदा के पैग़ंबर ईसा के संबंध से बाद के लोगों ने यह झूठ गढ़ा कि वे ख़ुदा-पुत्र थे, जबकि स्वयं उनके समकालीन लोग उन्हें मरियम-पुत्र के नाम से ही संबोधित करते थे.

113 उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि हम उस (थाल) में से खाएँ और हमारे दिल संतुष्ट
हों और हम यह जान लें कि तुमने जो कुछ हमसे कहा, वह सच है. और हम उस पर
गवाही देने वाले बन जाएँ.
114 इस पर मरियम-पुत्र ईसा ने अल्लाह से दुआ की, ऐ
अल्लाह हमारे रब! तू आसमान से हम पर एक भोजन से भरा थाल उतार, जो हमारे लिए
ख़ुशी का मौक़ा (अर्थात ईद) बन जाए. और वह हमारे पहलों तथा पिछलों के लिए तेरी
ओर से एक निशानी हो. और तू हमें (अपना अनुग्रह) प्रदान कर, तू सबसे अच्छा प्रदान
करने वाला है.
115 इस पर अल्लाह ने कहा, मैं यह थाल अवश्य तुम पर उतारूँगा, फिर
उसके बाद तुममें से जो व्यक्ति सत्य को नकारेगा, उसको मैं ऐसा दंड दूँगा जो संसार में
किसी को न दिया होगा.

116 और जब अल्लाह पूछेगा, **ऐ मरियम-पुत्र ईसा! क्या तुमने लोगों से कहा था कि अल्लाह के सिवा मुझे और मेरी माँ को पूजनीय बना लो.** इस पर ईसा उत्तर देंगे (ख़ुदाया!) तू पाक है! मेरा यह काम न था कि मैं वह बात कहूँ जिसका मुझे कोई अधिकार नहीं. यदि मैंने ऐसी कोई बात कही होती तो तुझे ज़रूर उसका ज्ञान होता. **तू जानता है जो मेरे मन में है और मैं नहीं**

जानता जो तेरे मन में है. **निस्संदेह तू ही है छिपी बातों का जानने वाला.** 117 **मैंने उनसे उसके सिवा कुछ नहीं कहा जिसका तूने मुझे आदेश दिया था. यह कि अल्लाह की उपासना करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब और मैं उन पर गवाह था, जब तक मैं उनके बीच रहा, फिर जब तूने मुझे वापस बुला लिया तो तू ही उन पर निरीक्षक था. और तू हर चीज़ पर गवाह है.**

नोटः- इन संदेश-वचनों में ख़ुदा की तथा पैग़ंबर की असल तसवीर प्रस्तुत की गयी है. सच्चा ख़ुदा इससे पाक है कि उसके साथ दूसरे ख़ुदा हों. इसी तरह ख़ुदा हर किसी के मन की बातों को जानता है, लेकिन ख़ुदा के मन में क्या है कोई नहीं जानता. ख़ुदा ऐसा है! और उसको ऐसा ही होना चाहिए!

जहाँ तक पैग़ंबर का संबंध है, वह दूसरे इंसानों की तरह एक इंसान होता है जिसको ख़ुदा ने इंसानों तक अपना संदेश पहुँचाने के लिए चुन लिया होता है. उसके लिए यह कदापि संभव नहीं कि वह अपनी ओर से ख़ुदा के संदेश में कोई बात मिला दे. वह वही संदेश as it is लोगों तक पहुँचाता है जो उसको ख़ुदा की ओर से प्राप्त होता है. लेकिन यह बाद के लोगों का कारनामा है कि वे ख़ुदा के संदेशवाहक को ख़ुदा का पुत्र क़रार देते हैं.

इंसान को ख़ुदा बनाने का पाप इंसानों ने किया है, न कि किसी संत, पीर, पैग़ंबर ने स्वयं को पूजनीय ख़ुदा या उसके अवतार के रूप में प्रस्तुत किया. धरती पर ऐसा कोई इंसान पैदा नहीं हुआ जिसने स्वयं को उपास्य घोषित किया हो, जिसने यह दावा किया हो कि मैं हूँ समस्त सृष्टि का सृजनहार और समस्त सृष्टि का पालनहार और समस्त सृष्टि के लिए उपास्य.

118 (ईसा आगे कहते हैं, ख़ुदाया!) यदि तू उन्हें दंड दे तो वह तेरे बंदे हैं और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे तो तू ही शक्तिशाली है, बुद्धिमान है. 119 इस पर अल्लाह कहेगा, आज वह दिन है कि **सच्चों को उनकी सच्चाई लाभप्रद होगी.** उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं. उनमें वे सदैव रहेंगे. अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए. यही है बड़ी सफलता.

नोटः- आदमी सच्चाई पर क्यों चले? वह उत्तरदायित्व की भावना के साथ जीवन व्यतीत क्यों करे? इसलिए कि एक दिन आने वाला है जब सिर्फ सच्चाई लाभप्रद होगी.

120 **आसमानों तथा धरती पर; और उस पर भी जो कुछ उनके बीच है अल्लाह की बादशाही है. और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है.**

नोटः- समस्त सृष्टि पर उसी की बादशाही होगी जो उसका वास्तविक मालिक है. इस प्रकार का वक्तव्य सच्चे मालिक के सिवा दूसरा कोई नहीं दे सकता.

सूरह–6. अल–अनआम

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने आसमानों और धरती का निर्माण किया और अँधेरों तथा प्रकाश को बनाया. फिर भी सत्य का इन्कार करने वाले लोग दूसरों को अपने रब का समकक्ष ठहराते हैं. 2 वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से बनाया,

फिर तुम्हारे लिए जीवन की एक अवधी निश्चित कर दी, और निश्चित की हुई अवधी का ज्ञान सिर्फ़ उसी को है. फिर भी तुम संदेह

करते हो! 3 **और वही अल्लाह आसमानों में भी है और धरती पर भी (अर्थात समस्त सृष्टि में वही एकमात्र उपास्य है), वह तुम्हारे छिपे और खुले को जानता है और वह जानता है जो कुछ तुम करते हो.**

नोटः- समस्त सृष्टी का बनाने वाला एवं उसे चलाने वाला सिर्फ एक ख़ुदा है. वह तुम्हारी सारी बातों को जानता है, चाहे वह छिपी हों या खुली. इंसान का जो वास्तविक सृजनकर्ता है, वह क्यों न जानेगा इंसान की हर बात को. इसी तरह उसने इंसान का सृजन करके उसे यूं ही छोड़ नहीं दिया, इसीलिए वह इंसान के हर कृत्य पर नज़र रखे हुए है.

4 (लोगों का हाल यह है कि) उनके रब की संदेशयुक्त निशानियों में से जो निशानी भी उनके पास आती है, वे उससे मुँह मोड़ लेते हैं. 5 चुनांचे अब जो सत्य उनके पास आया तो उसे भी उन्होंने झुठला दिया. तो अब शीघ्र ही उनके पास उसके संबंध से ख़बरें आएंगी जिसका वे उपहास

किया करते थे. 6 **क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले हम कितनी ही क़ौमों को नष्ट कर चुके हैं. हमने धरती पर उनकी जड़ें इस प्रकार मज़बूत जमा दी थी जैसी तुम्हारी नहीं जमाई.** हमने उन पर

ख़ूब बारिशें बरसायीं और उनके नीचे नहरें बहा दीं. फिर हमने उन्हें उनके पापों के कारण नष्ट कर दिया. और उसके बाद हमने (उनकी जगह) दूसरी क़ौमों को उठाया.

7 **और यदि हम तुम पर ऐसी किताब उतारते जो काग़ज़ पर लिखी हुई होती** और वह उसको अपने हाथों से छू भी लेते,

तब भी वे लोग जो सत्य का इन्कार करने पर तुले हुए हैं, कहते, यह इसके सिवा कुछ नहीं कि खुला हुआ जादू है.

नोटः- यह दुनिया परीक्षा के लिए है. यहाँ इंसान को यदि सत्य को न मानना है तो उसे हर बार सत्य का इन्कार करने के लिए कुछ न कुछ शब्द मिल ही जाते हैं. इस दुनिया में सत्य को स्वीकारने के लिए किसी को विवश नहीं किया जाता. यहाँ हर इंसान स्वतंत्र है कि वह चाहे तो सत्य का स्वीकार करे या चाहे तो उसका अस्वीकार करे. ऐसी दुनिया में सत्य की प्राप्ति उसी इंसान के लिए संभव है जो सत्य का गंभीर खोजी हो.

8 **और वे कहते हैं कि इस पैग़ंबर पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया. और यदि हम कोई फ़रिश्ता उतारते तो मामले का फ़ैसला हो जाता, फिर उन्हें किसी प्रकार की मोहलत न दी जाती.** 9 **और यदि हम किसी फ़रिश्ते को संदेशवाहक बनाकर भेजते तो उसे भी मनुष्य बनाते और उन्हें उसी संदेह में डाल देते जिसमें वे अब पड़े हुए हैं.**

नोटः- यह जीवन सत्य को प्राप्त करने की परीक्षा है. और यह परीक्षा उसी वक़्त संभव है जब तक सत्य पर परदा पड़ा हुआ है. यदि सत्य खुल जाए और ख़ुदा तथा उसके फरिश्ते

सामने आ जाएँ तो न पैग़ंबर की ज़रूरत है और न परीक्षा का सवाल. क्योंकि उस समय किसी की यह हिंमत नहीं होगी कि वह सत्य का इन्कार कर सके. आदमी की असल परीक्षा यह है कि वह देखे बग़ैर माने. जब सत्य को दिखा दिया जाए तब मानने की कोई क़ीमत नहीं.

10 (ऐ मुहम्मद!) तुमसे पहले भी पैग़ंबरों का उपहास किया गया, तो उनमें से जिन लोगों ने उपहास किया उन्हें उस चीज़ ने आ घेरा जिसका वे उपहास करते थे. 11 **उनसे कहो, धरती पर चल-फिरकर देखो कि सत्य को झुठलाने वालों का क्या अंजाम हुआ.**

नोटः- सत्य का इन्कार इंसान को ले डूबने वाला है. इसकी व्यवहारिक स्तर पर मिसालें इतिहास में दर्ज हैं. और सत्य के इन्कार का अंजाम बताने वाली निशानियाँ धरती पर मौजूद हैं.

12 **उनसे पूछो कि किसका है जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है. कहो, सब कुछ अल्लाह का है.**

उसने अपने ऊपर दयालुता को अनिवार्य कर लिया है. वह क़यामत के दिन तुम सबको अवश्य जमा करेगा, इस में कुछ संदेह नहीं! अपने आपको घाटे में डालने वाले वही लोग हैं जो इस पर ईमान नहीं लाते.

> **नोटः-** मानवीय इतिहास में किसी इंसान ने इस प्रकार का दावा नहीं किया कि समस्त सृष्टि में जो कुछ है सब मेरा है. ऐसा दावा कोई इंसान कर भी नहीं सकता. ऐसा दावा सिर्फ़ वही कर सकता है जो वास्तव में समस्त सृष्टि का वास्तविक मालिक है.

13 और अल्लाह ही का है जो कुछ ठहरता है रात में और जो कुछ ठहरता है दिन में. और वह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है.
14 कहो, क्या मैं अल्लाह को छोड़कर किसी और को अपना सहायक (एवं संरक्षक) बनाऊँ जो बनाने वाला है आसमानों और पृथ्वी का. **और वह सबको खिलाता है लेकिन वह किसी के द्वारा खिलाया नहीं जाता** (अर्थात सब उसके ज़रूरतमंद हैं, लेकिन वह किसी का ज़रूरतमंद नहीं). कहो, मुझे तो यही आदेश दिया गया है कि मैं सबसे पहले अल्लाह को समर्पित होने वाला (अर्थात परिपूर्ण आज्ञापालन करने वाला) बन जाऊँ. और (मुझे आदेश दिया गया कि) तुम उन लोगों में से न होना जो अल्लाह के समकक्ष ठहराते हैं.

> **नोटः-** 'खाना' तमाम जीवधारियों की ज़रूरत है, लेकिन ख़ुदा हर ज़रूरत से पाक है. यही रचना और रचनाकार में अंतर है.

यह सच्चे ख़ुदा का परिचय है. सच्चा ख़ुदा ऐसा ही हो सकता है. उसे ऐसा ही होना चाहिए. क़ुरआन के सिवा धरती पर कोई किताब नहीं है जिसमें सच्चे ख़ुदा का परिचय हो, यह सिर्फ़ क़ुरआन है जिसमें सच्चे ख़ुदा का परिचय है.

बहुदेववादी लोगों ने ख़ुदा को इंसान जैसा समझ रखा है, यही कारण है कि उसे प्रसन्न करने के लिए वे अपने द्वारा गढ़े हुए बुतों पर चढ़ावे चढ़ाकर नेमतों को बर्बाद करते हैं. खाने-पीने की चीज़ें पत्थरों पर अर्पित करना निस्संदेह कितना अंधापन है!

15 कहो, यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ तो मुझे डर है एक बड़े दिन की सज़ा से.
16 उस दिन की सज़ा से जो बच गया तो उस पर अल्लाह की बड़ी कृपा हुयी. और यही स्पष्ट सफलता है.

17 **यदि अल्लाह तुम्हें कोई कष्ट पहुँचाए तो (स्वयं) उसके सिवा कोई नहीं जो उस कष्ट को दूर कर सके और यदि अल्लाह तुम्हें कोई भलाई पहुँचाए तो वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है.**

नोटः- अल्लाह एकमात्र उपास्य है. उसके ईश्वरत्व (Divinity) में कोई साझीदार नहीं. न उसके कोई बराबर का है और न उससे कोई बड़ा है. वही अकेला ख़ुदा है और सब उसके दास हैं. यही कारण है कि उसके निर्णय को कोई बदलने वाला नहीं. किसी को कष्ट पहुँचाना या किसी को भलाई पहुँचाना सब उस अकेले के हाथ में है.

18 उसे अपने बंदों पर पूर्ण अधिकार प्राप्त है, वह बुद्धिमान है और सबकी ख़बर रखने वाला है.
19 तुम उनसे पूछो कि सबसे बड़ा गवाह कौन है? कहो, अल्लाह, वह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह है. और मुझ पर यह क़ुरआन इसलिए अवतरित हुआ है, कि मैं इसके

माध्यम से तुम्हें और जिस जिसको यह पहुँचे सचेत कर दूँ. (पैग़ंबर उनसे पूछो,) क्या तुम इसकी गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ और भी उपास्य हैं. कहो, मैं इसकी गवाही नहीं देता. कहो, उपास्य तो वही अकेला है और तुम उसका जो साझी ठहराते हो उससे मेरा कोई संबंध नहीं.

20 जिन लोगों को हमने (पहले) किताब दी है, वे इस (किताब) को इस प्रकार पहचानते हैं, जिस प्रकार अपने बेटों को पहचानते हैं. लेकिन जिन लोगों ने अपने आपको घाटे में डाला वह

इसको नहीं मानते. 21 **और उस व्यक्ति से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े और उसके संदेशों को झुठलाए. निस्संदेह, अत्याचारी लोग कभी सफल नहीं हो सकते.**

नोटः- ख़ुदा का वास्तविक परिचय वही हो सकता है जो स्वयं ख़ुदा कराए. इसके अलावा ख़ुदा के संबंध से जो बातें हैं वह इंसानों के गढ़े हुए झूठ हैं. निस्संदेह! ख़ुदा के संबंध से झूठ गढ़ने वाले लोग बरबाद होने वाले हैं. क़ुरआन ख़ुदा की अंतिम एवं सुरक्षित वाणी है. अब ख़ुदा का वास्तविक परिचय प्राप्त करने का एकमात्र माध्यम सिर्फ़ क़ुरआन है.

22 **और जिस दिन हम उन सबको इकट्ठा करेंगे और बुहदेववादियों से पूछेंगे, कहाँ हैं तुम्हारे ठहराए हुए साझीदार जिनका तुम दावा करते थे.**

नोटः- बहुदेववाद एक काल्पनिक चीज़ है. सच्चाई से उसका कोई संबंध नहीं. लेकिन आज परीक्षारूपी दुनिया में इस सच्चाई पर परदा है. लेकिन वह दिन अवश्य आने वाला है, और वह आना आवश्यक भी है, जब सच्चाई से पर्दा उठाया जाएगा और इंसानों का वास्तविक मालिक सारे इंसानों को अपनी अदालत में इकट्ठा करेगा और उनसे उनकी ज़िंदगियों का हिसाब लेगा. यह होने वाला है, ज़रूर होने वाला है. यदि यह न हो तो सच्चाई से कभी परदा नहीं उठेगा. वह दिन आना ज़रूरी है ताकि यह स्पष्ट हो जाए कि कौन सत्यवादी थे और कौन असत्यवादी.

इंसानों को छोड़कर सारी सृष्टि अपना अर्थपूर्ण अस्तित्व रखती है. सृष्टि का एक-एक घटक वैसा ही है जैसा उसे होना चाहिए. लेकिन यह सिर्फ इंसान है जो स्वतंत्र है. और वह मनमानी ज़िंदगी जी रहा है. यहाँ ऐसे बहुत से इंसान हैं जो सिर्फ़ इस आज़ादी का ग़लत फ़ायदा उठाते हुए असत्य को सत्य बताने के एक्स्पर्ट बने हुए हैं. लेकिन इस अर्थपूर्ण सृष्टि में यह अर्थशून्य कृत्य हमेशा के लिए चलने वाला नहीं है. इसीलिए यह आवश्यक है कि सृष्टि का वास्तविक मालिक प्रकट हो और सत्यवादियों को इनाम दे और असत्यवादियों को सज़ा दे.

23 **फिर उनका सारा उपद्रव समाप्त हो चुका होगा, तब वह कहेंगे, तो सिर्फ़ यह कहेंगे कि हमारे रब अल्लाह की क़सम! हम उन लोगों में से न थे जो अल्लाह के समकक्ष ठहराते हैं.**

नोटः- जब सच्चा ख़ुदा सामने होगा तो तमाम उपद्रवियों का उपद्रव समाप्त हो जाएगा, बहुदेववादियों का बहुदेववाद गुम हो जाएगा. उस वक़्त बहुदेववादी स्वयं अपने ही ख़िलाफ़ बोलेंगे, लेकिन यह सत्य का स्वीकार, उस समय उनके लिए कुछ भी लाभकारी न होगा.

24 **देखो, ये किस तरह अपने बारे में झूठ बोलने लगे और जो कुछ (झूठ) ये गढ़ा करते थे वह सब उनसे गुम हो गया.**

नोटः- असत्य को मानने वालों का यही अंजाम होने वाला है, क्योंकि वे इसी अंजाम के योग्य हैं.

25 और उनमें से कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी और कान लगाते हैं. लेकिन हमने उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं कि वे उसे न समझ सकें और उनके कानों में बोझ डाल दिया है (कि सुनकर भी नहीं सुनते) वे चाहे (सत्य प्रकट करने वाली) सारी निशानियाँ देख लें, तब भी वे उस पर ईमान नहीं लाएंगे. उनका (हाल) तो ऐसा है कि वे सत्य का इन्कार करने वाले जब तुम्हारे पास आकर तुमसे झगड़ते हैं और कहते हैं कि यह पहले लोगों की कहानियों के सिवा और कुछ नहीं. 26 और वे उससे लोगों को रोकते हैं और स्वयं भी उससे अलग रहते हैं. (इस प्रकार) वे स्वयं अपनी ही तबाही का सामान कर रहे हैं, लेकिन वे नहीं समझते 27 और यदि उन्हें तुम उस समय देखो, जब उन्हें जहन्नम की आग के सामने खड़ा किया जाएगा. उस समय वे कहेंगे

काश! हमें दुनिया में फिर से (एक-बार) वापस भेज दिया जाए तो हम अपने रब के संदेशों को नहीं झुठलाएंगे और हम ईमान लाने वालों में से होंगे.

नोटः- दुनिया में सत्य का इन्कार करके आदमी का कुछ नहीं बिगड़ता इसलिए वह ग़लतफ़हमी में पड़ा रहता है. लेकिन क़यामत के दिन जब उसे आग के सामने खड़ा किया जाएगा और उसे पूछा जाएगा, तो उस पर सारी हक़ीक़त खुल जाएंगी. अब अचानक वह उन तमाम बातों को स्वीकारने लगेगा जिन्हें वह दुनिया में ठुकरा दिया करता था.

वर्तमान जीवन सत्य-प्राप्ति की परीक्षा है. और यह परीक्षा पहला और आख़िरी अवसर है. जो इंसान इस अवसर को गवाँ दे, उसे दूसरा अवसर हरगिज़ मिलने वाला नहीं.

28 लेकिन नहीं! (वह सिर्फ़ इसलिए ऐसा कहेंगे, क्योंकि) उनके सामने सत्य स्पष्ट हो चुका होगा जो पहले वे छिपाया करते थे. और यदि वे वापस भेज दिए जाएँ, तो फिर वे वही कुछ करेंगे, जिससे उन्हें मना किया गया था. इसमें कुछ संदेह नहीं कि वे झूठे हैं.

29 (लेकिन, अब) वे कह रहे हैं कि जीवन जो कुछ भी है, बस यही वर्तमान दुनिया का जीवन है. हम (मरने के बाद) दोबारा उठाए जाने वाले नहीं.

नोटः- इंसान अपने को आज़ाद पाकर आज क्या कह रहा है और वह कल क्या कहने वाला है यह ख़ुदा पेशगी बता रहा है.

वर्तमान दुनिया में ऐश-पसंद लोगों ने right here, right now की नीति अपनाई हुई है. इसका परिणाम यह हुआ कि इस concept ने इंसान का animalization किया, जबकि इंसान के पास जो thinking mind है वह किसी अन्य प्राणी के पास नहीं. यदि इंसान गंभीरतापूर्वक सोचे कि यह जीवन क्यों है? यह जीवन मुझे किसने दिया? और क्यों दिया? इस जीवन का उद्देश्य क्या है? मृत्यु क्यों है और मृत्यु-पश्चात क्या है? आखिर इस जीवन का सत्य क्या है? यह प्रश्न हर इंसान के स्वाभाविक प्रश्न हैं, जो अन्य किसी प्राणी के प्रश्न नहीं हैं. लेकिन जिन लोगों ने right here, right now की संकल्पना गढ़ रखी है वे इन स्वाभाविक प्रश्नों का उत्तर तलाशने के लिए प्रयत्न नहीं करते और उनका उत्तर प्राप्त किए बग़ैर ही अर्थशून्य जीवन व्यतीत करके दुनिया से चले जाते हैं.

सत्य यह कि इंसान को उसके वास्तविक मालिक ने उसका सृजन करके अँधेरों में भटकने के लिए छोड़ नहीं दिया, बल्कि उसने अपने मार्गदर्शन के द्वारा इंसान के सारे स्वाभाविक प्रश्नों के उत्तर दिए हैं.

30 **(पैग़ंबर!) यदि तुम देख पाते (कि उनका क्या हाल होगा) जब वे अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे,** वह उनसे पूछेगा, क्या यह (दोबारा जीवित करके उठाया जाना) सत्य नहीं है? वे उत्तर देंगे, हाँ! हमारे रब की क़सम, यह सत्य है! (इस पर) अल्लाह कहेगा, अच्छा, तो अब अपने सत्य के इन्कार के परिणाम-स्वरूप यातना का मज़ा चखो.

नोटः- निस्संदेह! यह उस देखने वाले का वक्तव्य है जिसकी नज़र इस दुनिया से लेकर मृत्यु-पश्चात दुनिया तक हर तरफ़ छायी हुई है. यह उसका वक्तव्य है जिसकी नज़र हर इंसान के कृत्य व उसके परिणाम पर है. क्योंकि मृत्यु-पश्चात क्या होने वाला है इसकी ख़बर इंसानों का वास्तविक सृजनकर्ता ही दे सकता है. यह उसका वक्तव्य है जो इंसान का वास्तविक सृजनकर्ता है. और किसी इंसान को वास्तविक मार्गदर्शन मिलेगा तो अपने वास्तविक सृजनकृर्ता द्वारा ही मिलेगा.

दुनिया में यदि कोई मज़हब वास्तविक उत्तरदायित्व की बात करता है तो वह सिर्फ़ इस्लाम है. जैसा कि फ़रमाया, वे अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे.

31 निस्संदेह! वे लोग घाटे में रहे जिन्होंने अल्लाह से मुलाक़ात की ख़बर को झूठ ठहराया, यहाँ तक कि जब वह घड़ी उन पर अचानक आएगी तो वे कहेंगे, हाय! अफसोस! इस मामले में हमने कैसी लापरवाही की और वे अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे. देखो, कैसा बुरा बोझ है जो वे उठाएंगे.

नोटः- जो लोग अपने वास्तविक मालिक को पाने में तथा उसकी स्कीम समझने में नाकाम रहे होंगे — वे घाटे में पड़ने वाले लोग हैं. जिस सत्य को वे नकारते थे जब वह घटित होगा

तो वे बहुत पश्चात्ताप करेंगे. लेकिन वह घड़ी point of no return तथा point of no correction की घड़ी होगी.

32 **और संसार का जीवन तो बस खेल व तमाशा है** और मृत्यु-पश्चात शाश्वत दुनिया का घर अच्छा है—उन लोगों के लिए जो डर रखते हैं, **क्या तुम लोग बुद्धि से काम न लोगे.**

नोटः- जो लोग दुनिया को ख़ुदा की दुनिया समझकर जीवन व्यतीत करें, उनका जीवन उत्तरदायित्व पर खड़ा होता है. और जो लोग ऐसा न करें उनका जीवन खेल व तमाशे की तरह अर्थशून्य एवं दिशाहीन जीवन है. ख़ुदा ने सारे जीवधारियों में सिर्फ़ इंसान को बुद्धिरूपी सबसे बड़ी चीज़ प्रदान की है. जो लोग बुद्धि का उपयोग जीवन से जुड़े हुए सत्य को जानने के लिए नहीं करते वह खेल व तमाशे का जीवन व्यतीत करके नैराश्य के साथ दुनिया से चले जाते हैं. यही वे लोग हैं जो इस परीक्षारूपी जीवन में विफल होने वाले हैं.

33 (पैग़ंबर!) हम जानते हैं जो कुछ वे कहते हैं उससे तुम्हें दुःख पहुँचता है. लेकिन यह लोग तुम्हें नहीं झुठलाते, बल्कि ये अत्याचारी वास्तव में अल्लाह की संदेशयुक्त निशानियों को झुठला रहे हैं.
34 और तुमसे पहले भी पैग़ंबरों को झुठलाया गया तो उन्होंने झुठलाए जाने और कष्ट पहुँचाने पर धैर्य से काम लिया, यहाँ तक कि उन्हें हमारी सहायता पहुँच गयी. **और अल्लाह की बातों को बदल सके ऐसा कोई नहीं.** तुम्हारे पास (पिछले) पैग़ंबरों की कुछ ख़बरें पहुँच ही चुकी हैं.

नोटः- ऐसा वक्तव्य वास्तविक ख़ुदा के सिवा दूसरा कोई नहीं दे सकता.

35 और (पैग़ंबर! सत्य का इन्कार करने वाले) लोगों का मुँह फेर लेना तुम्हें असहनीय हो रहा हो तो और यदि तुममें कुछ सामर्थ्य हो तो ज़मीन में कोई सुरंग ढूँढ़ निकालो या आसमान में सीढ़ी

लगाओ और उनके लिए कोई निशानी ले आओ. **और यदि अल्लाह चाहता तो इन सबको सीधे मार्ग पर इकट्ठा कर देता.** तो तुम नादान न बनो.

नोटः- अल्लाह इसकी सामर्थ्य रखता है कि सारे इंसानों को सीधे मार्ग का अंगीकार करने पर विवश कर दे. लेकिन उसने चाहा कि इंसान की परीक्षा ली जाए और यह इंसान पर छोड़ा जाए कि वह अपने लिए किस मार्ग का चयन करता है.

अल्लाह की ओर (अर्थात सत्य की ओर) जाने वाला सीधा मार्ग एक ही मार्ग है, जबकि असत्य की ओर जाने वाले अनेकों मार्ग हैं. यदि इंसान सन्मार्ग चाहता है तो उसे असत्य की ओर जाने वाले सारे मार्गों से अपने आपको अलग करना होगा, तभी वह सन्मार्ग पाने की परीक्षा में सफल हो सकेगा.

इस संदेश-वचन से यह बात भी स्पष्ट होती है कि यह उस वास्तविक मालिक का वक्तव्य है जो सब पर नियंत्रण रखने वाला है.

36 **सत्य का स्वीकार तो वही लोग करते हैं जो (ध्यानपूर्वक) सुनते हैं. और मुर्दों को अल्लाह उठाएगा और फिर वे उसकी तरफ़ लौटाए जाएंगे.**

37 और वे कहते हैं कि पैग़ंबर पर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी. कहो, अल्लाह कोई भी निशानी उतारने में पूरी तरह समर्थ है, लेकिन अधिकतर लोग (अल्लाह की योजना से) बेख़बर हैं.

नोटः- निस्संदेह! यह उसका वक्तव्य है जो सब कुछ करने की क्षमता रखता है.

38 और जो भी जीवधारी पृथ्वी पर चलता है और जो भी पक्षी अपने दोनों पंखों से उड़ता है, वह

सब तुम्हारी ही तरह की प्रजातियाँ हैं. हमने किताब में कोई चीज़ लिखने की नहीं छोड़ी है. **फिर वे अपने रब की ओर इकट्ठे किए जाएंगे.**

नोटः- क़ुरआन में इस घटित होने वाली अटल घटना को बार-बार रेखांकित किया गया है.

39 **और जो हमारे संदेशों को झूठा ठहराते हैं, वे बहरे और गूँगे हैं, अंधकार में पड़े हुए हैं. अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है सीधे रास्ते पर लगा देता है.**

नोटः- इंसानों के सच्चे स्वामी का मार्गदर्शन ही सत्य का प्रकाश है, इसके सिवा सब पथभ्रष्टता का अंधकार है. और होना भी ऐसा ही चाहिए.

40 इनसे कहो, यह बताओ कि यदि तुम पर अल्लाह की ओर से यातना आ पड़े या क़यामत आ जाए तो क्या अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे, बताओ यदि तुम

सच्चे हो. 41 **बल्कि तुम उसी को पुकारोगे** (जो तुम्हारा वास्तविक मालिक है). फिर यदि वह चाहता है तो दूर कर देता है उस मुसीबत को जिसके लिए तुम उसे पुकारते हो. और तुम उन्हें भूल जाते हो जिन्हें तुम उसका साझीदार ठहराते हो.

नोटः- यह इंसान के स्वभाव के ऐन विरुद्ध है कि वह अपने वास्तविक मालिक को छोड़कर अस्तित्वशून्य मालिकों को पुकारे. लेकिन उत्तरदायित्व से मुक्त होने के लिए वह अपने स्वभाव के विरुद्ध जाकर अस्तित्वशून्य ख़ुदाओं का काल्पनिक सहारा लेता है. लेकिन जब संकटमय परस्थिति से उसका सामना होता है तो उसका स्वभाव जागृत होता है और स्वभाव पर पड़े हुए झूठ के परदे हट जाते हैं. ऐसे समय में ख़ुदा को न मानने वाले भी ख़ुदा को पुकारने लगते हैं और अस्तित्वशून्य ख़ुदाओं को मानने वाले भी वास्तविक ख़ुदा को पुकारने लगते हैं. इसके बेशुमार उदाहरण मानवीय इतिहास में मौजूद हैं. लेकिन इस परीक्षारूपी दुनिया में विवश होकर ख़ुदा को पुकारा जाए यह ख़ुदा को वांछित नहीं.

42 और तुमसे पहले बहुत सी क़ौमों की ओर हमने पैग़ंबर भेजे. और उन क़ौमों को

मुसीबतों और परेशानियों में डाला, ताकि वे गिड़गिड़ाएँ. 43 **तो जब हमारी ओर से उन पर सख़्ती आयी तो फिर क्यों न वह विनम्र हुए, बल्कि उनके दिल तो और कठोर हो गए. और शैतान उनके कर्मों को (अर्थात बुरे कर्मों को) उनकी नज़र में अच्छे कर्मों के रूप में प्रस्तुत करता रहा.**

नोटः- वर्तमान दुनिया में बेशुमार लोग ख़ुदा की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ जीवन व्यतीत कर रहे हैं. वे ग़ैर- ख़ुदा को ख़ुदा बनाए हुए हैं. इस दुनिया का जो वास्तविक मालिक है उससे वे बेशुमार नेमतें पा रहे हैं और उस सच्चे स्वामी की तरफ़ पीठ किए हुए हैं. इस प्रकार वे अपने बुरे कर्मों में मगन हैं और बुरे कर्मों को अच्छे कर्म समझते हैं. निस्संदेह, ऐसा जीवन शैतान प्रेरित जीवन है.

ख़ुदा ने सख़्ती के रूप में दुनिया में उन्हें जागृत करने की व्यवस्था की, तब भी वे लोग नहीं जागे. जो लोग दुनिया में जगाए जाने के बाद भी नहीं जागेंगे. उन्हें तो फिर क़यामत ही जगाएगी, लेकिन उस वक़्त का जागना किसी को नफ़ा नहीं देगा.

44 **फिर जब उन्होंने उस उपदेश को भुला दिया जो उन्हें दिया गया था. तो हमने उन पर हर प्रकार की नेमतों के दरवाज़े खोल दिए, यहाँ तक कि जो कुछ उन्हें मिला था वे उसमें ख़ूब मगन हो गए तो हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया. तो तब वे बिल्कुल निराश होकर रह गए.**

नोटः- ख़ुदा की तरफ़ से जो उपदेश आता है वह इंसानों को ख़ुदा से परिचित कराने तथा इंसानों के संबंध से उसकी जो योजना है उससे इंसानों को अवगत कराने आता है. लेकिन जो लोग उस उपदेश को भुला देते हैं उनका वही अंजाम होता है जिसका इस संदेश-वचन में उल्लेख किया गया है.

इंसान को यह जानना चाहिए कि उसको कोई नेमत सिर्फ़ उसकी मेहनत के नतीजे में नहीं मिल सकती. काग़ज़-रूपी नोट के टुकड़े से किसी को नेमतें नहीं मिल सकती. इंसान को कोई नेमत सिर्फ़ उस वक़्त मिलती है, जब इस कायनात का मालिक कायनात-रूपी

भयानक कारख़ाने को चलाता है. और इस भयानक कारख़ाने को उस वास्तविक मालिक के सिवा चलाना किसी के लिए संभव नहीं.

मानवीय इतिहास में इंसान का यह बहुत बड़ा जुर्म रहा है कि वह नेमतों को तो भरपूर तौर पर लेता रहा, लेकिन उसने नेमतें देने वाले को इस तरह भुला दिया जैसे वे नेमतें उन्हें अपने आप मिल रही हों, और उनका देने वाला कोई न हो. अर्थात वे ख़ुदा का माल ख़ूब लूट-बाँट रहे थे, लेकिन उन्होंने ख़ुदा को असंबंधित बना दिया था.

आज की आधुनिक दुनिया में यही पाप बहुत बड़े प्रमाण में हो रहा है. आज के लोगों को ख़ुदा से जितनी नेमतें मिली उतनी नेमतें मानवीय इतिहास में किसी क़ौम को नहीं मिली. लेकिन इन सारी नेमतों का देने वाला इंसानों के बीच असंबंधित बन चुका है.

लोगों के यही वह कृत्ये हैं — जो क़यामत को निमंत्रित कर रहे हैं. लोग नेमतों के दाता को पूर्णतः भूलकर नेमतों की लूट-बाँट में मगन रहेंगे और क़यामत उन्हें अचानक आकर पकड़ लेगी.

45 तो उन लोगों की जड़ काट दी गयी जिन्होंने अत्याचार किया था. **और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो संपूर्ण संसार का पालनहार है.**

नोटः- समस्त संसार में एक ही ज़ात अद्वितीय ज़ात है और वह ख़ुदा की ज़ात है, जिसने सारे संसार को बनाया और वही उसको चला रहा है. स्वाभाविक है कि वही प्रशंसनीय है.

46 **(पैग़ंबर! उनसे) कहो, यह बताओ कि अल्लाह यदि छीन ले तुम्हारे कान और तुम्हारी**

आँखें और तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दे तो अल्लाह के सिवा दूसरा कौन ख़ुदा है जो इन चीज़ों को तुम्हें वापस दिला सके. देखो! किस प्रकार हम तरह-तरह से अपनी निशानियाँ बयान करते हैं, फिर भी ये विमुख होते हैं.

नोटः- सच्चे सृजनकर्ता के द्वारा दी हुयी चीज़ें सच्चा सृजनकर्ता ही वापस ले सकता है. जब **सच्चा मालिक उन्हें वापस ले ले तो झूठे उपास्य उन्हें लौटा नहीं सकते.** सच्चाई यह है कि सच्चा सृजनकर्ता ही इंसान का सच्चा उपास्य है. यह निर्णायक वाणी सच्चे सृजनकर्ता का परिचय करा रही है.

47 कहो, यह बताओ कि यदि तुम पर अल्लाह की ओर से अचानक या खुल्लमखुल्ला अज़ाब आ जाए तो क्या अत्याचारियों के सिवा कोई और नष्ट होगा.

48 **और जो पैग़ंबर हम भेजते हैं वह मात्र शुभ-सूचना देने वाले और डराने वाले होते हैं. फिर जो ईमान लाए और अपना सुधार कर ले तो ऐसे लोगों के लिए (मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में) न किसी प्रकार का भय होगा और न वे कभी दुःखी होंगे.**

नोटः- वर्तमान जीवन में सारी कोशिशें करने के बावजूद भी किसी को भय और दुःख से पूर्णतः मुक्त जीवन प्राप्त नहीं हुआ. यहाँ के सारे super achievers निराशा के

साथ दुनिया से चले गए, धरती पर इस्लाम एकमात्र मज़हब है जो वर्तमान जीवन के उस पार इंसान के लिए उम्मीद की राह बताता है.

49 और जो लोग हमारी संदेशयुक्त निशानियों को झुठलाएंगे उन्हें यातना पहुँचकर रहेगी,

इसलिए कि वह अवज्ञा करते थे. 50 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न (मैं यह दावा करता हूँ कि) मुझे परोक्ष का ज्ञान है और न मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ. मैं तो मात्र अल्लाह के उस संदेश का अनुसरण करता हूँ जो मेरे पास आता है. **इनसे पूछो, क्या अंधा और आँखों वाला दोनों बराबर हो सकते हैं, क्या तुम चिंतन नहीं करते?**

नोटः- क़ुरआन इंसानों को बार-बार सोच-विचार तथा चिंतन करने पर उभारता है. ऐसे क़ुरआन में अंधविश्वास तथा अंध-आस्थाओं को कदापि स्थान नहीं हो सकता.

51 **(पैग़ंबर) तुम इस ईश-संदेश के माध्यम से उन लोगों को सचेत कर दो, जिन्हें इस बात का भय है कि वे अपने रब के पास इस हाल में इकट्ठा किए जाएंगे कि अल्लाह के सिवा न तो उनका कोई समर्थक होगा और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, ताकि वे अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहने वाले बनें.**

नोटः- इंसानों का ख़ुदा एक ज़िंदा और बुद्धिमान ख़ुदा है. उसने इंसानों का सृजन करके उन्हें यूँ ही छोड़ नहीं दिया, वह उनके प्रत्येक कृत्य से अवगत है और वह उन्हें एक दिन अपनी अदालत में जमा करने वाला है और उनसे उनकी ज़िंदगी का हिसाब लेने वाला है.

52 और तुम उन लोगों को अपने से दूर न करो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते रहते हैं, उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए. उनके हिसाब में से किसी चीज़ की ज़िम्मेदारी तुम पर नहीं और न तुम्हारे हिसाब में से किसी चीज़ की ज़िम्मेदारी उन पर है.
फिर भी यदि तुम उन्हें अपने से दूर करोगे तो तुम अत्याचारियों में से हो जाओगे. 53
और इस प्रकार हमने उनमें से कुछ के द्वारा कुछ की परीक्षा ली है, ताकि वे कहें, क्या हममें यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने अपनी कृपा की है? क्या अल्लाह कृतज्ञ लोगों से भली-भाँति परिचित नहीं है?

54 और जब तुम्हारे पास वे लोग आएँ, जो हमारे संदेशों पर ईमान लाए हैं, तो उनसे कहो, तुम पर सलामती है, तुम्हारे रब ने दयालुता को अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है, यह कि तुममें से जो कोई नासमझी से कोई बुराई कर बैठे, फिर उसके बाद (पश्चात्ताप के साथ) पलट आए और अपना सुधार कर ले तो अल्लाह क्षमा कर देता है

और दया से काम लेता है. 55 इस प्रकार हम अपने संदेश खोल-खोल कर बयान करते हैं, ताकि अपराधियों की नीति स्पष्ट हो जाए.

56 **(पैग़ंबर!) उनसे कहो, तुम लोग अल्लाह के सिवा जिन्हें पुकारते हो, उनकी उपासना करने से मुझे रोका गया है.** कहो, मैं तुम्हारी इच्छाओं का पालन नहीं कर सकता, यदि मैं ऐसा करूँ तो मैं पथभ्रष्ट हो जाऊँगा और मैं सन्मार्ग पाने वालों में से न रहुँगा.

नोटः- इस्लाम में एक अल्लाह के सिवा किसी अन्य की उपासना की कोई गुंजाइश नहीं. हक़ीक़त यह है कि इस्लाम शुद्ध सच्चाई है और शुद्ध सच्चाई के साथ किसी भी प्रकार के समझौते की गुंजाइश नहीं होती.

57 कह दो, मैं अपने रब की ओर से प्राप्त सुस्पष्ट प्रमाण पर क़ायम हूँ. और तुमने उसे झुठला दिया है. अब मेरे अधिकार में वह चीज़ नहीं है जिसके लिए तुम जल्दी मचा रहे हो. फ़ैसला करना तो अल्लाह ही के अधिकार में है. वही सत्य को बयान करता है. और वही सबसे अच्छा निर्णय करने वाला है. 58 कह दो, यदि वह चीज़ मेरे अधिकार में होती जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो, तो मेरे और तुम्हारे बीच मामले का फ़ैसला हो चुका होता. और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है.

59 **उसके पास परोक्ष की कुंजियाँ हैं जिन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता (अर्थात उसी के नियंत्रण में वे सारे ख़ज़ाने हैं जहाँ किसी की बुद्धि की पहुँच नहीं). अल्लाह जानता है जो कुछ ज़मीन तथा समुंदर में है. पेड़ से गिरने वाला कोई पत्ता ऐसा नहीं जिसका उसे ज्ञान न हो तथा**

ज़मीन के भीतर अंधेरे में कोई दाना ऐसा नहीं जिसकी ख़बर उसे न हो. कोई गीली तथा सूखी चीज़ ऐसी नहीं जो एक स्पष्ट किताब में लिखी हुई न हो.

नोटः- यह सच्चे ख़ुदा का परिचय है, जो सर्व सामर्थ्यवान एवं सर्वज्ञानी है. ख़ुदा के सिवा दूसरा कोई भी ऐसा नहीं हो सकता.

60 **और वही है जो रात में तुम्हें (मृत्यु के समान) अचेतावस्था में डालता हैं और दिन को जो कुछ तुम करते हो वह उसको जानता है. फिर वह तुम्हें दिन में उठा देता है, ताकि (जीवन की) निश्चित अवधि पूरी हो. अंततः तुम्हें उसी की ओर लौट कर जाना है. फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे हो.**

नोटः- दुनिया में भी तुम अपने मालिक के नियंत्रण में हो, अगरचे तुम्हें परीक्षा हेतु सीमित स्वातंत्र्य प्राप्त है. वही तुम्हें निद्रावस्था में ले जाता है और वही तुम्हें सचेतावस्था में लाता है. फिर अंततः तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे, फिर परीक्षारूपी जीवन में तुमने जो कुछ किया उसके अनुसार वह तुम्हारा फ़ैसला करेगा.

61 और वह अपने बंदों पर पूर्ण नियंत्रण रखने वाला है और वह तुम पर निगरानी करने वाले नियुक्त करके भेजता है, यहाँ तक कि जब तुममें से किसी की मृत्यु का समय आ जाता है तो हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उसका प्राण निकाल लेते हैं. और वे (अपने कर्तव्य की पूर्ति में) कोई ढिलाई का मामला नहीं करते.

62 **फिर सब अपने वास्तविक मालिक 'अल्लाह' की ओर वापस लाए जाएंगे. यह जान लो कि निर्णय के सारे अधिकार उसी को प्राप्त हैं और वह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है.**

नोटः- इस्लाम का पूरा ढाँचा उत्तरदायित्व की विचारधारा पर खड़ा है. मानवीय इतिहास में लोगों ने उत्तरदायित्व से मुक्त जीवन व्यतीत करने के लिए काल्पनिक तथा अस्तित्वशून्य ख़ुदाओं का सहारा लिया. लेकिन एक दिन अवश्य आने वाला है, जब सत्य से परदा उठाया जाएगा और सारे इंसान अपने वास्तविक मालिक के सामने हिसाब के लिए खड़े किए जाएंगे.

इस प्रकार का वक्तव्य दुनिया की किसी भी धार्मिक किताब में नहीं है. क़ुरआन का यह वक्तव्य इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि क़ुरआन इंसानों के सच्चे स्वामी की ओर से है.

63 (पैग़ंबर!) उनसे पूछो, धरती और समुद्र के अँधेरों से तुम्हें कौन बचाता है. तुम उसे पुकारते हो विनम्रतापूर्वक और चुपके-चुपके कि यदि अल्लाह ने इस विपत्ति से हमें बचा लिया तो हम उसके प्रति अवश्य कृतज्ञ होंगे. 64 कहो, अल्लाह ही तुम्हें बचाता है उससे और प्रत्येक कष्ट से, फिर भी तुम उसके साझीदार ठहराने लगते हो. 65 कहो, वह इसकी सामर्थ्य रखता है कि तुम पर तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से कोई यातना भेज दे या तुम्हें समूहों में बाँटकर एक समूह को दूसरे समूह की शक्ति का मज़ा चखवा दे. देखो, हम (हमारे) संदेशों को कैसे तरह-तरह से बयान करते हैं, ताकि वे सत्य को समझ लें. 66 और तुम्हारी क़ौम ने उसे झुठला दिया है, हालाँकि वह सत्य है. कह दो, मुझे तुम्हारे ऊपर कोई देखरेख करने वाला नहीं बनाया गया है. 67 हर ख़बर के प्रकट होने का एक समय निश्चित है और तुम जल्द ही (सत्य) जान लोगे.

68 जब कभी तुम ऐसे लोगों से मिलो जो हमारे संदेशों के संबंध से व्यर्थ बातें कर रहे हों तो तुम उनसे अलग हो जाओ, यहाँ तक कि वे किसी और बात में लग जाएँ. और यदि कभी शैतान तुम्हें भुला दे तो याद आने पर ऐसे अन्यायी लोगों के पास मत बैठो. 69 और जो लोग अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) हैं उन पर (अवज्ञाकारी) लोगों के हिसाब में से किसी चीज़ की (अर्थात उनके किसी कर्म की) ज़िम्मेदारी नहीं, लेकिन उन्हें उपदेश करने की ज़िम्मेदारी है, ताकि वे (भी) अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनें.

70 **छोड़ो उन लोगों को जिन्होंने अपने मज़हब को खेल व तमाशा बना रखा है और जिन्हें दुनिया की ज़िंदगी ने धोके में डाल रखा है.**

नोटः- जो लोग दिखावे के स्तर पर तो धार्मिक बने हुए हैं, लेकिन व्यवहारिक स्तर पर अपने आपको उत्तरदायित्व से मुक्त समझकर जीवन व्यतीत कर रहे हैं. यही वे लोग हैं जिन्होंने मज़हब को खेल और तमाशा बनाया है और यही वे लोग हैं जिन्हें दुनिया की ज़िंदगी ने धोके में डाल रखा है.

लेकिन तुम उन्हें क़ुरआन के माध्यम से उपदेश देते रहो, ताकि कोई व्यक्ति अपने किए में गिरफ़्तार न हो जाए, कि अल्लाह से बचाने वाला कोई सहायक एवं मध्यस्थ उसके लिए न हो. यदि वह (सज़ा से) छुटकारा पाने के लिए बदले के रूप में सब कुछ देना चाहे, तब भी वह उससे स्वीकार न किया जाएगा. यही वे लोग हैं जो अपनी कमाई के कारण तबाही में पड़ गए. उन्हें पीने के लिए खौलता हुआ पानी होगा और दुःखदायी यातना होगी, यह इस कारण कि वे (दुराग्रहपूर्वक) सत्य का इन्कार करते थे.

नोटः- अब ख़ुदा का बताया हुआ मार्ग जानने का एकमात्र माध्यम सिर्फ़ क़ुरआन है, क्योंकि क़ुरआन ख़ुदा का सुरक्षित मार्गदर्शन है.

71 कहो, क्या हम अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारें **जो न हमें लाभ दे सकते हैं और न हमें हानि पहुँचा सकते हैं.** और जबकि अल्लाह हमें सीधा रास्ता दिखा चुका है तो क्या हम अब उलटे पाँव फिर जाएँ, उस व्यक्ति की तरह जिसे शैतान ने

(बंजर) भूमि में भटका दिया हो और वह (सन्मार्ग से वंचित होकर) हैरान व परेशान फिर रहा हो. और उसके साथी उसे सीधे मार्ग की ओर बुला रहे हों कि इधर आ जाओ (यहाँ सीधा मार्ग है).

कहो, अल्लाह का बताया हुआ मार्ग ही सन्मार्ग है और हमें आदेश मिला है कि हम उसे समर्पित हो जाएँ जो सारे संसार का स्वामी है.

नोटः- इंसानों का वास्तविक मालिक वही है जो सारे संसार का मालिक है और वही इंसानों को सीधा रास्ता दिखा सकता है और उसी को यह शक्ति प्राप्त है कि वह किसी को नफ़ा या नुक़सान पहुँचा सके.

72 और यह कि नमाज़ क़ायम करो और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो, **वही (तुम्हारा वास्तविक मालिक) है जिसके पास तुम इकट्ठे किए जाओगे.**

नोटः- क़ुरआन धरती पर एकमात्र किताब है जो इंसानों को बार-बार यह याद दिलाती है कि एक दिन आने वाला है जब तुम अपने वास्तविक मालिक के सामने इकट्ठे किए जाओगे.

73 वही है (तुम्हारा वास्तविक मालिक) जिसने आसमानों तथा धरती का अर्थपूर्ण उद्देश्य के साथ सृजन किया और जिस समय वह किसी चीज़ को कहे, हो जा (अर्थात अस्तित्वमान हो जा), तो वह उसी समय (अस्तित्वमान) हो जाती है. **उसकी बात सत्य है और जिस दिन सूर फूँका जाएगा, उस दिन बादशाही उसी की होगी. वह दृश्य तथा अदृश्य का जानने वाला है, वह बुद्धिमान है और हर चीज़ की ख़बर रखने वाला है.**

नोटः- समस्त सृष्टि पर उसके वास्तविक मालिक की ही बादशाही है. समस्त सृष्टि में यह सिर्फ़ इंसान है जिसको परीक्षा हेतु सीमित स्वातंत्र्य दिया गया है. समस्त सृष्टि अनिवार्य रूप से अपने मालिक को समर्पित है, लेकिन इंसान को स्वेच्छा से अपने मालिक को समर्पित होना है. जब परीक्षा की अवधी समाप्त होगी और सूर फूँका जाएगा तब इंसानों का स्वातंत्र्य भी समाप्त हो जाएगा. तब सारे इंसान समस्त सृष्टि के बादशाह के दरबार में हिसाब के लिए हाज़िर किए जाएंगे.

74 **और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा, क्या तुम बुतों को पूजनीय बनाते हो? मैं तो तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को स्पष्ट पथभ्रष्टता में देखता हूँ.**

नोटः- मानवीय इतिहास की यह विचित्र विडंबना रही है कि इंसान जैसी बुद्धि रखने वाली रचना ने अपने ही हाथों से बुतों को बनाया और उसे ख़ुदा मानकर उसके सामने सर झुकाने लगे. ऐसा कृत्य पथभ्रष्टता नहीं तो और क्या होगा? जिसके लिए न बुद्धि का आधार है और न ईश-संदेश का आधार. फिर भी इंसान ऐसा क्यों करता है? इससे इंसान का क्या फ़ायदा है कि वह ग़ैर-ख़ुदा को ख़ुदा बनाता है? इसका जवाब यह है कि वर्तमान परीक्षारूपी दुनिया में वास्तविक ख़ुदा को ख़ुदा न मानने से इंसान का कुछ नहीं बिगड़ता, लेकिन एक फ़ायदा ज़रूर होता है, वह है उत्तरदायित्व से मुक्ति. तराशे हुए पत्थर को, झाड़, पहाड़ को, सूरज, चाँद को, पशु, पक्षी को ख़ुदा मानकर इंसान को उत्तरदायित्व के साथ जीवन व्यतीत करने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि यह चीज़ें इंसान से कोई हिसाब लेने वाली नहीं.

75 और इस तरह हमने इब्राहीम को दिखा दी आसमानों और ज़मीन की हुकुमत, ताकि
वह (सत्य पर) दृढ़तापूर्वक विश्वास करने वाला हो. 76 फिर जब रात ने उस पर अँधेरा
कर लिया, तब उसने एक तारे को देखा और कहा, यह मेरा रब है, फिर जब वह तारा
अस्त हो गया, तो उसने कहा, मैं अस्त हो जाने वालों को मित्र नहीं रखता. 77 फिर जब
उसने चाँद को चमकते हुए देखा,

तो कहा कि यह मेरा रब है. फिर जब वह डूब गया तो उसने कहा, **यदि मेरा (वास्तविक) रब मुझे मार्गदर्शन न करे तो मैं पथभ्रष्ट लोगों में से हो जाऊँगा.**

नोटः- सत्य के खोजी का यह वक्तव्य कि जो कोई वास्तविक रब होगा यदि वह मेरा मार्गदर्शन न करे तो मैं पथभ्रष्ट लोगों में से हो जाऊँगा. हक़ीक़त यह कि इंसान का जो सच्चा

रब है उसका मार्गदर्शन ही इंसान को सच्चाई से रूबरू करा सकता है. सच्चे रब के मार्गदर्शन को छोड़कर तमाम मार्गदर्शन वास्तव में पथभ्रष्टता है.

78 फिर जब उसने सूरज को चमकते हुए देखा तो कहा कि यह मेरा रब है, यह सबसे
बड़ा है. फिर जब वह अस्त हो गया. तो उसने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ लोगो मैं उनसे
स्वयं को अलग करता हूँ जिन्हें तुम अल्लाह के साझीदार ठहराते हो. 79 **मैंने अपना
रुख पूर्ण एकाग्रता के साथ उस ज़ात की ओर कर लिया है जिसने आसमानों और धरती का सृजन किया है. और मैं उनमें से नहीं हूँ जो अल्लाह के साझीदार ठहराते हैं.**

नोटः- इंसानों का वास्तविक मालिक भी वही है जो समस्त सृष्टि का मालिक है. तो इंसान की बेहतरी इसी में है कि वह अपने वास्तविक मालिक को मालिक माने और उसकी इच्छानुसार जीवन व्यतीत करे.

80 उसकी क़ौम के लोग उससे झगड़ने लगे. उसने कहा, क्या तुम मुझसे अल्लाह के बारे में झगड़ते हो, जबकि उसने मुझे मार्ग दिखा दिया है. और मैं उनसे नहीं डरता जिन्हें तुम अल्लाह का साझीदार ठहराते हो, हाँ, यदि मेरा रब कुछ चाहे तो वह ज़रूर हो सकता है. मेरे रब का ज्ञान हर चीज़ पर छाया हुआ है, **क्या तुम नहीं सोचते**?

नोटः- सत्य की प्राप्ति का संबंध सोचने से है. जो लोग नहीं सोचते वे सत्य को कदापि प्राप्त नहीं कर सकते. इसके विपरीत अंधविश्वास तथा अंधी आस्थाएँ न सोचने के कारण अस्तित्व में आयी हैं और न सोचने के कारण ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी जारी हैं.

81 **और मैं क्यों डरूँ तुम्हारे उन ठहराए हुए साझीदारों से, जबकि तुम अल्लाह के साथ उन चीज़ों को साझीदार ठहराते हुए नहीं डरते,**

जिसके लिए उसने तुम पर कोई प्रमाण नहीं उतारा. **अब दोनों पक्षों में से कौन अधिक निश्चिंत रहने का अधिकारी है, बताओ यदि तुम जानते हो.**

> **नोटः-** बहुदेववाद का पूरा ढाँचा एक काल्पनिक ढाँचा है. कल्पना के बाहर उसका कोई प्रमाण नहीं. इसके विपरीत सच्चे तथा एक ख़ुदा की गवाही सारी कायनात दे रही है और वह विवेक की कसौटी पर भी हक़ीक़त है. इसी के साथ आसमानी किताबें भी इस हक़ीक़त की गवाही देती रही हैं.

82 **जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अपने ईमान में अत्याचारी कृत्यों को नहीं मिलाया, तो ऐसे ही लोगों के लिए अमन है और यही लोग सन्मार्ग पर हैं.**

> **नोटः-** वही ईमान वास्तव में ईमान है, जिसके अनुसार इंसान का व्यावहारिक जीवन हो; ऐसा जीवन जिसकी बुनियाद अल्लाह के डर पर रखी गयी हो.

83 यह है हमारा वह तर्क जो हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम के मुक़ाबले में दिया था. हम जिसे चाहते हैं दर्जों में ऊँचा कर देते हैं. निस्संदेह! तुम्हारा रब बुद्धिमान है और सब कुछ जानने वाला है.

84 और हमने इब्राहीम को इसहाक़ और याक़ूब प्रदान किए. हर एक को हमने सीधा रास्ता दिखाया. इससे पहले नूह को भी हमने सीधा रास्ता दिखाया था. और इसी प्रकार उसकी संतान में से दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और

हारून को भी सीधा रास्ता दिखाया था. और हम भले काम करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं. 85 इसी प्रकार ज़करिया और यहया और ईसा और इलयास को भी (सन्मार्ग दिखाया था). उनमें से प्रत्येक सदाचारी था. 86 और इसमाईल और अल-यसअ और यूनुस और लूत को भी (सन्मार्ग दिखाया था) उनमें से प्रत्येक को हमने संसार वालों पर प्रधानता प्रदान की. 87 और उनके पूर्वजों तथा उनकी संतानों तथा उनके भाई-बंधुओं में से भी (कितने ही लोगों को सीधा रास्ता दिखाया). और हमने उन्हें चुन लिया और सीधे रास्ते की ओर उनका मार्गदर्शन किया. 88 यह अल्लाह का मार्गदर्शन है, जिसके द्वारा वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है मार्ग दिखाता है. और यदि वे अल्लाह का साझीदार ठहराते तो उनका सब किया कराया नष्ट हो जाता. 89 यह वे लोग हैं जिन्हें हमने किताब, बुद्धिमानी एवं पैग़ंबरी प्रदान की थी (जिस प्रकार, ऐ मुहम्मद! तुम्हें प्रदान की है). अब यह मक्का वाले इसको झुठला दें तो हमने इसके लिए ऐसे लोग नियुक्त कर दिए हैं जो इसको नकारने वाले नहीं हैं. 90 वे (पिछले पैग़ंबर) ऐसे लोग थे, जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दिखाया था, तो तुम भी उनके मार्ग पर चलो. (पैग़ंबर!) कह दो, मैं इस पर तुमसे कोई प्रतिफल (कोई पुरस्कार)

नहीं माँगता, **यह तो बस एक उपदेश है समस्त संसार वालों के लिए.**

नोटः- क़ुरआन का संदेश सारे इंसानों के लिए है और उसकी ओर से है जो सारे संसार का वास्तविक मालिक है.

91 **और उन्होंने अल्लाह के बारे में बहुत ही अनुचित अनुमान लगाया, जब उन्होंने कहा कि अल्लाह ने किसी मनुष्य पर कोई चीज़ नहीं उतारी है. कहो कि वह**

किताब किसने उतारी थी जिसे लेकर मूसा आए थे. जो (पथभ्रष्टता का अँधेरा दूर करने वाली) रोशनी थी और लोगों के लिए मार्गदर्शन. जिसे तुमने खंड-खंड कर रखा है. कुछ को प्रकट करते हो और बहुत कुछ छिपा जाते हो. और तुम्हें वह बातें सिखाईं जिन्हें न जानते थे तुम और न तुम्हारे बाप-दादा. कह दो कि अल्लाह ही ने (उतारी थी वह किताब जिसे मूसा लेकर आए थे). फिर उन्हें छोड़ दो कि वे अपने कुतर्कों में खेलते रहें.

नोटः- ख़ुदा की तरफ़ से जितनी भी किताबें आयीं, वे सारी किताबें इंसानों के लिए पथभ्रष्टता का अँधेरा दूर करके सन्मार्ग दिखाने वाली थीं. लेकिन क़ुरआन से पहले की किताबों के साथ इंसानों ने जो मामला किया उसका यहाँ उल्लेख हो रहा है.

अब पथभ्रष्टता का अँधेरा दूर करके सन्मार्ग दिखाने वाली धरती पर एकमात्र तथा सुरक्षित किताब सिर्फ़ क़ुरआन है. अब जिस किसी को अपने वास्तविक मालिक का मार्गदर्शन चाहिए तो उसे वह सिर्फ़ क़ुरआन से प्राप्त होगा.

92 **यह (क़ुरआन उसी तरह की) एक किताब है, जिसे हमने उतारा है जो बरकत वाली है और (पूर्ववर्ती किताब में से) जो सत्य शेष है उसकी पुष्टि करने वाली है. और यह इसलिए उतारी गयी है कि तुम सारी बस्तियों के केंद्र मक्का के रहने वालों को और उसके आस-पास वालों को सचेत कर दो. और जो मृत्यु-पश्चात जीवन पर विश्वास करते हैं वही इस पर विश्वास करते हैं. और वे नियमित रूप से नमाज़ अदा करने वाले हैं.**

नोटः- क़ुरआन पूर्ण रूप से सुरक्षित सत्य है. इसीलिए पूर्ववर्ती किताब में से जो भी सत्य शेष होगा वह क़ुरआन की कसौटी से जाँचा जाएगा. जिसकी पुष्टि क़ुरआन कर दे वह भी उसी प्रकार से सत्य है जिस प्रकार स्वयं क़ुरआन सत्य है.

93 और उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या यह कहे कि मुझ पर ईश-संदेश प्रकट किया गया है, जबकि उस पर कोई ईश-संदेश प्रकट न किया गया हो. और यह कहे कि मैं भी वैसी चीज़ अवतरित कर सकता हूँ जैसी अल्लाह ने अवतरित की है. काश तुम इन अत्याचारियों को उस समय देख सको, जब ये मौत की यातनाओं में होंगे और फ़रिश्ते (उनकी ओर) हाथ बढ़ा रहे होंगे कि लाओ अपने प्राण निकालो. आज तुम्हें अपमानजनक सज़ा दी जाएगी, इस कारण कि तुम अल्लाह के संबंध से झूठ कहते थे. और तुम अल्लाह के संदेशों के संबंध

से अपने घमंड का परिचय देते थे. 94 **(और अल्लाह उनसे कहेगा,) अब तुम वैसे ही अकेले हमारे पास आ गए जैसा हमने तुम्हारा पहली बार सृजन किया था.** **और जो कुछ हमने तुम्हें दिया था वह सब कुछ तुम अपने पीछे छोड़ आए. और अब हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को भी नहीं देख रहे हैं, जिनके बारे में तुम समझते थे कि तुम्हारा काम बनाने में उनका भी योगदान है. अब तुम्हारे आपस के सारे नाते टूट चुके.** **और जिनका तुम दावा करते थे वे सब (अर्थात ख़ुदा के काल्पनिक साझीदार) तुमसे गुम हो गए.**

नोटः- जब सत्य से पर्दा उठाया जाएगा और बहुदेववादी लोग अपने वास्तविक सृजनकर्ता के सामने खड़े किए जाएंगे, तब वे सारे काल्पनिक साझीदार गुम हो चुके होंगे. आज बहुत से लोग इस बात को नहीं समझ रहे हैं कि अपने वास्तविक सृजनकर्ता को नज़रंदाज़ करना कितना ख़तरनाक है. लेकिन आने वाले कल वे ऐसे पश्चाताप में ग्रस्त होंगे जिसका आज अंदाज़ा भी नहीं किया जा सकता.

95 **निस्संदेह! वही अल्लाह है जो दाने और गुठली को फाड़ने वाला है. वही जानदार को बेजान से निकालता है और**

वही बेजान को जानदार से निकालता है. यह है अल्लाह! (तुम्हारा वास्तविक मालिक!) फिर तुम किधर भटके चले जा रहे हो.

> **नोटः-** यह घटनाएँ जो निसर्ग स्तर घटित हो रही हैं, कुछ लोग इसे principle of causation कहते हैं. और कुछ इन घटनाओं के संबंध से इस तरह आदी (used to) हो चुके हैं कि इन घटनाओं को अपने आप होने वाली घटनाएँ समझते हैं. लेकिन, नहीं! इन सब घटनाओं के पीछे ख़ुदा खड़ा हुआ है जो उन्हें घटित कर रहा है.

96 **वही (रात के परदे को चाक करके) सुबह निकालता है. और उसी ने रात को विश्राम के लिए बनाया. उसी ने सूरज व चाँद का हिसाब निश्चित किया. यह सब कुछ उस सामर्थ्यवान तथा सर्वज्ञानी द्वारा ठहराया हुआ है.**

> **नोटः-** जो सूरज तथा चाँद का वास्तविक मालिक है वही उनके काम निर्धारित कर सकता है. वही रात और दिन के चक्र को चला रहा है.

97 **वही है (तुम्हारा वास्तविक मालिक) जिसने तारों को तुम्हारे लिए भू-भाग तथा जल-भाग के अँधेरों में रास्ता**

मालूम करने का साधन बनाया. निस्संदेह, हमने (हमारी संदेशयुक्त) निशानियों को स्पष्ट रूप में बयान कर दिया है उन लोगों के लिए जो (सत्य) जानना चाहें.

98 **वही है (तुम्हारा वास्तविक मालिक) जिसने तुम्हें पैदा किया एक जान से,** फिर प्रत्येक के लिए (निर्धारित अवधी तक धरती पर) ठिकाना है और प्रत्येक के लिए वापस लौटाए जाने का स्थान है. हमने (हमारी संदेशयुक्त) निशानियों का स्पष्ट वर्णन कर दिया है उन लोगों के लिए जो समझ-बूझ रखते हैं.

नोटः- क़ुरआन में इसकी भरपूर व्यवस्था की गयी है कि लोग परीक्षा का कालावधी समाप्त होने से पहले अपने वास्तविक मालिक को जान लें.

99 वही है (तुम्हारा रब) जिसने आसमान से पानी बरसाया. फिर उसके द्वारा हर प्रकार की वनस्पति उगाई. फिर उससे हरी-भरी पत्तियाँ निकालीं (और तने विकसित किए). जिससे हम एक दूसरे पर चढ़े हुए दाने निकालते हैं. और खजूर के गाभों में से फल के गुच्छे झुके हुए और बाग़ अंगूर के और ज़ैतून के और अनार के, आपस में मिलते-जुलते और अलग-अलग भी. **हर एक के फल को देखो जब वह फलता है. और उसके पकने को देखो जब वह पकता है. निस्संदेह इन सब में विश्वास करने वालों के लिए संदेशयुक्त निशानियाँ हैं.**

नोटः- इंसानी कारख़ाने इस पर समर्थ नहीं कि वह एक ऐसी मशीन बनाएँ, जिस मशीन के भीतर से उसी तरह की बेशुमार मशीनें अपने आप निकलती चली जाएँ. हमारे कारख़ानों को हर मशीन अलग-अलग बनानी पड़ती है. लेकिन ख़ुदा के कारख़ाने में यह घटना हर दिन घटित हो रही है. एक बीज बो दिया जाता है तो उसी से बेशुमार बीज निकलते चले जाते हैं. यही मामला इंसान का है कि ख़ुदा ने एक स्त्री और एक पुरुष को अपने आदेश से बनाया फिर उनके भीतर से अरबों-खरबों इंसान निकलते चले जा रहे हैं और उनके निकलने का सिलसिला समाप्त नहीं होता. यह दृश्य बता रहा है कि जिस ख़ुदा ने इंसान तथा दूसरे जीवधारियों को बनाया वह असीम सामर्थ्य का मालिक है. वह ऐसी चीज़ को सृजित करने की शक्ति रखता है कि एक चीज़ का आरंभ कर दे फिर उसके भीतर से उसी तरह की बेहिसाब चीज़ें लगातार निकलती चली जाएँ. इसी तरह ख़ुदा वर्तमान दुनिया के भीतर से एक आदर्श दुनिया निकाल सकता है. मृत्यु-पश्चात आदर्श दुनिया की बात वास्तव में सहजबुद्धि के ऐन अनुरूप है.

100 **और उन्होंने जिन्नों को अल्लाह का साझीदार ठहराया, <u>जबकि अल्लाह ही ने उनका सृजन किया है.</u>** और उन्होंने बिना जाने-बूझे उसके लिए बेटे

और बेटियाँ रच दीं. हालाँकि यह उसकी महिमा के बिल्कुल प्रतिकूल है और वह उन बातों से उच्च है जो वे बयान करते हैं. 101 वह तो आसमानों और धरती का आविष्कारक (originator) है. उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है, जबकि उसकी कोई पत्नी नहीं. **उसी ने हर चीज़ का सृजन किया है और वही हर चीज़ का जानने वाला है.** 102 **ऐसा है अल्लाह तुम्हारा (वास्तविक) रब. उसके सिवा दूसरा कोई ख़ुदा नहीं. वही हर चीज़ का बनाने वाला है. तो (लोगो!) तुम उसी की उपासना करो.** वह हर चीज़ पर नज़र रखे हुए है. 103 **उसको निगाहें नहीं पा सकती, लेकिन वह निगाहों को पा लेता है.** वह अत्यंत सूक्ष्म से सूक्ष्म चीज़ पर नज़र रखने वाला है, हर चीज़ की ख़बर रखने वाला है.

नोटः- क़ुरआन के यह संदेश-वचन कायनात के वास्तविक मालिक का परिचय करा रहे हैं. धरती पर किसी किताब में ख़ुदा का वास्तविक परिचय है तो वह केवल क़ुरआन है.

मानवीय इतिहास में इंसान ख़ुदा के संबंध से तरह-तरह से झूठ गढ़ता रहा. वह रचनाओं को ख़ुदा या ख़ुदा का साझीदार ठहराता रहा. सच्चा ख़ुदा कितना ज़्यादा बड़ा है, इसकी गवाही उसकी बतायी हुयी सृष्टि दे रही है. लेकिन इंसान ने अपनी कल्पनाओं से ग़ैर-ख़ुदा को ख़ुदा या ख़ुदा का साझीदार बनाने का पाप किया है.

104 (पैग़ंबर! कह दो) **अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से आँख खोल देने वाले प्रमाण आ चुके हैं.** तो अब जो सूझ-बूझ से काम लेगा तो इसमें उसका अपना ही भला है. और जो अंधा बना रहेगा तो उसने अपना ही बुरा किया. और मैं तुम्हारे ऊपर कोई रखवाला नियुक्त नहीं हूँ.

नोटः- इंसान सच्चाई को पाता है तो उसमें उसका अपना भला है और यदि वह सच्चाई के संबंध से अंधा बना रहता है तो वह स्वयं अपना नुक़सान कर रहा है.

105 इस तरह हम अपने संदेशों को तरह-तरह से बयान करते हैं, ताकि वे कहें कि तुमने पढ़ दिया (अर्थात तुमने स्पष्ट रूप से हम तक संदेश पहुँचा दिया) और यह इसलिए कि हम (हमारा संदेश) अच्छी तरह खोल दें उन लोगों के लिए जो जानना चाहें (अर्थात जो सत्य जानने के प्रति गंभीर हैं उनके लिए). 106 (पैग़ंबर!) तुम बस उस चीज़ का अनुसरण करो जो तुम्हारे रब की ओर से तुम पर अवतरित की जा रही है. उसके सिवा दूसरा कोई ख़ुदा नहीं. और उन लोगों को नज़रंदाज़ करो जो ख़ुदा के समकक्ष ठहराते हैं. 107 **अगर अल्लाह चाहता तो यह लोग कदापि अल्लाह के साझीदार न ठहराते.** और (पैग़ंबर!) हमने तुमको उनके ऊपर कोई संरक्षक नहीं बनाया है; और न तुम उनके संबंध से ज़िम्मेदार हो.

108 **और (ऐ ईमान वालो!) ये लोग अल्लाह के सिवा जिन्हें पुकारते हैं उन्हें तुम अपशब्द न कहो, इसके परिणाम-स्वरूप वे लोग हद से गुज़र कर, अपनी अज्ञानता के कारण अल्लाह को अपशब्द कहने लगेंगे. इसी तरह हमने प्रत्येक समूह की दृष्टि में उनके कर्म को मनमोहक बनाया दिया है. फिर उन सबको अपने रब की ओर लौटना है उस समय अल्लाह उन्हें बता देगा जो वे करते थे.**

नोटः- इस्लाम दूसरे धर्मोंको बुरा कहने की इजाज़त नहीं देता और न उन पूजनियों को बुरा कहने की इजाज़त देता है जिन्हें दूसरे धर्मों के लोग पूजते हैं.

इस प्रकार का आदेश उसी मज़हब के लिए संभव है जो स्वयं सच्चाई पर खड़ा हो. जिस मज़हब के पास सच्चाई है वह इंसानों को सच्चाई की विचारधारा (ideology) दे सकता है, उसे गाली देने या अपशब्द कहने की क्या ज़रूरत?

109 और ये लोग अल्लाह की क़समें खाते हैं, कड़ी-कड़ी क़समें; और कहते हैं कि यदि उनके पास कोई निशानी आ जाए तो वह अवश्य उस पर ईमान ले आएंगे. इनसे कह दो कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं. और (पैग़ंबर!) तुम्हें क्या मालूम कि यदि निशानियाँ आ जाएँ (तो ये ईमान ले आएंगे)? नहीं, ये तब भी ईमान नहीं लाएंगे. 110
और हम उनके दिलों और उनकी निगाहों को सत्य से फेर देंगे, क्योंकि यह लोग उसके

ऊपर पहली बार ईमान नहीं लाए (जब उन्हें ईमान लाने का मौक़ा था) और हम इन्हें छोड़ देंगे कि अपनी उद्दंडता के साथ भटकते रहें.

पारा - 8

111 और यदि हम उन पर फ़रिश्ते भी उतार देते और मृतक भी उनसे बातें करने लगते और हम सारी चीज़ें उनके सामने इकट्ठा कर देते, तब भी ये लोग ईमान लाने वाले न थे, सिवाय यह कि अल्लाह ने ही यह चाहा हो (कि उन्हें ईमान लाना होगा). लेकिन इनमें से अधिकतर लोग अज्ञानता की बातें करने वाले हैं.

112 और इसी प्रकार हमने उपद्रवी इंसानों और उपद्रवी जिन्नों को हर पैग़ंबर का दुश्मन बनाया है (अर्थात इंसानों और जिन्नों में ऐसे उपद्रवी हैं जो ख़ुदा के पैग़ंबर के साथ दुश्मनी का मामला ही करेंगे). वे एक-दूसरे को छल-फ़रेब वाली बातें सिखाते हैं धोका देने के लिए, यदि तुम्हारा रब चाहता तो वे ऐसा न कर सकते. तो तुम उन्हें (उनके हाल पर) छोड़ दो कि वे झूठ गढ़ने का काम करते रहें.
113 और (उन्हें) ऐसा इसलिए (करने दिया जा रहा है) कि जो लोग मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन पर विश्वास नहीं रखते उनके दिल इस (पथभ्रष्टता) की ओर झुकें और वे इस पर संतुष्ट हो जाएँ और जो बुरे काम उन्हें करने हैं वे कर लें.

114 (तुम उनसे कहो,) अब क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी दूसरे फ़ैसला करने वाले की खोज करूँ, हालाँकि उसी ने तुम्हारी ओर स्पष्ट किताब उतारी है.

और जिन लोगों को हमने पहले किताब दी थी, वे जानते हैं कि यह किताब भी तुम्हारे रब की ओर से उतारी गयी है और सत्य के साथ उतारी गयी है. तो तुम कदापि संदेह करने वालों में से न होना.

115 **तुम्हारे रब की बात पूर्णतः सच्ची है और न्याय की है, कोई उसकी बात बदलने वाला नहीं. वह सब कुछ सुनता है और जानता है.**

नोटः- जो वास्तव में ख़ुदा है उसकी बात ऐसी ही होनी चाहिए कि वह पूर्णतः सच्ची हो और पूर्णतः न्याय पर आधारित हो. निस्संदेह, ऐसी बात उस सर्वोच्च जानकार की ही हो सकती है. अब जो सर्वोच्च जानकार और सर्वोच्च शक्तिमान हो — उसकी बात कौन बदल सकता है.

116 **और यदि तुम धरती पर रहने वाले बहुसंख्य लोगों के कहने पर चलो तो वे तुम्हें अल्लाह के मार्ग से भटका देंगे. वे केवल काल्पनिक चीज़ों का अनुसरण करते हैं और वह अटकल की बातों के सिवा कुछ नहीं करते.**

नोटः- हर ज़माने में ऐसे लोग बहुत कम हुए हैं जिन्होंने बातों को उनकी असल हक़ीक़त के एतबार से समझा हो. बहुसंख्य लोग शब्दों के गोरख-धंधों में गुम रहते हैं. वह काल्पनिक बातों को वास्तविक समझ लेते हैं, सिर्फ़ इसलिए कि उन बातों को सुंदर शब्दों में वर्णित किया गया है.

लेकिन यह दुनिया ऐसी दुनिया है, जहाँ तमाम मूलभूत हक़ीक़तों के बारे में ख़ुदा के स्पष्ट वक्तव्य आ चुके हैं. इसलिए यहाँ किसी के लिए इस प्रकार की पथभ्रष्टता में पड़ना माफ़ी योग्य नहीं हो सकता. ख़ुदा का मार्गदर्शन एक स्पष्ट कसौटी है जिस पर जाँच कर हर आदमी मालूम कर सकता है कि उसकी बात केवल शाब्दिक मायाजाल है या वास्तव में कोई हक़ीक़त.

117 **निस्संदेह! तुम्हारा रब उसे भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटका हुआ है और वह उन्हें भी जानता है. जो सीधे मार्ग पर हैं.**

नोटः- निस्संदेह! हर इंसान को पूर्ण रूप से जानने वाला इंसानों का सच्चा स्वामी ही हो सकता है, उसके सिवा दूसरा कोई नहीं.

118 तो फिर खाओ उस (वैध जानवर का मांस) जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, यदि तुम अल्लाह के संदेशों पर विश्वास करने वाले हो. 119 आख़िर क्या कारण है कि तुम उस चीज़ में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, हालाँकि अल्लाह ने विस्तारपूर्वक वर्णन कर दिया है उन चीज़ों का, जिन्हें उसने तुम पर हराम (अवैध) किया है, यह बात और है कि कभी तुम्हें वह (निषिद्ध) चीज़ें खाने के लिए मजबूर होना पड़े. **निश्चय ही अधिकतर लोगों का हाल यह है कि ज्ञान के बिना, केवल अपनी इच्छाओं के आधार पर (दूसरों को) पथभ्रष्ट करते हैं.** निस्संदेह तुम्हारा रब भली-भाँति जानता है मर्यादाओं का उल्लंघन करने वालों को.

नोटः- पथभ्रष्टता तथा अंधविश्वास की जड़ यही है कि लोग ज्ञान के बिना पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोगों को अंधविश्वास में धकेलते रहते हैं. जिन चीज़ों के लिए न अवतरित ज्ञान का आधार है और न अनुसंधानपूर्वक ज्ञान का आधार—यही चीज़ें अंधविश्वास की चीज़ें हैं. अंधविश्वास को इस्लाम में कोई स्थान नहीं. इस्लाम पूरी तरह अवतरित ज्ञान पर आधारित है. और इस्लाम की कोई भी बात वैज्ञानिक ज्ञान से नहीं टकराती, क्योंकि इस्लाम समस्त सृष्टी के वास्तविक मालिक के ज्ञान पर खड़ा है.

120 **तुम गुनाह करने से बचो चाहे वह खुला हो या छिपा,** निश्चय ही वे लोग जो गुनाह कमा रहे हैं, अपने किये का जल्द प्रतिफल पाएंगे.

नोटः- यह उसकी वाणी है जिससे गुनाह को छिपाया नहीं जा सकता और गुनाह करने वाले उसकी पकड़ से बच नहीं सकते, चाहे वे गुनाह करके इंसानों से बच जाएँ. निस्संदेह,

इस वाणी का वक्ता ही इंसानों का सच्चा स्वामी है, जिस पर ईमान लाकर ही इंसान गुनाहों से बच सकता है.

121 और तुम उस जानवर के मांस में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो. ऐसा करना निश्चित रूप से अवज्ञा करना है. और निश्चय ही शैतान अपने साथियों के दिलों में यह बात डालते हैं कि वे तुमसे झगड़ें. और यदि तुम उनका कहना मानोगे तो तुम भी निश्चित रूप से बहुदेववादी हो जाओगे.

122 वह आदमी जो पहले मुर्दा था, फिर हमने उसे जीवन दिया और हमने उसको वह रोशनी दी जिसके साथ वह लोगों में चलता है, क्या वह उस आदमी की तरह हो सकता है जो (पथभ्रष्टता के) अंधकार में पड़ा हुआ है और वह उससे निकलने वाला नहीं. क्योंकि सत्य का इन्कार करने वालों की दृष्टि में उनके कर्म (अर्थात बुरे कर्म) भले बना दिए गए हैं.

नोटः- जिस इंसान के पास उसके सृजनकर्ता की ओर से सन्मार्ग दिखाने वाली रोशनी आयी तो उसने उसे अपना लिया, यही इंसान ज़िंदा इंसान है. इसके विपरीत जिसने सन्मार्ग दिखाने वाली रोशनी की व्यवस्था होने के पश्चात भी स्वयं को उससे वंचित रखा तो ऐसा इंसान पथभ्रष्टता के अँधेरों में भटकता रहेगा — यह इंसान बाहरी तौर पर अगरचे ज़िंदा दिखता हो, लेकिन यह अंदर से मृत इंसान है.

जो इंसान असत्य की दलदल में बुरी तरह फंसा हुआ हो उसको अपने से बाहर मौजूद 'सत्य' सत्य नज़र नहीं आता. ऐसे इंसान पर चली आ रही परंपराओं का इतना अधिक प्रभाव होता है कि वह उनसे हटकर, चीज़ों की और किसी कसौटी पर जाँच नहीं कर पाता. यही वह इंसान है जो अंधविश्वास तथा अंध-आस्थाओं से इस तरह चिमटा रहता है जैसे वह बहुत सच्चा और वांछित काम कर रहा हो.

निस्संदेह! यह मार्गदर्शन सच्चे ख़ुदा का मार्गदर्शन है. इस प्रकार का मार्गदर्शन दुनिया की किसी और किताब में नहीं है.

123 और इस तरह हमने हर बस्ती में अपराधी लोगों के सरदार रख दिए हैं कि वे वहाँ छल-कपट वाली कार्रवाइयाँ करें. **हालाँकि जो छल-कपट वाली कार्रवाइयाँ वे करते हैं (वास्तव में) अपने ही विरुद्ध करते हैं, मगर वे उसे नहीं समझते.**

नोटः- जो लोग असत्य की दुकानदारी कर रहे हैं, जब उनके सामने सत्य आता है, तो वे उसके दुश्मन बन जाते हैं. वे सत्य के विरुद्ध निराधार शोशे निकालकर लोगों को सत्य से प्रभावित होने से रोकते हैं. वे सत्य के प्रमाणों को ग़लत रुख देकर लोगों को संदेह में डालते हैं. वे सत्य की ओर बुलाने वाले व्यक्ती पर निराधार लांछन लगाते हैं. लेकिन इस प्रकार के प्रयास केवल उनके अपराध में वृद्धि करते हैं, वे अपने प्रयासों से सत्य के मिशन को कदापि मिटा नहीं सकते.

124 और जब उनके पास कोई (संदेशयुक्त) निशानी आती है तो वे कहते हैं, हम कदापि नहीं मानेंगे, जब तक कि वैसी ही चीज़ हमें न दी जाए जो अल्लाह के पैग़ंबरों को दी गयी है. अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वह अपना संदेशवाहक किसे बनाए. अपराधियों को शीघ्र ही अल्लाह के यहाँ बड़े अपमान और कठोर यातना का सामना करना पड़ेगा, यह उस छल-कपट के कारण जो वे करते रहे.

125 अल्लाह जिसे अपना मार्गदर्शन प्रदान करना चाहता है, उसका सीना (अर्थात उसके दिल का दरवाज़ा) इस्लाम के लिए खोल देता है. और जिसे पथभ्रष्टता में पड़ा रहने देना चाहता है तो उसके सीने को इस प्रकार संकुचित कर देता है कि (सत्य का स्वीकार करना उसके लिए ऐसा हो जाता है) जैसे उसे आसमान में चढ़ना पड़ रहा हो. इस प्रकार अल्लाह उन लोगों (के दिलों) पर गंदगी डाल देता है जो ईमान नहीं लाते.

नोटः- वर्तमान जीवन सत्य प्राप्ति की परीक्षा है. यही कारण है कि यहाँ किसी पर सत्य थोपा नहीं जाता. यहाँ ख़ुदा के क़ानून के अनुसार सत्य की प्राप्ति उसी इंसान के लिए संभव है जो सत्य का गंभीर खोजी है. जो इंसान सत्य का खोजी नहीं, उसे सत्य की प्राप्ति होने वाली नहीं. यहाँ 'अल्लाह के चाहने' से अभिप्रेत अल्लाह का क़ानून है.

126 **और यह है तुम्हारे रब का रास्ता, बिल्कुल सीधा रास्ता.** हमने अपने संदेश ध्यान देने वाले लोगों के लिए खोल-खोल कर बयान कर दिए हैं.

नोटः- इंसानों के स्वामी की ओर से इंसानों के लिए सन्मार्ग-दर्शन की व्यवस्था की जा चुकी है, लेकिन यह सन्मार्ग-प्राप्ति उन लोगों को होगी जो उसे प्राप्त करने के संबंध से गंभीर होंगे.

127 उनके लिए उनके रब के पास सलामती का घर है और वह उनका संरक्षक है उन कामों के कारण जो वे करते रहे हैं.

128 जिस दिन अल्लाह उन सबको इकट्ठा करेगा, उस दिन वह (जिन्नों से) कहेगा, ऐ जिन्नों के गिरोह! तुमने बहुत से लोगों को ले लिया इंसानों में से (अर्थात ऐ बुरे जिन्नों! तुमने बहुत से इंसानों को पथभ्रष्ट कर छोड़ा.). इंसानों में से जो उनके साथी थे वे कहेंगे, ऐ हमारे रब! हमने एक-दूसरे को ख़ूब इस्तेमाल किया, फिर हम पहुँच गए अपने उस नियत समय को, जो तूने हमारे लिए निश्चित कर दिया था. अल्लाह कहेगा, अब तुम्हारा ठिकाना आग है. तुम हमेशा उसमें रहोगे, मगर जो अल्लाह चाहे (अर्थात इससे केवल वही बचेंगे जिन्हें अल्लाह बचाना चाहेगा). निस्संदेह! तुम्हारा रब विवेकवान तथा ज्ञानवान
है. 129 इस प्रकार हम (परलोक के शाश्वत जीवन में) अत्याचारियों को एक-दूसरे का
साथी बना देंगे, यह उन कर्मों के कारण जो वे करते थे.

130 (तब उनसे यह पूछा जाएगा,) ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह! क्या तुम्हीं में से तुम्हारे पास पैग़ंबर नहीं आए जो तुम्हें मेरे संदेश सुनाते और इस दिन के आने से डराते थे? वे कहेंगे, (हाँ!) हम स्वयं अपने विरुद्ध गवाह हैं. **दुनिया की ज़िंदगी ने उन लोगों को धोखे में डाल रखा था.** और वे स्वयं अपने विरुद्ध यह गवाही देंगे कि निस्संदेह, वे सत्य का इन्कार करने वाले थे.

नोटः- वर्तमान दुनिया में लोग ज़िंदगी की हक़ीक़त से बेपरवा ज़िंदगी व्यतीत कर रहे हैं. इसी बेपरवाही के अंतर्गत वे पैग़ंबर के द्वारा प्रस्तुत सत्य के इन्कारी बने हुए हैं. लेकिन अंततः सत्य का इन्कार स्वयं इंसान को ले डूबने वाला है. वह दिन आने वाला है जब हर सत्य का इन्कारी स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देगा.

131 यह अच्छी तरह स्पष्ट रहे कि तुम्हारा रब बस्तियों को (अर्थात बस्तियों में निवास करने वाले लोगों को) उनके अत्याचारी कृत्यों पर इस स्थिति में नष्ट नहीं करता कि वे लोग (उसके पैग़ाम) से अनभिज्ञ हों.

132 (मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में) प्रत्येक व्यक्ति के लिए दर्जे हैं उसके कर्म के अनुसार

और जो कुछ वे करते हैं, उससे तुम्हारा रब अनभिज्ञ नहीं है. 133 और तुम्हारा रब निस्पृह है, दयावान है. यदि वह चाहे तो तुम सबको ले जाए (अर्थात पृथ्वी से बेदख़ल कर दे) और तुम्हारी जगह जिसको चाहे ले आए, जिस प्रकार उसने तुम्हें कुछ और लोगों से उठाया है.

नोटः-जो पृथ्वी का और इंसानों का वास्तविक मालिक होगा वही ऐसा कर सकता है. वही इस प्रकार का वक्तव्य दे सकता है.

इंसान इस पृथ्वी पर इस कारण आबाद है कि पृथ्वी के मालिक ने उसे यहाँ बसाया है और उसके लिए यहाँ जीवनदायी व्यवस्था उपलब्ध की है. जिस ख़ुदा ने इंसान को यहाँ बसाया है वह उसे यहाँ से बेदख़ल करने का भी सामर्थ्य रखता है. हक़ीक़त यह है कि इंसान को यहाँ रहने का वैध आधार उसी वक़्त प्राप्त है, जब इंसान पृथ्वी के मालिक की इच्छा के अनुरूप यहाँ रहेगा. मालिक ने अपने संदेशवाहकों के द्वारा इंसान को अपनी इच्छा से अवगत कराने की पूरी व्यवस्था की है.

134 तुमसे जिस चीज़ का वादा किया जा रहा है (अर्थात क़यामत) वह अवश्य आकर रहेगी और **तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकते.**

नोटः-पृथ्वी पर सिर्फ़ क़ुरआन है जिसमें इंसान के सच्चे स्वामी का परिचय as it is मौजूद है.

135 (पैग़ंबर!) आप लोगों से कह दीजिए, तुम अपनी जगह कर्म करते रहो, मैं भी कर्म कर रहा हूँ. शीघ्र ही तुम्हें मालूम हो जाएगा, अंत में परिणाम किसके हक़ में अच्छा होता है. निस्संदेह, अत्याचारी लोग कभी सफलता नहीं पा सकते.

136 उन्होंने अल्लाह के लिए स्वयं उसी की सृजित की हुई खेती और चौपायों में से एक हिस्सा निश्चित किया है. वे अपने ख़्याल से कहते हैं कि यह हिस्सा अल्लाह के लिए है और यह हमारे ठहराए हुए साझीदारों का है. फिर जो हिस्सा उनके ठहराए हुए साझीदारों के लिए है वह तो अल्लाह को नहीं पहुँचता, मगर जो हिस्सा अल्लाह के लिए है, वह उनके साझीदारों को पहुँच जाता है. कैसा बुरा निर्णय है जो वे करते हैं. 137 इसी प्रकार बहुत से बहुदेववादियों के लिए उनके साझीदारों ने उनकी अपनी संतान की हत्या करने को उनकी दृष्टि में शोभायमान बना दिया है (अर्थात बुरा कर्म वे अच्छा समझकर करने लगे), ताकि उन्हें विनष्ट कर दें और उनके लिए

उनके मज़हब को संदिग्ध बना दें.

> **नोटः**-जो लोग अपने तौर पर बेबुनियाद चीज़ें गढ़ते हैं वे हमेशा संदिग्धता की अवस्था में रहेंगे, जबकि सच्चाई का आधार इंसान के वास्तविक सृजनकर्ता का मार्गदर्शन है. और सच्चाई को पाने वाला इंसान संदिग्धता पर नहीं, अटल विश्वास (conviction) पर खड़ा होता है.

यदि अल्लाह चाहता तो वह ऐसा न करते तो उन्हें छोड़ दो कि वे अपने झूठ गढ़ने में लगे रहें.

> **नोटः**-निस्संदेह, यह वक्तव्य सर्वोच्च शक्तिमान के सिवा अन्य किसी का नहीं हो सकता!

138 और वे कहते हैं, यह जानवर और यह खेती निषिद्ध हैं, उन्हें कोई नहीं खा सकता, सिवाय उसके जिसे हम चाहें — ऐसा वे अपने ख़्याल से कहते हैं (अर्थात यह बातें उनकी अपनी गढ़ी हुई हैं). कुछ जानवर हैं जिन पर सवारी और बोझ ढोना उन्होंने हराम (अर्थात निषिद्ध) कर दिया है. और कुछ जानवर हैं जिन पर ये अल्लाह का नाम नहीं लेते. यह सब उन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है, अल्लाह शीघ्र ही उन्हें इस झूठ गढ़ने का बदला देगा. 139 और वे कहते हैं कि जो कुछ इन जानवरों के पेट में है, वह हमारे मर्दों के लिए खास है और हमारी औरतों के लिए अवैध (अर्थात हराम) है. लेकिन यदि वह मृत हो तो उसमें सब हिस्सेदार हैं (अर्थात उसे मर्द तथा औरतें दोनों खा सकते हैं). अल्लाह (उनकी इन) गढ़ी हुई बातों के लिए उन्हें शीघ्र ही दंडित करेगा.

निस्संदेह! वह बुद्धिमान एवं सर्वज्ञानी है. 140 निश्चय ही घाटे में पड़ गए वे लोग जिन्होंने अपनी संतान की हत्या की, अज्ञान तथा मूर्खता के कारण. और अल्लाह की प्रदान की हुई जीविका को अल्लाह पर झूठ गढ़कर (स्वयं पर) हराम ठहरा लिया. ऐसा करके वे निश्चय ही भटक गए, परिणामतः वे सीधा मार्ग पाने वाले न हुए.

नोटः-वर्तमान दुनिया परीक्षा के लिए है, यही कारण है कि यहाँ वैध और अवैध दोनों चीज़ें पाई जाती हैं. लेकिन क्या वैध और क्या अवैध यह निश्चित करने का अधिकार इंसान को हरगिज़ नहीं है. यह अधिकार केवल उसका है जिसने इस दुनिया को और इंसान को बनाया है. वही इस बात को पूरी तरह जानता है कि इंसान के लिए क्या अच्छा है और क्या अच्छा नहीं है. केवल उसका बताया हुआ मार्ग की सफलता का मार्ग है. उसके बताए हुए मार्ग के सिवा सारे मार्ग बरबादी के मार्ग हैं.

141 वह अल्लाह ही है जिसने बाग़ सृजित किए, जिसमें कुछ ऐसे हैं जो जालियों पर चढ़ाए जाते हैं और कुछ ऐसे हैं जो नहीं चढ़ाए जाते. और खजूर के वृक्ष और खेती भी जिनके फल विभिन्न प्रकार के होते हैं. और ज़ैतून तथा अनार भी, जो एक-दूसरे मिलते-जुलते भी हैं और एक-दूसरे से भिन्न भी. जब वह फल दे तो उसका फल खाओ.

और अल्लाह का हक़ अदा करो, जब उनकी फ़सल काटो. और (अल्लाह की नेमतों का) अपव्यय न करो. निस्संदेह अल्लाह अपव्यय करने वालों को पसंद नहीं करता.

नोटः-कोई फ़सल उस वक़्त किसान के हाथ आती है, जब इस कायनात का भयानक कारख़ाना पूरे संतुलन के साथ कार्य करे. और सत्य यह है कि कायनात के वास्तविक स्वामी के सिवा दूसरा कोई भी इस महाभयानक कारख़ाने को नहीं चला सकता. फ़सल-

प्राप्ति के लिए अगरचे इंसान आंशिक रूप से इस विशाल process का हिस्सा बनता है, लेकिन सिर्फ़ इंसान की कोशिश से कोई फ़सल इंसान को प्राप्त नहीं हो सकती. यह तो ख़ुदा है जो इंसान के लिए बेशुमार नेमतें उपलब्ध करा रहा है. अल्लाह का हक़ निकालना इसी सच्चाई को अपने दिमाग़ में ताज़ा करना है.

142 और उसने मवेशियों में बोझ उठाने वाले सृजित किये और (कुछ छोटे) जानवर भी सृजित किए ज़मीन से लगे हुए. खाओ उन चीज़ों में से जो अल्लाह ने तुम्हें दी हैं. **और शैतान के पद्-चिन्हों पर मत चलो, निश्चय ही शैतान तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है.**

नोटः- नेमतों के वास्तविक दाता को एक्नॉलिज न करना और नेमतों का अपव्यय करना यह सब शैतानी काम हैं. इसी चीज़ को शैतान के पदचिह्नों पर चलने से परिभाषित किया गया है. शैतान इंसान को उसके वास्तविक दाता से दूर करने के एकमात्र कार्य में लगा हुआ है. वह इस कार्य के लिए जो भी संभव हो वह हथकंडे अपनाता है. इसीलिए क़ुरआन यह बार-बार बताता है कि शैतान इंसान के लिए दुश्मन के सिवा कुछ नहीं है

143 अल्लाह ने आठ जोड़े (अर्थात नर व मादा) सृजित किए हैं. दो भेड़ की क़िस्म से और दो बकरी की क़िस्म से. (पैग़ंबर!) इनसे पूछो कि अल्लाह ने दोनों नर हराम (निषिद्ध) किए हैं या दोनों मादा या वे बच्चे जो भेड़ों और बकरियों के पेट में हों? किसी (प्रमाणित) ज्ञान के आधार पर मुझे बताओ, यदि तुम सच्चे हो. 144 इसी प्रकार दो ऊँट की क़िस्म से हैं और दो गाय की क़िस्म से. पूछो कि दोनों नर अल्लाह ने हराम किये हैं या दोनों मादा. या वे बच्चे जो ऊँटनी और गाय के पेट में हों. (हराम तथा हलाल के संबंध से निराधार बातें कहने वालो!) क्या तुम उस समय उपस्थित थे जब अल्लाह ने तुमको इसका आदेश दिया था. फिर उससे बड़ा अत्याचारी और कौन होगा जो अल्लाह से जोड़कर झूठी बात कहे, ताकि ज्ञान के बिना लोगों को गुमराह करे. निस्संदेह! अल्लाह अत्याचारियों को

मार्ग नहीं दिखाता. 145 पैग़ंबर! इनसे कहो, जो ईश-संदेश मेरे पास आया है, उसमें मैं तो कोई ऐसी चीज़ नहीं पाता जो किसी खाने वाले पर हराम हो, सिवाय इसके कि वह मुर्दार हो या बहाया हुआ ख़ून हो या सुअर का माँस हो, यह निश्चय ही नापाक हैं. या अवैध रूप से ज़बह किया हुआ (अर्थात बलि दिया गया) जानवर जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो. लेकिन जो व्यक्ति इस प्रकार मजबूर (विवश) हो जाए (कि जान बचाने के लिए निषिद्ध चीज़ को खाए), लेकिन वह न तो अवज्ञाकारी हो और न हद से आगे बढ़ने वाला हो, तो निश्चय ही तुम्हारा रब अत्यंत क्षमाशील एवं दयावान है.

146 और यहूदियों पर हमने सभी नाख़ून वाले जानवर निषिद्ध किए थे और गाय तथा बकरी की चर्बी भी उनके लिए निषिद्ध की गयी थी, सिवाय उसके जो उनकी पीठ या अँतड़ियों से लगी हुई हो या हड्डी से मिली हुई हो. यह हमने उन्हें उनकी उद्दंडता की सज़ा दी थी. और निश्चय ही हम सच्चे हैं. 147 फिर यदि वे तुम्हें झुठलाएँ तो तुम उनसे कह दो, तुम्हारा रब तो असीम दयालुता वाला है, लेकिन अपराधी लोगों पर से उसकी यातना को टाला नहीं जा सकता.

148 वे लोग जिन्होंने अल्लाह के साझीदार ठहराए (अर्थात बहुदेववादी) कहेंगे कि **यदि अल्लाह चाहता तो न हम (उसके) साझीदार ठहराते और न हमारे बाप-दादा.** और न हम किसी चीज़ को हराम ठहराते. इसी प्रकार झुठलाया था उन लोगों ने भी जो इनसे पहले हुए, (वे झुठलाते रहे) यहाँ तक कि उन्होंने हमारी यातना का

मज़ा चख लिया. (पैग़ंबर!) उनसे कहो, क्या तुम्हारे पास कोई ज्ञान है कि उसे तुम हमारे सामने पेश कर सको. **तुम लोग केवल गुमान पर चल रहे हो और मात्र अटकल से काम ले रहे हो.**

नोटः-सत्य को झुठलाने के लिए इस प्रकार की बात करना, सत्य के संबंध से गंभीर न होने का परिचय देना है. लेकिन सत्य से फ़रार के लिए इस प्रकार की बातें करके इंसान स्वयं को उस परिणाम से नहीं बचा सकता जो सत्य के इन्कार के फल-स्वरूप इंसान के सामने आने वाला है.

पैग़ंबर जिस सत्य को प्रस्तुत कर रहा है वह ख़ुदा के पास से आए हुए ठोस ज्ञान पर आधारित है. और जो लोग सत्य का इन्कार करके बहुदेववाद को अपनाए हुए हैं, वह सिर्फ़ स्वयं-रचित कल्पनाओं पर आधारित है.

149 (पैग़ंबर!) आप कह दीजिए! निर्णायक तर्क तो अल्लाह का है.

और यदि अल्लाह चाहता तो तुम सबको सीधे मार्ग पर चला देता.

नोटः-ख़ुदा ने इस परीक्षारूपी दुनिया में सीधे मार्ग को दिखाने की तो अवश्य व्यवस्था कर रखी है, लेकिन वह इंसानों को सीधे मार्ग पर चलने के लिए विवश नहीं करता.

इस परीक्षारूपी दुनिया में यह स्वयं इंसान के अपने ऊपर है कि वह अपने लिए किस मार्ग का चयन करता है.

150 इनसे कहो कि लाओ अपने वे गवाह जो इस बात की गवाही दें कि अल्लाह ही ने इन चीज़ों को हराम (निषिद्ध) किया है. यदि वे झूठी गवाही दे भी दें तो तुम उनके साथ गवाही न देना. और तुम उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न करो जिन्होंने हमारे संदेश झुठलाए और जो मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन पर विश्वास नहीं रखते और दूसरों को अपने रब के बराबर ठहराते हैं.

151 (पैग़ंबर!!) इनसे कहो कि आओ मैं तुम्हें सुनाऊँ वे चीज़ें जो तुम्हारे रब ने तुम पर हराम की हैं (अर्थात मैं तुम्हें बता दूँ कि तुम्हारा रब तुम्हें क्या करने को और क्या नहीं करने को कहता है), यह कि तुम उसका कोई साझीदार न ठहराओ और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो और अपनी संतान की गरीबी के डर से हत्या न करो.

हम ही तुम्हें जीविका प्रदान करते हैं और उन्हें भी. और अश्लील कृत्य के निकट भी न जाना, चाहे वह खुला हो या छिपा. और जिस जान को मारना अल्लाह ने हराम (अर्थात निषिद्ध) ठहराया है उसे न मारो, मगर न्याय करने के लिए. ये वे बातें हैं — जिनकी ताकीद अल्लाह तुम्हें करता है, शायद कि तुम अपनी बुद्धि का उपयोग करो.

नोटः-सारे इंसानों को जीविका वही प्रदान कर सकता है जो उनका सच्चा मालिक है, उसके सिवा दूसरा कोई भी सारे इंसानों को जीविका प्रदान नहीं कर सकता. निस्संदेह, यह वक्तव्य इंसान के सच्चे स्वामी के सिवा अन्य किसी का वक्तव्य नहीं हो सकता.

152 और अनाथ के माल के क़रीब न जाओ, मगर ऐसे तरीक़े से जो उत्तम हो, यहाँ तक कि वह युवावस्था को पहुँच जाए. और नाप-तौल करो पूरी तरह न्याय के साथ, हम किसी व्यक्ति पर दायित्व का उतना ही बोझ डालते हैं जितनी उसमें क्षमता हो. और जब बोलो तो न्याय की बात बोलो, चाहे मामला अपने संबंधि ही का क्यों न हो. और अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा को पूरा करो. यह वह बातें है जिनकी ताकीद अल्लाह तुम्हें करता है, आशा है, तुम ध्यान रखोगे.

153 **और यह (ताकीद भी की है) कि यही मेरा सीधा रास्ता है, तो तुम उसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वे तुम्हें अल्लाह के रास्ते से विचलित कर देंगे**, यह वह बात है जिसकी उसने तुम्हें ताकीद की है, ताकि तुम अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बन जाओ.

नोटः- अल्लाह के बताए हुए एक रास्ते के सिवा सारे रास्ते इंसानों को अल्लाह से दूर ले जाने वाले रास्ते हैं, न कि अल्लाह के क़रीब लाने वाले रास्ते.

154 फिर इसी तरह हमने मूसा को किताब दी थी, भले कर्म करने वाले इंसान पर अपनी नेमत की पूर्ति करने के लिए और उसमें हर बात का सविस्तर वर्णन था. वह किताब मार्गदर्शन और कृपा थी, **ताकि लोग अपने रब से मिलने का विश्वास करें.**

नोटः- ख़ुदा की तरफ़ से आयी हुई सारी किताबों में इंसान को यही बता दिया गया था, कि एक दिन आने वाला है जब इंसान को उसके रब के सामने खड़ा किया जाएगा. सारे पैग़ंबर, सारी किताबें ख़ुदा की तरफ़ से यही उत्तरदायित्व का दीन (मज़हब) बताने के लिए आयी थीं.

155 और उसी तरह हमने यह किताब भी उतारी है, जो बरकत वाली है, तो तुम इसका अनुसरण करो और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो, ताकि तुम पर दया की जाए.

156 यह इसलिए (प्रकट की गयी है) कि तुम यह न कह सको कि किताब तो हमसे पहले के दो समूहों को दी गयी थी और हम तो उनके पढ़ने-पढ़ाने से बिल्कुल ही बेख़बर
थे. 157 या यह कहने लगो कि यदि हम पर किताब उतारी गयी होती तो हम उनसे कहीं अधिक सीधे मार्ग पर होते. तो अब आ गया है तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण और वह (उसकी ओर से) मार्गदर्शन तथा दयालुता है. अब उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह के संदेशों को झुठलाए और उनसे मुँह मोड़े. जो लोग हमारे संदेशों से मुँह मोड़ते हैं, उन्हें हम इस मुँह मोड़ने के परिणाम-स्वरूप बहुत बुरी सज़ा देंगे

158 (पैग़ंबर!) यह लोग क्या इसकी प्रतीक्षा में हैं कि उनके सामने फ़रिश्ते आ जाएँ या स्वयं तुम्हारा रब आ जाए या तुम्हारे रब की निशानियों में से कोई निशानी आ जाए? जिस दिन तुम्हारे रब की (विशेष) निशानियों में से कोई निशानी प्रकट हो जाएगी, **तब किसी ऐसे व्यक्ति को उसका ईमान कुछ लाभ न देगा जो पहले से ईमान न लाया हो,** या जिसने अपने ईमान के साथ कुछ भला कर्म न किया हो. उनसे कह दो कि तुम भी प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं.

नोटः-इंसान स्वयं अपना मालिक नहीं है, यही कारण है कि अपने वास्तविक मालिक को हमेशा के लिए नकारने का उसके पास कोई विकल्प नहीं है. वर्तमान जीवन सीमित परीक्षा हेतु है. यहाँ इंसान स्वतंत्र है कि चाहे तो अपने मालिक को माने या चाहे तो मानने से इन्कार कर दे. लेकिन एक दिन आने वाला है जब हर इंसान अपने वास्तविक मालिक को मानने के लिए मजबूर होगा, लेकिन उस समय किसी का मानना उसके लिए लाभप्रद नहीं होगा.

159 जिन लोगों ने अपने मज़हब के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और गिरोहों में बँट गए, तुम्हारा उनसे कोई संबंध नहीं. उनका मामला तो बस अल्लाह के हवाले है. फिर वह उन्हें बता देगा जो कुछ वे किया करते थे. 160 जो अल्लाह के पास नेकी लेकर आएगा तो उसके लिए उसका दस गुना है. और जो व्यक्ति बुराई लेकर आएगा तो उसे उसका उतना ही बदला मिलेगा. उनके साथ कोई अन्याय न होगा.

161 **(पैग़ंबर!) कहो, मेरे रब ने मुझे सीधा मार्ग बता दिया है. सत्य मज़हब का मार्ग, (सत्यनिष्ठ)**

इब्राहीम का मार्ग, (उस इब्राहीम का) जो सबसे कटकर एक अल्लाह का हो गया था. और वह बहुदेववादियों में से न था. 162 कह दो, मेरी नमाज़, मेरी क़ुरबानी मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का रब है.

163 उसका कोई साझी नहीं, इसी का मुझे हुक्म दिया गया है. और मैं सबसे पहले उसे समर्पित होने वालों में से हूँ.

नोटः- क़ुरआन के रूप में ख़ुदा ने अपना शुद्ध मज़हब प्रकट कर दिया है, जो उसने दूसरे पैग़ंबरों को भी दिया था. अब जो इंसान सच्चे ख़ुदा के मार्गदर्शन को पाना चाहता है, उसके लिए क़ुरआन के रूप शुद्ध एवं सुरक्षित मार्गदर्शन उपलब्ध करा दिया गया है.

जब इंसान शुद्ध सच्चाई को पा लेता है तो उसका हाल वही होता है जिसका वर्णन संदेश-वचन क्र. 162 में मौजूद है.

164 कहो, क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और 'रब' तलाश करूँ?

जबकि वास्तविकता यह है कि वही हर चीज़ का रब है. हर आदमी जो कुछ कर्म-रूपी कमाई करता है, उसका वह स्वयं उत्तरदायी है. कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा. फिर तुम्हें अपने रब

की ओर ही पलट कर जाना है. तब वह तुम्हें बता देगा जिसमें तुम मतभेद करते थे.

नोटः- समस्त मनुष्य जाति में जो मतभेद रहे हैं उनकी हक़ीक़त मनुष्य जाति का वास्तविक सृजनकर्ता ही बता सकता है.

165 वही है जिसने तुम्हें धरती पर एक-दूसरे का उत्तराधिकारी बनाया और तुममें एक के दूसरे पर दर्जे बढ़ाए, ताकि जो कुछ उसने तुम्हें दिया है उसमें तुम्हारी परीक्षा ले. निस्संदेह तुम्हारा रब सज़ा देने में भी बहुत तेज़ है और बहुत क्षमा करने वाला और दया करने वाला भी है.

सूरह–7. अल–आराफ़

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अलिफ़० लाम० मीम० सॉद०.

2 यह अल्लाह की किताब है, जो तुम्हारी ओर उतारी गयी है. तो (अब) तुम्हारे मन में इसके संबंध से किसी प्रकार का संदेह न हो. (यह किताब इसलिए प्रकट की गयी है,) ताकि तुम इसके द्वारा लोगों को सचेत करो और ताकि यह ईमान रखने वालों के लिए उपदेश ग्रहण करने का साधन हो.

3 (ऐ लोगो!) जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी ओर प्रकट किया गया है, उस पर चलो. और अपने (वास्तविक) रब को छोड़कर दूसरों (को अपना संरक्षक मानकर उन) का अनुसरण न करो. तुम बहुत कम उपदेश ग्रहण करते हो.
4 कितनी ही (विद्रोही) बस्तियाँ हम नष्ट कर चुके हैं. उन पर हमारी ओर से अज़ाब रात के समय तूट पड़ा या दिन में दोपहर के ऐसे समय जब वे आराम कर रहे थे.
5 और जब उन पर हमारी ओर से अज़ाब आ गया, तो वे इसके सिवा कुछ न कह सके कि वास्तव में हम अत्याचारी थे.
6 हम उन लोगों से अवश्य पूछेंगे जिनके पास पैग़ंबर भेजे गए थे और पैग़ंबरों से भी हम अवश्य पूछेंगे.

7 फिर हम पूरे ज्ञान के साथ उनके सामने सब बयान करे देंगे, क्योंकि हम कहीं गायब नहीं थे.
8 और उस दिन केवल सत्य का पलडा भारी होगा. और जिनके सत्कर्मों के पलडे भारी होंगे वही सफलता प्राप्त करेंगे.
9 और जिनके पलडे हलके होंगे तो वही लोग होंगे जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला. (उनका यह हाल इसलिए हुआ होगा,) क्योंकि उन्होंने हमारे संदेशों के साथ अन्याय किया (अर्थात उन्हें जानते-बुझते झुठलाया).

10 (लोगो!) हमने तुम्हें धरती पर जगह दी और वहाँ तुम्हारे लिए जीवनदायी व्यवस्था (life support system) को स्थापित किया, लेकिन तुम (हमारे प्रति) बहुत कम आभार प्रकट करते हो.

11 और हमने तुम्हारा सृजन किया, फिर हमने तुम्हारा रूप बनाया, फिर हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम के आगे सजदा करो. तो उन्होंने सजदा किया, सिवाय इबलीस के, वह सजदा करने वालों में शामिल न हुआ. 12 अल्लाह ने कहा कि तुझे किस चीज़ ने सजदा करने से रोका, जबकि मैंने तुझ को (सजदा करने का) आदेश दिया था. (इस पर) इबलीस ने कहा, मैं उससे बेहतर हूँ. तूने मुझे आग से बनाया है और आदम को मिट्टी से. 13 अल्लाह ने कहा, तू यहाँ से नीचे उतर तुझे कोई हक़ नहीं कि तू यहाँ घमंड करे. तो अब (इस जन्नती परिसर से) निकल जा. निश्चित रूप से तू अपमानित लोगों में से है. 14 इबलीस ने कहा कि उस दिन तक के लिए मुझे मोहलत दे, जब सब लोग उठाए जाएंगे. 15 अल्लाह ने कहा, निस्संदेह! तुझे मोहलत दी गयी. 16 फिर इबलीस ने कहा जैसे तूने मुझे गुमराही (पथभ्रष्टता) में डाला है. मैं भी इंसानों (को गुमराह करने) के लिए (उनकी घात में) तेरे सीधे मार्ग पर बैठूँगा. 17 फिर उन पर आऊँगा उनके आगे से और उनके पीछे से, उनके दाएँ से और उनके बाएँ से (अर्थात हर ओर से उन पर वैचारिक आक्रमण करूँगा). और तू उनमें से अधिकतर को कृतज्ञ न पाएगा.

18 अल्लाह ने कहा, निकल जा यहाँ से, तू अपमानित और ठुकराया हुआ है जो कोई उनमें से तेरे मार्ग पर चलेगा तो मैं अवश्य तुम सबसे जहन्नम को भर दूँगा.

19 और ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों इस जन्नत में रहो और जहाँ से चाहो खाओ. लेकिन इस वृक्ष के पास न जाना, अन्यथा तुम अत्याचारियों में से हो जाओगे. 20 फिर शैतान ने दोनों को बहकाया, ताकि उनकी शर्मगाहों को जो उन दोनों से छिपाई गयी थीं, उनके सामने खोल दें. शैतान ने उनसे कहा, तुम्हारे रब ने तुम्हें इस वृक्ष

से केवल इसलिए रोका है कि तुम दोनों कहीं फ़रिश्ते न बन जाओ या तुम अमर न हो जाओ. 21 और उसने क़सम खाकर उनसे कहा कि मैं तुम्हारा हितैषी हूँ.

22 इस तरह उसने उन दोनों को धोके में जकड़ लिया. फिर जब उन्होंने उस पेड़ का फल चखा तो उनकी शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खुल गयीं और वे अपने को जन्नत के पत्तों से ढाँकने लगे. तब उनके रब ने उन्हें पुकारा, (कहा,) क्या मैंने तुम्हें इस पेड़ से नहीं रोका था और तुमसे क्या मैंने यह नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है? 23 (इस पर) उन्होंने कहा, ऐ हमारे रब! हमने अपने आप पर अत्याचार किया और यदि तू हमें क्षमा न करे और हम पर दया न करे, तो निश्चय ही हम घाटा उठाने वालों में से हो जाएंगे. 24 (इस पर) अल्लाह ने कहा, यहाँ से नीचे उतरो (धरती पर) 'तुम एक-दूसरे के दुश्मन होंगे'. और तुम्हारे लिए एक निश्चित अवधी तक धरती पर ठिकाना है और जीवन-निर्वाह की सामग्री है.

25 फिर अल्लाह ने कहा, अब इसी ज़मीन पर तुम जिओगे और इसी में तुम मरोगे और इसी से तुम निकाले जाओगे.

26 ऐ आदम की संतान! (अर्थात ऐ मनुष्य जाति!) **हमने तुम्हारे लिए वस्त्र उतारा है** (अर्थात धरती पर तुम्हारे लिए वस्त्र की व्यवस्था की है), जो तुम्हारे छिपाने वाले अंगों को ढाँकें और तुम्हारे लिए रक्षा तथा शोभा का साधन भी है. लेकिन ख़ुदा के प्रति उत्तरदायी होने का भाव सबसे उत्तम (एवं वांछित) वस्त्र है. यह अल्लाह की निशानियों में से है, ताकि लोग ध्यान दें.

27 ऐ आदम की संतान (ऐ इंसानों)! कहीं शैतान तुम्हें बहकावे में न डाल दे, जिस प्रकार उसने तुम्हारे माँ-बाप को जन्नत से निकलवा दिया था. उसने उनके वस्त्र उतरवाए, ताकि उन्हें एक-दूसरे के सामने निर्वस्त्र कर दे. वह और उसके साथी तुम्हें ऐसे स्थान से देखते हैं जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते. हमने शैतानों को उन लोगों का मित्र बना दिया जो ईमान नहीं रखते. 28 ये (सत्य का इन्कार करने वाले) लोग कोई अनैतिक कृत्य

(अर्थात शैतान प्रेरित कृत्य) करते हैं तो कहते हैं, हमने अपने पूर्वजों को इसी रीति पर पाया था और अल्लाह ने हमें इसी का आदेश दिया है. (पैग़ंबर!) आप उनसे कह दीजिए, अल्लाह कभी बुरे कार्य का आदेश नहीं देता. क्या तुम अल्लाह से ऐसी बात का संबंध जोड़ते हो जिसका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं.

29 (पैग़ंबर!) उनसे कह दो, मेरे रब ने तो न्याय का हुक्म दिया है. और यह भी हुक्म दिया है कि इबादत के हर अवसर पर अपना रुख ठीक रखो. और केवल उसी को पुकारो अपने मज़हब को उसके लिए विशुद्ध रखकर. जिस तरह उसने तुम्हारा पहली बार सृजन किया है, उसी तरह तुम फिर सृजित किए जाओगे.

30 (इंसानों में से) एक समूह को उसने सीधा रास्ता दिखा दिया है, लेकिन दूसरा समूह है कि उस पर पथभ्रष्टता सिद्ध हो चुकी है. उन्होंने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपना मित्र बनाया और समझते रहे कि हम सीधे मार्ग पर हैं.

31 ऐ आदम की संतान! (अर्थात ऐ इंसानों!) इबादत के हर अवसर पर (पूर्ण) वस्त्र धारण करो. और खाओ-पिओ, लेकिन हद से आगे न बढ़ो. निस्संदेह! अल्लाह हद से आगे बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता. 32 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, अल्लाह ने अपने बंदों के लिए निर्माण की हुई उन शोभापूर्वक चीज़ों को और जीविका की अच्छी चीज़ों को किसने हराम (निषिद्ध) ठहराया है. कहो, यह चीज़ें इस दुनिया के जीवन में भी ईमान वालों के लिए हैं और मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में तो (सारी अच्छी चीज़ें) केवल उन्हीं के लिए होंगी. इस प्रकार हम अपने संदेश उन लोगों के लिए स्पष्ट रूप से बयान करते हैं, जो जानना चाहें. 33 (पैग़ंबर!) इनसे कहो मेरे रब ने तो अश्लील कर्मों को हराम ठहराया है, चाहे वह खुले तौर पर किए जाएँ या छुपे तौर पर. इसी तरह उसने हराम किया (हर प्रकार के) बुरे काम और (किसी पर) नाहक़ ज़्यादती करना और यह कि तुम अल्लाह के साथ किसी को उसका साझी ठहराओ जिसका उसने कोई प्रमाण नहीं उतारा

और यह भी तुम्हारे लिए हराम है कि तुम अल्लाह से जोड़कर ऐसी बात कहो जिसका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं.

34 प्रत्येक समुदाय के लिए एक नियत अवधि है, फिर जब उनका नियत समय आ जाता है, तो एक घड़ी भर न पीछे रह सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं.
35 ऐ आदम की संतान! यदि तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैग़ंबर आएँ जो तुम्हें मेरे संदेश सुनाएँ, तो जो कोई डरे और अपना सुधार कर ले तो (मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में) ऐसे लोगों को न कोई भय होगा और न वे दुःखी होंगे. 36 लेकिन जो लोग मेरे संदेशों को झुठलाएंगे और उनके प्रति उद्दंडता का परिचय देंगे तो ऐसे ही लोग आग में पड़ने वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे.

37 उससे बढ़कर अत्याचारी और कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या उसके संदेशों को झुठलाए. ऐसे लोगों को (वर्तमान जीवन में) उनका हिस्सा जो लिखा हुआ है वह मिलेगा, यहाँ तक कि हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनकी जान निकालने के लिए उनके पास आएंगे तो कहेंगे, कहाँ है वे जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते थे वह कहेंगे कि वे सब हमसे खोए गए और वे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देंगे कि निस्संदेह वे सत्य का इन्कार करने वाले थे.

38 तब उनसे अल्लाह कहेगा, जिन्नों और मनुष्यों के जो समूह तुमसे पहले गुज़रे हैं (जो जहन्नम के पात्र ठहरे हैं) जहन्नम में दाख़िल होकर उनमें शामिल हो जाओ. जब भी कोई समूह जहन्नम में प्रवेश करेगा वह अपने साथी समूह पर धिक्कार करेगा. यहाँ तक कि जब वह उसमें एकत्र हो जाएंगे तो उनके बाद वाले अपने पहले वालों के संबंध से कहेंगे, ऐ हमारे रब! यही लोग हैं जिन्होंने हमें भटकाया, तो तू इन्हें आग की दोगुनी यातना दे. (इस पर) अल्लाह कहेगा कि सबके लिए दोगुनी यातना है, लेकिन तुम नहीं जानते.

39 उनके पहले वाले अपने बाद वालों से कहेंगे, तुम्हें हम पर कोई बड़ाई प्राप्त नहीं. तो अपनी कमाई के परिणाम-स्वरूप यातना का स्वाद चखो.

40 निस्संदेह, जिन लोगों ने हमारे संदेशों को झुठलाया और उनके संबंध से उद्दंडता का परिचय दिया. उनके लिए आसमान के दरवाज़े कदापि नहीं खोले जाएंगे. और न वे जन्नत में प्रवेश करेंगे, जब तक ऊँट सुई के नाके में से न गुज़रे (अर्थात उनका जन्नत में प्रवेश कदापि संभव नहीं). हम अपराधियों को ऐसा ही दंड देते है. 41 उनके लिए बिछौना भी जहन्नम का होगा और ओढ़ना भी जहन्नम का. हम अत्याचारियों को इसी प्रकार दंड देते हैं. 42 इसके विपरीत जो लोग ईमान लाए और उन्होंने भले कर्म किए, हम किसी व्यक्ति पर उसकी क्षमता से अधिक बोझ नहीं डालते, यही लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे. 43 उन (सफलता प्राप्त किए हुए ईमान वालों) के दिलों में एक-दूसरे के प्रति जो कुछ मनमुटाव होगा उसे हम (उनके दिलों से) निकाल देंगे. उनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे कहेंगे सारी प्रशंसा (सारा शुक्र) अल्लाह ही के लिए है जिसने हमें यहाँ तक पहुँचाया. हम मार्ग नहीं पा सकते थे, यदि अल्लाह हमारा मार्गदर्शन न करता. निस्संदेह, हमारे रब के पैग़ंबर सत्य का संदेश लेकर आए थे. और उन्हें पुकार कर कहा जाएगा, यह है जन्नत जिसके तुम वारिस बनाए गए हो, उन कर्मों के बदले में जो तुम करते रहे थे.

44 जन्नत वाले जहन्नम वालों को पुकारेंगे, (कहेंगे,) हमारे रब ने हमसे जो वादा किया था. हमने उसे सच्चा पाया. तो क्या तुमसे तुम्हारे रब ने जो वादा कर रखा था, तुमने भी उसे सच्चा पाया? वे कहेंगे, हाँ, फिर एक पुकारने वाला उनके बीच पुकारेगा, (कहेगा,) अल्लाह की फिटकार है अत्याचारियों पर! 45 जो लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकते थे और उसमें टेढ़ ढूँढते थे और वे मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन होने का इन्कार करते थे.

46 जन्नत-निवासी और जहन्नम-निवासियों के बीच एक आड़-रूपी (ऊँचा) विभाजक (आराफ़) होगा. उस विभाजक की ऊँचाइयों पर कुछ लोग होंगे, जो हर एक को उसके लक्षण से पहचानते होंगे. वे जन्नत वालों से पुकार कर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो. वे अभी जन्नत में दाख़िल नहीं हुए होंगे, मगर उसके उम्मीदवार होंगे. 47 और जब उनकी निगाहें जहन्नम वालों की ओर फिरेंगी, तो वे कहेंगे, ऐ हमारे रब! हमें अत्याचारी लोगों में शामिल न करना. 48 फिर ये आराफ़ वाले (अर्थात उस ऊँचाई पर खड़े हुए लोग) उन लोगों को पुकारेंगे, जिन्हें वे उनके लक्षणों से पहचानते होंगे, कहेंगे, (अर्थात उन विफलता प्राप्त करने वाले लोगों से कहेंगे,) तुम्हारे जत्थे कुछ तुम्हारे काम न आए और न तुम्हारा अपने को बड़ा समझना तुम्हारे कुछ काम आया. 49 (फिर वे जन्नत वालों की ओर इशारा करते हुए जहन्नम वालों से कहेंगे,) क्या यही वे लोग हैं, जिनके संबंध से तुम क़सम खाकर कहते थे कि अल्लाह इनके साथ कदापि दयालुता का व्यवहार नहीं करेगा. आज उन्हीं से कहा गया, दाख़िल हो जाओ जन्नत में, अब न तो तुम्हें कभी भय होगा और न कभी तुम दुःखी होंगे.

50 और जहन्नम वाले जन्नत वालों को पुकारेंगे, (कहेंगे) कि कुछ पानी हम पर डाल दो या उसमें से कुछ हमें दे दो जो अल्लाह ने तुम्हें खाने को दे रखा है. (इस पर) जन्नत वाले कहेंगे, अल्लाह ने इन दोनों चीज़ों को सत्य का इन्कार करने वालों के लिए हराम कर दिया. 51 (मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में उनके लिए अल्लाह की सारी नेमतें हराम की जा चुकी होंगी) जिन्होंने अपने मज़हब को खेल और तमाशा बना लिया था और दुनिया की ज़िंदगी ने उन्हें धोके में डाल रखा था. (ऐसे लोगों के संबंध से ख़ुदा कहेगा,) आज हम भी उन्हें उसी तरह भुला देंगे. जिस तरह उन्होंने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था और वे हमारे संदेशों को नकारते थे.

52 निश्चय ही हमने उन्हें ऐसी किताब प्रदान की है, जिसमें हमने अपने ज्ञान से (चीज़ों का) वर्णन विस्तारपूर्वक कर दिया है, जो ईमान लाने वालों के लिए मार्गदर्शन एवं कृपा है. 53 क्या (ये ख़ुदा की किताब को न मानने वाले) लोग उसमें दी गयी (चेतावनी,) प्रत्यक्ष घटना के रूप में घटित हो जाने की प्रतीक्षा में हैं? जिस दिन वह (चेतावनी) घटित होगी, तो वे लोग जो इससे पहले उसे भूले हुए थे, कहेंगे, निस्संदेह हमारे रब के संदेशवाहक सत्य लेकर आए थे. तो क्या अब हमें कोई सिफ़ारिशी मिलेंगे जो हमारे पक्ष में सिफ़ारिश करें. या फिर (क्या ऐसी कोई सूरत है कि) हमें दोबारा दुनिया में वापस भेज दिया जाए, ताकि जो कुछ हम पहले करते थे उससे भिन्न कर्म करें. उन्होंने अपने आपको घाटे में डाल दिया और जो झूठ वे गढ़ते थे वह सब उनसे आज गुम हो गए.

54 निस्संदेह! तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन का छः दिनों में (अर्थात छः कालखंडों में) सृजन किया. फिर वह सिंहासन पर विराजमान हुआ. वही रात को दिन पर ढाँक देता है और फिर दिन रात के पीछे दौड़ा चला आता है. और उसी ने सृजन किया सूरज, चाँद और तारों का. सब उसके आदेश के अधीन हैं. जान लो! उसी की सृष्टि है और उसी का आदेश है. बड़ी बरकत वाला है अल्लाह, जो रब है सारे संसार का. 55 अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके-चुपके. निश्चय ही वह हद से आगे बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता. 56 और धरती पर उसके सुधार के पश्चात बिगाड़ न पैदा करो. और अल्लाह ही को पुकारो, भय तथा आशा के साथ. निश्चय ही अल्लाह की दयालुता सत्कर्मी लोगों के निकट है.

57 वह अल्लाह ही है जो हवाओं को अपनी (बरसात-रूपी) कृपा से पहले शुभ-सूचना देने के लिए भेजता है, यहाँ तक कि जब वे बोझल बादलों को उठा लेती हैं तो हम उसे किसी मुर्दा ज़मीन की ओर चला देते हैं. फिर हम उससे पानी बरसाते हैं, फिर हम

उससे हर प्रकार के फल निकालते हैं. इसी तरह हम मुर्दों को (जीवित करके) खड़ा करेंगे. (ये मिसालें इसलिए बयान की जाती हैं,) ताकि तुम चिंतन करो.

58 जो ज़मीन अच्छी होती है, वह अपने रब के आदेश से ख़ूब फल-फूल लाती है. और जो ज़मीन निकृष्ट होती है, उससे ख़राब पैदावार के सिवा कुछ नहीं निकलता. इस प्रकार हम हमारे संदेश विविध पहलुओं से स्पष्ट करते हैं, उन लोगों के लिए जो (हमारे प्रति) आभार व्यक्त करने वाले हैं. 59 हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा. नूह ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो! उसके सिवा दूसरा कोई ऐसा नहीं जिसकी तुम इबादत करो. मैं तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब के आने से डरता हूँ. 60 उसकी क़ौम के बड़े लोगों ने (ख़ुदा के पैग़ंबर से) कहा, हमें तो यह दिखाई देता है कि तुम स्पष्ट पथभ्रष्टता में लिप्त हो.

61 नूह ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! मैं किसी पथभ्रष्टता में लिप्त नहीं हूँ, बल्कि मैं भेजा हुआ हूँ संपूर्ण संसार के रब की ओर से. 62 तुम्हें अपने रब के संदेश पहुँचा रहा हूँ और तुम्हारा हित चाहने वाला हूँ. मैं अल्लाह की ओर से वह बात जानता हूँ जो तुम नहीं जानते. 63 क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य हुआ कि तुम्हारे रब का उपदेश तुम्हीं में से एक व्यक्ति के माध्यम से आया, ताकि तुम्हें सचेत करे, ताकि तुम ख़ुदा के प्रति सजग (एवं उत्तरदायी) बनो, ताकि तुम पर दया की जाए. 64 तो उन्होंने उसे झुठला दिया. फिर हमने नूह को बचा लिया और उन लोगों को भी जो उसके साथ नौका में थे. और जिन लोगों ने हमारे संदेशों को झुठलाया था. हमने उन्हें डुबो दिया. निश्चय ही वे अंधे लोग थे.

65 क़ौमे-आद की ओर हमने उनके भाई हूद को भेजा. उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा दूसरा कोई ऐसा नहीं जिसकी तुम इबादत करो. तो फिर क्या तुम अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) नहीं बनोगे. 66 उसकी क़ौम के बड़े जो सत्य को मानने से इन्कार कर रहे थे, बोले, वास्तव में, हम तो तुम्हें बुद्धिहीनता में

ग्रस्त देख रहे हैं. और हम तुम्हें झूठा समझते हैं. 67 (इस पर) हूद ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! मैं बुद्धिहीनता में ग्रस्त नहीं हूँ, बल्कि मैं संसार के रब का संदेशवाहक हूँ. 68 तुम्हें अपने रब के संदेश पहुँचा रहा हूँ और मैं तुम्हारा भला चाहने वाला तथा अमानतदार हूँ (अर्थात मेरे पास जो ईश-संदेशरूपी अमानत है उसे तुम्हारे सुपूर्द कर रहा हूँ).

69 क्या तुम्हें इस बात पर आश्चर्य हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक व्यक्ति के माध्यम से तुम्हारे रब का उपदेश आया, ताकि वह तुम्हें सचेत करे. (ऐ मेरी क़ौम!) याद करो कि अल्लाह ने नूह की क़ौम के बाद तुम्हें उसका उत्तराधिकारी बनाया और शारीरिक दृष्टि से (अर्थात डील-डौल में) तुम्हें (दूसरी क़ौमों के मुक़ाबले) अधिक सशक्त बनाया. तो अल्लाह के (प्रदान किए हुए) पुरस्कारों को याद करो, ताकि तुम सफलता प्राप्त करो.

70 हूद की क़ौम ने कहा, क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम केवल एक अल्लाह की उपासना करें और उन्हें छोड़ दें जिनकी उपासना हमारे पूर्वज करते आए हैं. अच्छा तो वह अज़ाब (यातना) ले आओ जिसकी तुम हमें धमकी देते हो, यदि तुम सच्चे हो. 71 हूद ने कहा, अब तुम पर तुम्हारे रब की ओर से फिटकार और उसका प्रकोप नियत हो चुका है. क्या तुम मुझसे उन नामों पर झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिए हैं, जिनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा है. तो प्रतीक्षा करो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ. 72 फिर हमने अपनी कृपा से उसको और जो लोग उसके साथ थे बचा लिया. और उन लोगों की जड़ काट दी जिन्होंने हमारे संदेशों को झुठलाया था और ईमान नहीं लाए थे.

73 और क़ौमे-समूद की ओर हमने उनके भाई सालेह को (अपना पैग़ंबर बनाकर) भेजा. सालेह ने (उनसे) कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा दूसरा कोई ऐसा नहीं जिसकी तुम इबादत करो. तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक स्पष्ट निशानी आ चुकी है. यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है. तो इसे छोड़ दो

कि अल्लाह की धरती पर चरती फिरे. इसको तुम कोई कष्ट न पहुँचाना, अन्यथा एक दुःखदायी अज़ाब तुम्हें पकड़ लेगा. 74 (ऐ मेरी क़ौम!) याद करो, जब अल्लाह ने क़ौमे-आद के बाद तुम्हें उनका उत्तराधिकारी बनाया और तुम्हें धरती पर ठिकाना दिया. तुम उसके समतल मैदानों में भव्य महल बनाते हो. और पहाड़ों को काटकर भी घर बनाते हो. तो अल्लाह की नेमतों को याद करो और धरती पर फ़साद (उपद्रव) मचाते न फिरो.

75 उसकी क़ौम के बड़े जिन्होंने घमंड किया, उन ईमान वालों से बोले जो कमज़ोर वर्ग के समझे जाते थे, क्या तुम्हें यह विश्वास है कि सालेह अपने रब की ओर से संदेशवाहक बनाकर भेजे गए हैं. (इस पर) उन ईमान वालों ने कहा, निश्चय ही वह जिस चीज़ के साथ भेजे गए हैं, हम उस पर विश्वास रखते हैं. 76 वह घमंडी लोग कहने लगे कि हम तो उस बात का इन्कार करते हैं जिस पर तुम ईमान लाए हो.

77 फिर उन (विद्रोही) लोगों ने उस ऊँटनी को मार डाला. इस प्रकार वे अपने रब के आदेश से फिर गए. और उन्होंने कहा, ऐ सालेह! यदि तुम ख़ुदा के पैग़ंबर हो तो वह यातना हम पर ले आओ जिससे तुम हमें डराते थे. 78 अंततः एक दहला देने वाली आपदा ने उन्हें आ लिया. और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए. 79 (ख़ुदा का पैग़ंबर) 'सालेह' यह कहता हुआ उनकी बस्तियों से निकल गया, ऐ मेरी क़ौम! मैंने तुम्हें अपने रब का संदेश पहुँचा दिया और मैंने तुम्हारी भलाई चाही, लेकिन तुम भलाई चाहने वालों को पसंद नहीं करते.

80 और हमने लूत को पैग़ंबर बनाकर भेजा, उसकी क़ौम की तरफ़. तब उसने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम ऐसे अश्लीलता के कर्म करते हो, जिसे दुनिया में तुमसे पहले किसी ने नहीं किया. 81 तुम स्त्रियों को छोड़कर पुरुषों से अपनी कामेच्छा पूरी करते हो. वास्तविकता तो यह है कि तुम बिल्कुल ही हद से गुज़र जाने वाले लोग हो. 82 लेकिन उसकी क़ौम का उत्तर इसके सिवा कुछ न था कि इन्हें (अर्थात लूत तथा उसके

साथियों को) अपनी बस्ती से निकाल दो, ये बड़े पवित्र बनने चले हैं. 83 फिर हमने लूत को और उसके घर वालों को बचा लिया, सिवाय उसकी पत्नी के, जो पीछे रह जाने वालों में से थी. 84 और हमने उन पर वर्षा की पत्थरों की, तो देखो, उन अपराधियों का क्या अंजाम हुआ.

85 और मदियन वालों की ओर हमने उनके भाई शोएब को भेजा. उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा दूसरा कोई ऐसा नहीं जिसकी तुम इबादत करो. तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य का स्पष्ट प्रमाण आ चुका है. तो तुम नाप-तौल पूरी करो. और लोगों को उनकी चीज़ें घटाकर मत दो. और धरती पर उसके सुधार के पश्चात बिगाड़ पैदा न करो. इसी में तुम्हारी भलाई है, यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो. 86 और लोगों को डराने के लिए रास्तों पर मत बैठा करो और उन लोगों को अल्लाह के मार्ग से न रोको, जो उस पर ईमान ला चुके हैं. और सन्मार्ग में (निराधार) टेढ़ न तलाश करो. याद करो वह समय जब तुम थोड़े थे, फिर अल्लाह ने तुम्हें ज़्यादा कर दिया. और देखो, बिगाड़ पैदा करने वालों का क्या अंजाम हुआ है. 87 यद्यपि तुममें से एक समूह उस (शिक्षा) पर ईमान लाया है, जो देकर मैं भेजा गया हूँ और एक समूह ईमान नहीं लाया है. तो प्रतीक्षा करो, यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच निर्णय कर दे. और वह सबसे अच्छा निर्णय करने वाला है.

88 उसकी क़ौम के बड़े जो घमंड में चूर थे, बोले, ऐ शुऐब! हम तुझे और उन लोगों को जो तेरे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम्हें हमारे पंथ में वापस आना होगा. (इस पर) शुऐब ने कहा, क्या हम (तुम्हारे पंथ से) असंतुष्ट हों तब भी (हमें ज़बरदस्ती उसमें वापस लाया जाएगा)? 89 हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे यदि हम तुम्हारे पंथ में पलट आएँ, जबकि अल्लाह ने हमें उस (असत्य) से छुटकारा दे दिया है. अब हमारे लिए उस पंथ में लौटना किसी तरह संभव नहीं मगर यह कि हमारा रब अल्लाह ही ऐसा चाहे. हमारा रब अपने ज्ञान से हर चीज़ को घेरे में लिए हुए है. हमने अपने रब अल्लाह पर भरोसा किया.(फिर शुऐब ने अल्लाह से दुआ की,) ऐ हमारे रब! हमारे और हमारी क़ौम के बीच ठीक-ठीक फ़ैसला कर दे. तू सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है.

90 उसकी क़ौम के बड़े, जिन्होंने सत्य का इन्कार किया था, (आपस में एक-दूसरे से) बोले, यदि तुम शुऐब का अनुसरण करोगे तो तुम घाटे में पड़ जाओगे.

91 फिर एक दहला देने वाली आपदा ने उन्हें आ लिया, तब वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए. 92 जिन लोगों ने (ख़ुदा के पैग़ंबर) शुऐब को झुठलाया था, उनकी दशा ऐसी हुई कि मानो उन घरों में वे कभी बसे ही न थे. जिन लोगों ने शुऐब को झुठलाया था वही घाटे में पड़े. 93 तब शुऐब यह कहते हुए उनकी बस्तियों से निकल गया कि ऐ मेरी क़ौम! मैंने तुम्हें अपने रब के संदेश पहुँचा दिए हैं और मैंने तुम्हारा हित चाहा, अब मैं सत्य का इन्कार करने वाले लोगों पर क्यों खेद व्यक्त करूँ.

94 हमने जिस बस्ती में भी हमारा कोई संदेशवाहक भेजा, तो उसके वासियों को हमने तंगी और मुसीबत में डाला, ताकि वे (हमारे आगे) गिड़गिड़ाएँ. 95 फिर हमने उनकी दुःख की हालत को सुख से बदल दिया, यहाँ तक कि वे ख़ूब फले-फूले और

कहने लगे कि इस तरह के दुःख और सुख तो हमारे पूर्वजों को भी पहुँचते रहे हैं. **फिर हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया और वे इसकी कल्पना भी न करते थे.**

96 यदि बस्तियों के लोग ईमान लाते और हमारे प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनते तो हम उन पर आसमान एवं धरती की बरकतों को खोल देते. लेकिन उन्होंने सत्य को झुठलाया तो हमने उन्हें पकड़ लिया उनके कर्मों के बदले.

97 क्या बस्तियों में रहने वाले इस बात से निश्चिंत हैं कि हमारी ओर से यातना उन पर रात के समय आ सकती है, जब कि वे सो रहे हों. 98 अथवा बस्तियों में रहने वालों पर हमारी ओर से यातना दिन चढ़े भी आ सकती है, जबकि वे खेल रहे हों, क्या इससे वे निश्चिंत हैं? 99 क्या ये लोग अल्लाह की युक्तियों से स्वयं को सुरक्षित समझते हैं. अल्लाह की युक्तियों से वही लोग निडर रहते हैं जो नष्ट होने वाले हैं.

100 क्या कोई शिक्षा नहीं मिली उन्हें जो धरती पर उत्तराधिकारी बने, उसके पूर्ववासियों के पश्चात, कि यदि हम चाहें तो उन्हें पकड़ लें उनके पापों पर (लेकिन उनका हाल यह है कि वे बोधपूर्वक चीज़ों से बोध नहीं लेते). हम ऐसे लोगों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं, फिर वे (सुनते हुए भी वास्तव में) कुछ नहीं सुनते. 101 यह वह बस्तियाँ हैं जिनके कुछ वृत्तांत हम तुम्हें सुना रहे हैं. उनके पास उनके लिए भेजे गए पैग़ंबर सत्य के स्पष्ट प्रमाण लेकर आए, लेकिन ऐसा नहीं हुआ कि वे ईमान लाने वाले बनते, इसका कारण यह था कि वे पहले से झुठलाते आ रहे थे. इस प्रकार अल्लाह सत्य का इन्कार करने वालों के दिलों पर मुहर लगा देता है. 102 और हमने उनमें से अधिकतर लोगों में प्रतिज्ञा का कोई निर्वाह न पाया, बल्कि अधिकतर को हमने अवज्ञाकारी ही पाया.

103 फिर उनके पश्चात हमने मूसा को अपनी संदेशयुक्त निशानियों के साथ (इजिप्त का राजा) फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, लेकिन उन्होंने भी हमारी निशानियों के साथ अन्याय किया. तो देखो कि उन उपद्रवकारियों का कैसा अंत हुआ.
104 मूसा ने कहा, ऐ फ़िरऔन! मैं सृष्टि के स्वामी की ओर से भेजा हुआ आया हूँ.105
मेरे लिए अल्लाह के संबंध से सत्य के सिवा कोई और बात कहना संभव नहीं. मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से स्पष्ट निशानी लेकर आया हूँ. तो तू मुझे इसराईल की संतान को लेकर जाने दे.
106 फिर फ़िरऔन ने कहा, यदि तुम कोई निशानी लेकर आए हो और अपने दावे में
सच्चे हो, तो उसे प्रस्तुत करो. 107 तब मूसा ने अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दी, तो
वह लाठी (एक बहुत बड़ा) साँप बन गयी. 108 और उसने अपना हाथ (आगे की
ओर) बढ़ाया, तो वह देखने वालों के सामने चमक रहा था. 109 फ़िरऔन की क़ौम के
सरदारों ने (आपस में) कहा, निश्चय ही यह आदमी बड़ा कुशल जादूगर है. 110 वह
चाहता है कि (अपने जादू के ज़ोर पर) तुम्हें तुम्हारे भू-प्रदेश से बेदख़ल कर दे.
(फ़िरऔन ने अपने सरदारों से पूछा,) अब तुम्हारा क्या विचार है? 111 वे बोले, मूसा
को और उसके भाई को समय दिया जाए और सारे शहरों में उद्घोषक (अर्थात मुनादी
करने वाले) भेजे जाएँ. 112 वे सारे कुशल जादूगर तुम्हारे पास ले आएँ.
113 फिर (ऐसा ही हुआ,) सारे जादूगर फ़िरऔन के पास इकट्ठे हो गए, जादूगरों ने
(फ़िरऔन से) कहा, यदि हम विजयी हुए तो क्या हमें कुछ पुरस्कार भी मिलेगा? 114
इस पर फ़िरऔन ने कहा, हाँ, और इसके साथ तुम अवश्य मेरे निकटवर्तियों में भी
शामिल हो जाओगे. 115 जादूगरों ने मूसा से कहा, ऐ मूसा या तो तुम (पहले जो प्रस्तुत
करना है) प्रस्तुत करो या फिर हम करते हैं. 116 मूसा ने कहा, तुम ही पहले प्रस्तुत करो.
फिर जब उन्होंने (अपनी लाठियाँ और रस्सियाँ) फेंक दीं तो लोगों की आँखों पर जादू

कर दिया और उन्हें भयभीत कर दिया और उन्होंने बहुत बड़े जादू का प्रदर्शन किया.
117 फिर हमने मूसा को अपना संदेश भेजा कि अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दो! फिर
वह तुरंत वह उनके रचे हुए स्वाँग को निगलने लगी. 118 इस प्रकार सत्य सिद्ध हो गया
और जो कुछ उन्होंने गढ़ रखा था, वह झूठ सिद्ध हो गया. 119 इस प्रकार (फ़िरऔन
और उसके सरदार पूर्णतः) परास्त हुए और अपमानित होकर रहे.
120 और जादूगर (तुरंत) सजदे में ढह पड़े. 121 उन्होंने कहा, हम ईमान लाए समस्त
सृष्टि के रब पर. 122 जो रब है मूसा और हारून का.

123 फ़िरऔन ने कहा, तुम मूसा पर ईमान ले आए, इससे पहले कि मैं तुम्हें
इजाज़त दूँ. निश्चित रूप से यह एक षड्यंत्र है जो तुम लोगों ने इस उद्देश्य से रचा है कि
तुम इस (भू-प्रदेश) के वासियों को यहाँ से निकाल दो. तो तुम्हें (अपने इस षड्यंत्र का
परिणाम) बहुत जल्द मालूम हो जाएगा.
124 (फ़िरऔन ने जादूगरों से कहा,) मैं तुम्हारे हाथ-पाँव विपरीत दिशाओं से कटवा
दूँगा, फिर तुम सबको सूली पर चढ़ाऊँगा. 125 जादूगरों ने (फ़िरऔन को) उत्तर दिया,
हमें तो अपने रब की ओर लौटना है. 126 जादूगर आगे बोले, तू हमें मात्र इस बात का
दंड देना चाहता है कि हमारे रब की निशानियाँ जब हमारे सामने आ गयी तो हम उन पर
ईमान ले आए. (फिर उन्होंने अपने रब से दुआ की) ऐ हमारे रब! हमें बहुत ज़्यादा धैर्य
प्रदान कर और हमें दुनिया से इस हाल में उठा कि हम तेरे आज्ञाकारी हों.

127 फ़िरऔन से उसकी क़ौम के सरदारों ने कहा, क्या तू मूसा और उसकी क़ौम
को छोड़ देगा कि वे देश में उपद्रव मचाएँ और वे तुझे तथा तेरे उपास्यों को त्याग दें. (इस
पर) फ़िरऔन ने कहा, हम उनके बेटों की हत्या करेंगे और उनके स्त्रियों को जीवित
रखेंगे. निश्चय ही हमें उन पर पूर्ण अधिकार प्राप्त है. 128 मूसा ने अपनी क़ौम से कहा,
अल्लाह से मदद माँगो और धैर्य से काम लो, ज़मीन अल्लाह की है. वह अपने बंदों में से

जिसे चाहता है, उसका वारिस बना देता है. और अंत में सफलता उन लोगों को प्राप्त होगी जो अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने हुए हैं. 129 मूसा की क़ौम के लोगों ने कहा, हम तुम्हारे आने से पहले भी सताए गए और तुम्हारे आने के बाद भी. (इस पर) मूसा ने कहा, वह समय निकट है कि तुम्हारा रब तुम्हारे शत्रु को नष्ट कर दे और उनके स्थान पर तुम्हें इस भूभाग का स्वामी बना दे. फिर देखे कि तुम कैसे कर्म करते हो.

130 और हमने फ़िरऔन वालों को कई वर्ष तक अकाल और पैदावार की कमी में ग्रस्त रखा, ताकि वे हमारे उपदेशों को ग्रहण करें.

131 फिर जब उन्हें अच्छी हालत पेश आती, तो वे कहते कि हम इसी के पात्र हैं. और जब उन्हें बुरी हालत पेश आती तो उसे मूसा और उसके साथियों का अपशकुन ठहराते, हालाँकि वास्तव में उनका अपशकुन अल्लाह के पास है, लेकिन उनमें से अधिकतर नहीं जानते. 132 उन्होंने मूसा से कहा कि तुम हमें अपने जादू के प्रभाव में करने के लिए चाहे कोई भी निशानी लाओ, हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं.

133 फिर हमने उन पर तूफ़ान भेजा और टिड्डी के दल छोड़े, सुरसुरियाँ फैलायीं, मेंढक निकाले और ख़ून बरसाया. ये सब निशानियाँ अलग-अलग दिखायीं, फिर भी उन्होंने उद्दंडता का ही परिचय दिया. वे थे ही अपराधी लोग.134 और जब कभी उन पर कोई आपदा आती तो कहते, ऐ मूसा! हमारे लिए अपने रब से प्रार्थना करो, उस प्रतिज्ञा के आधार पर जो उसने तुमसे कर रखी है. यदि तुमने हम पर से इस कष्ट को हटवा दिया तो हम अवश्य ही तुम पर ईमान ले आएंगे और इसराईल की संतान को तुम्हारे साथ जाने देंगे. 135 फिर जब हम उन पर से उस यातना को एक नियत समय के लिए, जिस तक वे (अंततः) पहुँचने वाले ही थे, हटा लेते, तो वे तुरंत ही अपनी प्रतिज्ञा से फिर जाते.

136 अंत में हमने उनसे बदला लिया और उन्हें समुद्र में डुबो दिया, क्योंकि उन्होंने हमारे संदेशों को झुठलाया था और उनसे बेपरवाह हो गए थे.

137 और जो लोग दुर्बल समझे जाते थे, उन्हें हमने धरती के पूरब और पश्चिम भाग का उत्तराधिकारी बना दिया, जिसमें हमने बरकतें रखी थीं. इस प्रकार बनी इसराईल के संबंध से तुम्हारे रब का भलाई का वादा पूरा हो गया, यह इस कारण कि उन्होंने धैर्य से काम लिया और हमने फ़िरऔन और उसकी क़ौम का वह सब कुछ नष्ट कर दिया जो वे बनाते थे और वे चढ़ाते थे.

138 और हमने इसराईल की संतान को समुद्र से पार करा दिया, (फिर जब वे आगे बढ़े) तो उनका सामना ऐसे लोगों से हुआ जो मूर्तियों की उपासना में मग्न थे. (इन मूर्तिपूजकों को देखकर) बनी इसराईल ने कहा, ऐ मूसा! हमारे लिए भी ऐसा एक उपास्य (मूर्ति) बना दे, जैसे इनके उपास्य हैं. मूसा ने कहा, निश्चय ही तुम बड़े अज्ञानी लोग हो.
139 (ख़ुदा के पैग़ंबर) मूसा ने आगे कहा, यह लोग जिस कर्म में लिप्त हैं वह नष्ट होने वाला है और यह लोग जो कर रहे हैं सर्वथा मिथ्या है.

140 फिर मूसा ने (इसराईल की संतान से) कहा, क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए कोई और उपास्य खोजूँ? हालाँकि अल्लाह ने ही तुम्हें दुनिया-भर की क़ौमों पर श्रेष्ठता प्रदान की है.

141 और (अल्लाह फ़रमाता है,) (ऐ इसराईल की संतान!) वह समय याद करो जब हमने फ़िरऔन वालों से तुम्हें मुक्ति दी जो तुम्हें कठोर यातना में ग्रस्त रखते थे. वे तुम्हारे बेटों की हत्या करते और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रहने देते. इसमें तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी बड़ी परीक्षा थी.

142 हमने मूसा को तीस रातों के लिए (सीनाई पर्वत पर) तलब किया और बाद में दस रात और बढ़ा दिए. इस तरह उसके रब की ठहराई हुई मुद्दत चालीस रातों में पूरी हुई. (सीनाई पर्वत पर जाते समय) मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, मेरी अनुपस्थिती में, तुम मेरी क़ौम में मेरा प्रतिनिधित्व करना और सुधार करते रहना और बिगाड़ करने वालों के

रास्ते पर न चलना. 143 जब मूसा हमारे निश्चित किए हुए समय पर पहुँचा और उसके रब ने उससे बात की, तो उसने कहा ऐ मेरे रब! तू मुझे अपने आपको दिखा दे, ताकि मैं तुझे देख सकूँ. (इस पर) अल्लाह ने कहा, तुम मुझे नहीं देख सकते. हाँ, पहाड़ की ओर देखो. यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रह जाए तो फिर तुम मुझे देख सकोगे. फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर अपने (नूर का) जलवा दिखाया तो उसे चकनाचूर कर दिया और मूसा मूर्छित होकर गिर पड़ा. फिर जब होश आया तो मूसा ने कहा, (ऐ प्रभु!) तू असीम महिमावान है, मैं तेरे समक्ष तौबा करता हूँ और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूँ.

144 फिर अल्लाह ने कहा, ऐ मूसा मैंने तुम्हें दूसरे लोगों के मुक़ाबले में चुनकर अपने संदेशों तथा अपनी वाणी से तुम्हें उपकृत किया. तो जो कुछ मैं तुम्हें दूँ उसे लो और हमारे प्रति आभार व्यक्त करने वालों में से हो जाओ. 145 और हमने मूसा को हर प्रकार का उपदेश और हर चीज़ का विस्तृत वर्णन तख़्तियों पर लिखा हुआ दे दिया; और उससे कहा, इसे दृढ़तापूर्वक पकड़ो और अपनी क़ौम को आदेश दो कि (इन उपदेशों) के अच्छे आशय का पालन करे. शीघ्र ही मैं तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर (अर्थात उनका अंजाम) दिखाऊँगा.

146 मैं उन लोगों को अपनी (संदेशयुक्त) निशानियों से फेर दूँगा (अर्थात उन्हें अपने मार्गदर्शन से वंचित कर दूँगा) जो धरती पर बड़े बनते हैं जिसका उन्हें किसी भी प्रकार से अधिकार नहीं. यदि वे किसी भी निशानी को देख लें, तब भी उस पर ईमान नहीं लाएंगे. यदि वे सीधा मार्ग देख ले, तब भी उसे न अपनाएंगे. लेकिन यदि उन्हें पथभ्रष्टता का मार्ग दिखाई दे तो वे उस पर चल पड़ेंगे. इसका कारण यह है कि उन्होंने हमारी संदेशयुक्त निशानियों को झुठलाया और उससे बेपरवा बने रहे.

147 जिन लोगों ने हमारी (संदेशयुक्त) निशानियों को झुठलाया और मृत्यु-पश्चात दुनिया में (हमारी अदालत में) होने वाली पेशी का इन्कार किया, उनके सारे कर्म अकारथ हो गए. और वे बदले में वही पाएंगे जो वे करते थे.

148 और मूसा की क़ौम ने उसकी अनुपस्थिती में (अर्थात जब मूसा सीनाई पर्वत पर गया था), अपने गहनों (को पिघलाकर) उससे एक बछड़े का पुतला बनाया जिसमें से (हवा पास होने पर) बैल की सी आवाज़ निकलती थी. क्या उन्होंने नहीं देखा कि वह न उनसे बात करता है और न उन्हें (किसी प्रकार का) मार्गदर्शन करता है. मगर फिर भी उन्होंने उसे अपना उपास्य बना लिया. और वे बड़े अत्याचारी लोग थे.

149 और फिर जब उन्हें पछतावा हुआ और उन्होंने समझ लिया कि वे वास्तव में पथभ्रष्ट हो चुके हैं, तो कहने लगे, यदि हमारे रब ने हम पर दया न की और यदि हमें माफ़ न किया तो निश्चित रूप से हम नष्ट हो जाएंगे. 150 उधर से मूसा गुस्से और रंज में भरा हुआ अपनी क़ौम की तरफ़ वापस आया, तो उसने कहा, तुम लोगों ने मेरे पीछे बहुत बुरा किया. क्या तुम अपने रब के हुक्म से पहले जल्दी कर बैठे? उसने वह तख़्तियाँ ज़मीन पर डाल दीं (जिसमें ख़ुदा का मार्गदर्शन था) और अपने भाई हारून के सर के बाल पकड़ कर उसे खींचा. हारून ने कहा, ऐ मेरी माँ के बेटे! इन लोगों ने मुझे दबा लिया और क़रीब था कि वे मुझे मार डालते तो तू शत्रुओं को मेरे ऊपर हँसने का अवसर न दे. और मुझे अत्याचारी लोगों में शामिल न कर.

151 तब मूसा ने अल्लाह से दुआ की, ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को क्षमा कर दे और हमें अपने कृपाछत्र में जगह दे. तू सबसे बड़ा दया करने वाला है.

152 (इस पर अल्लाह ने जवाब दिया) निस्संदेह, जिन लोगों ने बछड़े को उपास्य बनाया, अवश्य ही वे अपने रब के प्रकोप के शिकार होकर रहेंगे. और वे दुनिया की ज़िंदगी में अपमानित होंगे. हम झूठ गढ़ने वालों को ऐसी ही सज़ा देते हैं.

153 लेकिन जो लोग बुरे कर्म करने के बाद पश्चाताप के साथ (सन्मार्ग की ओर) पलट आए और ईमान ले आए तो निस्संदेह, तेरा रब इस तौबा तथा ईमान के बाद क्षमा करने वाला तथा दया करने वाला है.

154 और जब मूसा का क्रोध ठण्डा हुआ तो उसने वह तख़्तियाँ उठा लीं. उन (तख़्तियों में) मार्गदर्शन और कृपा थी, उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं. 155
मूसा ने अपनी क़ौम के सत्तर आदमियों को हमारे निर्धारित किए हुए समय पर (सीनाई पर्वत पर) पहुँचने के लिए चुना. फिर उन लोगों को एक भारी भूकंप ने आ पकड़ा, तो मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब! यदि तू चाहता तो पहले ही इन लोगों को और मुझे नष्ट कर सकता था. (ऐ प्रभु) क्या तू हमें उस कर्म के कारण नष्ट कर देगा जो हमारे नादान लोगों ने किया है. यह तो तेरी ओर से एक परीक्षा है. तू इसके द्वारा जिसे चाहे भटका दे और जिसे चाहे सन्मार्ग प्रदान करे. तू ही हमारा संरक्षक है. तो तू हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर. तू सबसे अच्छा क्षमा करने वाला है.

156 (मूसा ने आगे इस प्रकार दुआ जारी रखी, ऐ प्रभु!) तू हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दे और मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में भी भलाई लिख दे. (ऐ प्रभु!) हम तेरी ओर पलट आए (इस पर) अल्लाह ने कहा, सज़ा तो मैं जिसे चाहता हूँ देता हूँ (अर्थात जो सज़ा का पात्र होता है), लेकिन मेरी दयालुता हर चीज़ पर छायी हुयी है. और मैं उसे उन लोगों के लिए लिख दूँगा जो मेरे प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहते हैं और ज़कात देते हैं (अर्थात दानकार्य करते हैं) और जो मेरे संदेशों पर ईमान लाते हैं.

157 (तो अब इस दयालुता के पात्र वे लोग हैं,) जो इस उम्मी पैग़ंबर (उम्मी अर्थात जिसे अक्षर ज्ञान न हो ऐसे पैग़ंबर) का अनुसरण करते हैं, जिसका उल्लेख उन्हें अपने यहाँ तौरात और इंजील में लिखा हुआ मिलता है. वह उन्हें भलाई का हुक्म देता है और बुराई से रोकता है. वह उनके लिए स्वच्छ तथा शुद्ध चीज़ों को वैध ठहराता है और

अशुद्ध तथा अस्वच्छ चीज़ों को निषिद्ध ठहराता है. और वह उन पर से वह बोझ उतारता है जो अब तक उन पर लदे हुए थे और उन्हें उन बंधनों से मुक्त करता है जिसमें वे जकड़े हुए थे. तो जो लोग उस पर ईमान लाए और उसकी हिमायत की और उसकी सहायता की और उस प्रकाश का अनुसरण किया जो उसके साथ उतारा गया है, तो ऐसे ही लोग सफलता प्राप्त करने वाले हैं.

158 (पैग़ंबर!) कहो, ऐ लोगो! निस्संदेह, मैं तुम सबकी तरफ़ उस अल्लाह का संदेशवाहक हूँ, जिसकी बादशाही है ज़मीन व आसमानों में. उसके सिवा दूसरा कोई नहीं जो इबादत (उपासना) के पात्र हो. वही है जो जीवन देता है और वही है जो मृत्यु देता है. तो ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके भेजे हुए उम्मी पैग़ंबर पर, जो स्वयं अल्लाह और उसकी बातों पर ईमान रखता है. तो तुम उसका अनुसरण करो, ताकि तुम सन्मार्ग पाओ.

159 और मूसा की क़ौम में एक समूह ऐसे लोगों का भी हुआ हैं जो सत्य के अनुसार मार्गदर्शन करता था और न्याय करता था.

160 और हमने उन्हें बारह घरानों में विभाजित करके, उन्हें भिन्न-भिन्न समूह बना दिया था. और जब मूसा की क़ौम ने पानी माँगा तो हमने मूसा को यह संदेश भेजा कि अमुक चट्टान पर अपनी लाठी मारो, तो उस चट्टान से बारह सोते फूट निकले, प्रत्येक समूह ने अपना-अपना पानी लेने का स्थान निश्चित कर लिया. और हमने उन पर बादल की छाया की और (उन्हें खाने के लिए) उन पर मन्न व सलवा उतारा और कहा, हमने तुम्हें जो उत्तम चीज़ें प्रदान की है उन्हें खाओ. (मगर इसके बाद उन्होंने जो कुछ दुष्कृत्य किए उससे) उन्होंने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा, बल्कि वे स्वयं अपना ही घाटा करते रहे.

161 याद करो, जब उनसे कहा गया कि इस बस्ती में जाकर बस जाओ और उस(की पैदावार) में से अपनी इच्छानुसार जीविका हासिल करो और वहाँ क्षमा की याचना करते हुए जाओ और उसके दरवाज़े में सजदा करते हुए (अर्थात नम्र भाव से अपने सर झुकाए

हुए) प्रवेश करना. हम तुम्हारी ग़लतियों को माफ़ कर देंगे और हम नेक कर्म करने वालों को (उनके कर्मों के अनुसार) अधिकाधिक देते हैं.

162 लेकिन (इसराईल की संतान में) जो लोग अत्याचारी थे, उन्होंने उस बात को जो उनसे कही गयी थी दूसरी बात से बदल डाला. इसका परिणाम यह हुआ कि हमने उनके अत्याचारी कृत्य के बदले उन पर आसमान से यातना भेजी.

163 उनसे उस बस्ती का हाल भी पूछो जो सागर-तट पर स्थित थी. जब वह सबत (अर्थात शनिवार) के दिन के संबंध से अल्लाह के आदेश का उल्लंघन करते थे (सबत का दिन उनके लिए सिर्फ़ और सिर्फ़ इबादत के लिए निश्चित किया गया था, उस दिन इबादत के सिवा हर काम निषिद्ध था). जब उनके सबत का दिन होता तो मछलियाँ उभर-उभरकर सतह पर उनके सामने आती थीं और सबत के सिवा दूसरे दिनों में न आती थीं. ऐसा इसलिए होता था कि हम उनकी अवज्ञा के कारण उन्हें परीक्षा में डाल रहे थे.

164 और उनमें से एक समूह ने (दूसरे समूह से) कहा, तुम ऐसे लोगों को क्यों उपदेश दिए जा रहे हो जिन्हें अल्लाह नष्ट करने वाला है या उन्हें सख़्त सज़ा देने वाला है. उन्होंने उत्तर दिया, हम यह सब कुछ तुम्हारे रब के सामने स्वयं को दोषमुक्त करने हेतु करते हैं (अर्थात हम पर यह दोष न आए कि हमने उपदेश-कार्य नहीं किया) और इस हेतु कि शायद वह (उपदेश ग्रहण करके) ख़ुदा के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनें.

165 फिर जब उन्होंने वे बातें भुला दीं जिनका उन्हें उपदेश किया गया था. तो हमने उन लोगों को बचा लिया जो बुराई से रोकते थे और अत्याचारियों को उनकी अवज्ञा के कारण कठोर यातना में पकड़ लिया.

166 फिर जब वे पूरी उद्दंडता के साथ वही कुछ करते रहे जिससे उन्हें रोका गया था. तो हमने उनसे कहा, बंदर हो जाओ अपमानित और तिरस्कृत.

167 और याद करो जब तुम्हारे रब ने यह घोषित किया कि वह यहूदियों पर क़यामत के दिन तक ऐसे लोग भेजता रहेगा जो उन्हें अत्यंत कष्टप्रद यातना दें. निस्संदेह, तुम्हारा रब सज़ा देने में तीव्र है और निस्संदेह वह क्षमा तथा दया से भी काम लेने वाला है. 168 हमने उन्हें समूह-समूह करके धरती पर विभाजित कर दिया. उनमें कुछ भले हैं और कुछ उससे भिन्न और हम उन्हें अच्छी तथा बुरी परिस्थितियों से परीक्षा में डालते रहे, इस उद्देश्य से कि कदाचित वे पलट आएँ.

169 फिर उनके पीछे ऐसे अयोग्य लोगों ने उनकी जगह ली (अर्थात पहली पीढ़ियों के पश्चात ऐसी पीढ़ियाँ आयीं) जो अल्लाह की किताब के उत्तराधिकारी होकर भी इसी तुच्छ संसार का सामान समेटने में लगे रहते हैं और कहते हैं, हमें अवश्य क्षमा कर दिया जाएगा. और यदि उस जैसा और सामान उनके पास आए तो वे उसे भी ले लेंगे. क्या उनसे किताब के द्वारा यह प्रतिज्ञा नहीं ली गयी थी कि अल्लाह से संबंध जोड़कर सत्य के सिवा और कोई बात न कहें? और जो उसमें है उसे वे स्वयं (बार-बार) पढ़ भी चुके हैं. (निस्संदेह!) मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में प्राप्त होने वाला घर बेहतर है, उन लोगों के लिए जो अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) हैं. क्या तुम अपनी बुद्धि का उपयोग नहीं करते ?

170 और जो लोग अल्लाह की किताब को मजबूती से थामते हैं और नमाज़-रूपी इबादत नियमित रूप से करते हैं. निश्चय ही हम सुधार करने वालों का कर्म-फल नष्ट नहीं करते. 171 और याद करो जब हम ने पहाड़ को इस प्रकार उनके ऊपर (अर्थात इसराईल की संतान पर) उठाया मानो कि वह कोई छत्र हो. और उन्होंने समझा कि वह उन पर गिर पड़ेगा. (हमने कहा,) जो कुछ हमने दिया है उसे मज़बूती से थामे रहो और जो कुछ उसमें लिखा है उसे याद रखो, ताकि तुम अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बन जाओ.

172 और याद करो जब तेरे रब ने आदम की संतान की पीठों से उनकी संतति निकाली (अर्थात समस्त मानवीय इतिहास में पीढ़ी दर पिढ़ी पैदा होने वाले सारे इंसानों को एक साथ इकट्ठा किया). और स्वयं उन्हीं को उनके ऊपर गवाह बनाते हुए पूछा, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ ? उन्होंने कहा, ज़रूर! आप ही हमारे रब हैं, हम इसकी गवाही देते हैं, यह हमने इसलिए किया कि तुम क़यामत के दिन कहीं यह न कहने लगो कि हम तो इस बात से बेख़बर थे.

173 (सारे इंसानों से यह प्रण) इसलिए भी लिया गया कि तुम यह कहने न लगो कि अल्लाह के साझीदार ठहराने का आरंभ तो हमारे पूर्वजों ने किया और हम उनके बाद उनकी संतान में पैदा हुए तो क्या तू हमें उन अपराधी लोगों के अपराधी कृत्यों पर नष्ट करेगा?

174 इस तरह हम हमारे संदेश स्पष्ट रूप से बयान करते हैं, ताकि वे हमारी ओर पलट आएँ.

175 (पैग़ंबर!) इन्हें उस व्यक्ति का हाल सुनाओ जिसे हमने अपने संदेश प्रदान किए थे, लेकिन वह उनसे निकल भागा. फिर शैतान उसके पीछे पड़ गया और वह पथभ्रष्टों में से हो गया.

176 यदि हम चाहते तो उसे इन संदेशों के माध्यम से ऊँचा उठा देते, लेकिन वह तो ज़मीन का हो रहा था (अर्थात ख़ुदा के मार्गदर्शन की ओर पीठ करके दुनियावी मामलात में बुरी तरह फँस चुका था) और अपनी इच्छाओं का अनुसरण करता रहा. उसकी मिसाल कुत्ते जैसी है. यदि तुम उस पर बोझ लादो तब भी वह हाँफेगा और यदि उसे छोड़ दो तब भी हाँफेगा. यही मिसाल उन लोगों की है, जिन्होंने हमारे संदेशों को झुठलाया. तो तुम उन्हें यह वृत्तांत सुनाते रहो, ताकि वे चिंतन करें.

177 बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने हमारे संदेशों को झुठलाया और वे स्वयं अपने ही ऊपर अत्याचार करते रहे.

178 जिसे अल्लाह मार्ग दिखाए वही सीधा मार्ग पाता है. और जिसे अल्लाह भटका दे, तो ऐसे ही लोग घाटे में पड़ने वाले हैं.

179 निश्चय ही हमने बहुत से जिन्नों और इंसानों का सृजन जहन्नम के लिए किया है. उनके पास दिल हैं, लेकिन वे उनसे सोचते नहीं. उनके पास आँखें हैं, लेकिन वे उनसे देखते नहीं. उनके पास कान हैं, लेकिन वे उनसे सुनते नहीं. वे जानवरों की तरह हैं, बल्कि उनसे भी अधिक पथभ्रष्ट. यही लोग हैं जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं.

180 और अल्लाह ही के लिए हैं अच्छे (गुणवाचक) नाम, तो तुम उन्हीं के द्वारा उसे पुकारो. और उन लोगों को छोड़ दो जो उसके नामों के संबंध से कुटिलता का (अर्थात टेढ़ेपन का) अंगीकार करते हैं. तो जो कुछ वे करते हैं उसका प्रतिफल वे पाकर रहेंगे.
181 हमने जिन्हें सृजित किया है उनमें एक समूह ऐसा भी है जो सच्चाई के अनुसार लोगों का मार्गदर्शन करता है और उसी

के अनुसार निर्णय करता है.
182 जिन लोगों ने हमारी संदेशयुक्त निशानियों को झुठलाया, हम उन्हें धीरे-धीरे ऐसे तरीक़े से तबाही की ओर ले जाएंगे कि उन्हें ख़बर तक न होगी.
183 मैं तो उन्हें ढील दिए जा रहा हूँ, निश्चय ही मेरे दाँव का कोई तोड़ नहीं.

184 और क्या इन लोगों ने कभी सोचा नहीं, कि उनके साथी को कोई उन्माद नहीं. वह तो केवल साफ़-साफ़ सचेत करने वाला है.

185 क्या इन लोगों ने आसमानों और धरती के प्रबंध पर ध्यान नहीं दिया? और हर वह चीज़ जो अल्लाह ने बनाई है उसे नहीं देखा? और क्या यह भी उन्होंने नहीं सोचा कि उनकी ज़िंदगी की मोहलत समाप्त होने को है? फिर आख़िर इस (क़ुरआन) के बाद अब वह कौनसी बात हो सकती है, जिस पर वे ईमान लाएंगे?

186 जिसे अल्लाह मार्ग से वंचित रखे. उसके लिए कोई मार्गदर्शक नहीं. वह तो उन्हें उनकी उद्दंडता में भटकने के लिए छोड़ देता है.

187 (पैग़ंबर!) लोग तुमसे क़यामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब आएगी? कह दो, उसका ज्ञान मेरे रब ही के पास है. वही उसके निर्धारित समय पर उसे प्रकट करेगा. वह आसमानों और ज़मीन में बोझल हो गयी है. बस, अचानक ही वह तुम पर आ जाएगी. वह तुमसे इस तरह पूछते हैं, जैसे तुम उसका ज्ञान प्राप्त कर चुके हो. कहो, उसका ज्ञान तो केवल अल्लाह ही के पास है, लेकिन अधिकतर लोग इस वास्तविकता को नहीं जानते.

188 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, मैं न तो अपने भले का मालिक हूँ और न बुरे का. बस अल्लाह ही जो चाहता है वह होता है. यदि मुझे परोक्ष का ज्ञान होता तो मैं बहुत से लाभ अपने लिए प्राप्त कर लेता और मुझे कभी कोई हानी न पहुँचती. मैं तो मात्र एक सचेत करने वाला और शुभ-सूचना सुनाने वाला हूँ उन लोगों को, जो मेरी बात माने.

189 वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से बनाया उसका जोड़ा, ताकि तुम उसके पास सुकून प्राप्त करो (पति-पत्नी एक-दूसरे के लिए सुकून का माध्यम हैं). फिर जब मर्द ने औरत को ढाँक लिया तो उसे एक हल्का-सा गर्भ ठहर गया. फिर वह उसको लिए फिरती रही. फिर जब वह बोझल हो गयी तो (पति-पत्नी) दोनों ने मिलकर, अपने रब अल्लाह से दुआ की, यदि तूने हमें भली-चंगी संतान दी, तो हम तेरे कृतज्ञ होंगे. 190 लेकिन जब अल्लाह ने उन्हें भली-चंगी संतान दे दी तो वे उसकी देन में दूसरों को उसका भागीदार ठहराने लगे. अल्लाह, उसके साझीदार ठहराने की उनकी (निराधार एवं काल्पनिक) बातों से उच्च है.

191 क्या वे ऐसों को ख़ुदा का साझी ठहराते हैं जो किसी चीज़ का सृजन नहीं करते, बल्कि वे स्वयं सृजित किए जाते हैं. 192 और न वे उन पुकारने वालों की सहायता कर सकते हैं और न स्वयं अपनी ही सहायता कर सकते हैं.

193 यदि तुम उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुलाओ तो वे तुम्हारे पीछे न चलेंगे. — तुम्हारा उन्हें बुलाना या उनके संबंध से चुप रहना दोनों समान है. 194 जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वे तुम्हारे ही जैसे बंदे हैं (अर्थात सृजित किए हुए हैं). तो तुम उन्हें पुकारो, वे तुम्हारे पुकारने का उत्तर दें, यदि तुम सच्चे हो.

195 (जिन बुतों को तुम पूजते हो) क्या उनके पाँव हैं जिससे वे चलते हों या उनके हाथ हैं जिससे वे पकड़ते हों या उनके पास आँखें हैं जिनसे वे देखते हों या उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हों. (पैग़ंबर!) इनसे कहो, बुला लो अपने ठहराए हुए साझीदारों को. फिर तुम मेरे विरुद्ध चालें चलो और मुझे किसी प्रकार की मोहलत न दो. 196 निश्चय ही मेरा कारसाज (अर्थात काम बनाने वाला एवं संवारने वाला) अल्लाह है, जिसने यह किताब उतारी है. और वही सदाचारी लोगों का संरक्षण करने वाला है. 197 इसके विपरीत तुम अल्लाह के सिवा जिन्हें पुकारते हो वे न तुम्हारी सहायता कर सकते हैं और न स्वयं अपनी ही सहायता कर सकते हैं. 198 और यदि तुम उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुलाओ, तो वे तुम्हारी बात सुन भी नहीं सकते. देखने में तुम्हें ऐसा नज़र आता है कि वे तुम्हारी ओर देख रहे हैं, लेकिन वास्तव में, वे कुछ भी नहीं देखते.

199 (पैग़ंबर!) क्षमा करने की नीति अपनाओ और भले काम का हुक्म दो और अज्ञानी लोगों से न उलझो. 200 और यदि शैतानी विचार तुम्हारे मन में प्रवेश करे, तो अल्लाह की शरण चाहो. निस्संदेह, वह सुनने वाला, जानने वाला है. 201 निश्चय ही जो लोग अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) होते हैं, जब कभी शैतान के प्रभाव से कोई बुरा विचार उन्हें छू लेता है, तो वे तुरंत चौंक जाते हैं और उन्हें उसी समय सूझ आ जाती

है. 202 और जो शैतान के भाई हैं तो वे उन्हें पथभ्रष्टता में खींचे लिए जाते हैं और उन्हें भटकाने में कोई कमी नहीं करते.

203 (पैग़ंबर!) तुम उनके सामने कोई (चमत्कारिक) निशानी प्रस्तुत नहीं करते, तो वे (इस पर) कहते हैं कि तुम कोई निशानी अपने लिए क्यों न छाँट लाए? कहो, मैं उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरे रब की ओर से मुझ पर उतारा जाता है. यह (क़ुरआन) विवेकपूर्ण बातें हैं तुम्हारे रब की ओर से और मार्गदर्शन तथा दयालुता है ईमान लाने वालों के लिए.

204 जब क़ुरआन तुम्हारे सामने पढ़ा जाए तो उसको ध्यानपूर्वक सुनो और (सुनते समय) चुप रहो, ताकि तुम पर दया की जाए. 205 (पैग़ंबर!) सुबह व शाम अपने रब को याद किया करो. मन ही मन में गिड़गिड़ाते हुए और डरते हुए और (ज़बान से भी) धीमी आवाज़ के साथ अपने रब की याद किया करो. और तुम उन लोगों में से न होना जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं. 206 निस्संदेह! जो तुम्हारे रब के सान्निध्य में हैं (अर्थात फ़रिश्ते), वे कभी अपनी बढ़ाई के घमंड में आकर उसकी इबादत से मुँह नहीं मोड़ते. वह उसका महिमागान करते हैं और उसी के आगे झुके रहते हैं.

सूरह–8. अल–अनफ़ाल

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 (पैग़ंबर!) लोग तुमसे अनफ़ाल के संबंध से पूछते हैं (अनफ़ाल अर्थात युद्ध में
पराजित पक्ष की ओर से प्राप्त होने वाला माल). कहो कि अनफ़ाल, अल्लाह और उसके
पैग़ंबर के हैं. तो तुम लोग अल्लाह का डर रखो और आपस के संबंधों को ठीक रखो.
और अल्लाह तथा उसके पैग़ंबर की आज्ञा का पालन करो, यदि तुम ईमान रखने वाले हो.
2 वास्तव में ईमान लाने वाले तो वे लोग हैं, जब अल्लाह की याद की जाए तो उनके दिल
काँप उठें और उनके सामने जब उसके संदेश पढ़े जाएँ तो उससे उनका ईमान बढ़ जाता
है. और वे अपने रब पर भरोसा रखते हैं. 3 और वह नित्य रूप से नमाज़ अदा करते हैं
और हमने जो कुछ उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं. 4 यही लोग वास्तव में ईमान
वाले हैं. उनके लिए उनके रब के पास बड़े दर्जे हैं और (उनकी ग़लतियों की) क्षमा है
और सम्मानित आजीविका है.

5 (बद्र के युद्ध के समय) तुम्हारे रब ने तुम्हें तुम्हारे घर से एक उद्देश्य के साथ
निकाला, जबकि ईमान वालों में से एक समूह को यह अप्रिय था. 6 वे सत्य स्पष्ट होने के
पश्चात भी तुमसे झगड़ रहे थे, मानो वे आँखों देखे मृत्यु की ओर हाँके जा रहे हैं. 7 और
(याद करो) जब अल्लाह वादा कर रहा था कि (शत्रु के) दो समूहों में से एक समूह तुम्हें
मिलेगा. और तुम चाहते थे कि तुम्हें कमज़ोर समूह मिले. लेकिन अल्लाह चाहता था कि
अपने वचनों से सत्य को सत्य कर दिखाए और सत्य का इन्कार करने वालों की जड़
काट दे, 8 ताकि ‘सत्य’ सत्य सिद्ध हो जाएँ और ‘असत्य’ असत्य सिद्ध हो जाए,
चाहे यह अपराधियों को कितना ही अप्रिय लगे.

9 याद करो, जब तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे, तो उसने तुम्हारी फ़रियाद
सुन ली. (उसने जवाब में कहा,) मैं तुम्हारी सहायता के लिए एक के बाद एक इस प्रकार
एक हज़ार फ़रिश्ते भेज रहा हूँ. 10 अल्लाह ने यह केवल इसलिए किया कि यह एक

शुभ-सूचना हो और तुम्हारे दिल इससे संतुष्ट हो जाएँ. और मदद तो अल्लाह ही के पास से आती है. निस्संदेह, अल्लाह प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है. 11 याद करो, जब अल्लाह ने अपनी ओर से ऊँघ के रूप में तुम्हें निश्चिंतता (तथा निर्भयता) की दशा में लीन कर दिया. और आसमान से तुम्हारे लिए पानी उतारा, ताकि तुम्हें उसके द्वारा पाक व साफ़ करे. और तुमसे शैतान द्वारा डाली गयी गंदगी को दूर कर दे. और तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और तुम्हारे क़दमों को जमा दे. 12 और याद करो, जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों की ओर यह ईश-आदेश भेजा कि वे (ईमान वालो तक यह संदेश पहुँचाएं कि) मैं तुम्हारे साथ हूँ. और (यह भी आदेश दिया कि) तुम ईमान वालों को (मोर्चे पर) जमाए रखो. मैं उन लोगों के दिलों में दहशत डाल देता हूँ जो सत्य का इन्कार करने वाले हैं. तो (ऐ ईमान रखने वालो!) तुम उनकी गरदनों पर मारो और उनके हर जोड़ पर चोट लगाओ. 13 यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़ंबर का विरोध किया और जो कोई अल्लाह तथा उसके पैग़ंबर का विरोध करेगा, तो निस्संदेह, अल्लाह भी कड़ी सज़ा देने वाला है. 14 यह है (इस दुनिया में तुम्हारी सज़ा), तो इसका मज़ा चखो और यह भी जान लो कि (मृत्यु-पश्चात जीवन में) सत्य का इन्कार करने वालों के लिए आग की यातना है.

15 ऐ ईमान लाने वालो! जब एक सेना के रूप में सत्य का इन्कार करने वालों से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उनसे पीठ न फेरो. 16 जिसने भी ऐसे अवसर पर पीठ फेरी, सिवाय इसके कि ऐसा करना युद्ध रणनीति का भाग हो, या दूसरी सेना की टुकड़ी से जा मिलने के लिए ऐसा किया जाए (तो उस पर कोई आक्षेप नहीं, लेकिन इसके अलावा जो पीठ फेरेगा) तो वह अल्लाह के प्रकोप में घिर जाएगा. उसका ठिकाना जहन्नम होगा. और वह क्या ही बुरा ठिकाना है!

17 (ऐ ईमान लाने वालो! इस सत्य को ख़ूब जान लो कि) तुमने उन्हें क़त्ल नहीं किया, बल्कि अल्लाह ने उन्हें क़तल किया. (पैग़ंबर!) जब तुमने उनकी ओर (मिट्टी और कंकड़) फेंका, तो तुमने नहीं फेंका, बल्कि अल्लाह ने फेंका (ईमान वालों के हाथ तो इस काम के लिए उपयोग में लाए गए). यह इसलिए हुआ कि अल्लाह ईमान वालों को एक उत्तम परीक्षा से सफलतापूर्वक गुज़ार दे. निस्संदेह, अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है. 18 यह है (अल्लाह की योजना), अल्लाह सत्य का इन्कार करने वालों की चालों को निष्क्रिय करके रहेगा. 19 (पैग़ंबर! कह दो,) यदि तुम निर्णय चाहते थे तो निर्णय तुम्हारे सामने आ गया. और यदि तुम मान जाओ तो यह तुम्हारे लिए अच्छा है. लेकिन यदि तुम पुनः वही करोगे तो हम भी वही करेंगे. और तुम्हारा जत्था चाहे कितना ही अधिक हो, तुम्हारे कुछ काम न आएगा. और यह कि अल्लाह तो ईमान वालों के साथ है.

20 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह और उसके पैग़ंबर का आज्ञापालन करो. और आदेश सुनने के बाद उससे मुँह न मोड़ो. 21 और उन लोगों की तरह न हो जाओ, जिन्होंने कहा कि हमने सुना, हालाँकि वे नहीं सुनते. 22 निस्संदेह, अल्लाह की दृष्टि में सबसे बुरे प्राणधारी वे बहरे-गूँगे लोग हैं जो अपनी बुद्धि का उपयोग नहीं करते.
23 यदि अल्लाह जानता कि उनमें भी कुछ भलाई है (अर्थात उनके अंदर सन्मार्ग प्राप्ति की थोड़ी सी भी हलचल होती) तो वह अवश्य (उसकी बात) सुनने की उन्हें सद्बुद्धि देता. लेकिन (भलाई के बिना) अगर वह उन्हें सुनवाता तो वे मुँह फेर कर भागते, बेरुख़ी के साथ.

24 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह व उसके पैग़ंबर की पुकार का उत्तर दो (respond करो), जबकि उसका पैग़ंबर तुम्हें उस चीज़ की ओर बुला रहा है जो तुम्हें जीवन प्रदान करने वाली है (अर्थात तुम्हारे जीवन को सार्थक बनाने वाली चीज़ की ओर वह बुला रहा है). और जान रखो कि अल्लाह आदमी और उसके दिल के बीच में आ

जाता है (अर्थात अल्लाह को इंसान के दिल की हर बात का ज्ञान होता है और इंसान का दिल पूरी तरह अल्लाह के क़ाबू में है). और यह कि तुम उसी के पास इकट्ठे किए जाओगे. 25 और उस फ़ितने के प्रति सचेत रहो जो अपनी लपेट में विशेष रूप से सिर्फ़ उन्हीं लोगों को नहीं लेगा, जिन्होंने तुम में से अत्याचारी कृत्य किए हों. जान रखो कि अल्लाह कड़ी सज़ा देने वाला है.

26 याद करो वह समय, जब तुम थोड़े थे और देश में कमज़ोर समझे जाते थे. तुम डरते रहते थे कि कहीं लोग तुम्हें मिटा न दें. फिर अल्लाह ने तुम्हें आश्रयस्थान प्रदान किया. और अपनी मदद से तुम्हें मज़बूती प्रदान की. और स्वच्छ तथा अच्छी चीज़ों की जीविका दी, ताकि तुम अल्लाह के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करो. 27 ऐ ईमान लाने वालो! तुम अल्लाह और उसके पैग़ंबर के साथ विश्वासघात न करो और न अपनी अमानतों के मामले में कपट से काम लो, हालाँकि तुम जानते हो. 28 और जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान परीक्षा की सामग्री है. और यह कि अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल है.

29 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! यदि तुम अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहोगे तो वह तुम्हें कसौटी प्रदान करेगा (अर्थात योग्य-अयोग्य, सत्य-असत्य में अंतर करने की योग्यता प्रदान करेगा) और वह तुमसे तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देगा और तुम्हें क्षमा करेगा. अल्लाह बड़ी कृपा करने वाला है. 30 और याद करो (ऐ पैग़ंबर!) जब सत्य का इन्कार करने वाले तुम्हारे विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे कि तुम्हें या तो क़ैद कर दें या क़तल कर डालें या तुम्हें देश से निकाल बाहर करें. वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह भी अपनी योजना बना रहा था. अल्लाह सबसे उत्तम योजनाकार है.

31 और जब उन्हें हमारे संदेश सुनाए जाते हैं, तो वे कहते हैं कि हाँ! हमने सुन लिया. यदि हम चाहें तो ऐसी बातें हम भी बना (कर प्रस्तुत कर) सकते हैं. यह तो बस पूर्वजों की कहानियाँ हैं. 32 और उन्होंने यह भी कहा था कि ऐ अल्लाह! यदि यही सत्य है

और तेरी ओर से है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या और कोई दुखद यातना हम पर ले आ. 33 लेकिन (पैग़ंबर!) अल्लाह ऐसा करने वाला नहीं कि उन्हें यातना दे इस स्थिती में कि तुम उनके बीच उपस्थित हो. और अल्लाह इस स्थिती में भी उन पर यातना लाने वाला नहीं कि (उनमें से कुछ) लोग क्षमा याचना कर रहे हों. 34 लेकिन अल्लाह अब उन्हें क्यों न यातना दे, जबकि वे मस्जिदे-हराम (काबा) से रोकते हैं, हालाँकि वे उसके कोई (वैध रूप से) अधिकार-प्राप्त लोग नहीं हैं. उसके (वैध) अधिकारी तो वे लोग हैं जो अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहते हैं. लेकिन अधिकतर लोग इस बात को नहीं जानते. 35 और (जहाँ इन अवैध रूप से अधिकारी बन बैठे लोगों का संबंध है) अल्लाह के घर के पास उनकी नमाज़ सीटी बजाने और ताली पीटने के सिवा और कुछ नहीं. इसलिए सत्य के इन्कार के कारण अब सज़ा चखो.

36 जिन लोगों ने सत्य को मानने से इन्कार किया वे अपना धन लोगों को अल्लाह की राह से रोकने के लिए खर्च करते हैं वे अभी और खर्च करते रहेंगे. लेकिन अंत में यही प्रयास उनके लिए पश्चाताप बनेगा. और वे परास्त किए जाएंगे. फिर इन सत्य के इन्कार पर जमे रहने वालों को इकट्ठा करके जहन्नम की ओर ले जाया जाएगा. 37 ताकि अल्लाह नापाक को पाक से छाँटकर अलग कर दे; और नापाक को एक-दूसरे पर रखकर एक ढेर बनाए, फिर उसे जहन्नम में झोंक दे. यही लोग हैं घाटे में पड़ने वाले.

38 (पैग़ंबर!) सत्य का इन्कार करने वालों से कहो, यदि वे अब भी बाज़ आ जाएँ तो जो कुछ हो चुका उसके लिए उन्हें क्षमा कर दिया जाएगा. और यदि वे फिर वही करेंगे. तो जो व्यवहार हम (पूर्ववर्ती अपराधियों के साथ) पहले कर चुके हैं (वही इनके साथ भी) किया जाएगा. 39 (ऐ ईमान वालो!) तुम (उपद्रवियों से) युद्ध करो, यहाँ तक कि उपद्रव बाकी न रहे और मज़हब (का पालन) पूरे का पूरा अल्लाह ही के लिए हो जाए. फिर यदि वे बाज़ आ जाएँ, तो अल्लाह उनके कर्मों को देखने वाला है. 40 और यदि वे

मुँह मोड़ें, तो जान रखो कि अल्लाह तुम्हारा संरक्षक है. क्या ही अच्छा संरक्षक है वह! क्या ही अच्छा सहायक है वह!

पारा – 10 41 और जान लो जो कुछ 'ग़नीमत का माल' तुम्हें प्राप्त हो (अर्थात युद्ध में पराभूत पक्ष की ओर से जो कुछ माल तुम्हें प्राप्त हो), उसका पाँचवाँ भाग अल्लाह और उसके पैग़ंबर के लिए और (पैग़ंबर के) नातेदारों तथा अनाथों के लिए और मोहताजों तथा मुसाफ़िरों के लिए है, यदि तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हमने अपने बंदे पर फ़ैसले के दिन उतारी, जिस दिन दोनों सेनाओं में मुठभेड़ हुई (तो यह हिस्सा स्वेच्छा से अदा करो). (निस्संदेह!) अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है.

42 याद करो जब तुम घाटी के इस ओर थे और वे दूसरी ओर थे और (मक्का के व्यावसायिकों का) क़ाफ़िला तुमसे नीचे की ओर (कुछ अंतर पर) था. यदि तुम (मुक़ाबले) का समय परस्पर निर्धारित किए होते तो निश्चित रूप से उस निर्धारण के संबंध से तुममें मतभेद हो जाता. लेकिन जो हुआ वह इसलिए हुआ, ताकि अल्लाह उस बात का निर्णय कर दे, जिसका होना पहले से निश्चित था, ताकि जिसे नष्ट होना है, वह स्पष्ट प्रमाण देखकर नष्ट हो और जिसे जीवन मिलना है वह स्पष्ट प्रमाण के साथ जीवित रहे. निस्संदेह अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है. 43 (पैग़ंबर! याद करो,) जब अल्लाह तुम्हें तुम्हारे स्वप्न में उन्हें थोड़ा दिखा रहा था. अगर वह उन्हें ज़्यादा करके दिखाता तो अवश्य ही तुम हिम्मत हार बैठते और (लढाई के संबंध से) आपस में ही झगड़ने लगते. लेकिन अल्लाह ने तुमको बचा लिया. निश्चय ही वह दिलों के हाल को जानता है.

44 और याद करो, जब तुम्हारी परस्पर मुठभेड़ हुई तो अल्लाह तुम्हारी दृष्टि में उन्हें कम करके और उनकी दृष्टि में तुम्हें कम करके दिखा रहा था, ताकि अल्लाह उस बात की

पूर्तता कर दे जिसकी पूर्तता (करने का उसने) निश्चित कर रखा था. और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं.

45 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जब तुम्हारी मुठभेड़ किसी गिरोह से हो तो तुम जमे रहो और अल्लाह को बहुत याद करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो.

46 और अल्लाह तथा उसके पैग़ंबर की आज्ञा का पालन करो और आपस में न झगड़ो, अन्यथा तुम्हारे भीतर कमज़ोरी पैदा हो जाएगी और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी. और धैर्य से काम लो, निस्संदेह, अल्लाह धैर्य से काम लेने वालों के साथ है.
47 और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से इतराते हुए और (अपनी शान) दिखाते हुए निकले. (और) जो (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, तो जो कुछ वे कर रहे हैं अल्लाह उसे घेरे हुए है (अर्थात वे अल्लाह की पकड़ से बाहर नहीं हैं).

48 और याद करो जब शैतान ने उन (सत्य के) विरोधियों की करतूतों को उनकी अपनी दृष्टि में अच्छे कर्म के रूप में दिखाए थे और उसने उनसे कहा था कि लोगों में से कोई भी आज तुम्हें परास्त नहीं कर सकता मैं तुम्हारे साथ हूँ. लेकिन जब दोनों गिरोह आमने-सामने हुए, तो वह उलटे पाँव फिर गया और कहने लगा, मेरा तुमसे कोई संबंध नहीं, मैं वह कुछ देख रहा हूँ जो तुम नहीं देखते. मैं अल्लाह से डरता हूँ. अल्लाह कड़ी सज़ा देने वाला है.
49 याद करो, जब कपटाचारी और वे लोग जिनके दिलों में रोग था, कह रहे थे कि इन (ईमान वालों) को तो इनके दीन (अर्थात मज़हब) ने धोके में डाल रखा है. लेकिन (सत्य यह है कि) जो कोई अल्लाह पर भरोसा करता है (उसे अवश्य यह अनुभूति होती है कि) अल्लाह बड़ा सामर्थ्यशाली और बुद्धिमान है.

50 और यदि तुम देखते (कि उनका क्या हाल होता है) जब (हमारे) फ़रिश्ते उन सत्य का इन्कार करने वालों के प्राण निकालते हैं तो वे उनके चेहरों तथा उनकी पीठों पर मारते जाते हैं और कहते हैं कि लो अब जलने की सज़ा भुगतो.
51 यह बदला है उसका

जो तुमने अपने हाथों आगे भेजा था. और अल्लाह अपने बंदों पर अत्याचार करने वाला नहीं. 52 (यह सब कुछ इन सत्य के विरोधियों के साथ उसी तरह पेश आया) जैसे फ़िरऔन वालों और उनसे पहले के (सत्य के विरोध तथा इन्कार करने वाले) लोगों के साथ पेश आता रहा है. उन्होंने अल्लाह की निशानियों (द्वारा प्रकट सत्य) को झुठलाया. तो अल्लाह ने उनके गुनाहों के कारण उन्हें पकड़ लिया. निस्संदेह अल्लाह शक्तिशाली है तथा कठोर दंड देने वाला है. 53 यह इसलिए हुआ कि अल्लाह किसी क़ौम को प्रदान की हुई अपनी नेमत को उस वक़्त तक नहीं बदलता (अर्थात उसे वापस नहीं लेता) जब तक वह क़ौम अपने दिल की हालत न बदल ले. निस्संदेह, अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है. 54 फ़िरऔन वालों तथा जो उनसे पहले हुए (उन सत्य के विरोधियों के साथ) जो कुछ पेश आया, वह इसी नियम के अनुसार था. उन्होंने अपने रब की संदेश-युक्त निशानियों को झुठलाया. फिर हमने उनके पापों के कारण उन्हें नष्ट कर दिया. और हमने फ़िरऔन वालों को डुबो दिया. और यह सब लोग अत्याचारी थे.

55 निस्संदेह सभी जीवधारियों में सबसे बुरे, अल्लाह की दृष्टि में वे लोग हैं जिन्होंने सत्य को मानने से इन्कार कर दिया और वे ईमान लाने वाले नहीं हैं (अर्थात जिनके जीवन की समाप्ति सत्य के इन्कार तथा विरोध के साथ होती है). 56 (पैग़ंबर!) जिनसे तुमने समझौता कर रखा है, वे हर अवसर पर उसको तोड़ते हैं और वे अल्लाह से तनिक भी नहीं डरते. 57 तो यदि ये लोग तुम्हें लड़ाई में मिल जाएँ. तो उनके साथ इस प्रकार पेश आओ (अर्थात उन्हें इस प्रकार सबक़ सिखाओ) कि जो उनके पीछे हैं वह भी देखकर भाग जाएँ, शायद वे (इस परिणाम को देखकर) चेतें. 58 और यदि कभी तुम्हें किसी क़ौम से विश्वासघात की आशंका हो (अर्थात समझौता तोड़े जाने का डर हो) तो तुम भी उसी प्रकार ऐसे लोगों के साथ हुई संधि को खुल्लम-खुल्ला उनके आगे फेंक दो. निस्संदेह, अल्लाह विश्वासघात करने वालों को पसंद नहीं करता.

59 जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया, वे यह न समझें कि वे (अल्लाह की पकड़ से) निकल भाग सकते हैं. वे कदापि अल्लाह को हरा नहीं सकते.
60 और उनसे (अर्थात सत्य के विरोधियों से) लड़ने के लिए तुमसे जितना संभव हो सेना (कुमक) और (युद्ध के लिए प्रशिक्षित) घोड़े तैयार रखो, ताकि इसके द्वारा अल्लाह के शत्रुओं और अपने शत्रुओं तथा इनके अतिरिक्त उन शत्रुओं को भी भयभीत कर दो, जिन्हें तुम नहीं जानते, लेकिन अल्लाह उन्हें जानता है. और अल्लाह के मार्ग में तुम जो कुछ खर्च करोगे, उसका पूरा-पूरा बदला तुम्हें दिया जाएगा और तुम्हारे साथ किसी प्रकार का अन्याय नहीं किया जाएगा. 61 और (पैग़ंबर!) यदि विरोधी शांति-समझौते की इच्छा प्रकट करें तो तुम भी उसके लिए आगे बढ़ो और अल्लाह पर भरोसा रखो. निस्संदेह, अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है. 62 और यदि सत्य के विरोधी (शांति-समझौते की आड़ में) तुम्हें धोका देना चाहें, तो अल्लाह तुम्हारे लिए पर्याप्त है. वही है जिसने तुम्हें अपनी ओर से सहायता प्रदान करके और तुम्हें ईमान वाले साथी प्रदान करके तुम्हारी हिमायत की. 63 और ईमान वालों के दिलों को आपस में एक-दूसरे से जोड़ दिया (अर्थात परस्पर रज़ामंदी निर्माण कर दी). यदि तुम धरती का सारा धन भी खर्च कर डालते तब भी तुम उनके दिलों को परस्पर न जोड़ सकते थे, लेकिन अल्लाह ने उन्हें परस्पर जोड़ दिया. निस्संदेह, वह प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है.

64 पैग़ंबर! अल्लाह तुम्हारे लिए और तुम्हारा अनुसरण करने वाले ईमान वालों के लिए पर्याप्त है. 65 पैग़ंबर! ईमान वालों को (रक्षात्मक) युद्ध के लिए प्रेरित करो, यदि तुममें बीस व्यक्ति जमे रहने वाले होंगे तो वे दो सौ पर भारी होंगे और यदि तुममें ऐसे सौ होंगे तो वे सत्य का इन्कार करने वाले हज़ार लोगों पर विजय प्राप्त करेंगे, क्योंकि सत्य का इन्कार करने वाले नासमझ लोग हैं.

66 अब अल्लाह ने तुम पर से बोझ हल्का कर दिया, क्योंकि वह जानता है कि अभी तुममें कमज़ोरी है (अर्थात तुम्हारे ईमान में कमज़ोरी है). तो यदि तुममें सौ जमे रहने वाले होंगे तो वे दो सौ पर भारी होंगे और यदि तुममें हज़ार होंगे तो अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार पर भारी रहेंगे. और अल्लाह उन्हीं लोगों के साथ होता है जो जमे रहते हैं.
67 ख़ुदा के पैग़ंबर के लिए यह उचित नहीं कि वह (सत्य को मिटाने पर तुले हुए लोगों को) युद्ध कैदी बनाएँ. (उसे चाहिए कि) वह धरती पर उन (सत्य को मिटाने के लिए सक्रिय) लोगों को कुचल कर रख दे. तुम लोग इसी संसार की सामग्री चाहते हो और अल्लाह (तुम्हारे लिए) मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन (की सफलता) चाहता है. अल्लाह प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है.

68 यदि अल्लाह का लिखा हुआ पहले से मौजूद न होता तो जो कुछ नीति तुमने अपनाई है, उसके कारण तुम्हें कठोर यातना पहुँच जाती.
69 तो जो कुछ ग़नीमत का माल तुमने प्राप्त किया है (अर्थात युद्ध में पराभूत पक्ष की ओर से जो माल तुम्हें मिला है) उसको खाओ. वह वैध एवं पाक है. और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो. निस्संदेह, अल्लाह क्षमा करने वाला तथा दयावान है.

70 पैग़ंबर! तुम्हारे क़ब्ज़े में जो क़ैदी हैं उनसे कहो, यदि अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई पाएगा, तो वह तुम्हें उससे अधिक उत्तम प्रदान करेगा, जो तुमसे छिन गया है, और तुम्हें क्षमा कर देगा. (निस्संदेह) अल्लाह अत्यंत क्षमाशील एवं दयावान है.
71 लेकिन यदि वे तुम्हारे साथ विश्वासघात करना चाहेंगे (इसमें कोई अचरज की बात नहीं). इससे पहले वे अल्लाह के साथ विश्वासघात कर चुके हैं. तो अल्लाह ने तुम्हें उन पर नियंत्रण दे दिया. अल्लाह सब कुछ जानने वाला तथा बुद्धिमान है.

72 जो लोग ईमान लाए और उन्होंने (सत्य का साथ देने के लिए) अपना घर-बार छोड़ा और अल्लाह के मार्ग में अपनी जान तथा अपने माल के साथ जिहाद किया (अर्थात

अपने तन, मन, धन के साथ अल्लाह के कार्य के लिए अपने आप का झोंक दिया). और
वह लोग जिन्होंने इन घर-बार छोड़ने वालों को जगह दी और उनकी सहायता की, यही
लोग वास्तव में एक-दूसरे के मित्र हैं. रहे वे लोग जो ईमान तो लाए, लेकिन उन्होंने
(सत्य का साथ देने के लिए) अपना घर- बार नहीं छोड़ा, तो ऐसे लोगों का संरक्षण
करने की तुम्हारी ज़िम्मेदारी नहीं, जब तक कि वे अपना घर-बार न छोड़ें. लेकिन यदि वे
मज़हब के मामले में तुमसे सहायता माँगे तो तुम पर (उनकी) सहायता करना अनिवार्य है,
सिवाय इसके कि यह सहायता किसी ऐसी क़ौम के विरुद्ध हो जिनके साथ तुम्हारी संधि
है. तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसे देख रहा है. 73 और जिन लोगों ने सत्य का
इन्कार किया वे आपस में एक-दूसरे के मित्र हैं. यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो धरती पर
उपद्रव फैलेगा और बड़ा बिगाड़ पैदा होगा.

74 जो लोग ईमान लाए और उन्होंने (सत्य का साथ देने के लिए) अपने घर-बार
को छोड़ा और अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया (अर्थात अपने प्रयत्नों की पराकाष्ठा की).
और जिन लोगों ने (अल्लाह के लिए) बेघरों को जगह दी और उनकी सहायता की —
तो यही लोग हैं सच्चे ईमान वाले. उनके लिए क्षमा और सम्मानित आजीविका है. 75
और जो लोग बाद में ईमान लाए और (अल्लाह के लिए) अपना घर-बार छोड़कर आ
गए और तुम्हारे साथ मिलकर अल्लाह के मार्ग में संघर्षरत हुए तो वे भी तुममें से हैं.
लेकिन अल्लाह की किताब के अनुसार ख़ून के रिश्तेदार (blood relatives)
एक-दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं. निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है.

सूरह–9. अत–तौबा

1 अल्लाह और उसके पैग़ंबर की ओर से यह उद्घोषणा है कि (अब अल्लाह तथा उसके पैग़ंबर का) उन बहुदेववादी लोगों से किसी भी प्रकार का संबंध नहीं (अर्थात अल्लाह तथा उसका पैग़ंबर उनके संबंध से हर दायित्व से मुक्त हैं). जिनसे (पैग़ंबर!) तुमने संधि की थी. 2 तो (ऐ बहुदेववादियो!) तुम इस भू-प्रदेश में और चार महिने चल-फिर लो और जान लो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकते. और यह कि अल्लाह सत्य का इन्कार करने वालों को अपमानित करने वाला है.

3 उद्घोषणा है अल्लाह और उसके पैग़ंबर की ओर से बड़े हज के दिन सब लोगों के लिए कि अल्लाह बहुदेववादियों के संबंध से (किसी भी दायित्व से) बरी है और उसका पैग़ंबर भी. (ऐ बहुदेववादियो!) यदि तुम (सत्य की ओर) पलट आओ तो यह तुम्हारे ही लिए बेहतर है. और यदि तुम मुँह फेरते हो तो जान लो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकते. (पैग़ंबर!) सत्य का इन्कार करने वालों को दुखदायी यातना की शुभ-सूचना दे दो. 4 लेकिन जिन बहुदेववादियों ने तुमसे समझौता किया था. फिर उन्होंने (इस समझौते के मामलों में) तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता की, तो उनसे किया हुआ समझौता उनकी अवधी तक पूरा करो. निस्संदेह अल्लाह सदाचारियों को पसंद करता है.

5 फिर जब वह महीने जिनमें युद्ध निषिद्ध है, बीत जाएँ तो (सत्य को मिटा देने पर तुले हुए) बहुदेववादियों को जहाँ कहीं पाओ, क़तल करो और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरो और हर घात की जगह उनकी ख़बर लेने के लिए बैठो. फिर यदि वे पश्चात्ताप के साथ (सत्य की ओर) पलट आएँ और (व्यवहारिक स्तर पर) नमाज़ की नियमित रूप से अदायगी करें और दानकार्य करें तो उन्हें छोड़ दो. अल्लाह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है. 6 और यदि बहुदेववादियों में कोई आदमी शरण माँगकर तुम्हारे पास

आना चाहे, (और अल्लाह का पैग़ाम सुनना चाहे) तो उसे शरण दे दो, ताकि वह अल्लाह का पैग़ाम सुन ले. फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दो. यह इसलिए कि ये लोग ज्ञान नहीं रखते.

7 इन बहुदेववादियों के साथ अल्लाह और उसके पैग़ंबर का कोई समझौता कैसे रह सकता है (अर्थात ख़ुदा व पैग़ंबर के ज़िम्मे उनके संबंध से कोई दायित्व कैसे हो सकता है) सिवाय उन लोगों के जिनके साथ (पैग़ंबर!) तुमने मस्जिद-हराम (काबा) के निकट समझौता किया था. तो जब तक वे तुमसे सीधे रहें तुम भी उनसे सीधे रहो. निस्संदेह अल्लाह उन लोगों को पसंद करता है जो उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) होते हैं.

8 लेकिन इनके सिवा उन दूसरे बहुदेववादियों से कोई समझौता कैसे क़ायम रह सकता है, जबकि उनका हाल यह है कि यदि वे तुम पर क़ाबू पा जाएँ तो न वे नातेदारी का सम्मान करते हैं और न अपने वचन का. वे अपनी ज़बानों से तुम्हें राज़ी करने का (केवल दिखावे के लिए) प्रयास करते हैं, लेकिन उनके दिल (उनकी मुँह की बातों का) इन्कार करते हैं. और उनमें से अधिकतर अवज्ञाकारी हैं.

9 उन्होंने तुच्छ लाभ प्राप्ति के लिए अल्लाह के संदेशों का सौदा किया और वे (लोगों को) अल्लाह के मार्ग से रोकने लगे. निश्चय ही वह बहुत ही बुरा है जो कुछ वे कर रहे हैं.
10 वे किसी ईमान वाले के संबंध से न तो नाते-रिश्ते की परवाह करते हैं और न दिए हुए
वचन की. यही वे लोग हैं जो सीमा का उल्लंघन करते हैं. 11 यदि वे पश्चात्ताप के साथ
(सन्मार्ग की ओर) पलटें और नित्य नमाज़ अदा करके तथा (आवश्यक) दानकार्य करके (व्यावहारिक स्तर पर अपने सच्चा होने का) सबूत दें तो फिर वे तुम्हारे धर्म-बंधू हैं. और जो जानना चाहते हैं हम उनके लिए अपने संदेश खोल-खोल कर बयान करते हैं.

12 और यदि समझौता करने के पश्चात वे अपनी क़समों को तोड़ डालें और तुम्हारे मज़हब पर चोट करने लगें. तो उन सत्य के विरोध की अगवानी करने वालों से लड़ो. उनकी क़समें कुछ नहीं, (तुम उनसे लड़ो,) ताकि वे बाज़ आ जाएँ. 13 क्या तुम नहीं लड़ोगे ऐसे लोगों से, जिन्होंने अपनी प्रतिज्ञाओं को तोड़ा और (ख़ुदा के) पैग़ंबर को (उसके वतन से) से निकाल देने का दुस्साहस किया. और वही हैं जिन्होंने तुमसे युद्ध में पहल की, क्या तुम उनसे डरोगे, जबकि अल्लाह इस बात का अधिक हक़दार है कि तुम उससे डरो यदि तुम ईमान वाले हो.

14 (तुम) उनसे लड़ो, अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें दंड देगा और उन्हें अपमानित करेगा और उनके मुक़ाबले में तुम्हारी सहायता करेगा और वह तुम ईमान वालों के दिलों को ठंडा करेगा. 15 और अल्लाह उनके दिलों की जलन मिटाएगा. और अल्लाह जिसे चाहेगा क्षमा प्रदान करेगा. अल्लाह सब कुछ जानने वाला तथा बुद्धिमान है.

16 क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम यूँ ही छोड़ दिए जाओगे, हालाँकि अल्लाह ने उन लोगों को अभी छाँटा ही नहीं, जिन्होंने तुममें से (अल्लाह के मार्ग में) जिहाद किया. और अल्लाह तथा उसके पैग़ंबर तथा ईमान वालों के सिवा अन्य किसी को अपना मित्र नहीं बनाया. और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो.

17 बहुदेववादियों का यह काम नहीं कि वे अल्लाह की मसजिदों को आबाद करें (तथा उनका प्रबंधन करें), जबकि उन्होंने स्वयं सत्य के इन्कारी होने की गवाही दी है. ये वे लोग हैं कि उनका किया-धरा सब अकारथ (व्यर्थ) हो गया और वे हमेशा आग में रहने वाले हैं. 18 अल्लाह की मसजिदों को आबाद करना उसका काम है जो अल्लाह पर और अंतिम दिन पर ईमान लाए और नित्य रूप से नमाज़ अदा करे और दान-कार्य करे और अल्लाह के सिवा किसी से न डरे तो ऐसे ही लोग आशा है कि सन्मार्ग पाने वालों में से होंगे.

19 क्या तुम लोगों ने हाजियों को पानी पिलाने तथा मसजिदे-हराम (अर्थात काबा) के प्रबंधन-कार्य को उस व्यक्ति के कार्य के समान ठहरा लिया जो अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाया और उसने अल्लाह के कार्य के लिए अपने आपको झोंक दिया, अल्लाह की दृष्टि में ये दोनों बराबर नहीं. अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता. 20 जो लोग ईमान लाए और उन्होंने (सत्य का साथ देने के लिए) अपना घर-बार छोड़ा और अल्लाह के मार्ग में अपने मालों तथा अपनी जानों से जिहाद किया (अर्थात अपने तन, मन एवं धन के साथ अल्लाह के कार्य के लिए स्वयं को झोंक दिया). उनका दर्जा अल्लाह के यहाँ बड़ा है और यही लोग सफलता प्राप्त करने वाले हैं.

21 उनका रब उन्हें शुभ-सूचना देता है अपनी दयालुता और प्रसन्नता की और ऐसे बागों की जिनमें उनके लिए स्थायी नेमतें होंगी. 22 उनमें वे सदैव रहेंगे. निस्संदेह, अल्लाह के पास बहुत बड़ा प्रतिफल है.

23 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अपने बापों और अपने भाइयों को अपने मित्र न बनाओ यदि वे ईमान की अपेक्षा सत्य के इन्कार को पसंद करे. तुममें से जो लोग उन्हें अपना मित्र बनाएंगे तो ऐसे ही लोग अत्याचारी हैं.

24 (पैग़ंबर!) कह दो, यदि तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारे रिश्ते-नाते वाले और वह धन जो तुमने कमाया है और तुम्हारा वह कारोबार जिसके मंद पड़ जाने का तुम्हें भय हो और तुम्हारे वे घर जो तुमको पसंद हों, (यह सब) तुम्हें यदि अल्लाह और उसके पैग़ंबर और उसके मार्ग में जिहाद करने से अधिक प्रिय है, तो प्रतीक्षा करो, यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला तुम्हारे सामने ले आए. अल्लाह अवज्ञाकारियों को मार्ग नहीं दिखाता.

25 अल्लाह ने बहुत से अवसरों पर तुम्हारी सहायता की है और हुनैन की लड़ाई के दिन भी, जब तुम्हें अपनी संख्या की अधिकता पर गर्व था, लेकिन वह (संख्या की

अधिकता) तुम्हारे कुछ काम न आयी और धरती अपनी विशालता के बावजूद तुम पर तंग हो गयी और तुम पीठ फेरकर भाग निकले. 26 फिर अल्लाह ने अपने पैग़ंबर तथा ईमान वालों पर (अपनी कृपा के रूप में) शांति उतारी और (तुम्हारी मदद के लिए) ऐसी सेनाएँ उतारी जो तुम्हें नज़र न आती थीं. और अल्लाह ने उन सत्य नकारने पर तुले हुए लोगों को सज़ा दी, क्योंकि सत्य का इन्कार करने वालों का यही बदला होता है. 27 फिर इसके बाद अल्लाह जिसको चाहता है (सन्मार्ग की ओर) पलटने की बुद्धि प्रदान करता है. अल्लाह बड़ा क्षमाशील तथा दयावान है. 28 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! वे लोग नापाक हैं, जो अल्लाह के साझीदार ठहराते हैं (अर्थात आध्यात्मिक दृष्टि से नापाक). तो वे इस वर्ष के पश्चात मस्जिदे-हराम (अर्थात मक्कास्थित काबा) के पास न आएँ. और यदि तुम्हें (तिजारत माँद पड़ने के कारण) निर्धनता का भय हो, तो अल्लाह यदि चाहेगा तो अपनी कृपा से तुम्हें संपन्न कर देगा. निस्संदेह अल्लाह सब कुछ जानने वाला और बुद्धिमान है.

29 पूर्ववर्ती किताब वालों में से उन लोगों से लड़ो जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न अंतिम दिन पर और वे अल्लाह तथा उसके पैग़ंबर के हराम (निषिद्ध) ठहराए हुए को हराम नहीं मानते और सत्य धर्म को अपना धर्म नहीं बनाते. (उनसे लड़ो) यहाँ तक कि वे अपनी इच्छा से जिज़िया (अर्थात उनकी रक्षा हेतु लिया जाने वाला कर) नहीं देते और तुम्हारे (राजकीय) वर्चस्व को स्वीकार नहीं कर लेते.

30 यहूदी कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह का बेटा है और इसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह का बेटा है यह उनके अपने मुँह की बातें हैं ये उन लोगों की सी बातें कर रहे हैं जो इनसे पहले सत्य को नकार चुके हैं. अल्लाह की मार होगी उन पर, वह किधर बहके जा रहे हैं.

31 उन्होंने अल्लाह के सिवा अपने धर्म-पंडितों और संन्यासियों को अपना रब बना लिया है, और इसी तरह मरियम के बेटे मसीह को भी. हालाँकि उन्हें सिर्फ़ एक उपास्य

की (जो सच्चा उपास्य है) उपासना करने का आदेश दिया गया था. उस (एकमात्र और सच्चे उपास्य) के सिवा दूसरा कोई उपास्य है ही नहीं. पाक है वह उन बातों से जो उसका साझी ठहराने वाले लोग करते हैं.

32 सत्य का इन्कार करने वाले लोग चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपनी फूँकों से बुझा दें, लेकिन अल्लाह अपने प्रकाश को पूरा करके रहेगा (अर्थात सत्य के प्रकाश को सर्वत्र पहुँचा कर रहेगा) चाहे यह सत्य का इन्कार करने वालों को कितना ही अप्रिय लगे.

33 वह अल्लाह ही है जिसने पैग़ंबर को मार्गदर्शन तथा सत्य-धर्म के साथ भेजा. ताकि सत्य-धर्म को तमाम (मानव-निर्मित) धर्मों पर वर्चस्व प्रदान करे, चाहे यह बहुदेववादियों को कितना ही अप्रिय लगे.

34 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! (पूर्ववर्ती किताब वालों में से उनके) अधिकतर धर्म-पंडित और वैरागी, लोगों का माल अवैध रूप से खाते हैं और लोगों को (उनके सच्चे स्वामी) अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं. और जो लोग सोना तथा चाँदी इकट्ठा करके रखते हैं और उस (इकट्ठा किये हुए धन को) अल्लाह के मार्ग में खर्च नहीं करते, तो उन्हें दुःखदायी सज़ा की ख़ुशख़बरी दे दो.

35 जिस दिन उस (इकट्ठा कर रखी) संपत्ती को जहन्नम की आग में तपाया जाएगा और फिर उसी से उन लोगों की पेशानियों और पहलुओं और पीठों को दाग़ा जाएगा (और कहा जाएगा कि) यह वही है जिसे तुमने अपने लिए इकट्ठा किया था. तो चखो उसका मज़ा जो तुम (अपने लिए) इकट्ठा किया करते थे.

36 निस्संदेह महीनों की गिनती अल्लाह के निकट बारह महीने हैं. यह अल्लाह का बनाया हुआ नियम उस दिन से है जब से उसने आसमान व धरती का निर्माण किया है. उनमें चार महीने ऐसे हैं जिनमें युद्ध (एवं हिंसा) निषिद्ध है. यही है सीधा मार्ग. तो तुम इन

महीनों में (उनके उद्देश्य को नष्ट करके) अपने ऊपर अत्याचार न करो. फिर तुम सब मिलकर उन बहुदेववादियों से लड़ो जो सब मिलकर तुम से लड़ते हैं. और जान लो कि अल्लाह उन लोगों के साथ होता है जो उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) होते हैं.

37 महीनों को हटाना सत्य के इन्कार में (अपनी सीमा से) आगे बढ़ना है. इसके द्वारा सत्य का इन्कार करने वाले पथभ्रष्टता में खींचे चले जाते हैं. किसी वर्ष वे (निषिद्ध) महीने को वैध ठहरा लेते हैं और किसी वर्ष उसे निषिद्ध ठहराते हैं, ताकि अल्लाह के हराम (निषिद्ध) किए हुए महीनों की गिनती पूरी भी कर दें और अल्लाह का हराम किया हुआ हलाल (वैध) भी कर लें. उनके बुरे कर्म (शैतान के द्वारा) उनके लिए आकर्षक बना दिए गए हैं (अर्थात वे बुरे कर्मों को अच्छे जानकर करते हैं). अल्लाह सत्य का इन्कार करने वालों को सन्मार्ग नहीं दिखाता.

38 ऐ ईमान लाने वालो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम्हें अल्लाह के मार्ग में निकलने के लिए कहा जाता है, तब तुम धरती से चिमट जाते हो (अर्थात अपने घर, परीवार, कारोबार से चिमटे रहना पसंद करते हो) क्या तुम मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन के मुक़ाबले में दुनिया के जीवन पर राज़ी (संतुष्ट) हो गये? तो जान लो कि मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन (आख़िरत) की तुलना में वर्तमान दुनिया के जीवन का सामान तो बहुत थोड़ा है.

39 यदि तुम (अल्लाह के मार्ग में) न निकलोगे तो अल्लाह तुम्हें कष्टप्रद दंड देगा और तुम्हारी जगह वह किसी और गिरोह को उठाएगा और तुम अल्लाह का कुछ भी बिगाड़ न सकोगे. और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है.

40 यदि तुम उसकी अर्थात (अल्लाह के पैग़ंबर की) सहायता न भी करो तो अल्लाह स्वयं उसकी सहायता उस समय कर चुका है, जब सत्य का इन्कार करने वालों ने उसे (मक्का से) इस स्थिती में निकाल दिया था कि वह सिर्फ़ दो में का दूसरा था. जब वह दोनों गुफा

में थे, जब वह अपने साथी से कह रहा था कि चिंता न करो, अल्लाह हमारे साथ है. तो अल्लाह ने अपनी ओर से उस पर मन की शांति (निश्चिंतता) उतारी और उसकी सहायता ऐसी सेनाओं से की जो तुम्हें दिखायी न देती थी. और अल्लाह ने सत्य का इन्कार करने वालों की बात नीची कर दी. अल्लाह ही की बात तो ऊँची है. अल्लाह अत्यंत प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है.

41 (ऐ ईमान रखने वालो!) निकलो (अल्लाह के मार्ग में) चाहे हल्के हो या बोझल (अर्थात यह निकलना तुम्हारे लिए आसान हो या कठिनाई भरा हो) और अपने धन और अपने प्राण से अल्लाह के मार्ग में जिहाद करो (अर्थात अल्लाह के मार्ग में तन, मन, धन के साथ अपने आपको झोंक दो), यह तुम्हारे लिए बेहतर है यदि तुम जानो. 42 (पैग़ंबर!) यदि लाभ (निश्चित रूप से होने वाला होता और) शीघ्र प्राप्त होने वाला होता और यात्रा भी हल्की होती तो वे अवश्य तुम्हारे पीछे हो लेते, लेकिन उन पर तो यह रास्ता बहुत कठिन हो गया. अब वे अल्लाह की क़सम खाकर कहेंगे, यदि हमारे लिए संभव होता तो हम अवश्य तुम्हारे साथ चलते. (सत्य यह है कि इस प्रकार झूठी क़समें खाकर) वे अपने आपको तबाही में डाल रहे हैं. अल्लाह ख़ूब जानता है कि वे झूठे हैं.

43 (पैग़ंबर!) अल्लाह तुम्हें क्षमा करे! तुमने उन्हें (घर पर रुके रहने की) अनुमति क्यों दे दी? (तुम उन्हें अनुमति न देते तो) तुम पर स्पष्ट हो जाता कि कौन लोग सच्चे हैं और झूठों को भी तुम जान लेते. 44 जो लोग (वास्तव में) अल्लाह पर और अंतिम दिन पर विश्वास रखते हैं, वे अपनी जान व अपने माल से जिहाद करने के संबंध से मुक्त किए जाने की तुमसे (कदापि) प्रार्थना नहीं करेंगे. अल्लाह उन लोगों को भली-भाँति जानता है जो उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) होते हैं. 45 (जिहाद से मुक्त किए जाने की) प्रार्थना तो वे लोग करते हैं जो अल्लाह पर और अंतिम दिन पर विश्वास नहीं रखते, उनके दिल संदेह में पड़े हुए हैं और वे अपने संदेह में भटक रहे हैं.

46 यदि वह निकलना चाहते तो अवश्य ही वे इसके लिए कुछ तैयारी कर लेते, लेकिन अल्लाह को उनका उठना पसंद ही न था तो उसने उन्हें (उनके स्थानों पर ही) बैठे रहने दिया और उनसे कह दिया गया कि बैठे रहने वालों के साथ बैठे रहो.

47 यदि वे तुम्हारे साथ निकलते तो तुम लोगों के बीच ख़राबी के सिवा किसी चीज़ को न बढ़ाते और वे तुम्हारे बीच उपद्रव मचाने के लिए दौड़-धूप करते, तुममें भी अभी कुछ ऐसे लोग हैं जो उसकी बातें (कान लगाकर) सुनते हैं. अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है. 48 यह लोग इससे पहले भी उपद्रव मचाने का प्रयास कर चुके हैं और तुम्हारे विरुद्ध गतिविधियों का उलट-फेर करने में लगे रहे, यहाँ तक कि उनकी इच्छा के विपरीत सत्य आ गया और अल्लाह का फ़ैसला प्रकट होकर रहा.

49 उनमें कोई ऐसा भी है जो कहता है, मुझे (जिहाद से) छूट दे दीजिए और मुझे परीक्षा में न डालिए. सुन लो, ऐसे लोग तो परीक्षा में पड़ चुके हैं. निस्संदेह जहन्नम सत्य का इन्कार करने वालों को घेरे हुए है.

50 यदि तुम्हें कोई भलाई पहुँचती है तो उन्हें दुःख होता है और यदि तुम्हें कोई कष्ट पहुँचता है तो वे कहते हैं कि हमने पहले ही अपना काम संभाल लिया था. और वे प्रसन्नता के साथ लौटते हैं.51 (पैग़ंबर!) उनसे कह दो, हमें मात्र वही चीज़ पहुँचेगी जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दी है. वही हमारा स्वामी है. और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए. 52 उनसे कहो, तुम हमारे संबंध से किसी (बुरी) घटना (के घटित होने) की प्रतीक्षा कर रहे हो, लेकिन हमारे साथ जो होगा वह सिर्फ़ दो में से एक भलाई है (अर्थात अल्लाह की राह में प्राण की आहुती या विजय). लेकिन हम तुम्हारे संबंध से जिस चीज़ की प्रतीक्षा कर रहे हैं वह यह है कि अल्लाह अपनी ओर से तुम्हें कोई यातना देता है या (फिर) हमारे हाथों दिलवाता है. तो अब तुम भी प्रतीक्षा करो और हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं.

53 उनसे कहो, तुम अपने धन ख़ुशी से खर्च करो या नाख़ुशी से. तुमसे वह कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा. निस्संदेह तुम अवज्ञाकारी लोग हो. 54 इनके दान स्वीकृत न होने का इसके सिवा अन्य कोई कारण नहीं है कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़ंबर का इन्कार किया है. वह नमाज़ के लिए आते हैं तो अरुचि के साथ आते हैं और खर्च करते हैं तो वह भी अनिच्छा के साथ. 55 तो उनके माल और उनकी संतान (की अधिकता) को देखकर प्रभावित मत होना (अर्थात उसे किसी प्रकार का महत्व न देना). अल्लाह तो चाहता है कि इन्हीं चीज़ों के द्वारा इन्हें इसी जीवन में यातना दे और इनके प्राण इस हाल में निकलें कि वे सत्य का इन्कार कर रहे हों. 56 वह अल्लाह की क़सम खाकर कहते हैं कि वे तुम्हीं में से हैं, हालाँकि वे तुममें से नहीं हैं, बल्कि वे ऐसे लोग हैं जो तुमसे डरते हैं. 57 यदि वे कोई शरण-स्थली पाएं या कोई गुफा उन्हें मिल जाए या कोई और छिपकर बैठने की जगह, तो वे भागकर उसमें जा छिपेंगे.

58 और (पैग़ंबर!) उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दान के (वितरण के) संबंध में तुम पर आपत्ति करते हैं (कि तुमने बेइंसाफ़ी की है). और यदि उसमें से उन्हें कुछ दे दिया जाए तो वे उस पर ख़ुश हो जाते हैं, और यदि न दिया जाए तो वे गुस्सा होने लगते हैं. 59 उनके लिए क्या ही अच्छा होता, यदि वे अल्लाह एवं उसके पैग़ंबर ने उन्हें जो कुछ दिया उस पर संतुष्ट रहते और कहते कि अल्लाह हमारे लिए पर्याप्त है. वह हमें अपनी मेहरबानी से और भी देगा और उसका पैग़ंबर भी. हम तो अल्लाह ही की ओर झुकने वाले हैं. 60 दान (के रूप में प्राप्त धन) तो वास्तव में मोहताजों और निर्धनों के लिए है और उन लोगों के लिए है जो दान (इकट्ठा तथा वितरण) के कार्य पर नियुक्त हों और उनके लिए भी जिनके दिलों को (सत्य के संबंध से) नरमाना वांछित हो और ग़ुलामों को आज़ाद करने के लिए भी (दान की राशी का उपयोग किया जा सकता है) और क़र्ज़दारों की मदद करने के लिए भी और अल्लाह के मार्ग में (अर्थात सत्य-धर्म के प्रचार-प्रसार

हेतु) और मुसाफ़िर की सहायता के लिए भी (दान की राशी का उपयोग किया जा सकता है). (दानकार्य करना समर्थ लोगों का) एक कर्तव्य है अल्लाह की ओर से ठहराया हुआ. अल्लाह ज्ञानवान एवं बुद्धिमान है.

61 और उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो (अपनी बातों से) पैग़ंबर को दुःख देते हैं और वे कहते हैं, यह (अर्थात पैग़ंबर) ऐसा आदमी है जो हर एक की बात ध्यानपूर्वक सुनने वाला है, कहो, पैग़ंबर तुम्हारी भलाई के लिए सबकी बात ध्यानपूर्वक सुनता है. वह अल्लाह पर ईमान रखता है और ईमान वालों (की बातों) पर भरोसा करता है. वह सर्वथा रहमत (दयालुता) है उनके लिए जो तुममें से ईमान लाए हैं. और जो लोग अल्लाह के पैग़ंबर को दुःख देते हैं उनके लिए कष्टप्रद यातना है. 62 ये लोग तुम्हारे समक्ष अल्लाह की क़समें खाते हैं, ताकि तुम्हें राज़ी करें, हालाँकि अल्लाह और उसका पैग़ंबर इसके अधिक हक़दार हैं कि यदि वे ईमान रखने वाले हैं तो उसे राज़ी करें. 63 क्या ये जानते नहीं कि जो कोई अल्लाह तथा उसके पैग़ंबर का विरोध करे उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वह हमेशा रहेगा. (निस्संदेह!) यह सबसे बड़ी रुसवाई (अवहेलना) है.

64 कपटाचारी डर रहे हैं कि कहीं उनके बारें में कोई ऐसा अध्याय (क़ुरआन में) न अवतरित हो जाए जो (ईमान वालों को) उनके दिलों के भेदों से अवगत करा दे. (पैग़ंबर!) उनसे कह दो, तुम हँसी उड़ाते रहो, अल्लाह निश्चित रूप से उसे प्रकट करके रहेगा जिसका तुम्हें डर है. 65 और यदि तुम उनसे पूछो (कि तुम क्या बातें कर रहे थे) तो वह कहेंगे, हम तो हँसी और दिल्लगी कर रहे थे. उनसे कहो, क्या तुम अल्लाह से और उसके संदेशों से और उसके पैग़ंबर से हँसी दिल्लगी कर रहे थे? 66 (अब) बहाने मत बनाओ, तुमने ईमान लाने के पश्चात सत्य का इन्कार किया है. यदि हम तुममें से एक समूह को क्षमा भी कर दें तो भी हम दूसरे समूह को अवश्य सज़ा देंगे, क्योंकि वे अपराधी हैं.

67 कपटाचारी पुरुष और कपटाचारी महिलाएँ सब एक ही प्रकार के हैं. वे बुराई का आदेश देते हैं और भलाई से रोकते हैं और अपने हाथों को बंद रखते हैं. उन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया. निस्संदेह कपटाचारी लोग बहुत अवज्ञाकारी हैं. 68 कपटाचारी पुरुषों तथा कपटाचारी स्त्रियों और सत्य का इन्कार करने वालों के संबंध से अल्लाह ने जहन्नम की आग का वादा कर रखा है, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे. यही उनके लिए पर्याप्त है. उन पर अल्लाह की फिटकार है और उनके लिये स्थायी यातना है. 69 (उनसे कह दो, तुम) उसी प्रकार (कपटाचारी) हो जिस प्रकार तुमसे पहले कपटाचारी हुए हैं. वे तुमसे अधिक बलशाली थे और तुमसे अधिक धनवान तथा अधिक संतान वाले थे. तो उन्होंने अपने हिस्से के लाभ का उपभोग किया, और तुम भी अपने हिस्से के लाभ का उपभोग कर रहे हो जिस प्रकार तुमसे पहले वालों ने अपने हिस्से के लाभ का उपभोग किया. और तुम व्यर्थ बहसों (वाद-विवाद) में पड़े हुए हो जिस प्रकार वे व्यर्थ बहसों में तुमसे पहले वाले (कपटाचारी) पड़े हुए थे. तो (इसके परिणाम-स्वरूप) इस दुनिया तथा मृत्यु-पश्चात दुनिया में उनका सब किया धरा नष्ट हो गया. ऐसे ही लोग घाटे में पड़ने वाले हैं. 70 क्या इन्हें उन लोगों का वृतांत नहीं पहुँचा जो इनसे पहले थे — नूह के लोगों का वृतांत और क़ौमे-आद तथा क़ौमे-समूद का वृतांत और इब्राहीम की क़ौम का वृतांत और मदियन के लोगों का तथा उलट दी गयी बस्तियों का वृत्तांत. उन सबकी ओर भेजे गए पैग़ंबर उनके पास सत्य के स्पष्ट प्रमाण लेकर आए थे. तो ऐसा न था कि अल्लाह उन पर अत्याचार करता, लेकिन वे स्वयं अपने आप पर अत्याचार करते रहे.

71 ईमान वाले पुरुष और ईमान वाली स्त्रियाँ सब एक-दूसरे के मित्र (सहायक) हैं, वे भलाई का आदेश देते हैं और बुराई से रोकते हैं. वे नित्य रूप से नमाज़ अदा करते हैं और ज़कात देते हैं (अर्थात दानकार्य करते हैं) और वे अल्लाह तथा उसके पैग़ंबर की

आज्ञा का पालन करते हैं. यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह दया करेगा. निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है.

72 ईमान रखने वाले पुरुष तथा ईमान रखने वाली औरतों से अल्लाह का वादा है ऐसे बागों का जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. उनमें वे सदैव रहेंगे. और उनसे अल्लाह का वादा है सदैव रहने वाले बागों में साफ़ सुथरे मकानों का (अर्थात परीपूर्ण एवं आदर्श निवासस्थानों का) और अल्लाह की प्रसन्नता उन्हें प्राप्त होगी जो (सारी भौतिक नेमतों से) बढ़कर है. यही बड़ी सफलता है.

73 ऐ पैग़ंबर! सत्य का इन्कार करने वालों तथा कपटाचारियों (अर्थात सत्यवादी होने को स्वांग करने वालों) से जिहाद करो और उनके संबंध से कठोर बन जाओ, उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना है. 74 ये लोग अल्लाह की क़सम खाकर कहते हैं कि हमने कुछ (ग़लत) नहीं कहा, हालाँकि उन्होंने निश्चित रूप से सत्य का इन्कार करने के बोल बोले हैं. उन्होंने इस्लाम का स्वीकार करने के पश्चात, उन्होंने सत्य का इन्कार किया और उन्होंने वह कुछ करने की योजना बनाई जो वे कर न सके. उनके प्रतिशोध का कारण तो यही है कि अल्लाह ने अपने पैग़ंबर (के द्वारा) अपने अनुग्रह से उन्हें संपन्न कर दिया. अब भी यदि वे पश्चात्ताप के साथ पलट आएँ तो यह उन्हीं के लिए अच्छा है. और यदि वे (सत्य की ओर) मुँह फेरें तो अल्लाह उन्हें कष्टप्रद यातना देगा, इस दुनिया में भी और मृत्यु-पश्चात दुनिया में भी. और धरती पर उनका न कोई मित्र होगा और न सहायक.

75 और उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने अल्लाह से प्रण किया था कि यदि उसने हमें अपने अनुग्रह से (कुछ) दिया तो हम अवश्य दानकार्य करेंगे और हम सदाचारी लोगों में से होंगे. 76 लेकिन जब अल्लाह ने अपने अनुग्रह से उन्हें धनवान बनाया तो वे उसमें कंजूसी करने लगे और (अपने प्रण से) बेपरवाही के साथ फिर गए. 77 तो इसके

परिणाम-स्वरूप अल्लाह ने उनके दिल में उस दिन तक के लिए कपटाचार डाल दिया, जब वे उससे मिलेंगे. यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह से जो प्रण किया था वह भंग कर दिया और उस झूठ के कारण जो वे बोलते रहे. 78 क्या ये लोग नहीं जानते कि अल्लाह उनके भेद और उनके गुप्त वार्तालाप को जानता है. (निस्संदेह!) अल्लाह सारी परोक्ष की बातें जानने वाला है.

79 वे (पाखंडी लोग) जो उन ईमान वालों पर टिका-टिपन्नी करते हैं जो दिल खोलकर दानकार्य करते हैं. और उनका भी उपहास करते हैं जिनके पास (अल्लाह की राह में) देने के लिए इसके सिवा कुछ नहीं कि वे श्रमदान करते हैं. अल्लाह उन उपहास करने वालों का उपहास करता है. और उनके लिए दुःखदायी यातना है. 80 (पैग़ंबर!) तुम ऐसे लोगों के लिए क्षमा की याचना करो या न करो (दोनों समान है), यदि तुम सत्तर बार भी उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करोगे, तब भी अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा. यह इसलिए कि वे अल्लाह और उसके पैग़ंबर का इन्कार करने पर तुले हुए हैं. और अल्लाह अवज्ञाकारियों को सन्मार्ग नहीं दिखाता.

81 (जिहाद में शामिल न होकर) पीछे रह जाने वाले अल्लाह के पैग़ंबर का साथ न देकर अपने पीछे बैठे रहने पर बहुत प्रसन्न हुए. उन्हें यह भारी लगा कि अपने धन तथा अपने प्राण को खपाकर अल्लाह के मार्ग में जिहाद करें, और उन्होंने लोगों से कहा कि गर्मी में न निकलो, कह दो, जहन्नम की आग इससे अधिक गर्म है. काश उन्हें इसकी समझ होती!

82 अब इन्हें चाहिए कि वे हँसे कम और रोएँ ज़्यादा, उसके बदले में जिसे यह कमाते रहे. 83 तो यदि अल्लाह इनके बीच तुम्हें वापस ले जाए और आयंदा उनमें से कोई गिरोह जिहाद के लिए निकलने की तुमसे अनुमति माँगे, तो (पैग़ंबर!) तुम उनसे कह देना कि तुम मेरे साथ कभी नहीं चलोगे और न मेरे साथ होकर किसी शत्रु से लड़ोगे. तुमने पहले

भी बैठे रहने को पसंद किया था तो अब घर में बैठे रहने वालों के साथ बैठे रहो. 84 और उनमें से कोई मर जाए तो उसके (जनाज़े की) नमाज़ तुम कदापि न पढ़ना. और न कभी उसकी क़ब्र पर खड़े होना, क्योंकि वे अल्लाह और उसके पैग़ंबर का इन्कार करने पर जमे रहे और इस दशा में वे मरे कि वे अवज्ञाकारी थे.

85 और उनकी (विपुल) संपत्ती और उनकी संतान तुम्हारे लिए अचंभे का कारण न बने! अल्लाह तो यही चाहता है कि इसके माध्यम से उन्हें दुनिया में यातना दे और उनके प्राण इस हाल में निकलें (अर्थात उनके जीवन का अंत इस हाल में हो) कि वे सत्य के इन्कार पर जमे हुए थे.

86 और जब (क़ुरआन में) कोई अध्याय ऐसा प्रकट होता है (जिसमें कहा गया होता है) कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके पैग़ंबर के साथ होकर अल्लाह के मार्ग में जिहाद करो (अर्थात अल्लाह के कार्य में अपने आपको झोंक दो.) तो उनमें से सामर्थ्य रखने वाले लोग ही तुमसे (जिहाद में शामिल होने की बाबत) छूट माँगने लगते हैं, वे कहते हैं कि हमें छोड़ दीजिए कि हम बैठने वालों के साथ रहें. 87 उन्होंने पीछे रहने वाली औरतों के साथ रुके रहने को पसंद किया (प्राथमिकता दी). उनके दिलों पर मुहर लगा दी गयी है तो वे कुछ नहीं समझते.

88 (इसके विपरीत) पैग़ंबर और वे लोग जो पैग़ंबर के साथ ईमान लाए थे, उन्होंने (अल्लाह के मार्ग में) अपने धन तथा प्राण के साथ जिहाद किया. यही वे लोग हैं जिनके लिए भलाइयाँ हैं और यही सफलता प्राप्त करने वाले हैं. 89 उनके लिए अल्लाह ने ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें बहती हैं. उनमें वे सदैव रहेंगे. यही बड़ी सफलता है!

90 बद्दु अरबों(अर्थात ग्रामीण एवं रेगिस्तान-वासी अरबों) में से भी बहुत से लोग आए, जिन्होंने बहाने किए, ताकि उन्हें (भी पीछे रह जाने की) अनुमति मिल जाए. जो

लोग अल्लाह और उसके पैग़ंबर से झूठ बोले वे बैठे रहे (अर्थात जिहाद में सहभागी नहीं हुए) उनमें से जो लोग सत्य के इन्कार पर जमे रहे उन्हें शीघ्र ही दुखदायी यातना पहुँचकर रहेगी.91 (जिहाद में शामिल न होकर घर पर ठहरे रहने में) न कमज़ोरों पर दोष होगा और न बीमार लोगों पर और न उन लोगों पर दोष आएगा जिनके पास खर्च करने के लिए कुछ नहीं (अर्थात धनहीन लोगों पर), जबकि वे अल्लाह तथा उसके पैग़ंबर के प्रति निष्ठावान हों. ऐसे सत्कर्मी लोगों पर कोई दोष नहीं. अल्लाह तो बड़ा क्षमाशील एवं दयावान है. 92 और न उन लोगों पर कोई दोष है जिन्होंने तुम्हारे पास आकर (यह निवेदन किया कि) तुम उनके लिए सवारी का प्रबंध कर दो. (इस पर) तुमने कहा, मेरे पास कोई चीज़ नहीं कि मैं तुम्हें उस पर सवार कर दूँ. तो वे इस दशा में वापस गए कि उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे. वे इस बात से दुःखी थे कि उन्हें कुछ प्राप्त नहीं जिसे वे(अल्लाह के लिए) खर्च कर सकें. 93 (अल्लाह के मार्ग में न निकलने के संबंध से) दोष तो केवल उन लोगों पर है जो धनवान होते हुए भी तुमसे (जिहाद से छूट) की अनुमति माँगते हैं, वे इससे संतुष्ट हो गए कि पीछे (घर में) ठहरे रहने वाली औरतों के साथ रह जाएँ. अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है. तो वे कुछ नहीं जानते.

पारा – 11 94 और जब तुम (अपने अभियान से) लौट कर उनके पास आओगे तो वे तुम्हारे सामने (तरह-तरह के) बहाने पेश करेंगे. तो (पैग़ंबर!) तुम कह देना, बहाने न बनाओ, हम कदापि तुम्हारी बात पर विश्वास न करेंगे. अल्लाह ने हमें तुम्हारे हालात बता दिए हैं. अब अल्लाह यह देखेगा कि तुम कैसे कर्म करते हो और उसका पैग़ंबर भी. फिर तुम सब उसकी ओर लौटाए जाओगे जो खुले और छिपे का जानने वाला है. फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे.

95 जब तुम (अपने अभियान से) वापस होकर उनके पास आओगे तो ये तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएंगे, ताकि तुम उन्हें उनकी हालत पर छोड़ दो. तो तुम उन्हें छोड़ ही दो. निस्संदेह वह
अपवित्र हैं. उनका ठिकाना जहन्नम है, बदले में उसके जो वे करते रहे. 96 ये तुम्हारे सामने क़समें खाएंगे, कि तुम उनसे राज़ी हो जाओ. यदि तुम उनसे राज़ी हो भी गए, तब भी अल्लाह ऐसे अवज्ञाकारी लोगों से कदापि राज़ी नहीं होगा.

97 ये अरब बद्दू (अर्थात ग्रामीण तथा आदिवासी अरब) सत्य के इन्कार तथा कपटाचार के मामले में बहुत ही कट्टर हैं, (इसीलिए) वे इसके अधिक योग्य हैं कि वे उसकी सीमाओं को न जान सकें जिसे अल्लाह ने अपने पैग़ंबर पर उतारा है. अल्लाह सब कुछ जानने वाला तथा बुद्धिमान है. 98 अरब बद्दुओं में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के मार्ग में खर्च करने को एक दंड (जुर्माना) समझते हैं, और तुम्हारे ऊपर कोई विपत्ति (बुरा समय) आए इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, हालाँकि बुरे चक्कर में तो वही फँसने वाले हैं. अल्लाह सुनने वाला तथा जानने वाला है. 99 और इन्हीं बद्दुओं में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह और अंतिम दिन को मानते हैं और जो कुछ खर्च करते हैं उसे अल्लाह के क़रीब होने तथा पैग़ंबर की दुआएँ लेने का साधन बनाते हैं. निस्संदेह, वह उनके लिए अल्लाह की निकटता प्राप्त करने का माध्यम है. अल्लाह उन्हें जल्द ही अपने कृपाछत्र में प्रवेश देगा. निस्संदेह! अल्लाह क्षमा करने वाला एवं दयावान है.

100 (सत्य का साथ देने के लिए) अपना घर-बार छोड़ने वाले लोग तथा ऐसे लोगों की सहायता करने वाले लोग, जो (सदाचार में) सबसे पहले आगे निकलने वाले हैं और वे लोग भी जिन्होंने भली प्रकार उनका अनुसरण किया. अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए. अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी. वह उनमें सदैव रहेंगे. यही बड़ी सफलता है.

101 और तुम्हारे आस-पास जो देहाती हैं, उनमें कपटाचारी हैं और मदीना वालों में भी कपटाचारी हैं, वे कपटाचार के मामले में दृढ़ हो चुके हैं. तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं. हम उन्हें बहुत जल्द दोहरी सज़ा देंगे. फिर वे बड़ी यातना (अर्थात मृत्यु-पश्चात जीवन में शाश्वत-रूपी यातना) की ओर लौटाए जाएंगे.

102 कुछ और लोग हैं जिन्होंने अपनी ग़लतियों को मान लिया. उन्होंने मिले-जुले कर्म किए थे, कुछ भले और कुछ बुरे. हो सकता है कि अल्लाह उन पर मेहरबान हो जाए. निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दयावान है. 103 (पैग़ंबर!) तुम उनके मालों में से दान लेकर उन्हें पाक करो और उनके आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा दो. और उनके लिए दुआ करो. निस्संदेह! तुम्हारी दुआ उनके लिए तसल्ली (का कारक) होगी. अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है. 104 क्या वे नहीं जानते कि वह अल्लाह ही है जो अपने (पथभ्रष्ट) बंदों के (सन्मार्ग की ओर) पलट आने को स्वीकार करता है. और वही दान का स्वीकार करता है. और यह कि अल्लाह पश्चात्ताप का स्वीकार करने वाला तथा दयावान है. 105 (पैग़ंबर!) इन लोगों से कह दो, तुम कर्म करो, अल्लाह और उसका पैग़ंबर और ईमान वाले तुम्हारे कर्म देखेंगे. फिर तुम शीघ्र उसकी ओर लौटाए जाओगे, जो खुले और छिपे सबका जानने वाला है. फिर वह तुम्हें सब बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे.

106 और कुछ दूसरे लोग भी हैं जिनका मामला अल्लाह का आदेश आने तक स्थगित है. वह चाहेगा तो उन्हें दंड देगा या चाहेगा तो उनके पश्चात्ताप को स्वीकार करेगा. अल्लाह सब कुछ जानने वाला एवं बुद्धिमान है.

107 और कुछ लोग उनमें ऐसे भी हैं जिन्होंने (ईमान वालों से अलग एक) मस्जिद बनाई, सिर्फ इस हेतु बनाई कि उसके द्वारा (सत्य के मिशन को) नुक़सान पहुँचाया जाए और सत्य के इन्कार को बढ़ावा दिया जाए और सत्यवादियों के बीच फूट डाली जाए

और उस व्यक्ति को घात-स्थल उपलब्ध कराने हेतु जो इससे पहले अल्लाह व उसके पैग़ंबर से लड़ चुका है. वे निश्चय ही क़समें खाएंगे कि (मस्जिद निर्माण के पीछे) हमारा इरादा भलाई के सिवा और कुछ नहीं था. लेकिन अल्लाह गवाही देता है कि वे झूठे हैं.

108 तुम कदापि (कपटाचारियों द्वारा निर्माण की गयी) मस्जिद में खड़े न होना. लेकिन जिस मस्जिद की नींव पहले ही दिन से अल्लाह के प्रति सजगता (एवं उत्तरदायित्व) के भाव पर रखी गयी हो, वही इसके लिए अधिक उचित है कि तुम उसमें (इबादत के लिए) खड़े हों, उसमें ऐसे लोग हैं जो (स्वयं को) पाक रखना पसंद करते हैं. और अल्लाह पाक रहने वालों को ही पसंद करता है.

109 तो क्या वह व्यक्ति अच्छा है जिसने अपनी (जीवनरूपी) इमारत की नींव अल्लाह के प्रति सजगता (एवं उत्तरदायित्व) और उसकी प्रसन्नता की चाहत पर रखी हो या वह व्यक्ति जिसने अपनी (जीवनरूपी) इमारत की नींव किसी खाई के किनारे पर रखी हो जो गिरने को हो और उसे लेकर जहन्नम की आग में जा गिरे. अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता.

110 (पाखंडियों की) यह (मस्जिद-रूपी) इमारत, जो उन्होंने बनाई है, उनके दिलों में सदैव संदेह की जड़ बनी रहेगी, सिवाय इसके कि उनके दिल टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ (अर्थात वे यहाँ तक संदेह में रहेंगे कि उनके जीवन का ही अंत हो जाए). अल्लाह सब कुछ जानने वाला एवं बुद्धिमान है.

111 अल्लाह ने ईमान वालों से उनकी जानें तथा उनके माल जन्नत के बदले में ख़रीद लिए हैं. वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं. वे मारते हैं और मारे जाते हैं. उनसे (किया गया जन्नत का वादा) अल्लाह के ज़िम्मे एक पक्का वादा है, (जिसका उल्लेख) तौरात, इंजील और क़ुरआन में है. और कौन है जो अल्लाह से बढ़कर अपने वादे को पूरा करने

वाला हो. तो तुम ख़ुशियाँ मनाओ अपने इस सौदे पर, जो सौदा तुमने अल्लाह से किया है. (वास्तव में) यही बड़ी सफलता है.

112 (यह सबसे बड़ी कामयाबी उन लोगों को प्राप्त होगी) जो अल्लाह की ओर (बार-बार) पलट आने वाले और उसकी उपासना करने वाले और उसका गुणगान करने वाले और अल्लाह के (कार्य के लिए) ज़मीन पर घूमने-फिरने वाले और उसके आगे झुकने वाले तथा सजदा करने वाले, भलाई का हुक्म देने वाले तथा बुराई से रोकने वाले और वे अल्लाह (के द्वारा निर्धारित सीमाओं की रक्षा करने वाले (अर्थात सीमा के उल्लंघन से बचने वाले) हैं. (पैग़ंबर!) इन ईमान वालों को शुभ- सूचना दे दो.

113 पैग़ंबर तथा ईमान लाए हुए लोगों के लिए यह उचित नहीं है कि वे उन लोगों के लिए (अल्लाह से) क्षमा की प्रार्थना करें जो अल्लाह के साझीदार ठहराते हैं, फिर चाहे वे उनके संबंधी ही क्यों न हों, जबकि उन पर यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि वे (बहुदेववादी अटल रूप से) जहन्नम में जाने वाले लोग हैं.

114 इब्राहीम का अपने (बहुदेववादी) पिता के लिए क्षमा की प्रार्थना करना मात्र उस वादे के कारण से था जो उसने अपने पिता से किया था, लेकिन जब उस पर यह स्पष्ट हो गया कि (उसका बाप) अल्लाह का दुश्मन है तो वह उससे अलग हो गया. निस्संदेह, इब्राहीम अत्यंत कोमल हृदय वाला तथा सहनशील था. 115 अल्लाह का यह तरीक़ा नहीं कि वह लोगों को सन्मार्ग दिखाने के पश्चात फिर पथभ्रष्ट कर दे, जब तक कि उन्हें स्पष्ट रूप से वह बातें बता न दे जिनसे उन्हें बचना है. निस्संदेह! अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है. 116 निस्संदेह! अल्लाह ही की सत्ता है आसमानों में और धरती पर, वही जीवन प्रदान करता है और वही मृत्यु देता है. अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई मित्र है और न सहायक.

117 अल्लाह ने अपने पैग़ंबर पर और (अल्लाह के लिए अपना) घर-बार त्यागने वालों पर और (घर-बार छोड़कर आए हुए लोगों की) सहायता करने वालों पर अपनी कृपादृष्टी डाली, जिन्होंने कठिन समय में (अल्लाह के) पैग़ंबर का साथ दिया, ऐसी हालत में भी (साथ दिया), जबकि उनमें से कुछ (ईमान वालों) के दिल टेढ़ (अर्थात पथभ्रष्टता) की ओर प्रवृत्त हो चुके थे. फिर अल्लाह ने उन पर अपनी कृपादृष्टि डाली. निस्संदेह अल्लाह उन पर कृपाशील है और दयावान है. 118 और उन तीनों पर भी उसने अपनी कृपादृष्टि डाली, जिनके मामले को स्थगित रखा गया था. (उनका यह हाल हुआ कि) धरती विशाल होते हुए भी (मानसिक स्तर पर) उनके लिए संकुचित हो गयी थी और उनकी जानें भी उन पर बोझ होने लगी थी और उन्हें यह समझ आ गया था कि अल्लाह से बचने के लिए स्वयं अल्लाह के कृपाछत्र के सिवा कोई शरण-स्थली नहीं. तो अल्लाह अपनी दयालुता के साथ उनकी ओर पलटा, ताकि वे (उसकी ओर) पलट आएँ. निस्संदेह! अल्लाह अत्यंत क्षमाशील एवं दयावान है.

119 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो और सत्यवादियों का साथ देने वाले बन जाओ. 120 मदीना के निवासियों के लिए और मदीना के आसपास (के इलाक़ों में) रहने वाले बद्दुओं के लिए यह कदापि उचित न था कि अल्लाह के पैग़ंबर को छोड़कर पीछे बैठे रहें और न यह उचित था कि वे पैग़ंबर की जान से ज़्यादा अपनी जान को वरियता (तरजीह) दें. यह इसलिए कि वे अल्लाह के मार्ग में प्यास या थकान या भूक की कोई भी तकलीफ़ (कष्ट) झेलें या कोई ऐसा क़दम उठाएँ जो सत्य का इन्कार करने वालों के क्रोध का कारण बने या सत्य के विरोधियों को कोई क्षति पहुँचाएं तो इसके फलस्वरूप उनके (कर्म-पत्र में उनके) लिए एक भलाई लिख दी जाती है. अल्लाह भलाई करने वालों का प्रतिफल नष्ट नहीं करता. 121 वे थोड़ा या ज़्यादा

जो भी खर्च करें या (अल्लाह के मार्ग में) कोई घाटी पार करें, उनके हक़ में अनिवार्य रूप से लिख दिया जाता है, ताकि अल्लाह उन्हें उनके अच्छे कर्मों का प्रतिफल प्रदान करे.

122 और यह संभव न था कि ईमान वाले सब के सब निकल खड़े होते. तो ऐसा क्यों न हुआ कि उनके प्रत्येक गिरोह में से कुछ लोग निकलते, ताकि वे दीन (सत्य-आस्था) में गहरी समझ पैदा करते और वापस जाकर अपनी क़ौम के लोगों को सचेत करते, ताकि वे भी अल्लाह से डरने वाले बनते.

123 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! सत्य का इन्कार करने वाले उन लोगों से लड़ो जो तुम्हारे आस-पास हैं. और चाहिए कि वे तुममें (उनके संबंध से) सख़्ती पाएँ और जान लो कि अल्लाह उन लोगों के साथ है जो उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहते हैं.
124 और जब कोई (क़ुरआन का) अध्याय प्रकट किया जाता है तो उनमें कुछ लोग (अर्थात कपटाचारी, ईमान वालों से) कहते हैं कि इसने तुममें से किसके ईमान को बढ़ाया है. हाँ! इसके द्वारा उन लोगों के ईमान में वृद्धी हुई है जो वास्तव में ईमान वाले हैं और वे इससे ख़ुश हो रहे हैं. 125 अलबत्ता जिन लोगों के दिलों में (कपटाचार का) रोग है तो इसके द्वारा उनके (दिलों में मौजूद) गंदगी पर और गंदगी की वृद्धी हुई है. और वे मरे तो इस दशा में मरे कि वे सत्य का इन्कार कर रहे थे. 126 क्या ये लोग नहीं देखते कि वे हर वर्ष एक-दो बार परीक्षा में डाले जाते हैं, फिर भी न वे सन्मार्ग की ओर पलटते है और न उससे कोई शिक्षा लेते हैं. 127 जब कोई (क़ुरआन का) अध्याय प्रकट किया जाता है तो ये एक-दूसरे को देखने लगते हैं (और कहते हैं) कि कहीं कोई तुम्हें देख तो नहीं रहा है, फिर मुँह फेर कर निकल खड़े होते हैं. अल्लाह ने उनके दिलों को (सत्य से) फेर दिया है इसलिए कि वे ऐसे लोग हैं जो समझ से काम नहीं लेते.

128 तुम्हारे पास तुम्ही में से एक पैग़ंबर आया है. तुम्हारे कष्ट में पड़ने से उसे कष्ट होता है. वह तुम्हारी बहुत ज़्यादा भलाई चाहने वाला है. वह अत्यंत स्नेह करने वाला

और रहम दिल है. 129 (पैग़ंबर!) अब यदि ये लोग (सत्य से) मुँह मोड़े तो कह दो कि अल्लाह मेरे लिए पर्याप्त है उसके सिवा दूसरा कोई पूजा के योग्य नहीं. उसी पर मैंने भरोसा किया और वही स्वामी है सर्वोच्च सिंहासन का.

सूरह–10. यूनुस

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अलिफ़० लाम० रा०. यह संदेश ऐसे ग्रंथ के हैं जो विवेक से भरा हुआ है.
2 क्या लोगों को इस बात पर आश्चर्य है कि हमने उन्हीं में से एक व्यक्ति पर (अपना) संदेश प्रकट किया कि लोगों को सावधान करो और जो लोग ईमान लाए हैं उन्हें शुभ-समाचार सुना दो कि उनके लिए उनके रब के पास सच्चा व सम्मानपूर्वक स्थान है. (इस पर) सत्य का इन्कार करने वालों ने कहा, यह आदमी तो स्पष्ट रूप से जादूगर है.

3 इसमें कुछ संदेह नहीं कि तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमानों और धरती को छः दिनों (अर्थात छः कालखंडों) में बनाया, फिर वह (समस्त सृष्टि के स्वामी एवं संचालक-रूपी) सिंहासन पर विराजमान हुआ. वही सारे मामलों की व्यवस्था करता है. (उसकी अदालत में) उसकी अनुमति के बिना कोई (किसी की) सिफ़ारिश करने वाला नहीं. यह अल्लाह तुम्हारा रब है तो तुम उसी की इबादत करो, क्या तुम सोचते नहीं! 4
उसी की ओर तुम सबको लौटना है. यह अल्लाह का पक्का वादा है. निस्संदेह वह पहली बार सृजन करता है, फिर वही दोबारा सृजन करेगा, ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने भले कर्म किए, उन्हें न्यायपूर्वक प्रतिफल दिया जाए. और जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया उन्हें पीने के लिए खौलता हुआ पानी मिलेगा और दुःख देने वाली यातना होगी, यह उस इन्कार के बदले जो वे करते थे.

5 वह अल्लाह है जिसने सूरज को प्रकाशमान किया (अर्थात सूरज को प्रकाश का स्रोत बनाया) और चाँद को (प्रतिबिंबित) प्रकाश का साधन बनाया. और चाँद (के घटने-बढ़ने) की मंज़िले निश्चित कीं, ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम कर सको. अल्लाह ने यह सब उद्देश्य के बिना नहीं बनाया है. वह अपने संदेश उन लोगों के लिए खोल-खोल कर बयान करता है जो ज्ञान रखने वाले हैं.

6 निश्चित रूप से रात और दिन के उलटफेर में और अल्लाह ने जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में सृजित किया है, उनमें उन लोगों के लिए संदेशयुक्त निशानियाँ हैं जो अल्लाह के प्रति सचेत हैं.

7 जो लोग हमसे मिलने की आशा नहीं रखते और दुनिया की इसी ज़िंदगी पर राज़ी तथा संतुष्ट हो गए हैं और जो हमारी संदेशयुक्त निशानियों से ग़ाफ़िल (असावधान) हैं. 8 ऐसे लोगों का ठिकाना उनकी कमाई के कारण जहन्नम है. 9 लेकिन जो लोग ईमान लाए और भले कर्म करते रहे, तो उन्हें उनका रब उनके ईमान के बदले उनका मार्गदर्शन करके, (कामयाबी की मंज़िल तक) पहुँचा देगा, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी नेमतों से भरे बागों में. 10 वहाँ उनकी पुकार यह होगी कि महिमावान है तू ऐ अल्लाह! और वे वहाँ (एक-दूसरे को) सलाम करके अभिवादन करेंगे. बात (हर मुलाक़ात) का अंत इन (शब्दों) के साथ होगा, 'सारी प्रशंसा (सारा शुक्र) अल्लाह के लिए है जो समस्त सृष्टी का रब है'.

11 और यदि अल्लाह लोगों के लिए (उनके कर्मों के फलस्वरूप) यातना उसी प्रकार शीघ्र दे देता, जिस प्रकार वह उनके साथ दया में शीघ्रता करता है, तो उनकी मोहलत कभी की समाप्त कर दी गयी होती. लेकिन हम उन लोगों को जो हमसे मुलाक़ात की आशा नहीं रखते, उनकी उद्दंडता में उन्हें भटकते रहने के लिए छूट दे देते हैं. 12 और मनुष्य को जब कोई कष्ट पहुँचता है, तो वह खड़े, बैठे और लेटे हमें पुकारता है, फिर जब हम उससे उसके कष्ट को दूर कर देते हैं, तो वह ऐसा हो जाता है कि मानो उसने कभी अपने बुरे समय पर हमें पुकारा ही न था. इस प्रकार मर्यादाओं का उल्लंघन करने वाले लोगों के (बुरे) कर्म उनके लिए आकर्षक बना दिए गए हैं.

13 हमने तुमसे पहले की कितनी ही क़ौमों को उनके अत्याचारी कृत्यों के कारण नष्ट किया. उनकी ओर भेजे गए पैग़ंबर उनके पास स्पष्ट प्रमाणों के साथ आए, लेकिन वे

ऐसे न थे कि ईमान लाते (फिर हमने उन्हें नष्ट कर दिया). इसी तरह हम अपराधी लोगों को (उनके अपराधों का) बदला दिया करते हैं. 14 फिर हमने उनके पश्चात धरती पर तुम्हें उत्तराधिकारी बनाया, ताकि हम देखें कि तुम कैसे कर्म करते हो.

15 और जब उन्हें हमारे स्पष्ट संदेश पढ़कर सुनाए जाते हैं, तो जिन लोगों को हमसे मुलाक़ात का खटका नहीं है, वे कहते हैं, इसके सिवा कोई और क़ुरआन लाओ या इसमें ही परीवर्तन कर दो. (पैग़ंबर!) उनसे कह दो, मेरा यह काम नहीं कि मैं अपनी मर्ज़ी से इसमें कोई परिवर्तन करूँ. मैं तो बस उस दिव्य-संदेश का पालन करता हूँ जो मेरी ओर प्रकट किया जाता है. यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ तो ऐसा करने पर मुझे एक बड़े दिन की यातना का भय है. 16 (पैग़ंबर!) उनसे कह दो, यदि अल्लाह चाहता तो मैं तुम्हें इसको न सुनाता और न वह तुम्हें इससे अवगत कराता. आख़िर इससे पहले मैं तुम्हारे बीच एक उम्र गुज़ार चुका हूँ (लेकिन अब से पहले मैंने इस तरह का कोई दिव्य-संदेश तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत नहीं किया). क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते. 17 फिर उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी और कौन होगा जो झूठी बात गढ़कर उसे अल्लाह से जोड़े या अल्लाह की संदेशयुक्त निशानियों को झुठलाए. निश्चय ही अपराधी लोग कदापि सफलता प्राप्त नहीं कर सकते.

18 ये लोग अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों को पूजते हैं जो न उन्हें हानि पहुँचा सकती हैं और न लाभ. और वे कहते हैं कि ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं. (पैग़ंबर!) उनसे कह दो, क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात की ख़बर देते हो जो ज़मीन व आसमान में है, लेकिन वह उसे न जानता हो! महिमावान है वह और उच्च है वह, उनके साझी ठहराने के कृत्य से.

19 (आरंभ में) सारे इंसान एक ही समुदाय थे. बाद में उन्होंने परस्पर मतभेद किया. और यदि तेरे रब की ओर से पहले ही एक बात तय न कर ली गयी होती तो जिस चीज़ में वे आपस में मतभेद कर रहे हैं, उसका उनके बीच फ़ैसला कर दिया जाता.

20 और वे कहते हैं कि पैग़ंबर पर उसके रब की ओर से कोई (चमत्कारिक) निशानी क्यों नहीं उतारी गयी. (पैग़ंबर!) इनसे कहो, परोक्ष का (स्वामी तथा अधिकारी) सिर्फ़ अल्लाह है. अच्छा, तो तुम लोग प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ.
21 और जब कोई कष्ट पहुँचने के बाद लोगों को हम अपनी दयालुता का स्वाद चखाते हैं तो वे हमारे संदेशों के विरुद्ध चालबाज़ियाँ शुरू कर देते हैं (अर्थात निराधार बहसें छेड़ देते हैं). उनसे कहो, अल्लाह अपनी योजना में तुमसे ज़्यादा तेज़ है. निश्चय ही हमारे फ़रिश्ते तुम्हारी चालबाज़ियों को लिखते जा रहे हैं.

22 वह अल्लाह ही है जो तुम्हें थल तथा जल में चलाता है. जब तुम नौकाओं में होते हो और नौकाएँ अनुकूल हवा से चल रही होती हैं. तब नौका के मुसाफ़िर हर्ष कर रहे होते हैं. फिर जब यकायक तीव्र प्रतिकूल हवा आती है और हर ओर से लहरें उन पर चली आती हैं और वे समझ लेते हैं कि अब हम घिर गए. उस समय वे सब अपनी आस्था को अल्लाह ही के लिए विशुद्ध करके उसे पुकारने लगते हैं कि यदि तूने हमें इस (संकट) से बचा लिया तो हम तेरे कृतज्ञ (दास) बनेंगे.
23 फिर जब वह उन्हें बचा लेता है तो वही लोग सत्य से विमुख होकर धरती पर विद्रोह करने लगते हैं. ऐ लोगो! तुम्हारा विद्रोह तुम्हारे अपने ही विरुद्ध पड़ रहा है. वर्तमान जीवन का लाभ उठा लो, फिर तुम्हें हमारी ही ओर लौट कर आना है. तब हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या कुछ करते रहे हो.

24 दुनिया की ज़िंदगी का उदाहरण ऐसा है जैसे हमने आसमान से पानी बरसाया, तो उसके कारण धरती से उगने वाली चीज़ें जिन्हें मनुष्य एवं मवेशी सब खाते हैं, ख़ूब

घनी हो गयीं. फिर ठीक उस समय जब धरती अपनी बहार पर थी और खेतियाँ बनी-सँवरी खड़ी थीं और धरती वालों ने समझ लिया कि अब यह हमारे नियंत्रण में है तो अचानक उस पर रात को या दिन को हमारा आदेश आता है और (उन लहलहाती फ़सलों का) इस प्रकार सफ़ाया हो जाता है कि मानों वहाँ कल कुछ था ही नहीं. इस प्रकार हम उन लोगों के लिए हमारे संदेश खोल-खोल कर बयान करते हैं जो सोच-विचार से काम लेने वाले हैं.

25 और अल्लाह तुम्हें सलामती के घर की ओर बुलाता है. और जिसे चाहता है सन्मार्ग पर लगा देता है. 26 जिन लोगों ने भले काम किए उनके लिए अच्छा प्रतिफल है और उसके अतिरिक्त और भी. (फ़ैसले के दिन सदाचारी) लोगों के चेहरों पर न तो कालिख छाएगी और न रुसवाई. यही लोग जन्नत वाले हैं. वे उसमें सदैव रहेंगे. 27 और जिन लोगों ने बुराइयाँ कमायीं तो बुराई का बदला उसके समान होगा. रुसवाई उन पर छाई हुई होगी कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न होगा. उनके चेहरों पर इस प्रकार अँधेरा छाया हुआ होगा, जैसे रात के काले परदे उन पर पड़े हुए हों. यही लोग जहन्नम वाले हैं. वे उसमें सदैव रहेंगे.

28 और जिस दिन हम उन सबको एकत्र करेंगे, फिर हम उन लोगों से कहेंगे जिन्होंने (हमारे) साझीदार ठहराए थे, अपनी जगह ठहरो तुम भी और तुम्हारे बनाए हुए साझीदार भी! हम उन्हें एक दूसरे से अलग करेंगे. तब उनके (बनाए हुए) साझीदार (उन साझीदार बनाने वाले लोगों से) कहेंगे, तुम हमारी इबादत नहीं करते थे. 29 अल्लाह तुम्हारे व हमारे बीच गवाही के लिए पर्याप्त है. हम तुम्हारी उपासना से पूर्णतः अनभिज्ञ थे. 30 उस समय प्रत्येक व्यक्ति अपने उस कर्म का सामना करेगा जो उसने किया था. तब सारे इंसान अपने सच्चे मालिक अल्लाह की ओर लाए जाएंगे. और वे सारे झूठ जो उन्होंने गढ़ रखे थे, गुम हो जाएंगे.

31 (पैग़ंबर!) इनसे पूछो, कौन तुम्हें आसमान व ज़मीन से रोज़ी देता है? वह कौन है जिसे (तुम्हारी) आँखों और कानों पर नियंत्रण प्राप्त है? और कौन है वह जो बेजान में से जानदार को निकालता है और जानदार में से बेजान को निकालता है और कौन है वह जो यह सारी व्यवस्था चला रहा है? वे ज़रूर कहेंगे, वह अल्लाह है. उनसे कहो, तो फिर तुम उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) क्यों नहीं रहते? 32 (लोगो! यह सब कुछ करने वाला) अल्लाह ही है तुम्हारा सच्चा रब! तो सत्य (का इन्कार करने) के पश्चात पथभ्रष्टता के सिवा और क्या बाकी रहेगा. तुम किधर फिरे जाते हो(अर्थात सच्चाई से मुँह मोड़ कर कहाँ जा रहे हो)? 33 (पैग़ंबर!) इस तरह अवज्ञाकारियों पर तुम्हारे रब की बात सच्ची होकर रही कि वे ईमान लाने के नहीं हैं.

34 उनसे पूछो, अल्लाह के ईश्वरत्व (Divinity) में जिन्हें तुम साझीदार ठहराते हो, क्या उनमें कोई है जो पहली बार सृजन कर सकता हो और फिर उसकी पुनरावृत्ति भी कर सकता हो? कहो, वह सिर्फ़ अल्लाह है जो पहली बार सृजन करता है और उसे दोहराता है. फिर तुम कहाँ भटके जाते हो. 35 उनसे पूछो, क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में कोई है जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता हो. (पैग़ंबर!) कह दो, वह सिर्फ़ अल्लाह है जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है. फिर जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है वह इसका ज़्यादा हक़दार है कि उसका अनुसरण किया जाए; या वह जो स्वयं मार्ग नहीं पाता, जब तक कि उसे मार्ग न दिखाया जाए? तो यह तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसे फ़ैसले करते हो?

36 उनमें अधिकतर लोग अटकल का अनुसरण कर रहे हैं और अटकल सत्य का विकल्प कदापि नहीं. जो कुछ यह कर रहे हैं अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है.

37 यह क़ुरआन ऐसी चीज़ नहीं कि अल्लाह के सिवा अन्य कोई इसकी रचना कर सके. बल्कि यह तो जो कुछ इससे पहले (ख़ुदा की ओर से) आ चुका है, उसे प्रमाणित

करने वाला है. और (अल्लाह की) किताब का विस्तार है (अर्थात आसमानी मार्गदर्शन की विस्तार-रूपी कड़ी है, अर्थात अंतिम एवं सुरक्षित कड़ी) इसमें कुछ संदेह नहीं कि यह समस्त सृष्टि के रब की ओर से है. 38 क्या ये लोग कहते हैं कि इस व्यक्ति ने (अर्थात पैग़ंबर ने) स्वयं इसे रच लिया है. (पैग़ंबर! तुम उनसे) कहो, यदि तुम अपने कहने में सच्चे हो (अर्थात गंभीर हो) तो ऐसी ही (गुणवत्ता) का एक अध्याय बना लाओ और अपनी सहायता के लिए अल्लाह के सिवा जिसको बुला सको बुला लो. 39 लेकिन (हक़ीक़त यह है कि) वे लोग उस चीज़ को झुठला रहे हैं जो उनके ज्ञान की परिधि में नहीं आती और जिसकी वास्तविकता अभी उन पर प्रकट नहीं हुई. इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं. तो देखो उन अत्याचारियों का अंत कैसा हुआ.

40 उनमें वे भी हैं जो क़ुरआन पर ईमान लाएंगे और वे भी हैं जो उस पर ईमान नहीं लाएंगे. तेरा रब उन उपद्रवियों को भली प्रकार जानता है. 41 (पैग़ंबर!) यदि वे तुम्हें झुठलाते हैं तो तुम कह दो कि मैं मेरे कर्म के लिए (उत्तरदायी) हूँ और तुम तुम्हारे कर्म के लिए (उत्तरदायी हो). जो कुछ मैं करता हूँ उस(की ज़िम्मेदारी) से तुम बरी हो और मैं उससे बरी हूँ जो कुछ तुम करते हो. 42 और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं, तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे, जबकि वह वे समझ से काम न ले रहे हों. 43 उनमें कुछ ऐसे भी हैं जो तुम्हारी ओर ताकते रहते हैं, तो क्या तुम उन अंधों को रास्ता दिखा सकते हो जो (देखकर भी) नहीं देखते. 44 हक़ीक़त तो यह है कि अल्लाह लोगों पर तनिक भी ज़ुल्म नहीं करता, बल्कि लोग स्वयं ही अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं.

45 जिस दिन अल्लाह इन्हें इकट्ठा करेगा तब उन्हें (वर्तमान जीवन के संबंध से) ऐसा जान पड़ेगा कि मानों वे दुनिया में केवल दिन की एक घड़ी भर ठहरे थे. वे परस्पर एक-दूसरे को पहचानेंगे. वे लोग घाटे में पड़ गए. जिन्होंने अल्लाह से मुलाक़ात को

झुठलाया और वे सन्मार्ग पाने वाले न थे. 46 (पैग़ंबर!) जिस चीज़ का हम उनसे वादा करते हैं उसमें से कुछ चाहे तो हम तुम्हें जीते जी दिखा दें या हम तुम्हें इससे पहले उठा लें, बहरहाल इन्हें आना हमारी ही ओर है. जो कुछ यह कर रहे हैं उस पर अल्लाह गवाह है. 47 हर समुदाय के लिए एक पैग़ंबर है. तो जब उनके पास उनका पैग़ंबर आ जाता है (और हमारा संदेश उन तक पहुँचा देता है) तो उनका फ़ैसला न्यायपूर्वक कर दिया जाता है और उन पर तनिक भी ज़ुल्म नहीं किया जाता.

48 वे कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा. 49 (पैग़ंबर!) उनसे कहो, मुझे स्वयं अपने लिए भी न किसी हानी का अधिकार प्राप्त है और न किसी लाभ का, बल्कि अल्लाह जो चाहता है वही होता है. हर समुदाय के लिए एक नियत समय है. जब उनका नियत समय आ जाता है तो वे न घड़ी भर पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं.

50 इनसे कहो, कभी तुमने यह सोचा भी है कि अल्लाह की ओर से तुम पर यातना रात को आ पड़े या दिन को आ जाए (तो क्या तुम उसे टाल सकोगे)? आख़िर ऐसी कौनसी चीज़ है, जिसके लिए अपराधी लोग जल्दी मचा रहे हैं. 51 क्या जब वह तुम पर आ पड़े तब उसे मानोगे? (लेकिन तब कह दिया जाएगा,) अब उसे मानते हो? हालाँकि तुम स्वयं ही उसके लिए जल्दी मचा रहे थे. 52 तब अत्याचारियों से कहा जाएगा, अब सदा रहने वाली यातना का मज़ा चखो. तुम्हें उसी का बदला दिया जा रहा है जिसकी तुम कमाई करते रहे हो.

53 (पैग़ंबर!) वे तुमसे पूछते हैं, क्या वास्तव में यह सच है जो तुम कह रहे हो? कहो, मेरे रब की क़सम! निस्संदेह, यह सच है. और तुम बच निकलने वाले नहीं हो. 54 हर उस आदमी के पास जिसने ज़ुल्म किया है यदि वह सब कुछ हो जो धरती पर है तो वह (सज़ा से बचने के लिए) उसे अर्थदंड के रूप में देना चाहेगा. जब ये (सज़ा-

पात्र) लोग उस यातना को देख लेंगे तो दिल ही दिल में पछताएंगे. तब उनके बीच न्यायपूर्वक फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई अत्याचार न होगा. 55 जान लो! आसमानों तथा धरती में जो कुछ है सब अल्लाह का है. निस्संदेह! अल्लाह का वादा सच्चा है. लेकिन उनमें अधिकतर लोग नहीं जानते. 56 वही जीवन प्रदान करता है और वही मृत्यु देता है; और उसी की ओर तुम सबको पलटना है.

57 ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से उपदेश आ गया है. और वह दिलों की विकृतियों का (अर्थात मानसिक बिमारियों का) इलाज है. और जो उस पर ईमान लाए उनके लिए (यह उपदेश ग्रंथ) मार्गदर्शन और रहमत है. 58 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, यह अल्लाह की कृपा और मेहरबानी है कि उसने यह (उपदेश-ग्रंथ) भेजा, इस पर तो लोगों को प्रसन्न होना चाहिए. यह उन सब चीज़ों से उत्तम है जिसे समेटने में लोग लगे हुए है.

59 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, तुम लोगों ने कभी यह सोचा भी है कि जो जीविका अल्लाह ने तुम्हारे लिए उतारी थी उसमें से तुमने स्वयं ही किसी को अवैध और किसी को वैध ठहरा लिया. इनसे पूछो, क्या अल्लाह ने तुम्हें इसकी अनुमति दी थी या तुम अल्लाह पर झूठ गढ़ रहे हो? 60 जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं, उन्होंने क़यामत के दिन के बारें में क्या समझ रखा है. निस्संदेह! अल्लाह लोगों पर बहुत कृपा करने वाला है, लेकिन अधिकतर लोग ऐसे हैं जो अपने रब के प्रति कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते.

61 (पैग़ंबर!) तुम जिस अवस्था में भी होते हो और क़ुरआन में से जो कुछ भी पढ़ कर सुनाते हो. और तुम सब लोग जो कुछ भी कार्य करते रहते हो हम तुम्हें देख रहे होते हैं. कोई कण भर चीज़ आसमान व ज़मीन में ऐसी नहीं है, न छोटी, न बड़ी जो तुम्हारे रब की नज़र से छिपी हुई हो और सब कुछ एक सुस्पष्ट किताब में दर्ज न हो.

62 तो सुन लो! अल्लाह की निकटता प्राप्त किए हुए लोगों के लिए न कोई भय होगा और न वे कभी दुःखी होंगे. 63 (जन्नत में वे लोग बसाए जाएंगे) जो ईमान लाए और ख़ुदा के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहे.
64 उनके लिए (वर्तमान) दुनिया के जीवन में और मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में शुभ-सूचना है. अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता. (निस्संदेह!) यही बड़ी सफलता है. 65 (पैग़ंबर! सत्य का इन्कार करने वाले) लोगों की बात तुम्हें दुःखी न करे. सारा का सारा प्रभुत्व अल्लाह ही को प्राप्त है. वह सुनने वाला, जानने वाला है.

66 यह जान लो! निस्संदेह, जो कोई आसमानों में और ज़मीन में पाया जाता है, वह अल्लाह ही का है और जो लोग अल्लाह के सिवा (स्वयं के गढ़े हुए) साझीदारों को पुकारते हैं, वह किस चीज़ का अनुसरण कर रहे हैं, वे केवल भ्रम का अनुसरण कर रहे हैं और मात्र अटकल दौड़ा रहे हैं. 67 वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई, ताकि तुम उसमें सुकून हासिल करो. और दिन को प्रकाशमान बनाया (ताकि तुम उसमें दौड़-धूप कर सको). निस्संदेह इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो (गंभीरतापूर्वक) सुनते हैं.

68 (सत्य का इन्कार करने वाले) लोगों ने कहा, अल्लाह ने बेटा बनाया है. पाक है वह! निस्पृह है वह! ज़मीन व आसमान में (अर्थात समस्त सृष्टि में) जो कुछ है सब उसी का है. इस (निराधार) बात का तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं. क्या तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बात कहते हो जो तुम नहीं जानते. 69 (पैग़ंबर!) कह दो, जो लोग अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं, वे कदापि सफलता नहीं पा सकते. 70 उनके लिए वर्तमान दुनिया में कुछ लाभ उठा लेने का (मौक़ा) तो है, लेकिन (अंत में) उन्हें हमारी ओर ही पलट कर आना है. फिर हम उन्हें उनके सत्य का इन्कार करने के बदले में कठोर यातना का स्वाद चखाएंगे.

71 और इन्हें (पैग़ंबर) नूह का वृतांत सुनाओ, जब उसने अपनी क़ौम से कहा, ऐ मेरी क़ौम! तुम्हारे दरमियान मेरी उपस्थिती और मेरा अल्लाह के संदेशों के द्वारा तुम्हें चेताना यदि तुम्हें असह्य हो रहा हो तो (सुनो) मैंने तो अल्लाह पर भरोसा किया है (अर्थात मैं अल्लाह के जिस मिशन को लेकर उठा हूँ मैं अल्लाह के भरोसे उस पर अटल हूँ). तुम सर्वसम्मति के साथ (मेरे विरुद्ध जो) निर्णय करना है कर लो और अपने साथ अपने (ठहराए हुए) साझीदारों को भी ले लो, ताकि तुम्हें अपने निर्णय में कोई संदेह बाक़ी न रहे. फिर तुम लोग मेरे साथ जो कुछ करना चाहते हो वह कर डालो और मुझे किसी प्रकार का अवसर न दो. 72 तुमने तो मेरे उपदेश से मुँह मोड़ा है, लेकिन मैंने तुमसे कुछ बदला (प्रतिफल) माँगा नहीं था. मेरा प्रतिफल तो अल्लाह के ज़िम्मे है. मुझे तो यही आदेश दिया गया है कि मैं स्वयं को अल्लाह को समर्पित कर दूँ. 73 फिर उन्होंने उसे झुठला ही दिया. तो हमने उसे और उन लोगों को जो उनके साथ नौका में सवार थे उन्हें बचा लिया और उन्हें ज़मीन पर उत्तराधिकारी बनाया. और उन सबको डुबो दिया, जिन्होंने हमारे संदेशों को झुठलाया था. तो देख लो जिन्हें सचेत किया गया था उनका कैसा अंजाम हुआ.

74 फिर नूह के बाद हमने कितने ही पैग़ंबर भेजे उनकी क़ौमों की तरफ़, तो सारे पैग़ंबर (अपनी-अपनी क़ौम की तरफ़) सत्य के स्पष्ट प्रमाण के साथ आये, लेकिन (उनकी क़ौम के) लोग ऐसे न थे कि उस पर ईमान लाते जिसे वे पहले झुठला चुके थे. इसी तरह हम सीमा से निकल जाने वाले लोगों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं (अर्थात ऐसे लोगों के लिए सत्य का दरवाज़ा बंद कर दिया जाता है.).

75 फिर हमने उन पैग़ंबरों के बाद मूसा और हारून को फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास अपनी निशानियों के साथ भेजा, लेकिन उन्होंने घमंड किया. वे अपराधी लोग थे. 76 तो जब हमारी ओर से सत्य उनके सामने आया, तो उन्होंने कहा, यह तो

स्पष्ट जादू है. 77 (इस पर) मूसा ने कहा, (अल्लाह की ओर से) तुम्हारे पास आए हुए (स्पष्ट) सत्य को तुम जादू कहते हो? क्या यह जादू हो सकता है, हालाँकि जादूगर कभी सफलता नहीं प्राप्त करते. 78 उन्होंने (उत्तर में) कहा, क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि हमें उस रास्ते से फेर दो जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है. (ऐसा करके क्या) तुम दोनों (यह चाहते हो कि) ज़मीन पर तुम्हारी श्रेष्ठता स्थापित हो जाए, लेकिन हम तुम्हारी बात कदापि मानने वाले नहीं हैं.

79 फिर फ़िरऔन ने (अपने आदमियों से) कहा, (मुल्क के) सभी कुशल जादूगरों को मेरे पास ले लाओ. 80 जब जादूगर आ गये तो मूसा ने उनसे कहा, जो कुछ तुम प्रस्तुत करने वाले हो, प्रस्तुत करो. 81 जब जादूगरों ने (अपने अंछर) फेंके, तो मूसा ने कहा, ये जो कुछ तुम बना लाए हो जादू है. अल्लाह उसे अभी मलिया-मेट किये देता है. निस्संदेह अल्लाह उपद्रवियों के काम फलीभूत नहीं होने देता (अर्थात उपद्रवियों को अंत में कभी सफलता प्राप्त नहीं हो सकती).

82 अल्लाह अपने शब्दों से सत्य को स्थापित करता है चाहे अपराधियों को वह कितना ही अप्रिय लगे.

83 फिर मूसा को उसकी क़ौम के कुछ युवकों के सिवा किसी ने न माना, फ़िरऔन के डर से और अपनी क़ौम के बड़े लोगों के डर से कि कहीं वह उनको परीक्षा में न डाल दें. निस्संदेह, फ़िरऔन मुल्क में ज़ालिम (बादशहा) की तरह बर्ताव करता था. निश्चय ही वह सीमाओं का उल्लंघन करने वालों में से था. 84 मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ मेरी क़ौम! यदि तुम वास्तव में अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो, यदि तुम (वास्तव में) आज्ञाकारी हो. 85 इस पर वे बोले, हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया. (तब उन्होंने अल्लाह से प्रार्थना की,) ऐ हमारे रब! अत्याचारी लोगों के लिए हमें

आज़माइश का साधन न बना! 86 और अपनी दया से सत्य का इन्कार करने वाले लोगों से हमें छुटकारा दिला.

87 हमने मूसा और उसके भाई की ओर (हमारा) यह संदेश भेजा कि अपनी क़ौम के लिए मिस्र में कुछ घर निश्चित कर लो और उन घरों को क़िबला (उपासना क्रेंद) बनाओ और नमाज़ क़ायम करो और ईमान वालों को शुभ-सूचना दे दो.

88 मूसा ने दुआ की, ऐ हमारे रब! तूने फ़िरऔन और उसके सरदारों को (वर्तमान) दुनिया की ज़िंदगी में शोभा-सामग्री और धन दिया है. उसके कारण (वे निरंकुश होकर) ऐ हमारे रब! वे लोगों को तेरे मार्ग से भटका रहे हैं. ऐ हमारे रब! तू उनके धन-संपत्ति को नष्ट कर दे और उनके दिलों पर ऐसी मुहर लगा दे कि वे ईमान न लाएँ, यहाँ तक कि कष्टदायक यातना को न देख लें. 89 अल्लाह ने जवाब में फ़रमाया, तुम दोनों की दुआ क़बूल की गयी. अब तुम दोनों जमे रहो और उन लोगों के मार्ग का अनुसरण न करो जो ज्ञान नहीं रखते.

90 और हमने बनी इसराईल को समुद्र पार करा दिया, फिर फ़िरऔन और उसकी सेना ने ज़ुल्म और ज़्यादती के उद्देश्य से उनका पीछा किया. यहाँ तक कि जब फ़िरऔन डूबने लगा तो उसने कहा कि मैं ईमान लाया कि सच्चा ख़ुदा उसके सिवा कोई नहीं है जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए. और (अब) मैं भी उन लोगों में हूँ जो आज्ञाकारी हैं.
91 (ख़ुदा की ओर से उत्तर दिया गया,) अब ईमान लाता है! हालाँकि इससे पहले तक तू अवज्ञा करता रहा और तू बिगाड़ पैदा करने वालों में से था.
92 अब तो हम केवल तेरी लाश (मृत शरीर) को ही बचाएंगे, ताकि तू अपने बाद वालों के लिए एक (शिक्षाप्रद) निशानी बने. लेकिन वास्तव में बहुत से लोग हमारी संदेशयुक्त निशानियों से ग़फ़लत बरतते हैं.

93 (फिर उसके बाद) हमने इसराईल की संतान को सम्मानित ठिकाना दिया और उन्हें अच्छी आजीविका प्रदान की. फिर उन्होंने उस समय आपस में मतभेद किया. जबकि (दिव्य) ज्ञान उनके पास आ चुका था. निश्चय ही तुम्हारा रब क़यामत के दिन उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे मतभेद करते रहे हैं.

94 अब यदि तुम्हें उस मार्गदर्शन के बारे में कुछ भी संदेह हो जो हमने तुम पर उतारा है तो उन लोगों से पूछ लो जो पहले से किताब पढ़ रहे हैं. निस्संदेह! यह तुम्हारे पास सत्य आया है तुम्हारे रब की ओर से, फिर तुम संदेह करने वालों में से न बनो. 95 और तुम उन लोगों में शामिल न होना जिन्होंने अल्लाह की संदेशयुक्त निशानियों को झुठलाया है, अन्यथा तुम घाटा उठाने वालों में से होंगे.

96 निस्संदेह, जिन लोगों के बारे में तुम्हारे रब की बात सच्ची साबित हो चुकी है (अर्थात सत्य प्राप्ति के संबंध से तुम्हारे रब का नियम सिद्ध हो चुका है) वे ईमान नहीं लाएंगे, 97 चाहे उनके सामने हर एक निशानी (प्रमाण) क्यों न आ जाए, जब तक कि दुःख देने वाली यातना को (सामने आती हुयी) न देख लें. 98 फिर (मानवीय इतिहास में) क्या ऐसा कोई उदाहरण है कि एक बस्ती (यातना आती देखकर) ईमान लाई हो और उसका ईमान उसके लिए लाभकारी हुआ हो, यूनुस की क़ौम के सिवा, जब यूनुस की क़ौम ईमान लाई थी तो हमने उन पर से अपमानजनक यातना टाल दी थी और उन्हें एक अवधी तक सुख भोगने का अवसर प्रदान किया. 99 यदि तुम्हारा रब चाहता तो पृथ्वी पर जितने लोग हैं सब के सब ईमान ले आते. तो फिर क्या तुम लोगों को विवश करोगे कि वे ईमान वाले हो जाएँ.

100 किसी व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं कि वह अल्लाह की अनुमति के बिना ईमान ला सके. अल्लाह तो उन लोगों पर (पथभ्रष्टता की) गंदगी डाल देता जो बुद्धि से काम नहीं लेते.

101 इनसे कहो, आसमानों में और पृथ्वी में जो कुछ है उसे (चिंतन की नज़र से) देखो. लेकिन संदेशयुक्त निशानियाँ और चेतावनियाँ उन लोगों के लिए लाभप्रद नहीं होती जो ईमान नहीं लाते. 102 (पैग़ंबर!) जिस प्रकार के (बुरे) दिन इनसे पहले गुज़रे हुए (सत्य के इन्कारी) लोगों पर आए थे वैसे ही दिन इन पर आने की प्रतीक्षा के सिवा ये और कुछ नहीं कर रहे हैं. उनसे कहो, अच्छा, तो प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ. 103 फिर (जब ऐसा समय आता है) तो हमारी रीति यह है कि हम अपने पैग़ंबरों को और उन लोगों को बचा लिया करते हैं जो ईमान लाए हों. हम पर यह हक़ है कि हम ईमान लाने वालों को बचा लें (अर्थात ईमान लाने वालों को बचाना हम पर अनिवार्य है).

104 (पैग़ंबर!) कह दो, ऐ लोगो! यदि तुम मेरे धर्म के संबंध से किसी संदेह में हो तो (सुन लो,) तुम अल्लाह के सिवा जिनकी उपासना करते हो उनकी उपासना मैं नहीं करता, बल्कि मैं उस अल्लाह की उपासना करता हूँ जो तुम्हें मृत्यु देता है. मुझे आदेश मिला है कि मैं ईमान वालों में से बनू. 105 (मुझे यह आदेश मिला है कि) हर ओर से एकाग्र होकर अपना रुख (अल्लाह के) दीन (अर्थात मज़हब) की ओर कर लो और उन लोगों में कदापि सम्मिलित न होना जो अल्लाह के साझीदार ठहराते हैं. 106 और अल्लाह को छोड़कर किसी ऐसे को न पुकारो जो तुम्हें न लाभ पहुँचा सकते हैं और न हानि. लेकिन यदि तुमने ऐसा किया तो फिर तुम अवश्य अत्याचारियों में से हो जाओगे.

107 और यदि अल्लाह तुम्हें किसी कष्ट में डाल दे तो उसके सिवा दूसरा कोई नहीं जो उस कष्ट को दूर कर सके. और यदि वह तुम्हें कोई भलाई पहुँचाना चाहे तो उसकी कृपा को कोई रोक नहीं सकता. वह अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है, अपनी कृपा प्रदान करता है. वह अत्यंत क्षमाशील एवं दयावान है.

108 (पैग़ंबर!) कह दो, ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य आ गया है. अब जो कोई सीधे मार्ग को अपनाएगा, वह अपने ही लिए सीधे मार्ग को अपनाएगा. और जो कोई भटकेगा तो उसके भटकने का वबाल उसी पर पड़ेगा. मैं तुम्हारे ऊपर कोई पहरेदार नहीं हूँ.

109 पैग़ंबर! जो कुछ (आसमानी-संदेश) तुम पर प्रकट किया जा रहा है, उसका अनुसरण करो और धैर्य से काम लो, यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला कर दे. वही सबसे उत्तम न्यायाधीश है.

सूरह–11. हूद

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अलिफ़० लाम० रा०. यह अल्लाह की किताब है. जिसके संदेश पूरी तरह से स्पष्ट हैं और सविस्तर बयान किए गए हैं उसकी ओर से जो असीम बुद्धिमान तथा हर चीज़ की ख़बर रखने वाला है. 2 कि तुम अल्लाह के सिवा किसी और की उपासना न करो. (पैग़ंबर उनसे कहो,) मैं तो उसकी ओर से तुम्हें सचेत करने वाला और शुभ-सूचना देने वाला हूँ. 3 और यह कि तुम अपने रब से क्षमायाचना करो, और उसकी ओर पलट आओ. वह तुम्हें एक नियत समय तक अच्छा जीवन व्यतीत कराएगा. और प्रत्येक हक़दार को अपनी ओर से अधिक प्रदान करेगा. लेकिन यदि तुम मुँह फेरते हो तो निश्चय ही मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन की यातना का भय है. 4 तुम सबको उसी की ओर पलट कर जाना है. और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है.

5 देखो, यह लोग अपने सीनों को लपटते हैं, ताकि उससे छिप जाएँ. ख़बरदार, जब ये कपड़ों से अपने आपको ढाँपते हैं, अल्लाह जानता है जो कुछ वे छिपाते हैं और जो वह प्रकट करते हैं. वह दिलों तक के भेदों को जानने वाला है.

पारा – 12 6 धरती पर चलने फिरने वाला कोई जीवधारी ऐसा नहीं है जिसकी जीविका अल्लाह के ज़िम्मे न हो. वह जानता है कि कौन कहाँ रहता है और कौन कहाँ सौंपा जाता है. सब कुछ एक स्पष्ट किताब में दर्ज है..

7 वह अल्लाह ही है जिसने आसमानों और धरती की छः दिनों में (अर्थात छः कालावधियों में) रचना की. उसका सिंहासन पानी पर था. ताकि तुम्हारी परिक्षा ले कि तुममें कौन अच्छा कर्म करता है. और जब तुम (लोगों से) कहते हो कि निस्संदेह तुम लोग मरने के बाद उठाए जाओगे तो (इस पर) सत्य का इन्कार करने वाले लोग कहते हैं, यह तो बस स्पष्ट जादू है. 8 और यदि हम एक निश्चित अवधि तक के लिए उनसे यातना

को टालते हैं तो वे कहने लगते हैं, आख़िर किस चीज़ ने उसे रोक रखा है. सुन लो, जिस दिन वह उन पर आ पड़ेगी तो वह उन पर से टाली न जाएगी. और वही चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसकी वे हँसी उड़ाया करते थे.

9 और यदि हम मनुष्य को अपनी कोई कृपा प्रदान करते हैं, फिर जब उसको उससे वंचित कर देते हैं तो वह निराश और अकृतज्ञ हो जाता है. 10 और यदि किसी दुःख के पश्चात जो उसे पहुँचा था अपनी नेमत का मज़ा चखाते हैं, तो वह कहने लगता है, अब तो मेरे सारे दुःख दूर हो गए, फिर वह इतराने वाला और अकड़ने वाला बन जाता है. 11 इसमें अपवाद उन लोगों का है जो धैर्य से काम लेने वाले और भले कर्म करने वाले हैं. ऐसे लोगों के लिए माफ़ी है और बड़ा प्रतिफल है.

12 (पैग़ंबर!) कहीं ऐसा न हो कि तुम उस संदेश का कोई भाग छोड़ दो जो तुम्हारी ओर प्रकट किया जा रहा है. और ऐसा न हो कि तुम इस बात पर दिल तंग हो रहे हो कि वे कहते हैं (अर्थात इन्कार करने वाले कहते हैं) कि इस पैग़ंबर पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतारा गया या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया. (पैग़ंबर!) तुम तो मात्र चेतावनी देने वाले हो. हर चीज़ का ज़िम्मेदार तो अल्लाह है.

13 क्या वे कहते है कि पैग़ंबर ने इस (क़ुरआन) को स्वयं गढ़ लिया है कहो, यदि तुम अपनी बात में सच्चे हो, तो इस जैसी गढ़ी हुई दस सूरह (अध्याय) बना लाओ. और (अपनी सहायता के लिए) अल्लाह के सिवा जिस किसी को बुला सकते हो, बुला लो. 14 (जिन्हें तुम अपनी सहायता के लिए पुकारोगे) यदि वे तुम्हारा कहना पूरा न कर सके तो जान लो कि यह क़ुरआन अल्लाह के ज्ञान से उतरा है, जिसके सिवा दूसरा कोई उपास्य नहीं. तो क्या फिर तुम (इस सच्ची बात के आगे) सिर झुकाते हो?

15 जो लोग इसी दुनिया के जीवन तथा उसकी शोभा के इच्छुक हैं ऐसे लोगों के कर्मों का बदला हम इसी दुनिया में दे देते हैं और इसमें उनके साथ कोई कमी नहीं की

जाती. 16 यही वे लोग हैं जिनके लिए मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में आग के सिवा और कुछ नहीं. उन्होंने (वर्तमान) दुनिया में जो बनाया वह सब बरबाद हो गया. और उन्होंने जो कुछ कमाया सब व्यर्थ होकर रहा.

17 भला जो व्यक्ति अपने रब की ओर से (स्वाभाविक स्तर पर) स्पष्ट प्रमाण पर हो, फिर उसके बाद एक (ख़ुदा की ओर से सत्य की) गवाही देने वाली (किताब) आए, जैसे इससे पहले मूसा (को प्रदान की गयी) किताब मार्गदर्शक और कृपा के रूप में मौजूद थी. (ऐसे व्यक्ति की तुलना सत्य का इन्कार करने वालों से कैसे हो सकती है?) जबकि ऐसे ही लोग उस पर ईमान लाते हैं. और इन गिरोहों में से जो कोई इसका इन्कार करे तो उसके लिए जिस जगह का वादा है, वह आग है. (पैग़ंबर) तुम्हें इस बारे में कोई संदेह न हो, यह (क़ुरआन) सत्य है तुम्हारे रब की ओर से, लेकिन अधिकतर लोग नहीं मानते.

18 उससे बढ़कर और अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े, ऐसे लोग अपने रब के सामने पेश होंगे और गवाही देने वाले कहेंगे, यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ गढ़ा था. सुनो! अल्लाह की ओर से फिटकार है अत्याचारियों पर. 19 (अल्लाह की फिटकार है) उन पर जो लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसमें टेढ़ ढूँढ़ते हैं. यही वे लोग हैं जो मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन का इन्कार करने वाले हैं. 20 (अगरचे ये लोग सीमित अवधी तक स्वतंत्र हैं लेकिन) वे पृथ्वी पर अल्लाह को विवश करने वाले नहीं. और अल्लाह (के मुक़ाबले में) उनका कोई सहायक नहीं उन्हें दोहरी यातना दी जाएगी. (इस कारण कि सत्य का संदेश) सुनने की योग्यता वे खो चुके थे और (इसी तरह सत्य की निशानियों में) उन्हें (सत्य) नज़र नहीं आता था. 21 यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला और वह सब कुछ उनसे खो गया जो उन्होंने गढ़ रखा था. 22 इसमें कुछ संदेह नहीं कि यही लोग आख़िरत में (अर्थात मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में) सबसे ज़्यादा घाटे में रहेंगे.

23 निस्संदेह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने भले कर्म किए और पूरी तरह से अपने रब ही के होकर रहे, तो ऐसे ही लोग जन्नत वाले हैं. वे उसमें सदैव रहेंगे. 24 उन दो पक्षों की मिसाल ऐसी है जैसे एक अंधा और बहरा हो और दूसरा देखने और सुनने वाला, क्या ये दोनों बराबर हो सकते हैं? क्या तुम चिंतन नहीं करते?

25 हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर (अपना पैग़ंबर बनाकर) भेजा. (उसने अपनी क़ौम से कहा,) मैं तुम लोगों को साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला हूँ. 26 यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की उपासना न करो. अन्यथा मुझे डर हैं कि तुम पर कष्टप्रद यातना का दिन आएगा. 27 (उत्तर में) उसकी क़ौम के सरदार, जिन्होंने उसकी बात मानने से इन्कार कर दिया था, बोले हम तो तुम्हें अपने जैसा एक आदमी देखते हैं और हम इसके सिवा कुछ नहीं देखते कि यदि तुम्हारा कुछ लोग अनुसरण कर रहे हैं तो वे हमारे समाज के नीच तथा बेसमझ लोग हैं और हम अपने मुक़ाबले में तुममें कोई बड़ाई नहीं देखते, बल्कि हम तो तुम्हें झूठा समझते हैं.

28 नूह ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! तनिक सोचो तो सही, यदि मैं अपने रब की और से एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उसने मुझे अपने पास से दयालुता प्रदान की है (अर्थात मुझे अपना पैग़ंबर नियुक्त किया है.) लेकिन यदि वह तुम्हें दिखाई न दे और तुम न मानना चाहो, तो क्या हम जबरदस्ती उसे तुम पर थोप सकते हैं. 29 (नूह ने आगे कहा,) ऐ मेरी क़ौम! मैं इस काम पर तुमसे कोई धन नहीं माँगता (अर्थात मेरा तुमसे कोई निजी स्वार्थ नहीं है), मेरा बदला तो अल्लाह के ज़िम्मे है. और मैं कदापि उन लोगों को अपने से दूर करने वाला नहीं जो ईमान लाए हैं, वे तो अपने रब से मिलने वाले हैं. लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम लोग अज्ञानता में ग्रस्त हो. 30 और ऐ मेरी क़ौम! यदि मैं उन लोगों को अपने से दूर कर दूँ तो अल्लाह के मुक़ाबले कौन मेरी मददकरेगा? तो क्या तुम सोचते नहीं? 31 और मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं यह कहता हूँ कि मैं

परोक्ष का ज्ञान रखता हूँ. और न यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ. और मैं यह भी नहीं कह सकता कि जो लोग तुम्हारी दृष्टि में तुच्छ हैं उन्हें अल्लाह कोई भलाई नहीं देगा. अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ उनके दिलों में है. यदि मैं (उनके संबंध से) ऐसा कहूँ, तब तो मैं ज़ालिम हूँगा.

32 उन्होंने कहा, ऐ नूह! तुम हमसे झगड़ चुके और बहुत झगड़ चुके. अब तो बस वह चीज़ (अर्थात वह अज़ाब) हम पर ले आओ जिसकी धमकी तुम हमें देते हो, यदि तुम सच्चे हो.

33 (इस पर) नूह ने कहा, उसको तो तुम्हारे ऊपर अल्लाह ही लाएगा, यदि वह चाहेगा और तुम उसके नियंत्रण से बाहर नहीं जा सकोगे (अर्थात जब अल्लाह तुम्हारी पकड़ करेगा तब तुम उसे आजिज़ (पराजित) नहीं कर पाओगे.).

34 (नूह ने आगे कहा,) मेरा उपदेश तुम्हारे लिए लाभप्रद नहीं होगा, फिर मैं तुम्हें कितना ही उपदेश (क्यों न) करूँ, जबकि अल्लाह यह चाहता हो कि तुम्हें भटका दे. वही तुम्हारा रब है और तुम्हें उसी की ओर लौट कर जाना है.

35 क्या ये लोग कहते है कि पैग़ंबर ने स्वयं इस (क़ुरआन) को गढ़ लिया है. (पैग़ंबर) इनसे कह दो, यदि मैंने इसे गढ़ा है तो मेरे अपराध की ज़िम्मेदारी मुझ पर है. और जो अपराध तुम कर रहे हो तो मैं उसकी ज़िम्मेदारी से बरी हूँ.

36 और नूह की ओर यह संदेश प्रकट किया गया कि जो लोग ईमान ला चुके उनके सिवा तुम्हारी क़ौम में से अब कोई ईमान नहीं लाएगा. तो जो कुछ वे कर रहे हैं उस
पर तुम दुःखी न हो. 37 तुम हमारी निगरानी में हमारे मार्गदर्शन के अनुसार एक नाव
बनाओ और अब उन लोगों के संबंध से मुझसे कुछ न कहना जिन्होंने (सत्य का इन्कार
करने का) अत्याचारी कृत्य किया. निस्संदेह, अब वे सारे लोग डूबने वाले हैं. 38 नूह
नाव बनाने लगा, जब कभी उसकी क़ौम के सरदार वहाँ से गुज़रते तो वह उसकी हँसी

उड़ाया करते. (इस पर) नूह ने (उनसे) कहा, यदि तुम हम पर हँसते हो, तो हम भी तुम पर हँस रहे हैं, जिस तरह तुम हँस रहे हो. 39 जल्द ही तुम जान लोगे कि वह कौन है जिस पर यातना आती है, जो उसे अपमानित कर छोड़ेगी और (यह भी तुम जल्द जान लोगे की मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में) किस पर स्थायी यातना आने वाली है.

40 यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो धरती से पानी के स्रोत उबल पड़े. हमने (नूह से) कहा, हर प्रकार के जानवरों का एक-एक जोड़ा (अर्थात नर एवं मादा) नाव में चढ़ा लो और अपने घर वालों को भी उसमें सवार कर लो, सिवाय उसके जिसके बारे में पहले ही बात हो चुकी है (कि वह नष्ट होकर रहेगा). और जो भी ईमान लाया है उसे भी सवार कर लो. थोडे ही लोग थे जो नूह के साथ ईमान लाए थे. 41 और नूह ने (अपने साथियों से) कहा, नाव में सवार हो जाओ. अल्लाह के नाम से इसका चलना भी है और इसका ठहरना भी. निस्संदेह! मेरा रब बड़ा क्षमाशील एवं दयावान है.

42 और नाव पहाड़ जैसी लहरों के बीच उन्हें लेकर चलने लगी और नूह ने अपने बेटे को पुकारा, जो नाव से दूर (कुछ फ़ासले पर) था. कहा, ऐ मेरे बेटे! हमारे साथ (नाव में) सवार हो जा और सत्य का इन्कार करने वालों के साथ न रह! 43 (इस पर) उसने जवाब दिया, मैं किसी पहाड़ की शरण ले लुँगा, वह मुझे पानी से बचा लेगा. (इस पर) नूह ने कहा, आज अल्लाह के आदेश से कोई बचाने वाला नहीं, सिवाय इसके कि स्वयं अल्लाह ही किसी पर दया करे. इतने में लहर दोनों के बीच आ गयी और वह डूबने वालों में शामिल हो गया.

44 (फिर ख़ुदा की ओर से आदेश हुआ,) ऐ धरती! अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान! तू थम जा. फिर पानी सुखा दिया गया और मामले का निर्णय कृत्य में लाया गया और नाव जूदी पहाड़ पर ठहर गयी और कह दिया गया, दूर हो अत्याचारियों की क़ौम!

45 और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा ऐ मेरे रब! मेरा बेटा मेरे परिवार का ही एक घटक है और निस्संदेह! तेरा वादा सच्चा है और सारे न्याय करने वालों में तू ही सर्वश्रेष्ठ न्यायाधीश है. 46 (इस पर) अल्लाह ने कहा, ऐ नूह! (अब) वह तुम्हारे परिवार का घटक नहीं. उसके कर्म बुरे हैं. तो तुम मुझसे ऐसी चीज़ न माँगो, जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं (अर्थात जिसकी हक़ीक़त को तुम जानते नहीं). मैं तुम्हें उपदेश करता हूँ कि तुम अज्ञानियों में से न बनो.

47 नूह ने कहा, ऐ मेरे रब! मैं इससे तेरी पनाह माँगता हूँ कि तुझसे उस चीज़ का सवाल करूँ जिसका मुझे कोई ज्ञान न हो. यदि तू मुझे क्षमा न करे और मुझ पर दया न करे तो मैं नष्ट हो जाऊँगा.

48 (ख़ुदा की ओर से) कहा गया, ऐ नूह! (नाव से) उतर जाओ. हमारी ओर से (शाश्वत-रूपी) सलामती और बरकतें हैं तुम पर (और उन समूहों पर जो तुम्हारे साथ हैं) और उन (सत्यवादियों) पर भी सलामती और बरकतें होंगी जो तुम्हारे साथ वालों में से आगे आएंगे. और कुछ (अत्याचारी) गिरोह ऐसे भी आगे आएंगे, जिन्हें हम कुछ समय तक (आजीविका से) लाभान्वित होने देंगे, फिर उन्हें हमारी ओर से कष्टप्रद यातना पकड़ लेगी. 49 (पैग़ंबर!) ये परोक्ष की ख़बरें हैं. जिन्हें हम तुम्हारी ओर भेज रहे हैं. इससे पहले न तुम इन्हें जानते थे और न तुम्हारी क़ौम. तो धैर्य से काम लो अंतिम परिणाम (अर्थात अंत में सब कुछ भला ही भला) उनका है जो ख़ुदा के प्रति सजग रहते हैं.

50 फिर हमने (क़ौमे-)आद की तरफ़ उनके भाई हूद को (अपना पैग़ंबर बनाकर) भेजा. हूद ने (अपनी क़ौम से) कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा दूसरा ऐसा कोई नहीं है जिसकी तुम इबादत करो. (उस सच्चे ख़ुदा के सिवा जिन्हें) तुम (पूजते हो) (वह) इसके सिवा कुछ नहीं कि तुम्हारे गढ़े हुए झूठ हैं. 51 (हूद ने आगे

कहा,) ऐ मेरी क़ौम के लोगो! इस काम पर मैं तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला (अर्थात प्रतिफल) तो उसके ज़िम्मे है जिसने मेरा सृजन किया है. क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? 52 (हूद ने आगे कहा,) अपने रब से क्षमा की याचना करो और उसकी ओर पलट आओ. वह आसमान को तुम पर ख़ूब बरसता हुआ छोड़ देगा और तुम्हारी वर्तमान शक्ति में और शक्ति की वृद्धि करेगा, तुम अपराधी बनकर मुँह न फेरो.

53 (इस पर) क़ौम के लोगों ने उत्तर दिया, ऐ हूद! तुम हमारे पास कोई स्पष्ट निशानी लेकर नहीं आए हो और हम तुम्हारे कहने भर से अपने उपास्यों को छोड़ने वाले नहीं हैं और हम तुम्हारी बात मानने वाले नहीं. 54 हमारा (तुम्हारे संबंध से) केवल यही कहना है कि तुम्हारे ऊपर हमारे उपास्यों में से किसी की मार पड़ गयी है. (इस पर) हूद ने कहा, मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि उनसे मेरा कोई संबंध नहीं जिन्हें तुम साझीदार ठहराते हो, 55 अल्लाह के सिवा तो तुम सब मिलकर मेरे साथ मेरे विरुद्ध (जो चाहो) षड्यंत्र रचो और मुझे किसी भी प्रकार से मुहलत न दो. 56 (पैग़ंबर हूद ने आगे कहा,) मैंने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा रब है और तुम्हारा रब भी. कोई जीवधारी ऐसा नहीं जिसकी चोटी उसके हाथ में न हो. निस्संदेह मेरा रब सीधे मार्ग पर है (अर्थात मेरे रब का मार्ग ही सीधा मार्ग है). 57 (हूद ने आगे कहा), तो अब यदि तुम मुँह फेरते हो तो फेर लो, (तो जान लो कि) जो संदेश देकर मुझे तुम्हारे पास भेजा गया था, वह मैं तुमको पहुँचा चुका हूँ. अब मेरा रब तुम्हारे स्थान पर किसी दूसरी क़ौम को लाएगा और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे. निस्संदेह! मेरा रब हर चीज़ पर निगहबान है.

58 फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हमने अपनी दया से बचा लिया हूद को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे और हमने उन्हें (मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन की) कठोर यातना से भी बचा लिया. 59 यह क़ौमे-आद थी, उन्होंने अपने रब की

निशानियों को झुठलाया और उसके पैग़ंबरों की अवज्ञा की और ऐसे हर एक का अनुसरण किया जो निरंकुश तथा दुराग्रही था. 60 अंततः इस दुनिया में भी उन पर फिटकार पड़ी और मृत्यु-पश्चात उठाए जाने के दिन भी उन पर फिटकार है. तो सुन लो! निस्संदेह, क़ौम-आद ने अपने रब को मानने से इन्कार किया. तो सुनो! दूर कर दिये गए आद, जो हूद की क़ौम थी.

61 और क़ौमे-समूद की ओर हमने उनके भाई सालेह को (अपना पैग़ंबर बनाकर) भेजा. उसने (अपनी क़ौम से) कहा, ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा दूसरा कोई ऐसा नहीं जिसकी तुम इबादत करो. वही है जिसने तुम्हें धरती से (अर्थात मिट्टी में पाये जाने वाले रासायनिक तत्वों से) सृजित किया और धरती पर बसाया. तुम उससे क्षमा चाहो और उसकी ओर पलट आओ. निस्संदेह, मेरा रब (हर इंसान के) क़रीब है और (जो इंसान उसे पुकारता है उसकी) वह पुकार का जवाब देता है.
62 (सालेह की) क़ौम ने कहा, ऐ सालेह! इससे पहले तुम हमारे बीच ऐसे एक व्यक्ति थे जिससे हमें बड़ी आशाएँ थी. क्या तुम हमें उनकी उपासना से रोकते हो जिनकी उपासना हमारे पूर्वज करते रहे हैं. जिस चीज़ की ओर तुम हमें बुलाते हो उसके बारे में हमें बड़ा संदेह है, जिसने हमें दुविधा में डाल रखा है. 63 (इस पर) सालेह ने कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगो! सोचो तो सही, यदि मैं अपने रब के (पास से प्राप्त) एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उसने मुझे अपनी दयालुता प्रदान की है (अर्थात मुझे अपना पैग़ंबर नियुक्त किया है) तो अल्लाह के मुक़ाबले में कौन मेरी सहायता करेगा यदि मैं उसकी अवज्ञा करूँ. (ऐ मेरी क़ौम के लोगो!) तुम तो मुझे घाटे में डालने के सिवा और कुछ नहीं दे सकते.

64 (सालेह ने आगे कहा,) ऐ मेरी क़ौम के लोगो! यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक (संदेशयुक्त) निशानी है. इसे अल्लाह की ज़मीन में चरने के लिए (आज़ाद) छोड़ दो. इसे तकलीफ़ देने के लिए हाथ न लगाना, अन्यथा अतिशीघ्र यातना तुम्हें पकड़

लेगी. 65 लेकिन उन्होंने (स्पष्ट चेतावनी के बावजूद) उसकी कूँचे काट कर उसे मार डाला. (इस पर) सालेह ने कहा, बस और तीन दिन अपने घरों में लाभ उठा लो. यह एक वादा है जो झूठा न होगा. 66 फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हमने अपनी दयालुता से सालेह को तथा उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे बचा लिया, और उस दिन के अपमान से भी उन्हें बचा लिया (जिस दिन समस्त मनुष्य जाति उठायी जाएगी). निस्संदेह तुम्हारा रब सर्वश्रेष्ठ तथा असीम शक्तिमान है.

67 (सालेह की क़ौम में से) जिन लोगों ने अत्याचार किया था, एक भयानक धमाके ने उन्हें अपनी पकड़ में ले लिया, परिणाम-स्वरूप वे अपने घरों में इस प्रकार औंधे पड़े रह गए. 68 मानो वे वहाँ कभी बसे ही न थे. सुन लो! क़ौमे-समूद ने अपने रब को नकारा तो सुन लो! फिटकार हुई क़ौम-समूद पर.

69 और हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते इब्राहीम के पास शुभ-सूचना लेकर आए, (फ़रिश्तों ने) कहा, तुम पर सलाम हो. इब्राहीम ने (उत्तर में) कहा, तुम पर भी सलाम हो. फिर कुछ देर न गुज़री कि इब्राहीम (आए हुए मेहमानों के लिए) एक भुना हुआ बछड़ा ले आया. 70 फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की ओर नहीं बढ़ रहे हैं, तो उनके इस बर्ताव से उसे (कुछ) संदेह हुआ और वह दिल में उनसे डरा. (वह देखकर) फ़रिश्तों ने कहा, डरो नहीं, हमें लूत की क़ौम की ओर भेजा गया है. 71 वहाँ इब्राहीम की बीवी भी खड़ी हुई थी, तो (सारा माजरा जान कर) वह हँस पड़ी. फिर हमने उसे (फ़रिश्तों के द्वारा, पुत्र) इसहाक़ और इसहाक़ के बाद (प्रपौत्र) याक़ूब की ख़ुशख़बरी दी. 72 (इस पर) वह बोली, हाय मेरा अभाग्य! क्या मैं अब संतान को जन्म दूंगी, जबकि मैं बूढ़ी हो चुकी हूँ. और यह मेरे पति भी बूढ़े हो चुके हैं. यह तो बड़े आश्चर्य की बात है. 73 फ़रिश्तों ने (इस पर) कहा, क्या तुम अल्लाह के आदेश पर आश्चर्य करती हो. ऐ इब्राहीम के घर

वालो! तुम लोगों पर तो अल्लाह की दयालुता और उसकी बरकतें हैं. निस्संदेह, अल्लाह अत्यंत प्रशंसनीय तथा महिमावान है.

74 (आए हुए मेहमानों के संबंध से) जब इब्राहीम की आशंका दूर हो गयी और उसे (संतान होने की) शुभ-सूचना भी मिल गयी (जिससे वह प्रसन्न हुआ).फिर वह हमसे लूत की क़ौम के बारे में झगड़ने लगा. 75 निस्संदेह! इब्राहीम बड़ा ही सहनशील, हृदय का कोमल और हमारी ओर सदैव रुजू होने वाला था. 76 (इस पर) जवाब दिया गया, ऐ इब्राहीम! छोड़ो इसे, तुम्हारे रब का फ़ैसला हो चुका है. अब उन लोगों पर एक ऐसी यातना आने वाली है जिसे टाला नहीं जा सकता.

77 और जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते, (पैग़ंबर) लूत के पास पहुँचे तो वह फ़रिश्तों के आने के कारण घबराया और उसका दिल तंग हुआ (कि उसे लगा कि मैं इन मेहमानों की अपने पापी लोगों से सुरक्षा करने में असमर्थ हूँ) वह कहने लगा, आज तो बड़ी मुसीबत का दिन है. 78 (वह मेहमान आए ही थे कि) लूत की क़ौम के लोग दौड़ते हुए उसके पास आ पहुँचे. वे पहले से ही दुष्कर्म करते आ रहे थे. लूत ने उनसे कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगो! ये मेरी बेटियाँ हैं (तुम उन्हें अपने विवाह-बंधन में ले सकते हो) वे तुम्हारे लिए ज़्यादा पाक हैं. तो अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के सामने अपमानित न करो. क्या तुममें एक भी भला आदमी नहीं है? 79 उन्होंने कहा, तुम जानते हो कि हमें तुम्हारी बेटियों से कुछ सरोकार नहीं है और तुम भली-भाँति जानते हो कि हम क्या चाहते हैं.

80 (इस पर) लूत ने कहा, काश मेरे पास तुमसे निपटने की शक्ति होती (तो तुम्हें सीधा कर देता) या कोई मज़बूत आश्रय-स्थान ही होता तो मैं वहाँ आश्रय ले लेता. 81 तब फ़रिश्तों ने कहा, ऐ लूत! हम तुम्हारे रब के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं. ये तुम तक कदापि नहीं पहुँच सकते (अर्थात ये तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते). तो तुम अपनी पत्नी

के सिवा अपने लोगों को लेकर कुछ रात बाक़ी रहे (अर्थात अरुणोदय होने से पहले) यहाँ से निकल जाओ और तुममें से कोई पीछे पलटकर न देखे, तुम्हारी पत्नी पर भी वही कुछ घटित होने वाला है जो इन (बस्ती वाले) लोगों पर घटित होगा. इनके (विनाश) के लिए सुबह का समय निश्चित है. सुबह होने में अब देर ही कितनी है!

82 फिर जब हमारा आदेश (कार्यान्वित होने के लिए) आ पहुँचा तो हमने उस (अपराधियों की) बस्ती को तलपट कर दिया और उस पर कंकरीले पत्थर ताबड़-तोड़ बरसाए, 83 जिन पर तुम्हारे रब के यहाँ से निशान लगाया हुआ था. और वह (तलपट की गयी) बस्ती इन अत्याचारियों से कुछ दूर नहीं है.

84 मदियन वालों की ओर हमने उनके भाई शुऐब को (अपना पैग़ंबर बनाकर) भेजा. उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा दूसरा कोई ऐसा नहीं जिसकी तुम इबादत करो. और (लोगों से व्यवहार करते हुए) नाप व तौल में कमी न करो. आज मैं तुम्हें अच्छे हाल में देख रहा हूँ. लेकिन मुझे डर है कि तुम पर एक ऐसा दिन आएगा जिसकी यातना तुम सबको घेर लेगी. 85 ऐ मेरी क़ौम! नाप और तौल को पूरा करो न्याय के साथ और लोगों को उनकी चीज़ें घटा कर न दो और धरती पर उपद्रव न मचाओ. 86 जो अल्लाह का दिया हुआ बच रहे, वह तुम्हारे लिए बेहतर है, यदि तुम ईमान वाले हो. और मैं तुम्हारे ऊपर कोई रखवाला नियुक्त नहीं हूँ.

87 उसकी क़ौम के लोगों ने कहा, ऐ शुऐब! क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें यह सिखाती है कि हम उन चीज़ों की इबादत करना छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप-दादा करते थे. या यह कि हम अपने माल का उपभोग अपनी इच्छा के अनुसार करना छोड़ दें. बस तुम ही एक सत्यवादी और सदाचारी व्यक्ती रह गए हो!

88 (क़ौम की बातों पर) शुऐब ने जवाब दिया, ऐ मेरी क़ौम के लोगो! देखो तो सही, यदि मैं अपने रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उसने मुझे अपनी ओर से

अच्छी जीविका प्रदान की है (तो मैं किस तरह तुम्हारी इच्छाओं का अनुसरण कर सकता हूँ) और मैं कदापि नहीं चाहता हूँ कि जिन बातों से मैं तुम्हें रोकता हूँ उससे तुम्हें तो रोकूँ, लेकिन स्वयं उसके विरुद्ध चलूँ. मैं तो मात्र सुधार करना चाहता हूँ, जहाँ तक मेरा बस चले. मेरे प्रयासों का फलित होना तो सिर्फ़ अल्लाह ही पर निर्भर है. मैंने उसी पर भरोसा किया है और मैं उसी की ओर रुजू करता हूँ. 89 (शुऐब ने आगे कहा,) ऐ मेरी क़ौम के लोगो! ऐसा न हो कि मेरे विरुद्ध तुम्हारी हठधर्मी कहीं तुम पर वह विपत्ति न ले आए जो नूह की क़ौम या हूद की क़ौम या सालेह की क़ौम पर आयी थी. और लूत की क़ौम तो तुमसे कुछ दूर भी नहीं (जिन पर विपत्ति आयी थी). 90 (ऐ मेरी क़ौम!) अपने रब से क्षमा चाहो और उसकी ओर पलट आओ. निस्संदेह! मेरा रब दयावान तथा अत्यंत स्नेहवान है.

91 उन्होंने उत्तर दिया, ऐ शुऐब! तुम्हारी बहुत सी बातें हमारी समझ ही में नहीं आती. हम देखते हैं कि तुम हमारे बीच एक कमज़ोर आदमी हो. यदि तुम्हारी बिरादरी न होती, तो हम तुम्हें पत्थर मार-मार कर ख़त्म कर चुके होते. और तुम ऐसे नहीं हो कि हम पर भारी हो. 92 शुऐब ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! क्या तुम्हारे लिए मेरी बिरादरी अल्लाह से अधिक शक्तिशाली है? तुमने अल्लाह को बिल्कुल पीठ पीछे डाल दिया है (अर्थात तुम्हारी ज़िंदगियों में अल्लाह का वह स्थान हरगिज़ नहीं है जो होना चाहिए). लेकिन जान रखो मेरा रब उसे घेरे हुए है जो कुछ तुम करते हो. 93 (शुऐब ने आगे कहा,) ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह कर्म किए जाओ और मैं भी अपनी जगह कर्म करता रहूँगा. जल्द ही तुम जान लोगे कि किस पर अपमानित करने वाली यातना आती हैं और यह भी जान लोगे कि कौन झूठा है. तो अब प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ.

94 अंततः जब हमारा आदेश (कार्यान्वित होने के लिए) आ पहुँचा तो हमने शुऐब तथा उसके साथ जो ईमान लाए थे, अपनी दया से बचा लिया. और जिन लोगों ने

अत्याचार किया था उन्हें एक तेज़ धमाके ने ऐसा पकड़ा कि वे अपने घरों में मुँह के बल (अर्थात औंधे) पड़े रह गये. 95 मानो कि वे कभी उनमें बसे ही न थे. सुन लो! फिटकार हुई क़ौमे-मदियन पर जिस प्रकार फिटकार हुई थी क़ौमे-समूद पर.

96 हमने मूसा को अपने संदेश तथा (सत्य के) स्पष्ट प्रमाण के साथ भेजा, 97 (इजिप्त का राजा) फ़िरऔन तथा उसके सरदारों के पास. लेकिन वे फ़िरऔन के कहने पर चले, हालाँकि फ़िरऔन की बात सत्यता पर आधारित नहीं थी. 98 क़यामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे होगा (और अपने नेतृत्व में) उन्हें जहन्नम की आग में ले जाएगा. (निस्संदेह) कैसा बुरा घाट है जिस पर वे पहुँचेंगे. 99 इस दुनिया में भी लानत (अर्थात फिटकार) ने उनका पीछा किया और क़यामत के दिन भी उन पर फिटकार होगी. क्या ही बुरा पुरस्कार है यह जो किसी को मिले!

100 यह कुछ बस्तियों के वृत्तांत हैं जो हम तुम्हें सुना रहे हैं. उनमें से कुछ बस्तियाँ अब तक मौजूद हैं और कुछ मिट चुकी हैं. 101 (जिन बस्तियों को हमने नष्ट किया) हमने उन पर अत्याचार नहीं किया, बल्कि उन्होंने स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया. जब तुम्हारे रब का हुक्म कृत्य में आया तब उनके (गढ़े हुए झूठे) उपास्य उनके कुछ काम न आए जिन्हें वे अल्लाह को छोड़कर पुकारा करते थे. उन (झूठे उपास्यों) ने अपने उपासकों के लिए विनाश के सिवा और कुछ नहीं बढ़ाया.

102 और तुम्हारा रब जब किसी बस्ती को उनके ज़ुल्म पर पकड़ता है तो उसकी पकड़ ऐसी ही हुआ करती है. निस्संदेह, उसकी पकड़ बड़ी कठोर और दर्दनाक होती है. 103 निश्चय ही इसमें बड़ी निशानी है उस व्यक्ति के लिए जो मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन की यातना से डरे. यह एक ऐसा दिन हैं जिसमें सारे लोग इकट्ठा होंगे और वह (ख़ुदा की अदालत में) उपस्थिति का दिन होगा. 104 हम उस दिन को एक अवधी के लिए टाल रहे हैं जो निर्धारित है (अर्थात उसका घटित होना हमारे द्वारा निर्धारित अवधी

से आगे नहीं बढ़ेगा). 105 जब वह दिन आएगा तो कोई व्यक्ति उसकी अनुमति के बिना बात न कर सकेगा. उनमें कुछ लोग बदबख़्त होंगे और कुछ नेकबख़्त होंगे.

106 तो जो लोग बदबख़्त होंगे वे आग में जाएंगे. वे वहाँ चीखेंगे और चिल्लाएंगे.107 वे उस में सदैव रहेंगे, जब तक ज़मीन व आसमान का अस्तित्व है, अलावा इसके कि तुम्हारा रब कुछ और चाहे. निस्संदेह, तुम्हारा रब कर डालता है जो वह चाहता है. 108 रहे वे लोग जो नेकबख़्त होंगे, वे जन्नत में होंगे. वे उसमें रहेंगे जब तक ज़मीन व आसमान का अस्तित्व है, अलावा इसके कि तुम्हारा रब कुछ और चाहे. यह एक ऐसी देन है जिसका सिलसिला कभी न टूटेगा. 109 (पैग़ंबर!) तुम उन उपास्यों के बारे में किसी संदेह में न रहना जिन्हें ये (बहुदेववादी) पूजते हैं, जिस तरह इससे पहले इनके बाप-दादा पूजते रहे हैं. हम तो उनका हिस्सा (अर्थात उनके कर्मों का बदला) उन्हें पूरा-पूरा देंगे, बिना किसी कमी के.

110 हम इससे पहले मूसा को भी किताब दे चुके हैं, तो उसमें भी मतभेद किया गया था. यदि तुम्हारे रब की ओर से एक बात पहले से निश्चित न कर दी गयी होती तो उन मतभेद करने वालों के बीच कभी का फ़ैसला चुका दिया गया होता. (यह वास्तविकता है कि) ये लोग उसके बारे में संदेह तथा दुविधा में पड़े हुए हैं. 111 निश्चित रूप से तुम्हारा रब (समय आने पर) एक-एक को उनके कर्मों का पूरा-पूरा प्रतिफल देगा. ये जो कुछ भी कर रहे हैं, उसे उसकी पूरी ख़बर है.

112 (पैग़ंबर!) तुम दृढ़ रहो, जैसा कि तुम्हें आदेश दिया गया है और वे लोग भी दृढ़ रहें जो (इन्कार व विद्रोह से आज्ञापालन की ओर) पलट आए हैं. और हद से आगे न बढ़ना. निस्संदेह! वह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो.113 और उन लोगों की ओर न झुकना जिन्होंने अत्याचार किया, अन्यथा तुम्हें आग पकड़ लेगी. और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई सहायक नहीं, फिर तुम कहीं से सहायता न पाओगे.

114 और नमाज़ क़ायम करो दिन के दोनों हिस्सों में और रात के कुछ हिस्से में. वास्तव में नेकियाँ बुराइयों को दूर करती हैं. यह एक याददिहानी (reminder) है उन लोगों के लिए जो याद रखने वाले हैं.115 तो तुम धैर्य से काम लो, अल्लाह नेकी करने वालों का बदला कदापि नष्ट नहीं करता.

116 फिर तुमसे पहले जो पीढ़ियाँ गुज़र चुकी हैं उनमें ऐसे भले लोग क्यों न हुए जो लोगों को ज़मीन पर उपद्रव करने से रोकते. लेकिन बहुत थोड़े लोग ऐसे थे जिन्हें हमने बचा लिया (अर्थात सुधारणा करने वाले लोग). (क्योंकि बहुसंख्य) लोग तो अत्याचारी ही बने जो उस विलासिता में पड़े रहे जो उन्हें प्राप्त थी. और वे अपराधी ही बने रहे.117
और तेरा रब ऐसा नहीं कि वह बस्तियों को अन्यायपूर्वक नष्ट कर दे, जबकि उसके वासी सुधार करने वाले हों.

118 यदि तुम्हारा रब चाहता तो वह सारे इंसानों को (आज्ञापालन करने वाला) एक ही समुदाय बना देता, लेकिन वे मतभेद करते रहेंगे (अर्थात वे अलग-अलग राहों पर चलते रहेंगे), 119 (सन्मार्ग) केवल वे लोग (पाएंगे) जिन पर तेरा रब दया करे. उसने इसी (परीक्षा के) लिए उनका सृजन किया है. और तेरे रब की बात पूरी होकर रहेगी कि मैं जहन्नम को जिन्नों तथा इंसानों से भर दूँगा.

120 (ऐ मुहम्मद!) ये (पूर्ववर्ती) पैग़ंबरों के वृत्तांत हम तुम्हें इसलिए सुना रहे हैं, ताकि उसके द्वारा तुम्हारे दिल को दृढ़ता प्रदान करें. इसके द्वारा तुम्हारे पास सत्य आया है और यह ईमान वालों के लिए उपदेश और याददिहानी है. 121 और उन लोगों से कह दो जो ईमान नहीं लाते, तुम अपनी रीति पर कर्म किये जाओ, हम भी अपनी रीति पर कर्म कर रहे हैं. 122 और तुम भी (परिणाम की) प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं.
123 आसमानों तथा धरती में जो कुछ अदृश्य है सबका ज्ञान अल्लाह को है और हर

मामला उसी की ओर पलटता है. तो तुम उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो. तुम्हारा रब उससे बेख़बर नहीं जो तुम करते हो.

सूरह–12. यूसुफ़

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अलिफ़० लाम० रा०. यह सुस्पष्ट किताब के संदेश हैं. 2 हमने इसे अरबी क़ुरआन के रूप उतारा है, ताकि तुम अपनी बुद्धि से काम लेते हुए उसे ग्रहण करो. 3 (पैग़ंबर!) हम जो क़ुरआन तुम्हारी ओर प्रकट कर रहे हैं उसके माध्यम से हम तुम्हें एक श्रेष्ठतम वृत्तांत सुनाते हैं. इससे पहले तुम बेख़बर लोगों में से थे.

4 (यह उस समय की घटना का वृत्तांत है) जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा, अब्बाजान मैंने स्वप्न में ग्यारह तारे और सूरज व चाँद देखे हैं. मैंने उन्हें देखा कि वे मुझे सजदा कर रहे हैं. 5 (इस पर यूसुफ़ के पिता ने) कहा, ऐ मेरे बेटे! तुम अपना यह स्वप्न अपने भाइयों को न बताना अन्यथा वे तुम्हारे विरुद्ध कोई षड्यंत्र करेंगे. निस्संदेह, शैतान इंसान का खुला दुश्मन है. 6 (यूसुफ़ के पिता ने आगे कहा,) और ऐसा ही होगा, तेरा रब तुझे चुन लेगा (अर्थात तुझे अपना पैग़ंबर बनाएगा) और तुझे बातों की तह तक पहुँचना सिखाएगा. और वह तुझ पर तथा याक़ूब के ख़ानदान पर अपनी नेमत उसी तरह पूरी करेगा जिस तरह इससे पहले तेरे पूर्वजों इब्राहीम और इसहाक़ पर अपनी नेमत (अनुग्रह) पूरी कर चुका है. निस्संदेह, तेरा रब ज्ञानवान और बुद्धिमान है.

7 हक़ीक़त यह है कि यूसुफ़ और उसके भाइयों के किस्से में इन पूछने वालों के लिए निशानियाँ हैं. 8 (यह क़िस्सा यूँ शुरू होता है) कि उसके भाइयों ने आपस में कहा, यूसुफ़ और उसका भाई हमारे बाप को हमसे अधिक प्रिय हैं. हालाँकि हम एक पूरा जत्था हैं. निश्चित रूप से हमारा बाप एक स्पष्ट भूल में लिप्त है. 9 यूसुफ़ को मार डालो या उसे कहीं फेंक दो, ताकि तुम्हारे बाप का ध्यान केवल तुम्हारी ही ओर हो जाए. फिर उसके बाद तुम पूर्णतः सदाचारी बन जाना. 10 उनमें से एक कहने वाले ने कहा, यूसुफ़ की

हत्या न करो, यदि तुम्हें कुछ करना ही है तो उसे किसी अंधे कुएँ में डाल दो, कोई राह चलता क़ाफ़िला उसे निकाल ले जाएगा.

11 (फिर वे बाप के पास गए) कहा, ऐ हमारे बाप! क्या बात है कि आप यूसुफ़ के बारे में हम पर विश्वास नहीं करते, हालाँकि हम तो उसके हितैषी हैं. 12 कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए, खाए और खेले, हम तो उसकी रक्षा के लिए हैं ही. 13 (इस पर) उनके पिता ने कहा, मैं इस बात से दुःखी (तथा चिंतित) होता हूँ कि तुम उसे ले जाओ और मुझे डर होता है कि कहीं उसे भेड़िया न खा जाए, जबकि तुम उससे ग़ाफ़िल हो. 14 उन्होंने (इस पर) जवाब दिया, अगर हमारे होते हुए उसे भेड़िए ने खा लिया, जबकि हम एक जत्था हैं, हम तो बड़े घाटे वाले सिद्ध होंगे.

15 फिर जब ये लोग उसे ले गए और उन्होंने तय कर लिया कि उसे एक अंधे कुएँ में डाल दें. तो हमने यूसुफ़ की ओर अपना यह संदेश भेजा (कि घबराओ नहीं, एक समय आएगा) कि तू उन्हें उनकी इस हरकत से अवगत कराएगा और (तू कौन है) वे न जानेंगे. 16 शाम को यूसुफ़ के भाई रोते हुए अपने बाप के पास आए. 17 कहने लगे, ऐ हमारे बाप! हम दौड़ में मुक़ाबला करने लगे और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ दिया था कि इतने में भेड़िया आकर उसे खा गया. आप हमारी बात का विश्वास नहीं करेंगे, चाहे हम सच्चे ही हों. 18 वे यूसुफ़ की क़मीज़ पर झूठ-मूठ का ख़ून लगाकर ले आए. (उनकी बात सुनकर) बाप ने कहा, नहीं, (ऐसी बात नहीं है,) बल्कि तुम्हारे जी ने तुम्हें बहका कर तुम्हारे लिए एक बात बना दी है. अब सब्र करना ही बेहतर है. जो बात तुम कह रहे हो उस पर अल्लाह ही से मदद माँगी जा सकती है.

19 (उधर) एक क़ाफ़िला आया और उन्होंने पानी भरने वाले को (पानी लाने के लिए) भेजा. उसने अपना डोल डाला, तो (यूसुफ़ को देखकर) वह पुकार उठा, मुबारक हो! यहाँ तो एक लड़का है. उन लोगों ने उसे व्यापार-सामग्री समझकर छुपा लिया. और

अल्लाह भली-भाँति जानता था जो वह कर रहे थे. 20 और उन्होंने उसे थोड़े से मूल्य पर, कुछ दिरहम के बदले बेच दिया और उससे उन्हें कुछ विशेष लगाव नहीं था.

21 और मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे ख़रीदा, उसने अपनी पत्नी से कहा, इसे अच्छी तरह रखना. आशा है कि वह हमारे लिए लाभप्रद सिद्ध हो या हम इसे बेटा बना लें. इस प्रकार हमने यूसुफ़ को उस देश में स्थान प्रदान किया, ताकि हम उसे बातों की तह तक जाना सिखाएँ. अल्लाह को हर कार्य पर प्रभुत्व प्राप्त है, लेकिन अधिकतर लोग नहीं जानते.

22 और जब वह अपनी पूरी जवानी को पहुँचा तो हमने उसे बुद्धिमानी और ज्ञान प्रदान किया. नेक लोगों को हम इसी तरह बदला देते हैं.

23 यूसुफ़ जिस महिला के घर में रहता था, वह उस पर डोरे डालने लगी. (एक दिन) उसने दरवाज़े बंद कर दिए और कहने लगी, आ जा. यूसुफ़ ने कहा, अल्लाह की पनाह! वह मेरा मालिक है, उसने मुझे भली प्रकार से रखा है. निस्संदेह अत्याचारी लोग कभी सफल नहीं होते. 24 वह औरत (दुष्कर्म का) इरादा कर चुकी थी. यूसुफ़ भी उसकी ओर बढ़ता, अगर वह अपने रब का स्पष्ट प्रमाण न देख लेता. ऐसा इसलिए हुआ, ताकि हम उससे बुराई और अश्लीलता को दूर कर दें. निस्संदेह, वह हमारे चुने हुए बंदों में से था.

25 दोनों दरवाज़े की ओर भागे. उस औरत ने यूसुफ़ का कुर्ता पीछे से फाड़ डाला. दरवाज़े पर दोनों ने उसके पति को मौजूद पाया. (अपने पति को देखते ही) औरत कहने लगी, जो तेरे घर वाली के साथ बुराई का इरादा करे, उसकी सज़ा इसके सिवा और क्या हो सकती है कि उसे क़ैद किया जाए या कोई दुःखदायी दंड दिया जाए?

26 यूसुफ़ ने कहा, इसी औरत ने मुझे फुसलाने का प्रयास किया. उस औरत के अपने परिवार वालों में से एक आदमी ने यह गवाही दी कि यदि उसकी कुर्ता आगे से फटा हो

तो औरत सच्ची है और वह झूठा है. 27 और यदि उसका कुर्ता पीछे से फटा हो तो औरत झूठी है और यूसुफ़ सच्चा है. 28 फिर जब उसके पति ने देखा कि कुर्ता पीछे से फटा है, तो उसने कहा, यह तुम औरतों की चालाकियाँ ग़ज़ब की होती हैं. 29 (उसने यूसुफ़ से कहा,) यूसुफ़, इस मामले को जाने दे (अर्थात इस औरत को माफ़ कर दे) और ऐ औरत! तू अपने गुनाह की माफ़ी माँग. निस्संदेह! ख़ताकार तू ही थी.

30 शहर की औरतें आपस में चर्चा करने लगीं कि अज़ीज़ (अर्थात राज दरबार का प्रमुख अधिकारी) की पत्नी अपने नौजवान दास के पीछे पड़ी हुई है. उसका प्रेम उसके मन में घर कर चुका है. हम तो उसे देख रहे हैं कि वह खुली ग़लती में पड़ गयी है. 31 अज़ीज़ की पत्नी ने जब (उसके संबंध से की जाने वाली) निंदनीय बातें सुनी तो उन्हें बुला भेजा और उनके लिए एक समारोह आयोजित किया और उनमें से प्रत्येक को एक-एक-छुरी दी (ताकि फल काट कर खाएँ) फिर यूसुफ़ से कहा, तुम इनके सामने आओ. जब उन औरतों ने उसे देखा तो वे दंग रह गयीं. उन्होंने (फल काटते-काटते) अपने हाथ काट लिए. वे बोल पड़ीं, अल्लाह की शरण! यह मनुष्य नहीं है, यह तो कोई बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है. 32 अज़ीज़ की पत्नी ने कहा, यह वही है जिसके संबंध से तुम मेरी निंदा कर रही थीं. वास्तव में मैंने इसे रिझाने का प्रयास किया था, लेकिन यह बच निकला. मैं इससे जो बात कहती हूँ, यदि इसने न मानी तो क़ैद किया जाएगा और अपमानित होगा. 33 यूसुफ़ ने कहा, ऐ मेरे रब! जिसकी ओर ये सब मुझे बुला रही हैं उससे अधिक मुझे तो क़ैद ही पसंद है. यदि तू मुझे इनकी चालों से न बचाए तो मैं उनकी ओर झुक जाऊँगा, परिणाम-स्वरूप मेरा समावेश अज्ञानियों में हो जाएगा. 34 तो उसके रब ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उनके षड्यंत्र से उसे बचा लिया. निस्संदेह, वह सुनने वाला तथा जानने वाला है.

35 फिर (अज़ीज़ तथा दूसरे ज़िम्मेदार) लोग (यूसुफ़ की सच्चरित्रता के) स्पष्ट प्रमाण देख लेने के पश्चात भी उन्हें लगा कि एक मुद्दत के लिए उसे क़ैद ही कर दें. 36 जेल में उसके साथ दो और युवकों ने भी प्रवेश किया. एक दिन उनमें से एक ने कहा, मैंने सपना देखा कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ, दूसरे ने कहा, मैंने सपने में देखा कि मैं अपने सर पर रोटियाँ लिए हुए हूँ और पक्षी उन रोटियों को खा रहे हैं. हमें इस सपने का अर्थ बताइए. हम देखते हैं कि आप एक नेक आदमी हो.

37 (इस पर) यूसुफ़ ने कहा, यहाँ जो खाना तुम्हें मिला करता है, उसके आने से पहले मैं तुम्हें इन सपनों का अर्थ बता दूँगा. यह उस ज्ञान में से है जो मेरे रब ने मुझे प्रदान किया है. (यूसुफ़ ने आगे कहा,) मैंने उन लोगों के तरीक़े को छोड़ा है जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और जो मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन का इन्कार करते हैं.

38 (यूसुफ़ ने आगे कहा,) मैंने अपने पूर्वज इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब के पंथ को अपनाया है. हमें यह अधिकार नहीं कि हम किसी चीज़ को अल्लाह का साझीदार ठहराएँ. (सत्य के संबंध से प्राप्त) यह (मार्गदर्शन) हम पर तथा सारे इंसानों पर अल्लाह की कृपा है, लेकिन अधिकतर लोग कृतज्ञ नहीं होते.

39 (यूसुफ़ ने आगे कहा,) ऐ मेरे जेल के साथियो! क्या बहुत से अलग-अलग रब अच्छे हैं या अल्लाह अकेला जबरदस्त! (सोचिए!) 40 (सत्य यह है कि) तुम अल्लाह के सिवा जिनकी भी उपासना करते हो, वे इसके सिवा और कुछ नहीं कि बस कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं. उनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा. सत्ता का अधिकार तो सिर्फ़ अल्लाह का है. उसका यह आदेश है कि तुम स्वयं उसके सिवा किसी और की उपासना न करो. यही सच्चा तथा सीधा दीन (अर्थात स्वाभाविक धर्म) है. लेकिन अधिकतर लोग नहीं जानते.

41 (यूसुफ़ ने कहा,) ऐ जेल के साथियो! (तुम्हारे सपने का अर्थ यह है कि) तुममें से एक तो अपने स्वामी को (अर्थात इजिप्त के बादशाह को) मद्यपान कराएगा. रहा दूसरा तो उसे सूली पर चढ़ाया जाएगा और पक्षी उसका सर नोच-नोच कर खाएंगे. उस मामले का निर्णय हो चुका है जिसके बारे में तुम मुझसे पूछ रहे थे. 42 उन दोनों में से जिसके बारे में अनुमान था कि वह रिहा हो जाएगा, यूसुफ़ ने उससे कहा, अपने स्वामी के यहाँ (अर्थात बादशाह से) मेरा उल्लेख करना. लेकिन शैतान ने उसको अपने स्वामी के यहाँ यूसुफ़ का उल्लेख करना भुला दिया. और यूसुफ़ कई साल जेल में पड़ा रहा.

43 एक दिन बादशहा ने (दरबार के लोगों से) कहा, मैंने सपने में देखा है कि सात मोटी गायों को सात दुबली गायें खा रही हैं और अनाज की सात हरी बालियाँ हैं और दूसरी सात सूखी बालियाँ. ऐ दरबार वालो! मुझे इस सपने का अर्थ बताओ, यदि तुम सपने का अर्थ जानते हो. 44 (इस पर) उन्होंने कहा, यह काल्पनिक सपने हैं और हम ऐसे सपनों का अर्थ नहीं जानते. 45 (उन दो क़ैदियों में से) जो रिहा हो गया था, एक मुद्दत के बाद उसे (यूसुफ़ की) याद आयी, उसने कहा, मैं आप लोगों को इसका अर्थ बताता हूँ, मुझे (जेलखाने में) यूसुफ़ के पास जाने दीजिए.

46 (वह यूसुफ़ से मिलने जेलखाने को आया, उसने कहा,) यूसुफ़ ऐ सच्चे! मुझे इस सपने का अर्थ बताइए कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं और अनाज की सात बालें हरी हैं और दूसरी सात सूखी. (मुझे इसका अर्थ बताइए,) ताकि मैं उन लोगों के पास वापस जाकर (उन्हें सपने का अर्थ बता दूँ), ताकि वे जान लें. 47 यूसुफ़ ने कहा, तुम सात वर्षों तक निरंतर खेती करोगे. तो जो फ़सल तुम काटो, उसे उसकी बालियों में छोड़ दो, सिवाय उस थोड़े हिस्से के जो तुम खाओ. 48 फिर इसके बाद सात वर्ष बड़े कठिन आएंगे. उस ज़माने में वह सब अनाज खा लिया जाएगा जो तुम उस कठिन समय के लिए इकट्ठा करके रखोगे, सिवाय थोड़ा सा जो तुम (बोआई हेतु)

सुरक्षित कर लोगे. 49 इसके बाद एक साल ऐसा आएगा जिसमें लोगों पर भरपूर (लाभप्रद) वर्षा होगी, वे (उस साल) रस निचोड़ेंगे.

50 (यूसुफ़ ने बताया हुआ सपने का अर्थ राजा को बता दिया गया तब) राजा ने कहा, उसको मेरे पास लाओ. फिर जब (बादशहा का) संदेशवाहक यूसुफ़ के पास आया, तब यूसुफ़ ने उस (संदेशवाहक) से कहा, तुम अपने स्वामी के पास वापस जाओ और उससे पूछो उन महिलाओं का क्या मामला है जिन्होंने अपने हाथ काट डाले थे? निस्संदेह, मेरा रब उनके षड्यंत्र से भली-भाँति अवगत है. 51 (इस पर बादशहा ने उन औरतों को तलब किया और) पूछा, तुम्हारा क्या मामला था, जब तुमने यूसुफ़ को रिझाने की कोशिश की थी. उन्होंने कहा, अल्लाह की पनाह, हमने तो उसमें कोई बुराई नहीं पायी. अज़ीज़ की पत्नी बोल उठी, अब सत्य स्पष्ट हो चुका है, मैंने ही उसको फुसलाने की कोशिश की थी, निस्संदेह वह बिल्कुल सच्चा है.

52 (यूसुफ़ ने कहा,) इससे मेरा उद्देश्य यह था, कि (अज़ीज़) यह जान ले कि मैंने पीठ पीछे उसके साथ कोई विश्वासघात नहीं किया था और यह कि अल्लाह विश्वासघात करने वालों की चाल को चलने नहीं देता (अर्थात उनकी चालें अंत में जाकर सफल नहीं हो सकती).

पारा – 13 53 और मैं अपने मन को बरी नहीं ठहराता. मन तो बुराई पर ही उकसाता है, सिवा इसके कि किसी पर मेरे रब की रहमत हो. निस्संदेह! मेरा रब बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है.

54 बादशाह ने कहा, उसको मेरे पास लाओ, मैं विशेष रूप से उसको अपने लिए रखूँगा. फिर जब यूसुफ़ ने उससे वार्तालाप किया, तो बादशाह ने कहा, आज से तुम हमारे यहाँ सम्मानित और विश्वस्त हुए. 55 यूसुफ़ ने (बादशहा से) कहा, मुझे देश के ख़ज़ानों पर नियुक्त कर दीजिए. मैं (ख़ज़ानों की अच्छी तरह) रक्षा कर सकता हूँ और

ज्ञान भी रखता हूँ. 56 इस तरह हमने यूसुफ़ को (उस) देश में अधिकार प्रदान किया कि वह उसमें जहाँ चाहे अपनी जगह बनाए. हम जिस पर चाहते हैं अपनी दया करते हैं. हम नेक काम करने वालों का बदला नष्ट नहीं करते. 57 और मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन का प्रतिफल उन लोगों के लिए ज़्यादा बेहतर है जो ईमान लाए और ख़ुदा के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहे.

58 फिर यूसुफ़ के भाई मिस्र आए, फिर जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उसने उन्हें पहचान लिया, लेकिन वे यूसुफ़ को नहीं पहचान पाए.

59 जब यूसुफ़ ने उनका सामान तैयार करवा दिया तो उसने कहा, (अगली बार जब तुम आओगे तो,) अपने सौतेले भाई को मेरे पास लाना. देखते नहीं हो कि मैं अनाज पूरा नाप कर देता हूँ और अतिथियों की उत्तम सेवा भी करता हूँ. 60 और यदि तुम उसको मेरे पास न लाए तो न मेरे पास तुम्हारे लिए गल्ला है और न तुम मेरे पास आना. 61 (इस पर) उन्होंने कहा, हम उसके संबंध से उसके पिता को सहमत करने का प्रयास करेंगे. हमें यह काम करना ही है.

62 यूसुफ़ ने अपने कर्मचारियों से कहा, (अनाज ख़रीदने के लिए) उनकी दी हुई पूँजी उनके सामान में रख दो, ताकि वे अपने घर वालों में पहुँचकर ही जानें (कि उनकी पूँजी भी लौटा दी गयी है), संभवतः वे फिर आएँ. 63 फिर जब वे अपने बाप के पास वापस आए, तो उन्होंने कहा, ऐ हमारे बाप! आइंदा हमें अनाज देने से मना कर दिया गया है (जब तक हम अपने साथ हमारे भाई बिनयामीन को नहीं ले जाते). इसलिए आप हमारे साथ हमारे भाई को भेज दीजिए, ताकि हमें अनाज मिले. निस्संदेह हम उसकी सुरक्षा के ज़िम्मेदार हैं. 64 (इस पर) याक़ूब ने कहा, क्या मैं इसके मामले भी तुम पर वैसा ही भरोसा करूँ जैसा कि इससे पहले इसके भाई के मामले में कर चुका हूँ. बस अल्लाह ही सर्वश्रेष्ठ रक्षणकर्ता है. वही सब दयावानों से बढ़ कर दयावान है.

65 फिर जब उन्होंने अपना सामान खोला तो देखा कि उनकी पूँजी भी उन्हें लौटा दी गयी है. (यह देखकर) उन्होंने कहा, ऐ हमारे बाप! हमें और क्या चाहिए. देखिए, हमारी पूँजी भी हमें लौटा दी गयी है. बस अब हम (फिर) जाएंगे और अपने घर वालों के लिए राशन लाएंगे. हम अपने भाई की रक्षा भी करेंगे और एक ऊँट भर अनाज अधिक भी लाएंगे. यह राशन तो थोड़ा है. 66 (इस पर) याक़ूब ने कहा, मैं उसे तुम्हारे साथ तब तक कदापि न भेजूँगा, जब तक कि तुम अल्लाह के नाम से मुझे यह पक्का वचन न दे दो कि तुम इसे मेरे पास अवश्य वापस लेकर आओगे, सिवाय इसके तुम सब घेर लिए जाओ तो और बात है. फिर जब उन्होंने उसे अपना पक्का वचन दे दिया. तो उसने कहा जो हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह गवाह है.

67 याक़ूब ने कहा, ऐ मेरे बेटो! तुम (शहर में) (सब लोग) एक ही दरवाज़े से प्रवेश न करना, बल्कि विभिन्न दरवाज़ों से प्रवेश करना. और (यह वास्तविकता हमेशा ध्यान में रहे कि मैं तुम्हारा हितैषी होते हुए भी तुम्हारे संबंध से) अल्लाह के किसी फ़ैसले से तुम्हें बचा नहीं सकता. आदेश तो अल्लाह के सिवा किसी का नहीं चलता. मैं उसी पर भरोसा करता हूँ और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए. 68 उनके बाप ने उन्हें जैसा निर्देश दिया था, उसी तरह उन्होंने शहर में प्रवेश किया. वह उन्हें नहीं बचा सकता था अल्लाह की किसी बात से (अर्थात उन पर घटित होने वाले अल्लाह के किसी फ़ैसले से), वह बस याक़ूब के मन की एक इच्छा थी (जो अपने बच्चों को नसीहत करके) उसने पूरी कर ली. निश्चय ही वह ज्ञान वाला था, क्योंकि हमने उसे ज्ञान प्रदान किया था. लेकिन अधिकतर लोग (इस सत्य को) नहीं जानते.

69 और जब वह यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उसने अपने भाई (बिनयामीन) को अपने पास (बुलाकर) बिठाया, उसने कहा, मैं तुम्हारा भाई (यूसुफ़) हूँ, तो अब तुम दुःखी न होना उससे जो ये लोग करते रहे हैं. 70 जब यूसुफ़ ने उनका सामान तैयार करा दिया तो

अपने भाई (बिनयामीन) के सामान में अपने पानी पीने का प्याला रख दिया. फिर (जब वे वहाँ से निकल कर अपने वतन की ओर रवाना हो रहे थे कि) एक पुकारने वाले ने पुकार कर कहा, (ठहरो!) ऐ क़ाफ़िले वालो! तुम लोग चोर हो. 71 वे उनकी ओर पलटते हुए बोले, तुम्हारी क्या चीज़ खोई गयी है? 72 (राज-दरबार के कर्मचारियों ने) कहा, शाही पैमाना हमें नहीं मिल रहा है. (उन कर्मचारियों के प्रमुख ने कहा,) जो व्यक्ति उसे ला दे उसे एक ऊँट का बोझ भर राशन इनाम में मिलेगा, मैं इसकी ज़िम्मेदारी लेता हूँ. 73 (यूसुफ़ के भाइयों ने) कहा, अल्लाह की क़सम! तुम लोग ख़ूब जानते हो कि हम यहाँ इसलिए नहीं आए कि इस देश में बिगाड़ पैदा करें. और हम चोरी करने वाले लोग नहीं हैं. 74 (राज-दरबार के कर्मचारियों ने) कहा, यदि तुम झूठे निकले तो फिर चोरी की क्या सज़ा दी जाए? 75 (इस पर) उन्होंने कहा, उसकी सज़ा यह हो कि जिसके सामान में वह (खोई गयी चीज़) मिले तो वही व्यक्ति ख़ुद उसकी सज़ा है (अर्थात सज़ा के तौर पर उस व्यक्ति को ग़ुलाम बनाकर रख लिया जाए). हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं. 76 फिर (तलाशी लेने वाले ने) यूसुफ़ के (छोटे) भाई (बिनयामीन) से पहले उसके उन (सौतेले) भाइयों के थैलों की तलाशी लेना प्रारंभ किया अंत में उसके छोटे भाई (बिनयामीन) के थैले से उसे (अर्थात पानी के प्याले को) बरामद कर लिया. इस तरह हमने यूसुफ़ के लिए एक युक्ति की. वह बादशाह के क़ानून के अनुसार अपने भाई को नहीं ले सकता था, मगर यह कि अल्लाह चाहे. हम जिसके चाहते हैं दर्जे ऊँचे कर देते हैं और एक जानने वाला ऐसा है जो हर जानने वाले से उच्च है.

77 यूसुफ़ के भाइयों ने कहा, यदि इसने चोरी की है तो (कुछ आश्चर्य की बात नहीं,) इससे पहले इसका एक भाई (यूसुफ़) भी चोरी कर चुका है. (यह सुनकर) यूसुफ़ ने इस बात को अपने दिल में ही रखा और उसके (संबंध से) कुछ व्यक्त नहीं किया. उसने अपने दिल ही दिल में कहा, बड़े ही बुरे हो तुम लोग! जो कुछ तुम बयान करते हो

(उसकी हक़ीक़त) अल्लाह अच्छी तरह जानता है. 78 (यूसुफ़ के भाइयों ने आगे कहा,) ऐ अज़ीज़! (अर्थात ऐ प्रधान अधिकारी!) इसका बाप बहुत बूढ़ा है, इसकी जगह हममें से किसी को रख लीजिए. हम देखते हैं कि आप बहुत ही सज्जन आदमी हो! 79 (यूसुफ़ ने कहा,) इस बात से अल्लाह अपनी पनाह में रखे कि जिसके पास हमने अपना सामान पाया है उसे छोड़कर किसी दूसरे को रखें, फिर तो हम अत्याचारी ठहरेंगे.

80 जब वे उससे निराश हो गए तो एक कोने में जाकर आपस में परामर्श करने लगे. उनमें जो बड़ा भाई था, उसने कहा, क्या तुम जानते नहीं कि तुम्हारा बाप अल्लाह के नाम से तुमसे दृढ़ वचन ले चुका है? और इससे पहले यूसुफ़ के मामले में जो अत्याचार तुम कर चुके हो वह भी तुम जानते हो. तो मैं इस जगह से कदापि नहीं जाऊँगा, जब तक मेरा बाप मुझे इजाज़त न दे या फिर अल्लाह ही मेरे संबंध से कोई फ़ैसला कर दे. वह तो सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है. 81 (उस बड़े भाई ने कहा,) तुम अपने बाप के पास लौट जाओ और कहो कि ऐ हमारे बाप! आपके बेटे ने चोरी की है. हम सिर्फ़ वही बात कर रहे हैं जो हमें मालूम हुई है (अर्थात हमने उसे चोरी करते हुए नहीं देखा) और हम अदृश्य के निगहबान तो हैं नहीं. 82 आप उस बस्ती के लोगों से पूछ लीजिए जहाँ हम (ठहरे) थे और उस क़ाफ़िले से पूछ लीजिए जिसके साथ हम आए हैं. और हम (अपने बयान में) बिल्कुल सच्चे हैं.

83 (जब वे अपने बाप के पास लौटे और सारी दास्तान सुनाई, यह सब सुनने के बाद उनके बाप ने) कहा, नहीं (ऐसा नहीं है, बल्कि) तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है. अब धैर्य से काम लेना ही बेहतर है. आशा है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास लाएगा. वह सब कुछ जानने वाला तथा बुद्धिमान है. 84 (उनके) बाप ने उनकी ओर से अपना मुँह फेर लिया और उसने कहा, हाय यूसुफ़! ग़म के मारे उसकी आँखें सफ़ेद पड़ गयीं. (वह मन ही मन में) घुटता जा रहा था. 85 बेटों ने कहा, अल्लाह की क़सम! आप

तो यूसुफ़ ही की याद में लगे रहेंगे, यहाँ तक कि अपने आपको घुला कर रहेंगे या (इस ग़म में) अपनी जान ही दे देंगे. 86 (इस पर उनके बाप ने) कहा, मैं तो अपनी परेशानी और अपने ग़म की शिकायत अल्लाह ही से करता हूँ. और मैं अल्लाह की ओर से वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते.

87 ऐ मेरे बेटो! जाओ, यूसुफ़ और उसके भाई की तलाश करो और अल्लाह की रहमत से निराश न होना. अल्लाह की रहमत से तो वही लोग निराश होते हैं जो सत्य का इन्कार करने वाले हैं.

88 फिर जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे, उन्होंने कहा, ऐ अज़ीज़! हमें और हमारे घर वालों को बहुत कष्ट पहुँच रहा है और हम थोड़ी पूँजी लेकर आए हैं, तो आप हमें (इस पूँजी के एवज़) पूरा अनाज दें और हमें (अलग से) दान भी दें. निस्संदेह! अल्लाह दान देने वालों को उसका बदला देता है. 89 उसने कहा, क्या तुम्हें अपना वह व्यवहार याद है जो तुमने यूसुफ़ तथा उसके भाई के साथ किया था, जबकि तुम नादान थे. 90 (वे चौंककर) बोले, क्या आप ही यूसुफ़ हैं? उसने कहा, हाँ मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है. अल्लाह ने हम पर अपनी कृपा की. जो व्यक्ति अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनता है और धैर्य से काम लेता है तो अल्लाह भले कर्म करने वालों का बदला नष्ट नहीं करता.

91 (उसके भाइयों ने) कहा, अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने तुम्हें हमारे ऊपर श्रेष्ठता प्रदान की है. निस्संदेह! हम दोषी थे. 92 (इस पर) यूसुफ़ ने कहा, आज तुम पर कोई आरोप नहीं. अल्लाह तुम्हें क्षमा करे! वह सब दया करने वालों से बढ़कर दया करने वाला है. 93 (यूसुफ़ ने कहा) यह मेरा कुर्ता लेकर जाओ और इसे मेरे पिता के चेहरे पर डाल दो, उनकी नेत्र-ज्योति पलट आएगी और तुम सब अपने घर वालों के साथ मेरे पास आ जाओ.

94 और जब क़ाफ़िला मिस्र से चला तो उसके पिता ने (कनआन में) कहा कि यदि तुम मुझको बुढ़ापे में बहकी-बहकी बातें करने वाला न समझो तो मुझे यूसुफ़ की ख़ुशबू महसूस हो रही है. 95 (इस पर) घर के लोगों ने कहा, अल्लाह की क़सम! आप तो अभी तक अपने पुराने भ्रम में पड़े हुए हो. 96 फिर जब शुभ-सूचना देने वाला आया, उसने कुर्ता याक़ूब के चेहरे पर डाल दिया, तो उसकी नेत्र-ज्योति लौट आयी. याक़ूब ने (अपने घर वालों से) कहा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं अल्लाह की ओर से वे बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते. 97 यूसुफ़ के भाइयों ने कहा, ऐ हमारे बाप! हमारे गुनाहों की क्षमा के लिए प्रार्थना कीजिए. हम सचमुच ख़ताकार थे. 98 याक़ूब ने कहा, मैं अपने रब से तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करूँगा. निस्संदेह! वह अत्यंत क्षमाशील एवं दयावान है.

99 तो जब वह सब यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उसने अपने माता-पिता को अपने पास बैठाया और कहा कि अल्लाह ने चाहा तो अब मिस्र में अमन चैन से रहोगे. 100 फिर उसने अपने माता-पिता को सिंहासन पर बैठाया और सब उसके लिए सजदे में झुक गए. यूसुफ़ ने कहा, ऐ अब्बाजान! यह अर्थ है मेरे उस सपने का जो मैंने पहले देखा था. मेरे रब ने उसे सच्चा कर दिया. उसने मेरे साथ यह उपकार किया कि उसने मुझे जेल से निकाला और आप लोगों को देहात से यहाँ लाया, हालाँकि शैतान मेरे और मेरे भाइयों के बीच बिगाड़ (वैमनस्य) पैदा कर दिया था. निस्संदेह मेरा रब जो चाहता है (उसे कामयाबी तक पहुँचाने के लिए) सूक्ष्म से सूक्ष्म तदबीर करता है. वह जानने वाला तथा बुद्धिमान है.

101 फिर यूसुफ़ ने (अल्लाह से इन शब्दों में दुआ की,) ऐ मेरे रब! तूने मुझे सत्ता प्रदान की और मुझे बातों की तह तक पहुँचना सिखाया. ऐ आसमानों तथा धरती के बनाने वाले! तू ही इस दुनिया में तथा मृत्यु-पश्चात दुनिया में मेरा संरक्षक-मित्र है. तू

मुझे इस दशा में मृत्यू दे कि मैं पूर्ण रूप से (तुझे) समर्पित रहूँ और मुझे अपने सदाचारी बंदों में शामिल कर.

102 (पैग़ंबर!) यह परोक्ष की ख़बरों में से है जो हम तुम्हारी ओर प्रकट कर रहे हैं. तुम उस समय उनके पास उपस्थित न थे, जब यूसुफ़ के भाइयों ने आपस में एकमत होकर षड्यंत्र किया था. 103 (पैग़ंबर!) तुम चाहे कितना ही चाहो अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं. 104 हालाँकि (पैग़ंबर!) तुम इस पर (अर्थात जो सत्य-दर्शन का कार्य तुम कर रहे हो उसके ऐवज में) कोई मुआवज़ा (प्रतिफल) नहीं माँगते. यह तो मात्र उपदेश है सभी संसार वालों के लिए.

105 आसमानों तथा ज़मीन में कितनी ही (संदेशयुक्त) निशानियाँ हैं जिन पर से ये लोग गुज़रते रहते हैं, लेकिन वे उनकी ओर बिल्कुल ध्यान नहीं देते. 106 अधिकतर लोग जो अल्लाह को मानते हैं, वे अल्लाह के साथ दूसरों को उसका साझीदार भी ठहराते हैं. 107 क्या वे इससे निश्चिंत हैं कि अल्लाह की ओर से यातना आकर उन्हें (अपनी) पकड़ में नहीं ले सकती या उन पर अचानक क़यामत की घड़ी नहीं आ सकती, जबकि वे बेख़बरी की दशा में पड़े हों. 108 (पैग़ंबर!) तुम इनसे कह दो, मेरा रास्ता तो यह है (अर्थात मेरा मिशन यह है कि) मैं (लोगों को) अल्लाह की ओर बुलाता हूँ. और यह बुलाना स्पष्ट ज्ञान पर आधारित है. मैं भी और वे लोग भी जिन्होंने मेरा अनुसरण किया (अर्थात मैं और मेरे अनुयायी इसी मिशन में लगे हुए हैं). पाक (अर्थात महिमावान) है अल्लाह! और मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो अल्लाह के साझीदार ठहराते हैं.

109 (ऐ मुहम्मद!) हमने तुम से पहले जिन (इंसानी) बस्तियों में पैग़ंबर भेजे वे सब इंसान ही थे. हम उनकी ओर अपना संदेश भेजते रहे हैं. क्या यह (सत्य का इन्कार करने वाले) लोग धरती पर चले-फिरे नहीं कि देखते कि इनसे पहले (सत्य का इन्कार करने वाले) लोगों का अंत किस प्रकार हुआ. (निस्संदेह!) मृत्यु-पश्चात शाश्वत दुनिया में अच्छा स्थान उन लोगों के लिए है जो अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने हुए

हैं. क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते. 110 (हमारे भेजे हुए पैग़ंबर झुठलाए गए, तरह-तरह से सताए गए,) यहाँ तक कि वे (लोगों से) निराश हो गए और उन्हें लगने लगा कि उनसे झूठ कहा गया था, तब उन्हें यकायक हमारी मदद पहुँच गयी. फिर जिसे चाहा हमने बचा लिया. और हमारी ओर से आयी हुई यातना अपराधियों से टाली नहीं जा सकती.

111 (पूर्ववर्ती पैग़ंबरों के) इन क़िस्सों में बुद्धि से काम लेने वालों के लिए शिक्षाप्रद सामग्री है. (क़ुरआन में बयान की जा रही) यह बात कोई गढ़ी हुई बात नहीं हैं, बल्कि (यह क़ुरआन) पुष्टि है उसकी जो पूर्ववर्ती ग्रंथों में से मौजूद है और हर चीज़ का विस्तृत वर्णन. और यह (क़ुरआन) दयालुता तथा मार्गदर्शन है ईमान वालों के लिए.

सूरह–13. अर–रअद

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अलिफ़० लाम० मीम० रा०. यह अल्लाह की किताब के संदेश-वचन हैं.
(पैग़ंबर!) जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम पर उतारा गया है वह सत्य है, लेकिन
अधिकतर लोग नहीं मानते. 2 वह अल्लाह ही है जिसने आसमानों को ऐसे सहारों के बिना
क़ायम किया जो तुम्हें नज़र आते हों (अर्थात तुम ऐसा कोई सहारा नहीं देखते जिस पर आसमान टिका हुआ हो). फिर वह (समस्त सृष्टि के सत्ता) सिंहासन पर आसीन हुआ (अर्थात समस्त सृष्टि का नियंत्रण अपने पास लिया). उसने सूरज तथा चाँद को (अपने) नियम का पाबंद बनाया. हर एक (उसके द्वारा) निर्धारित समयसीमा के अनुसार मार्गस्थ है. हर चीज़ को वही नियंत्रित किये हुए है. वह अपने संदेश खोल- खोल कर बयान करता है, ताकि तुम्हें यह दृढ़ विश्वास हो जाए कि तुम्हारी अपने रब से मुलाक़ात होनी है.

3 वह अल्लाह ही है जिसने धरती को फैलाया और उसमें पहाड़ और नदियाँ रख दीं और धरती पर हर प्रकार के फलों के जोड़े बनाए. वही रात से दिन को ढक देता है (और दिन को रात से). निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं.

4 और धरती पर पास-पास विभिन्न भू-भाग हैं और अंगूरों के बाग़ हैं और (अनाज की) खेतियाँ हैं और खजूर के पेड़ हैं जिनमें कुछ इकहरे हैं और कुछ दोहरे. सब एक ही पानी से सिंचित होते हैं. फिर भी हम पैदावार में किसी को किसी की अपेक्षा बढ़ा देते हैं. निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं.

5 (पैग़ंबर!) यदि तुम आश्चर्य करो तो आश्चर्य के योग्य उनका यह कथन है, 'हम मरकर जब मिट्टी हो जाएंगे, तो क्या हम नए सिरे से पैदा किये जाएंगे? ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब का इन्कार किया. यही वे लोग हैं जिनकी गरदनों में (अपने कर्म-रूपी

कमाई) के तौक़ पड़े हुए हैं. यही लोग (जहन्नम की) आग के निवासी हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे.

6 (पैग़ंबर! सत्य का इन्कार करने वाले लोग) भलाई की आशा करने के बदले, बुराई के लिए जल्दी मचाए हुए हैं. हालाँकि इनसे पहले (इनके जैसे लोगों की) कितनी ही शिक्षाप्रद मिसालें गुज़र चुकी हैं. सच तो यह है कि तुम्हारा रब लोगों के द्वारा अत्याचार के होने के बावजूद उनके साथ माफ़ी से काम लेता है और यह भी सच है कि तुम्हारा रब कड़ी सज़ा देने वाला है.

7 जिन लोगों ने (ख़ुदा की ओर से आए हुए) सत्य का इन्कार किया, वे कहते हैं, इस पैग़ंबर पर उसके रब की ओर से कोई (चमत्कारिक) निशानी क्यों नहीं अवतरित की गयी. (पैग़ंबर!) तुम तो मात्र सचेत करने वाले हो. हर क़ौम के लिए एक मार्गदर्शक हुआ है.

8 अल्लाह जानता है प्रत्येक मादा के गर्भ को और जो कुछ गर्भ में घटता और बढ़ता है उसको भी. उसके यहाँ प्रत्येक चीज़ का निश्चित पैमाना है.

9 वह छिपी और खुली हर चीज़ को जानता है. वह ऐसा महान है (जैसा दूसरा कोई नहीं) और वह सर्वोच्च है. 10 तुममें से कोई व्यक्ति चाहे चुपके से बात कहे या ज़ोर से कहे, इसी तरह कोई रात (के अंधेरे) में छिपा हो या दिन (की रोशनी) में चल रहा हो, अल्लाह के लिए सब समान है.

11 हर आदमी के आगे तथा पीछे (उसके नियुक्त किए हुए) निरीक्षक लगे हुए हैं. जो अल्लाह के आदेश से उसकी देखरेख करते रहते हैं. निस्संदेह! अल्लाह किसी क़ौम की दशा को नहीं बदलता जब तक कि वह (स्वयं) उसको न बदल डाले जो उनके मन में है. और जब अल्लाह किसी क़ौम पर आपदा लाने का फ़ैसला कर ले, तो फिर वह टल नहीं सकती और न अल्लाह के मुक़ाबले में ऐसी क़ौम का कोई सहायक हो सकता है.

12 वह अल्लाह ही है जो तुम्हें बिजली दिखाता है जिससे भय भी उत्पन्न होता है और आशा भी. और वही है जो पानी से लदे हुए बादलों को उठाता है. 13 बादल की गरज उसकी प्रशंसा के साथ उसकी महिमा का गान करती है और फ़रिश्ते भी उसके भय से काँपते हुए उसका महिमागान करते हैं. वही कड़कती बिजलियाँ भेजता है, फिर उन्हें जिस पर चाहता है गिरा देता है और लोग हैं कि अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, हालाँकि वह सर्वश्रेष्ठ है, शक्तिशाली है.

14 अल्लाह को पुकारना ही सत्य के अनुरूप है. जिन्हें लोग उसके सिवा पुकारते हैं. वे उनकी पुकार का कुछ भी उत्तर नहीं देते, (उन्हें पुकारना) बस ऐसा ही है जैसे कोई अपने दोनों हाथ पानी की ओर इसलिए फैलाए कि वह उसके मुँह में पहुँच जाए, हालाँकि वह उस तक पहुँचने वाला नहीं. सत्य का इन्कार करने वालों की पुकार इसके सिवा कुछ नहीं कि वह पूर्णता लाभहीन है.

15 आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं सब अल्लाह ही को सजदा करते हैं — स्वेच्छा से या अनिच्छा से; और उनकी परछाइयाँ भी सुबह व शाम सजदा कर रही हैं.

16 उनसे पूछो, आसमानों तथा धरती का रब कौन है? कह दो, वह अल्लाह है. उनसे पूछो, (जब सत्य यह है तो) फिर (क्यों?) तुम लोगों ने उसके सिवा ऐसों को अपने कार्यसाधक बना रखे हैं, जिन्हें स्वयं अपने लिए भी किसी लाभ तथा हानि का अधिकार प्राप्त नहीं है? (उनसे) कहो, क्या अंधा और आँखों वाला दोनों समान हो सकते हैं? क्या अँधेरा और उजाला दोनों समान हो जाएंगे? या फिर (क्या ऐसा है कि) जिन्हें उन्होंने अल्लाह के साझीदार ठहराए हैं, उन साझीदारों ने भी सृजन किया जैसा अल्लाह ने सृजन किया कि उसके कारण सृजन करने का मामला उन पर संदिग्ध हो गया है? (पैग़ंबर!) कह दो, हर चीज़ का सृजन करने वाला सिर्फ़ अल्लाह है. अकेला वही है सब पर प्रभुत्व रखने वाला.

17 अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया, फिर नाले अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार बह पड़े. फिर पानी के बहाव ने उभरे हुए झाग को उठा लिया. इस प्रकार का झाग उन धातुओं में भी उठता है, जिन्हें लोग ज़ेवर या दूसरे सामान बनाने के लिए आग के द्वारा पिघलाते हैं. इस तरह अल्लाह सत्य तथा असत्य की मिसाल बयान करता है. तो जो झाग होता है वह सूख कर समाप्त हो जाता है और जो चीज़ इंसानों को लाभ पहुँचाने वाली है, वह ज़मीन में ठहर जाती है. इस तरह अल्लाह मिसालों से अपनी बात स्पष्ट करता है.

18 जिन लोगों ने अपने रब की पुकार को स्वीकार कर लिया उन के लिए भलाई है और जिन लोगों ने उसकी पुकार को न माना, यदि उनके पास वह सब कुछ हो जो धरती में है और उसके साथ उतना और भी हो, वे अपनी मुक्ति के लिए (मुक्ति-धन के तौर पर) सब दे देना चाहेंगे (तब भी उनकी मुक्ति संभव नहीं). यही वे लोग हैं जिनका हिसाब कठोर होगा. उनका ठिकाना जहन्नम है. और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है.

19 भला वह व्यक्ति जो जानता हो कि जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम पर उतरा है वह सत्य है, क्या उसके समान हो सकता है जो अँधा है. उपदेश तो वही लोग ग्रहण करते हैं जो सूझ-बूझ से काम लेने वाले हैं.

20 (वे लोग जिन्होंने सूझ-बूझ के साथ सत्य को अपनाया है) वे ऐसे लोग हैं जो
अल्लाह के साथ की हुई प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं और वे अभिवचन को तोड़ते नहीं. 21
(इस तरह सत्यवादियों का यह रवैय्या होता है कि) अल्लाह ने जिन (संबंधों) को जोड़ने का आदेश दिया है उसे वे जोड़ते हैं. और वे अपने रब के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहते हैं. इसी तरह उन्हें यह भय लगा रहता है कि कहीं उनसे बुरी तरह हिसाब न
लिया जाए. 22 उनका हाल यह होता है कि वे अपने रब की प्रसन्नता के लिए धैर्य से काम लेते हैं और वे नमाज़ क़ायम करते हैं. और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से

छिपे तथा खुले रूप से खर्च करते हैं. और बुराई को भलाई से दूर करते हैं. (मृत्यु-पश्चात) शाश्वत जीवन में (अच्छा) स्थान इन्हीं लोगों के लिए है. 23 अर्थात सदैव रहने के बाग़ हैं जिनमें वे दाख़िल होंगे और उनके पूर्वजों तथा उनकी पत्नियों तथा उनकी संतानों में से जो नेक होंगे वे भी वहाँ दाख़िल होंगे. हर दरवाज़े से फ़रिश्ते (उनके स्वागत के लिए) उनके पास आएंगे. 24 (फ़रिश्ते जन्नती लोगों से कहते होंगे,) तुम पर सलामती है, यह तुम्हारे सब्र का बदला है. तो क्या ही ख़ूब है शाश्वत दुनिया का घर!

25 और जो लोग अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा को उसे दृढ़ करने के पश्चात भंग करते हैं. और जिस चीज़ को अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया है उसे तोड़ते हैं और धरती पर उपद्रव मचाते हैं. ऐसे लोगों पर (अल्लाह की ओर से) फिटकार है और उनके लिए बुरा घर है. 26 अल्लाह जिसको चाहता है अधिक जीविका प्रदान करता है और (जिस के लिए) चाहता है सीमित कर देता है. (जीवन के सत्य से बेख़बर) लोग इसी दुनिया के जीवन से प्रसन्न हैं, हालाँकि इस (परीक्षारूपी) दुनिया का जीवन मृत्यु-पश्चात शाश्वत दुनिया (के जीवन) के मुक़ाबले में एक थोड़ी सी सुख-सामग्री के सिवा और कुछ नहीं. 27 जिन लोगों ने (ख़ुदा की ओर से आए हुए) सत्य का इन्कार किया, वे कहते हैं कि इस आदमी पर (अर्थात पैग़ंबर पर) उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गयी. (पैग़ंबर!) उनसे कह दो, अल्लाह जिसको चाहता है भटका देता है और वह अपना मार्ग उसको दिखाता है जो उसकी ओर पलटे. 28 (अल्लाह की ओर पलटने वाले) वे ऐसे लोग हैं जो ईमान लाए और जिनके दिलों को अल्लाह की याद से इत्मीनान हासिल होता है. सुन लो! अल्लाह की याद ही वह चीज़ है जिससे दिलों को इत्मीनान मिला करता है.

29 जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए शुभ-सूचना है और अच्छा ठिकाना है. 30 (ऐ मुहम्मद!) इस तरह हमने तुम्हें एक ऐसे समुदाय में भेजा है जिससे पहले बहुत से समुदाय गुज़र चुके हैं, ताकि तुम लोगों को वह संदेश सुना दो जो

हमने तुम्हारी ओर भेजा है. जबकि वे रहमान के संबंध से इन्कार की नीति अपनाए हुए हैं. (पैग़ंबर!) उनसे कह दो, वही मेरा रब है उसके सिवा दूसरा कोई उपासनायोग्य नहीं. उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की ओर मुझे लौटकर जाना है.

31 और यदि कोई ऐसा क़ुरआन होता जिसके द्वारा पहाड़ चला दिए जाते या धरती फट जाती या मुर्दे (क़ब्रों से निकलकर) बोलने लगते (तब भी वे लोग ईमान न लाते). बल्कि (वास्तविकता यह है कि) सारा अधिकार अल्लाह ही को प्राप्त है. तो फिर क्या ईमान लाने वालों को इस बात से संतुष्टि नहीं कि यदि अल्लाह चाहता तो सभी लोगों को सीधे मार्ग पर लगा देता?

और सत्य का इन्कार करने वालों पर, उनकी करतूतों के कारण, कोई न कोई आपदा आती ही रहती है या उनकी बस्ती के निकट कहीं उतरती है, यह सिलसिला जारी रहेगा, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा (अर्थात क़यामत) आ जाए. निश्चित रूप से अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध नहीं करता. 32 (ऐ मुहम्मद!) तुमसे पहले भी पैग़ंबरों का उपहास किया जा चुका है. तो मैंने (आरंभ में) उन लोगों को ढील दी जिन्होंने सत्य का इन्कार किया. फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया. तो देखो कैसी थी मेरी ओर से उन्हें दी गयी सज़ा!

33 फिर क्या वह जो प्रत्येक जीवधारी के कृत्य पर नज़र रखे हुए है (क्या उनके समान हो सकता है जो किसी चीज़ की सामर्थ्य नहीं रखते?) लोगों ने उसके साझी ठहरा रखे हैं. (पैग़ंबर!) उनसे कहो, ज़रा उनके नाम तो बताओ (क्या तुम्हारे पास उनके संबंध से कोई प्रमाण है?). (लेकिन यह जान लो कि) क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ की सूचना दे रहे हो जिसे वह ज़मीन में होते हुए नहीं जानता? या यूँ ही यह एक ऊपरी (अर्थात निराधार) बात है? (नहीं,) बल्कि सत्य यह है कि जिन लोगों ने सत्य-संदेश को मानने से इन्कार किया उनके लिए उनकी मक्कारियाँ आकर्षक बना दी गयी हैं (अर्थात वे

मक्कारीपूर्ण कृत्य सत्कर्म समझ कर करते हैं). और वे सीधे रास्ते से रोक दिए गए हैं. और अल्लाह जिसे गुमराही में भटकते रहने के लिए छोड़ दे, उसे कोई सन्मार्ग बताने वाला नहीं. 34 ऐसे लोगों के लिए इस दुनिया की ज़िंदगी में भी यातना है और मृत्यु-पश्चात शाश्वत दुनिया की ज़िंदगी में उससे भी अधिक कठोर यातना है. और कोई ऐसा नहीं जो उन्हें अल्लाह की पकड़ से बचाने वाला हो.

35 अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहने वाले इंसानों के लिए जिस जन्नत का वादा है, उसकी शान यह है कि उसके नीचे नहरें बह रही हैं. उसके फल सदैव बाक़ी रहने वाले हैं और उसकी छाया भी सदैव बाक़ी रहने वाली है. यह अंजाम उन लोगों का है जो अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने हुए हैं. जबकि सत्य का इन्कार करने वालों का अंजाम आग है.

36 (पैग़ंबर!) जिन लोगों को हमने पहले किताब दी थी (उनमें कुछ ऐसे हैं) जो इस किताब से जो हमने तुम पर उतारी है प्रसन्न हैं. और उनमें कुछ गिरोह ऐसे भी हैं जो इस किताब की कुछ बातों को नहीं मानते. (पैग़ंबर!) उनसे कह दो, मुझे आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह की उपासना करूँ और किसी को उसका साझीदार न ठहराऊँ. मैं उसी की ओर बुलाता हूँ और उसी की ओर मेरा लौटना है. 37 और इस प्रकार हमने इस (क़ुरआन) को एक आदेश की हैसियत से अरबी भाषा में उतारा है. अब यदि तुम उनकी इच्छाओं का अनुसरण करो, इसके पश्चात कि तुम्हारे पास ज्ञान आ चुका है. तो (पैग़ंबर!) अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारा न कोई सहायक होगा और न कोई (अल्लाह से तुम्हें) बचाने वाला.

38 (ऐ मुहम्मद!) तुमसे पहले भी हम बहुत से पैग़ंबरों को भेज चुके हैं. उन्हें हमने पत्नियाँ तथा संतान प्रदान की थी. किसी पैग़ंबर के लिए यह संभव नहीं था कि वह अल्लाह की अनुमति के बिना कोई निशानी ले आता. हर एक वादा लिखा हुआ है. 39

अल्लाह जो कुछ चाहता है मिटा देता है और जो कुछ चाहता है क़ायम रखता है. उसी के पास है सारी किताबों का स्रोत.

40 (पैग़ंबर!) जिस (यातना का) वादा हम उनसे कर रहे हैं. उसका कोई हिस्सा चाहे हम तुम्हारे जीते जी दिखा दें या उसके प्रकट होने से पहले ही हम तुम्हें मृत्यु दे दें. बहरहाल तुम्हारा काम तो केवल संदेश पहुँचा देना है और (उनसे) हिसाब लेना हमारा काम है.

41 क्या वे (अर्थात सत्य का इन्कार करने वाले) देखते नहीं कि हम (उनके) भू-भाग को उसके किनारों से घटाते चले आ रहे हैं. अल्लाह फ़ैसला करता है. ऐसा कोई नहीं जो उसके फ़ैसले को टाल सके. वह शीघ्र हिसाब लेने वाला है. 42 उनसे पहले जो लोग गुज़रे वे भी चालें चल चुके हैं, लेकिन संपूर्ण चालें अल्लाह ही के अधिकार में हैं. प्रत्येक जीव जो कुछ कमाई कर रहा है वह उसे जानता है. और सत्य का इन्कार करने वाले लोग जल्द जान लेंगे कि मृत्यु-पश्चात दुनिया में (अच्छा) अंजाम किसके लिए है.

43 सत्य का इन्कार करने वाले कहते हैं कि तुम अल्लाह के भेजे हुए नहीं हो. (पैग़ंबर आप!) कह दीजिए, मेरे और तुम्हारे बीच (स्वयं) अल्लाह की गवाही पर्याप्त है, और (इस संबंध से) उसकी गवाही भी मौजूद है, जिसके पास पूर्ववर्ती ग्रंथ का ज्ञान है.

सूरह–14. इब्राहीम

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अलिफ़० लाम० रा०. (पैग़ंबर!) यह एक किताब है जिसको हमने तुम्हारी ओर उतारा है, ताकि तुम लोगों को उनके रब की अनुमति से (पथभ्रष्टता के) अँधेरों से निकाल कर (सत्य की) रोशनी में लाओ, अर्थात उस मार्ग पर लाओ जो उसकी ओर जाता है जो प्रभुत्वशाली है और प्रशंसनीय है.
2 (अर्थात) उस अल्लाह की ओर जो हर उस चीज़ का मालिक है जो ज़मीन व आसमान में पाई जाती है. (लेकिन सत्य-प्राप्ति की व्यवस्था के पश्चात) जो लोग सत्य का अंगीकार करने से इन्कार करने वाले हैं उनके लिए एक अत्यंत विनाशकारी सज़ा है.

3 (सत्य का इन्कार करने वाले लोगों को) मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन के मुक़ाबले में यही सांसारिक जीवन प्रिय है. वे दूसरों को अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और (अल्लाह के बताए हुए मार्ग में) टेढ़ निकालना चाहते हैं. ये वे लोग हैं जो सन्मार्ग से भटक कर दूर जा पड़े हैं.
4 और हमने जो भी पैग़ंबर भेजा उसकी क़ौम की भाषा में भेजा (अर्थात प्रत्येक भेजा हुआ पैग़ंबर अपनी क़ौम की भाषा जानने वाला होता था), ताकि वह उनसे (हमारा संदेश उनकी अपनी भाषा में साफ़-साफ़) बयान कर दे. फिर अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है सन्मार्ग पर लगा देता है. वह जबरदस्त है, विवेकवान है.

5 हमने मूसा को अपनी (संदेशयुक्त) निशानियों के साथ भेजा था (और उसे आदेश दिया था) कि अपनी क़ौम को अँधेरों से निकाल कर रोशनी में लाओ. और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिलाओ. निस्संदेह उनमें बड़ी निशानियाँ हैं, हर उस व्यक्ति के लिए जो धैर्य से काम लेने वाला और कृतज्ञता व्यक्त करने वाला हो.

6 मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, तुम अल्लाह के उस उपकार को याद रखो जो उसने तुम पर किया है. उसने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुटकारा दिलाया जो तुम्हें घोर कष्ट पहुँचाते थे. जो तुम्हारे लड़कों को मार डालते थे और तुम्हारी लड़कियों को जीवित रखते थे. इसमें तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी बड़ी परीक्षा थी. 7 और जब तुम्हारे रब ने तुम्हें सचेत कर दिया कि यदि तुम शुक्र करने वाले बनोगे तो मैं तुम्हें और अधिक प्रदान करूँगा और यदि तुम नाशुक्री का परिचय दोगे तो मेरी यातना अत्यंत कठोर है. 8 मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, यदि तुम इन्कार करो, और धरती के सारे रहने वाले भी इन्कार करने वाले बन जाएँ तो अल्लाह निस्पृह है और सदैव प्रशंसनीय है.

9 क्या तुम्हें उन क़ौमों के हालात नहीं पहुँचे जो तुमसे पहले गुज़र चुकी हैं? नूह की क़ौम, क़ौमे-आद, क़ौमे-समूद और उनके बाद आने वाली (ऐसी भी) बहुत सी क़ौमें जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता उनके पैग़ंबर उनके पास खुली-खुली निशानियाँ लेकर आए (तो उनका रिस्पॉन्स यह था कि) उन्होंने अपने हाथ अपने मुँह पर रख दिए और कहने लगे, जो कुछ देकर तुम्हें भेजा गया है हम उसको मानने से इन्कार करते हैं और जिस चीज़ की ओर तुम हमें बुलाते हो, उसके बारे में हम तो बड़े दुविधाजनक संदेह में पड़े हुए हैं.

10 उन पैग़ंबरों ने (अपनी-अपनी) क़ौमों से कहा, क्या अल्लाह के बारे में (तुम्हें) संदेह है जो आसमानों और ज़मीन का सृजनकर्ता है? (पैग़ंबरों ने आगे कहा,) वह तो तुम्हें बुला रहा है, ताकि तुम्हें क्षमा करे और (तुम्हें जाँचने के लिए) एक निर्धारित अवधी तक तुम्हें मोहलत दे. (इस पर) क़ौम के लोगों ने (अपने पैग़ंबरों से) कहा, तुम तो बस हमारे ही जैसे एक आदमी हो. (क़ौम के लोगों ने आगे कहा,) तुम चाहते हो कि हमें उन चीज़ों की उपासना से रोक दो जिनकी उपासना हमारे पूर्वज करते थे. तुम हमारे सामने कोई स्पष्ट प्रमाण ले आओ.

11 (इस पर) उनके पैग़ंबरों ने कहा, हम इसके सिवा कुछ नहीं कि बस तुम्हारे ही जैसे आदमी हैं, लेकिन अल्लाह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है अपना एहसान करता है (अर्थात क़ौम में अपना संदेशवाहक बनाकर खड़ा करता है). और यह हमारे अधिकार में नहीं कि तुम्हें कोई चमत्कार ला दिखाएँ, बिना अल्लाह के आदेश के; और ईमान वालों को तो अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए. 12 और हम क्यों न अल्लाह पर भरोसा करें जबकि उसी ने हमें हमारे मार्ग दिखाए (जिस पर हम हैं,) (अर्थात हम जिस मार्ग पर हैं वह अल्लाह का बताया हुआ मार्ग है). और जो कष्ट भी तुम हमें दोगे, हम उस पर सब्र ही करेंगे. और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए.

13 सत्य का इन्कार करने वालों ने अपने-अपने पैग़ंबरों से कहा, या तो हम तुम्हें अपने देश से निकाल देंगे या फिर तुम्हें हमारी मिल्लत में वापस आना होगा. तब पैग़ंबरों के रब ने उनकी ओर (अपना) संदेश भेजा कि हम उन अत्याचारियों को नष्ट कर देंगे. 14 और उनके पश्चात तुम्हें पृथ्वी पर बसाएंगे. यह उसके लिए है जो मेरे सामने खड़े होने से डरे और मेरी चेतावनी से डरे.

15 और उन्होंने फ़ैसला चाहा, (फिर जब ख़ुदा का फ़ैसला कार्यान्वित हुआ तो) प्रत्येक दुराग्रही, हठधर्मी असफल होकर रहा. 16 ऐसे (हर) इंसान के आगे जहन्नम है, उसे पीप जैसा पानी पीने को मिलेगा. 17 जिसे वह घूँट-घूँट करके पिएगा और उसे आसानी से अपने गले से नहीं उतार पाएगा. मौत उस पर हर ओर से छायी हुयी होगी, लेकिन वह नहीं मरेगा. उसके सामने कठोर यातना होगी.

18 जिन लोगों ने अपने रब का इन्कार किया, उनके कर्मों की मिसाल उस राख की सी है, जिसे एक तूफ़ानी दिन की आँधी ने उड़ा दिया हो. वह अपने किए में से कुछ भी न पा सकेंगे. यही परले दर्जे की पथभ्रष्टता है. 19 क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह ने आसमानों तथा धरती का बिल्कुल ठीक-ठीक सृजन किया है (अर्थात यह सृष्टि उद्देशपूर्ण

तथा अर्थपूर्ण बनायी गयी है). वह चाहे तो तुम लोगों को ले जाए और एक नया जन-समूह ले आए. 20 और यह अल्लाह के लिए कुछ भी कठिन नहीं.

21 और अल्लाह के सामने सारे लोग पेश होंगे. तब कमज़ोर लोग उन लोगों से कहेंगे, जो (दुनिया में) बड़े बने हुए थे, हम तो तुम्हारे पीछे चलते थे. तो क्या तुम अब अल्लाह की (ओर से हमें दी जाने वाली) कुछ सज़ा को हमसे दूर कर सकते हो? वे कहेंगे, यदि अल्लाह हमें कोई मार्ग दिखाता तो हम तुम्हें भी वह मार्ग अवश्य दिखा देते. अब हमारे लिए समान है कि हम व्याकुल हों (अर्थात रोएँ-पीटें) या सब्र करें. हमारे लिए बचने की कोई शकल नहीं.

22 जब मामले का फ़ैसला हो चुकेगा, तब शैतान कहेगा कि निस्संदेह! अल्लाह ने तुमसे सच्चा वादा किया था और मैंने भी तुमसे वादा किया था, लेकिन मैंने उसके प्रतिकूल किया. मेरा तुम्हारे ऊपर कोई ज़ोर तो था नहीं. लेकिन केवल इतनी बात थी कि मैंने तुम्हें (अपने रास्ते की ओर) बुलाया और तुमने मेरी बात मान ली. तो तुम अब मुझे मलामत न करो, बल्कि अपने आप ही को मलामत करो. अब न मैं तुम्हारा सहायक हो सकता हूँ और न तुम मेरे सहायक हो सकते हो. इससे पहले तुम मुझे (ख़ुदा के ईश्वरत्व में) जो साझी ठहराते थे, मैं उसका इन्कार करता हूँ (अर्थात मैं ख़ुदा का साझी होने से इन्कार करता हूँ). निस्संदेह, अत्याचारियों के लिए कष्टप्रद यातना है.

23 और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वे ऐसे बागों में प्रवेश करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. उनमें वे अपने रब की अनुमति से सदैव रहेंगे. वहाँ वे एक-दूसरे का अभिवादन सलाम से करेंगे.

24 क्या तुम (चिंतन की दृष्टि से) देखते नहीं हो कि अल्लाह ने शुभ-बात को कैसी उपमा देकर बयान किया है? 'शुभ-बात' शुभ-वृक्ष की तरह है, जिसकी जड़ गहरी जमी हुई हो और जिसकी शाखाएँ आसमान तक पहुँची हुई हों (अर्थात वातावरण में

बुलंद हुई हों), 25 अपने रब के आदेश से वह हर समय अपना फल दे रहा हो. अल्लाह लोगों के लिए ये मिसालें इसलिए बयान करता है, ताकि लोग उससे शिक्षा ग्रहण करें. 26 और अशुभ-बात की मिसाल एक अशुभ वृक्ष की सी है, जिसे धरती की सतह से ही उखाड़ फेंका जाता है, उसके लिए कोई स्थायित्व नहीं है.

27 अल्लाह ईमान लाने वालों को एक पक्की बात के द्वारा इस दुनिया तथा मृत्यु-पश्चात दुनिया में दृढ़ता प्रदान करता है. और अल्लाह अत्याचारियों को भटका देता है. अल्लाह करता है जो वह चाहता है.

28 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह के उपकारों के बदले कृतज्ञता का परिचय दिया और अपने साथ अपनी क़ौम को भी विनाश के घर में झोंक दिया? 29 अर्थात जहन्नम, जिसमें वे डाले जाएंगे, वह कितना बुरा ठिकाना है! 30 उन्होंने अल्लाह के समकक्ष ठहराए, ताकि वे लोगों को अल्लाह के मार्ग से भटका दें. उनसे कह दो, कुछ दिन मज़े कर लो, अंत में तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है.

31 (पैग़ंबर!) मेरे जो बंदे ईमान लाए हैं, उनसे कह दो कि वे नमाज़ क़ायम करें और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खुले और छिपे (भलाई के रास्ते में) खर्च करें, इससे पहले कि वह दिन आए जिसमें न कोई ख़रीद व फ़रोख़्त होगी और न कोई मित्रता काम आएगी(अर्थात परीक्षा की दुनिया की मित्रता).

32 वह अल्लाह है जिसने आसमान और धरती को बनाया और आसमान से पानी उतारा. फिर उसके ज़रिए से तुम्हारी जीविका के लिए विभिन्न प्रकार के फल निकाले. उसी ने (समुद्र में) नौकाओं का परिचालन तुम्हारे लिए संभव किया कि उसके आदेश से नौकाएँ (समुद्र में) चलती रहें. उसी ने नदियों को तुम्हारी सेवा में लगाया. 33 उसी ने सूरज तथा चाँद को तुम्हारी सेवा में लगाया. वे नियत विधान के अधीन निरंतर गतिमान हैं. और उसने रात व दिन को भी तुम्हारी सेवा में लगा रखा है. 34 और उसने वह सब

कुछ तुम्हें दिया जो तुमने माँगा. यदि तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो नहीं गिन सकते. हक़ीक़त यह है कि इंसान बड़ा ही अन्यायी और कृतघ्न है.

35 याद करो वह समय जब इब्राहीम ने दुआ की थी, ऐ मेरे रब! इस नगर को शांति वाला नगर बना दे! (इब्राहीम ने आगे दुआ की,) मुझे और मेरी संतान को इससे दूर रख कि हम बुतों की (अर्थात मूर्तियों की) इबादत करें. 36 ऐ मेरे रब! इन बुतों ने बहुत से लोगों को पथभ्रष्ट कर दिया. तो जो मेरे तरीक़े पर चले वह मेरा है और जिसने मेरा कहा न माना तो तू क्षमा करने वाला, दयावान है.

37 (इब्राहीम ने आगे दुआ की,) ऐ मेरे रब! मैंने अपनी संतान को एक बंजर घाटी में तेरे सम्मानित घर (अर्थात काबा) के निकट बसाया है. ऐ मेरे रब! यह इसलिए कि ये लोग नमाज़ क़ायम करें. तो (ऐ मेरे रब!) तू ऐसा कर कि लोगों के दिल उनकी ओर आकृष्ट हों और उन्हें फलों की जीविका प्रदान कर, ताकि वे कृतज्ञ बनें.

38 (इब्राहीम ने कहा,) ऐ हमारे रब! निस्संदेह! तू जानता है जो कुछ हम छिपाते हैं और जो कुछ हम प्रकट करते हैं. निश्चय ही अल्लाह से कुछ भी छिपा हुआ नहीं है, न ज़मीन में और न आसमान में.

39 (इब्राहीम ने कहा,) शुक्र है उस अल्लाह का जिसने मुझे इस बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक़ दिए. निस्संदेह, मेरा रब ज़रूर दुआ सुनता है. 40 ऐ मेरे रब! मुझे नमाज़ क़ायम करने वाला बना और मेरी संतान से भी (ऐसे लोग उठा जो तेरी इबादत करने वाले हों). ऐ प्रभु! मेरी दुआ क़बूल कर. 41 ऐ प्रभु! मुझे और मेरे माँ-बाप को और सब ईमान लाने वालों को उस दिन क्षमा कर, जबकि हिसाब का मामला होगा.

42 और कदापि यह न समझो कि अल्लाह उससे अनभिज्ञ है जो अत्याचारी लोग कर रहे हैं. वह उन्हें उस दिन तक के लिए ढील दे रहा है जिस दिन आँख फटी की फटी

रह जाएँगी. 43 वे सर उठाए हुए भाग रहे होंगे. (जिधर वे देख रहे होंगे उस ओर) उनकी आँखें जमी हुई होंगी (अर्थात वे पलक भी न झपकेंगे) और उनके दिल व्याकुल होंगे.
44 (पैग़ंबर!) लोगों को उस दिन से सचेत कर दो, जब यातना उन्हें आ लेगी. उस समय अत्याचारी लोग कहेंगे, ऐ हमारे रब! हमें और थोड़ी सी मुहलत दे दे. हम तेरी ओर बुलाए जाने वाले आवाहन को स्वीकार करेंगे और पैग़ंबरों का अनुसरण करेंगे. (इस पर उन्हें जवाब दिया जाएगा,) क्या इससे पहले तुमने क़समें खाकर नहीं कहा था कि तुम्हारा कोई पतन नहीं होना है?
45 हालाँकि तुम उन लोगों की बस्तियों में रह चुके थे जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया था. और यह तुम पर स्पष्ट हो चुका था कि हमने उनके साथ क्या व्यवहार किया और हमने तुम्हारे लिए बहुत सी मिसालें बयान की थीं. 46 उन्होंने अपनी सारी चालें चल देखीं, लेकिन उनकी सारी चालें अल्लाह की दृष्टि में थीं (अर्थात सारी चालों का तोड़ अल्लाह के पास था), यद्यपि उनकी चाल ऐसी थी कि उससे पहाड़ भी (अपनी जगह से) हट जाए.

47 तो तुम कदापि यह न समझना कि अल्लाह कभी अपने पैग़ंबरों से किए हुए वादों के विरुद्ध कर सकता है. निस्संदेह! अल्लाह असीम प्रभुत्वशाली है, बदला लेने वाला है.
48 जिस दिन यह धरती दूसरी धरती से बदल दी जाएगी और इसी तरह आसमान भी. तब सारे इंसान उस एकमात्र सर्वोच्च प्रभुत्वशाली अल्लाह के समक्ष प्रस्तुत होंगे.
49 तुम उस दिन अपराधियों को बेड़ियों में जकड़ा हुआ देखोगे. 50 उनके वस्त्र तारकोल के होंगे और आग (की लपट) उनके चेहरों पर छा रही होगी. 51 यह इसलिए होगा कि अल्लाह हर व्यक्ति को उसके कर्मों का बदला दे. निस्संदेह, अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है. 52 यह क़ुरआन समस्त मनुष्य जाति के लिए (अल्लाह की ओर से) एक एलान

है, ताकि इसके माध्यम से वे सचेत कर दिए जाएँ और वे जान लें कि वास्तव में ख़ुदा बस एक ही है और जो बुद्धि रखते हैं वे सचेत हो जाएँ.

सूरह–15. अल–हिज्र

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अलिफ़० लाम० रा०. यह संदेश हैं ख़ुदा की किताब के जो स्पष्ट क़ुरआन है.

पारा – 14

2 वह समय आएगा जब वे लोग जिन्होंने सत्य का इन्कार किया था कामना करेंगे कि
काश! वे मानने वाले बने होते. 3 छोड़ो इन्हें, ये खाएँ-पीएँ, मज़े करें, (व्यर्थ) आशा
उन्हें भुलावे में डाल रखें, तो शीघ्र ही वे जान लेंगे (अर्थात वे उसी सत्य से जल्द रूबरू
होंगे जिसका वे इन्कार कर रहे हैं). 4 हमने इससे पहले जिस बस्ती को भी नष्ट किया है,
उसका एक नियत समय लिखा हुआ था. 5 कोई क़ौम अपने नियत समय से न आगे बढ़
सकती है और न पीछे हट सकती है.

6 (पैग़ंबर के समकालीन इन्कार करने वाले) लोग कहते हैं, ऐ वह आदमी जिस
पर आसमानी-उपदेश ग्रंथ प्रकट हुआ है, तू निश्चित रूप से दीवाना है. 7 यदि तू सच्चा
है तो हमारे सामने फ़रिश्तों को क्यों नहीं लाता? 8 हम फ़रिश्तें सिर्फ़ फ़ैसले (को
कार्यन्वित करने) के लिए उतारा करते हैं. उस समय लोगों को मुहलत नहीं दी जाती.
9 क़ुरआन-रूपी इस उपदेश-ग्रंथ को हमने ही अवतरित किया और हम ही इसे सुरक्षित
रखने वाले हैं. 10 (ऐ मुहम्मद!) हम तुमसे पहले गुज़री हुई क़ौमों में पैग़ंबर भेज चुके हैं.
11 और कभी ऐसा नहीं हुआ कि उनके पास पैग़ंबर आया हो और उन्होंने उसकी हँसी न
उड़ाई हो.

12 इस तरह हम अपराधी लोगों के दिलों में इस (उपहास) को डाल देते हैं
(अर्थात वे उपहास को अच्छा कार्य समझ कर करेंगे). 13 वे इस पर ईमान नहीं लाएंगे
(इसी तरह) पहले के लोगों की मिसालें गुज़र चुकी हैं. 14 और यदि हम उन पर

आसमान का द्वार खोल देते जिस पर वे चढ़ने लगते. 15 तब भी वे कह देते कि हमारी आँखों को धोका हो रहा है, बल्कि हम लोगों पर जादू कर दिया गया है.

16 हमने आसमान में बहुत से बुर्ज बनाये और देखने वालों के लिए उसे (सितारों से) सुसज्जित भी किया. 17 और हर फिटकारे हुए शैतान से हमने उसकी रक्षा की. 18 यदि कोई चोरी छिपे सुनने के लिए कान लगाता है तो एक चमकता हुआ अंगारा उसका पीछा करता है.

19 और हमने धरती को फैलाया और उस पर हमने पहाड़ रख दिए और उसमें प्रत्येक चीज़ नपे-तुले ढंग से उगायी. 20 और हमने उसमें आजीविका के साधन उपलब्ध कराए तुम्हारे लिए और उन सारे जीवधारियों के लिए भी जिन्हें (ऐ इंसानों!) तुम जीविका नहीं देते.

21 कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके ख़ज़ाने हमारे पास न हों और जिस चीज़ को भी हम उतारते हैं एक निर्धारित पैमाने के साथ उतारते हैं.

22 और हम ही वर्षा लाने वाली हवाओं को भेजते हैं. फिर आसमान से पानी बरसाते हैं. फिर उस पानी से तुम्हें सिंचित करते हैं. और तुम्हारे वश में यह न था कि तुम उसका संचय करके रख लेते.

23 निस्संदेह! हम ही ज़िंदगी और मौत देते हैं और हम ही सबके वारिस हैं.

24 हम तुम्हारे पूर्वजों को भी जानते हैं और तुम्हारे बाद आने वाले लोगों को भी जानते हैं. 25 निस्संदेह! तुम्हारा रब उन सबको इकट्ठा करेगा. वह बुद्धिमान भी है और सब कुछ जानने वाला भी है.

26 और हमने मनुष्य को सड़े हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से बनाया. 27 उससे पहले (अर्थात मनुष्य से पहले) हमने जिन्नों का सृजन आग की लपट से किया है.

28 और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा, मैं सड़ी हुई मिट्टी के सूखे गारे से एक मनुष्य बनाने वाला हूँ. 29 जब मैं उसे पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी रूह में से फूँक दूँ, तो तुम सब उसके आगे सजदे में गिर जाना. 30 तो सभी फ़रिश्तों ने सजदा किया. 31 लेकिन इबलीस, कि उसने सजदा करने वालों का साथ देने से इन्कार कर दिया. 32 (इस पर) अल्लाह ने कहा, ऐ इबलीस! तुझे क्या हुआ कि तू सजदा करने वालों में शामिल नहीं हुआ? 33 (इस पर) इबलीस ने कहा, मैं ऐसा नहीं हूँ कि मैं उस मनुष्य को सजदा करूँ जिसे तूने सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से बनाया.

34 (फिर) अल्लाह ने (इबलीस से) कहा, तू यहाँ से निकल जा, क्योंकि तू फिटकारा हुआ है. 35 अब बदले के दिन तक तुझ पर लानत (अर्थात फिटकार) है (और बदले के दिन से आगे फिटकार भी और सज़ा भी). 36 इबलीस ने कहा, ऐ मेरे रब! तू मुझे उस दिन तक के लिए मुहलत दे, जिस दिन सारे लोग उठाए जाएंगे.

37 अल्लाह ने (शैतान से) कहा, अच्छा तुझे मुहलत है, 38 उस दिन तक के लिए जिसका समय निश्चित है. 39 शैतान ने कहा, ऐ मेरे रब! जैसा तूने मुझे भटकाया है, उसी तरह अब मैं धरती में इंसानों के लिए अच्छे रूप में धोके का काम करूँगा और उन सबको पथभ्रष्ट कर दूँगा. 40 सिवा तेरे उन बंदों के जिन्हें तूने इनमें से खालिस कर लिया होगा.

41 (इबलीस की बात पर) अल्लाह ने कहा, यह रास्ता है जो सीधा मुझ तक पहुँचता है. 42 निस्संदेह, जो मेरे बंदे हैं (अर्थात सच्चे बंदे) उन पर तेरा बस नहीं चलेगा. तेरा बस तो सिर्फ़ उन भटके हुए लोगों पर चलेगा जो तेरा अनुसरण करेंगे. 43 उन सब के लिए जहन्नम का वादा है. 44 उसके सात दरवाज़े हैं. प्रत्येक दरवाज़े के लिए उन (लोगों) में से एक निश्चित हिस्सा है.

45 निस्संदेह अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) लोग बागों तथा स्रोतों के बीच होंगे. 46 (उनसे कहा जाएगा,) प्रवेश करो इनमें सलामती के साथ निश्चिंत होकर. 47 उनके दिलों में जो मन-मुटाव रहा होगा उसे हम दूर कर देंगे. वे (एक दूसरे के प्रति शुद्ध अंतःकरण के साथ) भाई भाई बनकर आमने सामने आसनों पर बैठे होंगे. 48 वहाँ उन्हें कोई कष्ट नहीं पहुचेगा और न वे वहाँ से निकाले जाएंगे.

49 (पैग़ंबर!) मेरे बंदों को ख़बर दे दो कि मैं अत्यंत क्षमाशील एवं दयावान हूँ. 50 लेकिन (इसी के साथ) मेरे द्वारा दिए जाने वाला दंड भी कष्टदायक दंड है.

51 उन्हें इब्राहीम के मेहमानों का हाल सुनाओ. 52 जब वे उसके यहाँ आए और कहा, (तुम पर) सलाम हो! (इस पर) इब्राहीम ने कहा, हमें तो तुमसे डर लगता है. 53 (इस पर) उन (आए हुए) फ़रिश्तों ने कहा, डरो नहीं, हम तुम्हें एक लड़के की शुभ-सूचना देते हैं जो बड़ा ज्ञानवान होगा. 54 इब्राहीम ने कहा, क्या तुम इस बुढ़ापे में संतान की शुभ-सूचना देते हो. तो किस प्रकार की शुभ-सूचना मुझे दे रहे हो?

55 फ़रिश्तों ने (इब्राहीम को) जवाब दिया, हम तुम्हें सच्ची शुभ-सूचना दे रहे हैं, तो तुम निराश होने वालों में से न बनो. 56 (इस पर) इब्राहीम ने कहा, अपने रब की दयालुता से निराश तो पथभ्रष्ट लोग ही हुआ करते हैं.

57 इब्राहीम ने (आगे) कहा, ऐ भेजे हुए फ़रिश्तों! अब तुम्हारी मुहिम क्या है? 58 उन्होंने कहा, हम एक अपराधी क़ौम की ओर भेजे गए हैं (जो क़ौम हमारे द्वारा नष्ट की जाने वाली है), 59 सिवाय लूत के घर वालों के कि हम उन सबको बचा लेंगे. 60 सिवाय उसकी बीवी के (उसके संबंध से अल्लाह कहता है कि) हमारा फ़ैसला हो चुका है कि वह पीछे रह जाने वाले (अपराधी) लोगों में शामिल रहेगी.

61 फिर जब (ख़ुदा के द्वारा) भेजे हुए यह फ़रिश्ते लूत के परिवार वालों के पास पहुँचे. 62 तो लूत ने कहा, तुम लोग (यहाँ) अजनबी मालूम होते हो. 63 फ़रिश्तों ने

कहा, नहीं, बल्कि हम वही चीज़ लेकर आए हैं जिसके बारे में यह लोग संदेह किया करते थे. 64 हम तुम्हारे पास सत्य के साथ आए हैं (अर्थात सच्चे ख़ुदा का फ़ैसला कार्यान्वित करने के लिए आए हैं). हम सच्चे हैं इसमें कोई संदेह नहीं. 65 तो (ऐ लूत!) तुम रात रहे अपने घर वालों को लेकर (यहाँ से) निकल जाओ और तुम स्वयं उनके पीछे-पीछे चलो. तुममें से कोई पीछे मुड़कर न देखे और वहाँ चले जाओ जहाँ जाने का तुम्हें आदेश दिया जाता है. 66 और हमने लूत के पास अपना यह निर्णय पहुँचा दिया कि सुबह होते ही इन लोगों की जड़ काट दी जाएगी.

67 इतने में नगर के लोग ख़ुशी के मारे लूत के घर आए. 68 लूत ने उनसे (अर्थात अपने बस्ती के लोगों से) कहा, ये लोग (अर्थात फ़रिश्ते) मेरे अतिथि हैं. (तुम लोग) मेरी फ़ज़ीहत न करो. 69 (सुनो!) तुम लोग अल्लाह से डरो और मुझे (इन मेहमानों के सामने) लज्जित होना पड़े ऐसा कुछ न करो. 70 (इस पर) वे बोले, क्या हम तुम्हें बार-बार मना नहीं कर चुके कि दुनिया भर के ठेकेदार न बनो. 71 (इस पर) लूत ने कहा, यदि तुम्हें कुछ करना ही है तो ये मेरी बेटियाँ मौजूद हैं (उनके साथ विधिवत विवाह-संबंध स्थापित करो).

72 (ऐ मुहम्मद!) तुम्हारे जान की क़सम! वे अपनी मस्ती में खोए हुए थे. 73 तो सूर्योदय होते ही एक जबरदस्त धमाके ने उन्हें आ लिया. 74 फिर हमने उस बस्ती को तल-पट कर दिया और उन पर कंकरीले पत्थर बरसाए. 75 निस्संदेह! इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बोध ग्रहण करने वाले हैं. 76 और वह श्रेत्र (जहाँ यह घटना घटी थी) सार्वजनिक मार्ग पर स्थित है. 77 उसमें शिक्षा-योग्य सामग्री है उन लोगों के लिए जो ईमान वाले हैं.

78 (क़ौमे-लूत की तरह) ऐका वाले भी निश्चित रूप से अत्याचारी थे. 79 तो हमने उनसे बदला लिया और इन दोनों (क़ौमों के) श्रेत्र खुले मार्ग पर स्थित हैं. 80 हिज्र

के लोग भी पैग़ंबरों को झुठला चुके हैं. 81 हमने उन्हें अपनी (संदेशयुक्त) निशानियों के दर्शन कराए, मगर वे सबको नज़रंदाज़ ही करते रहे. 82 वे पहाड़ों को काट-काट कर घर बनाते थे कि उनमें वह शांतिपूर्वक रहें.

83 तो सुबह होते ही एक भयानक धमाके ने उन्हें आ लिया. 84 तो उनकी कमाई उनके कुछ काम न आयी.

85 हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है निरुद्देश्य नहीं बनाया. निस्संदेह क़यामत आने वाली है तो (पैग़ंबर!) तुम क्षमा और भले व्यवहार से काम लो. 86 निस्संदेह, तुम्हारा रब सबका सृजनकर्ता है, सब कुछ जानने वाला है.

87 (पैग़ंबर!) हमने तुम्हें ऐसे सात संदेश-वचन प्रदान किए हैं जो बार-बार पढ़े जाते हैं और महान क़ुरआन प्रदान किया है. 88 (पैग़ंबर!) जो कुछ सुख-सामग्री के साधन हमने इनमें से विभिन्न प्रकार के लोगों को दे रखे हैं, तुम उसकी ओर आँख उठाकर भी न देखो. और उनके संबंध से दुःखी न हो. (पैग़ंबर!) तुम ईमान लाने वालों पर अपने स्नेह की बाँहें झुका दो.

89 और कह दो कि मैं तो साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूँ. 90 (हमने उसी तरह यह किताब तुम पर उतारी है) जिस तरह हमने उन विभाजन करने वालों पर भी उतारी थी. 91 जिन्होंने अपने क़ुरआन को खंड-खंड कर दिया. 92 तो क़सम है तुम्हारे रब की हम उन सबसे अवश्य पूछेंगे, 93 जो कुछ वे करते थे.

94 (पैग़ंबर!) जिस चीज़ का तुम्हें आदेश दिया जाता है उसे स्पष्ट रूप में सुना दो और उन लोगों की ओर ध्यान न दो जो अल्लाह के साझीदार ठहराते हैं. 95 हम तुम्हारी ओर से उन उपहास करने वालों के लिए पर्याप्त हैं. 96 जो अल्लाह के साथ किसी और को भी ख़ुदा क़रार देते हैं. तो शीघ्र ही वे (सत्य) जान लेंगे. 97 और हम जानते हैं कि जो कुछ ये लोग कहते हैं उससे तुम्हारे दिल को कुढ़न होती है. 98 तो तुम अपने रब की

प्रशंसा के साथ उसका गुणगान करो और सजदा करने वालों में से बनो. ९९ और अपने रब की इबादत में लगे रहो, यहाँ तक कि यक़ीनी चीज़ तुम्हारे पास आ जाए.

सूरह–16. अन-नहल

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अल्लाह का फ़ैसला बस आने को है तो तुम उसके लिए जल्दी न मचाओ. पाक
है वह और उच्च है वह उस साझी ठहराने के कृत्य से जो ये लोग कर रहे हैं. 2 वह
फ़रिश्तों को अपने हुक्म से अपने संदेश के साथ उतारता है, अपने बंदों में से जिस पर
चाहता है, कि लोगों को ख़बरदार कर दो कि मेरे सिवा दूसरा कोई उपासना के योग्य नहीं.
इसलिए तुम मेरे प्रति ही सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो. 3 उसने आसमानों तथा धरती
का उद्देश्यपूर्वक सृजन किया है. वह उच्चतर है उस साझी ठहराने के कृत्य से जो ये लोग
कर रहे हैं.

4 उसने मनुष्य को (वीर्य के) एक बूँद से बनाया. फिर (जैसे ही वह बड़ा होता है)
वह यकायक झगड़ालू बन जाता है. 5 (जिसने मनुष्य को बनाया) उसी ने पशुओं को
बनाया जिन (की खाल तथा ऊन) में तुम्हारे लिए गर्मी प्राप्त करने का सामान है और उनमें
दूसरे फ़ायदे भी हैं और उनमें से कुछ को तुम खाते भी हो. 6 उसमें तुम्हारे लिए शोभा भी
है, जबकि सायं के समय तुम उन्हें घर लाते हो और सुबह (के समय) उन्हें चराने के लिए
बाहर ले जाते हो. 7 और वे तुम्हारे बोझ ढोकर ऐसी-ऐसी जगहों पर ले जाते हैं जहाँ तुम
कड़ी मेहनत के बिना नहीं पहुँच सकते. निस्संदेह तुम्हारा रब अत्यंत करुणामय और
दयावान है. 8 उसने घोड़े और खच्चर और गधे बनाए, ताकि तुम उन पर सवार हो और
वे तुम्हारी (ज़िंदगी की) शोभा बनें. वह ऐसी चीज़ों का भी सृजन करता है जिन्हें तुम नहीं
जानते.

9 और अल्लाह तक पहुँचता है सीधा मार्ग. कुछ मार्ग टेढ़े भी हैं, यदि अल्लाह
चाहता तो तुम सबको सन्मार्ग पर लगा देता.

10 वह अल्लाह ही है जिसने आसमान से पानी बरसाया, जिसमें से तुम पीते हो और उसी से पेड़-पौधे उगते हैं, जिनमें तुम जानवरों को चराते हो. 11 उसी से वह तुम्हारे लिए (अनाज की) खेतियाँ उगाता है और ज़ैतून, खजूर अंगूर और हर प्रकार के फल पैदा करता है. निस्संदेह! इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो चिंतन करते हैं.

12 उसने तुम्हारे लिए रात व दिन को सूरज व चाँद को काम में लगा रखा है और तारे भी उसके आदेश से कार्यरत हैं. निश्चय ही इनमें (संदेशयुक्त) निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं. 13 और उसने धरती में तुम्हारे लिए तरह-तरह की रंग-बिरंगी चीज़ें बिखेर रखी हैं. उसमें भी उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो शिक्षा ग्रहण करने वाले हैं.

14 वह अल्लाह ही है जिसने समुद्र को तुम्हारे अधीन कर दिया, ताकि तुम उसमें से ताज़ा माँस खाओ और उससे आभूषण निकालो जिन्हें तुम पहना करते हो. और तुम देखते हो कि नौकाएँ समुद्र का सीना चीरते हुए चलती हैं. (यह सब तुम्हारे अधीन है,) ताकि तुम अपने रब का अनुग्रह तलाश कर सको, ताकि तुम कृतज्ञ बनो.

15 उसने धरती पर पहाड़ रख दिए, ताकि वे तुम्हें लेकर डगमगाने न लगे और उसने नदियाँ और रास्ते बनाए, ताकि तुम मार्ग पा सको. 16 और उसने (मार्ग बताने वाले) चिन्ह भी बनाए और लोग तारों से भी मार्ग पाते हैं.

17 फिर जो (हर चीज़ को) सृजित करता है क्या वह उसके समान हो सकता है जो कुछ भी सृजित नहीं कर सकता. क्या तुम सोचते नहीं? 18 यदि तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो नहीं गिन सकते. निस्संदेह अल्लाह अत्यंत क्षमाशील एवं दयावान है. 19 अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम प्रकट करते हो.

20 जिन्हें लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज़ का सृजन नहीं कर सकते, बल्कि वे स्वयं सृजित किए गए हैं. 21 वे मुर्दा हैं, न कि ज़िंदा. वे नहीं जानते कि

वे कब उठाए जाएंगे. 22 (लोगों!) तुम्हारा ख़ुदा बस एक ही ख़ुदा है. लेकिन जो लोग मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन को नहीं मानते. उनके दिलों में सत्य के प्रति इन्कार रच-बस गया है और वे घमंड में पड़ गए हैं. 23 अल्लाह निश्चित रूप से जानता है जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ वे प्रकट करते हैं. निस्संदेह वह घमंड करने वालों को पसंद नहीं करता.

24 जब उनसे पूछा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ उतारी है तो वे कहते हैं, ये तो पहले के लोगों की कहानियाँ हैं. 25 इनके इस (अहंकार) का परिणाम यह होगा कि वे क़यामत के दिन अपने बोझ भी पूरे उठाएंगे और उन लोगों के बोझ में से भी उठाएंगे जिन्हें वे बिना किसी ज्ञान के पथभ्रष्ट कर रहे हैं. सुन लो, बहुत ही बुरा है वह बोझ जो वे अपने सर ले रहे हैं.

26 (पैग़ंबर!) उनसे पहले भी बहुत से लोग (सत्य को नीचा दिखाने के लिए ऐसी ही) मक्कारियाँ कर चुकें हैं. फिर अल्लाह उनकी इमारत पर उसकी बुनियादों से आ गया तो ऊपर से छत उनके ऊपर गिर पड़ी. यातना उन पर वहाँ से आ गयी जहाँ से आने की उन्हें कल्पना भी न थी. 27 फिर क़यामत के दिन अल्लाह उन्हें अपमानित करेगा और पूछेगा, मेरे वे साझीदार कहाँ हैं जिनके लिए तुम (सत्यवादियों से) झगड़ा किया करते थे. जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया था वे कहेंगे, आज अपमान और ख़राबी है उन पर जिन्होंने सत्य का इन्कार किया था.

28 जिन लोगों के प्राण फ़रिश्ते इस दशा में निकालते हैं कि वे अपने आप पर अत्याचार कर रहे होते हैं, तो उस समय वे अत्याचारी (उद्दंडता त्याग कर) पूरी तरह आत्मसमर्पण करते हैं और कहते हैं कि हम तो कोई बुरा काम न करते थे, (फ़रिश्ते उत्तर देते हैं,) कर कैसे नहीं रहे थे! अल्लाह तुम्हारी करतूतों को भली-भाँति जानता है. 29

अब जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, वहीं तुम्हें सदा रहना है. तो कैसा बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का!

30 दूसरी ओर जब अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहने वालों से पूछा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ उतारी है? तो वे उत्तर देते हैं, उत्तम चीज़! तो (इस प्रकार के) सत्कर्मियों के लिए इस दुनिया में भी भलाई है और मृत्यु-पश्चात दुनिया का घर (तो इन्हीं के लिए) बेहतर है. तो क्या ही अच्छा घर है अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों का!
31 हमेशा रहने के बाग़ — जिनमें वे प्रवेश करेंगे, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी. उनके लिए वहाँ सब कुछ होगा जो वे चाहेंगे. अल्लाह ऐसा ही बदला देता है उन लोगों को जो उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहते हैं.

32 जिनके प्राणों को फ़रिश्ते इस दशा में निकालते हैं कि वे पाक होते हैं, तो फ़रिश्ते उनसे कहते हैं, तुम पर सलाम हो, जन्नत में दाख़िल हो जाओ अपने कर्मों के बदले में.

33 (अपनी उद्दंडता के साथ सत्य का इन्कार करने वाले) यह लोग क्या इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आ जाएँ या तुम्हारे रब का आदेश (अर्थात यातना) आ जाए? इसी तरह इनसे पहले वालों ने भी किया था. (फिर उनके साथ जो कुछ किया गया वे उसके पात्र थे,) अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया, बल्कि वे स्वयं ही अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे.
34 तो उन्हें उनके बुरे कर्मों के दंड मिले. और जिस चीज़ का वे उपहास करते थे उसी ने उन्हें घेर लिया.

35 जिन लोगों ने अल्लाह के साझीदार ठहराए, वे कहते हैं, यदि अल्लाह चाहता तो न हम और न हमारे बाप-दादा उसके सिवा किसी और की उपासना करते और न हम उसके (आदेश के) बिना किसी चीज़ को हराम ठहराते. ऐसी ही हरकत वे भी किया करते थे जो इनसे पहले थे. तो पैग़ंबरों का दायित्व इसके सिवा और कुछ नहीं कि वे स्पष्ट रूप से संदेश पहुँचा दें.

36 और हमने हर समुदाय में एक पैग़ंबर भेजा (इस संदेश के साथ) कि अल्लाह की उपासना करो और ताग़ूत से बचो (ताग़ूत से बचो अर्थात सबसे बड़े अवज्ञाकारी शैतान से बचो). तो उनमें से कुछ को अल्लाह ने सन्मार्ग प्रदान किया और कुछ पर पथभ्रष्टता सिद्ध होकर रही तो धरती पर चल फिर कर ज़रा देखो कि जिन्होंने सत्य को झूठ बताया था उनका अंजाम कैसा हुआ. 37 (पैग़ंबर!) तुम इन्हें सन्मार्ग दिखाने के लिए चाहे कितने ही लालायित हों, लेकिन अल्लाह जिसे भटकते रहने के लिए छोड़ देता है फिर उसे वह सन्मार्ग नहीं दिखाया करता. फिर ऐसे लोगों की कोई भी सहायता नहीं कर सकता.

38 (सत्य का इन्कार करने वाले) यह लोग अल्लाह के नाम से कड़ी-कड़ी क़समें खाकर कहते हैं कि जो व्यक्ति मर जाएगा अल्लाह उसको (दोबारा जीवित करके) नहीं उठाएगा. क्यों नहीं उठाएगा? यह तो वादा है जिसे पूरा करना उसने अपने लिए अनिवार्य कर लिया है. लेकिन अधिकतर लोग नहीं जानते. 39 ऐसा होना इसलिए आवश्यक है कि अल्लाह लोगों के सामने उस चीज़ को स्पष्ट कर दे जिसमें वे मतभेद कर रहे हैं. और सत्य का इन्कार करने वालों को मालूम हो जाए कि वे झूठे थे. 40 जब हम किसी चीज़ को अस्तित्व में लाने का इरादा करते हैं तो हम इतना ही कह देते हैं कि हो जा तो बस वह हो जाती है.

41 जिन लोगों ने अल्लाह के लिए अपना घर-बार छोड़ा, इसके बाद की उन पर अत्याचार किया गया. उन्हें हम इस दुनिया में भी अच्छा ठिकाना देंगे और मृत्यु-पश्चात दुनिया का प्रतिफल तो बहुत बड़ा है. काश, (सत्य का इन्कार करने वाले भी) इसे जान लेते! 42 वे (अल्लाह के लिए घर-बार त्यागने वाले) धैर्य से काम लेने वाले हैं और वे अपने रब पर भरोसा रखने वाले हैं.

43 (ऐ मुहम्मद!) हमने तुमसे पहले जब भी पैग़ंबर भेजे वे आदमी ही थे, जिनकी ओर हम अपना संदेश भेजते थे. तो ज्ञान वालों से पूछ लो, यदि तुम लोग नहीं जानते.

44 हमने उन पैग़ंबरों को स्पष्ट प्रमाणों तथा किताबों के साथ भेजा था. हमने तुम पर भी यह स्मरण-ग्रंथ उतारा है, ताकि तुम लोगों पर उस चीज़ को स्पष्ट कर दो जो उनके लिए उतारी गयी है. ताकि लोग उस पर चिंतन करें.

45 वे लोग जो (सत्य के विरोध में) बुरी चालें चल रहे हैं, क्या वे इस बात से स्वयं को सुरक्षित समझ बैठे हैं कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में धंसा नहीं सकता या फिर क्या उन पर ऐसी कोई यातना वहाँ से नहीं आ सकती जिसकी उन्होंने कभी कल्पना न की हो?
46 या वह उन्हें चलते-फिरते पकड़ नहीं सकता? (लेकिन जब वह उन्हें पकड़ेगा तो) वे अल्लाह को विवश नहीं कर सकते. 47 या (ऐसा भी हो सकता है कि) वह उन्हें ऐसी हालत में पकड़े जबकि उन्हें (आने वाले संकट का) खटका लगा हुआ हो. निस्संदेह तुम्हारा रब बड़ा ही करुणामय और दयावान है.

48 क्या (सत्य का इन्कार करने वाले) नहीं देखते कि अल्लाह ने जो चीज़ भी बनायी है उसकी परछाइयाँ दायीं तरफ़ और बायीं तरफ़ झुक जाती हैं अल्लाह को सजदा करते हुए, वे सब के सब नम्रता का परिचय देने वाले हैं. 49 ज़मीन व आसमानों में जितने जीवधारी हैं और जितने फ़रिश्ते हैं सब के सब अल्लाह को सजदा करते हैं और वे अपने को बड़ा नहीं समझते. 50 वे अपने रब से जो उनके ऊपर है डरते रहते हैं और वे वही करते हैं जिसका उन्हें आदेश मिलता है.

51 (लोगो!) अल्लाह फ़रमाता है, दो ख़ुदा मत बनाओ. ख़ुदा तो बस वही एक है. तो बस मुझ ही से डरो. 52 उसी का है वह सब कुछ जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है. आज्ञापालन सदैव उसी का हक़ है. तो फिर क्या तुम अल्लाह को छोड़कर किसी और से डरोगे?

53 तुम्हें जो नेमत भी प्राप्त है वह अल्लाह ही की ओर से है. फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो तुम उसी से फ़रियाद करने लगते हो (अर्थात उसी से सहायता के लिए गुहार लगाते हो).

54 फिर जब वह तुमसे कष्ट दूर कर देता है तो तुममें से एक समूह अपने रब का साझी ठहराने लगता है. 55 ताकि जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसके प्रति कृतघ्नता दिखलाएँ. तो अच्छा कुछ दिन मज़े कर लो, बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा.

56 यह (बहुदेववादी) लोग हमारी दी हुई चीज़ों में से उनके हिस्से निश्चित करते हैं जिनके संबंध से उन्हें ज्ञान नहीं. अल्लाह की क़सम! जो झूठ तुम गढ़ते हो उसके बारे में तुमसे अवश्य पूछा जाएगा.

57 ये (बहुदेववादी लोग) अल्लाह के लिए बेटियाँ ठहराते हैं. अल्लाह इससे पाक है. और स्वयं अपने लिए (वह पसंद करते हैं) जो (उनका) दिल चाहता है (अर्थात बेटे). 58 जब इनमें से किसी को बेटी पैदा होने की शुभ-सूचना दी जाती है तो उसका चेहरा काला पड़ जाता है. और वह अपने आप में घुटता रहता है. 59 जो शुभ-सूचना उसे दी गयी वह (उसकी नज़र में) ऐसी बुराई की बात हुई कि उसके कारण वह लोगों से छिपता फिरता है. सोचता है कि अपमान सहन करके उसे जीवित रहने दें या उसे मिट्टी में दबा दें. क्या ही बुरा निर्णय है जो वह करते हैं. 60 जो लोग मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन को नहीं मानते, उनकी मिसाल बुरी है. (लेकिन जहाँ तक) अल्लाह का संबंध है, उसकी मिसाल सर्वश्रेष्ठ है. वह प्रभुत्वशाली तथा बुद्धिमान है.

61 यदि अल्लाह लोगों को उनके अत्याचारी कृत्य पर तुरंत पकड़ लिया करता तो धरती पर किसी जीवधारी को न छोड़ता. लेकिन वह एक निर्धारित समय तक लोगों को मोहलत देता है. फिर जब उनका नियत समय आ जाएगा तो वह न एक घड़ी पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे.

62 वे अल्लाह के लिए वह चीज़ ठहराते हैं जिसे (स्वयं) अपने लिए पसंद नहीं करते. और उनकी ज़बानें झूठ बोलती हैं कि उनके लिए भलाई है. जबकि उनके लिए निश्चित रूप से जहन्नम की आग है, जिसमें वे पहुँचा दिए जाएंगे.

63 अल्लाह की क़सम! (अर्थात स्वयं अल्लाह गवाह है) (पैग़ंबर!) हम तुमसे पहले भी कितने ही समुदायों की ओर पैग़ंबर भेज चुके हैं. फिर शैतान ने उन लोगों को उनके बुरे कर्म अच्छे कर्मों के रूप में दिखाए. आज भी वह (सत्य का इन्कार करने वाले) लोगों का मित्र है. उनके लिए एक दर्दनाक यातना है. 64 (पैग़ंबर!) हमने तुम पर किताब मात्र इसलिए अवतरित की है कि तुम उन्हें वह चीज़ स्पष्ट रूप से सुना दो जिसमें वे मतभेद कर रहे हैं. यह किताब मार्गदर्शन एवं दयालुता है उन लोगों के लिए जो इसे मान लें.

65 अल्लाह आसमान से पानी बरसाता है. फिर उससे मुरदा पड़ी हुई भूमि को जीवित कर देता है. इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो (संदेश को चिंतनपूर्वक) सुनते है.

66 और तुम्हारे लिए मवेशियों में भी शिक्षा-सामग्री है. हम उनके पेटों के अंदर के गोबर और ख़ून के बीच में से (निकाल कर) तुम्हें शुद्ध दूध पिलाते हैं. जो पीने वालों के लिए अत्यंत स्वादिष्ठ है. 67 (इसी तरह हम तुम्हें पौष्टिक आहार प्रदान कर रहे हैं) खजूर और अंगूर इन फलों के द्वारा. तुम उनसे नशे की वस्तुएँ भी बनाते हो और वे फल अच्छी जीविका (के भी साधन) हैं. निस्संदेह इसमें निशानी है बुद्धि से काम लेने वालों के लिए.

68 और देखो! किस प्रकार तुम्हारे रब ने मधुमक्खी को अंतःप्रेरणा दी कि पहाड़ों में और पेड़ों (की डालियों) पर और लोगों की बनायी हुयी टट्टियों में तू अपने छत्ते बना. 69 फिर हर प्रकार के फलों (तथा फूलों) का रस चूस और अपने रब के निर्धारित किए हुए रास्तों पर चलती रह. उसके पेट से विभिन्न रंग का एक पेय निकलता है, जिसमें लोगों

के लिए स्वास्थ्य-लाभ है. निस्संदेह इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो चिंतन करते हैं.

70 (लोगो!) अल्लाह ने ही तुम्हारा सृजन किया फिर वही तुम्हें मौत देता है. और तुममें किसी को बुढ़ापे की निकृष्टतम आयु को पहुँचा दिया जाता है, (उसका यह हाल हो जाता है कि) जो पहले (बहुत कुछ) जाना करता था, लेकिन अब कुछ नहीं जानता. निस्संदेह! अल्लाह सब कुछ जानने वाला तथा सदैव-सामर्थ्यवान है.

71 अल्लाह ने तुममें से कुछ को कुछ पर रोज़ी में श्रेष्ठता प्रदान की है. फिर जिन लोगों को यह श्रेष्ठता प्रदान की गयी है वे ऐसा नहीं करते कि अपनी जीविका अपने दासों को दे दें, ताकि वे और उनके दास जीविका में समान हो जाएँ. तो क्या यह लोग अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं?

72 वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए तुममें से जोड़े बनाए (अर्थात मर्द और औरत को सहजातीय जोड़े के रूप में बनाए). और तुम्हारी पत्नियों से तुम्हारे लिए बेटे और पोते पैदा किए. और तुम्हें अच्छी चीज़ें खाने के लिए दीं. (यह सब करने वाला वास्तव में अल्लाह है, लेकिन) ये लोग असत्य को मानते हैं और (वास्तविक मालिक) अल्लाह की नेमतों का इन्कार करते हैं. 73 वे अल्लाह को छोड़कर उन्हें पूजते हैं, जिन्हें आसमानों और धरती से जीविका प्रदान करने का कुछ भी अधिकार प्राप्त नहीं है. और न उन्हें कोई सामर्थ्य ही प्राप्त है. 74 तो अल्लाह के लिए मिसालें न गढ़ो. निस्संदेह! अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते.

75 अल्लाह एक मिसाल बयान करता है, एक दास है जो दूसरे का अधीन है. जो किसी चीज़ पर अधिकार नहीं रखता और एक आदमी वह है जिसे हमने अपनी ओर से अच्छी रोज़ी दी है. वह उस रोज़ी में से छिपे और खुले ख़ूब खर्च करता है. (सोचो!)

क्या यह दोनों समान हैं? सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, लेकिन अधिकतर लोग नहीं जानते.

76 अल्लाह एक और मिसाल बयान करता है, दो आदमी हैं, उनमें एक गूँगा है जो कोई काम नहीं कर सकता. वह अपने स्वामी पर बोझ बना हुआ है. उसका स्वामी उसे जहाँ भेजता है, वह कोई काम उचित ढंग से करके नहीं आता. क्या वह उस व्यक्ति के समान हो सकता है जो न्याय का आदेश देता हो और स्वयं भी सीधे मार्ग पर हो?

77 आसमान तथा ज़मीन के छिपे तथ्यों का ज्ञान सिर्फ़ अल्लाह को है. क़यामत का घटित होना ऐसा होगा जैसे आँख का झपकना, बल्कि उससे भी जल्द. निस्संदेह! अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है.

78 और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माँओ के पेटों से निकाला (इस हालत में) कि तुम कुछ न जानते थे. उसने तुम्हें कान, आँख तथा दिमाग़ प्रदान किये, इसलिए कि तुम कृतज्ञ बनो.

79 क्या लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा कि जिन्हें आसमान की फ़िज़ा में उड़ने की सामर्थ्य प्रदान की गयी है. उन्हें तो बस अल्लाह ही थामे हुए है. निस्संदेह! इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाए हैं. 80 अल्लाह ने ही तुम्हारे घरों को शांति प्राप्त करने का स्थान बनाया और उसी ने तुम्हें जानवरों की खालों से (टेंट-रूपी) मकान बनाने का कौशल्य प्रदान किया, जिन्हें तुम यात्रा तथा ठहरने, दोनों हालतों में हलका पाते हो. वही तुम्हें उपलब्ध कराता है उनकी ऊन और उनके लोम-चर्म और उनके बाल — जिनसे (तरह-तरह की) लाभकारी चीज़ें और सामान बनाए जाते हैं, जो एक अवधी तक काम आते हैं

81 अल्लाह ने अपनी सृजित की हुई चीज़ों से तुम्हारे लिए साए का प्रबंध किया; और पहाड़ों को तुम्हारे लिए आश्रयस्थान बनाया. और तुम्हें ऐसे वस्त्र प्रदान किए जो

तुम्हें गर्मी (तथा सर्दी) से बचाते हैं. और कुछ ऐसे वस्त्र भी प्रदान किए जो युद्ध में तुम्हारी रक्षा करते हैं. इस तरह अल्लाह तुम पर अपनी नेमतें पूरी करता है, ताकि तुम आज्ञाकारी बनो. 82 (पैग़ंबर!) यदि ये लोग मुँह मोड़ें तो तुम्हारे ऊपर मात्र स्पष्ट रूप से सत्य का संदेश पहुँचाने का दायित्व है.

83 ये अल्लाह की नेमत को पहचानते हैं, फिर उसका इन्कार करते हैं, क्योंकि उनमें अधिकतर लोग ऐसे हैं जो सत्य के इन्कार पर अड़े हुए हैं.

84 लेकिन जिस दिन हम हर समुदाय में से एक गवाह खड़ा करेंगे, फिर जो लोग सत्य के इन्कार पर जमे रहे थे उन्हें न (कोई सबब) प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाएगा और न उनसे (किसी प्रकार की) क्षमा याचना स्वीकार की जाएगी. 85 अत्याचारी लोग जब एक बार यातना को देख लेंगे तो न उनकी यातना में कोई कमी की जाएगी और न उन्हें मुहलत दी जाएगी.

86 और वे लोग जिन्होंने अल्लाह के साझीदार ठहराए थे, अपने उन साझीदारों को देखेंगे तो कहेंगे, ऐ हमारे रब! यही हैं हमारे (ठहराए हुए) साझीदार जिन्हें हम तुझे छोड़कर पुकारा करते थे. लेकिन वे (साझीदार यह कहते हुए) उनकी बात को उन्हीं पर डाल देंगे कि तुम झूठे हो. 87 उस दिन वह सब अल्लाह के आगे झुक जाएंगे और जो झूठ वे गढ़ा करते थे सब उनसे गुम होकर रह जाएगा. 88 जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया और लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोका. हम उनके लिए यातना पर यातना बढ़ाएंगे, यह उस बिगाड़ के कारण जो वे (दुनिया में) पैदा करते थे.

89 और जिस दिन हम हर जनसमुदाय में एक गवाह उन्हीं में से उठाएंगे और तुम्हें उन लोगों पर गवाह बनाकर लाएंगे. (पैग़ंबर!) हमने तुम पर यह किताब उतारी है, हर चीज़ को स्पष्ट कर देने के लिए. यह किताब मार्गदर्शन, दयालुता और शुभ-सूचना है उन लोगों के लिए जो समर्पित आज्ञाकारी हो गए हैं.

90 निस्संदेह! अल्लाह न्याय तथा भलाई करने और नातेदारों को (उनका हक़) देने का (तुम्हें) आदेश देता है. और वह रोकता है (तुम्हें) अश्लीलता से, बुरे कृत्य से तथा निरंकुशतापूर्वक व्यवहार से. वह तुम्हें उपदेश देता है, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो.

91 तुम अल्लाह से की हुयी प्रतिज्ञा को पूरा करो, जबकि तुम कोई प्रतिज्ञा कर लो. और अपनी क़समें पक्की करने बाद उन्हें न तोड़ो. और तुम अल्लाह को अपने ऊपर गवाह बना चुके हो. निस्संदेह!अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो.

92 और तुम्हारी अवस्था उस औरत की सी न हो जाए जिसने अपना सूत मेहनत से कातने के पश्चात टुकड़े-टुकड़े कर डाला. तुम अपनी क़समों को आपस में बिगाड़ पैदा करने का माध्यम बनाते हो, केवल इसलिए कि एक समूह दूसरे से आगे बढ़ जाए, हालाँकि अल्लाह इसके माध्यम से तुम्हारी परीक्षा लेता है और जिस बात में तुम मतभेद करते हो क़यामत के दिन उसकी वास्तविकता वह तुम पर अवश्य खोल देगा.

93 और यदि अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही समुदाय बना देता. लेकिन वह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट कर देता है और जिसे चाहता है सीधा राता दिखा देता है. और अवश्य ही तुमसे तुम्हारे कर्मों की पूछ होगी.

94 और (ऐ ईमान वालो!) तुम अपनी क़समों को आपस में एक-दूसरे को धोका देने का साधन न बना लेना. कहीं ऐसा न हो कि कोई क़दम जमने के पश्चात उखड़ जाए. फिर तुम्हें अल्लाह के मार्ग से रोकने के बदले में तुम्हें यातना का स्वाद चखना पड़े. फिर (मृत्यु-पश्चात दुनिया में) तुम बड़ी यातना के भागी बनोगे. 95 और अल्लाह से की हुयी प्रतिज्ञा को तुच्छ लाभ प्राप्ति के लिए न बेच डालो. जो कुछ अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए अधिक उत्तम है, यदि तुम जानो.

96 जो कुछ तुम्हारे पास है वह समाप्त हो जाएगा और जो कुछ अल्लाह के पास है वह हमेशा बाक़ी रहने वाला है. जो लोग धैर्य से काम लेंगे, हम उनके अच्छे कर्मों का

बदला उन्हें अवश्य देंगे. 97 जो व्यक्ति भी अच्छा कार्य करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो, तो हम उसे (दुनिया में) पाक-साफ़ जीवन-यापन कराएंगे. और (मृत्यु-पश्चात) जीवन में तो ऐसे लोगों को हम उनके अच्छे कर्मों के बदले अवश्य ही अच्छा प्रतिफल प्रदान करेंगे.

98 तो जब भी तुम क़ुरआन को पढ़ो, तो फिटकारे हुए शैतान से बचने के लिए अल्लाह की शरण माँग लिया करो. 99 उसका वश उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं. 100 उसका वश मात्र उन लोगों पर चलता है जो उसे अपना मित्र बनाते हैं और जो अल्लाह के साझीदार ठहराते हैं.

101 और जब हम एक संदेश-वचन की जगह दूसरा संदेश-वचन बदल कर लाते हैं —और अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ वह अवतरित करता है — तो वे कहते हैं (अर्थात सत्य का इन्कार करने वाले कहते हैं) कि यह तुम स्वयं गढ़ लाते हो. बल्कि (वास्तविकता यह है कि) उनमें अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते. 102 (पैग़ंबर!) उनसे कह दो (कि सत्य यह है कि) इस (क़ुरआन) को तो पवित्र आत्मा (अर्थात 'जिब्रील' फ़रिश्ते) ने तुम्हारे रब की ओर से सत्य के साथ उतारा है, ताकि ईमान लाने वालों को ईमान की दृढ़ता प्रदान करे और यह आज्ञाकारियों के लिए मार्गदर्शन और शुभ-सूचना हो.

103 (पैग़ंबर!) हम जानते हैं कि वे (तुम्हारे बारे में) कहते हैं, इसको तो बस एक आदमी सिखाता है. हालाँकि जिस व्यक्ति की ओर वे संकेत करते हैं उसकी भाषा तो ग़ैर-अरबी (अर्थात अजमी) है. और यह क़ुरआन स्पष्ट अरबी भाषा में है. 104 सत्य यह है कि जो लोग अल्लाह के संदेशों को नहीं मानते अल्लाह उन्हें सन्मार्ग नहीं दिखाता. उनके लिए तो एक दुखदायी यातना है.

105 (ख़ुदा का पैग़ंबर झूठ नहीं गढ़ता, बल्कि) झूठ गढ़ने वाले तो वे लोग हैं जो अल्लाह के संदेशों को नहीं मानते. यही लोग (वास्तव में) झूठे हैं.

106 जो कोई ईमान लाने के पश्चात अल्लाह का इन्कार करे, लेकिन (यदि कोई इन्कार के लिए) मजबूर किया गया हो (तो उस पर आक्षेप नहीं), शर्त यह है कि उसका दिल ईमान पर जमा हुआ हो. मगर जो व्यक्ति दिल की रज़ामंदी से असत्य को अपना ले, तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का प्रकोप है और उनके लिए बड़ी यातना है. 107 (असत्यवादियों पर प्रकोप एवं उनके लिए कड़ी सज़ा) इस कारण से कि उन्होंने मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन के मुक़ाबले में इसी दुनिया के जीवन को पसंद किया. और यह कि अल्लाह सत्य का इन्कार करने वालों को सन्मार्ग नहीं दिखाता. 108 यह वह लोग हैं कि अल्लाह ने उनके दिलों को सील कर दिया है (अर्थात उनके सोचने समझने की योग्यता सत्य प्राप्ति के लिए लाभप्रद नहीं हो सकती) और उसने उनके सुनने तथा देखने की योग्यता को भी सील कर दिया है (अर्थात उनके दिलों में अब सत्य का प्रवेश नहीं हो सकता. वे सत्य का संदेश सुनने तथा सत्य की निशानियाँ देखने के बावजूद भी सत्य से वंचित रहेंगे.) अब ये ग़फ़लत में डूब चुके हैं.109 अवश्य ही मृत्यु-पश्चात जीवन में यही लोग घाटे में रहेंगे.

110 फिर तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने परीक्षा में डाले जाने के बाद अपना घर-बार छोड़ा, फिर (अल्लाह के मार्ग में) अपने प्रयत्नों की पराकाष्ठा की (अर्थात जिहाद किया) और धैर्य से काम लिया. निश्चय ही तुम्हारा रब इन (हालात से गुज़रने) के बाद (उनके लिए) बड़ा क्षमाशील और दयावान है. 111 (तो उस दिन के बारे में सचेत रहो,) जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने ही बचाव में बोलता हुआ आएगा. प्रत्येक व्यक्ति को उसके किए का पूरा बदला मिलेगा और उन पर किसी प्रकार का अन्याय नहीं किया जाएगा.

112 अल्लाह एक बस्ती वालों की मिसाल बयान करता है. वह सुख-शांति में थे. उन्हें उनकी जीविका हर ओर से प्रचुरता के साथ पहुँच रही थी. फिर उन्होंने अल्लाह की नेमतों के प्रति कृतघ्नता दिखलायी, तो अल्लाह ने उन्हें उनकी करतूतों के कारण भूख और भय का स्वाद चखाया. 113 उनके पास एक पैग़ंबर उन्हीं में से आया तो उन्होंने उसे झूठा बताया. फिर उन्हें यातना ने पकड़ लिया और वे अत्याचारी थे.

114 तो (ऐ लोगो!) अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें वैध तथा पाक जीविका प्रदान की है उसे खाओ और अल्लाह की नेमतों के लिए (उसके प्रति) कृतज्ञता व्यक्त करो, यदि तुम उसी की उपासना करने वाले हो. 115 अल्लाह ने जो कुछ तुम पर निषिद्ध किया है, वह है मुर्दार, ख़ून, सुअर का माँस और वह जानवर जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो. लेकिन यदि कोई इस तरह विवश हो जाए कि, उस (विवश) व्यक्ति की न तो (अवैध चीज़ भक्षण करने की) इच्छा हो और न वह (आवश्यकता की) हद से आगे बड़े (तो उसकी पकड़ न होगी). अल्लाह क्षमाशील एवं दयावान है.

116 और अपनी ज़बानों के गढ़े हुए झूठ के आधार पर यह न कहो कि यह वैध है और यह अवैध है. (इस तरह के हुक्म लगाकर) अल्लाह पर झूठ न बाँधों. जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं वे कदापि सफल नहीं होते. 117 दुनिया का ऐश कुछ दिनों का है, अंततः उनके लिए दर्दनाक सज़ा है.

118 यहूदियों पर हमने वह चीज़ें अवैध कर दी जिनका उल्लेख इससे पहले हम तुमसे कर चुके हैं. हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे स्वयं अपने आप पर ज़ुल्म करते रहे.

119 अलबत्ता जिन लोगों ने अज्ञानता के कारण बुरा कर्म किया, लेकिन उसके बाद (पश्चाताप व क्षमायाचना करते हुए) पलट आए और अपना सुधार कर लिया तो

निस्संदेह तुम्हारा रब (ऐसे लोगों को माफ़ कर देगा). निस्संदेह तुम्हारा रब उसके बाद (अर्थात पलट आने एवं सुधार कर लेने के बाद) क्षमाशील और दयावान है.

120 निश्चय ही इब्राहीम (एक ऐसा इंसान था कि वह अपनी ज़ात में) एक उम्मत (अर्थात पूरा समुदाय) था. अल्लाह का आज्ञाकारी तथा सबसे कट कर वह सिर्फ़ एक अल्लाह का हो गया हुआ था. वह उनमें से नहीं था जो अल्लाह के साझी ठहराते हैं.

121 (इब्राहीम सदैव अल्लाह की) नेमतों के लिए उसका आभार व्यक्त करने वाला था. अल्लाह ने उसे चुन लिया था और उसे सीधा मार्ग दिखाया था. 122 हमने उसे इस दुनिया में भी भलाई दी थी और मृत्यु-पश्चात दुनिया में भी वह निश्चित रूप से नेक लोगों में से होगा. 123 फिर हमने (ऐ मुहम्मद!) तुम्हारी ओर यह संदेश भेजा कि तुम इब्राहीम के पंथ का अनुसरण करो जो सबसे कट कर एक अल्लाह का हो गया था और वह उन लोगों में से नहीं था जो अल्लाह के साझी ठहराते हैं.

124 (और जहाँ तक कि सबत के नियम की बात है) तो सबत का नियम (अर्थात शनिवार को पूर्ण रूप से उपासना दिन के रूप में पालन करने का नियम) उन्हीं लोगों पर लागू किया गया था जिन्होंने उसके बारे में मतभेद किया था (अर्थात ख़ुदा के आदेशों के बारे में मतभेद). निस्संदेह तुम्हारा रब क़यामत के दिन उनके बीच निर्णय कर देगा जिसमें वे मतभेद करते थे.

125 (पैग़ंबर!) अपने रब के मार्ग की ओर सूझबूझ तथा सदुपदेश के साथ बुलाओ और उनसे अच्छे ढंग से वार्तालाप करो. तुम्हारा रब उसे भली-भाँति जानता है कि कौन उसके मार्ग से भटक गया है. और वह उन्हें भी भली-भाँति जानता है जो सन्मार्ग पर हैं.

126 और यदि तुम लोग (किसी से) बदला लो तो बस उतना ही बदला लो जितना तुम्हें कष्ट पहुँचाया गया है. लेकिन यदि तुम सब्र करो तो निश्चय ही ऐसा करना

सब्र करने वालों के लिए ज़्यादा बेहतर है. 127 (पैग़ंबर!) सब्र से काम लो, तुम्हारा यह सब्र अल्लाह ही की प्रेरणा से है. तुम उन पर अफ़सोस न करो और न उनकी चालबाज़ियों पर दिल तंग हो. 128 निस्संदेह, अल्लाह उन लोगों के साथ है जो उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) हैं और भलाई करने वाले हैं.

पारा – 15

सूरह–17. बनी इसराईल

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 महिमावान है वह जो ले गया एक रात अपने बंदे (मुहम्मद) को (मक्कास्थित) मस्जिदे हराम से दूर के उस मस्जिद तक (अर्थात येरूशलेम स्थित मस्जिदे-अक़सा तक), जिसके माहौल को हमने बरकत वाला बनाया है. ताकि हम उसको अपनी कुछ निशानियाँ दिखाएँ. निस्संदेह वह सुनने वाला, देखने वाला है.

2 हमने (इससे पहले) मूसा को किताब दी थी और उसे इसराईल की संतान के लिए मार्गदर्शन बनाया था (और उसमें यह ताकीद की थी) कि मेरे सिवा किसी को कार्यसाधक न बनाओ. 3 तुम उन लोगों की संतान हो जिन्हें हमने नूह के साथ (नाव पर) सवार किया था. निस्संदेह वह एक कृतज्ञ बंदा था.

4 हमने इसराईल की संतान को (अपनी) किताब में यह बता दिया था कि तुम धरती में अवश्य दो बार उत्पात मचाओगे. और बड़े विद्रोह का प्रदर्शन करोगे. 5 (फिर जिन दो घटनाओं के बारे में सचेत किया गया था उनमें से) जब पहली घटना का समय आया तो हमने तुम्हारे मुक़ाबले में अपने ऐसे बंदे भेजे जो बड़े शक्तिशाली थे. तो वे बस्तियों में घुसकर हर ओर फैल गए. यह एक वादा था जिसे पूरा होकर ही रहना था.

6 फिर हमने तुम्हारी बारी उन पर लौटा दी (अर्थात एक कालावधी बीतने के बाद दोबारा तुम्हें वर्चस्व प्रदान किया). तुम्हें संपत्ति तथा संतति प्रदान करके तुम्हारी सहायता की और तुम्हारी संख्या पहले से बढ़ा दी.

7 (हमने उन्हें यह बता दिया था कि) यदि तुम भले कर्म करोगे तो तुम अपने ही लिए भले कर्म करोगे और यदि तुम बुरे कर्म करोगे तब भी अपने ही लिए बुरा करोगे. फिर जब दूसरे वादे का समय आया तो (हमने तुम्हारे मुक़ाबले में अपने दूसरे बंदे उठाए) ताकि वे तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें और मस्जिद में (अर्थात बैतुल-मक़्दिस में) उसी तरह घुस जाएँ जिस तरह पहली बार घुसे थे. और जिस चीज़ पर क़ाबू पाएँ उसको नष्ट कर दें.

8 हो सकता है कि तुम्हारा रब तुम पर दया करे, लेकिन यदि तुम फिर से अपनी उसी (विद्रोह की) नीति की ओर पलटोगे तो हम भी वही करेंगे (जो विद्रोहियों के साथ हम करते हैं) हमने सत्य का इन्कार करने वालों के लिए जहन्नम को क़ैदख़ाना बना रखा है.

9 निस्संदेह! यह क़ुरआन वह मार्ग दिखाता है जो बिल्कुल सीधा है. जो लोग इसे मानकर भले कर्म करें उन्हें यह शुभ-सूचना देता है कि उनके लिए बड़ा प्रतिफल है. 10
और यह कि जो लोग मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन को नहीं मानते उनके लिए हमने दर्दनाक यातना तैयार कर रखी है.

11 इंसान बुराई इस प्रकार माँगता है जिस प्रकार उसे भलाई माँगनी चाहिए. मनुष्य
बड़ा ही उतावला है. 12 हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया है. फिर हमने रात की निशानी को मिटा दिया और दिन की निशानी को हमने प्रकाशमान बनाया, ताकि तुम अपने रब का अनुग्रह तलाश करो, और ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम कर सको. हमने हर चीज़ को खोल-खोल कर स्पष्ट रूप में बयान कर दिया है.

13 हमने हर इंसान का भाग्य उसके गले के साथ बाँध दिया है. और हम क़यामत के दिन उसके लिए एक किताब निकालेंगे (अर्थात उसके कर्मों की रेकॉर्ड-बुक उसके समक्ष प्रस्तुत करेंगे), जिसे वह खुला पाएगा (अर्थात जिसमें हर चीज़ खुले रूप से वह
दर्ज पाएगा). 14 (उससे कहा जाएगा,) पढ़ अपनी किताब आज अपना हिसाब लेने के लिए तू स्वयं पर्याप्त है.

15 जो व्यक्ति सन्मार्ग पर चलता है तो वह अपने ही लिए चलता है. और जो व्यक्ति पथभ्रष्ट हुआ तो अपने ही बुरे के लिए पथभ्रष्ट हुआ. कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा. हम (लोगों को) यातना नहीं देते, जब तक कि (उन्हें सचेत करने के लिए) कोई पैग़ंबर न भेज दें.

16 और जब हम किसी बस्ती को नष्ट करने का इरादा कर लेते हैं तो उसके सुखभोगी लोगों को हुक्म देते है. फिर वे (हुक्म मानने के बजाय) वहाँ अवज्ञा करने लग जाते हैं. तब उन पर बात पूरी हो जाती है. फिर हम उन्हें बिल्कुल उखाड़ फेंकते हैं. 17 हमने नूह के बाद कितनी ही क़ौमों को नष्ट कर दिया. तुम्हारा रब अपने बंदों के गुनाहों की ख़बर रखने तथा देखने के लिए पर्याप्त है.

18 जो व्यक्ति शीघ्र प्राप्त होने वाले (सांसारिक सुख) को चाहता है, उसको हम उसमें से दे देते हैं, जितना हम जिसे देना चाहें. फिर हमने उसके लिए जहन्नम को तैयार कर रखा है, जिसमें वह धिक्कारा हुआ तथा ठुकराया हुआ प्रवेश करेगा.

19 लेकिन जो मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन (की सफलता को पाना) चाहता हो और उसके लिए कोशिश करे जैसी कि उसके लिए कोशिश करनी चाहिए और वह ईमान वाला हो तो ऐसे लोगों की कोशिश की क़द्र की जाएगी.

20 इन्हें भी और उन्हें भी हम (ज़िंदगी का सामान) प्रदान करते हैं (अर्थात जो दुनिया में ही पाना चाहते हैं और जो मृत्यु-पश्चात दुनिया की सफलता चाहते हैं, दोनों को). (पैग़ंबर! यह) तुम्हारे रब की देन है. तुम्हारे रब की देन किसी पर बंद नहीं है. 21 देखो! (इस दुनिया में भी) हमने किस तरह उनमें से कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता प्रदान की है. लेकिन मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन में उनके दर्जे (अर्थात सफल होने वालों के दर्जे) और भी ज़्यादा बड़े हुए होंगे और श्रेष्ठ भी होंगे.

22 तो अल्लाह के सिवा किसी और को उपास्य न बनाओ. अन्यथा तुम तिरस्कृत और असहाय होकर रह जाओगे. 23 तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि तुम लोग उसके सिवा अन्य किसी की उपासना न करो. और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो. यदि उनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएं तो उन्हें उफ़ तक न कहो (अर्थात अनादर करने वाली कोई बात न कहो) और न उन्हें कभी झिड़क कर उत्तर

दो, बल्कि उनके साथ सम्मानपूर्वक बात करो. 24 और उनके सामने विनम्रतापूर्वक स्नेह की बाँहें झुका दो और (उनके लिए अल्लाह से इस तरह) प्रार्थना करो, ऐ मेरे रब! इन दोनों पर दया कर, जैसा कि इन्होंने मेरा बचपन में पालन-पोषण किया था. 25 तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है. यदि तुम नेक बनकर रहो तो निस्संदेह वह उन लोगों के प्रति क्षमाशील है जो (उसकी ओर) पलट आते हैं.

26 और संबंधी को उसका हक़ दो और मुहताज को तथा मुसाफ़िर को भी उसका हक़ दो. और फ़ुज़ूलखर्ची न करो (अर्थात अपव्ययी न बनो). 27 निस्संदेह! फ़ुज़ूलखर्ची करने वाले शैतान के भाई हैं. और शैतान अपने रब के प्रति बड़ा ही कृतघ्न है.

28 यदि तुम्हें अपने रब की कृपा की प्रतीक्षा में जिसकी तुम आशा रखते हो, उनसे बच निकलना पड़े तो तुम विनम्रतापूर्वक बात करो (अर्थात तुम उन्हें कुछ देने की स्थिती में न हो तो स्वयं को उनसे विनम्रतापूर्वक अलग कर लो).

29 न तो अपना हाथ गरदन से बाँध लो (कि किसी को कुछ न दो) और न उसे बिल्कुल खुला छोड़ दो कि तुम निंदित और असहाय बनकर रह जाओ. 30 निस्संदेह! तुम्हारा रब जिसके लिए चाहता है अधिक जीविका प्रदान करता है और जिसके लिए चाहता है सीमित कर देता है. निस्संदेह! वह अपने बंदों को जानने वाला तथा देखने वाला है.

31 निर्धनता के भय से अपनी संतान की हत्या न करो. हम उन्हें भी जीविका देते हैं और तुम्हें भी. निस्संदेह! उनकी हत्या करना बहुत ही बड़ा पाप है. 32 और व्यभिचार के निकट न फटको. वह अश्लीलता है और बुरा मार्ग है.

33 और किसी जान को न मारो, जिसके (मारने को) अल्लाह ने हराम किया है, मगर न्याय के साथ (किसी जान को मारने पर कोई दोष नहीं). और जिस व्यक्ति की अन्यायपूर्वक हत्या की जाए उसके उत्तराधिकारी को (हत्या का बदला लेने की माँग करने

का) हमने अधिकार दिया है. तो चाहिए कि वह हत्या (का बदला लेने) के मामले में सीमा का उल्लंघन न करे. निश्चित रूप से उसकी सहायता की जाएगी.

34 और तुम अनाथ के माल के पास न फटको, सिवाय उत्तम रीति के. यहाँ तक कि वह अपनी परिपक्व अवस्था को पहुँच जाए (अर्थात उस समय उसका माल उसे सौंप दो). और प्रतिज्ञा पूरी करो, निश्चित रूप से तुमसे प्रतिज्ञा के बारे में पूछा जाएगा.

35 और जब नाप कर दो तो पूरा नापो. और (जब तौल कर दो तो) ठीक तराज़ू से तौल कर दो. यही उत्तम है और इसका परिणाम भी अच्छा है.

36 किसी ऐसी चीज़ के पीछे न पड़ो जिसका तुम्हें ज्ञान न हो. निस्संदेह! सुनने, देखने तथा समझने की योग्यताएँ (जो तुम्हें प्रदान की गयी हैं) इन सबके संबंध से तुमसे पूछ होगी. 37 (ऐ इंसान!) धरती पर अकड़ कर न चल, न तो तू धरती को फाड़ सकता है और न तू पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकता है. 38 यह सब बुरे काम हैं, जो तेरे रब की दृष्टि में अप्रिय हैं.

39 यह विवेकपूर्ण बातें हैं जो तुम्हारे रब ने तुम्हारी ओर प्रकट की हैं. (तो सुनो!) अल्लाह के साथ कोई दूसरा उपास्य न बना बैठना अन्यथा तुम जहन्नम में डाल दिए जाओगे, निंदित और ठुकराए हुए.

40 क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें बेटे चुनकर दिए और अपने लिए फ़रिश्तों को बेटियाँ बना लिया? निस्संदेह! बहुत भारी बात है जो तुम कर रहे हो (अर्थात वह भयानक बड़ा झूठ है). 41 हमने इस क़ुरआन में तरह-तरह से (लोगों के लिए बात) स्पष्ट कर दी है, ताकि वे अनुस्मरण ग्रहण करें. लेकिन उनकी बेरुखी बढ़ती ही जाती है. 42 कहो, यदि अल्लाह के साथ दूसरे ख़ुदा भी होते जैसा कि (सत्य का इन्कार करने वाले) लोग कहते हैं तो वे सिंहासन वाले की ओर (अर्थात समस्त सृष्टि के सत्ताधीश की ओर) अवश्य मार्ग निकालते. 43 पाक है वह और बहुत उच्च है वह उन बातों से जो ये (सत्य नकारने

वाले) लोग कह रहे हैं. 44 सात आसमान तथा धरती और वे सारी चीज़ें जो इनमें हैं ख़ुदा का महिमा-गान करती हैं. (समस्त सृष्टि में) कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो उसकी प्रशंसा के साथ उसका महिमा-गान न करती हो. लेकिन तुम उनके महिमा-गान को नहीं समझते. निस्संदेह! वह बड़ा ही सहनशील तथा क्षमाशील है.

45 और जब तुम क़ुरआन को पढ़ते हो तो हम तुम्हारे तथा उन लोगों के बीच एक अदृश्य पर्दा डाल देते हैं जो मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन को नहीं मानते. 46 और उनके दिलों पर ऐसा ग़िलाफ़ चढ़ा देते हैं कि वे कुछ नहीं समझते और उनके कानों में भारीपन पैदा कर देते हैं. और जब तुम क़ुरआन में अकेले अपने रब की चर्चा करते हो तो वे घृणा से मुँह मोड़ लेते हैं.

47 और हम भली-भाँति जानते हैं कि जब वह तुम्हारी ओर कान लगाते हैं कि वे वास्तव में क्या सुनते हैं और (हम उसे भी भली-भाँति) जानते हैं जब वे आपस में कानाफूसियाँ करते हैं. जब ये अत्याचारी लोग कहते हैं कि (यदि) तुमने (पैग़ंबर मुहम्मद का) अनुसरण किया तो तुमने एक जादूगर का अनुसरण किया. 48 देखो! वे कैसी-कैसी मिसालों से तुम्हारा संबंध जोड़ रहे हैं. यह लोग भटक चुके हैं, वे मार्ग नहीं पा सकते.

49 और वे कहते हैं, क्या जब हम हड्डी और चूरा हो जाएंगे, तो क्या हम फिर नए सिरे से पैदा करके उठाए जाएंगे. 50 (पैग़ंबर!) इनसे कह दो, तुम पत्थर या लोहा हो जाओ. 51 या और कोई चीज़ जो तुम्हारी कल्पना में इससे भी अधिक कठोर हो (तब भी तुम्हें जीवित करके उठाया जाएगा). फिर वे कहेंगे कि वह कौन है जो हमें (मृत्यु-पश्चात जीवन की ओर) पलटा कर लाएगा? उनसे कह दो, वही जिसने तुम्हें पहली बार सृजित किया. तब वे तुम्हारे सामने अपना सर हिला-हिला कर पूछेंगे? ‘अच्छा तो यह होगा कब?’ तुम कह दो कि कुछ आश्चर्य नहीं कि उसका समय निकट आ पहुँचा हो.

52 जिस दिन अल्लाह तुम्हें पुकारेगा तुम उसकी प्रशंसा करते हुए उसकी पुकार पर चले आओगे और तुम्हें लगेगा कि तुम अत्यंत थोड़ी अवधि तक रहे.

53 और (पैग़ंबर!) मेरे बंदों से कह दो कि बात वही कहें जो उत्तम हो. शैतान उनके बीच बिगाड़ पैदा करता है. निस्संदेह! शैतान इंसान का खुला दुश्मन है.

54 तुम्हारा रब तुम्हें ख़ूब जानता है. यदि वह चाहे तो तुम पर दया करे या चाहे तो तुम्हें यातना दे. (पैग़ंबर!) हमने तुम्हें उन पर कोई ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा है.

55 तुम्हारा रब उसे भली-भाँति जानता है जो कोई आसमानों और धरती में है. और हमने कुछ पैग़ंबरों को कुछ पर श्रेष्ठता प्रदान की है और हमने दाऊद को 'ज़बूर' (आसमानी ग्रंथ) प्रदान किया था.

56 इनसे कहो, पुकारकर देखो उन उपास्यों को जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा (अपना) कार्यसाधक समझते हो. वे न तुमसे किसी कष्ट को दूर करने की सामर्थ्य रखते हैं और न वे उसे बदल सकते हैं.
57 जिन्हें ये लोग पुकारते हैं, वे तो स्वयं अपने रब का सामीप्य तलाशते रहते हैं कि उनमें से कौन सबसे अधिक निकट हो जाए और वे अपने रब की कृपा के उम्मीदवार हैं. वे उसकी यातना से डरते हैं. निस्संदेह तुम्हारे रब की यातना डरने की ही चीज़ है.

58 कोई बस्ती ऐसी नहीं जिसे हम क़यामत से पहले नष्ट न करें या कठोर यातना न दें, यह होना ख़ुदा के लिखे में दर्ज है.

59 हमें निशानियाँ भेजने से नहीं रोका, मगर इस बात ने कि इनसे पहले के लोग उन्हें झुठला चुके हैं. हमने क़ौमे-समूद को एक स्पष्ट निशानी के तौर पर ऊँटनी दी थी, लेकिन उन्होंने उस पर ज़ुल्म किया. हम निशानियाँ लोगों को डराने के लिए ही भेजते हैं.

60 (पैग़ंबर!) हमने तुमसे कह दिया था कि तुम्हारे रब ने सारे लोगों को घेर रखा है. और वह रूया (अलौकिक दृश्य) जो हमने तुम्हें दिखाया है, वह मात्र लोगों की जाँच

के लिए था. ऐसा ही मामला उस वृक्ष का भी है जिसका क़ुरआन में 'शापित वृक्ष' ऐसा वर्णन किया गया है. और हम उन्हें चेतावनी दिए जा रहे हैं, लेकिन (हमारी) चेतावनी से उनके विद्रोह में बढ़ोत्तरी होती जा रही है.

61 और (याद करो,) जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो सब ने सजदा किया, लेकिन इबलीस ने सजदा नहीं किया. इबलीस ने कहा, क्या मैं उसको सजदा करूँ जिसे तूने मिट्टी से बनाया है.
62 फिर वह बोला, देख तो सही, क्या यह (इस योग्य था) जिसे तूने मुझ पर वरियता प्रदान की है? यदि तू मुझे क़यामत के दिन तक मुहलत दे तो मैं थोड़े लोगों के सिवा इसकी संपूर्ण संतान को खा जाऊँगा (अर्थात उन्हें पथभ्रष्ट कर छोड़ूंगा).

63 अल्लाह ने कहा, जा, इनमें से जो भी तेरा अनुसरण करेगा तो जहन्नम तुम सब का पूरा-पूरा बदला है.
64 उनमें से जिस पर तेरा बस चले, तू अपनी आवाज़ से उनके क़दम फिसला दे. उन पर अपने सवार और प्यादे चढ़ा ला. उनकी संपत्ती और संतान में उनका साझीदार बन जा और उनसे वादे किए जा. लेकिन शैतान के वादे एक धोके के सिवा और कुछ नहीं.
65 लेकिन, जो मेरे (सच्चे) बंदे हैं, निस्संदेह उन पर तेरा वश नहीं चलेगा. (पैग़ंबर!) तुम्हारा रब कार्यसाधक के तौर पर पर्याप्त है.

66 (लोगो!) तुम्हारा रब तो वह है जो तुम्हारे लिए समुंदर में नाव चलाता है (अर्थात उसने तुम्हारे लिए समुंदर को नाव चलने योग्य बनाया है), ताकि तुम उसका अनुग्रह तलाश करो. निस्संदेह! वह तुम्हारे ऊपर कृपाशील है.

67 और जब समुद्र में तुम पर कोई आपदा आती है तब तुम उन उपास्यों को भूल जाते हो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे. लेकिन जब वह तुम्हें बचाकर भूभाग पर पहुँचा देता है तो तुम फिर उससे मुँह मोड़ जाते हो. इंसान है ही बड़ा कृतघ्न.

68 क्या तुम इससे निश्चिंत हो गए कि वह तुम्हें भू-भाग में धँसा नहीं सकता. या वह तुम पर पथराव करने वाली आँधी भेज नहीं सकता. (जब वह ऐसा करेगा,) तब तुम उससे तुम्हें बचाने वाला कोई नहीं पाओगे. 69 या तुम इससे निश्चिंत हो कि वह तुम्हें फिर से समुद्र में ले जा नहीं सकता और तुम पर (फिर से) तूफ़ानी हवाओं को नहीं भेज सकता. और तुम्हें तुम्हारी कृतघ्नता के कारण तुम्हें ग़र्क़ नहीं कर सकता. (लेकिन जब हम ऐसा करेंगे तो) तब तुम हमारे विरुद्ध कुछ कर सकने वाला कोई नहीं पाओगे.

70 हमने आदम की संतान को श्रेष्ठता प्रदान की और हमने उन्हें ज़मीन तथा समुद्र में सवारी प्रदान की. इसी के साथ हमने उन्हें पाक चीज़ों की जीविका प्रदान की और अपनी बहुत सी रचनाओं (creations) पर श्रेष्ठता प्रदान की.

71 तो विचार करो उस दिन का जब हम हर इंसानी समुदाय (अर्थात समस्त मनुष्य जाति के समुदाय-रूपी घटकों) को उनके पेशवा के साथ बुलाएंगे. तो उस समय जिसका कर्म-पत्र जिसके दाएँ हाथ में दिया जाएगा. तब वे लोग अपना कर्म-पत्र पढ़ेंगे. और उनके साथ तनिक भी अन्याय नहीं किया जाएगा.

72 जो व्यक्ति इस दुनिया में अँधा बना रहा, वह मृत्यु-पश्चात शाश्वत दुनिया में भी अँधा ही रहेगा. और वह दूर जा पड़ा होगा रास्ते से (अर्थात उसके लिए शाश्वत-रूपी सन्मार्ग का द्वार बंद हो चुका होगा).

73 (पैग़ंबर!) निकट था कि यह (सत्य का इन्कार करने वाले) लोग परीक्षा में डालकर तुम्हें उस संदेश से हटा दें जो हमने तुम्हारी ओर प्रकट किया है. (इनका उद्देश्य यह था कि) तुम उससे भिन्न चीज़ गढ़कर उसका हमसे संबंध जोड़ो. तब वे तुम्हें अपना घनिष्ठ मित्र बना लेते. 74 और असंभव न था कि यदि हमने तुम्हें जमाए न रखा होता तो तुम उनकी ओर कुछ न कुछ झुक जाते.75 फिर (यदि ऐसा होता तो) हम तुम्हें इस जीवन

में भी दोहरी यातना चखाते और मृत्यु-पश्चात जीवन में भी दोहरी यातना. फिर हमारे मुक़ाबले में तुम कोई सहायक नहीं पाते.

76 (पैग़ंबर!) यह (असत्यवादी) लोग इस भूभाग से तुम्हारे क़दम उखाड़ने में लगे थे, ताकि वे तुम्हें (हमेशा के लिए) मक्का से निकाल बाहर करें. और यदि ऐसा होता तो वे भी तुम्हारे बाद बहुत कम ठहर पाते (अर्थात हम उन्हें मिटा देते). 77 जैसा कि उन पैग़ंबरों के संबंध से हमारा नियम रहा है, जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा था. और तुम हमारे नियम में कोई परिवर्तन नहीं पाओगे.

78 नमाज़ क़ायम करो सूरज ढलने के बाद से रात के अँधेरे तक. और प्रातःकाल में क़ुरआन पढ़ने (का महत्व समझो), निस्संदेह जो (क़ुरआन) प्रातःकाल में पढ़ा जाता है (बड़ी संख्या में फ़रिश्ते उसके) गवाह बनते हैं.

79 और रात को (प्रातःकाल होने से पूर्व) तहज्जुद की नमाज़ पढ़ो. यह 'नमाज़' नफ़्ल नमाज़ है तुम्हारे लिए ('नफ़्ल' अर्थात आवश्यक नमाज़ों के अतिरिक्त एवं स्वैच्छिक नमाज़). उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हें प्रशंसापूर्ण स्थान पर खड़ा कर दे.

80 और दुआ करो कि ऐ मेरे रब! तू मुझे जहाँ भी ले जा सच्चाई के साथ ले जा और जहाँ कहीं से निकाल सच्चाई के साथ निकाल और मुझे अपनी ओर से एक सहायक प्रदान कर. 81 और कहो सत्य आ गया और असत्य मिट गया. निस्संदेह असत्य मिटने के ही लिए होता है.

82 और हम क़ुरआन में जो कुछ उतार रहे हैं उसमें मानने वालों के लिए (आत्मिक) आरोग्य तथा दयालुता है. और अत्याचारियों के लिए यह घाटे के सिवा और किसी चीज़ में वृद्धि नहीं करता.

83 इंसान का (हाल यह है कि) हम उसे जब नेमत प्रदान करते हैं तो वह मुँह फेरता है और अपना पहलू बचाता है. लेकिन जब उसे कष्ट पहुँचता है तो वह निराश हो जाता

है. 84 कह दो, हर एक अपने तरीक़े पर चल रहा है. अब यह तुम्हारा रब ही जानता है कि कौन सबसे सीधी राह पर है.

85 (पैग़ंबर) ये लोग तुमसे रूह (अर्थात आसमानी संदेश) के बारे में पूछते हैं. कह दो रूह मेरे रब के हुक्म से है. और तुम्हें बहुत सीमित ज्ञान दिया गया है.

86 (ऐ मुहम्मद!) यदि हम चाहे तो वह सब कुछ तुमसे छीन लें जो हमने आसमानी संदेश के तौर पर (अर्थात इस क़ुरआन के रूप में) तुम पर प्रकट किया. फिर तुम इसके लिए हमारे मुक़ाबले में कोई तुम्हारा समर्थन करने वाला न पाओगे (अर्थात हमारे मुक़ाबले में ऐसा कोई नहीं जो तुम्हें वह वापस दिला सके).

87 लेकिन यह (जो कुछ तुम्हें मिला है) केवल तुम्हारे रब की कृपा से है. वास्तविकता यह है कि उसकी कृपा तुम पर बहुत बड़ी है.

88 (पैग़ंबर!) कह दो कि यदि तमाम इंसान तथा जिन्न सब के सब मिलकर इस क़ुरआन जैसी कोई चीज़ बना लाने की कोशिश करें तो न ला सकेंगे. चाहे वे एक दूसरे के सहायक ही क्यों न हों.

89 हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर प्रकार की मिसाल तरह-तरह से बयान की है. फिर भी अधिकतर लोग इन्कार ही पर जमे रहे. वे कहते हैं कि हम कदापि तुम पर ईमान न लाएंगे, जब तक तुम धरती से एक स्रोत न प्रवाहित कर दो.

90 और वे कहते हैं कि हम हरगिज़ तुम पर ईमान नहीं लाएंगे, जब तक तुम हमारे लिए ज़मीन से कोई चशमा जारी न कर दो 91 या तुम्हारे पास खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो जाए और तुम उसके बीच बहती नहरें निकाल दो. 92 या आसमान को टुकड़े-टुकड़े करके हम पर गिरा दो, जैसा कि तुम्हारा दावा है. या अल्लाह और फ़रिश्तों को रू-ब-रू हमारे सामने ले आओ. 93 या तुम्हारे लिए सोने का घर (स्वर्ण-सदन) बन जाए या तुम आसमान पर चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ने को भी नहीं मानेंगे, जब

तक तुम वहाँ से हम पर कोई किताब न उतार दो जिसे हम पढ़ सकें. (पैग़ंबर!) इनसे कहो, मेरा रब पाक है. मैं तो मात्र एक मनुष्य हूँ, अल्लाह का पैग़ंबर. 94 और जब उनके पास मार्गदर्शन आ गया, तो उन्हें ईमान लाने से इसके सिवा और किसी चीज़ ने न रोका कि वे कहने लगे, क्या अल्लाह ने इंसान को पैग़ंबर बनाकर भेजा है?

95 इनसे कहो कि यदि धरती पर फ़रिश्ते चलते-फिरते और वहाँ आबाद होते. तो हम आसमान से किसी फ़रिश्ते ही को उनके लिए पैग़ंबर बनाकर भेजते.

96 (पैग़ंबर) इनसे कह दो, अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए पर्याप्त है. निस्संदेह वह अपने बंदों को जानने वाला तथा देखने वाला है. 97 अल्लाह जिसे मार्ग दिखाए वही मार्ग पाने वाला है. और जिसे वह भटका दे, तो तुम ऐसे लोगों के लिए, अल्लाह के सिवा किसी को सहायक नहीं पाओगे. और क़यामत के दिन हम उन्हें औंधे मुँह इस दशा में इकट्ठा करेंगे कि वे अँधे, गूँगे और बहरे होंगे. उनका ठिकाना जहन्नम है. जब कभी उसकी आग धीमी होने लगेगी तो हम उसे और भड़का देंगे.

98 यह उनका बदला है, इसलिए कि उन्होंने हमारी (संदेशयुक्त) निशानियों का इन्कार किया और कहा, क्या जब हम (मरकर) हड्डियाँ और (मिट्टी की तरह) चूर्ण-विचूर्ण होकर रह जाएंगे, तो क्या नए सिरे से हमें पैदा करके उठाया जाएगा?

99 क्या इन (इन्कार करने वाले) लोगों ने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने आसमानों तथा धरती का सृजन किया है, वह उन जैसों का (दोबारा) सृजन करने की सामर्थ्य रखता है? उसने उनके लिए एक अवधि निर्धारित कर रखी है जिसमें कोई संदेह नहीं. लेकिन अत्याचारी लोगों का आग्रह है कि वह इसका इन्कार ही करेंगे.

100 (पैग़ंबर) इनसे कहो, यदि कहीं मेरे रब की रहमत के ख़ज़ाने तुम्हारे क़ब्ज़े में होते, तो तुम खर्च हो जाने के डर से उन्हें रोके ही रहते (अर्थात किसी को कुछ न देते). मनुष्य है ही बड़ा तंग दिल. 101 हमने मूसा को नौ स्पष्ट निशानियाँ प्रदान की थीं. तुम

स्वयं इसराईल की संतान से पूछ लो कि जब वह उनके पास आया तो फ़िरऔन ने उससे यही कहा था, ऐ मूसा? मेरे विचार में तुम पर अवश्य किसी ने जादू कर दिया है. 102 (इस पर) मूसा ने कहा, तू ख़ूब जानता है कि इन आँखें खोल देने वाली निशानियों को आसमान और धरती के रब के सिवा किसी ने नहीं उतारा. (मूसा ने आगे कहा,) मेरा विचार है कि ऐ फ़िरऔन! तू अवश्य ही नष्ट होने वाला आदमी है. 103 फिर फ़िरऔन ने इरादा किया कि (मूसा के साथ) बनी इसराईल को उस भू-भाग से उखाड़ फेंके. तो हमने उसको और जो उसके साथ थे सबको डुबो दिया. 104 और हमने इसराईल की संतान से कहा, तुम इस भू-भाग पर रहो. और जब मृत्यु-पश्चात शाश्वत दुनिया को स्थापित करने का वादा आएगा. तो हम तुम सबको एक साथ ला हाज़िर करेंगे.

105 हमने इस क़ुरआन को सत्य के साथ उतारा है और यह सत्य के साथ उतरा है. (पैग़ंबर!) हमने तुम्हें इसके सिवा और किसी काम के लिए नहीं भेजा कि तुम शुभ-सूचना देने वाले तथा सचेत करने वाले हो.

106 हमने क़ुरआन को थोड़ा-थोड़ा करके उतारा, ताकि (पैग़ंबर!) तुम इसे लोगों के सामने ठहर-ठहर कर सुनाओ. और इसे हमने क्रमशः उतारा है.

107 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, तुम इसे मानो या न मानो, वे लोग जिन्हें इससे पहले ज्ञान दिया गया था, जब उन्हें यह सुनाया जाता है तो वे ठोड़ियों के बल (सजदे में) गिर जाते हैं. 108 और वे पुकार उठते हैं, महिमावान है हमारा रब! निस्संदेह! हमारे रब का वादा तो पूरा होकर रहने वाला है. 109 वे रोते हुए ठोड़ियों के बल (सजदे में) गिर जाते हैं. क़ुरआन (सुनकर) उनकी विनम्रता और बढ़ जाती है.

110 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, चाहे अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर पुकारो. जिस नाम से भी पुकारो, उसके सब अच्छे ही नाम हैं. और तुम अपनी नमाज़ न अधिक ऊँची आवाज़ में पढ़ो और न अधिक धीमी आवाज़ में, बल्कि इन दोनों के बीच का

लहजा अपनाओ. 111 और कहो कि सारी प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जो न संतान रखता है और न सत्ता में उसका कोई साझीदार है. और न ही वह अशक्त है कि कोई उसका सहायक हो. और उसकी बड़ाई बयान करो, उच्च कोटी की बड़ाई.

सूरह–18. अल-कहफ़

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने अपने बंदे पर यह किताब उतारी और उसमें कोई टेढ़ न रखी. 2 (यह क़ुरआन) ठीक-ठीक सीधी बात है, ताकि वह अल्लाह की ओर से कठोर यातना से (लोगों को) ख़बरदार कर दे. और ईमान लाकर भले कार्य करने वालों को शुभ-सूचना दे दे कि उनके लिए अच्छा बदला है. 3 (अर्थात जन्नत) जिसमें वे सदैव रहेंगे. 4 (इस क़ुरआन का उद्देश्य यह भी है कि) उन लोगों को डरा दें जो कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है. 5 उन्हें इस बात का कोई ज्ञान नहीं है और न उनके बाप-दादा को था. यह बहुत भारी बात है जो उनके मुँह से निकल रही है. वे सिर्फ़ झूठ बकते हैं.

6 (पैग़ंबर) वे लोग इस संदेश पर ईमान नहीं ला रहे हैं — इस कारण ग़म से क्या तुम स्वयं को हलाक कर डालोगे? 7 जो कुछ धरती पर है उसे हमने धरती की शोभा बनाया है, ताकि हम लोगों को जाँचे कि उनमें कौन अच्छे कर्म करने वाला है. 8 और अंततः जो कुछ धरती पर है उसे हम चटियल मैदान बना देंगे.

9 क्या तुम समझते हो कि गुफा और शिलालेख वाले हमारी अत्यंत अद्भुत निशानियों में से थे? 10 (उनकी कहानी यह है कि) जब उन युवकों ने गुफा में शरण ली, तब उन्होंने (हमसे) दुआ की, ऐ हमारे रब! हमें अपने पास से दयालुता प्रदान कर और हमारे मामले को ठीक कर दे. 11 तो हमने उस गुफा में कई वर्षों तक उनके कानों पर (नींद का) पर्दा डाल दिया (अर्थात उन्हें कई वर्षों तक गहरी नींद सुला दिया). 12 फिर (वर्षों बाद) हमने उन्हें उठाया, ताकि देखें कि दोनों समूहों में से कौन अपने ठहरने की अवधी की ठीक गिनती कर पाता है.

13 हम तुम्हें उनका असल वृत्तांत सुनाते हैं. वे कुछ युवक थे जो अपने रब पर ईमान लाए थे. हमने उनके सन्मार्ग प्राप्ति को और अधिक सुदृढ़ किया था. 14 और हमने उनके दिलों को दृढ़ कर दिया था, जब वे उठे और कहा, हमारा रब वही है जो आसमानों और धरती का रब है. हम उसे छोड़कर किसी दूसरे उपास्य को नहीं पुकारेंगे. यदि हम ऐसा करें तो हम अत्यंत अनुचित बात करेंगे. 15 यह हमारी क़ौम के लोगों ने उसके सिवा दूसरे उपास्य बना रखे हैं. लेकिन ये लोग उन (उपास्यों) के पक्ष में स्पष्ट प्रमाण क्यों नहीं लाते? फिर उस व्यक्ति से बढ़ा अत्याचारी और कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ बाँधे?

16 (कहफ़ वाले आगे आपस में कहने लगे) अब जबकि तुम उन (बहुदेववादी लोगों) से और उनके उपास्यों से भी जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पूजते हैं अलग हो चुके हो. तो चलो अब चलकर गुफा में शरण लो. तुम्हारा रब तुम्हारे ऊपर अपनी कृपा करेगा और तुम्हारे काम के लिए सामग्री उपलब्ध कराएगा. 17 (उस गुफा का मामला यह था कि यदि) तुम उसे देखते (तो तुम्हें यूँ नज़र आता कि) जब सूरज निकलता है तो उनकी गुफा को छोड़कर दायीं ओर चढ़ जाता है. और जब डूबता है तो बायीं ओर कतरा कर निकल जाता है (अर्थात सूरज उगते तथा डूबते हुए उसकी रोशनी उस गुफा में नहीं पहुँचती थी.). और वे गुफा के अंदर विस्तृत स्थान पर थे. यह अल्लाह की निशानियों में से है. जिसे अल्लाह मार्ग दिखाए वही मार्ग पाने वाला है. और जिसे अल्लाह भटका दे तो तुम उसका कोई मार्गदर्शक मित्र नहीं पा सकते.

18 तुम (यदि उन्हें गुफा में) देखते तो तुम्हें लगता कि वे जाग रहे हैं, हालाँकि वे सो रहे थे (सोयी हुयी अवस्था में) हम उन्हें दाएँ व बाएँ करवट बदलवाते रहते थे. और उनका कुत्ता गुफा के मुँह पर अपने पैर फैलाए हुए बैठा था. यदि तुम उन्हें झाँक कर देखते तो उनसे पीठ फेर कर भाग खड़े होते और तुम्हारे अंदर उनका भय बैठ जाता.

19 और इसी तरह हमने उन्हें उठाया, ताकि वे आपस में पूछताछ करें. उनमें से एक ने पूछा, तुम यहाँ कितनी देर ठहरे रहे? वे बोले, हम यही कोई एक दिन या एक दिन से भी कम ठहरे होंगे. फिर वे बोले, अल्लाह ही बेहतर जानता है कि तुम कितनी देर यहाँ रहे. अब अपने में से किसी को यह चाँदी का सिक्का देकर शहर भेजते हैं. वह जाकर देखे कि शुद्ध भोजन कहाँ मिलता है. वहाँ से वह तुम्हारे खाने के लिए कुछ ले आए. चाहिए कि वह सावधानी से जाए और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे. 20 यदि कहीं वे तुम्हारी ख़बर पा जाएंगे तो तुम्हें पत्थरों से मार डालेंगे या तुम्हें अपने पंथ की ओर फेर ले जाएंगे. तब तुम कभी सफल न हो सकोगे.

21 और इस तरह हमने (नगर वालों को) उनकी ख़बर कर दी, ताकि वे जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और यह कि क़यामत के आने में कोई संदेह नहीं. उस समय वे आपस में इस बात पर झगड़ रहे थे कि इन (कहफ़ वालों) के साथ क्या किया जाए. कुछ लोगों ने कहा, उन पर एक इमारत बना दो. उनका रब उनके बारे में भली-भाँति जानता है. जो लोग उनके मामले में वर्चस्व प्राप्त करने वाले हुए, उन्होंने कहा, हम उनकी गुफा पर एक उपासना स्थल बनाएंगे.

22 कुछ लोग कहेंगे कि वे तीन थे और चौथा उनका कुत्ता था और कुछ दूसरे कहेंगे कि वे पाँच थे और छठा उनका कुत्ता था. ये लोग अनभिज्ञता की बात कर रहे हैं. कुछ लोग यह कहेंगे कि वे सात थे और आठवाँ उनका कुत्ता था. कहो, मेरा रब ही बेहतर जानता है कि वे कितने थे. कम ही लोग उन्हें जानते हैं. तो तुम सिवाय सरसरी बात के उनके बारे में बहस न करो और न उनके संबंध से किसी से कुछ पूछो.

23 और किसी (कार्य को करने) के संबंध से, ऐसा मत कहा करो कि मैं कल इसे कर दूँगा. 24 (बल्कि इस प्रकार कहा करो कि) मगर यह कि अल्लाह चाहे. यदि भूल से

(यह बात मुख से) निकल जाए, तो तुरंत अपने रब को याद करो और कहो, आशा है कि मेरा रब मुझे भलाई का इससे अधिक निकट मार्ग बता दे.

25 (कुछ लोगों के अनुसार) वे अपनी गुफा में तीन सौ वर्ष रहे (और) कुछ अन्य लोगों ने उस अवधी में नौ वर्ष और बड़ा दिए हैं. 26 कहो कि अल्लाह ही उनके ठहरने की अवधी को सबसे सही जानता है. आसमान व धरती के सभी छिपे हाल उसी को ज्ञात हैं. क्या ख़ूब है वह देखने वाला और सुनने वाला! अल्लाह के सिवा उनका कोई सहायक नहीं और अल्लाह अपनी सत्ता में किसी को साझीदार नहीं बनाता. 27 (पैग़ंबर!) तुम्हारे रब की जो किताब तुम पर उतारी जा रही है उसे (लोगों को) सुनाओ. अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं. और उसके सिवा तुम कोई शरण-स्थल नहीं पा सकते.

28 और अपने आपको उन लोगों के साथ जमाए रखो जो सुबह और शाम अपने रब को पुकारते हैं. वे उसकी प्रसन्नता के अभिलाषी हैं. इस दुनिया की शोभा से मोहित होकर तुम्हारी निगाहें उनसे हटने न पाएँ. और तुम ऐसे व्यक्ति का कहना न मानों जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया है. और वह अपनी इच्छाओं के पालन में लगा हुआ है. उसका मामला हद से निकल चुका है. 29 कह दो, 'क़ुरआन' सत्य है तुम्हारे रब की ओर से, तो जो चाहे इसे माने और जो चाहे इसे न माने. हमने अत्याचारियों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी लपटें उन्हें अपने घेरे में ले लेंगी. यदि वे पानी के लिए याचना करेंगे तो उनकी याचना ऐसे पानी से पूरी की जाएगी जो तेल की तलछट के समान होगा. वह चेहरों को भून डालेगा. क्या बुरा पानी होगा और कैसा बुरा ठिकाना (अर्थात जहन्नम) ! 30 निस्संदेह! जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, तो हम निश्चित रूप से ऐसे लोगों का बदला नष्ट नहीं किया करते, जो अच्छे कर्म करते हैं. 31 उन (सत्कर्मियों) के लिए सदैव रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वहाँ उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे. वे वहाँ हरे (रंग के) बारीक

और दबीज रेशमी कपड़े पहनेंगे. वे ऊँची मसनदों पर तकिया लगाए हुए होंगे. क्या ही अच्छा बदला है और कैसा अच्छा ठिकाना!

32 (पैग़ंबर!) इनके सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करो. दो व्यक्ति थे. उनमें से एक को हमने अंगूरों के दो बाग़ दिए. और उनके चारों ओर खजूर के पेड़ों का घेरा बना दिया था. और दो (बागों) के बीच हमने (अनाज की) खेती (अर्थात कृषि-योग्य ज़मीन) रख दी थी. 33 दोनों बाग़ ख़ूब फले-फूले, (फलदार होने में) कोई कमी बाक़ी नहीं रही. दोनों बागों के बीच में से हमने एक नहर प्रवाहित कर दी थी. 34 इस प्रकार (उन बागों) से उसे भरपूर उत्पादन हुआ. वह अपने साथी से बात करते हुए बोला, मैं तुझसे अधिक धनवान हूँ और लोगों की संख्या के मामले में भी मैं तुझसे अधिक सामर्थ्यवान हूँ. 35 फिर उसने अपने बाग़ में प्रवेश किया और (उसकी कृतघ्नता और उसका घमंड ऐसा था कि वास्तव में) वह अपने आप पर अत्याचार कर रहा था. मैं नहीं समझता कि यह धन कभी नष्ट हो जाएगा. 36 और मुझे नहीं लगता कि क़यामत कभी आएगी. और यदि मैं अपने रब की ओर लौटा भी दिया गया तो अवश्य इससे अधिक अच्छा स्थान मुझे प्राप्त होगा.

37 उसके साथी ने बात करते हुए कहा, क्या तू उस ज़ात के ही प्रति कृतघ्नता का परिचय देता है जिसने तुझे मिट्टी से फिर वीर्य के बूँद से पैदा किया और पूरा आदमी बनाकर खड़ा किया. 38 जहाँ तक मेरा संबंध है, (मैं मानता हूँ) मेरा रब अल्लाह है. मैं अपने रब के साथ किसी को साझी नहीं ठहराता. 39 जब तूने अपने बाग़ में प्रवेश किया तो तूने क्यों न कहा, जो अल्लाह चाहे (वही होता है) अल्लाह के बिना किसी में कोई क्षमता नहीं.

(उसने आगे कहा,) यदि तुम देखते हो कि मैं संपत्ती और संतान में तुमसे कम हूँ. 40 तो असंभव नहीं कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से बेहतर बाग़ प्रदान करे. और तेरे बाग़ पर

आसमान से कोई आपदा भेज दे जिससे वह बाग़ चटियल मैदान बनकर रह जाए. 41 या उसका पानी सूख जाए, फिर तुम उसे किसी तरह न पा सको.

42 और (ऐसा ही हुआ कि) उसका सारा फल बरबाद कर दिया गया. तो जो कुछ उसने उसमें लागत लगायी थी उस पर हाथ मलता रह गया, और उसके (अंगूर के) बाग़ का (यह हाल हुआ कि) वह अपनी टट्टियों पर ढहा पड़ा था. वह कहने लगा, काश! मैं अपने रब के साथ किसी को साझी न ठहराता. 43 कोई जत्था ऐसा न था जो अल्लाह के विरुद्ध जाकर उसकी सहायता करता और वह ख़ुद भी अपने बचाव के लिए कुछ न कर सका. 44 (तब मालूम हुआ कि) यहाँ सारा अधिकार उस सच्ची ज़ात अल्लाह को ही प्राप्त है. वह सबसे अच्छा बदला देने वाला है. वही सर्वश्रेष्ठ परिणाम निश्चित करने वाला है.

45 (पैग़ंबर!) इन्हें दुनिया के जीवन का उदाहरण सुनाओ. जैसे कि पानी जिसे हमने आसमान से उतारा तो उससे धरती की वनस्पति ख़ूब घनी हो गयी, फिर वही वनस्पति भुस बनकर रह गयी जिसे हवाएँ उड़ाते फिरती हैं. और अल्लाह को हर चीज़ पर संपूर्ण प्रभुत्व प्राप्त है. 46 संपत्ती और संतान सांसारिक जीवन की एक शोभा है. लेकिन तुम्हारे रब की दृष्टि में वे सत्कर्म अधिक उत्तम हैं, जिनका बदला हमेशा बाक़ी रहने वाला है. और वह सत्कर्म आशा के भी उत्तम माध्यम हैं.

47 जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे और तुम (उस दिन) धरती को पूर्णतः खुली हुई देखोगे (अर्थात समतल). हम उन सबको इकट्ठा करेंगे. तो हम उनमें से किसी को न छोड़ेंगे.

48 तब सभी लोग तेरे रब के सामने पंक्ति में लाए जाएंगे. (ख़ुदा लोगों से कहेगा,) तुम हमारे पास आ गए, जिस प्रकार हमने तुम्हारा पहली बार सृजन किया था. लेकिन तुमने तो यह समझ लिया था कि हम तुम्हारे लिए कोई वादा नहीं ठहराएंगे.

49 और (लोगों का) कर्म-पत्र (उनके) सामने रखा जाएगा. और तुम अपराधियों को देखोगे कि उसमें जो कुछ है उससे वे डरते होंगे. और वे कहेंगे हाय, हमारा दुर्भाग्य! कैसा (अद्भुत) है यह कर्म-पत्र! इसने न छोटी बात को छोड़ा है और न बड़ी बात को. जो कुछ उन्होंने किया था वह सब अपने सामने पाएंगे. (पैग़ंबर!) तुम्हारा रब किसी पर भी तनिक ज़ुल्म नहीं करेगा.

50 याद करो, जब हमने फ़रिश्तों से कहा, कि आदम को सजदा करो. तो उन्होंने सजदा किया, मगर इबलीस ने नहीं किया. वह जिन्नों में से था. उसने अपने रब के आदेश की अवज्ञा की. तो अब क्या तुम मुझे छोड़कर उस (अवज्ञाकारी) को और उसकी संतान को अपना संरक्षक बनाते हो, जबकि वे तुम्हारे शत्रु हैं. यह बड़ा ही बुरा विकल्प है जिसे ज़ालिम लोग अपना रहे हैं.

51 (ख़ुदा ने कहा,) मैंने उन्हें न आसमान तथा ज़मीन का सृजन करते समय बुलाया था और न स्वयं उनका सृजन करने के समय बुलाया था. मैं ऐसा नहीं था कि मुझे पथभ्रष्ट करने वालों को अपना सहाय्य-कर्ता बनाने की ज़रूरत थी.

52 उस दिन जबकि अल्लाह उनसे कहेगा, जिन्हें तुमने मेरा साझीदार समझ रखा था, उन्हें पुकारो, तो वे उन्हें पुकारेंगे, लेकिन वे उन्हें कोई उत्तर नहीं देंगे. हम उन (झूठे उपास्यों तथा उनके बंदों) के बीच (शत्रुत्व की) आड़ खड़ी कर देंगे. 53 उस दिन अपराधी लोग आग को देखेंगे और समझ लेंगे कि उन्हें उसी में गिरना है और वे उससे बचने के लिए कोई मार्ग न पाएंगे.

54 हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर मिसाल तरह-तरह से बयान की है. लेकिन इंसान बड़ा ही झगड़ालू सिद्ध हुआ है.

55 लेकिन लोगों के सामने जब मार्गदर्शन आया तो उसे मानने और अपने रब की क्षमा चाहने से लोगों को इस चीज़ के सिवा अन्य किसी चीज़ ने नहीं रोका कि (वे मानों

प्रतीक्षा में हैं कि) पहले गुज़रे हुए (इन्कारियों) के साथ जो हुआ उनके साथ भी वही हो या वे अज़ाब को सामने आते हुए देख लें. 56 पैगंबरों को हम इस कार्य के सिवा किसी और उद्देश्य के लिए नहीं भेजा करते कि वे शुभ-सूचना और चेतावनी देने वाले होते हैं. लेकिन जो लोग सत्य का इन्कार करने वाले होते हैं, वे असत्य के सहारे झूठा झगड़ा करते हैं, ताकि उसके माध्यम से सत्य को नीचा कर दें. उन लोगों ने मेरे संदेशों का और जो चेतावनियाँ उन्हें दी गयी थीं उनका मज़ाक़ बना लिया.

57 उससे बड़ा अत्याचारी और कौन होगा जिसे उसके रब के संदेश सुना कर उपदेश दिया जाए और वह उनसे मुँह फेरने लगे और उसे भूल जाए जो उसके हाथों ने आगे भेजा है. ऐसे लोगों के दिलों पर हमने परदे डाल दिए हैं कि वे इसे न समझें. और उनके कानों में बोझ पैदा कर दिया है. तुम उन्हें सन्मार्ग की ओर कितना ही बुलाओ, वे कभी सन्मार्ग पर आने वाले नहीं हैं.

58 तुम्हारा रब बड़ा क्षमा करने वाला और दया करने वाला है. यदि वह उनकी करतूतों पर (तुरंत) पकड़ना चाहता तो उन पर शीघ्र ही यातना भेज देता. लेकिन उनके लिए वादे का एक समय निश्चित है. और वे उसके मुक़ाबले में शरण का कोई स्थान न पाएंगे. 59 और यह नगर हैं जिनके बाशिंदों को हमने नष्ट कर दिया था, जबकि वे अत्याचारी हो गए थे. हमने उनके विनाश के लिए एक समय निश्चित कर रखा था.

60 याद करो, जब मूसा ने अपने शिष्य से कहा था कि जब तक मैं दो नदियों के संगम तक न पहुँच जाऊँ चलता रहुँगा (अर्थात अपनी यात्रा जारी रखूँगा) अन्यथा मैं एक दीर्घ समय तक चलता ही रहूँगा (अर्थात मुझे उसके लिए बरसा-बरस तक ही चलना क्यों न पड़े). 61 तो जब वे दोनों नदियों के संगम पर पहुँचे तो वे अपनी मछली भूल गये और उस मछली ने दरिया में (तेज़ी से) सुरंग की तरह अपना रास्ता पकडा. 62 फिर जब

वे आगे बढ़े तो मूसा ने अपने शिष्य से कहा, हमारा नाश्ता लाओ. इस यात्रा से हमें बड़ी थकान पहुँची है.

63 शिष्य ने कहा, क्या आपने देखा, जब हम उस चट्टान के पास ठहरे हुए थे तो मुझे मछली का ध्यान न रहा और शैतान ही ने मुझे इस प्रकार भुला दिया कि मैं उसका (आपसे) ज़िक्र करता. और मछली अजीब तरीक़े से निकल कर नदी में चली गयी. 64 मूसा ने कहा, उसी अवसर की तो हमें तलाश थी. फिर वे दोनों अपने क़दमों के निशान देखते हुए वापस लौटे. 65 तो उन्होंने वहाँ हमारे बंदों में से एक बंदे को पाया जिसे हमने अपने पास से कृपा प्रदान की थी. जिसे हमने अपने पास एक ज्ञान सिखाया था.

66 मूसा ने उससे कहा, क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ, ताकि आप मुझे उस ज्ञान में से सिखा दें जो आपको सिखाया गया है? 67 उसने कहा, तुम मेरे साथ (रहते हुए) धैर्य नहीं रख पाओगे. 68 और तुम उस चीज़ पर धैर्य से कैसे काम ले सकते हो जो तुम्हारे ज्ञान की परिधि से बाहर है? 69 (इस पर) मूसा ने कहा, यदि अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे धैर्य से काम लेने वाला पाओगे. मैं किसी मामले में आपकी अवज्ञा नहीं करूँगा. 70 उसने कहा, अच्छा यदि तुम मेरे साथ चलते हो तो मुझसे कोई बात न पूछना, जब तक कि मैं स्वयं उसका आपसे उल्लेख न कर दूँ.

71 फिर वे दोनों चले, यहाँ तक कि वे एक नाव में सवार हो गए. तो उस व्यक्ति ने नाव में छेद कर दिया. (इस पर) मूसा ने कहा, क्या आपने इस नाव में इसलिए छेद किया है कि नाव वालों को डुबो दें. यह तो आपने एक भयानक कृत्य किया है. 72 उस व्यक्ति ने कहा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ (रहते हुए) धैर्य न रख सकोगे? 73 (इस पर) मूसा ने कहा, भूल-चूक पर मुझे न पकड़िए और मेरे मामले में आप मुझ पर सख़्ती न कीजिए. 74 फिर वे दोनों चले, यहाँ तक कि वह एक लड़के से मिले. तो उस व्यक्ति ने उस लड़के को मार डाला. (इस पर) मूसा ने कहा, आपने एक निरपराध

की जान ले ली, हालाँकि उसने किसी की हत्या नहीं की थी. यह आपने बहुत ही बुरा काम किया है.

पारा – 16

75 उस व्यक्ति ने कहा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ (रहते हुए) सब्र नहीं कर सकते? 76 (इस पर) मूसा ने कहा, यदि इसके बाद मैं आपसे कुछ पूछूँ, तो आप मुझे अपने साथ न रखें. तब मेरी ओर से आप पूरी तरह उज्र को पहुँच चुके होंगे (अर्थात तब सबब प्रस्तुत करने की मेरी हद आ चुकी होगी). 77 फिर वे आगे चले, यहाँ तक कि एक बस्ती में पहुँचे और वहाँ के लोगों से उन्होंने खाना माँगा. लेकिन बस्ती वालों ने उनका अतिथि सत्कार करने से इन्कार कर दिया. (उस बस्ती में) उन्होंने एक दीवार देखी जो गिरने को थी. तो उस व्यक्ति ने उस दीवार को सीधा खड़ा कर दिया. (इस पर) मूसा ने कहा, यदि आप चाहते तो इस (काम) के एवज़ कुछ पारिश्रमिक ले सकते. 78 उस व्यक्ति ने कहा, बस अब मेरे और तुम्हारे बीच जुदाई है. मैं तुम्हें उन बातों की वास्तविकता बता देता हूँ जिन पर तुम सब्र न कर सके.

79 उस नाव का मामला यह है कि वह गरीब आदमियों की थी जो दरिया में काम करते थे. तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ, क्योंकि आगे एक ऐसे बादशाह का श्रेत्र था जो प्रत्येक नाव को बलपूर्वक छीन कर ले लेता था.

80 और उस लड़के का मामला यह है कि उसके माँ-बाप ईमान वाले थे. हमें संदेह हुआ कि वह बड़ा होकर उद्दंडता का परिचय देगा और सत्य का इन्कार करने वाला बनकर उन्हें कष्ट पहुँचाएगा. 81 तो हमने चाहा कि उनका रब उन्हें इसके बदले ऐसी संतान दे जो आत्मविकास में इससे अच्छी हो और स्नेह करने वाली हो.

82 और इस दीवार का मामला यह है कि वह शहर के दो अनाथ लड़कों की है. इस दीवार के नीचे इन बच्चों के लिए एक ख़ज़ाना दफ़न है और उनका बाप एक नेक

आदमी था. इसलिए तुम्हारे रब ने चाहा कि वे परिपक्वता को पहुँचकर अपना ख़ज़ाना निकाल लें. यह तुम्हारे रब की कृपा के कारण किया गया है. मैंने यह अपनी मर्ज़ी से नहीं किया. यह है वास्तविकता उन बातों की जिन पर तुम धैर्य न रख सके.

83 (पैग़ंबर!) ये लोग तुमसे ज़ुल-क़रनैन के बारे में पूछते हैं. उनसे कहो, मैं उसका कुछ हाल तुम्हें सुनाता हूँ. 84 हमने उसे धरती पर सत्ता प्रदान की थी. हमने उसे हर प्रकार के साधन दे रखे थे.

85 वह (पहले पश्चिम की ओर) अपनी मुहिम पर निकला. 86 यहाँ तक कि वह सूरज के डूबने की सीमा तक पहुँच गया (अर्थात धरती की पश्चिमी छोर तक जा पहुँचा). उसने सूरज को देखा कि वह एक काले पानी में डूब रहा है. वहाँ उसे एक क़ौम मिली. हमने कहा, ऐ ज़ुलक़रनैन! (तुम्हें यह सामर्थ्य प्राप्त है कि) तुम चाहो तो इन्हें पीड़ा पहुँचाओ और चाहो तो उनके साथ अच्छा व्यवहार करो. 87 (इस पर) उसने कहा, उनमें से जो ज़ुल्म करेगा उसे हम सज़ा देंगे, फिर वह (अत्याचारी) अपने रब के पास पहुँचाया जाएगा. फिर उसका रब उसको अधिक कठोर सज़ा देगा. 88 और जो व्यक्ति ईमान लाएगा और भले कर्म करेगा उसके लिए (उसके रब के पास) अच्छा प्रतिफल है. और हम भी उसके साथ नरमी का मामला करेंगे.

89 फिर वह (एक दूसरी मुहिम पर) निकला. 90 यहाँ तक कि सूरज के निकलने की सीमा तक जा पहुँचा (अर्थात धरती की पूर्वी छोर तक जा पहुँचा). वहाँ उसने सूरज को ऐसी क़ौम पर उदय होते हुए पाया जिसके लिए हमने धूप से बचने का कोई सामान नहीं किया था. 91 तो यह था उनका मामला और हम ज़ुलक़रनैन के हालात से पूर्णतः अवगत हैं.

92 फिर वह एक (और मुहिम पर) निकला. 93 यहाँ तक कि जब वह दो पहाड़ों के बीच पहुँचा तो उनके पास उसने एक क़ौम को पाया जो मुश्किल ही से कोई बात

समझती थी. 94 (उस क़ौम के) लोगों ने कहा, ऐ ज़ुलक़रनैन! याजूज और माजूज इस भू-भाग में उत्पात मचाते हैं. तो क्या हम तुम्हें कोई टॅक्स इस काम के लिए दें कि तुम हमारे और उनके बीच कोई रोक बना दो.

95 (इस पर) ज़ुलक़रनैन ने कहा, जो कुछ मेरे रब ने मुझे दे रखा है वह बहुत है. तुम बस मेहनत से मेरी सहायता करो, मैं तुम्हारे और उनके बीच एक दीवार बना दूँगा. 96 तुम लोहे के तख़्ते लाकर मुझे दो. फिर जब उसने दोनों (पहाड़ों) के बीच के रिक्त स्थान को भर दिया तो उसने लोगों से कहा, अब आग दहकाओ, फिर जब (यह लोहे की दीवार) बिल्कुल आग की तरह लाल हो गयी तो उसने कहा लाओ. अब मैं उस पर पिघला हुआ ताँबा उंडेलूँगा. 97 (अब यह दीवार ऐसी बन चुकी थी कि) याजूज माजूज न उस पर चढ़ सकते थे और न उसमें कोई छेद कर सकते थे. 98 ज़ुलक़रनैन ने कहा, यह मेरे रब की कृपा है. लेकिन जब मेरे रब के वादे का समय आएगा तो वह इसे ढहाकर सपाट कर देगा. और मेरे रब का वादा सच्चा है.

99 और उस दिन (अर्थात क़यामत के दिन) हम लोगों को छोड़ देंगे कि (समुद्र की) लहरों की तरह वे एक-दूसरे में घुसेंगे. और सूर फूँका जाएगा तो हम सारे इंसानों को एक साथ जमा करेंगे (अर्थात समस्त मानवीय इतिहास के सारे इंसान). 100 उस दिन हम जहन्नम को सत्य का इन्कार करने वालों के समक्ष लाएंगे. 101 उन (इन्कारियों) के सामने जो मेरे उपदेश के प्रति अँधे बने हुए थे और कुछ सुनने के लिए तैयार ही न थे.

102 क्या सत्य का इन्कार करने वाले यह समझते हैं कि मुझे छोड़कर मेरे बंदों को अपना कार्यसाधक बना लें? हमने ऐसे इन्कारियों की मेहमानी के लिए जहन्नम तैयार कर रखी है.

103 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, क्या हम तुम्हें बताएँ कि कौन लोग अपने कार्यों के कारण सबसे ज़्यादा घाटा उठाने वाले हैं? 104 वे लोग! जिनके सारे प्रयास इसी दुनिया

की ज़िंदगी में अकारथ हो गए, लेकिन वे समझते रहे कि वह बहुत अच्छा काम कर रहे हैं.

105 यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब की निशानियों का और उससे मुलाक़ात का इन्कार किया. तो उनका किया-धरा नष्ट हो गया. क़यामत के दिन हम उन्हें कोई महत्त्व नहीं देंगे. 106 जहन्नम उनका बदला है, इस कारण कि उन्होंने सत्य को मानने से इन्कार किया और मेरे संदेशों तथा संदेशवाहकों का उपहास किया.

107 अलबत्ता वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने भले कर्म किए उनकी मेहमानी के लिए जन्नत के बाग़ हैं.108 जिसमें वे सदैव रहेंगे, वह वहाँ से कभी निकलना न चाहेंगे.

109 (पैग़ंबर!) कहो, यदि सारे समुद्र मेरे रब की बातें (अर्थात रब की महानता) लिखने के लिए स्याही हो जाएँ, तो समुद्र समाप्त हो जाएंगे, लेकिन मेरे रब की बातें समाप्त नहीं होंगी. फिर हम समुद्र पर (नए) समुद्र ही क्यों न मिलाते रहें (तब भी वह समाप्त नहीं होंगी).

110 (पैग़ंबर!) कहो कि मैं तो एक इंसान हूँ तुम ही जैसा. लेकिन मुझ पर यह आसमानी संदेश प्रकट होता है कि तुम्हारा ख़ुदा तो बस एक ही ख़ुदा है. तो जिसे अपने रब से मिलने की आशा है, उसे चाहिए कि वह भले कर्म करे और अपने रब की उपासना में किसी को साझीदार न बनाए.

सूरह–19. मरयम

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 काफ़० हा० या० ऐन० सॉद०. 2 यह उस कृपा का वर्णन है जो तुम्हारे रब ने अपने बंदे ज़करिया पर की. 3 जब उसने अपने रब को चुपके-चुपके पुकारा.

4 ज़करिया ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरी हड्डियाँ घुल चुकी हैं और मेरे सर में बालों की सफेदी फैल गयी है. और ऐ मेरे रब! मैं तुझसे माँगकर कभी वंचित न रहा. 5 ज़करिया ने
आगे कहा, मैं अपने बाद अपने संबंधियों की ओर से आशंकित हूँ और मेरी पत्नी तो बाँझ है. तो (ऐ मेरे रब!) तू मुझे अपनी (विशेष) कृपा से एक उत्तराधिकारी प्रदान कर दे.
6 जो मेरा स्थान ग्रहण करने वाला भी हो और याक़ूब के घराने को आगे बढ़ाने वाला भी. और ऐ मेरे रब! उसे अपना प्रिय बना.

7 (इस पर उत्तर दिया गया) ऐ ज़करिया! हम तुम्हें एक लड़के की शुभ-सूचना देते हैं जिसका नाम यहया होगा. हमने इससे पहले इस नाम का कोई व्यक्ति नहीं बनाया. 8
(इस पर) ज़करिया ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा, जबकि मेरी पत्नी बाँझ है और मैं बुढ़ापे की अंतिम अवस्था को पहुँच चुका हूँ.

9 (इस पर उत्तर मिला) ऐसा ही होगा, तेरा रब फ़रमाता है कि यह मेरे लिए सहज बात है. मैंने इससे पहले तुम्हारा सृजन किया है, जबकि तुम कुछ भी न थे. 10 ज़करिया
ने (आगे) कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी निश्चित कर दे. फरमाया, तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम लगातार तीन रात लोगों से बात न कर सकोगे, यद्यपि तुम स्वस्थ
होंगे. 11 फिर ज़करिया उपासना-स्थल से निकल कर अपनी क़ौम के पास आया और उसने इशारों में कहा सुबह और शाम अल्लाह का महिमागान करो.

12 ऐ यहया! किताब को दृढ़तापूर्वक थाम लो. हमने उसे बचपन में ही गहरी समझ
प्रदान कर दी थी. 13 और हमने उसे अपनी ओर से नम्रता और मन की पवित्रता प्रदान

की थी. और वह ख़ुदा के प्रति सदैव सचेत (एवं उत्तरदायी) रहने वाला था. 14 और वह अपने माता-पिता के प्रति (सदैव) कर्तव्यदक्ष था. न वह विद्रोही (स्वभाव का) था और न अवज्ञाकारी था. 15 सलामती है उस पर जिस दिन वह पैदा हुआ और जिस दिन वह मरेगा और जिस दिन वह जीवित करके उठाया जाएगा.

16 (पैग़ंबर!) इस किताब के द्वारा मरियम को याद करो. जब वह अपने लोगों से अलग होकर पूर्व की ओर एक स्थान पर चली गयी. 17 फिर उसने अपने आपको (अपने) लोगों से परदे में कर लिया. तब हमने उसके पास अपना फ़रिश्ता भेजा जो उसके सामने पूरी तरह मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ. 18 (उसे देखकर) मरियम बोल उठी, मैं तुझसे कृपावंत अल्लाह की शरण माँगती हूँ, (मेरे निकट न आना) यदि तू अल्लाह से डरने वाला है. 19 फ़रिश्ते ने कहा, मैं तुम्हारे रब का भेजा हुआ आया हूँ. और इसलिए कि तुम्हें पाक लड़का प्रदान करूँ. 20 (इस पर) मरयम ने कहा, मुझे लड़का कैसे हो सकता है, जबकि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं है और मैं कोई बदकार औरत नहीं हूँ. 21 (इस पर) फ़रिश्ते ने कहा, ऐसा ही होगा, तेरा रब फ़रमाता है कि ऐसा करना मेरे लिए बिल्कुल आसान है. (हम ऐसा इसलिए करेंगे,) ताकि उस लड़के को लोगों के लिए एक निशानी बनाएँ और अपनी ओर से एक कृपा. और यह वह बात है जिसका फ़ैसला हो चुका है.

22 फिर (यह हुआ कि) मरयम को उस बच्चे का गर्भ रह गया. वह उस गर्भ को लिए हुए एक दूरवर्ती स्थान पर चली गयी. 23 फिर प्रसव-पीड़ा उसे एक खजूर के वृक्ष के पास ले आयी. मरयम कहने लगी, काश मैं इससे पहले ही मर जाती और मेरा कोई नाम-व-निशान न रहता.

24 फिर फ़रिश्ते ने उसे उसके नीचे की ओर से पुकार कर कहा, दुःखी न हो, तेरे रब ने तेरे नीचे (की ओर) एक स्रोत जारी कर दिया है. 25 तू खजूर के वृक्ष के तने को

पकड़ कर हिला उससे तेरे ऊपर ताज़ा पकी हुई खजूरें टपक पड़ेंगी. 26 तो खा और पी और अपनी आँखें ठंडी कर. फिर यदि कोई आदमी तुझे नज़र आए (जो तुझसे बात करना चाहता हो उसे इशारे से) कह देना कि मैंने कृपावंत अल्लाह के लिए व्रत ले रखा है, तो मैं आज किसी से न बोलूँगी.

27 फिर वह उस बच्चे को गोद में उठाए हुए अपनी क़ौम के पास आयी. (तो उसके साथ बच्चे को देखकर) वे कहने लगे, ऐ मरयम! यह तो तूने बड़ा अनर्थ कर डाला. 28 ऐ हारून की बहन! न तेरा बाप कोई बुरा आदमी था और न तेरी माँ कोई बदकार औरत थी.

29 फिर मरयम ने बच्चे की ओर इशारा कर दिया (कि तुम इस बच्चे से ही जान लो, जो जानना चाहते हो) तो लोगों ने कहा, हम इससे कैसे बात करें जो कि गोद का बच्चा है. 30 बच्चा बोल उठा, मैं अल्लाह का बंदा हूँ. उसने मुझे किताब दी है और मुझे (अपना) संदेशवाहक बनाया है. 31 (मरयम के बेटे ईसा ने आगे कहा,) मैं जहाँ कहीं भी हूँ अल्लाह ने मुझे बरकत वाला बनाया है. और उसने मुझे नमाज़ और ज़कात का आदेश दिया है, जब तक मैं जीवित रहूँ. 32 और उसने मुझे मेरी माँ के प्रति कर्तव्यनिष्ठ बनाया है. उसने मुझे विद्रोही तथा अभागा नहीं बनाया है. 33 सलामती है मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मैं मरूँगा और जिस दिन मैं दोबारा जीवित करके उठाया जाऊँगा.

34 ऐसा था मरियम का बेटा ईसा, यह है उसके संबंध से सत्य कथन, जिसके संबंध से लोग संदेह में ग्रस्त हैं. 35 अल्लाह ऐसा नहीं कि वह कोई संतान बनाए, वह पाक ज़ात है. जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो कहता है कि हो जा, तो वह हो जाता है.

36 (ईसा ने कहा था,) निस्संदेह अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा रब भी. तो तुम उसी की उपासना करो यही सीधा मार्ग है. 37 फिर उनके कई समुहों ने परस्पर मतभेद किया. तो जिन लोगों ने सत्य को मानने से इन्कार कर दिया उन लोगों के लिए वह समय तबाही का होगा, जब वे उस भयानक दिन को देखेंगे. 38 जिस दिन ये लोग हमारे पास आएंगे. वे भली-भाँति सुन रहे होंगे और भली-भाँति देख रहे होंगे. लेकिन आज ये ज़ालिम स्पष्ट पथभ्रष्टता में पड़े हुए हैं. 39 इन लोगों को पश्चात्ताप के दिन से सचेत कर दो. जब मामले का फ़ैसला कर दिया जाएगा. (उनका हाल यह है कि) वे ग़फ़लत में पड़े हुए हैं और ईमान नहीं ला रहे हैं.

40 अंततः हम ही धरती तथा उसकी सारी चीज़ों के वारिस होंगे. और सब लोग हमारे ही ओर लौटाए जाएंगे.

41 (पैग़ंबर!) इस किताब के माध्यम से इब्राहीम को याद करो. निस्संदेह वह एक सच्चा इंसान तथा (हमारा) संदेशवाहक था. 42 जब उसने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे बाप! आप ऐसी चीज़ को क्यों पूजते हैं जो न कुछ सुन सकती है और न देख सकती है और न आपका कोई काम बना सकती है. 43 (इब्राहीम ने आगे कहा,) ऐ मेरे बाप! मेरे पास ऐसा ज्ञान आया है जो आपके पास नहीं आया है. तो आप मेरे कहने पर चलें, मैं आपको सीधा मार्ग दिखाऊँगा. 44 ऐ मेरे बाप! आप शैतान की उपासना न करें. निस्संदेह शैतान तो कृपावंत अल्लाह का अवज्ञाकारी है. 45 (इब्राहीम ने आगे कहा,) ऐ मेरे बाप! मुझे आशंका है कि तुम्हें कृपावंत अल्लाह की यातना पकड़ ले, और आप (हमेशा के लिए) शैतान के साथी बन जाएंगे.

46 (इस पर) बाप ने कहा, ऐ इब्राहीम! क्या तू मेरे उपास्यों से फिर गया है? यदि तू बाज़ न आया तो मैं तुझे पत्थरों से मार डालूँगा. तू मुझसे हमेशा के लिए दूर हो जा. 47 (इस पर) इब्राहीम ने कहा, आप पर सलामती हो. मैं अपने रब से तुम्हारे लिए क्षमा

की प्रार्थना करूँगा. निस्संदेह, मेरा रब मुझ पर मेहरबान है. 48 मैं तुम लोगों को छोड़ता हूँ और उन्हें भी जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो. मैं तो अपने रब ही को पुकारूँगा. मुझे आशा है कि मैं अपने रब को पुकार कर वंचित नहीं रहुँगा.

49 तो जब वह उन लोगों से और उनसे जिन्हें वे अल्लाह को छोड़कर पुकारते थे अलग हो गया, तो हमने उसे इसहाक़ और याक़ूब प्रदान किए. और हमने उनमें से हर एक को अपना पैग़ंबर बनाया. 50 और उन्हें अपनी दयालुता से (हिस्सा) दिया और उन्हें सच्ची एवं उच्च ख्याति प्रदान की.

51 इस किताब के माध्यम से मूसा को याद करो. वह (हमारा) चुना हुआ (बंदा) था और वह (हमारे द्वारा) भेजा हुआ संदेशवाहक था. 52 हमने उसे तूर (पर्वत) की दाहिनी ओर से पुकारा. हमने उससे रहस्य की बातें करने के लिए सामीप्य प्रदान किया. 53 और अपनी कृपा से उसके भाई हारून को पैग़ंबर बनाकर उसे (उसके मिशन में सहायक) प्रदान किया.

54 इस किताब के माध्यम से इसमाईल को याद करो. वह वादे का सच्चा था और वह (हमारे द्वारा) भेजा हुआ संदेशवाहक था. 55 वह अपने लोगों को नमाज़ और ज़कात का आदेश देता था और वह अपने रब की नज़र में एक पसंदीदा (बंदा) था. 56 और इस किताब के माध्यम से इदरीस को याद करो. वह एक सच्चा इंसान और (हमारा) संदेशवाहक था. 57 हमने उसे उच्च प्रतिष्ठा तक पहुँचाया था.

58 ये पैग़ंबरों में से कुछ लोग हैं जिन पर अल्लाह ने कृपा की, वे आदम की संतान में से और उन लोगों की संतान में से थे जिन्हें हमने नूह के साथ नाव पर सवार किया था और वे इब्राहीम की संतान में से और इसराईल की संतान में से थे. वे उन लोगों में से थे जिन्हें हमने सीधा रास्ता दिखाया था और (अपने कार्य के लिए) चुना था. उनका हाल यह था कि जब उन्हें रहमान के संदेश सुनाए जाते तो वे रोते हुए सजदे में गिर जाते थे.

59 फिर उनके बाद ऐसे बुरे लोग उनके उत्तराधिकारी हुए जिन्होंने नमाज़ को पूर्णतः दुर्लक्षित कर दिया (अर्थात जिनके जीवन में नमाज़-रूपी अल्लाह की याद नहीं रही) और वे (तुच्छ) इच्छाओं के पीछे चल पड़े, तो बहुत जल्द अपने विनाश से ऐसे लोगों का सामना होगा. 60 सिवा उसके जिसने पश्चात्ताप किया और ईमान ले आया और उसने अच्छे काम किए. तो ऐसे ही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे. उन पर तनिक भी अत्याचार नहीं किया जाएगा.

61 उन (सदाचारियों) के लिए सदैव रहने वाले बाग़ हैं जिसका कृपावंत अल्लाह ने अपने बंदों से परोक्षतः वादा कर रखा है. और निश्चय ही यह वादा पूरा होकर रहना है.

62 वे जन्नत में कोई बेहूदा बात नहीं सुनेंगे, वहाँ सुनेंगे तो सिर्फ़ शांतिपूर्ण (peaceful) बात सुनेंगे. वहाँ उनकी जीविका उन्हें सुबह व शाम बराबर मिलती रहेगी. 63 ऐसी है वह जन्नत जिसका वारिस हम अपने बंदों में से उस इंसान को बनाएंगे जो (हमारे प्रति) सचेत (एवं उत्तरदायी) बना रहा.

64 (फ़रिश्तों ने कहा, ऐ मुहम्मद!) हम तुम्हारे रब के हुक्म के बिना नहीं उतरते जो कुछ हमारे आगे है और जो कुछ हमारे पीछे है और जो कुछ उसके बीच है हर चीज़ का मालिक वही है. और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं है. 65 वह रब है आसमानों तथा धरती का और उनका भी जो कुछ उनके बीच में है. तो तुम उसी की उपासना करो और उसी की उपासना पर जमे रहो. क्या तुम उसके समकक्ष गुणों वाला जानते हो? 66 इंसान कहता है, क्या जब मैं मर जाऊँगा, तो फिर जीवित करके उठाया जाऊँगा? 67 क्या इंसान को यह याद नहीं आता? हम उसका पहले सृजन कर चुके हैं, जब वह कुछ भी न था.

68 (पैग़ंबर!) तुम्हारे रब की क़सम! (इंसाफ़ के दिन) हम अवश्य उन्हें और उनके साथ शैतानों को भी घेर लाएंगे. फिर उन्हें जहन्नम के पास इस प्रकार हाज़िर करेंगे कि वह घुटनों के बल गिरे होंगे.

69 फिर हम प्रत्येक समूह में से उन लोगों को अलग करेंगे जो रहमान के मुक़ाबले में सबसे अधिक विद्रोही बने हुए थे. 70 हम उन लोगों को भली-भाँति जानते हैं जो जहन्नम में डाले जाने के सर्वाधिक पात्र हैं. 71 तुममें से ऐसा कोई नहीं होगा जिसका जहन्नम पर से गुज़र न हो. यह एक निश्चित बात है जिसे पूरा करना तेरे रब के ज़िम्मे है. 72 फिर हम उन लोगों को बचा लेंगे जो (हमारे प्रति) सचेत (एवं उत्तरदायी) थे. और अत्याचारियों को उसमें गिरा हुआ छोड़ देंगे.

73 जब हमारे स्पष्ट संदेश सुनाए जाते हैं तो सत्य का इन्कार करने वाले ईमान लाने वालों से कहते हैं, (बताओ,) हम दोनों समूहों में कौन उत्तम स्थिती में है और किसकी मजलिस ज़्यादा शानदार है. 74 इनसे पहले हमने कितनी ही क़ौमों को नष्ट कर दिया जो इन (इन्कार करने वालों) से अधिक संसाधन वाली तथा वैभवशाली थीं.

75 कहो, जो व्यक्ति पथभ्रष्टता में लिप्त होता है तो कृपावंत ख़ुदा उसको ढील दिया करता है, यहाँ तक कि ऐसे लोग वह चीज़ देख लेते हैं जिसका उनसे वादा किया गया है. चाहे वह (क़यामत पूर्व कोई) यातना होगी या फिर स्वयं क़यामत की घड़ी होगी. तब उन्हें ज्ञात हो जाएगा कि किसकी दशा बुरी है और किसका जत्था कमज़ोर.

76 जो लोग सन्मार्ग को अपना लेते हैं अल्लाह उनके मार्गदर्शन में अभिवृद्धि प्रदान करता है. बाक़ी रह जाने वाले सत्कर्म ही तुम्हारे रब के यहाँ बदले तथा अंतिम परिणाम की दृष्टि से उत्तम हैं.

77 तुमने उस व्यक्ति का क्या कभी (चिंतनपूर्वक) निरीक्षण किया जिसने हमारे संदेशों का इन्कार किया. वह कहता है, मुझे संपत्ती और संतान मिलकर रहेंगे. 78 क्या

उसने अदृश्य (भविष्य) में झाँक कर देख लिया है या उसने कृपावंत ख़ुदा से कोई वादा ले रखा है. 79 कदापि नहीं, जो कुछ वह कहता है उसे हम लिख लेंगे और उसके लिए यातना बढ़ाते चले जाएंगे. 80 और जिन चीज़ों का वह दावेदार है उसके हम वारिस होंगे और वह हमारे पास अकेला आएगा.

81 उन्होंने अल्लाह को छोड़कर कुछ उपास्य बना रखे हैं, ताकि वे उनके लिए सहायक बनें. 82 कदापि नहीं, बल्कि वे (उपास्य) इन (उपासकों) की उपासना का इन्कार करेंगे और इन (उपासकों) के विरोधी बन जाएंगे.

83 क्या तुमने इस बात का (चिंतनपूर्वक) निरीक्षण नहीं किया कि हमने इन सत्य के इन्कारियों पर शैतानों को छोड़ रखा है. जो इन्हें (सत्य के विरोध पर) ख़ूब-ख़ूब उकसा रहे हैं?

84 तो तुम उनके लिए जल्दी न करो, हम उनके दिन गिन रहे हैं. 85 जिस दिन हम डरने वालों को कृपावंत के पास मेहमान की तरह इकट्ठा करेंगे. 86 और अपराधियों को जहन्नम की ओर प्यासे हाँक ले जाएंगे. 87 तब किसी को कोई सिफ़ारिश का अधिकार प्राप्त न होगा, अलावा उसके जिसने रहमान के पास से अनुमति प्राप्त की होगी.

88 और ये लोग कहते हैं कि कृपावंत ख़ुदा ने किसी को बेटा बनाया है. 89 तुमने बहुत ही भयानक बात कही है. 90 करीब है कि (इस भयानक बात पर) आसमान फट पड़े और धरती टुकड़े-टुकड़े हो जाए और पहाड़ टूटकर गिर पड़ें. 91 कि लोग कृपावंत ख़ुदा से संतान का संबंध जोड़ते हैं. 92 कृपावंत ख़ुदा की शान के यह प्रतिकूल है कि वह किसी को बेटा बनाए.

93 आसमानों में तथा धरती पर (अर्थात समस्त सृष्टि में) ऐसा कोई नहीं जो कृपावंत ख़ुदा के दास की हैसियत से उसके समक्ष न आए. 94 सब पर वह छाया हुआ

है और उसने उन्हें अच्छी तरह गिन रखा है. 95 उनमें से सारे क़यामत के दिन उसके सामने (हिसाब के लिए) अलग-अलग हाज़िर होंगे.

96 निश्चय ही जो लोग ईमान लाए हैं और भले कर्म कर रहे हैं. कृपावंत अल्लाह उनके लिए (उनके दिलों में परस्पर) मुहब्बत पैदा कर देगा.

97 तो (पैग़ंबर!) इस क़ुरआन को हमने तुम्हारी भाषा में इसलिए सरल कर दिया है कि तुम उन लोगों को शुभ-सूचना दे दो जो (हमारे प्रति) सचेत (एवं उत्तरदायी) रहते हैं और हठधर्मी लोगों को डरा दो.

98 इनसे पहले हम कितनी ही क़ौमों को नष्ट कर चुके हैं. तो क्या तुम उनमें से किसी की आहट पाते हो या उनकी कोई भनक तुम्हें सुनायी देती है?

सूरह–20. ता० हा०

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 ता० हा०. 2 (पैग़ंबर!) हमने इस क़ुरआन को तुम पर इसलिए नहीं उतारा कि तुम मुसीबत में पड़ जाओ. 3 यह क़ुरआन तो एक स्मरण का माध्यम है उसके लिए जो डरता हो. 4 यह उस ज़ात की ओर से उतारा गया है जिसने धरती तथा ऊँचे आसमानों का सृजन किया. 5 वह कृपावंत है जो (समस्त सृष्टि के) सिंहासन पर स्थापित है. 6 उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो धरती पर है. और जो इन दोनों के बीच है और जो कुछ धरती के नीचे है.

7 तुम चाहे अपनी बात पुकार कर कहो, (या चुपके से) वह तो चुपके से कही हुई बात को, बल्कि उससे भी अधिक गुप्त बात को जानता है. 8 वह अल्लाह है उसके सिवा अन्य कोई पूजनीय नहीं. उसके लिए सर्वोत्तम नाम हैं.

9 क्या तुम्हें मूसा की ख़बर पहुँची है? 10 जबकि उसने एक आग देखी, उसने अपने घर वालों से कहा, तनिक ठहरो, मैंने एक आग देखी है. संभवतः मैं उसमें से तुम्हारे लिए एक अंगारा लाऊँगा या उस आग के पास मुझे रास्ते का पता मिल जाए.

11 फिर जब वहाँ पहुँचा तो आवाज़ दी गयी कि ऐ मूसा! 12 मैं तुम्हारा रब हूँ. तो तुम अपने जूते उतार दो, क्योंकि तुम तुवा की पवित्र घाटी में हो. 13 (ख़ुदा आगे मूसा से कहता है ऐ मूसा!) मैंने तुम्हें (अपने संदेशवाहक के तौर पर) चुन लिया है तो जो संदेश तुम्हारी ओर प्रकट किया जा रहा है उसे सुनो. 14 निस्संदेह मैं अल्लाह हूँ मेरे सिवा दूसरा कोई उपासनायोग्य नहीं तो तुम मेरी ही उपासना करो. और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम करो.

15 (अल्लाह आगे कहता है,) निस्संदेह क़यामत आने वाली है. मैं उस (का समय) गुप्त रखना चाहता हूँ. ताकि प्रत्येक व्यक्ति को उसके किए का बदला मिले. 16 तो जो व्यक्ति

उस पर ईमान नहीं लाता और अपनी इच्छाओं का बंदा बना हुआ है वह तुम्हें उससे (अर्थात मृत्यु-पश्चात जीवन के संबंध से) ग़ाफ़िल न करने पाए, अन्यथा तुम विनाश-ग्रस्त हो जाओगे.

17 (ख़ुदा आगे कहता है,) ऐ मूसा! यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है? 18 मूसा ने जवाब दिया, यह मेरी लाठी है. मैं इस पर टेक लगाकर चलता हूँ और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ. और भी बहुत से काम हैं जो मैं इससे लेता हूँ. 19 ख़ुदा ने कहा, ऐ मूसा! इसे ज़मीन पर डाल दो. 20 उसने उसे डाल दिया तो अचानक वह (लाठी) एक दौड़ता हुआ साँप बन गयी. 21 (ख़ुदा ने) फ़रमाया, (ऐ मूसा!) इसे पकड़ लो और डरो नहीं. हम पुनः इसे इसकी पहली दशा पर लौटा देंगे.

22 (ख़ुदा मूसा से आगे कहता है, ऐ मूसा!) तुम अपना हाथ अपनी बगल में दबाओ वह चमकता हुआ निकलेगा, बिना किसी ऐब के यह दूसरी निशानी है. 23 ताकि हम अपनी बड़ी निशानियों में से कुछ निशानियाँ तुम्हें दिखाएँ. 24 तुम फ़िरऔन के पास जाओ, वह हद से गुज़र चुका है.

25 मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे सीने को मेरे लिए खोल दे. 26 और मेरे काम को मेरे लिए आसान कर दे. 27 और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे. 28 ताकि लोग मेरी बात समझ सकें. 29 और मेरे लिए मेरे घर वालों में से एक सहायक नियुक्त कर दे. 30 हारून को, जो मेरा भाई है. 31 उसके द्वारा मेरा हाथ मजबूत कर. 32 और उसे मेरे काम में सहभागी बना दे. 33 ताकि हम तेरा बहुत ज़्यादा महिमागान करें. 34 और तुझे बहुत ज़्यादा याद करें. 35 निस्संदेह तू हमें देख रहा है. 36 ख़ुदा ने कहा, दे दिया गया तुम्हें ऐ मूसा! जो तुमने माँगा.

37 हम (इससे पहले भी) एक बार तुम पर एहसान का मामला कर चुके हैं 38 जब हमने तुम्हारी माँ की तरफ़ इलहाम किया (उसकी ओर प्रेरणा-रूपी संदेश भेजा), जिसमें

में यह सूचना थी 39 कि मूसा को संदूक़ में रखो, फिर उस संदूक़ को नदी में डाल दो. फिर नदी उसे एक किनारे पर डाल देगी. इसे एक व्यक्ती उठा लेगा जो मेरा भी शत्रु है और उसका भी शत्रु. (ऐ मूसा!) मैंने अपनी ओर से तुम पर प्रेम डाल दिया (ताकि तुम सुरक्षित रहो) और (ऐसा प्रबंध किया कि) तुम्हारा पालन-पोषण मेरी निगरानी में हो. 40 फिर जब तुम्हारी बहन (उस संदूक़ पर नज़र रखते हुए) चलती हुयी आयी. फिर वह कहने लगी, क्या मैं तुम लोगों को उसका पता दूँ जो इस बच्चे का पालन-पोषण भली प्रकार करे. इस तरह हमने तुम्हें तुम्हारी माँ के पास पहुँचा दिया, ताकि उसकी आँखें ठंडी हों और वह दुःखी न हो. (फिर जब तुम बड़े हुए) तो तुमने एक व्यक्ति की हत्या कर दी. फिर हमने तुम्हें इस ग़म से छुटकारा दिलाया. इस तरह हमने तुम्हारी (विविध प्रकार से) परीक्षा ली. फिर तुम कई वर्षों तक मदियन वालों में रहे. फिर तुम अब (परिपक्वता के) योग्य अवस्था को आ पहुँचे, ऐ मूसा! 41 (ख़ुदा मूसा से आगे कहता है, ऐ मूसा!) मैंने तुम्हें अपने काम के लिए चुना है. 42 जाओ तुम और तुम्हारा भाई मेरी निशानियों के साथ. और (सुनो!) तुम मेरी याद में कोताही न करना. 43 तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ वह (हमारे प्रति) विद्रोही बन चुका है. 44 तो उससे विनम्रतापूर्वक बात करना, शायद वह उपदेश ग्रहण करे या डर जाए. 45 दोनों ने कहा, ऐ हमारे रब! हमें आशंका है कि वह हम पर अत्याचार करे या विद्रोह करने लगे. 46 (इस पर) ख़ुदा ने फ़रमाया, तुम डरो नहीं, मैं तुम्हारे साथ हूँ, सब कुछ सुन रहा हूँ और देख रहा हूँ. 47 (ख़ुदा आगे कहता है,) तो तुम दोनों उसके पास जाओ और कहो कि हम दोनों तेरे रब के भेजे हुए हैं. तो तू इसराईल की संतान को हमारे साथ जाने दे और उन्हें यातना न दे. हम तेरे पास तेरे रब की निशानी लेकर आए हैं. सलामती है उसके लिए जो सीधे मार्ग पर चले. 48 हम पर यह संदेश प्रकट किया गया है कि यातना है उसके लिए जो सत्य को झुठलाए और उसकी ओर मुँह मोड़े.

49 फ़िरऔन ने कहा, तुम दोनों का रब कौन है ऐ मूसा! 50 मूसा ने कहा, हमारा रब वह है जिसने हर अस्तित्वमान चीज़ को आकार (एवं अस्तित्व) प्रदान किया (अर्थात हमारा रब वह है जो हर चीज़ का सृजनकर्ता है) और उसी ने हर एक को मार्ग दिखाया. 51 फ़िरऔन ने कहा, फिर पहले बीत चुकी क़ौमों का क्या मामला था. 52 मूसा ने कहा, उसका ज्ञान मेरे रब के पास एक पंजिका में मौजूद है. मेरा रब न चूकता है और न भूलता है.

53 वही है (अल्लाह) जिसने धरती को तुम्हारे लिए फ़र्श बनाया. और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते निकाले और ऊपर से पानी बरसाया. फिर उस (पानी) से भिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ निकालीं. 54 खाओ और अपने जानवरों को चराओ, निश्चय ही इसमें निशानियाँ हैं बुद्धि रखने वालों के लिए. 55 इसी धरती से हमने तुम्हें सृजित किया है. इसी में हम तुम्हें वापस ले जाएंगे. और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे.

56 और हमने फ़िरऔन को अपनी सारी निशानियाँ दिखायीं (अर्थात इस परीक्षा की दुनिया में जो-जो निशानियाँ दिखायी जा सकती थीं वह सारी निशानियाँ दिखायीं), लेकिन उसने (उन्हें) झुठलाया और मानने से इन्कार कर दिया.

57 फ़िरऔन ने कहा, ऐ मूसा! क्या तुम इसलिए हमारे पास आए हो कि अपने जादू (के प्रभाव) से हमें हमारे देश से निकाल दो. 58 तो हम भी तुम्हारे मुक़ाबले में ऐसा ही जादू लाते हैं तो तुम हमारे और अपने बीच एक वादा ठहरा लो. न हम उसके विरुद्ध जाएंगे और न तुम, यह मुक़ाबला एक खुले मैदान में हो.

59 (इस पर) मूसा ने कहा, तुम्हारे लिए वादे का दिन मेले वाला दिन है. और यह कि लोग दिन चढ़े इकट्ठे हो जाएँ. 60 फ़िरऔन वहाँ से हटा और उसने अपने सारे हथकंडे जुटाए, उसके बाद वह मुक़ाबले पर आया. 61 मूसा ने कहा, तुम्हारा बुरा हो,

अल्लाह पर झूठ न बाँधो, कि (उसके परिणाम-स्वरूप) वह तुम्हें किसी विपत्ति के द्वारा नष्ट कर दे. जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा वह विफल होकर रहा.

62 (यह सुनकर) उनके बीच मतभेद हो गया. वे चुपके-चुपके आपस में परामर्श करने लगे. 63 फिर उन्होंने (एक दूसरे से) कहा, यह दोनों निश्चित रूप से जादूगर हैं. वे चाहते हैं कि अपने जादू के प्रभाव से तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दें और तुम्हारी आदर्श जीवन-प्रणाली का अंत कर दें. 64 तो आज अपने सारे उपाय इकट्ठा कर लो, फिर एकजूट होकर मैदान में आओ. वही जीता जो आज प्रभावी रहा.

65 (फ़िरऔन द्वारा इकट्ठे किए गए) जादूगर बोले, तुम फेंकते हो या पहले हम फेंके? 66 मूसा ने कहा, तुम ही पहले डालो, तो यकायक उनकी रस्सियाँ और उनकी लाठियाँ जादू (अर्थात नज़रबंदी) के प्रभाव से मूसा को दौड़ती हुयी महसूस होने लगीं. 67 मूसा अपने दिल में डर गया. 68 हमने कहा तुम डरो नहीं, तुम ही प्रभावी रहोगे.

69 जो तुम्हारे दाहिने हाथ में है उसे डाल दो, वह उसे निगल जाएगा जो उन्होंने बनाया है. ये जो कुछ उन्होंने बनाया है, जादूगर का फ़रेब है. और यह कि जादूगर कभी सफल नहीं हो सकता, भले वह कैसे भी आए (अर्थात वह चाहे कोई भी हथकंडा अपनाए). 70 (फिर ऐसा ही हुआ) जादूगर सजदे में गिर पड़े. वे बोले हम हारून और मूसा के रब पर ईमान लाए.

71 फ़िरऔन ने कहा, तुमने उसे मान लिया, इससे पहले कि मैं तुम्हें इसकी अनुमति देता. वही तुम्हारा गुरु है जिसने तुम्हें जादूगरी सिखाई है. तो अब मैं तुम्हारे हाथ और पैर विपरीत दिशा से कटवाऊँगा और खजूर के तनों पर तुम्हें सूली दूँगा. फिर तुम्हें पता चल जाएगा कि हममें से किसका दंड अधिक पीड़ादायी है और अधिक स्थायी है.

72 (इस पर) जादूगरों ने कहा, हम तुझे कदापि उन स्पष्ट प्रमाणों पर प्राथमिकता नहीं देंगे जो हमारे पास आए हैं और उस ज़ात पर जिसने हमारा सृजन किया है. तो तुझे

जो कुछ करना है उसे कर डाल. तू जो कुछ कर सकता है इसी दुनिया की ज़िंदगी में कर सकता है. 73 (जादूगरों ने आगे कहा,) हम अपने रब पर ईमान लाए, ताकि वह हमारी ख़ताएँ माफ़ कर दे और इस जादू को भी जिस पर तूने हमें विवश किया था. और अल्लाह ही सर्वश्रेष्ठ है और वही बाक़ी रहने वाला है.

74 निस्संदेह! जो व्यक्ति अपराधी बनकर अपने रब के समक्ष उपस्थित होगा. तो उसके लिए जहन्नम है. उसमें न मरेगा और न जिएगा (अर्थात सदैव घुटन की ज़िंदगी जीता रहेगा). 75 और जो व्यक्ति अपने रब के पास मोमिन (अर्थात सत्य की लाइन पर विकसित इंसान) बनकर आएगा, जिसने भले कार्य किए होंगे. तो ऐसे लोगों के लिए (उनके रब के पास) बड़े ऊँचे दर्जे हैं.

76 उनके लिए सदैव रहने के ऐसे बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी. वह उनमें सदैव रहेंगे. यह प्रतिफल है उस व्यक्ति के लिए जो अपने (व्यक्तित्व) को शुद्ध (चरित्र का) बनाता है.

77 और हमने मूसा की ओर यह संदेश भेजा कि रात के समय मेरे बंदों को लेकर निकलो, फिर उनके लिए समुद्र में सूखा मार्ग बना लो. तुम (शत्रु के द्वारा) न पीछा किए जाने से और न किसी दूसरी चीज़ से डरो (जैसे, समुद्र में डूबने आदी से). 78 फिर फ़िरऔन ने अपनी सेनाओं के साथ उनका पीछा किया. फिर उन पर समुद्र का पानी छा गया, जैसा कि उसे उन पर छा जाना था. 79 फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को भटकाया, उसने उसे सही मार्ग नहीं दिखाया.

80 ऐ इसराईल की संतान! हमने तुम्हें तुम्हारे शत्रु से मुक्ति दी और तूर (पर्वत) की दाहिनी ओर तुम्हारी हाज़िरी के लिए समय निश्चित किया और (तुम्हारी जीविका के लिए) तुम पर मन व सलवा उतारा. 81 खाओ हमारी दी हुयी पाक रोज़ी, लेकिन मर्यादा का उल्लंघन न करो, वरना तुम पर मेरा प्रकोप टूट पड़ेगा. और जिस पर मेरा प्रकोप टूटा,

वह नष्ट होकर रहा. 82 अलबत्ता जो तौबा कर ले (अर्थात भ्रष्ट मार्ग से सन्मार्ग की ओर पलट आए) और ईमान लाए और भले कर्म करे और सन्मार्ग पर क़ायम रहे, तो उसके लिए मैं अत्यंत क्षमाशील हूँ.

83 और ऐ मूसा! अपनी क़ौम को छोड़कर पहले आने पर तुम्हें किस चीज़ ने प्रेरित किया. 84 मूसा ने कहा, वे बस मेरे पीछे आ ही रहे हैं. ऐ मेरे रब! मैं तेरी ओर जल्दी आ गया, ताकि तू (मुझसे) प्रसन्न हो जाए. 85 ख़ुदा ने फ़रमाया, हमने तुम्हारे पीछे तुम्हारी क़ौम को परीक्षा में डाल दिया और सामरी ने उन्हें पथभ्रष्ट कर डाला.

86 (अल्लाह से क़ौम की हालत जानने के बाद) मूसा अपनी क़ौम की ओर अत्यंत क्रोध और परेशानी की दशा में लौटे. तब मूसा ने (अपनी क़ौम से) कहा, ऐ मेरी क़ौम! क्या तुमसे तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था? क्या तुम पर कोई बड़ी मुदत गुज़र गयी? या फिर तुमने यह चाहा कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब का प्रकोप ही उतरे, क्या इसलिए तुमने मुझसे किए हुए वादे के विरुद्ध आचरण किया?

87 उन्होंने जवाब दिया, हमने अपनी इच्छा से आपके साथ किए गये वादे को नहीं तोड़ा है, बल्कि (यह हुआ) कि क़ौम के ज़ेवरों का बोझ हमसे उठवाया गया था, फिर हमने उन्हें फेंक दिया (अर्थात सारे ज़ेवर उतार कर एक जगह इकट्ठा कर दिया गया) और इसी तरह (ऐसा करने के लिए) सामरी ने प्रेरित किया था. 88 उसने उनके लिए एक (सोने का) बछड़ा (golden calf) निर्मित कर दिया. एक ऐसी मूर्ति जिसमें से (हवा गुज़रने पर) बैल की (रँभाहट) जैसी आवाज़ निकलती थी. तो लोग (एक-दूसरे से) कहने लगे, यह है तुम्हारा उपास्य और मूसा का उपास्य भी. मूसा इसे भूल गए.
89 क्या वे देखते न थे कि वह न उनकी किसी बात का उत्तर देता है और न कोई लाभ या हानि पहुँचा सकता है.

90 हारून उनसे पहले ही कह चुका था (अर्थात मूसा के वापस आने से पहले) कि ऐ मेरी क़ौम! तुम इस बछड़े के माध्यम से आज़माइश में पड़ गए हो. तुम्हारा रब तो कृपावंत ख़ुदा है. तो तुम मेरा अनुसरण तथा आज्ञापालन करो. 91 उन्होंने (हारून से) कहा, हम तो इसी की पूजा में लगे रहेंगे, जब तक कि मूसा हमारे पास लौट न आए.

92 (वापस आने के बाद) मूसा ने (हारून से) कहा, ऐ हारून! जब तुमने देखा कि वे पथभ्रष्ट हो रहे हैं, तो किस चीज़ ने तुम्हें रोका 93 कि तुम मेरा अनुसरण न करो? क्या तुमने मेरे कहने के विरुद्ध कृत्य किया? 94 हारून ने कहा, ऐ मेरी माँ के बेटे! तुम मेरी दाढ़ी न पकड़ो, न मेरा सिर. मुझे इस बात का डर था कि तुम (मुझसे) कहोगे कि तुमने इसराईल की संतान में फूट डाल दी और मेरी बात का ध्यान नहीं रखा.

95 फिर मूसा (सामरी की ओर पलटे और) कहा, ऐ सामरी! तेरा क्या मामला है? 96 सामरी ने कहा, मैंने वह चीज़ देखी जो औरों ने नहीं देखी, फिर मैंने संदेष्टा के पदचिह्नों से एक मुट्ठी (मिट्टी) उठा ली और (इस बछड़े में) डाल दी. मेरे मन ने मुझे ऐसा ही सुझाया. 97 मूसा ने कहा, दूर हो, अब तेरे लिए जीवन भर यह है कि तू कहता रहेगा कि मुझको न छूना. इसके सिवा तेरे लिए और एक वादा है (अर्थात मृत्यु-पश्चात यातना का वादा), जो तुझसे कदापि टलने वाला नहीं. और तू अपने इस उपास्य को देख जिस पर तू निरंतर रिझा हुआ जमा बैठा था. हम उसे जला डालेंगे फिर उसे चूरा-चूरा करके दरिया में बहा देंगे. 98 (लोगों!) तुम्हारा उपास्य तो मात्र अल्लाह है जिसके सिवा दूसरा कोई उपासनायोग्य नहीं. हर चीज़ पर उसका ज्ञान छाया हुआ है.

99 (पैग़ंबर!) इस तरह हम तुम्हें पहले बीत चुके हालात की ख़बरें सुनाते हैं. हमने तुम्हें अपने पास से एक उपदेश-ग्रंथ प्रदान किया है (अर्थात यह क़ुरआन). 100 जो कोई इससे मुँह मोड़ेगा वह क़यामत के दिन एक भारी बोझ उठाएगा. 101 वे उसी अवस्था में हमेशा रहेंगे. और यह बोझ क़यामत के दिन उनके लिए बहुत बुरा बोझ सिद्ध

होगा. 102 जिस दिन सूर फूँका जाएगा, हम अपराधियों को इस हाल में घेर लाएंगे कि (दहशत से) उनकी आँखें पथरायी हुयी होंगी. 103 वे आपस में चुपके-चुपके कहते होंगे कि (दुनिया में) तुम मात्र दस दिन रहे होंगे. 104 हम भली-भाँति जानते हैं कि वे क्या बातें कर रहे होंगे. उनमें सबसे अधिक समझ रखने वाला व्यक्ति कहेगा, (नहीं!) तुम बस एक ही दिन ठहरे हो.

105 (पैग़ंबर!) यह लोग तुमसे पहाड़ों के बारे में पूछते हैं (कि क़यामत के दिन इन पहाड़ों का क्या होगा)? कहो, मेरा रब उन्हें उड़ा कर बिखेर देगा. 106 और धरती को समतल साफ़ मैदान बना देगा. 107 कि तुम उसमें न कोई टेढ़ देखोगे और न कोई ऊँचाई-निचाई. 108 उस दिन सारे लोग पुकारने वाले की पुकार पर चले आएंगे. कोई तनिक भी अकड़ न दिखा सकेगा. सारी आवाज़ें रहमान के आगे दब जाएँगी. एक हल्की मंद आवाज़ के सिवा तुम कुछ न सुनोगे.

109 उस दिन कोई सिफ़ारिश लाभ न देगी (और न कोई अपने तौर पर कुछ कह सकेगा), सिवाय इसके कि किसी को स्वयं रहमान इजाज़त दे और उसकी बात सुनना पसंद करे. 110 वह लोगों का अगला-पिछला सब हाल जानता है, लेकिन वे अपने ज्ञान से उस पर प्रभावी नहीं हो सकते. 111 (क़यामत के दिन) सभी चेहरे उस जीवंत शाश्वत सत्ता के समक्ष झुके हुए होंगे. वह व्यक्ति असफल होकर रहेगा जो अन्याय लेकर आया होगा. 112 और जिसने भले कर्म किए होंगे और वह ईमान वाला भी होगा तो उसे न किसी ज़ुल्म का भय होगा और न किसी वंचना का.

113 (पैग़ंबर!) इस तरह हमने इस (उपदेश-ग्रंथ) को अरबी क़ुरआन के रूप में उतारा है. इसमें हमने तरह-तरह से चेतावनियाँ दी हैं. ताकि (उसके द्वारा) लोग सचेत हो जाएँ या वह उनके दिल में कुछ सोच डालने का माध्यम बने.

114 तो सर्वोच्च है अल्लाह, सच्चा सम्राट! (पैग़ंबर!) तुम क़ुरआन को लेने में जल्दी न किया करो, इससे पहले कि उसका प्रकट होना पूर्णत्व को न पहुँच जाए. और दुआ करते रहो कि ऐ मेरे रब! मेरे ज्ञान को बढ़ा दे!

115 हमने इससे पहले आदम से एक वचन लिया था, लेकिन वह भूल गया. हमने उसमें संकल्प की दृढ़ता नहीं पायी. 116 (याद करो, वह समय) जब हमने फ़रिश्तों से कहा, आदम को सजदा करो, तो उन्होंने सजदा किया, लेकिन इबलीस ने नहीं किया, उसने सजदा करने से इन्कार कर दिया.

117 इस पर हमने आदम से कहा, ऐ आदम! निस्संदेह, यह तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का शत्रु है. ऐसा न हो कि यह तुम्हें जन्नत से निकलवा दे. (यदि ऐसा होता है) तो तुम तकलीफ़ में पड़ जाओगे.

118 (जन्नत में) तुम्हारे लिए ऐसा है कि न तुम यहाँ भूखे रहोगे और न नंगे. 119 और न

तुम यहाँ प्यासे रहोगे और न धूप की तकलीफ़ उठाओगे. 120 फिर शैतान ने उन्हें बहकाया. शैतान ने कहा, ऐ आदम! क्या मैं तुम्हें अमरत्व के वृक्ष का पता दूँ और ऐसा राज्य जिसका कभी पतन न हो. 121 फिर उन दोनों ने उस वृक्ष का फल खा लिया तो उसके परिणाम-स्वरूप उनके गुप्तांग उनके सामने खुल गये. दोनों अपने आपको जन्नत के पत्तों से ढाँपने लगे. आदम ने अपने रब की अवज्ञा की तो वह भटक गया.122 फिर उसके रब ने उस पर कृपा की और उसके पश्चात्ताप को स्वीकार किया और उसे मार्गदर्शन प्रदान किया. 123 अल्लाह ने कहा, तुम दोनों यहाँ से उतरो. तुम एक-दूसरे के दुश्मन रहोगे. अब यदि तुम्हारे पास मेरी ओर से मार्गदर्शन आए तो जो कोई मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेगा वह न भटकेगा और न (मेरी कृपा से) वंचित रहेगा.

124 (ख़ुदा आगे कहता है) जो कोई मेरे उपदेश से मुँह मोड़ेगा तो उसके लिए तंगी का जीवन होगा और क़यामत के दिन हम उसे अँधा उठाएंगे. 125 वह कहेगा कि ऐ मेरे रब! तूने मुझे अँधा क्यों उठाया मैं तो (दुनिया में) आँखों वाला था. 126 (इस पर) अल्लाह कहेगा, इसी तरह (तू दुनिया में अँधा बना रहा) तेरे पास मेरी निशानियाँ आयीं, तो तूने उन पर तनिक ध्यान न दिया तो उसी तरह तेरे ऊपर कुछ ध्यान नहीं दिया जाएगा.
127 इस तरह हम प्रतिफल देते हैं उसे जो सीमा से आगे निकल गया और अपने रब की निशानियों पर ईमान नहीं लाया. निस्संदेह मृत्यु-पश्चात जीवन की यातना बहुत कठोर है और सदा रहने वाली है.

128 क्या लोगों को इस बात से शिक्षा नहीं मिली कि इनसे पहले हम कितने ही जनसमूह नष्ट कर चुके हैं? ये उनकी (बर्बाद) बस्तियों में चलते-फिरते हैं. निस्संदेह उसमें बुद्धि वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं. 129 यदि तेरे रब की ओर से पहले से एक बात तय न की गयी होती और मोहलत की एक अवधी निश्चित न की जा चुकी होती तो अवश्य ही उनका फ़ैसला (तुरंत ही) चुका दिया जाता. 130 तो (पैग़ंबर!) जो कुछ ये लोग कहते हैं उस पर धैर्य रखो. और अपने रब की प्रशंसा के साथ उसका महिमागान करो. सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले और रात की घड़ियों में भी और दिन के किनारों पर भी उसका महिमागान करो, ताकि तुम संतुष्ट हो जाओ. 131 और कदापि उन सांसारिक चमक-दमक की चीज़ों की ओर (अभिलाषा पूर्वक) आँख उठा कर भी न देखो जो हमने उनके कुछ समुदायों को उनकी परीक्षा के लिए दे रखी हैं. और (मृत्यु-पश्चात जीवन में) तुम्हारे रब की ओर से दी जाने वाली जीविका श्रेष्ठ और स्थायी है.

132 अपने घर वालों को नमाज़ की ताकीद करो और स्वयं भी उस पर जमे रहो. हम तुमसे कोई जीविका नहीं माँगते, बल्कि जीविका तो हम ही तुम्हें देते हैं. अंत में भला परिणाम तो ख़ुदा के प्रति सजगता (एवं उत्तरदायित्व रखने वालों) के लिए है.

133 वे कहते हैं कि यह (पैग़ंबर) अपने रब के पास से हमारे लिए कोई (चमत्कार-रूपी) निशानी क्यों नहीं लाता? क्या उन्हें पूर्ववर्ती किताबों के प्रमाण नहीं पहुँचे? 134 और यदि हम (पैग़ंबर को भेजने से) पहले यातना को भेज कर उन्हें नष्ट कर देते तो वह कहते, ऐ हमारे रब! तूने हमारे पास पैग़ंबर क्यों न भेजा इससे पहले कि हम अपमानित और तिरस्कृत हों, (यदि तू हमारे पास पैग़ंबर भेजता तो) हम तेरे संदेशों का पालन करते?

135 (पैग़ंबर!) इनसे कह दो, हर एक प्रतीक्षा में है तो तुम भी प्रतीक्षा करो. जल्द ही तुम जान लोगे कि कौन सीधे मार्ग पर चलने वाला है और कौन मार्गदर्शन पाए हुए है.

पारा – 17

सूरह–21. अल–अंबिया

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़रीब आ गया है लोगों के हिसाब का वक़्त और वे ग़फ़लत में पड़े मुँह मोड़ रहे हैं. 2
उनके पास जो भी नया उपदेश उनके रब की ओर से आता है, वे उसका उपहास करते
हुए सुनते हैं. 3 उनके दिल ग़फ़लत में पड़े हुए हैं और यह अत्याचारी आपस में
कानाफूसियाँ करते हैं कि यह (पैग़ंबर) तो तुम्हारे ही जैसा एक आदमी है. फिर तुम क्या
जानते-बूझते इसके जादू में फँस जाओगे? 4 पैग़ंबर ने कहा, मेरा रब हर उस बात को
जानता है, जो आसमानों में की जाए या धरती पर. वह सब कुछ सुनने वाला और जानने
वाला है.

5 कुछ लोग कहते हैं (कि जो चीज़ आसमानी-संदेश के नाम से मुहम्मद प्रस्तुत
कर रहे हैं) वे तो उड़ते स्वप्न हैं. नहीं, बल्कि इसे स्वयं इस आदमी ने गढ़ लिया है.
बल्कि यह आदमी कवी है. (यदि यह पैग़ंबर है) तो चाहिए कि हमारे पास कोई निशानी
ले आए जिस प्रकार की निशानियों के साथ पूर्ववर्ती पैग़ंबर भेजे गए थे. 6 हालाँकि इनसे
पहले कोई बस्ती भी, जिसे हमने नष्ट किया, ईमान नहीं लायी, तो क्या अब ये ईमान
लाएंगे?

7 (ऐ मुहम्मद!) तुमसे पहले भी हमने इंसानों को ही पैग़ंबर बनाकर भेजा था, जिन
पर हम (अपना) संदेश प्रकट किया करते थे. तुम लोग यदि नहीं जानते तो पूर्ववर्ती
किताब वालों से पूछ लो. 8 हमने उन पैग़ंबरों को ऐसे शरीर नहीं दिए थे कि वे खाना न
खाते हों और न वे सदैव रहने वाले थे. 9 फिर हमने उनके साथ किए वादे को सच्चा कर
दिखाया. फिर हमने उन्हें और जिस-जिस को चाहा बचा लिया और हद से आगे बढ़ने
वालों को हमने नष्ट कर दिया.

10 लोगों! हमने तुम्हारी ओर एक किताब उतारी है जिसमें तुम्हारे लिए उपदेश हैं. फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लोगे? 11 कितनी ही बस्तियाँ जो अत्याचारी थीं, हमने उन्हें पीस कर रख दिया. और उनके बाद दूसरी क़ौम को उठाया. 12 फिर जब उन अत्याचारी लोगों को लगा की हमारा प्रकोप (उन पर) आया चाहता है तो वे लगे वहाँ से भागने. 13 (कहा गया,) भागो मत, वापस जाओ उसी ऐश की ओर जो तुम्हें मिला था और अपने घरों की ओर, ताकि तुमसे पूछा जाए. 14 उन्होंने कहा, हाय हमारा दुर्भाग्य! निस्संदेह, हम लोग अत्याचारी थे. 15 तो वे यही पुकारते रहे, यहाँ तक कि हमने उन्हें ऐसा कर दिया जैसे खेती कट गयी हो और आग बुझ गयी हो. 16 (यह जान लो कि,) हमने आसमान और धरती को और जो कुछ इनके बीच में है खेल के तौर पर नहीं बनाया है (बल्कि इस सृष्टि का सृजन एक अर्थपूर्ण तथा उद्देशपूर्ण घटना है). 17 यदि हमें खेल करने के लिए कुछ बनाना होता तो उसे हम अपने ही पास बना लेते, यदि हमें ऐसा कुछ करना ही होता.

18 बल्कि हम असत्य पर सत्य की चोट लगाते हैं तो सत्य असत्य का सर तोड़ डालता है और वह देखते ही देखते मिट जाता है. (ऐ असत्य के गढ़ने वालो!) तुम्हारे लिए तबाही है उन बातों के कारण जो तुम बनाते हो.

19 आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं सब अल्लाह के हैं. और जो (फ़रिश्ते) उसके पास हैं (अर्थात उसका सामीप्य पाए हुए हैं) वे न तो अपने को बड़ा समझकर उसकी इबादत से मुँह फेरते हैं और न वे थकते हैं. 20 वे रात दिन निरंतर उसका महिमागान करते रहते हैं.

21 (बहुदेववादियों ने) जो धरती पर उपास्य बनाए हैं, क्या वे किसी (बेजान) को जीवित कर सकते हैं? 22 आसमान व धरती में यदि अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य होते तो आसमान व धरती की व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती. (तो जान लो कि) अल्लाह

(जो समस्त सृष्टि के) सिंहासन का मालिक है, उन बातों से पाक है जिनका वे उससे संबंध जोड़ते हैं. 23 वह जो कुछ करता है उसके संबंध से उससे कोई कुछ पूछ नहीं सकता. लेकिन लोग (जो कुछ कर रहे हैं उसके संबंध से) उनसे पूछ होगी.

24 क्या उन्होंने उस (सच्चे ख़ुदा) को छोड़कर दूसरे ख़ुदा बना लिए हैं? (पैग़ंबर!) उन (बहुदेववादियों) से कहो, तुम (उसके संबंध से) प्रमाण प्रस्तुत करो. (पैग़ंबर आगे कहता है) यही उपदेश है उनके लिए जो मेरे साथ हैं और यही उपदेश उन लोगों के लिए भी था जो मेरे पहले थे. लेकिन इनमें से अधिकतर सच्चाई को नहीं जानते, इसलिए मुँह मोड़ रहे हैं. 25 हमने तुमसे पहले जो भी पैग़ंबर भेजा है उसके पास हमने यही संदेश भेजा कि मेरे सिवा दूसरा कोई उपासना-योग्य नहीं, तो तुम मेरी ही उपासना करो.

26 वे कहते हैं कि कृपावंत ख़ुदा ने संतान बनायी है. वह इससे पाक है (जिनकी ओर वे अल्लाह की संतान होने का संकेत करते हैं,) वे तो उसके सम्मानित बंदे हैं (अर्थात फ़रिश्ते). 27 वे उससे आगे बढ़ कर बात नहीं करते. वे बस उसके आदेश का पालन करते हैं. 28 अल्लाह जानता है जो कुछ उनके सामने है और वह भी जानता है जो कुछ उनसे ओझल है. वे किसी की सिफ़ारिश नहीं कर सकते, सिवा उसके जिसे अल्लाह पसंद करे. वे अल्लाह के प्रति (सदैव) आदरयुक्त भय रखते हैं. 29 और जो कोई उनमें से कहे कि अल्लाह के सिवा मैं भी एक ख़ुदा हूँ. तो उसे हम जहन्नम की सज़ा देंगे. हम अत्याचारियों को ऐसी ही सज़ा देते हैं.

30 क्या सत्य का इन्कार करने वालों ने यह नहीं जाना कि आसमान और धरती दोनों परस्पर मिले हुए थे. हमने उन्हें अलग किया और हमने हर जीवित चीज़ पानी से बनाई. क्या फिर भी वे मानने वाले नहीं बनेंगे?

31 हमने धरती में पहाड़ बनाए, ताकि वह लोगों को लेकर ढुलक न जाए. और उसमें हमने चौड़े रास्ते बनाए, ताकि लोग मार्ग पाएँ. 32 हमने आसमान को एक सुरक्षित

छत बनाया, लेकिन लोग सृष्टि की निशानियों की ओर दुर्लक्ष किए हुए हैं. 33 वह अल्लाह ही है जिसने रात और दिन बनाए और सूरज व चाँद का सृजन किया. सब अपनी-अपनी कक्षा में तैर रहे हैं.

34 (पैग़ंबर!) हमने तुमसे पहले भी किसी इंसान को (इस दुनिया में) हमेशा का जीवन प्रदान नहीं किया. फिर यदि तुम्हें मृत्यु आयी तो क्या ये हमेशा रहने वाले हैं? 35 हर जीव को मौत का स्वाद चखना है. हम तुम सबकी अच्छी और बुरी परिस्थिती के द्वारा परीक्षा लेते हैं, परखने के लिए. (अंततः) तुम्हें हमारी ही ओर लौट कर आना है.

36 (पैग़ंबर!) ये सत्य के इन्कारी जब तुम्हें देखते हैं तो वे तुम्हारी हँसी उड़ाते हैं, (वे एक दूसरे से कहते हैं,) क्या यही वह व्यक्ति है जो तुम्हारे ख़ुदाओं का (तिरस्कारपूर्वक) चर्चा करता है? हालाँकि उनका अपना हाल यह है कि वे कृपावंत ख़ुदा का चर्चा करने के लिए (तिरस्कारपूर्वक) नकार देते हैं.

37 इंसान उतावलेपन के ख़मीर से पैदा किया गया है (अर्थात उतावलापन उसके स्वभाव में है). मैं तुम्हें शीघ्र ही अपनी निशानियाँ दिखाऊँगा तो तुम मुझसे जल्दी न करो. 38 वे लोग (जो मेरे संदेशों को नकारते हैं) कहते हैं, यह वादा कब पूरा होगा, यदि तुम सच्चे हो? 39 काश, इंकार करने वालों को उस समय का कुछ ज्ञान होता, जब वे आग को न अपने आगे से रोक सकेंगे और न अपने पीछे से. और न इन्हें कहीं से कोई मदद पहुँचेगी. 40 वह आफ़त उन पर अचानक आएगी और उनके होश उड़ा देगी. फिर वे न तो उसे रोक सकेंगे और न उन्हें मुहलत ही मिलेगी. 41 (ऐ मुहम्मद!) तुमसे पहले भी पैग़ंबरों का मज़ाक उड़ाया गया. तो जिन लोगों ने उनका मज़ाक उड़ाया, उन्हें उसी चीज़ ने आ घेरा जिसका वे मज़ाक़ उड़ा रहे थे.

42 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, कौन है जो रात को या दिन को तुम्हें कृपावंत ख़ुदा से बचा सकता हो? लेकिन यह लोग अपने रब की नसीहत से मुँह मोड़ रहे हैं. 43 क्या

हमारे सिवा उनके कुछ ख़ुदा हैं जो उन्हें बचा लेते हैं. (लेकिन इन झूठे ख़ुदाओं की हक़ीक़त यह है कि) वे न तो स्वयं अपनी मदद कर सकते हैं और न हमारे मुक़ाबले में उनका कोई साथ दे सकता है.

44 (असत्यवादियों के संबंध से हक़ीक़त यह है कि) हम उन्हें और उनके पूर्वजों को जीवन का सामान देते चले गए, यहाँ तक कि इसी दशा में उन पर लंबी अवधी व्यतीत हो गयी. क्या वह नहीं देखते कि हम धरती को उसके किनारों से घटाते चले जा रहे हैं, फिर क्या यही लोग प्रभावी रहेंगे? 45 (पैग़ंबर!) इनसे कह दो, मैं (ख़ुदा की ओर से आए हुए) संदेश के माध्यम से तुम्हें सचेत कर रहा हूँ. लेकिन बहरे पुकार को नहीं सुनते, जबकि उन्हें सचेत किया जाए. 46 और यदि तेरे रब की (ओर से) यातना का झोंका उन्हें छू जाए तो अभी कहने लगेंगे, हाय हमारा दुर्भाग्य! निस्संदेह हम अत्याचारी थे!

47 हम कयामत के दिन न्याय की तराज़ू स्थापित करेंगे. तो किसी व्यक्ति पर कण भर भी ज़ुल्म नहीं होगा. यद्यपि राई के दाने के बराबर भी किसी का कर्म होगा, तब भी हम उसे उपस्थित कर देंगे. और हम हिसाब लेने के लिए पर्याप्त हैं.

48 हमने (इससे पहले) मूसा व हारून को (सत्य व असत्य में अंतर करने वाली) कसौटी तथा (सन्मार्ग दिखाने वाली) रोशनी और उपदेश-ग्रंथ प्रदान किया था, अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहने वालों के लिए. 49 जो बिन देखे अपने रब के प्रति सचेत रहते हैं, जिन्हें (हिसाब की) उस घड़ी का खटका लगा रहता है. 50 और अब यह (क़ुरआन) कृपायुक्त उपदेश है जो हमने (तुम्हारे लिए) उतारा है. तो फिर क्या तुम इसे मानने से इन्कार करते हो?

51 हमने (मूसा से भी) पहले इब्राहीम के लिए उसके मार्गदर्शन की व्यवस्था की थी. हम उसे अच्छी तरह जानते थे. 52 जब इब्राहीम ने अपने पिता तथा क़ौम के लोगों से कहा था, यह क्या मूर्तियाँ हैं जिन पर तुम जमे बैठे हो? 53 (इस पर) उन्होंने उत्तर

दिया, हमने अपने बाप-दादा को इन मूर्तियों की उपासना करते हुए पाया है. 54 इब्राहीम ने कहा, तुम और तुम्हारे बाप-दादा स्पष्ट पथभ्रष्टता में लिप्त रहे हो.

55 उन्होंने (इब्राहीम से कहा), क्या तुम हमारे पास सच्ची बात लाए हो या तुम मज़ाक कर रहे हो? 56 इब्राहीम ने उत्तर दिया, (मज़ाक हरगिज़) नहीं (कर रहा हूँ), वास्तव में तुम्हारा रब वह है जो आसमान व ज़मीन का रब है, जिसने आसमान व ज़मीन की रचना की है. और मैं इस बात की गवाही देने वाला हूँ. 57 (इब्राहीम ने मन ही मन में कहा,) अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे चले जाने के बाद में तुम्हारी मूर्तियों की अवश्य ख़बर लूँगा. 58 तो उसने उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिये, सिवाय उनके एक बड़े के (अर्थात बड़ी मूर्ति को छोड़कर), ताकि वे उसकी ओर रुजू करें.

59 क़ौम के लोगों ने (बुतख़ाने में जब उन मूर्तियों का क्षत-विक्षत हाल देखा) तो कहने लगे, हमारे ख़ुदाओं का यह हाल किसने कर दिया? बड़ा ही ज़ालिम था वह! 60 (कुछ लोग) बोले हमने एक युवक को इनके विषय में कुछ कहते हुए सुना था जिसे इब्राहीम कहा जाता है. 61 उन्होंने कहा, उसे सब लोगों के सामने लाया जाए, ताकि वे देखें (कि क्या मामला है). 62 (जब इब्राहीम आए तो) उन्होंने पूछा; ऐ इब्राहीम! क्या हमारे उपास्यों के साथ तुमने यह हरकत की है. 63 इब्राहीम ने कहा, बल्कि उनके उस बड़े बुत ने यह किया है. तो उन्हीं से पूछ लो, यदि ये बोलते हों.

64 फिर उन्होंने अपने मन ही मन में सोचा, फिर वे एक-दूसरे से कहने लगे कि वास्तव में तुम ही असत्य पर हो. 65 फिर उन्होंने अपने सिरों को झुका लिया और बोले, ऐ इब्राहीम तुम जानते हो कि ये बोलते नहीं. 66 इब्राहीम ने कहा, क्या तुम अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ों को पूजते हो जो न तुम्हें कोई लाभ पहुँचा सके और न हानि. 67 (इब्राहीम ने आगे कहा,) खेद है तुम पर भी और उन पर भी जिनकी तुम अल्लाह को छोड़कर उपासना करते हो. क्या तुम बुद्धि का उपयोग नहीं करते? 68 फिर उन (मूर्ति-

पूजकों) ने कहा, इब्राहीम को जला डालो और अपने उपास्यों की सहायता करो, यदि तुम्हें कुछ करना है. 69 (फिर उन अत्याचारियों ने इब्राहीम को आग में डाला, तब) हमने कहा, ऐ आग, तू इब्राहीम के लिए ठंडक और सलामती बन जा!

70 उन्होंने इब्राहीम के साथ बुराई करना चाहा, लेकिन हमने उन्हीं लोगों को विफल कर दिया.

71 हम इब्राहीम और लूत को बचाकर उस भू-भाग की ओर ले गए जिसमें हमने दुनिया वालों के लिए कल्याण रखा है. 72 हमने उसे इसहाक़ प्रदान किया और तत्पश्चात याक़ूब. हमने सबको सदाचारी बनाया. 73 हमने उन्हें (लोगों का) इमाम बनाया जो हमारे आदेश से (लोगों का) मार्गदर्शन करते थे. और हमने उनकी ओर नेक काम करने, नमाज़ क़ायम करने तथा ज़कात की अदायगी का आदेश भेजा. वे हमारी उपासना करने वाले थे.

74 लूत को हमने विवेक और ज्ञान प्रदान किया और उसे उस बस्ती से मुक्ति दी जो दुष्कर्म करती थी. निस्संदेह, वह बहुत बुरे और बहुत ही अवज्ञाकारी लोग थे. 75 और लूत को हमने अपनी रहमत में दाख़िल किया. निस्संदेह वह भले लोगों में से था.

76 और (याद करो) नूह को, इन सबसे पहले उसने हमें पुकारा था तो हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार की. हमने उसे और उसके लोगों को बहुत बड़ी पीड़ा से छुटकारा दिया. 77 और उन लोगों के मुक़ाबले में उसकी सहायता की जिन्होंने हमारे संदेशों को झुठलाया था. निस्संदेह वह बहुत बुरे लोग थे, तो हमने उन सबको डुबो दिया.

78 और दाऊद व सुलैमान (इन पैग़ंबरों को भी याद करो) जब वे दोनों एक खेत के संबंध में फ़ैसला कर रहे थे. उस खेत में कुछ लोगों की बकरियाँ रात के समय जा पड़ीं. हम उनके फ़ैसले (की कार्रवाई) को देख रहे थे. 79 तो हमने उस (मामले) की समझ सुलैमान को दे दी थी. (हालाँकि) हमने दोनों ही को विवेक और ज्ञान प्रदान किया

था. हमने पहाड़ों को दाऊद के अधीन कर दिया था. (दाऊद तो इतना ज़बरदस्त हमारा महिमागान करता था कि) उसके साथ हमने पर्वत और पक्षियों को भी महिमागान में शामिल कर दिया. इस काम को करने वाले हम ही थे. 80 हमने उसे (तुम इंसानों के लिए) युद्ध-वस्त्र बनाना सिखा दिया था, ताकि वह तुम्हें युद्ध में सुरक्षित रखे, फिर क्या तुम (हमारे प्रति) कृतज्ञता का परिचय दोगे?

81 हमने सुलैमान के लिए तेज हवा को उसके वश में कर दिया जो उसके आदेश से उस भू-भाग की ओर चलती थी जिसमें हमने बरकतें रखी हैं. हम हर चीज़ का ज्ञान रखने वाले हैं. 82 और शैतानों में से भी (अर्थात जिन्नों में से भी) हमने कुछ को उसका आज्ञाकारी बना दिया था, जो उसके लिए गोता लगाते थे और उसके सिवा दूसरे काम भी करते थे. उन सबकी निगरानी करने वाले हम ही थे.

83 और अय्यूब को भी (याद करो,) जबकि उसने अपने रब को पुकारा, (कहा, ऐ मेरे रब!) मुझे बीमारी लग गयी है और तू सारे दया करने वालों से अधिक दयावान है. 84 तो हमने अय्यूब की प्रार्थना स्वीकार की और उसे जो कष्ट था उसे दूर कर दिया. और हमने उसे उसका परिवार दिया (अर्थात उसके परिवार को सुदृढ़ किया और पूर्वस्थिति प्रदान की) और अपनी कृपा के रूप में और हमारी उपासना करने वालों के लिए बोध के तौर पर उतने ही और परिवार जण प्रदान किए (अर्थात परिवार जण की संख्या दोगुना कर दी.)

85 और इस्माईल व इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल (पर भी हमारी कृपा रही है) ये सब धैर्यवान लोग थे. 86 उन्हें हमने अपनी रहमत में दाख़िल किया था. निस्संदेह वे भले कर्म करने वालों में से थे.

87 और मछली वाले यूनुस को (याद करो), जबकि वह अपनी क़ौम से गुस्सा होकर (उनसे दूर) चला गया. उसने समझा था कि हम (उसके इस कार्य पर) उसकी

पकड़ न करेंगे. (फिर मछली ने उसे निगल लिया) फिर उसने उस अँधेरे में से हमें पुकारा (अर्थात मछली के पेट में से पुकार कर कहा, ऐ प्रभु!) तेरे सिवा कोई उपास्य नहीं! पाक है तेरी ज़ात! निस्संदेह मैं ही दोषी हूँ.

88 तो हमने यूनुस की प्रार्थना स्वीकार की और उसे (उस) दुःख से छुटकारा दिया. इसी तरह हम ईमान वालों को बचा लिया करते हैं.

89 और ज़करिया को (याद करो), जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि ऐ मेरे रब! तू मुझे अकेला न छोड़. सर्वश्रेष्ठ वारिस तो तू ही है.

90 तो हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और यहया (रूपी सुपुत्र उसे) प्रदान किया. और उसकी पत्नी को उसके लिए ठीक कर दिया (अर्थात उसका बाँझपन दूर कर दिया). यह लोग नेकी के कामों में दौड़-धूप करते थे और हमें आशा तथा भय के साथ पुकारते थे. और वे हमारे आगे झुके हुए थे (अर्थात हमें पूर्ण रूप से समर्पित थे).

91 और उस महिला को (याद करो), जिसने अपने सतीत्व को सुरक्षित रखा. हमने उसमें अपनी रूह फूँकी (और उसे बेटा प्रदान किया). और उसे तथा उसके बेटे को संसार वालों के लिए एक निशानी बना दिया.

92 (इंसानों!) तुम्हारा समुदाय वास्तव में एक ही समुदाय है (अर्थात सारे इंसानों का समुदाय) और मैं ही हूँ तुम्हारा रब! तो तुम मेरी ही उपासना करना.
93 लेकिन लोगों ने अपने मामले में (मतभेद करके एक मानवीय समुदाय के) टुकड़े-टुकड़े कर डाले (अर्थात विभिन्न पंथ एवं संप्रदाय में बट गए). लेकिन अंततः सब हमारे पास आने वाले हैं.

94 तो जो व्यक्ति भले कर्म करेगा और ईमान वाला होगा तो उसके कर्मों की उपेक्षा नहीं की जाएगी. हम उसे लिख लेते हैं.

95 जिस बस्ती को भी हमने नष्ट किया है, वे (ऐसे लोग थे कि उनका सन्मार्ग की ओर) पलट आना (बिल्कुल निषिद्ध अर्थात) असंभव हो चुका था. 96 यहाँ तक कि जब याजूज और माजूज खोल दिए जाएंगे और वे हर बुलंदी से निकल पड़ेंगे. 97 और सच्चा वादा क़रीब आ लगेगा, तो यकायक उन लोगों की आँखें फटी की फटी रह जाएँगी जिन्होंने सत्य का इन्कार किया था, (वे कहेंगे,) हाय हमारा दुर्भाग्य! हम इसकी बाबत ग़फ़लत में पड़े रहे, बल्कि हम ही अत्याचारी थे.

98 निस्संदेह तुम और तुम्हारे वे उपास्य जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते हो सब जहन्नम का ईंधन होंगे, वहीं तुम्हें जाना है. 99 यदि ये सचमुच ख़ुदा होते तो वहाँ न जाते. वे सभी उसमें सदैव रहेंगे. 100 उसमें वे चिल्लाएंगे और उसमें वे इस (चीख-पुकार) के सिवा और कुछ न सुनेंगे. 101 रहे वे लोग जिनके लिए हमारी ओर से भलाई का पहले ही फ़ैसला हो चुका होगा, तो वे निश्चित रूप से जहन्नम से दूर रखे जाएंगे. 102 वे (सत्यवादी लोग) जहन्नम की हल्की सी आवाज़ भी नहीं सुनेंगे. वे अपनी मनचाही चीज़ों के बीच सदैव रहेंगे. 103 उन्हें वह बड़ी घबराहट (अर्थात क़यामत के दिन ख़ुदा के सामने पेश होने की घबराहट) दुःख में न डालेगी. फ़रिश्ते उनका स्वागत करते हुए (कहेंगे), यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वादा किया गया था.

104 उस दिन हम आसमान को लपेट देंगे जैसे पंजिका में पन्ने लपेट दिए जाते हैं. जिस तरह हमने सृजन-कार्य प्रारंभ किया था उसी तरह हम उसकी पुनरावृत्ती करेंगे. यह हमारे ज़िम्मे एक वादा है और हम इसे करके रहेंगे. 105 (पूर्ववर्ती ग्रंथ) ज़बूर में हम उपदेश के बाद लिख चुके हैं कि हमारे नेक बंदे (जन्नती) ज़मीन के वारिस होंगे. 106 निस्संदेह इसमें एक बड़ी ख़बर है, उन लोगों के लिए जो (शुद्ध रूप से हमारी) उपासना करने वाले हैं. 107 (ऐ मुहम्मद!) हमने तुम्हें तमाम संसार वालों के लिए सिर्फ़ और सिर्फ़ रहमत बनाकर भेजा है. 108 (पैग़ंबर!) उनसे कहो, मेरे पास जो आसमानी संदेश

आता है वह यह है कि तुम्हारा उपास्य सिर्फ़ एक ही उपास्य है. फिर क्या तुम आज्ञाकारी बनते हो? 109 (पैग़ंबर!) यदि वे मुँह मोड़े तो कह दो कि मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से सुचित कर चुका हूँ. अब यह मैं नहीं जानता कि वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है क़रीब है या दूर. 110 निस्संदेह अल्लाह वह बात भी जानता है जो ऊँची आवाज़ से कही जाती है और वह भी जो तुम छिपाते हो.

111 (पैग़ंबर आगे कहता है) लेकिन (जहाँ तक मेरा संबंध है) मैं नहीं जानता कि यह (विलंब) तुम्हारे लिए संभवतः परीक्षा है या फिर लाभ उठा लेने का अवसर. 112 (लोगों का दुराग्रह देखकर अंततः) पैग़ंबर ने प्रार्थना की, ऐ मेरे रब! (हमारे बीच) सत्य के साथ फ़ैसला कर दे. और (हाँ!) हमारा रब अत्यंत कृपाशील है, हम उसी से उन बातों पर सहायता माँगते हैं जो तुम बयान करते हो.

सूरह–22. अल–हज

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 ऐ लोगो! अपने रब के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो. निस्संदेह क़यामत का भूकंप बड़ी भारी चीज़ है. 2 (जब क़यामत का भूकंप आएगा) उस दिन तुम देखोगे कि हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और हर गर्भवती का गर्भ गिर जाएगा. लोग तुम्हें मदहोश नज़र आएंगे, हालाँकि कि वे नशे में न होंगे, बल्कि अल्लाह का अज़ाब ही कुछ ऐसा कठोर होगा.

3 लोगों में कोई ऐसा भी है जो ज्ञान के बिना अल्लाह के संबंध से झगड़ता है. और प्रत्येक विद्रोही शैतान का अनुसरण करने लगता है. 4 हालाँकि उसके बारे में यह लिख दिया गया है कि जो कोई शैतान को अपना दोस्त बनाएगा, तो शैतान उसे पथभ्रष्ट करके रहेगा और उसे दहकती आग की यातना का रास्ता दिखाएगा.

5 ऐ लोगो! यदि तुम मौत के बाद पुनः जी उठने के बारे में संदेह में हो तो (तुम्हें मालूम होना चाहिए कि) हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है, फिर वीर्य से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर माँस की बोटी से जो रूप वाली भी होती है और बिना रूप की भी. (हम यह तुम्हें इसलिए बता रहे हैं,) ताकि (तुम्हारी रचना) तुम पर स्पष्ट कर दें. हम जिसे चाहते हैं एक नियत समय तक गर्भाशयों में ठहराए रखते हैं. फिर तुम्हें एक शिशु के रूप में बाहर लाते हैं. (फिर तुम्हारा पालन-पोषण करते हैं,) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो. तुममें से कोई पहले ही मर जाता है और कोई बुढ़ापे की जीर्ण अवस्था को पहुँचा दिया जाता है, जिसके परिणाम-स्वरूप वह जानने के पश्चात कुछ नहीं जानता. और तुम धरती को देखते हो कि सूखी पड़ी है, फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो उसमें ताज़गी आ जाती है और वह उभर आती है, फिर वह हर प्रकार की आकर्षक चीज़ें उगाती है. 6 यह सब कुछ इस कारण है कि अल्लाह ही सत्य है वही मुर्दों को ज़िंदा करता

है और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है. 7 और यह कि क़यामत की घड़ी आकर रहेगी, इसमें किसी संदेह की गुंजाइश नहीं और अल्लाह अवश्य उन लोगों को उठाएगा जो क़ब्रों में जा चुके हैं.

8 और लोगों में कोई ऐसा है जो अल्लाह के बारे में झगड़ता है बिना किसी ज्ञान तथा मार्गदर्शन तथा प्रकाशमान किताब के. 9 घमंड करते हुए, ताकि लोगों को अल्लाह के रास्ते से भटका दे. ऐसे इंसान के लिए (वर्तमान) दुनिया में अपमान है और क़यामत के दिन हम उसे जलने की यातना का मज़ा चखाएंगे. 10 (उसे कहा जाएगा,) यह तुम्हारे अपने हाथों के किए कामों का बदला है. अल्लाह तो अपने बंदों पर अत्याचार नहीं करता.

11 लोगों में कोई ऐसा है जो किनारे पर रहकर अल्लाह की उपासना करता है. यदि उसे लाभ पहुँचता है तो वह उस उपासना पर क़ायम रहता है. और यदि उसे कोई आज़माइश पेश आए तो उलटा फिर जाता है. उसने वर्तमान दुनिया भी खो दी और मृत्यु-पश्चात दुनिया भी. यही है स्पष्ट घाटा.

12 वह अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ को पुकारता है. जो न उसे हानि पहुँचा सकती है और न लाभ. यह चरम सीमा की पथभ्रष्टता है. 13 वह ऐसी चीज़ को पुकारता है जिसकी हानि उसके लाभ से अधिक निकट है. कैसा बुरा कार्यसाधक है (उसका) और कैसा बुरा मित्र! 14 निस्संदेह! अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और भले कार्य किए उन्हें ऐसे बागों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. अल्लाह करता है जो वह चाहता है.

15 जो व्यक्ति यह समझता है कि अल्लाह (वर्तमान) दुनिया तथा मृत्यु-पश्चात दुनिया में उसकी सहायता नहीं करेगा, तो उसे चाहिए कि एक रस्सी के ज़रीए आसमान तक पहुँचकर (उसमें) छेद करे, फिर देखे कि क्या उसका उपाय उसके क्रोध को दूर करने

वाला बनता है.16 इस तरह हमने क़ुरआन को स्पष्ट प्रमाणों के साथ उतारा है. निस्संदेह, अल्लाह जिसे चाहता है, मार्गदर्शन प्रदान करता है.

17 इसमें कोई संदेह नहीं कि जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने यहूदी धर्म अपनाया और जो साबई और ईसाई और मजूस (अग्नि-पूजक) हुए और वे जो अल्लाह के साथ साझीदार ठहराते हैं (अर्थात बहुदेववादी). अल्लाह क़यामत के दिन इन सबके बीच फ़ैसला कर देगा. निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है.

18 क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही के आगे सजदा करते हैं जो आसमानों में हैं और धरती में हैं. सूरज और चाँद और तारे और पर्वत और वृक्ष और पशु और इंसानों में से कई; और बहुत से ऐसे हैं जो यातना के लिए पात्र सिद्ध हो चुके हैं. और जिसे अल्लाह अपमानित करे उसे कोई सम्मान देने वाला नहीं. निस्संदेह! अल्लाह करता है जो वह चाहता है.

19 ये दो पक्ष हैं जिनके बीच अपने रब के मामले में झगड़ा है. तो जो सत्य का इन्कार करने पर अड़े रहे उनके लिए आग के कपड़े काटे जाएंगे. उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा. 20 जिससे उनके पेट के अंदर की चीज़ें तक गल जाएँगी और उनकी खालें भी. 21 उन(की ख़बर लेने) के लिए वहाँ लोहे के हथौड़े होंगे. 22 जब भी वे घबराकर उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर से उसमें धकेल दिए जाएंगे. (और उनसे कहा जाएगा,) चखो मज़ा जलने की यातना का. 23 निस्संदेह! जो लोग ईमान लाए और भले कार्य किए, अल्लाह उन्हें ऐसे बागों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी. वहाँ वे सोने के कंगन तथा मोती से आभूषित किए जाएंगे. वहाँ उनके कपड़े रेशम के होंगे. 24 उन्हें (दुनिया में) शुद्ध वाणी का मार्ग दिखाया गया था (अर्थात) उन्हें प्रशंसा के अधिकारी अल्लाह का मार्ग दिखाया गया था.

25 जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया और वे लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और मस्जिदे-हराम (अर्थात मक्कास्थित प्रतिष्ठित मस्जिद की ज़ियारत) से रोकते हैं, जिसे हमने लोगों के लिए बनाया है. जिसमें स्थानीय वासी और बाहर से आने वाले समान हैं. जो कोई भी उस (मस्जिद) में सन्मार्ग से हटकर अत्याचार का मार्ग अपनाएगा —— उसे हम कष्टप्रद यातना का स्वाद चखाएंगे.

26 (याद करो वह समय) जब हमने इब्राहीम को इस घर (अर्थात मक्कास्थित काबा) की जगह बता दी थी. (इस आदेश के साथ) कि मेरे साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराना. और मेरे घर को तवाफ़ (अर्थात परिक्रमा) करने वालों के लिए और (नमाज़ में) खड़े रहने वालों के लिए और नमन करने वालों तथा नतमस्तक होने वालों के लिए पाक-साफ़ रखो.

27 और (पैग़ंबर!) लोगों में हज की घोषणा कर दो. वे तुम्हारे पास आएंगे दूर-दराज़ से पैदल चल कर और दुबले ऊँटों पर सवार होकर, 28 ताकि उन्हें (आध्यात्मिक) लाभ की अनुभूति हो (जो यहाँ के माहौल में हैं) और कुछ निश्चित दिनों में उन (क़ुर्बानी के) जानवरों पर अल्लाह का नाम लें, जो उसने उन्हें प्रदान किए हैं. तो उसमें से ख़ुद भी खाओ और तंगहाल मोहताज को भी खिलाओ. 29 तो उन (हाजियों) को चाहिए कि वे अपना मैल-कुचैल दूर करें (अर्थात अपने तन व मन को पाक साफ़ कर लें) और अपनी मन्नतों को पूरा करें और इस प्राचीन घर (काबा) की परिक्रमा करें.

30 यह था (काबा के निर्माण का उद्देश्य). और जो कोई अल्लाह की निश्चित की हुयी मर्यादाओं का सम्मान करेगा तो यह उसके रब के यहाँ उसी के लिए बेहतर है. और तुम्हारे लिए चौपाये हलाल (अर्थात वैध) किए गए हैं, सिवा उसके जो तुम्हें बता दिया गया है. तो तुम मूर्तियों की गंदगी से बचो और झूठी बात से बचो.

31 (ऐ लोगो!) अल्लाह के प्रति एकाग्रचित्त रहो, (अर्थात सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही के बने रहो,) उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ, जो व्यक्ति अल्लाह के (ईश्वरत्व में) साझी ठहराता है तो मानो कि वह आसमान से गिर पड़ा. फिर पक्षी उसे उचक लेते हैं या हवा उसे (चूरा-चूरा) करके किसी दूरवर्ती स्थान पर ले जाकर बिखेर देती है.

32 तो बात यह है. जो कोई अल्लाह के द्वारा निश्चित किए गए प्रतीकों का आदर करेगा तो इसके द्वारा उसके मन में अल्लाह के प्रति जो भाव है वह व्यक्त होगा. 33 तुम उन (क़ुर्बानी के जानवरों) से एक नियत समय तक लाभान्वित हो सकते हो. फिर उन्हें क़ुर्बानी के लिए प्राचीन घर की ओर ले जाना है.

34 हमने हर (आस्थावान) समुदाय के लिए (उसमें त्याग-भावना जागृत करने हेतु) क़ुर्बानी करना अनिवार्य किया है, ताकि वे उन जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें प्रदान किए हैं. तो तुम्हारा ख़ुदा एक ही ख़ुदा है तो तुम उसी के होकर रहो. (पैग़ंबर!) विनम्रता अपनाने वालों को शुभ-सूचना दे दो. 35 जिनका हाल यह है कि जब अल्लाह का नाम लिया जाता है तो उनके दिल काँप उठते हैं. और जो कष्ट भी उन्हें पहुँचता है उस पर सब्र करते हैं. और वे नित्य रूप से नमाज़ अदा करने वाले हैं. और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं.

36 और क़ुर्बानी के ऊँटों को हमने अल्लाह के प्रतीकों में शामिल किया है. उनमें तुम्हारे लिए भलाई है. तो उन्हें (क़ुर्बानी के लिए) खड़ा करके उन पर अल्लाह का नाम लो. फिर जब वह करवट के बल गिर पड़ें तो उनमें से स्वयं भी खाओ और न माँगने वाले निर्धन को और माँगने वाले निर्धन को खिलाओ. इस प्रकार हमने इन जानवरों को तुम्हारे क़ाबू में कर दिया, ताकि तुम (हमारे प्रति) कृतज्ञता व्यक्त करने वाले बनो. 37 और अल्लाह को न उनका माँस पहुँचता है और न उनका रक्त, बल्कि अल्लाह को उसके प्रति तुम्हारे दिलों में जो (समर्पण) सजगता का भाव है वह पहुँचता है. इस प्रकार अल्लाह

ने उन्हें तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया है, ताकि तुम अल्लाह के प्रदान किए हुए मार्गदर्शन पर उसकी बड़ाई बयान करो. और (पैग़ंबर!) भले कर्म करने वालों को शुभ-सूचना दे दो.

38 निस्संदेह अल्लाह उन लोगों का (ज़ालिमों के ज़ुल्म से) बचाव करता है जो ईमान लाए हैं. निस्संदेह अल्लाह विश्वासघाती और कृतघ्न लोगों को पसंद नहीं करता. 39 अनुमति दे दी गयी उन लोगों को जिनसे युद्ध किया जा रहा है. इस कारण कि उन पर अत्याचार किया गया है. निस्संदेह अल्लाह उनकी सहायता के लिए समर्थ है. 40 वे लोग जो अपने घरों से अन्यायपूर्वक निकाले गए, सिर्फ़ इसलिए कि वे कहते हैं कि हमारा रब अल्लाह है. यदि अल्लाह लोगों को एक-दूसरे के ज़रिए से हटाता न रहे तो ख़ानख़ाहें (अर्थात आश्रम) और गिरजा (अर्थात ईसाइयों का इबादत घर) और सिनेगॉग (अर्थात यहूदियों का इबादत घर) और मसजिदें जिनमें अल्लाह का नाम कसरत से लिया जाता है सब ढहा दिए जाते. अल्लाह अवश्य उसकी मदद करेगा जो अल्लाह की मदद करे (अर्थात जो अपने आपको अल्लाह के मिशन में समर्पित करेगा अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा). निस्संदेह अल्लाह बड़ा ताक़तवर और ज़बरदस्त है.

41 ये वे लोग हैं (अर्थात सच्चे ईमान वाले) यदि हम उन्हें धरती पर प्रभुत्व प्रदान करें तो वे नमाज़ क़ायम करेंगे और ज़कात अदा करेंगे और भलाई का आदेश देंगे और बुराई से रोकेंगे. तमाम मामलों का परिणाम अल्लाह ही के अधिकार में है.

42 (पैग़ंबर!) यदि ये (मक्का के बहुदेववादी आज) तुम्हें झुठलाते हैं तो इनसे पहले नूह की क़ौम और आद और समूद (पैग़ंबरों को) झुठला चुके हैं. 43 और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम 44 और मदियन वाले भी झुठला चुके हैं और मूसा को भी झुठलाया जा चुका है फिर मैंने सत्य का इन्कार करने वालों को ढील दी. फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया. तो कैसी थी मेरी ओर से उन्हें दी गयी सज़ा.

45 (मानवीय इतिहास में) कितनी ही अपराधी बस्तियाँ थीं जिन्हें हमने नष्ट किया. अब वे अपनी छतों पर उलटी पड़ी हैं. और कितने ही कूएँ बेकार हैं और कितने ही महल खंडहर बने हुए हैं. 46 क्या ये लोग ज़मीन पर चले फिरे नहीं कि (असत्य को नकारने का अंजाम देखकर) उनके दिल ऐसे हो जाते कि वे उनसे समझते और उनके कान ऐसे हो जाते कि वे उनसे सुनते. क्योंकि आँखें अंधी नहीं होतीं, बल्कि दिल अँधे होते हैं जो सीनों में हैं.

47 (पैग़ंबर!) ये लोग तुमसे अज़ाब के लिए जल्दी किए हुए हैं (अर्थात वे तुम्हें अज़ाब शीघ्र लाने की चुनौती दे रहे हैं). लेकिन अल्लाह कदापि अपने वादे के विरुद्ध नहीं करेगा. तुम्हारे रब के यहाँ का एक दिन तुम्हारी गिनती के अनुसार एक हज़ार वर्ष के बराबर होता है. 48 कितनी ही बस्तियाँ हैं जो अत्याचारी थीं, मैंने (पहले) उन्हें ढील दी, फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया. फिर अंत में सबको मेरे ही पास आना है.

49 (पैग़ंबर!) कहो कि ऐ लोगो! मैं तुम्हारे लिए एक साफ़-साफ़ सावधान कर देने वाला हूँ. 50 तो जो लोग ईमान लाएंगे और भले कर्म करेंगे तो उनके लिए क्षमा है और सम्मानपूर्वक जीविका. 51 और जो लोग हमारे संदेशों को नीचा दिखाने के लिए दौड़-धूप करेंगे वही जहन्नम वाले हैं.

52 (ऐ मुहम्मद!) हमने तुमसे पहले जो भी पैग़ंबर या प्रेषित भेजा, तो जब उसने कुछ पढ़ा तो शैतान उसके पढ़ने में मिला दिया करता था. लेकिन अल्लाह शैतान के डाले हुए को मिटा देता है. फिर अल्लाह अपने संदेशों को दृढ़ता प्रदान कर देता है. अल्लाह ज्ञानवान तथा विवेकवान है. 53 (वह इसलिए यह होने देता है,) ताकि जो कुछ शैतान ने मिलाया है, उससे वह उन लोगों को जाँचे जिनके दिलों में (पाखंड का) रोग है और जिनके दिल कठोर हो चुके हैं. वास्तविकता यह है कि अत्याचारी लोग विरोध में बहुत दूर निकल गए हैं. 54 और यह इसलिए कि जो ज्ञानवान लोग हैं वे यह जान लें कि यह

क़ुरआन तेरे रब की ओर से (आया हुआ) सत्य है. और वे इस पर ईमान लाएँ और उनके दिल उसके आगे झुक जाएँ. निस्संदेह अल्लाह ईमान लाने वालों को सीधा मार्ग दिखाता है.

55 सत्य का इन्कार करने वाले लोग तो हमेशा इस (संदेश) के बारे में संदेह में पड़े रहेंगे, यहाँ तक कि अचानक उन पर क़यामत आ जाए या एक अशुभ दिन की यातना आ जाए. 56 उस दिन सारा अधिकार सिर्फ़ अल्लाह को प्राप्त होगा. वह उनके बीच फ़ैसला कर देगा. तो जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कार्य किए, वे नेमत के बागों में होंगे. 57 और जिन्होंने सत्य का इन्कार किया और हमारे संदेशों को झुठलाया उनके लिए अपमानजनक यातना है.

58 जिन लोगों ने अल्लाह के मार्ग में अपना घर-बार छोड़ा. फिर वे क़तल किए गए या मर गए. अल्लाह उन्हें अच्छी जीविका प्रदान करेगा. निस्संदेह अल्लाह ही उत्तम जीविका प्रदान करने वाला है. 59 वह उन्हें ऐसी जगह पर पहुँचाएगा जिससे वे प्रसन्न हो जाएंगे. निस्संदेह अल्लाह सर्वज्ञानी और अत्यंत सहनशील है.

60 यह तो है (उनका अंजाम); और (अन्याय व अत्याचार पीड़ित) कोई बदला ले तो वैसा ही (बदला ले) जैसा उसके साथ किया गया. और फिर उस पर अत्याचार किया जाए तो अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा (अर्थात अल्लाह हमेशा पीड़ित के साथ है). निस्संदेह अल्लाह क्षमाशील है और नर्मी से काम लेने वाला है.

61 यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल कराता है और दिन को रात में दाख़िल कराता है. अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है. 62 यह इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है और वह सब असत्य है जिन्हें लोग अल्लाह को छोड़कर पुकारते हैं. निस्संदेह अल्लाह ही सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है.

63 क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया, फिर धरती हरी-भरी हो गयी. निस्संदेह अल्लाह सूक्ष्मदर्शी है और ख़बर रखने वाला है. 64 उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ धरती पर है. निस्संदेह अल्लाह निस्पृह है, प्रशंसनीय है.

65 क्या तुम (चिंतनपूर्वक) निरीक्षण नहीं करते कि अल्लाह ने धरती की चीज़ों को तुम्हारी सेवा में लगा रखा है और नौका को भी, वह उसके आदेश से समुद्र में चलती है. और अल्लाह आसमान को धरती पर गिरने से रोके हुए है, लेकिन यह कि उसी का आदेश हो जाए (तो आसमान धरती पर अवश्य गिरेगा). निस्संदेह! अल्लाह लोगों के लिए करुणाशील तथा दयावान है. 66 वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हें जीवन प्रदान किया, फिर वही तुम्हें मृत्यु देता है, फिर वही तुम्हें (दोबारा) जीवित करेगा. निस्संदेह इंसान अत्यंत कृतघ्न है.

67 हमने हर समुदाय के लिए एक (उपासना की) रीति निश्चित की थी कि वे उसका अनुसरण करते थे. तो वे इस मामले में तुमसे झगड़ा न करें. तुम उन्हें अपने रब की ओर बुलाओ. निश्चित रूप से तुम सीधे मार्ग पर हो. 68 यदि वे तुमसे झगड़ा करें तो कह दो कि जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है. 69 अल्लाह क़यामत के दिन तुम्हारे बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिसके संबंध से तुम मतभेद करते रहे हो. 70 क्या तुम नहीं जानते कि आसमान और धरती की हर चीज़ अल्लाह के ज्ञान में है? सब कुछ एक किताब में अंकित है. निस्संदेह अल्लाह के लिए यह सरल है.

71 यह लोग अल्लाह को छोड़कर दूसरों की उपासना करते हैं, जिसके संबंध से अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा; और न (ग़ैरुल्लाह की) उपासना के संबंध से उन्हें कोई ज्ञान है. इन अत्याचारियों के लिए कोई सहायक नहीं. 72 और जब उन्हें हमारे स्पष्ट संदेश पढ़कर सुनाए जाते हैं तो तुम देखते हो कि सत्य के इन्कारियों के चेहरे बिगड़ने लगते हैं. (ऐसा लगता है कि) मानो कि अभी वे उन लोगों पर टूट पड़ेंगे जो उन्हें हमारे

संदेश सुनाते हैं. (पैग़ंबर!) उनसे कहो, क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि इससे बुरी क्या चीज़ है? वह आग है. अल्लाह ने सत्य का इन्कार करने वालों के लिए उसका वादा कर रखा है. और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है. 73 ऐ लोगो! एक मिसाल प्रस्तुत की जाती है, तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो. अल्लाह को छोड़कर जिन ख़ुदाओं को तुम पुकारते हो, वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, यद्यपि वे सब के सब इसके लिए एकत्र हो जाएँ और यदि मक्खी उनसे कुछ छीन ले जाए तो वे उसे छुड़ा भी नहीं सकते. सहायता चाहने वाले भी कमज़ोर और जिनसे सहायता चाही जाती है — वे भी कमज़ोर. 74 इन लोगों ने अल्लाह की क़द्र ही नहीं पहचानी, जैसा कि उसको पहचानना चाहिए. निस्संदेह अल्लाह सर्वशक्तिमान है और प्रभुत्वशाली है. 75 अल्लाह फ़रिश्तों में से भी अपना संदेशवाहक चुनता है और इंसानों में से भी. निस्संदेह अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है. 76 अल्लाह उसे भी जानता है जो लोगों के सामने है और उसे भी जानता है जो उनसे ओझल है. और सारे मामले अल्लाह की ही ओर पलटते हैं. 77 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! (अपने रब के आगे) झुको और उसे सजदा करो और अपने रब की इबादत करो और भलाई के काम करो, ताकि तुम कामयाब हो. 78 और अल्लाह के मार्ग में प्रयत्नों की पराकाष्ठा करो (अर्थात जिहाद करो) जैसा कि प्रयत्नों की पराकाष्ठा करना चाहिए. उसने तुम्हें (अपने काम के लिए) चुन लिया है. और उसने दीन के मामले में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी, तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन. उसी ने तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा, इससे पहले और इस क़ुरआन में भी, ताकि पैग़ंबर तुम पर (अर्थात अपने समकालीन लोगों पर) सत्य की गवाही दे और तुम तमाम लोगों पर (नसल-दर-नसल) सत्य की गवाही देने वाले बनो. तो नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह से दृढ़तापूर्वक जुड़ जाओ. वही तुम्हारा मालिक है! कितना अच्छा मालिक है वह! और कितना अच्छा मददगार!

पारा – 18

सूरह–23. अल–मोमिनून

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 निश्चय ही सफलता पायी ईमान लाने वालों ने. 2 जो अपनी नमाज़ में विनम्रता अपनाने वाले हैं. 3 जो व्यर्थ बातों से बचते हैं 4 जो ज़कात अदा करने वाले हैं 5 जो अपनी शर्मगाहों की रक्षा करते हैं. 6 सिवाय अपनी पत्नियों के और उन औरतों के जो विधीवत उनके स्वामित्व में हों तो उनके संबंध से वे निंदनीय नहीं. 7 अलबत्ता जो इसके अतिरिक्त चाहें तो यही लोग मर्यादा का उल्लंघन करने वाले हैं. 8 और वे जो अपनी अमानतों और प्रतिज्ञाओं का ध्यान रखते हैं. 9 और वे जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं. 10 यही लोग वारिस हैं 11 जो विरासत में जन्नत पाएंगे और वे उसमें सदैव रहेंगे.

12 हमने इंसान को मिट्टी के सत्व से बनाया है. 13 फिर उसे टपकी हुयी बूँद (अर्थात वीर्य) के रूप में एक सुरक्षित जगह रखा. 14 फिर उस बूँद को लोथड़े का रूप दिया. फिर उस लोथड़े को माँस बना दिया. फिर उस माँस की हड्डियाँ बनायी. फिर हड्डियों पर माँस चढाया. फिर हमने उसको एक नयी सूरत में बनाकर खड़ा किया. बड़ा ही महिमावान है अल्लाह! श्रेष्ठतम सृजनकर्ता! 15 फिर उसके बाद तुम्हें अवश्य मरना है. 16 फिर तुम क़यामत के दिन उठाए जाओगे.

17 हमने तुम्हारे ऊपर सात मार्ग बनाए. और हम (हमारी) रचना से अनभिज्ञ नहीं.

18 हमने आसमान से ठीक हिसाब के अनुसार पानी उतारा. फिर हमने उसको धरती में ठहरा दिया. और हम उसको वापस लेने के लिए समर्थ हैं.

19 फिर उस पानी के द्वारा हमने तुम्हारे लिए खजूर और अंगूर के बाग़ पैदा किए. तुम्हारे लिए उन बाग़ों में बहुत से फल हैं. और तुम उन बाग़ों में से खाते हो. 20 और वह पेड़

भी हमने सृजित किया जो सीनाई पर्वत से निकलता है. वह तेल लिए उगता है और खाने वालों के लिए सालन भी.

21 और तुम्हारे लिए मवेशियों में भी शिक्षा-सामग्री है. उनके पेटों में जो कुछ है उसमें से हम तुम्हें एक चीज़ (अर्थात दूध) पिलाते हैं. तुम्हारे लिए उनमें बहुत से लाभ हैं और तुम उन्हें खाते भी हो. 22 और तुम उन पर और नौकाओं पर सवारी करते हो.

23 हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा दूसरा कोई ऐसा नहीं जिसकी तुम इबादत करो. क्या तुम डरते नहीं हो?

24 तो नूह की क़ौम के प्रमुख लोग जिन्होंने सत्य मानने से इन्कार कर दिया था, (नूह के बारे में अपने लोगों से) कहने लगे. यह तो बस तुम्हारे ही जैसा एक मनुष्य है. वह चाहता है कि तुम्हारे ऊपर श्रेष्ठता प्राप्त करे. और यदि अल्लाह को भेजना होता तो वह फ़रिश्ते भेजता. यह बात तो हमने कभी अपने पिछले बड़ों में नहीं सुनी. 25 कुछ नहीं! इस आदमी को ज़रा जुनून हो गया है. तो कुछ समय तक इसके संबंध से प्रतीक्षा करो.

26 नूह ने (ख़ुदा से) दुआ की, ऐ प्रभु! इन लोगों ने मुझे झुठला दिया है, अब तू ही मेरी सहायता कर. 27 तो हमने उसको यह संदेश भेजा कि तुम हमारी निगरानी में और हमारे मार्गदर्शन के अनुसार नाव तैयार करो. फिर जब हमारा आदेश आ जाए और धरती से पानी उबल पड़े तो हर प्रकार के जानवरों में से एक-एक जोड़ा लेकर उसमें सवार हो जाओ; और अपने घर वालों को भी साथ ले लो, सिवाय उनके, जिनके संबंध से पहले निर्णय हो चुका है. और जिन्होंने अत्याचार किया है उनके मामले में मुझसे बात न करना. निस्संदेह उन्हें डूबना है.

28 फिर जब तुम और तुम्हारे साथी नाव में बैठ जाएँ तो कहो, शुक्र है उस अल्लाह का जिसने हमें ज़ालिम लोगों से मुक्ति दी. 29 कहो, ऐ मेरे रब! मुझे बरकत वाली जगह उतार; और तू
ही (हमें) सबसे अच्छी जगह उतार सकता है. 30 निस्संदेह इसमें निशानियाँ हैं और निस्संदेह हम बंदों की परीक्षा लेते हैं.

31 फिर हमने उनके बाद दूसरे समूह का सृजन किया. 32 फिर उन्हीं में से एक संदेशवाहक उनके पास भेजा. (इस संदेश के साथ कि) तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा दूसरा कोई ऐसा नहीं जिसकी तुम इबादत करो. क्या तुम डरते नहीं. 33 उसकी क़ौम के सरदार जिन्होंने सत्य स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था और जिन्होंने मृत्यु-पश्चात दुनिया में (ख़ुदा से) होने वाली मुलाक़ात (अर्थात ख़ुदा की अदालत में होने वाली पेशी) को झुठला दिया था, (क्योंकि) उन्हें हमने सांसारिक जीवन में संपन्नता प्रदान कर रखी थी. वे कहने लगे, यह तो बस तुम्हीं जैसा एक आदमी है. जो कुछ तुम खाते वही यह खाता है. और यह वही पीता है जो कुछ तुम पीते हो. 34 और यदि तुमने अपने ही जैसे एक आदमी का आज्ञापालन स्वीकार कर लिया तो तुम बड़े घाटे में रहोगे.

35 (सत्य नकारने वाले पैग़ंबर के संबंध से कहते हैं,) क्या यह व्यक्ति तुम्हें बताता है कि जब तुम मरकर मिट्टी और हड्डियाँ हो जाओगे तो फिर तुम (जीवित करके) निकाले जाओगे. 36 असंभव, बिल्कुल असंभव है यह वादा जो तुमसे किया जा रहा है. 37 जीवन तो बस यही सांसारिक जीवन है. यहीं हम मरते हैं और जीते हैं. हम पुनः उठाए जाने वाले नहीं हैं. 38 यह व्यक्ति अल्लाह के नाम पर सिर्फ़ झूठ गढ़ रहा है. और हम कभी उसको मानने वाले नहीं हैं.

39 पैग़ंबर ने (ख़ुदा से) दुआ की, ऐ मेरे रब! इन लोगों ने मुझे झुठला दिया है, अब तू ही मेरी सहायता कर. 40 (इस पर ख़ुदा की ओर से) कहा गया, यह लोग जल्द

ही पछताएंगे. 41 तो उन्हें एक भयानक आवाज़ ने न्यायपूर्वक पकड़ लिया. फिर हमने उन्हें कुड़ा-करकट बनाकर रख दिया. तो फिटकार है अत्याचारी लोगों पर.

42 फिर उनके बाद हमने दूसरी क़ौमें उठायीं. 43 कोई क़ौम न तो अपने निर्धारित समय से आगे बढ़ सकती है और न पीछे रह सकती है.

44 फिर हमने लगातार अपने पैग़ंबर भेजे. जब भी किसी क़ौम के पास उनका पैग़ंबर आया तो क़ौम के लोगों ने उसको झुठलाया, तो हमने एक के बाद एक को नष्ट कर दिया और हमने उन्हें क़िस्से-कहानियाँ बना दिया. फिटकार है उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते.

45 फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को अपनी निशानियों और स्पष्ट प्रमाण के साथ, 46 फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा तो उन्होंने घमंड किया. वे थे ही घमंडी लोग. 47 वे कहने लगे, क्या हम अपने ही जैसे दो आदमियों की बात मान लें, जबकि इनकी क़ौम के लोग हमारे दास हैं.

48 फिर फ़िरऔन और उसके सरदारों ने मूसा व हारून को झुठला दिया और नष्ट होने वालों में से हो गए. 49 और हमने मूसा को किताब दी ताकि वे (अर्थात बनी इसराईल) मार्ग पाएँ.

50 और हमने मरियम-पुत्र (ईसा) को और उसकी माँ को एक निशानी बनाया और हमने उन दोनों को एक ऊँची जगह पर रखा; जो शांति का स्थान थी और वहाँ स्रोत बह रहा था.

51 ऐ पैग़म्बरों! पाक चीज़ें खाओ और भले कर्म करो. मैं जानता हूँ जो कुछ तुम करते हो. 52 (लोगो!) तुम्हारा दीन (अर्थात धर्म) एक ही दीन है और मैं हूँ तुम्हारा रब, तो मेरे प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो.

53 फिर लोगों ने अपने धर्म के आपस में टुकड़े-टुकड़े कर लिए. (अब) हर समूह के पास जो कुछ है उसी में वह मगन है. 54 तो छोड़ो इन्हें कि एक समय तक वे ग़फ़लत में डूबे रहें. 55 क्या (सत्य का इन्कार करने वाले) यह समझते हैं कि हम उन्हें जो संपत्ती और संतान दिए जा रहे हैं, 56 तो हम उन्हें लाभ पहुँचाने में सक्रिय हैं? बल्कि (सत्य यह है कि) वे बात को नहीं समझते.

57 निस्संदेह जो लोग अपने रब के भय से काँपते रहते हैं 58 और जो अपने रब की निशानियों पर ईमान रखते हैं. 59 और जो अपने रब के साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराते (यही लोग सफल होने वाले हैं). 60 और उन (ईमान वालों) का हाल यह है कि वे (ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए) देते हैं जो कुछ भी देते हैं. और उनके दिल (इस विचार से) काँपते हैं कि उन्हें अपने रब की ओर लौटना है.

61 इन (ईमान वाले) लोगों (की यह भी विशेषता होती है) कि वे भलाइयों की और दौड़ने वाले तथा पहल करके उन्हें पा लेने वाले होते हैं.62 हम किसी पर उसकी क्षमता से अधिक बोझ नहीं डालते. और हमारे पास एक किताब है जो (हर एक का हाल) ठीक-ठीक बता देने वाली है. और लोगों पर अत्याचार नहीं होगा.

63 बल्कि उनके दिल इसकी ओर से ग़फ़लत में हैं. और उनके कुछ कर्म उससे भिन्न हैं (जिनका उल्लेख ईमान वालों के संबंध से किया गया है). वे उन्हीं (कर्मों) को करते रहेंगे, 64 यहाँ तक कि जब हम उनके संपन्न लोगों को यातना में पकड़ेंगे तो वे विलाप और फ़रियाद कर रहे होंगे. 65 (कहा जाएगा,) अब फ़रियाद न करो. अब हमारी ओर से तुम्हें कोई सहायता मिलने वाली नहीं. 66 मेरे संदेश तुम्हें सुनाए जाते थे तो तुम पीठ फेर कर भागते थे, 67 उससे घमंड करते हुए, मानो किसी कहानी कहने वाले को छोड़ रहे हो (अर्थात वे अल्लाह के संदेशों को क़िस्सा-कहानी समझते थे.).

68 क्या उन्होंने इस वाणी पर विचार नहीं किया, या इनके पास कोई ऐसी चीज़ आयी है जो उनके पहले उनके बाप-दादा के पास नहीं आयी थी? 69 या फिर उन्होंने उनके पैग़ंबर को पहचाना नहीं, इसलिए उसका इन्कार कर रहे हैं? 70 या ये कहते हैं कि इसको (अर्थात पैग़ंबर को) उन्माद हो गया है? नहीं! (वास्तविकता यह है कि) पैग़ंबर उनके पास सत्य लेकर आया है, लेकिन उनमें से अधिकतर लोगों को सत्य अप्रिय है. 71 यदि सत्य उनकी इच्छाओं के अधीन होता तो आसमान और धरती और जो इनमें है सब नष्ट हो जाते. बल्कि हमने इनके पास इनके लिए उपदेश-नामा भेजा है, तो वे अपने उपदेश-नामे से मुँह मोड़ रहे हैं.

72 (पैग़ंबर!) क्या तुम उनसे कुछ धन माँग रहे हो, तो तुम्हारे रब का दिया हुआ तुम्हारे लिए उत्तम है. और वही उत्तम जीविका देने वाला है. 73 निस्संदेह तुम उन्हें सीधे रास्ते की ओर बुला रहे हो. 74 लेकिन जो लोग मृत्यु-पश्चात जीवन पर विश्वास नहीं रखते वे सन्मार्ग से दूर चले गए हैं.

75 यदि हम इन (इन्कार करने वालों) पर दया करें और उन पर जो कष्ट है उसे दूर कर दें, तब भी वे अपने विद्रोह में लगे रहेंगे, भटकते हुए. 76 और हमने उन्हें यातना में पकड़ा, फिर भी वे न अपने रब के आगे झुके और न उन्होंने विनम्रता का परिचय दिया. 77 यहाँ तक कि जब हम उन पर कठोर यातना का द्वार खोल देंगे तो यकायक वे निराश होकर रह जाएंगे.

78 वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हें सुनने, देखने और सोचने की शक्ति प्रदान की, लेकिन तुम लोग कम ही कृतज्ञ होते हो. 79 वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हें धरती पर फैलाया और तुम उसी की ओर समेटे जाओगे. 80 वही ज़िंदगी देता है, वही मौत देता है. रात और दिन का उलट-फेर उसी के अधिकार में है. फिर क्या तुम बुद्धी से काम नहीं लेते?

81 लेकिन यह लोग वही कुछ कहते हैं जो इनसे पहले के लोग कह चुके हैं. 82 उन्होंने कहा, क्या जब हम मर जाएंगे और हम मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएंगे तो क्या हम पुनर्जीवित करके उठाए जाएंगे. 83 यह वादा तो हमसे और इससे पहले हमारे पूर्वजों से होता आ रहा है. यह तो बस पहले के लोगों की कहानियाँ हैं.

84 उनसे पूछो कि धरती और जो कुछ इसमें है यह किसका है, (बताओ,) यदि तुम जानते हो. 85 वे कहेंगे कि सब अल्लाह का है. उनसे कहो, क्या तुम सोचते नहीं.

86 उनसे पूछो, कौन मालिक है सात आसमानों का और कौन मालिक है (समस्त सृष्टि के) महान सत्ता-सिंहासन का? 87 वे कहेंगे, सब अल्लाह का है. कहो, फिर तुम डरते क्यों नहीं?

88 (पैग़ंबर!) इनसे पूछो, कौन है जिसके हाथ में हर चीज़ का अधिकार है और वह (कौन है जो) शरण देता है और उसके मुक़ाबले में कोई शरण नहीं दे सकता? बताओ, यदि तुम जानते हो. 89 वे कहेंगे, (यह बात तो) अल्लाह ही के लिए है. उनसे कहो, फिर कहाँ से तुम्हें धोका लगता है (अर्थात फिर जानते-बूझते भी तुम अल्लाह से क्यों कटे हुए हो)? 90 बल्कि हम उनके पास सत्य लाए हैं और कोई संदेह नहीं कि वे झूठे लोग हैं.

91 अल्लाह ने किसी को अपना बेटा नहीं बनाया है. और उसके साथ कोई दूसरा ख़ुदा नहीं. यदि ऐसा होता तो हर ख़ुदा अपनी रचना को लेकर अलग हो जाता और फिर कुछ दूसरों पर चढ़ाई करने लगते. पाक है अल्लाह उन बातों से जो ये लोग बनाते हैं. 92 वह खुले और छिपे का जानने वाला है. वह बहुत उच्च है उससे जिसको वे उसका साझी ठहराते हैं.

93 (पैग़ंबर! इस प्रकार) दुआ करो, ऐ मेरे रब! जिस (यातना) का इनसे वादा किया जा रहा है, यदि तू मुझे वह दिखाए. 94 तो ऐ मेरे रब! मुझे अत्याचारी लोगों में

शामिल न करना. 95 (पैग़ंबर) निश्चय ही हम इसकी सामर्थ्य रखते हैं कि जिसका वादा हम इन (इन्कार करने वालों) से कर रहे हैं उसको तुम्हें दिखा दें.

96 (पैग़ंबर!) तुम बुराई को उस ढंग से रोको जो उत्तम हो. हम भली प्रकार जानते हैं जो यह लोग कहते हैं. 97 कहो, ऐ मेरे रब! मैं तेरी शरण माँगता हूँ शैतानों के उकसाहटों से. 98 और ऐ मेरे रब! मैं इससे भी तेरी शरण माँगता हूँ कि वे मेरे पास आएँ.

99 (ये इन्कार करने वाले तब तक मानने वाले नहीं हैं) यहाँ तक कि उनमें से जब किसी को मौत आ जाएगी तो वह कहने लगेगा कि ऐ मेरे रब! मुझे (उसी दुनिया में) वापस भेज दीजियो. 100 जिसे मैं छोड़ आया हूँ, ताकि उसमें (रहकर) कुछ भले कर्म करूँ. (इस पर कहा जाएगा,) हरगिज़ नहीं! यह मात्र एक बात है जो वह कह रहा है. और उन सब (मरने वालों) के आगे एक रोक है उस दिन तक के लिए जब वे उठाए जाएंगे. 101 फिर जब (पुनरुत्थान का) सूर फूँका जाएगा तो उनके बीच न कोई रिश्ता रहेगा और न कोई किसी को पूछेगा. 102 तो जिनके पलडे भारी होंगे, वही लोग सफल होंगे. 103 और जिनके पलडे हलके होंगे तो यही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला. वे हमेशा जहन्नम में रहेंगे. 104 उनके चेहरों को आग झुलस देगी और उनके चेहरे उसमें विकृत हो रहे होंगे. 105 (वहाँ नाकाम हुए लोगों से ख़ुदा कहेगा) क्या तुम्हें मेरे संदेश पढ़कर नहीं सुनाए जाते थे, तो तुम उन्हें झुठलाते थे? 106 (इस पर) वे कहेंगे, ऐ हमारे रब! हमारे दुर्भाग्य ने हमें घेर लिया था और हम भटके हुए लोग थे. 107 ऐ हमारे रब! हमें यहाँ से निकाल दे! यदि फिर हम ऐसा करें तो हम निस्संदेह अत्याचारी होंगे. 108 (इस पर) ख़ुदा कहेगा, फिटकारे हुए पड़े रहो इसी में और मुझसे बात न करो.

109 मेरे बंदों में कुछ लोग थे जो कहते थे कि ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए तो तू हमें क्षमा कर दे और तू हम पर दया कर और तू सबसे बड़ा दया करने वाला है. 110 तो तुमने उनकी हँसी उड़ाई, यहाँ तक कि उनके पीछे तुम मेरी याद को भुला बैठे और तुम

उन पर हँसते रहे. 111 मैंने उनके धैर्य का आज उन्हें बदला दिया कि वही सफल हुए (जिनकी तुम हँसी उड़ाते थे.)

112 अल्लाह उनसे पूछेगा, वर्षों की गिनती के हिसाब से तुम कितनी देर पृथ्वी पर रहे? 113 वे कहेंगे, एक दिन या एक दिन से भी कम (हम वहाँ रहे). गिनती करने वालों से पूछ लीजिए. 114 ख़ुदा कहेगा, तुम बस थोड़ी ही देर रहे. काश! (क्या ही अच्छा होता कि) तुमने (यह उस समय) जाना होता. 115 क्या तुम समझते हो कि हमने तुम्हारा सृजन निरुद्देश्य किया है और तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे?

116 बहुत उच्च है अल्लाह, सच्चा बादशाह, उसके सिवा दूसरा कोई पूजनीय नहीं. वह मालिक है (समस्त सृष्टि के) महान सत्ता-सिंहासन का. 117 जो व्यक्ति अल्लाह के साथ किसी और उपास्य को पुकारे, जिसके पक्ष में उसके पास कोई प्रमाण नहीं. तो उसका हिसाब उसके रब के पास है. निस्संदेह सत्य का इन्कार करने वाले कभी सफलता नहीं पा सकते. 118 (पैग़ंबर! इस तरह) दुआ करना, ऐ मेरे रब! मुझे क्षमा कर दे और मुझ पर दया कर, तू सबसे उत्तम दयावान है.

सूरह–24. अन–नूर

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 यह एक सूरह है जिसे हमने उतारा है और इसे हमने अनिवार्य किया है. इसमें हमने साफ़-साफ़ संदेश उतारे हैं, ताकि तुम उपदेश ग्रहण करो. 2 व्यभिचार करने वाली औरत और व्यभिचार करने वाले पुरुष दोनों में से हर एक को सौ कोड़े मारो. और तुम्हें इन दोनों पर अल्लाह के दीन (मज़हब) के मामले में दया नहीं आनी चाहिए, यदि तुम अल्लाह पर और अंतिम दिन पर विश्वास रखते हो. और चाहिए कि दोनों को दंड देने के समय ईमान वालों का एक समूह उपस्थित रहे. 3 व्यभिचार करने वाला पुरुष विवाह न करे, सिवाय व्यभिचार करने वाली स्त्री से अथवा बहुदेववादी स्त्री से. इसी तरह व्यभिचारी स्त्री व्यभिचारी पुरुष से विवाह करेगी या किसी बहुदेववादी से. (ऐसे विवाह) ईमान वालों के लिए निषिद्ध हैं.

4 जो लोग पाकदामन औरतों पर तोहमत लगाएँ फिर चार गवाह न लाएँ, उन्हें अस्सी कोड़े मारो और उनकी गवाही कभी स्वीकार न करो, यही लोग अवज्ञाकारी हैं. 5 सिवाय उन लोगों के जो इसके पश्चात (सन्मार्ग की ओर पलट आएं और अपना) सुधार कर लें तो अल्लाह क्षमाशील और दयावान है.

6 और जो लोग अपनी पत्नियों पर आरोप लगाएँ और उनके पास उनके अपने सिवा और गवाह न हों तो उनमें से ऐसे व्यक्ति की गवाही (अर्थात पति की गवाही) इस तरह होगी कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खाकर कहे कि निस्संदेह वह सच्चा है. 7 और पाँचवी बार यह कहे कि अल्लाह की (उस पर) फिटकार हो, यदि वह झूठा हो. 8 और औरत से सज़ा इस तरह टल सकती है कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खाकर यह गवाही दे कि यह व्यक्ति (अर्थात उसका पति) झूठा है 9 और पाँचवी बार यह कहे कि अल्लाह के द्वारा फिटकार हो (मुझ पर, अर्थात औरत पर) यदि यह व्यक्ति सच्चा हो.

10 यदि तुम लोगों पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती (तो तुम संकट में पड़ जाते). और यह कि अल्लाह पश्चात्ताप को स्वीकार करने वाला और बुद्धिमान है.

11 जो लोग यह तोहमत गढ़ लाए हैं, वे तुम्हारे ही भीतर की एक टोली है. तुम इस घटना को अपने पक्ष में बुरा न समझो, बल्कि यह तुम्हारे लिए भलाई ही है. उनमें से प्रत्येक व्यक्ति के लिए उतना ही हिस्सा है जितना गुनाह उसने कमाया और जिसने उसमें से सबसे बड़ा हिस्सा लिया (अर्थात जो इस तोहमत वाली घटना को गढ़ने का मुख्य सूत्रधार है) उसके लिए बड़ी यातना है.

12 ऐसा क्यों न हुआ कि जब तुम लोगों ने उसे सुना था, तब ईमान वाले पुरुष तथा ईमान वाली स्त्रियाँ अपने आपसे (अर्थात अपने लोगों के प्रति) अच्छा गुमान करते और कहते कि यह तो स्पष्ट रूप से तोहमत (अर्थात झूठा आरोप) है. 13 आख़िर यह लोग इस पर चार गवाह क्यों न लाए, तो जब वे गवाह नहीं लाए तो अल्लाह की दृष्टि में वही झूठे हैं.

14 यदि इस दुनिया में और मृत्यु-पश्चात दुनिया में तुम लोगों पर अल्लाह की मेहरबानी और उसकी दयालुता न होती, तो जिन बातों में तुम पड़ गए थे, उसके कारण तुम पर कोई बड़ी विपत्ति आ जाती. 15 जब तुम अपनी ज़बानों से इस (तुहमत) का उल्लेख कर रहे थे; और अपने मुँह से ऐसी बात कह रहे थे जिसका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं था. तुम उसे एक साधारण बात समझ रहे थे. जबकि वह अल्लाह की दृष्टि में बहुत भारी बात थी. 16 इसे सुनते ही तुमने क्यों न कहा, ऐसी बात ज़बान से निकालना हमें शोभा नहीं देता. (ऐ अल्लाह!) तू पाक है! यह तो बहुत बड़ी तोहमत है. 17 अल्लाह तुम्हें उपदेश देता है कि फिर कभी ऐसा न करना, यदि तुम ईमान वाले हो. 18 अल्लाह तुम्हें साफ़-साफ़ उपदेश देता है. वह ज्ञानवान और विवेकवान है.

19 जो लोग चाहते हैं कि ईमान वाले लोगों में अश्लीलता का चर्चा हो, उनके लिए वर्तमान दुनिया में और मृत्यु-पश्चात दुनिया में कष्टप्रद यातना है. अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते. 20 यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती (तो सोच लेना चाहिए कि क्या कुछ बुरा घटित न हुआ होता) और यह कि अल्लाह करुणामय है, दया करने वाला है.

21 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम शैतान के पदचिह्नों पर न चलो, जो व्यक्ति शैतान के पदचिह्नों पर चलेगा तो वह उसको अश्लीलता और बुरे कार्य ही करने को कहेगा. यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और दया न होती तो तुममें से कोई भी (अपने बूते) शुद्ध (मन का) नहीं बन सकता. लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है (उसके मन को) पाक कर देता है. अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है. 22 तुममें से जो लोग सामर्थ्य वाले और संपन्न हैं, वे इस बात की क़सम न खाएँ कि वे अपने रिश्तेदारों को और निर्धन लोगों को और अल्लाह के मार्ग में अपना घर-बार छोड़े हुए लोगों को कुछ न देंगे (अर्थात उनकी किसी प्रकार सहायता न करेंगे). (बल्कि) चाहिए कि उन्हें क्षमा किया जाए और (उनके साथ) दरगुज़र से काम लिया जाए. क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा करे. अल्लाह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है.

23 जो लोग पाकदामन, भोली-भाली ईमान रखने वाली औरतों पर झूठा आरोप लगाते हैं उन पर इस दुनिया में और मृत्यु-पश्चात दुनिया में फिटकार है और उनके लिए बड़ी यातना है. 24 उस दिन जब उनकी ज़बानें, उनके हाथ, उनके पैर उनके विरुद्ध गवाही देंगे, उन करतूतों के संबंध से, जो वे किया करते थे. 25 उस दिन (अर्थात न्याय के दिन) अल्लाह उन्हें उनका उचित बदला पूरा-पूरा दे देगा और वे जान लेंगे अल्लाह ही सत्य है, स्पष्ट सत्य.

26 नापाक औरतें नापाक मर्दों के लिए हैं और नापाक मर्द नापाक औरतों के लिए. पाक औरतें पाक मर्दों के लिए हैं और पाक मर्द पाक औरतों के लिए. (सच्चरित्र पुरुष व स्त्रियाँ) बरी हैं उन बातों से जो ये लोग कर रहे हैं. उनके लिए क्षमा और सम्मानित आजीविका है.

27 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में प्रवेश न करो, जब तक अनुमति न प्राप्त कर लो और घर वालों को सलाम न कर लो. यही तुम्हारे लिए उत्तम है, कदाचित तुम याद रखो. 28 यदि वहाँ किसी को न पाओ, (तब भी) उसमें प्रवेश न करना, जब तक कि तुम्हें अनुमति प्राप्त न हो. यदि तुम से कहा जाए कि वापस चले जाओ, तो वापस हो जाओ. यही तुम्हारे लिए अधिक अच्छी बात है. और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे ख़ूब जानता है. 29 तुम पर इसमें तनिक दोष नहीं कि तुम उन घरों में प्रवेश करो जिनमें कोई न रहता हो. उनमें तुम्हारे लाभ की कोई चीज़ हो (तो तुम उनमें जा सकते हो). अल्लाह जानता है जो कुछ तुम प्रकट करते हो और जो कुछ तुम (इंसानों से) छिपाते हो.

30 (पैग़ंबर!) ईमान वाले पुरुषों से कहो, वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें. यह उनके लिए मन की शुद्धता की बात है. निस्संदेह अल्लाह जानता है जो कुछ वे करते हैं.

31 (पैग़ंबर!) ईमान वाली औरतों से कहो, कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें. और अपने सौंदर्य को प्रकट न करें, सिवाय उसके जो सामान्यता प्रकट हो जाए. वे अपने दुपट्टे अपने सीनों पर डाले रहें और अपने सौंदर्य को प्रकट न करें, लेकिन अपने पतियों पर या अपने पिता पर या अपने पति के पिता पर या अपने बेटों पर या अपने पति के बेटों पर या अपने भाइयों पर या अपने भाइयों के बेटों पर या अपनी बहनों के बेटों पर या अपने मेल-जोल की औरतों पर या उन पर जो तुम्हारी

मिल्कियत में हों या उन अधीनस्थ पुरुषों पर जो (औरतों से) कुछ इच्छा नहीं रखते. या ऐसे लड़कों पर जो औरतों की परदे की बातों से अभी अनभिज्ञ हों. और औरतें ज़मीन पर पैर मारकर न चला करें कि अपना जो शृंगार उन्होंने छिपा रखा है, वह प्रकट हो जाए. ऐ ईमान वालो! तुम सब मिलकर अल्लाह की ओर पलट आओ, ताकि तुम सफलता प्राप्त करो.

32 तुम में जो (विवाहयोग्य) अविवाहित हैं, उनका विवाह कर दो. और तुम्हारे दासों और दासियों में से जो नेक हों (और विवाह के योग्य हों) उनका भी विवाह कर दो. यदि वे निर्धन होंगे तो अल्लाह अपने अनुग्रह से उन्हें संपन्न कर देगा (अर्थात गरीबी के भय से उनका विवाह नहीं टालना चाहिए). अल्लाह बड़ा समाई वाला और जानने वाला है.
33 और जो (विवाहयोग्य होते हुए भी) विवाह का अवसर न पाएँ, उन्हें चाहिए कि अपने दामन को पाक रखें (अर्थात संयमपूर्वक रहें ताकि दामन पर कोई धब्बा न लगे,) यहाँ तक कि अल्लाह अपनी कृपा से उन्हें संपन्न कर दे. और जिन लोगों पर तुम्हें स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हो (अर्थात तुम्हारे दास या दासी), उनमें से जो कोई (दासत्व से मुक्ति पाने के लिए) लेखी करार करना चाहे, तो उनसे लेखी करार कर लो, यदि तुम उनमें कुछ भलाई देखते हो. और उनको उस धन में से दो जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है. और अपनी दासियों को पेशे पर विवश न करो, जबकि वे पाकदामन रहना चाहती हों, मात्र इसलिए कि सांसारिक जीवन का कुछ लाभ तुम्हें प्राप्त हो जाए. जो कोई उन्हें विवश करेगा, तो अल्लाह इस विवश किए जाने पर उनके लिए क्षमा करने वाला और दया करने
वाला है. 34 (लोगो!) हमने तुम्हारे पास स्पष्ट मार्गदर्शन देने वाले संदेश भेज दिए हैं. और उन लोगों की (शिक्षाप्रद) मिसालें भी जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं और (हमारे प्रति) सचेत रहने वालों के लिए उपदेश भी (इसमें मौजूद है).

35 अल्लाह आसमानों और धरती का प्रकाश है. उसके प्रकाश का उदाहरण ऐसा है जैसे एक ताक़ में चिराग़ रखा हुआ हो. चिराग़ एक शीशे में हो और वह शीशा ऐसा हो मानो वह चमकता हुआ तारा है. वह चिराग़ जैतून के एक ऐसे मुबारक पेड़ के तेल से रोशन किया जाता हो जो न पूर्वी हो और न पश्चिमी (अर्थात जिस पर सूर्य का प्रकाश दिन भर रहता हो). जिसका तेल ऐसा हो, मानो आग के छुए बिना ही वह स्वयं जल उठेगा. (इस प्रकार) प्रकाश के ऊपर प्रकाश (बढ़ने के सभी साधन संचित हो गए हों.). अल्लाह अपने प्रकाश की ओर जिसे चाहता है मार्ग दिखाता है. और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है. अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है.

36 (सत्य के प्रकाश से प्रकाशित लोग) उन घरों में (पाए जाते हैं) जिन्हें ऊँचा करने का और उनमें अपने नाम की याद करने का अल्लाह ने आदेश दिया है. वे उनमें प्रातःकाल और संध्या समय में उसका महिमागान करते हैं. 37 यह ऐसे लोग हैं जिन्हें अल्लाह की याद से और नमाज़ क़ायम करने से और ज़कात देने से न व्यापार ग़ाफ़िल कर सकता है, न लेन-देन का कोई व्यवहार. वे उस दिन से डरते रहते हैं जिस दिन उलट जाएंगे दिल और आँखें. 38 (और वे यह सब कुछ इसलिए करते हैं,) ताकि अल्लाह उन्हें उनके कर्मों का उत्तम बदला दे और उन्हें अपनी कृपा से और अधिक प्रदान करे. अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है.

39 लेकिन जो लोग सत्य न मानने पर अड़े रहे उनके कर्म ऐसे हैं जैसे चटियल मैदान में मृग-मरीचिका (Mirage अर्थात भ्रांति पैदा करने वाली चीज़). प्यासा आदमी उसे पानी समझता है, लेकिन जब उसके पास आता है तो वहाँ (पानी जैसी) कोई चीज़ नहीं पाता. लेकिन वह वहाँ अल्लाह को मौजूद पाता है. और अल्लाह उसके (जीवन का) पूरा-पूरा हिसाब चुका देता है, अल्लाह शीघ्र हिसाब करने वाला है.

40 या फिर (सत्य का इन्कार करने वालों की मिसाल ऐसी है) जैसे एक गहरे समुद्र में अँधेरा हो, लहर के ऊपर लहर उठ रही हो, ऊपर से बादल छाए हुए हों (इस प्रकार) ऊपर तले बहुत से अँधेरे, यदि कोई अपना हाथ निकाले तो वह उसको भी न देख पाए (इतना ज़्यादा अँधेरा). जिसको अल्लाह प्रकाश प्रदान न करे तो उसके लिए कोई प्रकाश नहीं.

41 क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह का महिमागान करते हैं वह सब जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं और वे पक्षी जो पंख फैलाए हुए उड़ रहे हैं? हर एक अपनी नमाज़ और (ख़ुदा का) महिमागान करने का तरीक़ा जानता है. और अल्लाह जानता है जो कुछ वे करते हैं.

42 अल्लाह ही की सत्ता है आसमानों और पृथ्वी पर (अर्थात समस्त सृष्टि में). और अल्लाह ही की ओर है सबकी वापसी.

43 क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह बादलों को चलाता है, फिर उन्हें परस्पर मिला देता है. फिर उन्हें तह पर तह कर देता है. फिर तुम देखते हो कि उसके बीच से वर्षा निकलती है. और वह आसमान से पहाड़-रूपी बादलों से ओले बरसाता है. फिर उसे जिस पर चाहता है गिरा देता है. और जिससे चाहता है उन्हें हटा देता है. उसकी बिजली की चमक से ऐसा प्रतीत होता है, जैसे निगाहों को उचक ले जाएगी. 44 अल्लाह रात व दिन को बदलता रहता है. निस्संदेह इसमें शिक्षा है आँख वालों के लिए.

45 अल्लाह ने प्रत्येक जीवधारी को पानी से बनाया है. उनमें से कोई पेट के सहारे चलता है. और उनमें से कोई दो पैरों पर चलता है. और उनमें से कोई चार पैरों पर चलता है. अल्लाह सृजन करता है जो वह चाहता है. निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है.

46 हमने (सत्य) साफ़-साफ़ स्पष्ट करने वाले संदेश प्रकट किए हैं. अल्लाह जिसे चाहता है सीधा मार्ग दिखा देता है.

47 और ये लोग कहते हैं कि हम अल्लाह और पैग़ंबर पर ईमान लाए और हमने आज्ञापालन स्वीकार किया, लेकिन इसके बाद उनमें से एक समूह (आज्ञापालन से) मुँह मोड़ जाता है, क्योंकि ये लोग ईमान वाले नहीं हैं. 48 जब उन्हें अल्लाह तथा उसके पैग़ंबर की ओर बुलाया जाता है, ताकि अल्लाह का पैग़ंबर उनके बीच (उनके आपस के मुक़द्दमे का) निर्णय करे, तो उनमें से एक समूह कतरा जाता है. 49 लेकिन (इन्हीं मुँह मोड़ जाने वालों को लगता है कि) फ़ैसला उनके पक्ष में होने वाला है तो पैग़ंबर के पास बड़े ही आज्ञापालन करने वाले बनकर आ जाते हैं. 50 क्या उनके दिलों में रोग है या वे संदेह में पड़े हुए हैं. या फिर उन्हें यह डर है कि अल्लाह और उसका पैग़ंबर उनके साथ अन्याय करेंगे? बल्कि (वास्तव में) यही लोग अत्याचारी हैं.

51 ईमान वालों की बात तो बस यह होती है कि जब भी वे अल्लाह और उसके पैग़ंबर की ओर बुलाए जाते हैं, ताकि पैग़ंबर उनके बीच निर्णय करे, तो वे कहते हैं कि हमने सुना और हमने माना. यही वे लोग हैं जो सफलता पाने वाले हैं. 52 जो व्यक्ति अल्लाह और उसके पैग़ंबर का आज्ञापालन करे और वह अल्लाह से डरे और उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बना रहे, तो यही लोग हैं जो सफल होंगे.

53 ये (पाखंडी लोग) अल्लाह के नाम से क़समें खाते हैं, कड़ी-कड़ी क़समें कि यदि तुम उन्हें (अल्लाह के मार्ग में निकलने का) आदेश दो तो वे अवश्य निकलेंगे. इनसे कहो, क़समें न खाओ, नियम के अनुसार प्रत्यक्ष आज्ञापालन करना आवश्यक है. निस्संदेह! तुम जो कुछ करते हो. अल्लाह उसकी ख़बर रखता है.

54 उनसे कह दो, अल्लाह के आदेश का पालन करो और पैग़ंबर के आज्ञापालक बनकर रहो. फिर यदि तुम मुँह मोड़ोगे तो (ख़ूब समझ लो कि) पैग़ंबर पर जिस (कर्तव्य) का

भार रखा गया है उसका वह ज़िम्मेदार है. और तुम पर जिस (कर्तव्य) का भार डाला गया है उसके ज़िम्मेदार तुम हो. तुम यदि उसका आज्ञापालन करोगे तो सन्मार्ग पाओगे. पैग़ंबर का दायित्व तो स्पष्ट रूप से (संदेश) पहुँचा देना है.

55 अल्लाह ने वादा किया है तुममें से उन लोगों के साथ जो ईमान लाते हैं और नेक कृत्य करते हैं कि वह उन्हें धरती पर सत्ता प्रदान करेगा, जैसा कि उसने उनसे पहले के लोगों को सत्ता प्रदान की थी. और उनके लिए अवश्य ही उनके दीन को (अर्थात मज़हब को) स्थायित्व प्रदान करेगा जिसे उसने उनके लिए पसंद किया है. और उनकी (वर्तमान) भय की हालत को निश्चिंतता में बदल देगा. वह मात्र मेरी उपासना करेंगे और किसी चीज़ को मेरा साझीदार न बनाएंगे. जो कोई इसके बाद भी सत्य को नकारेंगे तो ऐसे ही लोग अवज्ञाकारी हैं.

56 (ऐ ईमान रखने वालो!) नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और पैग़ंबर का आज्ञापालन करो, ताकि तुम पर दया की जाए. 57 जो लोग सत्य का इन्कार करने पर तुले हुए हैं, उनके संबंध से ऐसा विचार कदापि न करो कि वे धरती में अल्लाह को विवश कर देंगे. उनका ठिकाना आग है और वह अत्यंत बुरा ठिकाना है.

58 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जिन पर तुम्हें स्वामित्व प्राप्त है वे (अर्थात तुम्हारे दास एवं दासी) और वे जो तुम में अभी प्रौढ़ता को नहीं पहुँचे (उन्हें चाहिए की) तीन समयों में अनुमति लेकर तुम्हारे पास आया करें. सुबह की नमाज़ से पहले और दोपहर को जबकि तुम (आराम करने के लिए) अपने कपड़े उतार कर रख देते हो और इशा की (अर्थात रात की) नमाज़ के बाद. ये तीन समय तुम्हारे लिए परदे (अर्थात एकांत) के समय हैं. (इसके सिवा) दूसरे समयों में (वे बिना इजाज़त आएँ) तो न तुम पर कोई गुनाह है और न उन पर. तुम एक-दूसरे के पास अधिकता से आते-जाते रहते हो. इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने संदेशों को स्पष्ट करता है. और अल्लाह जानने वाला है और

बुद्धिमान है. 59 और तुम में से बच्चे जब युवावस्था को पहुँच जाएँ तो उन्हें चाहिए कि उसी तरह अनुमति लेकर आया करें जिस प्रकार उनके पहले के लोग (घर में प्रवेश करते समय) अनुमति लिया करते थे. इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपने संदेशों को स्पष्ट करता है. अल्लाह ज्ञान वाला तथा विवेक वाला है. 60 बड़ी बूढ़ी महिलाएँ जो विवाह की आशा नहीं रखतीं, उन पर कोई पाप नहीं, यदि वे अपनी चादरों को उतार कर रख दें, शर्त यह है कि वह सौंदर्य का प्रदर्शन करने वाली न हों. और फिर भी यदि वे सावधानी बरतें तो उनके लिए बेहतर है. अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला है.

61 न अँधे पर कोई दोष है और न लंगड़े पर कोई दोष और न बीमार पर कोई दोष और न तुम्हारे ऊपर इसमें कोई दोष है कि तुम अपने घरों से खाओ या अपने बाप-दादा के घरों से या अपनी माँओ के घरों से या अपने भाइयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चाचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामूओं के घरों से या अपनी ख़ालाओं के घरों से या उन घरों से जिनकी कूंजियाँ तुम्हारी सुपुर्दगी में हों या अपने दोस्तों के घरों से. इसमें भी कोई दोष नहीं कि तुम लोग मिलकर खाओ या अलग-अलग. लेकिन जब तुम घरों में प्रवेश करो तो अपने लोगों को सलाम किया करो, अच्छी दुआ — अल्लाह की ओर से निश्चित की हुयी, बरकत वाली और पाक. इस तरह अल्लाह अपने संदेश तुम्हारे सामने स्पष्ट करता है, ताकि तुम बुद्धि से काम लो.

62 ईमान वाले तो बस वही हैं जो अल्लाह और उसके पैग़ंबर पर (दृढ़तापूर्वक) विश्वास करते हैं. जब वे किसी सामुहिक कार्य के अवसर पर पैग़ंबर के साथ हों तो तब तक वे वहाँ से न जाएँ जब तक तुमसे अनुमति न ले लें. (पैग़ंबर!) जो लोग तुमसे अनुमति लेते हैं वही अल्लाह व पैग़ंबर को मानने वाले हैं. तो जब वे अपने किसी काम से

अनुमति माँगे, तो उनमें से जिसे चाहो अनुमति दे दिया करो. और उनके लिए अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना किया करो. निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है.

63 (ऐ ईमान वालो!) तुम लोग पैग़ंबर के बुलाने को इस प्रकार का बुलाना न समझो जिस प्रकार तुम आपस में एक-दूसरे को बुलाते हो. अल्लाह तुम में उन लोगों को ख़ूब जानता है. जो एक-दूसरे की आड़ लेते हुए चुपके से चले जाते हैं. तो जो लोग पैग़ंबर के आदेश का उल्लंघन करते हैं उन्हें डरना चाहिए कि उन पर कोई आज़माइश न आ पड़े या उन्हें कष्टप्रद यातना पकड़ ले. 64 सुन लो! जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है — सब अल्लाह का है. अल्लाह उस दशा को जानता है जिसमें तुम हो. जिस दिन लोग उसकी ओर लाए जाएंगे, तो जो कुछ उन्होंने किया होगा, तब वह उन्हें बता देगा. अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है.

सूरह–25. अल–फ़ुरक़ान

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 बड़ी बरकत वाली है वह ज़ात, जिसने अपने बंदे पर (इस क़ुरआन के रूप में सत्य व असत्य में अंतर करने वाली) कसौटी उतारी, ताकि यह (क़ुरआन) समस्त संसार वालों के लिए सचेत करने वाला हो.

2 (क़ुरआन को प्रकट करने वाला) वही है जिसके लिए ज़मीन व आसमानों की बादशाही है. उसने कोई बेटा नहीं बनाया और न उसकी बादशाही में कोई साझीदार है. उसने हर चीज़ की रचना की, फिर उसी ने हर चीज़ का एक पैमाना निश्चित किया. 3
और लोगों ने उसे छोड़कर ऐसे उपास्य बना रखे हैं जो किसी चीज़ का सृजन नहीं कर सकते, बल्कि वे स्वयं सृजित किए जाते हैं और अपने नफ़ा-नुक़सान के संबंध से उन्हें किसी प्रकार का अधिकार प्राप्त नहीं. इसी तरह न उन्हें किसी के मृत्यु पर कोई अधिकार प्राप्त है और न किसी के जीवन पर और न मरने के पश्चात दोबारा जीवित करने पर.

4 जिन लोगों ने सत्य को मानने से इन्कार कर दिया वे कहते हैं, यह (क़ुरआन) इसके सिवा कुछ नहीं कि एक मनगढ़ंत चीज़ है जिसे इस (व्यक्ति) ने स्वयं गढ़ लिया है. और कुछ दूसरे लोगों ने उस काम में उसकी सहायता की है. (अल्लाह के कलाम के संबंध से इस प्रकार की बातें करने वाले) यह लोग (बहुत ही बड़े) अत्याचार और झूठ पर उतर
आए हैं. 5 और वे कहते हैं कि ये पहले के लोगों की प्रमाणहीन बातें हैं जिन्हें उस व्यक्ति
ने लिखवा लिया है और वे (बातें) उसे सुबह और शाम सुनायी जाती हैं. 6 (पैग़ंबर!
आप) उनसे कह दीजिए, इस (क़ुरआन) को उसने उतारा है जो आसमानों और धरती के भेद जानता है. निस्संदेह वह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है.

7 (इन्कार करने वाले) कहते हैं, यह कैसा पैग़ंबर है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है. क्यों न उसके साथ कोई फ़रिश्ता भेजा गया कि वह इसके

साथ रहकर (न मानने वालों को) डराता. 8 या उसके लिए (आसमान से) कोई ख़ज़ाना ही उतार दिया जाता. या उसके पास ऐसा कोई बाग़ होता जिससे यह (निश्चिंतता की) जीविका प्राप्त करता. (पैग़ंबर के संदेश से प्रभावित लोगों के बारे में यह इन्कार करने वाले) अत्याचारी कहते हैं कि तुम लोग तो जादू के मारे एक आदमी के पीछे लग गए हो. 9 (पैग़ंबर!) देखो, ये लोग तुम्हारे लिए कैसी-कैसी मिसालें बयान कर रहे हैं. (हक़ीक़त यह है कि इस प्रकार) वे बहक चुके हैं कि फिर वह सन्मार्ग नहीं पा सकते.

10 बड़ी बरकत वाला है वह अल्लाह! यदि वह चाहे तो इससे भी उत्तम चीज़ें तुम्हें प्रदान कर सकता है. (जिन चीज़ों का उल्लेख ये इन्कार करने वाले लोग कर रहे हैं). (एक नहीं) बहुत से ऐसे बाग़ (वह तुम्हें प्रदान कर सकता है) जिनके नीचे नहरें बहती हों और (अनेक) बड़े-बड़े महल. 11 नहीं! (हक़ीक़त यह कि) ये लोग क़यामत को झुठला रहे हैं. हमने ऐसे व्यक्ति के लिए जो क़यामत को झुठलाए, भड़कती हुयी आग तैयार कर रखी है. 12 जब वह (आग) दूर से इन्हें देखेगी तो वे उसके बिफरने और दहाड़ने की आवाज़ें सुनेंगे. 13 और जब वे उसके किसी तंग स्थान में बाँध कर डाल दिए जाएंगे तो वे वहाँ मृत्यु को पुकारेंगे. 14 (तब उनसे कहा जाएगा) आज एक मृत्यु को नहीं, अनेकों मृत्यु को पुकारो. 15 इन (इन्कार करने वालों) से पूछो, क्या यह (जहन्नमरूपी अंजाम) अच्छा है या हमेशा रहने की जन्नत, जिसका वादा अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहने वालों से किया गया है. यह (जन्नत) उनके (कर्मों का) बदला और उनका (शाश्वत) ठिकाना होगी. 16 (जहाँ तक जन्नत का संबंध है) वहाँ जन्नती इंसानों के लिए वह सब होगा जो वे चाहेंगे, वे उसमें हमेशा-हमेशा के लिए रहेंगे. यह तुम्हारे रब के ज़िम्मे एक ऐसा वादा है जिसका पूरा होना अनिवार्य है.

17 और जिस दिन वह उन (पूजकों) को इकट्ठा करेगा (जो ग़ैरुल्लाह को पूजते थे) और उन्हें भी इकट्ठा करेगा जिनकी ये लोग अल्लाह के सिवा उपासना करते थे (अर्थात

उनके उपास्य). तब ख़ुदा उन (उपास्यों) से पूछेगा, क्या तुमने मेरे इन बंदों को गुमराह किया या ये स्वयं मार्ग से भटक गए. 18 (इस पर) वे कहेंगे, पाक है तेरी ज़ात! हमारे लिए ऐसा करना कदापि संभव न था कि तेरे सिवा दूसरों को संरक्षक-मित्र बनाया जाए. लेकिन तूने इन्हें और इनके बाप-दादा को संसार का सामान दिया, यहाँ तक कि वे (तेरे) उपदेश को भूल गए और नष्ट होने वाले बनकर रहे. 19 तो (अल्लाह कहेगा कि जिन्हें तुमने उपास्य मान रखा था) उन्होंने ही तुम्हें तुम्हारी बातों में झूठा ठहरा दिया है. अब तुम न (अपनी शामत को) टाल सकते हो और न कहीं से सहायता पा सकते हो. तुम में से जो भी व्यक्ति अत्याचारी कृत्य करेगा हम उसे एक बड़ी यातना चखाएंगे.

20 (ऐ मुहम्मद!) हमने तुमसे पहले जितने भी पैग़ंबर भेजे, वे सब खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते-फिरते थे. और हमने तुम्हें एक-दूसरे के लिए परीक्षा बनाया है. क्या तुम धैर्य दिखाते हो (यह हम देख रहे हैं). तुम्हारा रब सब कुछ देखता है.

पारा – 19

21 जो लोग हमसे मिलने की आशा नहीं रखते, वे कहते हैं कि हमारे ऊपर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे गए या क्यों हम अपने रब को नहीं देख लेते. उन्होंने अपने मन में अपने को बहुत बड़ा समझा और वे विद्रोह में हद से बहुत दूर निकल गए. 22 जिस दिन वे फ़रिश्तों को देखेंगे, वह अपराधियों के लिए किसी शुभ-सूचना का दिन न होगा. वे पुकार उठेंगे, पनाह! पनाह! 23 और हम उनके प्रत्येक कर्म की ओर बढ़ेंगे जो उन्होंने किया था. फिर हम उसे उड़ती हुयी धूल बना देंगे.

24 जन्नत वाले लोग उस दिन बेहतर ठिकानों में होंगे और अत्यंत अच्छे विश्राम-स्थल में.

25 जिस दिन आसमान बादल के साथ फट जाएगा और फ़रिश्ते उतारे जाएंगे. 26 उस दिन वास्तविक बादशाही सिर्फ़ रहमान की होगी. और वह दिन उन लोगों के लिए

बड़ा कठिन होगा जिन्होंने (परीक्षा-काल में) सत्य को नकारा था. 27 उस दिन (अर्थात फ़ैसले के दिन) अत्याचारी अपने हाथ चबा डालेगा, कहेगा, काश! मैंने पैग़ंबर के साथ मार्ग अपनाया होता. 28 हाय मेरा दुर्भाग्य! काश मैंने अमुक व्यक्ति को मित्र न बनाया होता. 29 उसके बहकावे में आकर मैंने वह नसीहत नहीं मानी जो मेरे पास आ चुकी थी. और शैतान तो है ही मनुष्य को धोका देने वाला. 30 (ख़ुदा की अदालत में) पैग़ंबर यह गवाही देगा कि ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को पूर्णतः छोड़ रखा था.

31 (पैग़ंबर!) इस तरह हमने अपराधियों में से हर पैग़ंबर के शत्रु बनाए. और तुम्हारा रब पर्याप्त है मार्गदर्शन के लिए और सहायता के लिए.

32 जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया, उन्होंने कहा, इस पैग़ंबर पर सारा क़ुरआन एक ही समय में क्यों न उतारा गया. (पैग़ंबर!) ऐसा इसलिए किया गया, ताकि क़ुरआन के माध्यम से हम तुम्हारे दिल को दृढ़ता प्रदान करें. (इसी उद्देश्य के लिए) हमने इसे ठहर-ठहर कर उतारा है. 33 (सत्य नकारने वाले) ये लोग हर बार तुम्हारे पास कोई विचित्र आक्षेप प्रस्तुत करते हैं, लेकिन हम ठीक-ठीक उत्तर तुम्हें बता देते हैं और उसका उत्तम स्पष्टीकरण भी. 34 जो लोग औंधे मुँह जहन्नम की ओर ले जाए जाएंगे, उनका ठिकाना बहुत बुरा है और वही हैं मार्ग से बहुत भटके हुए.

35 हमने मूसा को भी किताब प्रदान की थी और उसके साथ (उसके मिशन में) उसके भाई हारून को उसका सहायक बनाया. 36 और हमने मूसा व हारून से कहा कि तुम दोनों उन लोगों के पास जाओ, जिन्होंने हमारी संदेशयुक्त निशानियों को झुठला दिया है. अंततः हमने उन लोगों को नष्ट कर दिया. 37 इसी तरह हमने नूह की क़ौम को भी डुबो दिया, जब उन्होंने पैग़ंबरों को झुठलाया और हमने उन्हें (बाद वाले) लोगों के लिए एक (शिक्षाप्रद) निशानी बना दिया. और हमने उन अत्याचारियों के लिए कष्टप्रद यातना तैयार कर रखी है. 38 और आद व समूद को और खंदक वालों को और उनके बीच

बहुत सी क़ौमों को भी (हमने नष्ट की कर दिया है). 39 उनमें से हर एक को हमने (पहले नष्ट की गयी क़ौमों की) मिसालें सुनायीं. फिर हमने अंततः हर एक को नष्ट कर दिया. 40 इन (मक्का वालों) का उस बस्ती पर से तो गुज़र हो चुका है जिस पर बुरी तरह पत्थर बरसाए गए. क्या वह उसको देखते नहीं रहे हैं? लेकिन (सत्य तो यह है कि) ये लोग मृत्यु-पश्चात जीवन की आशा नहीं रखते.

41 और जब वे तुम्हें देखते हैं तो तुम्हारा उपहास करने लगते हैं. (कहते हैं,) क्या यही है जिसे अल्लाह ने पैग़ंबर बनाकर भेजा है. 42 इसने तो हमें गुमराह करके अपने उपास्यों से हटा ही दिया होता, यदि हम उन पर न जमे रहते. (पैग़ंबर!) ये लोग जल्द ही जान लेंगे, जब वे यातना को देखेंगे कि कौन गुमराही में दूर निकल गया था.

43 क्या तुमने कभी उस व्यक्ति का (चिंतनपूर्वक) निरीक्षण किया है जिसने अपनी इच्छाओं को अपना उपास्य बना रखा है, तो क्या तुम उस(को सन्मार्ग पर लाने का) ज़िम्मा ले सकते हो? 44 क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि उनमें से अधिकतर लोग सुनते और समझते हैं? ये तो जानवरों की तरह हैं, बल्कि उनसे भी ज़्यादा पथभ्रष्ट.

45 क्या तुमने इस बात का कभी (चिंतनपूर्वक) निरीक्षण किया है कि तुम्हारा रब किस तरह छाया फैलाता है. यदि वह चाहता तो उसे स्थायित्व प्रदान कर देता. लेकिन सूर्य को हमने उसका मार्गदर्शक बनाया. 46 (फिर जैसे-जैसे सूर्य उठता जाता है) हम उस छाया को धीरे-धीरे अपनी ओर समेटते चले जाते हैं. 47 वह अल्लाह ही है जिसने रात को तुम्हारे लिए वस्त्र बनाया और नींद को विश्राम का साधन बनाया और दिन को जी उठने का समय (अर्थात जीवन की गाड़ी आगे बढ़ाने का समय) बनाया.

48 वह अल्लाह ही है जो अपनी (वर्षा-रूपी) रहमत से पहले हवाओं को शुभ-सूचना के रूप में भेजता है. फिर हम आसमान से (अर्थात बुलंदी से) स्वच्छ जल उतारते हैं.

49 ताकि उसके माध्यम से मुर्दा (पड़ी हुयी) ज़मीन को जीवन प्रदान करें और उसे अपने सृजित किए हुए बहुत से चौपायों तथा मनुष्यों को पिलाएँ.

50 हमने इसे उनके सामने तरह-तरह से बयान किया है, ताकि वे शिक्षा ग्रहण करें, लेकिन अधिकतर लोगों ने इन्कार का रवैय्या अपनाया और कृतघ्नता के सिवा किसी अन्य चीज़ का परिचय नहीं दिया. 51 यदि हम चाहते तो हर बस्ती में एक सचेत करने वाला (पैग़ंबर) भेजते. 52 तो (पैग़ंबर!) तुम सत्य का इन्कार करने वालों की बात न मानो और इस क़ुरआन के माध्यम से उनके साथ जिहाद करो, बड़ा जिहाद!

53 वह अल्लाह ही है जिसने दो समुद्रों को मिलाया है. एक मीठा है प्यास बुझाने वाला और दूसरा है खारा और कड़वा. उसने इन दोनों के बीच एक आड़ रख दी है और दोनों को दूर रखने वाला विभाजक. 54 वह अल्लाह ही है जिसने इंसान को पानी से सृजित किया. फिर उसे परिवार वाला तथा ससुराल वाला बनाया. निस्संदेह! तुम्हारा रब बहुत सामर्थ्यवान है.

55 और वे अल्लाह को छोड़कर उन चीज़ों की उपासना कर रहे हैं जो उन्हें न लाभ पहुँचा सकती हैं और न हानि. और सत्य का इन्कार करने वाला अपने रब के मुक़ाबले में विद्रोही का सहायक बना हुआ है. 56 (ऐ मुहम्मद!) हमने तुम्हें बस एक ख़ुशख़बरी देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है. 57 इनसे तुम कह दो, मैं इस (काम) पर तुमसे कोई मुआवज़ा नहीं माँगता, बस इतनी सी (अपेक्षा होती है) कि जिसका जी चाहे वह अपने रब का रास्ता ग्रहण कर ले.

58 (पैग़ंबर!) उस अल्लाह पर भरोसा रखो जो ज़िंदा है और कभी मरने वाला नहीं. उसकी प्रशंसा के साथ उसका गुणगान करो. और वह अपने बंदों के गुनाहों की ख़बर रखने के लिए पर्याप्त है. 59 वह अल्लाह ही है जिसने रचना की आसमानों और पृथ्वी की और जो कुछ उनके बीच में है उसकी, छः दिनों में. फिर वह (समस्त सृष्टि के सत्ता-

)सिंहासन पर आसीन हुआ. रहमान है वह! तो उसकी बाबत किसी ज्ञानी से पूछ लो. 60 जब उनसे कहा जाता है कि रहमान को सजदा करो तो वे कहते हैं कि यह रहमान क्या होता है? क्या हम उसको सजदा करें जिसे सजदा करने के लिए तू हमसे कहे. फिर इससे उनका बिदकना और बढ़ जाता है.

61 बड़ा ही बरकत वाला है वह जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उसमें (सूरज-रूपी) एक चिराग़ और एक चमकता चाँद रखा. 62 वह अल्लाह ही है जिसने रात और दिन को एक के बाद एक आने वाला बनाया. इसमें शिक्षा है उस व्यक्ति के लिए जो शिक्षा लेना चाहे और जो कृतज्ञ बनना चाहे.

63 रहमान के (वास्तविक) बंदे वे हैं जो धरती पर नम्रतापूर्वक चलते हैं. और जब निर्बुद्ध लोग उनसे बात करते हैं तो वे कह देते है कि तुम्हें सलाम (अर्थात वे व्यर्थ बड़बड़ करने वालों को सलाम करके उनसे अलग हो जाते हैं). 64 और वे अपने रब के सामने सजदे करते हुए और (नमाज़ में) उसके सामने खड़े हुए अवस्था में अपनी रातें व्यतीत करते हैं. 65 वे दुआएँ करते हैं कि ऐ हमारे रब जहन्नम की यातना को हमसे दूर रख निस्संदेह उसकी यातना तो संपूर्ण विनाश है. 66 निस्संदेह वह तो बड़ी ही बुरी रहने की जगह और बुरा स्थान है. 67 और वे जब खर्च करते हैं तो न अपव्यय करते हैं और न कृपणता से काम लेते हैं. बल्कि उनका खर्च करना इन दोनों के बीच मध्यमार्ग पर होता है.

68 और वे अल्लाह के सिवा किसी और उपास्य को नहीं पुकारते. और वे अल्लाह के द्वारा हराम की हुई किसी जान को क़तल नहीं करते, मगर यह कि वैसा करना न्याय-सम्मत हो. और वे व्यभिचार नहीं करते. और जो कोई ऐसा कृत्य करेगा वह (अपने गुनाह की) सज़ा पाएगा. 69 क़यामत के दिन उसकी यातना बढ़ती चली जाएगी और वह उसमें अपमानित होकर स्थायी रूप से

पड़ा रहेगा. 70 लेकिन जो व्यक्ति पलट आए और ईमान लाए और अच्छे कर्म करे तो अल्लाह ऐसे लोगों की बुराइयों को भलाइयों से बदल देगा. अल्लाह बड़ा क्षमाशील एवं दयावान है. 71 और जो व्यक्ति पलट आए और अच्छे कर्म करे तो वह वास्तव में अल्लाह की ओर लौट रहा है.

72 (रहमान के बंदे वे हैं) जो झूठ के साझी नहीं बनते. और जब कभी व्यर्थ कार्य (करने वालों) के पास से गुज़रते हैं तो सज्जन व्यक्ति की तरह गुज़र जाते हैं (अर्थात न उससे प्रभावित होते हैं और न उसमें सम्मिलित होते हैं). 73 उनका यह हाल है कि जब उन्हें उनके रब के संदेशों के माध्यम से उपदेश दिया जाता है तो वे उन पर बहरे और अँधे होकर नहीं गिरते. 74 और वे ऐसे लोग हैं जो (इस तरह की) दुआएँ माँगा करते हैं, ऐ हमारे रब! हमें हमारी पत्नी और हमारी संतान की ओर से आँखों की ठंडक प्रदान कर और हमें (तेरे प्रति) सचेत (एवं उत्तरदायी) रहने वालों का नायक बना.

75 यही वे लोग हैं जिन्हें (जन्नत में) उच्च भवन मिलेंगे, यह इसलिए कि उन्होंने धैर्य रखा. और वहाँ उनका स्वागत दुआ और सलाम के साथ होगा. 76 वे वहाँ हमेशा-हमेशा रहेंगे. क्या ही अच्छी जगह है वह ठहरने की! क्या ही अच्छी जगह है वह रहने की!

77 (पैग़ंबर) कह दो! मेरे रब को तुम्हारी पर्वा नहीं, यदि तुम उसे न पुकारो. अब जबकि तुम झुठला चुके हो, तो शीघ्र ही वह सज़ा पाओगे जिससे बच कर न निकल सकोगे.

सूरह–26. अश–शुअरा

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 ता० सीन० मीम०. 2 यह सुस्पष्ट ग्रंथ के संदेश हैं. 3 (पैग़ंबर!) संभवतः तुम
इस ग़म में अपनी जान खो दोगे कि ये लोग ईमान नहीं लाते.

4 (पैग़ंबर!) यदि हम चाहें तो उन पर आसमान से ऐसी निशानी उतार सकते हैं कि
उनकी गरदनें उसके आगे झुक जाएँ. 5 इन लोगों के पास कृपावंत (ख़ुदा) की ओर से
जो भी नया उपदेश आता है ये उससे मुँह मोड़ लेते हैं. 6 अब जबकि ये झुठला चुके हैं
तो बहुत जल्द इन्हें उस चीज़ की वास्तविकता मालूम हो जाएगी जिसका ये उपहास करते
रहे हैं.

7 क्या उन्होंने धरती को नहीं देखा कि हमने उसमें तरह-तरह की उत्तम चीज़ें
जोड़ा-जोड़ा उगायी हैं. 8 निस्संदेह इसमें निशानी है, लेकिन उनमें से अधिकतर मानने
वाले नहीं हैं. 9 निस्संदेह तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली भी है और दयावान भी. 10 (इन्हें उस
समय का क़िस्सा सुनाओ) जब तुम्हारे रब ने मूसा को पुकारा (और कहा) कि तुम
अत्याचारी क़ौम के पास जाओ. 11 फ़िरऔन की क़ौम के पास. क्या वे नहीं डरते?

12 मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब! मुझे आशंका है कि वे मुझे झुठला देंगे. 13 (इस
ज़िम्मेदारी से) मेरे सीने में घुटन सी होती है और मेरी ज़बान नहीं चलती. तो तू हारून के
पास संदेश भेज (कर उसे मेरा सहायक बना). 14 और मेरे ऊपर उनके यहाँ एक अपराध
(का आरोप भी) है. मुझे आशंका है कि वे मेरी हत्या कर देंगे.

15 (इस पर) अल्लाह ने कहा, ऐसा कदापि नहीं होगा. तो तुम दोनों हमारी
निशानियों के साथ जाओ. हम तुम्हारे साथ हैं, और हम सब कुछ सुनते रहेंगे. 16 तो तुम
दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और कहो, हमें समस्त सृष्टि के स्वामी के द्वारा भेजा गया
है.

17 और फ़िरऔन से कहो, कि तू इसराईल की संतान को हमारे साथ जाने दे (फ़िरऔन ने इसराईल की संतान को अपना ग़ुलाम बना रखा था). 18 (मूसा ने अपना संदेश सुनाने के बाद) फ़िरऔन बोला, क्या हमने तुम्हें बचपन में हमारे यहाँ नहीं पाला था? तुमने अपने जीवन के कई वर्ष हमारे यहाँ व्यतीत किए. 19 उसके बाद तुमने जो (अपराधी) कृत्य किया सो किया! तुम बड़े कृतघ्न व्यक्ति हो.

20 (इस पर) मूसा ने उत्तर दिया, उस वक़्त वह कृत्य मुझसे अनजाने में हो गया था. 21 फिर मुझे तुम लोगों से डर लगा तो मैं तुम्हारे यहाँ से भाग गया. इसके बाद मेरे रब ने मुझे ज्ञान प्रदान किया और मुझे पैग़ंबरों में से बनाया. 22 जो उपकार तू मुझ पर जता रहा है (उसकी हक़ीक़त यह है कि) तूने इसराईल की संतान को ग़ुलाम बना रखा है.

23 फिर फ़िरऔन ने पूछा, यह सारे जहाँ का रब क्या होता है? 24 (इस पर) मूसा ने कहा, आसमानों और ज़मीन का रब और उन सब चीज़ों का रब जो आसमान व ज़मीन के बीच में हैं, यदि तुम विश्वास करने वाले हो. 25 फ़िरऔन ने अपने आसपास के लोगों से कहा, क्या तुम सुनते नहीं हो? 26 मूसा अपनी बात कहते गये, वह तुम्हारा भी रब है और तुमसे पहले तुम्हारे पूर्वजों का भी रब. 27 फ़िरऔन ने (उपहास करते हुए) कहा, तुम्हारा यह पैग़ंबर जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, दीवाना है. 28 मूसा कहते रहे, पूर्व व पश्चिम का रब और जो कुछ उनके बीच है उनका रब, यदि तुम बुद्धि से काम लेते हो. 29 (इस पर) फ़िरऔन ने कहा, यदि तुमने मेरे सिवा किसी और को उपास्य माना तो मैं तुम्हें उन लोगों में शामिल कर दूँगा जो क़ैद में पड़े हुए हैं. 30 मूसा ने कहा, मैं तेरे सामने सत्य का स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करूँ (क्या) तब भी? 31 फिर फ़िरऔन ने कहा, तो उसे प्रस्तुत करो, यदि तुम सच्चे हो? 32 फिर मूसा ने अपनी लाठी डाल दी, तो यकायक वह स्पष्ट अज़दहा बन गया. 33 फिर उसने अपना हाथ (बगल से) खींचा, तो अचानक वह देखने वालों के लिए चमक रहा था. 34 (यह देखकर) फ़िरऔन ने अपने

आस-पास के सरदारों से कहा, निश्चय ही यह व्यक्ति एक कुशल जादूगर है. 35 चाहता है कि अपने जादू के ज़ोर से तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दें. तो अब तुम क्या परामर्श देते हो.

36 दरबारियों ने कहा, इसे और इसके भाई को अवकाश दीजिए और सारे शहरों में हरकारे भेजिए. 37 कि हर कुशल जादूगर को आपके पास ले आएँ. 38 चुनाँचे एक दिन निर्धारित समय पर जादूगर इकट्ठे कर लिए गए, 39 और लोगों से कहा गया, तुम भी इकट्ठे होते हो ना? 40 ताकि हम जादूगरों का साथ दें यदि वे प्रभावशाली हो पाते हैं. 41 फिर जब जादूगर आए तो उन्होंने फ़िरऔन से कहा, क्या हमें कोई पुरस्कार मिलेगा यदि हम विजयी रहे. 42 फ़िरऔन ने कहा, हाँ (पुरस्कार तो अवश्य मिलेगा और उसके सिवा) तब तुम (मेरे) निकटवर्ती लोगों में शामिल कर दिए जाओगे.

43 मूसा ने जादूगरों से कहा, तुम्हें जो कुछ डालना हो, डालो. 44 तो उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डालीं और बोले, फ़िरऔन के इक़बाल (प्रताप) की क़सम हम ही विजयी रहेंगे. 45 फिर मूसा ने अपनी लाठी डाली तो यकायक वह (अज़दहा बनकर) उस जादू को निगलने लगा जो उन्होंने बनाया था. 46 इस पर सारे जादूगर सजदे में गिर पड़े. 47 और उन्होंने कहा, हम ईमान लाए समस्त संसार के रब पर 48 जो मूसा व हारून का रब है.

49 (इस पर) फ़िरऔन ने कहा, तुमने इसे मान लिया इससे पहले कि मैं तुम्हें अनुमति दूँ. अवश्य ही यही तुम्हारा गुरु है. जिसने तुम्हें जादू सिखाया है. तो अभी तुम्हें मालूम हो जाएगा (कि मैं तुम्हारे साथ क्या करने वाला हूँ). मैं तुम्हारे एक ओर के हाथ और दूसरी ओर के पैर कटवाऊँगा और तुम सबको सूली पर चढ़ा दूँगा. 50 (इस पर) उन्होंने जवाब दिया, कुछ परवाह नहीं, हम अपने रब के पास पहुँच जाएंगे. 51 हम

आशा रखते हैं कि हमारा रब हमारे गुनाह माफ़ कर देगा, इसलिए कि हम पहले ईमान लाने वाले बने.

52 और हमने मूसा को संदेश भेजा कि मेरे बंदों को लेकर रातों-रात निकल जाओ. निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जाएगा. 53 (फिर यह हुआ कि) फ़िरऔन ने शहरों में दूत भेजे. 54 (और कहलवा भेजा) कि ये कुछ मुट्ठी भर लोग हैं. 55 उन्होंने हमें क्रोध दिलाया है. 56 और हम एक सचेत रहने वाले समूह हैं. 57 इस प्रकार हमने उन (सब) को निकाला बागों और चश्मों से. 58 और ख़ज़ानों और अच्छे घरों से. 59 यह तो हुआ उनके साथ और (दूसरी ओर) इसराईल की संतान को हमने उन चीज़ों का उत्तराधिकारी बना दिया.

60 तो सुबह होते ही ये लोग उनका पीछा करने चल पड़े. 61 फिर जब दोनों समूह आमने-सामने हुए तो मूसा के साथियों ने कहा, हम तो पकड़े गए. 62 (इस पर) मूसा ने कहा, कदापि नहीं, निस्संदेह मेरा रब मेरे साथ है. वह मेरा अवश्य मार्गदर्शन करेगा (अर्थात वह हमें बे-यार या बे-सहारा अवस्था में नहीं छोड़ सकता). 63 फिर हमने मूसा की ओर अपना यह संदेश भेजा कि अपनी लाठी समुद्र पर मारो. (मूसा ने ऐसा ही किया, जिसके परिणाम-स्वरूप) समुद्र फट गया और उसका प्रत्येक भाग ऐसा हो गया जैसे बड़ा पहाड़. 64 और हमने दूसरे समूह को भी (अर्थात फ़िरऔन के समूह को) उसके निकट पहुँचा दिया. 65 और हमने मूसा को और उन सब लोगों को जो उसके साथ थे बचा लिया. 66 और दूसरों को (अर्थात फ़िरऔन और उसकी सेना को) डुबो दिया. 67 निस्संदेह इस घटना में एक निशानी है. लेकिन इन लोगों में से अधिकतर मानने वाले नहीं हैं. 68 निस्संदेह तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली और दयावान है.

69 और इन्हें इब्राहीम का क़िस्सा सुनाओ. 70 जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से पूछा था कि ये क्या चीज़ें हैं जिन्हें तुम पूजते हो? 71 उन्होंने जवाब दिया, हम

मूर्तियों की उपासना करते हैं और निरंतर इस पर जमे रहेंगे. 72 फिर इब्राहीम ने कहा, क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम इन्हें पुकारते हो? 73 या ये तुम्हें कुछ लाभ या हानि पहुँचाते हैं? 74 उन्होंने जवाब दिया, नहीं, बल्कि हमने अपने बाप-दादा को ऐसा ही करते हुए पाया है.

75 इब्राहीम ने (अपनी क़ौम के लोगों से) कहा, क्या तुमने कभी उन चीज़ों का (चिंतनपूर्वक) निरीक्षण किया है जिनकी तुम उपासना करते हो, 76 तुम और तुम्हारे बाप-दादा भी? 77 ये सब मेरे दुश्मन हैं, सिवा एक के जो सारे जहाँ का रब है, 78 जिसने मेरा सृजन किया, फिर वही मेरा मार्गदर्शन करता है. 79 वही है जो मुझे खिलाता है और पिलाता है. 80 और जब मैं बीमार हो जाता हूँ तो वही मुझे स्वास्थ्य प्रदान करता है. 81 और वही है जो मुझे मृत्यु देगा और वही मुझे (मृत्यु-पश्चात) दोबारा जीवित करेगा. 82 वही है जिससे मैं यह आशा रखता हूँ कि वह बदला दिए जाने के दिन मेरी ग़लतियों को क्षमा कर देगा.

83 (इसके बाद इब्राहीम ने अल्लाह से दुआ की,) ऐ मेरे रब! मुझे विवेक प्रदान कर और मुझे सदाचारी लोगों में शामिल कर. 84 और बाद की आने वाली पीढ़ियों में (अनुसरण-रूपी) मेरी अच्छी याद क़ायम रख (अर्थात बाद की पीढ़ियाँ मेरा अनुसरण करें). 85 और मुझे नेमत भरी जन्नत के वारिसों में शामिल कर. 86 और मेरे पिता को क्षमा कर, निस्संदेह वह पथभ्रष्ट लोगों में से है. 87 (ऐ मेरे रब!) मुझे उस दिन अपमानित न कर जब लोगों को ज़िंदा करके उठाया जाएगा. 88 जिस दिन न संपत्ती काम आएगी और न संतान. 89 (उस दिन वही व्यक्ति सफल होगा) जो अल्लाह के पास पाक दिल लेकर आएगा.

90 और जन्नत उन लोगों के निकट लायी जाएगी जो (ख़ुदा के प्रति) सचेत (एवं उत्तरदायी) बने हुए थे. 91 और जहन्नम भटके हुए लोगों के लिए खोल दी जाएगी. 92

और उनसे पूछा जाएगा कि अब कहाँ हैं वे जिनकी तुम उपासना करते थे, 93 अल्लाह को छोड़कर. क्या (आज) वे तुम्हारी कुछ सहायता करेंगे या फिर क्या वे ख़ुद अपना बचाव कर सकते हैं? 94 फिर वे औंधे मुँह जहन्नम में डाल दिए जाएंगे. 95 वे (झूठे उपास्य) और वे भटके हुए लोग और इबलीस (अर्थात शैतान) की सेना सब के सब (जहन्नम में डाल दिए जाएंगे). 96 वे उसमें परस्पर झगड़ेंगे और (पथभ्रष्ट लोग अपने उपास्यों से) कहेंगे, 97 अल्लाह की क़सम, हम स्पष्ट पथभ्रष्टता में लिप्त थे, 98 जबकि हम तुम्हें समस्त सृष्टि के रब का दर्जा दे रहे थे. 99 वे अपराधी लोग ही थे जिन्होंने हमें मार्ग से भटकाया. 100 तो अब कोई हमारी सिफ़ारिश करने वाला नहीं. 101 और न (अब हमारा) कोई हितैषी मित्र है.

102 (जहन्नम में पड़े हुए लोग कहेंगे), काश हमें (मृत्युपूर्व दुनिया में) वापस जाने का फिर एक मौक़ा मिल जाए, तो हम ईमान वालों में से बनेंगे.

103 निस्संदेह! इसमें संदेशयुक्त निशानी है, लेकिन उनमें अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं. 104 निस्संदेह! तुम्हारा रब शक्तिशाली भी है और दयावान भी.

105 नूह की क़ौम ने पैग़ंबरों को झुठलाया. 106 (याद करो,) जब उनके भाई नूह ने उनसे कहा, क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो? 107 मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार पैग़ंबर हूँ, 108 इसलिए तुम लोग अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो. 109 मैं इस काम पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस उसके ज़िम्मे है जो समस्त संसार का रब है. 110 तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो. 111 उन्होंने (इस पर) जवाब दिया, क्या हम-तुम्हें मान लें, हालाँकि तुम्हारा अनुसरण सबसे नीच लोग कर रहे हैं. 112 (इस पर) नूह ने कहा, मुझे क्या मालूम कि उनके कर्म कैसे हैं? 113 उनका हिसाब तो मेरे रब के ज़िम्मे है, काश कि तुम (यह बात) समझते. 114 मेरा यह काम नहीं कि मैं ईमान लाने वालों को धुतकार दूँ. 115 मैं तो बस एक साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूँ.

116 उन्होंने कहा, ऐ नूह! यदि तुम बाज़ न आए तो अवश्य पत्थरों से मार डाले जाओगे. 117 नूह ने दुआ की, ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम ने मुझे झुठला दिया. 118 अब तू मेरे और उनके बीच स्पष्ट फ़ैसला कर दे. और मुझे और जो ईमान लाए हुए लोग मेरे साथ हैं उन्हें बचा ले. 119 फिर हमने उसे और उसके साथियों को एक भरी हुई नाव में बचा लिया. 120 और उसके बाद हमने बाक़ी लोगों को डुबो दिया. 121 निश्चित रूप से इसमें निशानी है, लेकिन इनमें से अधिकतर लोग मानने वाले नहीं. 122 निस्संदेह तुम्हारा रब प्रभुत्वशाली भी है और दयावान भी.

123 'आद' (नाम की) क़ौम ने भी पैग़ंबरों को झुठलाया. 124 जबकि उनके भाई हूद ने उनसे कहा, क्या तुम लोग (ख़ुदा से) डरते नहीं? 125 मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार पैग़ंबर हूँ. 126 तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो. 127 मैं इस काम पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता मेरा बदला तो बस उसके ज़िम्मे है जो समस्त संसार का रब है. 128 क्या तुम हर ऊँची जगह पर एक व्यर्थ स्मारक बनाते हो? 129 और बड़े-बड़े महल बना डालते हो, मानो तुम्हें (उसमें) हमेशा रहना है.

130 (हूद ने अपनी क़ौम से आगे कहा,) और तुम लोग जब किसी पर हाथ डालते हो, दमनकारी बनकर हाथ डालते हो. 131 तो तुम लोग अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो. 132 डरो उससे जिसने तुम्हारी उन चीज़ों से सहायता की है, जिन्हें तुम जानते हो. 133 उसने तुम्हारी सहायता की चौपायों से और संतान से. 134 और उसने तुम्हें बाग़ तथा जलस्रोत प्रदान किए. 135 मुझे तुम्हारे बारे में एक भयानक दिन की यातना का भय है.

136 क़ौम के लोगों ने (हूद से) कहा, हमारे लिए समान है, चाहे तुम हमें उपदेश दो या उपदेश न दो (अर्थात तुम्हारे उपदेशों से हम पर कुछ परिणाम होने वाला नहीं). 137 यह (उपदेश देना) तो बस पहले के लोगों की एक आदत है. 138 हम कदापि

यातना में ग्रस्त होने वाले नहीं हैं. 139 अंततः उन्होंने उसे झुठला दिया तो हमने उन्हें नष्ट कर दिया. निस्संदेह इसमें (संदेश-युक्त) निशानी है, लेकिन इनमें से अधिकतर लोग मानने वाले नहीं हैं. 140 निस्संदेह तुम्हारा रब शक्तिशाली भी है और दयावान भी.

141 क़ौमे-समूद ने पैग़ंबरों को झुठलाया. 142 (याद करो) जब उनके भाई सालेह ने उनसे कहा, क्या तुम लोग (ख़ुदा से) डरते नहीं हो? 143 निस्संदेह, मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार पैग़ंबर हूँ. 144 तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानों. 145 मैं तुमसे इस काम पर कोई बदला नहीं माँगता. मेरा बदला तो बस समस्त सृष्टि के मालिक अल्लाह के पास है.

146 क्या (तुमने यह समझ रखा है कि) यहाँ जो कुछ है उन चीज़ों में (अर्थात उस सुख-समृद्धी में जिसमें तुम हो) तुम्हें निश्चिंत होकर रहने दिया जाएगा? 147 इन बागों और स्रोतों में. 148 इन (धान्यों के) खेतों में और इन खजूर के (बागों में) जिनके गुच्छे रस भरे हैं? 149 (पैग़ंबर सालेह ने आगे कहा,) तुम पर्वतों को काट-काट कर गर्व करते हुए घर बनाते हो. 150 तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो. 151 और उन हद से गुज़र जाने वाले लोगों की आज्ञा का पालन न करो, 152 जो धरती में बिगाड़ पैदा करते हैं और कोई सुधार का काम नहीं करते.

153 उन्होंने कहा, तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है. 154 तुम तो मात्र हमारे जैसे एक इंसान हो, तो फिर कोई निशानी ले आओ यदि तुम सच्चे हो.155 सालेह ने कहा, यह एक ऊँटनी है. एक दिन पानी पीने के बारी इसकी है और एक निश्चित दिन पानी लेने की बारी तुम्हारी है. 156 तकलीफ़ पहुँचाने के उद्देश्य से इसे हाथ न लगाना अन्यथा एक बड़े दिन की यातना तुम्हें पकड़ लेगी.157 (इस चेतावनी के बावजूद) उन्होंने उसकी कूँचें काट डाली, फिर वे पछताते रह गए. 158 फिर उन्हें यातना ने पकड़

लिया. निस्संदेह इसमें निशानी है, लेकिन उनमें से अधिकतर मानने वाले नहीं. 159 निस्संदेह तुम्हारा रब शक्तिशाली भी है और दयावान भी.

160 लूत की क़ौम ने पैग़ंबरों को झुठलाया. 161 जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा, क्या तुम लोग (ख़ुदा से) डरते नहीं. 162 मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार पैग़ंबर हूँ. 163 तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो. 164 मैं इस काम पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता. मेरा बदला तो संसार के स्वामी अल्लाह के ज़िम्मे है. 165 क्या सारे संसार वालों में से तुम्हीं ऐसे हो जो पुरुषों के पास जाते हो? 166 और तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए जो पत्नियाँ सृजित की हैं उन्हें छोड़े रहते हो. (वास्तविकता यह है कि) तुम सीमा का उल्लंघन करने वाले लोग हो.

167 उन्होंने कहा, ऐ लूत! यदि तुम इन बातों से बाज़ न आए तो जो लोग हमारी बस्तियों से निकाले गए हैं उनमें शामिल होकर रहोगे (अर्थात तुम्हें भी बस्ती से निकाल दिया जाएगा). 168 (इस पर) लूत ने कहा, मैं उन लोगों में से हूँ जो तुम्हारी करतूतों से घृणा करते हैं. 169 (फिर लूत ने दुआ की) ऐ मेरे रब! तू मुझे और मेरे घर वालों को इनकी उन करतूतों से बचा जो यह करते हैं. 170 तो हमने उसे और उसके सारे घर वालों को बचा लिया, 171 सिवाय एक बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में रह गयी. 172 फिर बाक़ी लोगों को हमने नष्ट कर दिया. 173 हमने उन पर एक बारिश बरसायी, वह बड़ी ही बुरी बारिश थी उन लोगों पर जिन्हें सचेत किया जा चुका था. 174 निस्संदेह इसमें (संदेशयुक्त) निशानी है, लेकिन उन में से अधिकतर लोग मानने वाले नहीं. 175 निस्संदेह तुम्हारा रब शक्तिशाली भी है और दयावान भी.

176 ऐका के लोगों ने भी पैग़ंबरों को झुठलाया. 177 जब शुऐब ने उनसे कहा, क्या तुम लोग (ख़ुदा से) डरते नहीं? 178 मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार पैग़ंबर हूँ. 179 तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानों. 180 और मैं इस काम पर तुमसे कोई

बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो समस्त संसार के स्वामी अल्लाह के ज़िम्मे है. 181 तुम लोग पूरा-पूरा नापो और घटा कर देने वालों में से न बनो. 182 और सही तराज़ू से तोलो. 183 और लोगों को उनकी चीज़ें घटाकर न दो और ज़मीन में बिगाड़ फैलाते न फिरो. 184 और उस ज़ात के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो जिसने तुम्हारा सृजन किया है और तुमसे पहले की पीढ़ियों को भी.

185 (शुऐब की क़ौम के) लोगों ने कहा, तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है. 186 और तुम तो हमारे ही जैसे एक इंसान हो और हम तुम्हें झूठा समझते हैं. 187 यदि तुम सच्चे हो तो हमारे ऊपर आसमान से कोई टुकड़ा गिरा दो. 188 (इस पर) शुऐब ने कहा, मेरा रब भली-भाँति जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो. 189 तो उन्होंने शुऐब को झुठला दिया. परिणाम-स्वरूप उन्हें बादल वाले दिन के प्रकोप ने पकड़ लिया. निस्संदेह वह एक बड़े भयानक दिन का प्रकोप था. 190 निस्संदेह इसमें (संदेशयुक्त) निशानी है, लेकिन उनमें से अधिकतर मानने वाले नहीं हैं. 191 निस्संदेह तुम्हारा रब शक्तिशाली भी है और दया करने वाला भी. 192 निस्संदेह यह क़ुरआन समस्त संसार के स्वामी अल्लाह की उतारी हुयी वाणी है. 193 इसे अमानतदार फ़रिश्ता लेकर उतरा है. 194 (अल्लाह के आदेश से) तुम्हारे दिल पर (अर्थात तुम्हारे स्मरण पटल पर), ताकि तुम सचेत करने वालों में से बनो. 195 स्पष्ट अरबी भाषा में. 196 इसका वर्णन पूर्ववर्ती लोगों की किताबों में मौजूद है. 197 क्या इन (मक्का वालों) के लिए यह (पर्याप्त) प्रमाण नहीं है कि बनी इसराईल के (अर्थात यहूदियों के) धर्मपंडित इसके बारे में जानते हैं.

198 यदि हम इस क़ुरआन को किसी अजमी (अर्थात ग़ैर-अरबी व्यक्ति) पर उतारते. 199 फिर वह इन (अरबी लोगों) को (अरबी में) पढ़कर सुनाता, तब भी वे इसे मानने वाले न बनते.

200 इस प्रकार हमने अपराधी लोगों के मन में न मानने (के गुण) को भर रखा है. 201 ये लोग ईमान नहीं लाएंगे, जब तक कष्टप्रद यातना से उनका सामना न होगा. 202 वह उन पर अचानक आ जाएगी और उन्हें कोई ख़बर भी न होगी. 203 उस समय वे कहेंगे कि क्या हमें (सुधार के लिए) कुछ मुहलत मिल सकती है?

204 क्या ये लोग हमारी ओर से (उन पर) यातना आए इसके लिए जल्दी मचा रहे हैं? 205 क्या तुमने इस बारे कुछ सोचा है कि यदि हम इन्हें कुछ वर्षों तक सुख भोगने दें, 206 फिर उन पर वह चीज़ आए जिससे उन्हें डराया जाता रहा है. 207 तो फिर यह सुख उनके किस काम आएगा? 208 हमने सचेत करने वाले (पैग़ंबर) भेजने से पूर्व कभी किसी बस्ती को नष्ट नहीं किया. 209 (पैग़ंबर भेजे) उपदेश करने के लिए, हम कोई ज़ालिम नहीं हैं. 210 इस (क़ुरआन) को शैतान लेकर नहीं उतरे हैं. 211 न वे इसके लिए योग्य हैं और न वे ऐसा कर सकते हैं. 212 वे इसको सुनने से रोक दिए गए हैं.

213 (ऐ मुहम्मद!) तुम अल्लाह के साथ किसी दूसरे उपास्य को न पुकारना, वरना तुम यातना पाने वालों में से हो जाओगे. 214 (पैग़ंबर!) अपने निकटतम रिश्तेदारों को सचेत करो. 215 और उन लोगों के लिए अपनी बाहें झुका दो (अर्थात उनके साथ नम्रतापूर्वक व्यवहार करो) जो ईमान वालों में सम्मिलित होकर तुम्हारा अनुसरण करें. 216 फिर यदि वे तुम्हारी अवज्ञा करें, तो उनसे कह दो, जो कुछ तुम करते हो मैं उसकी ज़िम्मेदारी से बरी (विरक्त) हूँ. 217 और उस प्रभुत्वशाली और दयावान पर भरोसा रखो. 218 जो तुम्हें देख रहा होता है जब तुम (उसके सामने नमाज़ में) खड़े होते हो. 219 और तुम्हारी नमाज़ियों के साथ गतिविधियों पर भी वह निगाह रखे हुए है. 220 निस्संदेह वह सुनने वाला और जानने वाला है.

221 क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरा करते हैं? 222 वह प्रत्येक झूठे पापी पर उतरते हैं. 223 वे (हर झूठी बात की ओर) कान लगाते हैं, और उनमें से अधिकतर झूठे होते हैं. 224 और जहाँ तक कवियों का संबंध है, उनके पीछे बहके हुए लोग चला करते हैं. 225 क्या तुम देखते नहीं कि वे हर घाटी में भटकते हैं (अर्थात कल्पना की दुनिया की घाटियों में). 226 और वे ऐसी बातें कहते है जो करते नहीं. 227 लेकिन जो लोग ईमान लाए, वे भले कर्म करते हैं और अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करते है. वे तभी बदला लेते हैं जब उन पर अत्याचार किया जाता है. और अत्याचार करने वाले शीघ्र जान लेंगे कि वे लौट कर कहाँ जाते हैं.

सूरह–27. अन–नम्ल

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 ता० सीन०. यह संदेश हैं क़ुरआन के जो एक स्पष्ट ग्रंथ है (अर्थात सत्य स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने वाला ग्रंथ). 2 मार्गदर्शन और शुभ-सूचना है उन ईमान वालों के लिए. 3 जो नमाज़ कायम करते हैं और ज़कात देते हैं. और वे मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन पर दृढ़ आस्था रखने वाले हैं. 4 जो लोग मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन पर विश्वास नहीं रखते, उनके (बुरे) कर्मों को हमने उनके लिए आकर्षक बना दिया है. परिणाम-स्वरूप वे भटकते फिरते हैं. 5 ये वे लोग हैं जिनके लिए बुरी सज़ा है. और वे मृत्यु-पश्चात दुनिया में सबसे ज़्यादा घाटे में रहने वाले हैं. 6 (पैग़ंबर!) निस्संदेह यह क़ुरआन तुम ऐसी (सर्वोच्च) सत्ता की ओर से प्राप्त कर रहे हो जो बुद्धिमान और सर्वज्ञानी है.

7 (इन्हें उस समय का क़िस्सा सुनाओ) जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा, मैंने एक आग देखी है. मैं अभी वहाँ से तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आता हूँ या कोई आग का अंगारा लाता हूँ, ताकि तुम तापो. 8 जब वह वहाँ पहुँचा तो उसे आवाज़ दी गयी. मुबारक है वह जो आग में है और जो उसके पास है. पाक है अल्लाह, समस्त सृष्टि का रब.

9 ऐ मूसा! निस्संदेह मैं अल्लाह हूँ, अपार शक्ति का मालिक और बुद्धिमान. 10 (अल्लाह ने कहा, ऐ मूसा!) तुम अपनी लाठी नीचे फेंको. (जब उसने फेंका तो) तो उसे इस प्रकार चलते हुए देखा, जैसे वह साँप हो. तो वह पीठ फेर कर भागा और पीछे मुड़कर भी न देखा. (इस पर) अल्लाह ने कहा, ऐ मूसा! डरो नहीं, मेरे समक्ष पैग़ंबर डरा नहीं करते, 11 अलावा इसके कि किसी ने अत्याचारी कृत्य किया हो. फिर यदि वह बुराई के बाद (अपने बुरे कर्म को) भलाई से बदल दे, तो मैं क्षमा करने वाला मेहरबान

हूँ. 12 और तुम तनिक अपना हाथ अपन गिरेबान में डालो, फिर (उसे बाहर निकालो,) वह चमकता हुआ निकलेगा बिना किसी कष्ट के. ये (दो निशानियाँ) नौ निशानियों में से हैं, इनके साथ फ़िरऔन और उसकी क़ौम के पास जाओ. निस्संदेह वे अवज्ञाकारी लोग हैं. 13 तो जब हमारी खुली-खुली निशानियाँ उन लोगों के सामने आयीं, तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है. 14 और उन्होंने सरासर ज़ुल्म और घमंड से उन निशानियों को झुठलाया, जबकि उनके दिल उन निशानियों को मान चुके थे. तो देखो, उन बिगाड़ पैदा करने वालों का अंजाम कैसा हुआ.

15 हमने दाऊद और सुलैमान को ज्ञान प्रदान किया, तो उन्होंने कहा, शुक्र है उस अल्लाह का जिसने हमें अपने ईमान वाले बंदों पर श्रेष्ठता प्रदान की. 16 और दाऊद का उत्तराधिकारी सुलैमान हुआ. सुलैमान ने कहा, ऐ लोगो! हमें पक्षियों की बोली सिखायी गयी है. और हमें हर (आवश्यक) वस्तु प्रदान की गयी है. निश्चय ही यह (अल्लाह की ओर से) स्पष्ट मेहरबानी है.

17 सुलैमान के लिए जिन्न और मनुष्य और पक्षियों में से उसकी सेनाएँ एकत्र की जाती, फिर (कूच करने के लिए) उनके समूह बनाए जाते. 18 (एक बार सुलैमान अपनी सेनाओं के साथ कूच कर रहा था,) यहाँ तक कि जब वे चींटियों की घाटी पर पहुँचे, तो एक चींटी ने कहा, ऐ चींटियों! अपने बिलों में घुस जाओ, कहीं ऐसा न हो कि सुलैमान और उसकी फौज तुम्हें कुचल डाले और उन्हें ख़बर भी न हो. 19 सुलैमान चींटी की बात पर मुस्कुराते हुए हँस पड़ा. और कहा, ऐ मेरे रब! मुझे प्रेरणा देते रह, ताकि मैं तेरी उस कृपा के लिए आभार प्रकट करते रहूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर की है. और यह कि मैं ऐसे भले कर्म करूँ जो तुझे पसंद हों और अपनी कृपा से तू मुझे अपने सदाचारी बंदों में शामिल कर.

20 सुलैमान ने (एक दिन) पक्षियों का निरीक्षण किया तो कहा, क्या बात है कि मैं अमूक हुदहुद पक्षी को नहीं देख रहा हूँ, या फिर क्या वह कहीं गायब हो गया है. 21 मैं उसे कठोर दंड दूँगा या फिर उसे ज़िबह कर दूँगा, या (फिर उसे अपनी अनुपस्थिती के लिए) मेरे सामने कोई स्पष्ट कारण प्रस्तुत करना होगा. 22 कुछ अधिक समय न बीता था कि उसने आकर कहा, मैंने वह बात मालूम की है जो आपको मालूम नहीं. मैं सबा नामक देश से एक विश्वसनीय ख़बर लेकर आया हूँ. 23 मैंने देखा कि एक औरत उन पर राज करती है और उसे हर चीज़ प्राप्त है. उसका एक बड़ा सिंहासन है. 24 (हुदहुद पक्षी आगे कहता है,) मैंने देखा कि वह और उसकी क़ौम अल्लाह के बजाय सूरज को सजदा करती है. और शैतान ने उनके (बुरे) कर्म उनके लिए आकर्षक बना दिए, और (अल्लाह की ओर जाने वाले) मार्ग से रोक दिया, परिणाम-स्वरूप वे सन्मार्ग नहीं पाते. 25 (शैतान ने उन्हें रोक दिया है) कि वे उस अल्लाह को सजदा न करे जो आसमानों और ज़मीन की छिपी हुयी चीज़ें निकालता है. और वह जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम प्रकट करते हो. 26 अल्लाह उसके सिवा दूसरा कोई ख़ुदा नहीं जो (समस्त सृष्टि के राज-)सिंहासन का मालिक है.

27 सुलैमान ने कहा, हम देखेंगे कि तूने सच कहा है या तू झूठ बोलने वालों में से है. 28 मेरा यह पत्र लेकर जा और इसे उन लोगों की ओर डाल दे. फिर उनसे अलग हटकर देख कि वे क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं. 29 सबा की रानी ने कहा, ऐ दरबार वालो! मेरी ओर एक प्रतिष्ठित पत्र डाला गया है. 30 वह सुलैमान की ओर से है. और वह यह है कि आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान और कृपाशील है. 31 (उसमें विषय यह है कि) मेरे मुक़ाबले में विद्रोह न करो और आज्ञाकारी बनकर मेरे पास आ जाओ. 32 (पत्र सुनाकर) रानी ने कहा, ऐ दरबारियो! मेरे इस मामले में मुझे परामर्श दो. मैं किसी मामले का निर्णय नहीं करती, जब तक तुम लोग उपस्थित न हों. 33

दरबारियों ने कहा, हम लोग ताक़तवर हैं और हमें बड़ी युद्ध क्षमता प्राप्त है और अब निर्णय आपके अधिकार में है तो आप ख़ुद देख लें कि आपको क्या आदेश देना है. 34 रानी ने कहा, राजा लोग किसी देश में घुस आते हैं तो उसमें फ़साद मचाते हैं और वहाँ के सम्मानित लोगों को अपमानित करते हैं, यही यह लोग भी करेंगे. 35 मैं उन लोगों की ओर एक उपहार भेजती हूँ फिर देखती हूँ कि दूत क्या उत्तर लाते हैं.

36 फिर जब दूत सुलैमान के पास पहुँचा, तो सुलैमान ने (उससे) कहा, क्या तुम लोग माल से मेरी मदद करना चाहते हो? जो कुछ अल्लाह ने मुझे दे रखा है वह उससे बहुत उत्तम है जो उसने तुम्हें दिया है. बल्कि तुम्हीं लोग हो जो अपने उपहार से प्रसन्न होते हो (अर्थात तुम्हारा उपहार तुम्हें मुबारक). 37 (सुलैमान ने उस दूत से आगे कहा,) तुम उनके पास वापस जाओ. हम उन पर ऐसी सेनाएँ लेकर आएंगे, जिनका सामना वे न कर सकेंगे और हम उन्हें वहाँ से अपमानित करके निकाल देंगे और वे तिरस्कृत होकर रहेंगे.

38 फिर सुलैमान ने (अपने दरबारियों) से कहा, ऐ दरबार वालो! तुम में से कौन उसका सिंहासन मेरे पास लाता है, इससे पहले कि वे लोग आज्ञाकारी होकर मेरे पास आएँ. 39 जिन्नों में से एक बलिष्ठ जिन्न ने कहा, मैं उसे आपके पास ले आऊँगा, इससे पहले कि आप अपने स्थान से उठें. मैं इसकी सामर्थ्य रखता हूँ और अमानतदार भी हूँ. 40 जिसके पास (अल्लाह की) किताब का (कुछ) ज्ञान था, वह बोला, मैं आपके पलक झपकने से पहले उसे ला दूँगा. फिर जब सुलैमान ने उस सिंहासन को (वास्तव में) अपने पास रखा हुआ देखा, तो वह पुकार उठा, यह मेरे रब की मेहरबानी है (मुझ पर), ताकि वह मुझे आज़माए कि मैं (उसके प्रति) शुक्र करता हूँ या नाशुक्रा बन जाता हूँ. जो कोई शुक्र करता है वह अपने ही लिए शुक्र करता है (अर्थात उसका ख़ुदा के प्रति शुक्र करना

वास्तव में स्वयं इंसान के लिए लाभकारी है). और जो व्यक्ति नाशुक्री करे तो मेरा रब निस्पृह है, दया करने वाला है.

41 सुलैमान ने कहा कि उसके सिंहासन का रूप बदल कर उसे रख दो, ताकि हम देख सकें कि वह समझ पाती है या वह उन लोगों में से हो जाती है जो समझ नहीं रखते, (परिणाम-स्वरूप) राह नहीं पाते. 42 जब वह आयी तो उससे पूछा गया, क्या तुम्हारा सिंहासन ऐसा ही है? उसने कहा, यह तो मानो वही है. और हमें इससे पहले ही (आपके संबंध से) ज्ञात हो चुका था और हम आज्ञाकारी हो गए थे. 43 और उसे (सत्य से) रोक रखा था उन चीज़ों ने जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पूजती थी. क्योंकि वह उस क़ौम से थी जो सत्य का इन्कार करती थी. 44 उससे कहा गया कि महल में प्रवेश करो. तो (प्रवेश करते समय) जब उसने देखा तो उसे लगा कि (वहाँ) गहरा पानी है, तो उसने अपनी दोनों पिंडलियाँ खोल दीं (अर्थात पानी में प्रवेश करने के लिए अपना कपड़ा ऊँचा कर लिया, लेकिन वास्तव में वहाँ पानी नहीं था). सुलैमान ने कहा, यह तो एक महल है जो शीशों से बनाया गया है. रानी ने कहा, ऐ मेरे रब! मैंने अपने आप पर अत्याचार किया. और अब मैं सुलैमान के साथ होकर समस्त सृष्टि के रब को स्वयं को समर्पित करती हूँ.

45 और हमने समूद नामक क़ौम की ओर उनके भाई सालेह को (इस संदेश के साथ) भेजा कि अल्लाह की इबादत करो, तो वे दो पक्ष बनकर आपस में झगड़ने लगे. 46 सालेह ने कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी मचाते हो (अर्थात तुम भलाई छोड़ बुराई के लिए क्यों दौड़ पड़ते हो)? तुम अल्लाह से क्षमा क्यों नहीं माँगते कि तुम पर दया की जाए? 47 उन्होंने कहा, हम तुम्हें और तुम्हारे साथ वालों को अशुभ समझते हैं. सालेह ने (इस पर) कहा, तुम्हारा (भला तथा) बुरा भाग्य अल्लाह के हाथ में है. बल्कि (हक़ीक़त यह है कि) तुम लोगों की परीक्षा ली जा रही है.

48 और नगर में नौ जत्थेदार (क़बीला-प्रमुख) थे जो देश में बिगाड़ फैलाते थे और वे सुधार का काम न करते थे. 49 उन्होंने (आपस में एक दूसरे से) कहा, तुम लोग अल्लाह की क़सम खाकर यह प्रण कर लो कि हम सालेह और उसके घर वालों पर रात को (बिल्कुल ख़ामोशी से) हमला करके (उन्हें मार डालेंगे) और जब (जाँच के तहत) हमें पूछा जाएगा, तो हम उसके अभिभावक से यह कह देंगे, हम उसके परिवार के विनाश के समय मौक़े पर मौजूद नहीं थे और हम बिल्कुल सच कहते हैं. 50 उन्होंने एक युक्ति की, फिर हमने भी एक युक्ति की और उन्हें ख़बर भी नहीं हुयी. 51 तो देखो कैसा हुआ उनकी युक्ति का अंजाम. हमने उन्हें और उनकी पूरी क़ौम को नष्ट करके रख दिया. 52 तो ये हैं उनके वीरान घर (अर्थात खंडहर) पड़े हुए, उनके अत्याचार के कारण. निस्संदेह इसमें शिक्षा-सामग्री है उन लोगों के लिए जो जानना चाहें. 53 हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए और जो (हमारे प्रति) सचेत (एवं उत्तरदायी) बने हुए थे.

54 और (याद करो) लूत को. जब उसने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम जानते बुझते दुष्कर्म करने में लगे हुए हो? 55 क्या तुम स्त्रियों को छोड़कर अपनी काम-तृप्ति के लिए पुरुषों के पास जाते हो? बल्कि बात यह है कि तुम लोग घोर अज्ञानी लोग हो. 56 फिर उसकी क़ौम का उत्तर इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा, निकाल दो लूत के घर वालों को अपनी बस्ती से. ये बड़े ही पाक-साफ़ बनने चले हैं. 57 फिर हमने उसे और उसके लोगों को बचा लिया, सिवा उसकी पत्नी के, जिसका पीछे रह जाना हमने निश्चित कर दिया था. 58 और हमने उन पर बरसायी एक भयानक बरसात. फिर कैसी बुरी थी वह बरसात उन पर, जिन्हें सचेत किया जा चुका था. 59 (पैग़ंबर!) कहो, प्रशंसा है अल्लाह के लिए और सलामती है उसके उन बंदों पर जिन्हें उसने चुना है. (इनसे पूछो) क्या अल्लाह बेहतर है या वे उपास्य जिन्हें ये लोग उसका साझी बना रहे हैं?

पारा – 20

60 भला वह कौन है जिसने आसमानों व ज़मीन की रचना की और तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा? फिर उसके ज़रिए से हमने ख़ुशनुमा बाग़ उगाए. उन वृक्षों को उगाना तुम्हारे बस में न था. क्या अल्लाह के साथ कोई दूसरा ख़ुदा मौजूद है? (कदापि नहीं!) बल्कि वे लोग (अर्थात बहुदेववादी) सीधे रास्ते से हटकर चले जा रहे हैं. 61 वह कौन है जिसने (तुम्हारे लिए) ज़मीन को ठहरने योग्य बनाया और उसके अंदर नदियाँ जारी की और उसमें मजबूत पहाड़ स्थापित किए और पानी के दो भंडारों के दरमियान एक रोक लगा दी (ताकि खारा व मीठा पानी एक-दूसरे से अलग रह सके)? क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा भी (इन कार्यों में साझीदार) है? नहीं! (बल्कि सत्य यह है कि) इनमें से अधिकतर लोग जानते ही नहीं.

62 वह कौन है जो बे-क़रार की दुआ सुनता है, जबकि वह उसे पुकारता है? (और वह कौन है) जो उसके कष्ट को दूर कर देता है? और (वह कौन है जो) तुम्हें धरती पर उत्तराधिकारी बनाता है? क्या अल्लाह के सिवा कोई और ख़ुदा है (जो यह करता हो)? लेकिन तुम लोग बहुत कम बोध ग्रहण करते हो. 63 वह कौन है जो तुम्हें ख़ुश्की और समुद्र के अँधेरों में मार्ग दिखाता है? और वह कौन है जो अपनी (बारिश-रूपी) रहमत के आगे हवाओं को शुभ-सूचना बनाकर भेजता है? क्या अल्लाह के सिवा कोई और ख़ुदा है (जो यह सब करता हो)? उच्च है अल्लाह उनके उस साझी ठहराने के कृत्य से जो वे करते हैं (अर्थात उनके साझी ठहराने के कृत्य से अल्लाह का कोई संबंध नहीं). 64 और वह कौन है जो सृष्टि का प्रारंभ करता है, फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है? वह कौन है जो तुम्हें आसमान व ज़मीन से जीविका प्रदान करता है? क्या अल्लाह के सिवा कोई और ख़ुदा है (जो इन कामों में साझीदार हो)? कहो कि लाओ अपना प्रमाण यदि तुम सच्चे हो.

65 (पैग़ंबर!) उनसे कहो, आसमानों तथा धरती में अल्लाह के सिवा दूसरा कोई परोक्ष का ज्ञान नहीं रखता. और वे (तुम्हारे उपास्य तो यह भी) नहीं जानते कि वे कब उठाए जाएंगे? 66 बल्कि (हक़ीक़त यह है कि) मृत्यु-पश्चात जीवन से संबंधित ज्ञान उनसे गुम हो गया है, नहीं, (बल्कि) वे उसकी बाबत संदेह में हैं. बल्कि (इतना ही नहीं) वे उसकी बाबत अँधे हैं. 67 ये सत्य का इन्कार करने वाले कहते हैं, क्या जब हम और हमारे बाप-दादा मिट्टी हो चुके होंगे तो हमें धरती से (जीवित करके) निकाला जाएगा? 68 इसका वादा हमसे भी किया गया और हमसे पूर्व हमारे बाप-दादा से भी. मगर ये तो बस कहानियाँ हैं पहले के लोगों की. 69 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, ज़रा ज़मीन में चल-फिर कर देखो कि अपराधियों का क्या अंजाम हुआ.

70 (पैग़ंबर!) उन (इन्कार करने वालों) के बाबत दुःखी न हो और न उनकी चालों पर दिल तंग हो जो वे चलते हैं. 71 (पैग़ंबर!) वे (तुमसे) पूछते हैं, यह वादा कब पूरा होगा, यदि तुम सच्चे हो? 72 उनसे कहो, जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो, बहुत संभव है कि उसका कोई हिस्सा तुम्हारे निकट आ लगा हो. 73 निस्संदेह तुम्हारा रब तो लोगों पर बड़ी दया करने वाला है, लेकिन अधिकतर लोग कृतज्ञता का परिचय नहीं देते. 74 निस्संदेह तुम्हारा रब भली-भांति जानता है जो कुछ उनके सीने छुपाए हुए हैं और जो कुछ वे प्रकट करते हैं. 75 आसमान और ज़मीन की कोई छिपी हुयी चीज़ ऐसी नहीं है जो एक स्पष्ट किताब में दर्ज की हुयी न हो.

76 निस्संदेह यह क़ुरआन इसराईल की संतान पर बहुत सी चीज़ों को स्पष्ट कर रहा है जिनमें वे मतभेद रखते हैं. 77 और यह क़ुरआन मार्गदर्शन एवं कृपा है ईमान लाने वालों के लिए. 78 निश्चय ही तुम्हारा रब उनके बीच अपने हुक्म से फ़ैसला कर देगा. वह प्रभुत्वशाली और सर्वज्ञानी है. 79 तो (पैग़ंबर!) अल्लाह पर भरोसा रखो. निस्संदेह तुम स्पष्ट रूप से सच्चाई पर हो. 80 तुम (सत्य का संदेश) मुर्दा इंसानों को नहीं सुना

सकते और न तुम उन बहरों को अपनी पुकार पहुँचा सकते हो जो पीठ फेर कर भाग खड़े होते हैं.81 और न तुम अंधों को रास्ता बताकर पथभ्रष्टता से बचा सकते हो. तुम तो मात्र उन्हें सुना सकते हो जो हमारे संदेशों पर ईमान लाते हैं, फिर आज्ञाकारी बन जाते हैं.

82 और जब उन पर (हमारी) बात पूरी होने का समय आ पहुँचेगा (अर्थात क़यामत क़रीब आ जाएगी जिसका उनसे वादा किया जा रहा है) तो हम उनके लिए एक दाब्बह (अर्थात जीवधारी) धरती से निकालेंगे जो उनसे बातें करेगा (वह कहेगा) कि लोग हमारे संदेशों पर विश्वास नहीं रखते थे. 83 जिस दिन (अर्थात जब वास्तव में क़यामत घटित हो जाएगी) हम प्रत्येक समुदाय में से एक गिरोह, ऐसे लोगों का जो हमारे संदेशों को झुठलाया करते थे घेर लाएंगे, फिर उनकी दर्जा-बंदी की जाएगी. 84 यहाँ तक कि जब सब आ जाएंगे, तो (उनका रब उनसे) पूछेगा, क्या तुमने मेरी (संदेशयुक्त) निशानियों को झुठलाया, हालाँकि ज्ञान की दृष्टि से तुम उन पर हावी न हुए थे? (यदि ऐसा नहीं) तो फिर तुम क्या कर रहे थे? 85 और उन पर (यातना का) वादा पूरा होकर रहेगा, इस कारण कि उन्होंने ज़ुल्म किया. तब वे कुछ भी बोल न सकेंगे. 86 क्या इन (इन्कार करने वालों) ने नहीं देखा कि हमने रात बनायी, ताकि लोग उसमें विश्राम करें और दिन को प्रकाशमान बनाया (,ताकि वे उसमें काम करें). निस्संदेह इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो विश्वास करते हैं.

87 और जिस दिन सूर फूँका जाएगा (अर्थात क़यामत घटित करने के लिए नरसिंघा में फूँक मारी जाएगी) तो घबरा उठेंगे जो आसमानों में हैं और जो धरती में हैं, सिवा उसके जिसे अल्लाह (इस घबराहट से बचाना) चाहे. और सब चले आएंगे उसके आगे विनम्रतापूर्वक. 88 (आज) तुम पहाड़ों को देखते हो, तो तुम समझते हो कि वे ख़ूब जमे हुए हैं, लेकिन वे बादलों की तरह उड़ रहे होंगे. यह अल्लाह की कारीगरी है, जिसने हर चीज़ को सुदृढ़ किया. वह ख़ूब जानता है जो कुछ तुम करते हो. 89 (उस

दिन) जो व्यक्ति भलाई लेकर आएगा, उसके लिए अधिक अच्छा प्रतिफल होगा. और ऐसे लोग उस दिन की घबराहट से सुरक्षित होंगे. 90 और जो व्यक्ति बुराई लिए हुए आएगा, तो ऐसे लोग औंधे मुँह आग में डाल दिए जाएंगे. (उनसे पूछा जाएगा,) क्या तुम उसके सिवा किसी और चीज़ का बदला पा रहे हो, जो तुम करते रहे हो?

91 (पैग़ंबर! इन मक्का वालों से) कहो, मुझे तो यही आदेश दिया गया है कि मैं इस (मक्का) शहर के रब की उपासना करूँ, जिसने इसको आदरणीय (स्थान) बनाया और हर चीज़ उसी की है और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं आज्ञापालन करने वालों में से बनूँ. 92 (और यह भी आदेश दिया गया है) कि क़ुरआन पढ़कर सुनाऊँ. फिर जो व्यक्ति सन्मार्ग पर आएगा अपने ही लिए सन्मार्ग पर आएगा और जो भ्रष्ट मार्ग (पर क़ायम) रहा, तो उससे कह दो कि मैं तो बस सचेत करने वालों में से हूँ. 93 (पैग़ंबर!) कह दो, सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है (अर्थात सारी प्रशंसा का वास्तविक अधिकारी सिर्फ़ अल्लाह है). वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएगा तो तुम उन्हें पहचान लोगे. और तुम्हारा रब उससे बे-ख़बर नहीं जो तुम करते हो.

सूरह–28. अल–क़सस

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 ता० सीन० मीम०. 2 यह स्पष्ट ग्रंथ के संदेश-वचन हैं. 3 हम मूसा और
फ़िरऔन का कुछ वृत्तांत तुम्हें ठीक-ठीक सुनाते हैं, उन लोगों के (बोध) के लिए जो
ईमान लाए.

4 (इजिप्त का राजा) फ़िरऔन धरती (के एक भू-भाग) पर अपनी चला रहा था
और उसने उसके निवासियों को गिरोहों में बाँट रखा था. उनमें से एक गिरोह को (अर्थात
बनी-इसराईल को) उसने कमज़ोर कर रखा था. वह उनके लड़कों की हत्या करता था
और लड़कियों को जीवित रहने देता. निस्संदेह वह उपद्रवी लोगों में से था. 5 और हम
चाहते थे कि उन लोगों पर मेहरबानी करें जो धरती में कमज़ोर करके रखे गए थे. और
उन्हें पेशवा बनाएँ और उन्हीं को उत्तराधिकारी बना दें. 6 और धरती में उन कमज़ोरों को
सत्ता प्रदान करें. और फ़िरऔन और हामान और उसकी सेनाओं को वही कुछ दिखाएँ
जिससे वे डरते थे.

7 (मूसा की पैदाइश के बाद) हमने मूसा की माँ को यह प्रेरणा-संदेश
(inspiration) दिया कि उसे दूध पिलाओ. फिर जब तुम्हें उसके संबंध से डर
लगने लगे (कि वह राजा द्वारा बनी इसराईल के नरीना बच्चों को क़तल करने की मुहिम
का शिकार हो सकता है) तो तब (एक संदूक़ में रख कर) उसे दरिया में डाल दो. फिर न
आशंकित होना और न दुःखी होना. हम उसे तुम्हारे पास लौटा कर लाएंगे. और उसे
पैग़ंबरों में से बनाएंगे. 8 फिर फ़िरऔन के घर वालों ने उसे दरिया से निकाल लिया,
ताकि वह उनका दुश्मन और उनके दुःख का कारक बने. निस्संदेह! फ़िरऔन, हामान
और उसकी सेना गुनाहगार लोग थे. 9 फ़िरऔन की पत्नी ने (उससे) कहा, यह (बच्चा)
मेरे और तुम्हारे लिए आँख की ठंडक है. इसे क़तल न करो, क्या अजब कि यह हमारे

लिए लाभप्रद सिद्ध हो या फिर हम इसे अपना बेटा भी बना सकते हैं; और वे (अंजाम से) बेख़बर थे.

10 उधर मूसा की माँ का दिल व्याकुल हो रहा था. निकट था कि वह उस (भेद) को प्रकट कर देती, यदि हम उसके दिल को न संभालते. (हमने उसके दिल को संभाले रखा,) ताकि वह ईमान वालों में से हो. 11 मूसा की माँ ने मूसा की बहन से कहा, तू इसके पीछे-पीछे जा. तो वह उसे अजनबी बनकर देखती रही और उन लोगों को (इस चीज़ की) ख़बर न हो सकी.12 और हमने पहले ही से मूसा को दूध पिलाने वालियों से रोक रखा था (अर्थात कोई दूध पिलाने वाली मूसा को दूध न पिला सकी) तब उस लड़की ने (उनसे) कहा, क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों का पता बताऊँ जो तुम्हारे लिए इस बच्चे का पालन-पोषण करे और इसके शुभचिंतक हों. 13 इस तरह हमने मूसा को उसकी माँ की ओर लौटा दिया, ताकि उसकी आँखें थंडी हों और वह दुःखी न हो और वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है. लेकिन अधिकतर लोग (इस बात को) नहीं जानते. 14 और जब मूसा अपनी जवानी (की उम्र) को पहुँच गया और परिपक्व हो गया, तो हमने उसे बुद्धिमानी तथा ज्ञान प्रदान किया. हम इसी प्रकार बदला देते हैं भलाई करने वालों को.

15 और (एक दिन) वह शहर में ऐसे समय दाख़िल हुआ, जबकि शहर वाले ग़फ़लत में थे (अर्थात तब अधिकतर लोग आराम कर रहे थे). तो उसने वहाँ देखा कि दो व्यक्ति लड़ रहे हैं. एक उसकी अपनी क़ौम का था तो दूसरा उसकी दुश्मन क़ौम से ताल्लुक़ रखता था. तो जो उसकी क़ौम में से था, उसने (मूसा से) उसके विरुद्ध सहायता माँगी जो उसके शत्रुओं में से था. तो मूसा ने उसको एक घूँसा मारा (जो दुश्मन क़ौम से था) और (अहेतुपूर्वक) उसका काम तमाम कर दिया (अर्थात उस व्यक्ति की मृत्यु हो गयी). (इस घटना से मूसा हिल गये और) बोल उठे, यह तो शैतानी कृत्य घटित हो

गया. शैतान (इंसान का सख़्त) दुश्मन है और खुला गुमराह करने वाला है. 16 ऐ मेरे रब! मैंने अपने आप पर अत्याचार किया है. तो तू मुझे क्षमा कर दे! तो अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया. निस्संदेह वह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है. 17 मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब! जैसे तूने मुझ पर कृपा की है, तो मैं भी कभी अपराधियों का सहायक नहीं बनूँगा.

18 फिर (दूसरे दिन) सुबह को वह डरते हुए और (हर ओर से) ख़तरा भाँपते हुए शहर में दाख़िल हुआ, तो क्या देखता है कि वही व्यक्ति जिसने कल उससे सहायता माँगी थी, (आज फिर) उसे सहायता के लिए पुकार रहा है. मूसा ने उससे कहा, निस्संदेह तू स्पष्टतः भटका हुआ आदमी है. 19 फिर जब मूसा ने चाहा कि उस व्यक्ति को पकड़ कर (बाजू कर दें) जो उन दोनों के दुश्मन (क़ौम से) था. तब वही (इसराईली जिसकी मूसा मदद कर रहे थे, मूसा की डाँट के कारण) कहने लगा, ऐ मूसा! क्या तुम चाहते हो कि मुझे मार डालें जिस तरह तुमने कल एक व्यक्ति को मार डाला? तुम तो बस धरती पर निर्दयी-अत्याचारी बनकर रहना चाहते हो और सुधार करने वालों में से बनना नहीं चाहते. 20 (तब) एक व्यक्ति शहर के परले सिरे से दौड़ता हुआ आया. उसने कहा, ऐ मूसा! दरबार वाले परामर्श कर रहे हैं कि तुम्हें मार डालें तो तुम यहाँ से निकल जाओ. मैं तुम्हारे शुभ-चिंतकों में से हूँ. 21 फिर वह वहाँ से निकला डरता हुआ, टोह लेता हुआ. उसने दुआ की, ऐ मेरे रब! मुझे अत्याचारी लोगों से मुक्ति प्रदान कर.

22 और जब मूसा ने (मिस्र से निकल कर) मदियन का रुख किया तो कहा, आशा है कि मेरा रब मुझे सीधा मार्ग दिखाएगा. 23 और जब वह मदियन (वालों) के पानी लेने की जगह पर पहुँचा तो वहाँ उसने देखा कि लोगों का एक समूह (अपने जानवरों को) पानी पिला रहा है और उनसे अलग एक ओर दो औरतें अपनी बकरियों को रोके हुए खड़ी हैं. मूसा ने उनसे पूछा, तुम्हारा क्या मामला है? उन्होंने कहा, हम उस समय तक

(अपनी बकरियों को) पानी नहीं पिला सकते, जब तक ये चरवाहे अपने जानवर न हटा लें. और हमारे बाप एक बूढ़े आदमी हैं. 24 तो मूसा ने उनके जानवरों को पानी पिला दिया. फिर वह एक छाँव की जगह चला गया, फिर कहा, ऐ मेरे रब! तू जो भलाई भी मेरी ओर उतार दे, मैं उसका मुहताज हूँ.

25 फिर (कुछ देर न गुज़री थी कि) उन दोनों में से एक लड़की लज्जा के साथ चलती हुयी मूसा के पास आयी. उसने कहा, मेरे पिता आपको बुला रहे हैं, ताकि आपने हमारे जानवरों को जो पानी पिलाया है, उसका आपको बदला दें. फिर जब मूसा उसके पास आया और अपना सारा क़िस्सा उसे सुनाया तो उसने कहा, कुछ भय न करो, अब तुमने अत्याचारी लोगों से मुक्ती पायी है. 26 उन दो लड़कियों में से एक ने कहा, ऐ पिताजी! इस व्यक्ति को काम पर रख लीजिए. बेहतरीन व्यक्ति जिसे आप काम पर रखें वही हो सकता है जो शक्तिशाली और अमानतदार हो. 27 (उन लड़कियों के) बाप ने कहा, मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दो बेटियों में से एक का विवाह तुम्हारे साथ कर दूँ, इस शर्त पर कि तुम आठ वर्ष मेरे यहाँ नौकरी करो. फिर यदि तुम दस वर्ष पूरे कर दो तो वह तुम्हारी ओर से होगा. मैं तुम पर कष्ट नहीं डालना चाहता. यदि अल्लाह ने चाहा तो तुम मुझे भला आदमी पाओगे. 28 (इस पर) मूसा ने जवाब दिया, यह बात मेरे और आपके बीच तय हो गयी. इन दोनों अवधियों में से जो भी मैं पूरी करूँ तो फिर मुझ पर कोई बाध्यता न हो. और अल्लाह हमारे क़ौल व क़रार (अर्थात हमारे समझौते पर) गवाह है.

29 फिर जब मूसा ने अवधी पूरी कर दी और वह अपने घर वालों को लेकर (मिस्र की ओर) निकला, तो उसने तूर (पर्वत) की ओर एक आग देखी. मूसा ने अपने घर वालों से कहा, तुम ठहरो, मैंने एक आग देखी है. संभवतः मैं वहाँ से कोई ख़बर ले आऊँ या आग का अंगारा लाऊँ, ताकि तुम ताप सको. 30 फिर जब वह वहाँ पहुँचा तो घाटी के दाहिने किनारे से बरकत वाले श्रेत्र में, एक पेड़ से उसे पुकारा गया (अर्थात एक

पेड़ की दिशा से उसे आवाज़ आयी) कि ऐ मूसा! मैं अल्लाह हूँ, समस्त सृष्टि का रब. 31
(अल्लाह ने मूसा से आगे कहा,) और यह कि तुम अपनी लाठी डाल दो. तो जब उसने उसको साँप की तरह हरकत करते हुए देखा, तो वह पीठ फेरकर भागा और पीछे मुड़कर भी न देखा. (तब अल्लाह ने कहा,) ऐ मूसा! आगे आओ और डरो नहीं, तुम पूर्णतः
सुरक्षित हो! 32 अपना हाथ गिरेबान में डालो, वह चमकता हुआ निकलेगा बिना किसी ख़राबी के और (यदि तुम्हें किसी प्रकार का भय हो तो) डर को दूर करने के लिए अपना हाथ अपने से मिलाए रखना. यह दो निशानियाँ हैं तुम्हारे रब की ओर से, फ़िरऔन और उसके दरबारियों के सामने प्रस्तुत करने के लिए. निस्संदेह वे अवज्ञाकारी लोग हैं.

33 फिर मूसा ने (अल्लाह से) कहा, ऐ मेरे रब! मैंने उनके एक व्यक्ति को
(अहेतुपूर्वक) मार डाला था, इसलिए मैं डरता हूँ कि वे मुझे मार डालेंगे. 34 मेरा भाई
हारून जो मुझसे ज़्यादा वाकपटु है. तो तू उसको मेरे साथ सहायक के रूप में भेज, ताकि
वह मेरा समर्थन करे. मुझे आशंका है कि वे लोग मुझे झुठला देंगे. 35 (इस पर) अल्लाह
ने कहा, हम तुम्हारे भाई के द्वारा तुम्हारे हाथ को मज़बूती देंगे और तुम्हें प्रभुत्व प्रदान करेंगे तो वे तुम लोगों तक न पहुँच सकेंगे. हमारी निशानियों के कारण तुम दोनों और तुम्हारा अनुसरण करने वाले ही प्रभावी रहेंगे.

36 फिर जब मूसा उन लोगों के पास हमारी स्पष्ट निशानियों के साथ पहुँचा, उन्होंने
कहा कि यह तो केवल गढ़ा हुआ जादू है. और यह बात हमने अपने पहले गुज़रे हुए
पूर्वजों में नहीं सुनी. 37 (इस पर) मूसा ने कहा, मेरा रब उसे भली-भाँति जानता है जो
उसकी ओर से मार्गदर्शन लेकर आया है. और वही जानता है कि आख़िरी अंजाम
किसका अच्छा होना है. निस्संदेह अत्याचारी लोग कभी सफलता नहीं पाते. 38
फ़िरऔन ने कहा, ऐ दरबार वालो! मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा किसी उपास्य को नहीं

जानता. तो ऐ हामान! तू मेरे लिए आग में ईंटे पकवा. फिर मेरे लिए एक ऊँचा महल बना, ताकि मैं मूसा के रब को झाँक कर देखूँ. मैं तो इसे एक झूठा आदमी समझता हूँ.

39 फ़िरऔन और उसकी सेनाओं ने बिना किसी हक़ के धरती पर घमंड किया और उन्होंने समझा की उन्हें हमारी ओर लौट कर आना नहीं है. 40 तो (अंततः) हमने फ़िरऔन और उसकी सेनाओं को पकड़ा. फिर उन्हें समुद्र में फेंक दिया, तो देखो कि उन दुराचारियों का कैसा अंजाम हुआ. 41 और हमने उन्हें जहन्नम की ओर बुलाने वाले पेशवा बना दिया. और क़यामत के दिन उन्हें कोई सहायता नहीं मिलेगी. 42 और हमने इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी और क़यामत के दिन वे बदहाल (अर्थात दुर्दशा ग्रस्त) लोगों में से होंगे. 43 और हमने पूर्ववर्ती (अपराधी) पीढ़ियों को नष्ट करने के बाद मूसा को किताब प्रदान की, लोगों के लिए सूझबूझ की सामग्री, मार्गदर्शन और दयालुता, ताकि वे उपदेश ग्रहण करें.

44 (ऐ मुहम्मद!) तुम उस समय (तूर) पर्वत के पश्चिमी किनारे पर उपस्थित न थे, जब हमने मूसा को (अपने) आदेश सौंपे थे और न तुम (उन बनी इसराईल के) गवाहों में से थे. 45 लेकिन हमने (तुम्हारे ज़माने तक) बहुत सी पीढ़ियाँ सृजित कीं, फिर उन पर बहुत समय बीत गया. और तुम मदियन वालों के बीच भी मौजूद न थे कि उन्हें हमारे संदेश सुना रहे होते. लेकिन हम ही हैं पैग़ंबरों को भेजने वाले. 46 और तुम तूर के किनारे पर न थे, जब हमने मूसा को पुकारा था, लेकिन यह तुम्हारे रब की रहमत है (कि ये जानकारियाँ तुम्हें दी जा रही हैं), ताकि तुम उन लोगों को सचेत करो जिनके पास तुमसे पहले कोई सचेत करने वाला नहीं आया, ताकि वे उपदेश ग्रहण करें. 47 और हमने (इसलिए पैग़ंबर को भेजा, ताकि) कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ उनके हाथ आगे भेज चुके हों, उसके कारण जब उन पर कोई मुसीबत आए तो वे कहने लगें, ऐ हमारे रब! तूने हमारी ओर कोई पैग़ंबर क्यों न भेजा कि हम तेरे संदेशों का अनुसरण करते और हम ईमान लाने वालों में से होते.

48 लेकिन जब उनके पास हमारी ओर से सत्य आया तो वे कहने लगे, जो चीज़ मूसा को मिली थी वैसी चीज़ इस पैग़ंबर को क्यों न मिली? क्या इन लोगों ने उसका इन्कार नहीं किया जो कुछ इससे पहले मूसा को दिया गया था? तो उन्होंने कहा, दोनों जादू हैं जो एक दूसरे के सहायक हैं और उन्होंने कहा, हम किसी को भी नहीं मानते.

49 (पैग़ंबर!) इनसे कह दो, तुम अल्लाह के पास से कोई किताब ले आओ, जो इन दोनों से अच्छा मार्गदर्शन करने वाली हो (अर्थात क़ुरआन व तौरात से अच्छा), यदि तुम सच्चे हो. तो मैं उसका अनुसरण करूँगा. 50 अब यदि ये लोग तुम्हारी माँग पूरी न करें, तो समझ लो कि वे मात्र अपनी इच्छा के पीछे चल रहे हैं. और उससे अधिक पथभ्रष्ट कौन होगा जो अल्लाह की ओर से मार्गदर्शन के बिना अपनी इच्छा के पीछे चले? निस्संदेह अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता. 51 और हमने उन लोगों के पास बार-बार अपना संदेश भेजा, ताकि वे उपदेश ग्रहण करें.

52 जिन लोगों को हमने इससे पहले किताब दी थी, वे इस (क़ुरआन) पर ईमान लाते हैं. 53 और जब वह उन्हें सुनाया जाता है, तो वे कहते हैं कि हम इस पर ईमान लाए. निस्संदेह यह सत्य है हमारे रब की ओर से. हम तो पहले ही से इसको समर्पित हैं. 54 ये वे लोग हैं कि उन्हें इनका बदला दुगना दिया जाएगा, इस पर कि उन्होंने धैर्य रखा. और वे बुराई को भलाई से रोकते हैं और हमने जो कुछ उन्हें प्रदान किया है उसमें से वे खर्च करते हैं. 55 और जब वे व्यर्थ बात सुनते हैं तो वह उससे बचते हैं और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म. तुम पर सलामती हो. हम अज्ञानी लोगों से उलझना नहीं चाहते. 56 (पैग़ंबर!) तुम जिसे चाहो उसे मार्गदर्शन नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है मार्गदर्शन प्रदान करता है. और वह उन्हें भली प्रकार जानता है जो सन्मार्ग स्वीकार करने वाले हैं.

57 (इन्कार करने वाले) कहते हैं कि यदि हम तुम्हारे साथ इस मार्गदर्शन का अनुसरण करने लगे तो हम अपनी भूमि से उचक लिए जाएंगे. क्या हमने इन (मक्कावासियों) को शांति वाले हरम में स्थान नहीं दिया, जहाँ हर प्रकार के फल खींचे चले आते हैं, हमारी ओर से जीविका के रूप में? लेकिन उनमें से अधिकतर लोग (इस वास्तविकता से) अनभिज्ञ हैं.

58 हमने कितने शहर ही नष्ट कर दिए जो अपने आर्थिक संसाधनों पर गर्व करते थे. तो (देखो) यह हैं उनके शहर (खंडहर पड़े हुए), जिन में उनके बाद कम ही कोई बसा है. अंततः हम ही वारिस होकर रहे. 59 (पैग़ंबर!) तुम्हारा रब बस्तियों को नष्ट करने वाला नहीं, जब तक कि उनकी केंद्रीय बस्ती में कोई पैग़ंबर न भेज दे, जो उन्हें हमारे संदेश पढ़कर सुनाए. और हम बस्तियों को नष्ट करने वाले नहीं, सिवाय इस स्थिती के कि वहाँ के रहने वाले अत्याचारी हों.

60 और जो चीज़ भी तुम्हें दी गयी है, वह सांसारिक जीवन की सुख-सामग्री और उसकी शोभा है. और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर भी है और बाक़ी रहने वाला भी. क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? 61 भला वह व्यक्ति जिससे हमने अच्छा वादा किया है; और वह उसे पाने वाला हो, क्या उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जिसे हमने केवल (इसी) सांसारिक जीवन की सुख-सामग्री दे दी हो, फिर वह क़यामत के दिन उन लोगों में से होने वाला हो जिन्हें (पकड़ कर सज़ा के लिए) हाज़िर किया जाएगा?

62 जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा और कहेगा कि कहाँ हैं वे मेरे साझीदार जिनका तुम दावा करते थे. 63 जिन पर बात साबित हो चुकी होगी, वे कहेंगे, ऐ हमारे रब! यही वे लोग हैं जिन्हें हमने गुमराह किया था. इन्हें हमने उसी तरह गुमराह किया था जैसे हम स्वयं गुमराह हुए. हम इनसे बरी (विरक्त) होने का तेरे समक्ष एलान करते हैं. ये लोग हमारी उपासना नहीं करते थे.

64 कहा जाएगा, (अब) पुकारो अपने ठहराए हुए उन साझीदारों को. तो वे उन्हें पुकारेंगे, लेकिन वे पुकारने वालों को कोई उत्तर नहीं देंगे. तब वे यातना को देखेंगे. काश, ये सन्मार्ग अपनाने वाले होते! 65 और उस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा और पूछेगा कि तुमने संदेश पहुँचाने वालों को क्या उत्तर दिया था? 66 उस दिन कोई जवाब उन्हें न सूझेगा और न ये आपस में एक-दूसरे से पूछ ही सकेंगे. 67 हाँ, लेकिन जो (सन्मार्ग की ओर) पलट आया और ईमान ले आया और उसने भले कर्म किए, तो आशा है कि वह सफल होने वालों में से होगा.

68 तुम्हारा रब निर्माण करता है जो कुछ वह चाहता है. और (अपने काम के लिए जिसे चाहता है) चुन लेता है. यह चुन लेना इन लोगों के अधिकार में नहीं है. महिमावान है अल्लाह और उच्चतर है उस साझी ठहराने के कृत्य से जो ये लोग करते हैं. 69 तुम्हारा रब जानता है जो कुछ उनके दिल छिपाते हैं और जो कुछ वे प्रकट करते हैं. 70 वही अल्लाह है उसके सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं. उसी के लिए प्रशंसा है इस दुनिया में भी और मृत्यु-पश्चात दुनिया में भी. फ़ैसले का अधिकार उसी को है. और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे.

71 (पैग़ंबर) इनसे कहो, क्या तुमने (कभी इस बात पर) विचार किया है कि यदि अल्लाह क़यामत के दिन तक तुम पर हमेशा के लिए रात कर दे तो अल्लाह के सिवा दूसरा कौन उपास्य है जो तुम्हारे लिए प्रकाश ले आए. क्या तुम लोग सुनते नहीं हो? 72 इनसे पूछो, क्या तुमने कभी सोचा कि अल्लाह क़यामत तक हमेशा के लिए दिन कर दे तो अल्लाह के सिवा दूसरा कौन उपास्य है जो तुम्हारे लिए रात ले आए, जिसमें तुम आराम पाओ. क्या तुम लोग देखते नहीं हो? 73 उसने अपनी दयालुता से तुम्हारे लिए रात व दिन बनाए, ताकि तुम (रात में) आराम पाओ और (दिन में) उसकी कृपा तलाश करो, ताकि तुम कृतज्ञ बनो.

74 उस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा, फिर पूछेगा, कहाँ हैं वे मेरे साझीदार जिनका तुम दावा करते थे? 75 हम हर समुदाय में से एक गवाह निकाल कर लाएंगे. फिर हम उन लोगों से कहेंगे कि लाओ अपना प्रमाण, तब उन्हें मालूम हो जाएगा कि सत्य अल्लाह की ओर है. और वह झूठ उनसे गुम हो जाएंगे जो उन्होंने गढ़ रखे थे.

76 क़ारून मूसा की क़ौम में से था (अर्थात बनी इसराईल में से), फिर वह अपनी क़ौम के विरुद्ध विद्रोही बन गया. हमने उसे इतने ख़ज़ाने दे रखे थे कि उनकी कुंजियाँ उठाने से अनेक बलवान आदमी थक जाते थे. एक बार उसकी क़ौम के लोगों ने उससे कहा, इतरा मत, अल्लाह इतराने वालों को पसंद नहीं करता. 77 जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है उससे मृत्यु-पश्चात दुनिया के घर के निर्माण की चिंता कर. और वर्तमान दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल. और लोगों के साथ उपकार (का मामला) कर, जैसे अल्लाह ने तेरे साथ उपकार (का मामला) किया है. और धरती पर बिगाड़ पैदा करने की कोशिश न कर. अल्लाह बिगाड़ पैदा करने वालों को पसंद नहीं करता.

78 (इस पर) क़ारून ने कहा, यह सब कुछ (अर्थात सारी धन-संपत्ती) मुझे उस ज्ञान के आधार पर मिली है जो मुझे प्राप्त है. क्या वह यह नहीं जानता था कि अल्लाह उससे पहले बहुत से ऐसे लोगों को नष्ट कर चुका है जो उससे अधिक शक्ति वाले और (अपने इर्द-गिर्द लोगों का) जत्था रखने वाले थे. और अपराधियों से तो उनके गुनाह पूछे नहीं जाते (अर्थात उनके गुनाहों के संबंध से स्पष्टीकरण लेने की आवश्यकता नहीं होती). 79 (एक दिन) क़ारून अपनी क़ौम के सामने अपने ठाठ-बाट में निकला. जो लोग इसी दुनिया की (चीज़ों की) चाहत रखते थे, कहने लगे, काश हमें भी वही कुछ मिलता जो क़ारून को दिया गया है. निस्संदेह वह बड़ा भाग्यवान है. 80 लेकिन जो लोग ज्ञान रखने वाले थे (अर्थात सत्य का ज्ञान), उन्होंने कहा, अफ़सोस तुम्हारे हाल पर, अल्लाह का बदला बेहतर है उस आदमी के लिए जो ईमान लाए और भले कर्म करे. यह बात धैर्य से काम लेने वालों को ही प्राप्त होती है.

81 फिर हमने क़ारून को और उसके घर को धरती में धँसा दिया. फिर उसके लिए कोई समूह न उठा जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी सहायता करता और न वह स्वयं अपने आपको बचा सका. 82 और जो लोग कल तक उस जैसा होने की कामना कर रहे थे, वे कहने लगे कि अफसोस, (अरे बाप रे! हमें तो हक़ीक़त का पता ही नहीं था, जो यह है कि) अल्लाह अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है जीविका बढ़ा देता है और जिसके लिए चाहता है जीविका में कमी कर देता है. यदि अल्लाह ने हम पर उपकार न किया होता तो हमें भी धरती में धँसा देता. अफ़सोस! निस्संदेह सत्य का इन्कार करने वाले सफलता नहीं पाया करते.

83 मृत्यु-पश्चात शाश्वत दुनिया का घर हम उन लोगों को देंगे, जो न धरती में बड़ा बनना चाहते थे और न बिगाड़ करना. अंतिम (अच्छा) परिणाम उन लोगों के लिए है जो (अल्लाह के प्रति) सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहे. 84 जो कोई भलाई लेकर आएगा. उसके लिए उससे बेहतर भलाई है और जो कोई बुराई लेकर आए तो जो लोग बुराई करते थे. उन्हें वही मिलेगा जो उन्होंने किया. 85 (पैग़ंबर!) जिसने तुम पर क़ुरआन का दायित्व डाला है, वह तुम्हें एक अच्छे परिणाम तक पहुँचा कर रहेगा. (पैग़ंबर!) इन लोगों से कह दो, मेरा रब भली-भाँति जानता है कि कौन मार्गदर्शन लेकर आया है और कौन पथभ्रष्टता में पड़ा हुआ है.

86 (पैग़ंबर!) तुम इस चीज़ की अपेक्षा लिए हुए नहीं थे कि तुम पर (ख़ुदा की ओर से) किताब उतारी जाएगी. लेकिन यह तो तुम्हारे रब की मेहरबानी है (कि तुम पर किताब उतारी गयी). तो तुम उन लोगों के सहायक न बनो जो सत्य का इन्कार करने वाले हैं. 87 और (पैग़ंबर!) ऐसा कभी न होने पाए कि इन्कार करने वाले तुम्हें अल्लाह के संदेशों से रोक दें, जबकि वे तुम्हारी ओर अवतरित किए जा चुके हों. तुम (लोगों को) अपने रब की ओर बुलाओ और उन लोगों में से न बनो जो अल्लाह के साझीदार ठहराते

हैं. ८८ और अल्लाह के साथ किसी दूसरे उपास्य को न पुकारो. उसके सिवा दूसरा कोई उपास्य नहीं. हर चीज़ नष्ट होने वाली है, सिवा उसकी ज़ात के. निर्णय का अधिकार उसी को प्राप्त है और तुम सब उसी की ओर लौटाए जाओगे.

सूरह–29. अल–अन्कबूत

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अलिफ़० लाम० मीम०. 2 क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे बस इतना कहने पर छोड़ दिए जाएंगे कि हम ईमान लाए और उन्हें जाँचा न जाएगा? 3 हालाँकि हम उन सब लोगों की आज़माइश कर चुके हैं जो इनसे पहले थे. अल्लाह को तो ज़रूर यह देखना है कि सच्चे कौन हैं और झूठे कौन.

4 क्या वे लोग जो बुरे काम कर रहे हैं, यह समझ बैठे हैं कि वे हमसे बच निकलेंगे? बहुत ही बुरा फ़ैसला है जो वे कर रहे हैं. 5 जो व्यक्ति अल्लाह से मिलने की आशा रखता है, तो अल्लाह का वादा अवश्य आने वाला है. वह सुनने वाला और जानने वाला है. 6 जो व्यक्ति प्रयत्नों की पराकाष्ठा करता है तो वह अपने ही लिए प्रयत्नों की पराकाष्ठा करता है. निस्संदेह अल्लाह सारे संसार वालों से निस्पृह है. 7 जो लोग ईमान लाए और उन्होंने भले कर्म किए तो हम उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर देंगे और उन्हें उनके कर्म का उचित बदला देंगे जो वे करते थे. 8 हमने मनुष्य को अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की है. लेकिन यदि वे तुझ पर दबाव डालें कि तू ऐसी चीज़ को मेरा साझी ठहराए जिसका तुझे कोई ज्ञान नहीं. तो तू उनका कहा न मान. (अंततः) तुम सबको मेरे पास लौट कर आना है. फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते थे.

9 और जो लोग ईमान लाए होंगे और भले कर्म किए होंगे, तो हम उन्हें (अपने) नेक बंदों में सम्मिलित करेंगे.

10 और लोगों में कोई ऐसा है जो कहता है कि हम ईमान लाए अल्लाह पर. फिर जब अल्लाह के मार्ग में उसको सताया जाता है तो वह लोगों के सताने को अल्लाह की ओर से यातना समझने लगता है. यदि तुम्हारे रब की ओर से कोई सहायता आ जाए तो ऐसे

लोग कहेंगे कि हम तो तुम्हारे साथ थे. क्या अल्लाह उससे भली प्रकार अवगत नहीं जो संसार वालों के दिलों में है? 11 अल्लाह को अवश्य यह देखना है कि ईमान लाने वाले (तथा उस पर दृढ़ता से जमे रहने वाले) कौन हैं और कपटाचारी कौन?

12 सत्य का इन्कार करने वाले लोग (अर्थात असत्य के नायक) उन लोगों से कहते हैं जो ईमान लाए कि तुम हमारे मार्ग पर चलो. हम तुम्हारे पापों को अपने ऊपर ले लेंगे (अर्थात हम तुम्हें पाप मुक्त कर देंगे). हालाँकि वे उनके पापों में से कुछ भी अपने ऊपर लेने वाले नहीं हैं. निस्संदेह वे झूठे हैं. 13 वे निश्चित रूप से अपने बोझ उठाएंगे और अपने बोझ के साथ कुछ और बोझ भी. और ये लोग जो झूठी बातें बनाते हैं, क़यामत के दिन उसके संबंध से उनसे पूछ होगी.

14 हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा. वह उनके बीच पचास कम एक हज़ार वर्ष (अर्थात नौ सौ पचास वर्ष) रहा. फिर उसकी क़ौम (के इन्कारियों) को तूफ़ान ने आ घेरा, (इस अवस्था में) कि वे अत्याचारी थे. 15 फिर हमने नूह को और नाव वालों को बचा लिया. और हमने इस घटना को संसार वालों के लिए एक निशानी बना दिया.

16 इसी तरह इब्राहीम को (हमने पैग़ंबर बनाकर भेजा), जब उसने अपनी क़ौम के लोगों से कहा, अल्लाह की इबादत करो और उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बन जाओ. यह तुम्हारे लिए बेहतर है यदि तुम जानो. 17 तुम अल्लाह को छोड़कर जिन्हें पूज रहे हो वे तो सिर्फ़ बुत (अर्थात मूर्तियाँ) हैं. और तुम झूठ गढ़ रहे हो. वास्तव में अल्लाह के सिवा तुम जिनकी उपासना करते हो, वे तुम्हें कोई जीविका देने का अधिकार नहीं रखते. तो तुम अल्लाह ही के यहाँ जीविका तलाश करो और उसी की उपासना करो और उसके प्रति कृतज्ञ बनो. (हमेशा याद रखो कि) तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे. 18 (ऐ सत्य के झुठलाने वालो!) यदि तुम सत्य को झुठलाते हो तो तुम से पहले भी बहुत सी

क़ौमे (सत्य को) झुठला चुकी हैं; और पैग़ंबर पर (सत्य का संदेश) स्पष्ट रूप से पहुँचा देने के सिवा और कोई दायित्व नहीं.

19 क्या लोगों ने नहीं देखा कि अल्लाह किस तरह पहली बार निर्माण करता है, फिर वह उसकी पुनरावृत्ति करता है? निश्चय ही यह पुनरावृत्ति अल्लाह के लिए आसान है. 20 इनसे कहो कि धरती पर चलो-फिरो और देखो कि अल्लाह ने किस तरह पहली बार सृजन किया है, फिर अल्लाह ही उसे दूसरी बार उठाएगा. निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है. 21 अल्लाह जिसे चाहेगा यातना देगा और जिस पर चाहेगा दया करेगा. तुम उसी की और लौटाए जाओगे. 22 तुम न धरती में विवश करने वाले हो और न आसमान में. और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई काम बनाने वाला है और न कोई सहायक. 23 जिन लोगों ने अल्लाह के संदेशों का और उससे होने वाली मुलाक़ात का इन्कार किया तो यही वे लोग हैं जो मेरी दयालुता से वंचित हुए और उनके लिए कष्टप्रद यातना है.

24 फिर इब्राहीम की क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा, उसे क़तल कर दो या उसे जला डालो. (फिर उन्होंने उसे आग में डाला) तो अल्लाह ने उसे आग से बचा लिया. निस्संदेह इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाए. 25 इब्राहीम ने उनसे कहा, तुमने अल्लाह को छोड़कर मूर्तियों की उपासना करने का जो मार्ग अपनाया है, वह इस सांसारिक जीवन में तुम्हारे लिए परस्पर मित्रत्व का माध्यम तो अवश्य बना हुआ है. लेकिन क़यामत के दिन तुम एक-दूसरे का इन्कार और एक-दूसरे पर लानत करोगे. और आग तुम्हारा ठिकाना होगी और कोई तुम्हारा सहायक न होगा. 26 तब लूत ने उसको माना (अर्थात हज़रत लूत अकेले आदमी थे जिन्होंने हज़रत इब्राहीम की विचारधारा को स्वीकार किया.) लूत ने कहा, मैं अपने रब की ओर लौटता हूँ. निस्संदेह वह प्रभुत्वशाली और बुद्धिमान है. 27 हमने इब्राहीम को इसहाक़ और

याक़ूब प्रदान किए. और उसकी संतान में पैग़ंबरी और किताब रख दी. और हमने उसे दुनिया में अच्छा बदला दिया और मृत्यु-पश्चात दुनिया में निश्चित रूप से वह भले लोगों में से होगा.

28 हमने लूत को (पैग़ंबर बनाकर) भेजा, जबकि उसने अपनी क़ौम के लोगों से कहा, तुम वह अश्लील काम करते हो जो तुमसे पहले दुनिया वालों में से किसी ने नहीं किया. 29 क्या तुम (अपनी वासना-तृप्ति के लिए) पुरुषों के पास जाते हो! और राहज़नी करते हो (अर्थात राहगीरों को लूटते हो) और अपनी बैठकों में बुरे काम करते हो? फिर उसकी क़ौम के लोगों का उत्तर इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा, यदि तुम सच्चे हो तो हमारे ऊपर अल्लाह की यातना लाओ. 30 तब लूत ने (अल्लाह से) दुआ की, ऐ मेरे रब! इन उपद्रवी लोगों के मुक़ाबले में मेरी सहायता कर.

31 और जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) इब्राहीम के पास (सुपुत्र इसहाक़ फिर प्रपौत्र याक़ूब के जन्म की) शुभ-सूचना लेकर पहुँचे. फिर उन्होंने कहा, हम उस नगर के लोगों का नाश करने वाले हैं. निस्संदेह उसके लोग अत्यंत अत्याचारी हैं. 32 (इस पर) इब्राहीम ने कहा, उसमें तो लूत भी मौजूद हैं. उन्होंने कहा, हम भली-भाँति जानते हैं कि वहाँ कौन-कौन हैं. हम लूत को और उसके घर वालों को बचा लेंगे, सिवाय उसकी पत्नी के. वह पीछे रह जाने वालों में से होगी. 33 फिर जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) लूत के पास पहुँचे, तो वह उनके आने के कारण परेशान हुआ और दिल तंग हुआ. तो उन (आए हुए फ़रिश्तों) ने (अपना परिचय करा कर) कहा, न डरो और न दुःखी हो, हम तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को बचा लेंगे, लेकिन तुम्हारी पत्नी कि वह पीछे रह जान वालों में से होगी. 34 हम इस बस्ती के लोगों पर आसमान से यातना उतारने वाले हैं, क्योंकि ये लोग विद्रोहपूर्वक अवज्ञा करने वाले लोग हैं. 35 और हमने उस बस्ती में कुछ स्पष्ट निशान बाक़ी रहने दिए, उन लोगों की शिक्षा के लिए जो बुद्धि रखते हैं.

36 और मदियन की ओर हमने उनके भाई शुऐब को (अपना पैग़ंबर बनाकर) भेजा. उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करो और अंतिम दिन के संबंध से उम्मीदवार रहो और धरती में फ़साद फैलाने वाले न बनो. 37 तो उन्होंने उसको झुठला दिया. (परिणाम-स्वरूप) एक भूकंप ने उन्हें आ लिया और वे अपने घरों में औंधे मुँह पड़े रह गए.

38 (इसी तरह) हमने आद और समूद (इन जनसमूहों) को भी (नष्ट किया). उनके (उजड़े हुए) घरों से तुम पर वह स्पष्ट हो चुका है. उनके (बुरे) कर्मों को शैतान ने उनके लिए आकर्षक बना दिया तथा उन्हें सन्मार्ग से रोक दिया था, यद्यपि वे सूझ- बूझ रखने वाले लोग थे.

39 और क़ारून, फ़िरऔन और हामान को हमने नष्ट किया. मूसा उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आया, लेकिन उन्होंने धरती में घमंड किया, यद्यपि वे हमसे भाग जाने वाले न थे. 40 अंततः हमने प्रत्येक को उसके अपने गुनाह के कारण पकड़ लिया. फिर उनमें से किसी पर हमने पथराव करने वाली हवा भेजी. और उनमें से कुछ को प्रचंड स्फोट ने आ पकड़ा. उनमें से कुछ को हमने धरती में धँसा दिया. और उनमें से कुछ को हमने डुबो दिया. अल्लाह उन पर ज़ुल्म करने वाला न था, मगर वे ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे थे.

41 जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर दूसरे कार्यसाधक बना लिए हैं. उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है, जो एक घर बनाती है. निस्संदेह, सब घरों से ज़्यादा कमज़ोर घर मकड़ी का घर ही होता है. काश, ये लोग जानते! 42 निस्संदेह अल्लाह उन चीज़ों को ख़ूब जानता है जिन्हें वे अल्लाह को छोड़कर पुकारते हैं. वह प्रभुत्वशाली तथा बुद्धिमान है. 43 यह मिसालें हम लोगों को (समझाने के लिए) देते हैं, लेकिन उन्हें वही लोग समझते हैं जो ज्ञान रखने वाले हैं. 44 अल्लाह ने आसमान और धरती का निर्माण सत्य के साथ किया है. निस्संदेह इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए.

पारा – 21 45 (पैग़ंबर!) इस किताब को पढ़ो जो तुम पर उतारी गयी है. और नमाज़ क़ायम करो. निस्संदेह नमाज़ अश्लीलता तथा बुरे कामों से रोकती है. और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है. अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो.

46 तुम पूर्ववर्ती किताब वालों से बहस न करो, मगर अच्छे ढंग से, लेकिन उनमें जो लोग अत्याचारी हैं (उनके साथ उनके अनुरूप बर्ताव किया जा सकता है). और उनसे कहो, हम ईमान लाए उस चीज़ पर जो हमारी ओर भेजी गयी है और उस पर जो तुम्हारी ओर भेजी गयी है. हमारा उपास्य और तुम्हारा उपास्य एक ही है. और हम उसी का आज्ञापालन करने वाले हैं.

47 तो (पैग़ंबर!) इस प्रकार हमने तुम्हारी ओर यह किताब उतारी है, तो वे लोग जिन्हें हमने पहले किताब दी थी वे इस पर ईमान लाते हैं और उनमें ऐसे भी हैं जो ईमान ला रहे हैं (अर्थात मक्कावासियों में भी). हमारे संदेशों का इन्कार केवल वे लोग करते हैं जो सत्य का इन्कार करने पर आग्रही हैं. 48 (ऐ मुहम्मद!) इससे पहले न तुम कोई किताब पढ़ते थे और न उसको अपने हाथ से लिखते थे. यदि ऐसा होता तो असत्यवादी लोग संदेह में पड़ते. 49 बल्कि ये सुस्पष्ट संदेश हैं, उन लोगों के दिलों में, जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया है. हमारे संदेशों को नहीं नकारते, मगर वे लोग जो अत्याचारी हैं.

50 ये लोग कहते हैं कि इस आदमी पर उसके रब की और से (चमत्कारिक) निशानियाँ क्यों नहीं उतारी गयी? उनसे कह दो, निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं और मैं तो बस स्पष्ट रूप से सचेत करने वाला हूँ. 51 क्या उनके लिए यह पर्याप्त नहीं है कि हमने तुम पर किताब उतारी है जो उन्हें पढ़कर सुनायी जाती है. निस्संदेह इसमें दयालुता और उपदेश है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं. 52 (पैग़ंबर!) उनसे कह दो, अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए पर्याप्त है. वह जानता है जो कुछ आसमानों तथा धरती में है. जो लोग असत्य को मानते हैं और अल्लाह का इन्कार करते हैं, तो वही घाटे में रहने वाले हैं. 53 (पैग़ंबर!) ये लोग तुमसे यातना जल्दी लाने की माँग कर रहे हैं. यदि इसका

एक नियत समय न होता, तो उन पर यातना आ चुकी होती. और निश्चय ही वह उन पर अचानक आएगी और उन्हें कोई ख़बर भी न होगी. 54 ये तुमसे यातना जल्दी लाने की माँग करते हैं, हालाँकि जहन्नम सत्य नकारने वालों को अपने घेरे में लिए हुए है. 55 जिस दिन यातना उन्हें ऊपर से भी ढाँक लेगी और पैरों के नीचे से भी. और (ख़ुदा) कहेगा, अब चखो मज़ा उन करतूतों का जो तुम करते थे.

56 ऐ मेरे बंदों जो ईमान लाए हो! निस्संदेह मेरी धरती विशाल है. तो तुम मेरी ही इबादत करो. 57 हर जीवधारी को मृत्यु का स्वाद चखना है. फिर तुम सब हमारी ही ओर लौटाए जाओगे.

58 फिर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने भले कर्म किए उन्हें हम जन्नत के ऊँचे महलों में स्थान देंगे, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे वहाँ हमेशा-हमेशा के लिए रहेंगे. क्या ही अच्छा बदला है कर्म करने वालों का, 59 वे जिन्होंने धैर्य से काम लिया और वे जो अपने रब पर भरोसा करते हैं. 60 (धरती पर) कितने ही जीवधारी हैं जो अपनी जीविका (अपने साथ) उठाए नहीं फिरते. अल्लाह उन्हें जीविका देता है और तुम्हें भी. वह सुनने वाला, जानने वाला है.

61 और यदि तुम उनसे पूछो कि किसने रचना की आसमानों और धरती की और किसने वशीभूत कर रखा है चाँद व सुरज को, तो वे अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने. फिर ये किधर धोका खा रहे हैं? 62 अल्लाह ही अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है जीविका बढ़ा देता है और जिसके लिए चाहता है कम कर देता है. निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है. 63 यदि तुम उनसे पूछो कि किसने आसमान से पानी बरसाया और उसके द्वारा धरती को उसके मुर्दा हो जाने के पश्चात जीवित किया? तो वे अवश्य कहेंगे, (यह सब) अल्लाह ने किया. कहो, सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, लेकिन अधिकतर लोग अपनी बुद्धि का उपयोग नहीं करते. 64 यह दुनिया की ज़िंदगी कुछ नहीं है, मगर

खेल और मन का बहलावा. मृत्यु-पश्चात दुनिया का घर ही असल जीवन का स्थान है, काश कि लोग (इस सत्य को) जानते!

65 जब ये लोग नाव पर सवार होकर (सफ़र करते हैं और सफ़र के दरमियान कोई आपदा आती है तो) अपनी विशुद्ध आस्था के साथ अल्लाह को पुकारने लगते हैं. फिर जब वह उन्हें बचाकर ख़ुश्की पर ले आता है तो यकायक ये अल्लाह के साझी ठहराने लगते हैं. 66 ताकि हमने उन्हें जो कुछ दिया है उसके प्रति कृतघ्नता दिखाएं, वे (सांसारिक जीवन के चार दिन) लाभ उठालें, वे बहुत जल्द (अपनी नाशुक्री का अंजाम) जान लेंगे.

67 क्या ये (मक्कावासी) देखते नहीं हैं कि हमने एक शांतिमय हरम बनाया है, उनके आस-पास (हर ओर) से (वहाँ) लोग खींचे चले आते हैं. तो क्या वे असत्य को मानते हैं और अल्लाह की कृपा के प्रति कृतघ्न बनते हैं? 68 (निस्संदेह!) उस आदमी से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधता है या सत्य को झुठलाता है, जबकि सत्य (का संदेश) उसके पास आ चुका है. क्या सत्य का इन्कार करने वालों का ठिकाना जहन्नम नहीं होगा? 69 जो लोग हमारे लिए प्रयत्नों की पराकाष्ठा करेंगे हम उन्हें अपने मार्ग दिखाएंगे (अर्थात हमारी प्रसन्नता के कार्य वे जान लेंगे) और निस्संदेह अल्लाह भले काम करने वालों के साथ है.

सूरह–30. अर-रूम

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अलिफ० लाम० मीम०. 2 रूमी पराजित हुए 3 निकटवर्ती श्रेत्र में और अपनी पराजय के पश्चात शीघ्र ही वे विजयी होंगे, 4 कुछ वर्षों में. अल्लाह ही का अधिकार है पहले भी और बाद में भी. (जब रूमी विजयी होंगे) तो उस दिन ईमान वाले प्रसन्न होंगे. 5 अल्लाह की सहायता से. वह जिसकी चाहता है सहायता करता है. वह प्रभुत्वशाली तथा दयावान है. 6 (यह) अल्लाह का वादा है और अल्लाह कदापि अपने वादे के विरुद्ध नहीं करता, लेकिन अधिकतर लोग नहीं जानते. 7 (लोगों का यह हाल है कि) वे दुनिया की ज़िंदगी का बस दिखता हुआ पहलू जानते हैं और वे मृत्यु-पश्चात दुनिया से ग़ाफ़िल हैं.

8 क्या इन्होंने अपने आप में सोच-विचार नहीं किया? अल्लाह ने आसमानों तथा धरती को और जो कुछ उनके बीच है सत्य पर तथा एक नियत समय के लिए पैदा किया है. लेकिन लोगों में ऐसे बहुत से हैं जो अपने रब की मुलाक़ात का इन्कार करते हैं. 9 क्या वह धरती पर चले फिरे नहीं कि वह देख पाते कि कैसा अंजाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं. वे इनसे अधिक शक्तिशाली थे और उन्होंने ज़मीन को जोता था और उसको इनसे अधिक आबाद किया था जितना इन्होंने नहीं किया. उनके पास उनके पैग़ंबर स्पष्ट निशानियाँ लेकर आए थे. अल्लाह उन पर अत्याचार करने वाला न था, लेकिन वे स्वयं ही अपने आप पर अत्याचार कर रहे थे. 10 फिर जिन लोगों ने बुरे काम किए थे उनका अंजाम बुरा हुआ, इस कारण से कि उन्होंने अल्लाह के संदेशों को झुठलाया था. और वे उनका उपहास करते थे.

11 अल्लाह ही पहली बार निर्माण करता है, फिर वही उसे दोहराएगा, फिर तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे.

12 और जिस दिन क़यामत घटित की जाएगी उस दिन अपराधी लोग हक्का-बक्का रह जाएंगे. 13 उनके साझीदारों में से कोई उनका सिफारिश करने वाला न होगा. और वे अपने (गढ़ें हुए) साझीदारों का इन्कार करने वाले हो जाएंगे. 14 और जिस दिन क़यामत घटित होगी उस दिन सभी लोग अलग-अलग (समूह) बन जाएंगे. 15 (जब क़यामत घटित होगी तब परीक्षा की दुनिया में) जो लोग ईमान लाए थे और उन्होंने भले कर्म किए थे, वे एक बाग़ में प्रसन्नतापूर्वक रखे जाएंगे. 16 और जिन लोगों ने हमारे संदेशों को झुठलाया था और मृत्यु-पश्चात दुनिया में (हमसे होने वाली) मुलाक़ात को झुठलाया था, वे यातना (की जगह) में पहुँचा दिए जाएंगे. 17 तो (ऐ ईमान रखने वालो!) अल्लाह का महिमागान करो, जबकि तुम शाम करते हो और सुबह करते हो. 18 आसमानों और धरती में उसी के लिए प्रशंसा है और (उसका महिमागान करो) तीसरे पहर और जब तुम दोपहर करते हो.

19 वही जीवित को मृत से निकालता है और मृत को जीवित से और वह धरती को उसके मृत हो जाने के पश्चात जीवित करता है. इसी प्रकार तुम लोग भी निकाले जाओगे (अर्थात मृत्यु-पश्चात जीवित किए जाओगे). 20 उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हें मिट्टी से बनाया है, फिर यकायक तुम मनुष्य बनकर (धरती पर) फैलते चले जाते हो. 21 और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही सहजाति से जोड़े बनाये, ताकि तुम उनसे सुकून प्राप्त करो (अर्थात पति पत्नी को एक-दूसरे के लिए सुकून प्राप्ति का माध्यम बनाया). उसने तुम्हारे बीच प्रेम और करुणा रख दी. निस्संदेह इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो चिंतन करते हैं.

22 और उसकी निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन की रचना और तुम्हारी भाषाओं तथा रंगों की भिन्नता. निस्संदेह इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं ज्ञान वालों के लिए. 23 उसकी निशानियों में से है तुम्हारा रात और दिन में सोना तथा उसके अनुग्रह को

तलाश करना. निस्संदेह इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो (बोधपूर्वक) सुनते हैं. 24 और उसकी निशानियों में से यह है कि वह तुम्हें बिजली दिखाता है, भय तथा आशा के साथ (अर्थात उसमें भय भी है और बारिश की आशा भी). और वह आसमान से पानी बरसाता है और उसके माध्यम से धरती को जीवित करता है उसके मृत हो जाने के पश्चात. निस्संदेह इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं. 25 उसकी निशानियों में से यह है कि आसमान और धरती उसके आदेश से क़ायम हैं. फिर जब वह तुम्हें एक बार पुकारेगा, तो तुम यकायक धरती से निकल पड़ोगे. 26 आसमानों तथा धरती में जो भी है, उसी का है सब उसी के आज्ञाकारी हैं. 27 वही है जो पहली बार सृजन करता है, फिर वही पुनः सृजन करेगा. और यह उसके लिए अधिक आसान है. आसमानों और धरती में उसी का गुण सबसे श्रेष्ठ है. और वह प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है. 28 अल्लाह तुम्हारे लिए स्वयं तुम में से एक मिसाल देता है. तुम्हारे उन ग़ुलामों में से (जो तुम्हारे स्वामित्व में हैं) क्या कुछ ग़ुलाम ऐसे भी हैं जो तुम्हें हमारे द्वारा दिए हुए माल व दौलत में तुम्हारे साथ बराबर के साझी हों और क्या तुम उनका ऐसा डर रखते हो जैसा अपने लोगों का डर रखते हो? इस प्रकार हम हमारे संदेश स्पष्ट रूप से बयान करते हैं, उन लोगों के लिए जो बुद्धी से काम लेते हैं. 29 मगर अत्याचारियों ने बिना किसी प्रमाण के अपनी कल्पनाओं का अनुसरण कर रखा है. तो उसे कौन मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो (अर्थात जिसके लिए अल्लाह ने मार्गदर्शन का द्वार बंद कर दिया हो); और कोई उनका सहायक नहीं. 30 तो (ऐ पैग़ंबर!) तुम (और तुम्हारे साथी सब) हर ओर से कट कर अपना रुख उस धर्म की ओर रखो, उस प्रकृती पर जिस पर अल्लाह ने इंसानों को बनाया है. उसके बनाए हुए को बदलना नहीं. यह सीधा दीन (धर्म) है. लेकिन अधिकतर लोग नहीं जानते. 31 उसी की ओर एकाग्र रहो. और उसी से डरो और नमाज़ क़ायम करो और उन लोगों में से न बनो

जो अल्लाह का साझी ठहराते हैं. 32 (उन लोगों में से न होना) जिन्होंने अपनी आस्था को भिन्न-भिन्न कर लिया और समूहों में बँट गए. हर समूह के पास जो कुछ है वह उसी में मगन है.

33 और जब लोगों को कोई कष्ट पहुँचता है तो वे अपने रब को पुकारने लगते हैं, उसी की ओर एकाग्रचित्त होकर. फिर जब वह उन्हें अपनी दयालुता का स्वाद चखाता है तो उनमें से एक समूह अपने रब का साझीदार ठहराने लगता है. 34 कि जो कुछ हमने उन्हें प्रदान किया है उसके नकारने वाले बन जाएँ. तो (ऐ असत्यवादियों!) कुछ दिन लाभ उठा लो, बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा. 35 क्या हमने उन पर कोई प्रमाण उतारा है कि वह उन्हें अल्लाह के साथ साझी ठहराने को कह रहा है.

36 और जब हम लोगों को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं तो वे इस पर प्रसन्न हो जाते हैं. और यदि उनके कर्मों के कारण उन्हें कोई कष्ट पहुँचता है तो यकायक वे निराश हो जाते हैं. 37 क्या वे देखते नहीं कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है उसे अधिक जीविका प्रदान करता है और जिसके लिए चाहता है कम कर देता है. निस्संदेह इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं. 38 तो (ऐ ईमान वालो!) नातेदार को उसका हक़ दो और निर्धन तथा मुसाफ़िर को भी (उसका हक़ दो). यह उत्तम है उन लोगों के लिए जो अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हैं और वही लोग सफलता पाने वाले हैं. 39 और जो ब्याज तुम देते हो, ताकि लोगों के मालों में शामिल होकर वह बढ़ जाए, लेकिन अल्लाह के पास वह नहीं बढ़ता. जबकि जो ज़कात तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने हेतु देते हो तो यही वे लोग हैं जो अल्लाह के पास अपनी पूँजी को बढ़ाते हैं.

40 अल्लाह ही है जिसने तुम्हारा सृजन किया है. फिर उसी ने तुम्हारी जीविका की व्यवस्था की. फिर वही तुम्हें मृत्यु देता है. फिर वही तुम्हें (मृत्यु-पश्चात) जीवित करेगा. क्या तुम्हारे साझीदारों में से कोई ऐसा है जो इनमें से कोई काम करता हो. पाक है

वह; और उच्च है वह उस साझी ठहराने के उस कृत्य से जो ये लोग करते हैं. 41 थल और जल में बिगाड़ फैल गया लोगों के अपने हाथों की कमाई के कारण, ताकि अल्लाह उन्हें उनके कुछ कामों का मज़ा चखाए, शायद कि वे बाज़ आ जाएँ. 42 (पैग़ंबर उनसे) कहो, धरती में चलो फिरो, फिर देखो कि उन लोगों का अंत क्या हुआ जो इससे पहले गुज़रे हैं.उनमें से अधिकतर लोग ख़ुदा के साझी गढ़ने वाले लोग थे (अर्थात बहुदेववादी).

43 तो (ऐ पैग़ंबर!) अपना रुख सत्य-धर्म की ओर जमाए रखो (अर्थात सत्य-धर्म पर दृढ़ता के साथ जम जाओ), इससे पहले कि अल्लाह की ओर से ऐसा दिन आए जिसके लिए वापसी नहीं है. उस दिन लोग जुदा-जुदा हो जाएंगे. 44 जिसने सत्य का इन्कार किया तो उसके इन्कार का वबाल उसी पर पड़ेगा और जिसने अच्छे कर्म किए तो ऐसे लोग अपने ही भले का सामान कर रहे हैं. 45 ताकि अल्लाह ईमान लाने वालों को और अच्छा कर्म करने वालों को अपने अनुग्रह से बदला प्रदान करे. निस्संदेह अल्लाह सत्य का इन्कार करने वालों को पसंद नहीं करता.

46 और उसकी निशानियों में से यह है कि वह हवाएँ भेजता है शुभ-सूचना देने के लिए, ताकि वह तुम्हें अपनी दयालुता का स्वाद चखाए. और यह कि नौकाएँ उसके हुक्म से चलें, ताकि तुम उसकी कृपा तलाश करो, ताकि तुम उसके प्रति कृतज्ञ बनो. 47 (ऐ मुहम्मद!) हम तुमसे पहले पैग़ंबरों को उनकी क़ौमों की ओर भेजा. तो वे उनके पास स्पष्ट निशानियाँ लेकर आए. फिर जिन्होंने अपराध किया उनसे हमने बदला लिया. और ईमान वालों की सहायता करना हमारा दायित्व था.

48 वह अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है. तो वह बादल को उठाती हैं. फिर अल्लाह उन बादलों को आसमान में फैला देता है, जिस प्रकार चाहता है. फिर वह उन्हें परतों का रूप दे देता है. फिर तुम देखते हो कि बारिश उसमें से निकली चली आती है.

और यह बारिश वह अपने बंदों में से जिन पर चाहता है बरसाता है, तो यकायक वे प्रसन्न हो जाते हैं. 49 हालाँकि उसके बरसने से पहले वे निराश हो रहे थे.

50 तो देखो अल्लाह की दयालुता के निशान, वह किस प्रकार धरती को उसके मृत हो जाने के पश्चात जीवन प्रदान करता है. निश्चय ही वह मुर्दों को जीवित करने वाला है उसे हर चीज़ पर प्रभुत्व प्राप्त है.

51 यदि हम एक ऐसी हवा भेज दें, जिसके कारण वे खेती को पीली पड़ी हुए देखें, तो उसके बाद वे इन्कार करने लगेंगे. 52 (पैग़ंबर!) तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते, न उन बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो जो पीठ फेरे चले जा रहे हों. 53 और न तुम अंधों को उनकी पथभ्रष्टता से निकालकर मार्ग पर ला सकते हो. तुम मात्र उसको सुना सकते हो जो हमारे संदेशों पर ईमान लाने वाला हो. ऐसे ही लोग आज्ञाकारी हैं. 54 वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हें दुर्बल (अवस्था में) सृजित किया, फिर उस दुर्बलता के बाद तुम्हें शक्ति प्रदान की. फिर शक्ति के पश्चात दुर्बलता और बुढ़ापा दिया. वह जो कुछ चाहता है सृजित करता है और वह सब कुछ जानने वाला तथा सामर्थ्यवान है. 55 और जिस दिन क़यामत आएगी, अपराधी लोग क़सम खाकर कहेंगे कि वह (दुनिया में) एक घड़ी से अधिक नहीं रहे. इस प्रकार वे (दुनिया की ज़िंदगी के बारे में) धोका खाया करते थे. 56 जिन लोगों को ज्ञान तथा ईमान प्राप्त हुआ था, वे कहेंगे कि अल्लाह के लिखे के अनुसार तुम पुनरुत्थान के दिन तक पड़े रहे हो. तो यह वही पुनरुत्थान का दिन है, लेकिन तुम जानते न थे. 57 तो उस दिन अत्याचारियों को उनका कोई बहाना काम न आएगा और न उनसे क्षमा-याचना करने के लिए कहा जाएगा. 58 हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर प्रकार का उदाहरण बयान किया है. तुम चाहे कोई निशानी ले आओ जो लोग सत्य नकारने पर आग्रही हैं, वे यही कहेंगे, तुम असत्य पर हो. 59 इस प्रकार अल्लाह उन लोगों के दिलों पर मुहर लगा देता है (अर्थात उनके दिलों में सत्य की एन्ट्रि असंभव हो

जाती है) जो ज्ञान नहीं रखते. 60 तो (पैग़ंबर!) तुम सब्र करो, निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है. तुम्हें असहिष्णू न बनाएँ वे लोग जो विश्वास नहीं रखते.

सूरह–31. लुक़मान

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अलिफ़० लाम० मीम०. 2 ये विवेकपूर्ण किताब के संदेश हैं. 3 मार्गदर्शन और दयालुता उन लोगों के लिए जो (भले कर्म) उत्तम प्रकार से करते हैं. 4 जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और मृत्यु-पश्चात जीवन पर विश्वास करते हैं. 5 ये लोग अपने रब के सीधे रास्ते पर हैं और यही लोग सफलता पाने वाले हैं.

6 लोगों में कोई ऐसा भी है जो पथभ्रष्ट करने वाली बातों का ख़रीदार बनता है, ताकि लोगों को अल्लाह के रास्ते से विचलित कर दे, बिना किसी ज्ञान के. और (अल्लाह की ओर से आए हुए संदेशों का) मज़ाक उड़ाए. ऐसे लोगों के लिए अपमानजनक यातना है. 7 और जब हमारे संदेश उसे सुनाए जाते हैं तो वह घमंड करता हुआ मुँह मोड़ लेता है, जैसे उसने सुना ही नहीं, मानो उसके कानों में बहरापन है. तो उसे एक कष्टप्रद यातना की शुभ-सूचना दे दो. 8 निस्संदेह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए तो उनके लिए नेमत भरी जन्नतें हैं. 9 उनमें वे सदैव रहेंगे. यह अल्लाह का पक्का वादा है. और वह प्रभुत्वशाली तथा बुद्धिमान है.

10 अल्लाह ने आसमानों की रचना की, ऐसे स्तंभों के बिना जो तुम्हें दिखायी दें. उसने धरती में पहाड़ रख दिए, ताकि वह तुम्हें लेकर ढुलक न जाए. उसने धरती में हर प्रकार के जीवधारी फैला दिए. और हमने आसमान से पानी उतारा और धरती में हर प्रकार की अच्छी चीज़ें उगायीं. 11 यह तो है अल्लाह की रचना! अब ज़रा मुझे दिखाओ कि उसके सिवा दूसरों ने (अर्थात तुम्हारे द्वारा गढ़े हुए उपास्यों ने) क्या सृजन किया है. बल्कि (वास्तविकता यह है कि) अत्याचारी लोग स्पष्ट पथभ्रष्टता में पड़े हुए हैं.

12 और हमने लुक़मान को विवेक प्रदान किया था कि (अपने रब) अल्लाह के प्रति कृतज्ञ बनो. जो कोई कृतज्ञ बनेगा तो अपने ही भले के लिए कृतज्ञ बनेगा और जो

अकृतज्ञता का परिचय देगा, तो अल्लाह निस्पृह है, प्रशंसनीय है. 13 और याद करो जब लुक़मान ने अपने बेटे को उपदेश देते हुए कहा, ऐ मेरे बेटे! अल्लाह के साथ साझीदार न ठहराना. निस्संदेह! अल्लाह के साथ साझी ठहराने का कृत्य सबसे बड़ा अत्याचारी कृत्य है.

14 और हमने मनुष्य को उसके माँ-बाप के संबंध से ताकीद की है. उसकी माँ ने कष्ट पर कष्ट सहकर उसे पेट में रखा और दो वर्ष में उसका दूध छुड़ाना हुआ. (तो हमने उसे ताकीद की) कि तू मेरे प्रति कृतज्ञ हो और अपने माँ-बाप के प्रति भी. मेरी ही ओर (तुम सबको) लौट कर आना है. 15 और यदि वे तुझ पर दबाव डालें कि तू मेरे साथ किसी को साझी ठहराए, जिसका तुझे ज्ञान नहीं. तो उनकी बात हरगिज़ न मानना. (फिर भी) दुनिया में उनके साथ अच्छा व्यवहार करते रहना. लेकिन अनुसरण उस व्यक्ति के मार्ग का करना जो मेरी ओर रुजू हो. फिर तुम सबको मेरे पास आना है. फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो कुछ तुम करते रहे.

16 (और लुक़मान ने कहा था कि) बेटा! कोई कर्म यदि राई के दाने के बराबर भी हो, वह किसी चट्टान में हो या आसमान या ज़मीन में कहीं छिपा हुआ हो अल्लाह उसे निकाल लाएगा. निस्संदेह अल्लाह असीम (विवेक) दृष्टि रखने वाला तथा ख़बर रखने वाला है. 17 (लुक़मान ने अपने बेटे से आगे कहा,) बेटा! नमाज़ क़ायम कर, अच्छे काम का उपदेश कर और (दूसरों को) बुराई से रोक और जो मुसीबत तुझ पर आए उस पर धैर्य से काम ले, निश्चय ही ये बड़े साहस के काम हैं. 18 और लोगों से अपना रुख न फेर और धरती पर अकड़ कर न चल. निश्चय ही अल्लाह किसी अकड़ने वाले तथा डींगें मारने वाले को पसंद नहीं करता. 19 और अपनी चाल में संतुलन बनाए रख और अपनी आवाज़ को ज़रा धीमी रख. निस्संदेह सबसे बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है.

20 क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने तुम्हारी सेवा में लगा दिया है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ धरती में है. उसने तुम पर अपनी खुली और छिपी नेमतें पूरी कर दी. और लोगों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह के संबंध से झगड़ते हैं, बिना किसी ज्ञान के, बिना किसी मार्गदर्शन के, बिना किसी प्रकाशमय किताब के. 21 और जब उनसे कहा जाता है तुम उस चीज़ का अनुसरण करो जो अल्लाह ने अवतरित की है. तो वे कहते हैं, बल्कि हम तो उस चीज़ का अनुसरण करेंगे जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है. क्या यदि शैतान उन्हें (उस अनुसरण के माध्यम से) आग की यातना की ओर बुला रहा हो तब भी (वे उसी असत्य का अनुसरण करेंगे)!

22 जो व्यक्ति अपना चेहरा अल्लाह की ओर झुका दे और वह अच्छा कर्म करने वाला भी हो तो उसने मज़बूत रस्सी पकड़ ली. और सारे मामलों का अंतिम परिणाम अल्लाह ही की ओर है. 23 अब जो कोई सत्य नकारने पर आग्रही रहे तो (पैग़ंबर!) उसका इन्कार तुम्हें दुःखी न करे. हमारी ही ओर है उनकी वापसी. तो हम उन्हें बता देंगे कि वे क्या कुछ किया करते थे. निस्संदेह अल्लाह दिलों की बातों से अवगत है. 24 उन्हें हम थोड़ी अवधि तक लाभ देंगे, फिर उन्हें एक कठोर यातना की ओर खींच लाएंगे.

25 और यदि तुम इनसे पूछो कि आसमानों तथा धरती को किसने बनाया, तो वे अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने. कहो कि सारी प्रशंसा का अधिकारी अल्लाह है, लेकिन उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते. 26 अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और धरती में. निस्संदेह अल्लाह निस्पृह है और प्रशंसनीय है. 27 ज़मीन में जितने पेड़ हैं, यदि वे सब लेखनी (pen) बन जाएँ और समुद्र, सात अन्य समुद्रों के साथ स्याही बन जाए, तब भी अल्लाह की बातें समाप्त नहीं होंगी (अर्थात अल्लाह के गुणों और करिश्मों का वर्णन लिखने के लिए सारे समुंदरों की स्याही और सारी लेखनियाँ भी असमर्थ होंगी). निस्संदेह अल्लाह सर्वशक्तिमान तथा विवेकवान है.

28 (लोगों!) तुम सब का सृजन करना और तुम सबको (मृत्यु-पश्चात) जीवित करना (अल्लाह के लिए) बस ऐसा ही है जैसे एक व्यक्ति का (सृजन करना और उसे मृत्यु-पश्चात जीवित करना). निस्संदेह अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है. 29 क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल कराता है और दिन को रात में दाख़िल कराता है? उसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है. हर एक, एक नियत समय के अनुसार (अपनी राह पर) चले जा रहा है और यह कि जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है. 30 यह इस कारण से कि अल्लाह ही सत्य है. उसे छोड़कर जिन चीज़ों को ये लोग पुकारते हैं, वे सब असत्य हैं. निस्संदेह अल्लाह ही उच्च तथा महान है.

31 क्या तुम देखते नहीं हो कि नाव समुद्र में अल्लाह की कृपा से चलती है? यह सब इसलिए है कि वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाए. निस्संदेह इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं, हर उस व्यक्ति के लिए जो धैर्य से काम लेने वाला तथा कृतज्ञ हो. 32 और जब (समुद में इन लोगों पर बादल की तरह लहर छा जाती है तो वे अल्लाह को पुकारने लगते हैं, आस्था को उसी के लिए शुद्ध रखते हुए. फिर जब वह उन्हें बचाकर थल की ओर ले आता है तो उनमें से कुछ (आस्था के मामले में) संतुलित मार्ग पर क़ायम रहते हैं. हमारी निशानियों को वही व्यक्ति झुठलाता है जो विश्वासघाती और कृतघ्न हो. 33 ऐ लोगो! अपने रब के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बन जाओ और उस (आने वाले) दिन के प्रति भी सचेत रहो, जब न कोई बाप अपने बेटे की ओर से बदला देगा और न कोई बेटा ही अपने बाप की ओर से कुछ बदला देने वाला होगा. निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है. तो यह दुनिया की ज़िंदगी तुम्हें धोखे में न डाले. और न धोखेबाज़ (शैतान) तुम्हें अल्लाह के मामले में धोका देने पाए.

34 निस्संदेह अल्लाह ही को क़यामत का ज्ञान है. वही बारिश बरसाता है. और वह जानता है जो कुछ गर्भ में है. कोई व्यक्ति नहीं जानता कि वह कल क्या कमाई करने

वाला है. और कोई व्यक्ति नहीं जानता कि किस भू-भाग में उसे मौत आएगी. निस्संदेह, अल्लाह जानने वाला और ख़बर रखने वाला है.

सूरह–32. अस्–सजदा

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अलिफ़० लाम० मीम०. 2 निस्संदेह यह किताब सारे संसार के रब की ओर से उतारी गयी किताब है. 3 क्या वे लोग कहते हैं कि इस व्यक्ति ने इसे स्वयं गढ़ लिया है? नहीं! बल्कि यह सत्य है तुम्हारे रब की ओर से, ताकि तुम उन लोगों को सचेत कर दो. जिनके पास तुमसे पहले कोई सचेत करने वाला नहीं आया, ताकि वे सन्मार्ग पर आ जाएँ.

4 वह अल्लाह ही है जिसने रचना की आसमानों की और धरती की और जो कुछ उनके बीच में है, छः दिनों में (अर्थात छः कालखंडों में), फिर वह (सृष्टि-संचालन के) सिंहासन पर आसीन हुआ. उसके सिवा तुम्हारा न कोई सहायक है और न कोई सिफ़ारिश करने वाला तो फिर क्या तुम ध्यान नहीं दोगे? 5 वही आसमान से धरती तक सभी मामलों का नियंत्रण करता है. फिर सारे मामलों का ब्यौरा उसके पास आ जाता है, एक ऐसे दिन में जिसकी माप तुम्हारी गणना के अनुसार एक हज़ार वर्ष है. 6 वही है छिपे और खुले का जानने वाला, प्रभुत्वशाली और दयावान. 7 उसने जो चीज़ भी बनाई, ख़ूब बनाई उसने इंसान के सृजन का आरंभ गारे से किया. 8 फिर उसकी नसल एक निचुड़े हुए तुच्छ पानी से चलायी. 9 फिर उसको आकार दिया और उसमें अपनी रूह फूँक दी. और उसने तुम्हें सुनने, देखने तथा समझने की योग्यता प्रदान की, तुम लोग कम ही कृतज्ञ बनते हो.

10 वे कहते है, क्या जब हम (मृत्यु-पश्चात) मिट्टी में घुल-मिल (कर समाप्त हो) चुके होंगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा किए जाएंगे? बल्कि (वास्तविकता तो यह है कि) ये अपने रब की मुलाक़ात का इन्कार करते हैं.

11 (पैग़ंबर!) उनसे कहो, मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर नियुक्त किया गया है, तुम्हारे प्राण निकाल लेगा, फिर तुम अपने रब की ओर लौटाए जाओगे. 12 काश! तुम देखो वह समय जब ये अपराधी अपने रब के सामने सर झुकाए खड़े होंगे. (उस समय ये कह रहे होंगे,) ऐ हमारे रब! हमने (सारा सत्य) देख लिया और हमने सुन लिया, तो हमें वापस भेज दे कि हम अच्छे कर्म करें. हमें अब विश्वास हो गया है.

13 यदि हम चाहते तो पहले ही हर व्यक्ति को सन्मार्ग का मार्गदर्शन प्रदान कर देते. लेकिन मेरी बात सिद्ध हो चुकी कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों से भर दूँगा. 14 (फिर कहा जाएगा कि) तो अब चखो मज़ा इस कारण कि तुमने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था. तो हमने भी तुम्हें भुला दिया है. (अब) चखो हमेशा रहने वाली यातना का मज़ा अपने कर्मों के कारण.

15 हमारे संदेशों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं जिन्हें इन संदेशों के द्वारा जब उपदेश किया जाता है तो वे सजदे में गिर पड़ते हैं और अपने रब की प्रशंसा के साथ उसका महिमागान करने लगते हैं. और वे घमंड नहीं करते. 16 उनकी पीठें बिस्तरों से अलग रहती हैं. वे अपने रब को भय और आशा के साथ पुकारते रहते हैं. और जो कुछ हमने उन्हें प्रदान किया है उसमें से खर्च करते हैं. 17 तो किसी को ख़बर नहीं कि इन (सत्कर्मी) लोगों के लिए उनके कर्मों के बदले में आँखों की क्या ठंडक छिपा कर रखी है.

18 तो क्या जो ईमान वाला है, वह उस व्यक्ति जैसा होगा जो अवज्ञाकारी है? दोनों समान नहीं हो सकते. 19 जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए जन्नत के विश्राम-स्थल हैं, अतिथि सत्कार के रूप में, उनके कर्मों के बदले में जो वे करते थे. 20 पर जिन लोगों ने अवज्ञा की नीति अपनायी तो उनका ठिकाना आग है, वे लोग जब जहन्नम से निकलना चाहेंगे तो फिर वे उसी में धकेल दिए जाएंगे. और उनसे

कहा जाएगा अब आग की यातना का मज़ा चखते रहो जिसको तुम झुठलाते थे. 21 हम उन्हें बड़ी यातना से पहले छोटी यातना चखाएंगे, संभवतः वे संभल जाएँ. 22 उस व्यक्ति से बड़ा अत्याचारी दूसरा कौन होगा जिसे उसके रब के संदेशों के माध्यम से उपदेश किया जाए और वह उनसे मुँह मोड़ ले. हम ऐसे अपराधियों से अवश्य बदला लेंगे.

23 और हमने मूसा को किताब दी थी. इसलिए उसी चीज़ के मिलने पर तुम्हें कोई संदेह नहीं होना चाहिए. हमने उस किताब को बनी इसराईल के लिए मार्गदर्शन बनाया था. 24 हमने उनमें नायक बनाए जो हमारे आदेश से लोगों का मार्गदर्शन करते थे, जबकि उन्होंने सब्र किया. वे हमारे संदेशों पर दृढ़ विश्वास करने वाले थे. 25 निस्संदेह तुम्हारा रब क़यामत के दिन उनके बीच उन मामलों का फ़ैसला कर देगा, जिनमें वे मतभेद करते रहे. 26 क्या उनके लिए यह चीज़ मार्गदर्शन वाली न बनी कि हमने उनसे पहले कितनी ही क़ौमों को नष्ट कर दिया? जिनकी बस्तियों में ये लोग आते-जाते हैं? निस्संदेह इसमें निशानियाँ हैं. क्या ये लोग सुनते नहीं?

27 क्या इन्होंने नहीं देखा कि हम पानी को चटियल धरती की ओर हाँक कर ले जाते हैं? फिर हम उससे फ़सल उगाते हैं, जिससे उनके चौपायों को भी चारा मिलता है और ये ख़ुद भी खाते हैं. तो क्या वे (इन शिक्षाप्रद घटनाओं का चिंतनपूर्वक) निरीक्षण नहीं करते? 28 वे कहते हैं कि ये फ़ैसला कब आएगा, यदि तुम सच्चे हो. 29 (पैग़ंबर!) उनसे कहो, फ़ैसले के दिन उनका ईमान (लाना) उनके कुछ काम न आएगा जिन्होंने सत्य को नकारा था. और न उन्हें कोई मुहलत मिलेगी.

30 अच्छा, इन्हें (इनके हाल पर) छोड़ दो और प्रतीक्षा करो, वे भी प्रतीक्षा कर रहे हैं.

सूरह–33. अल–अहज़ाब

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 पैग़ंबर! अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो. और सत्य का इन्कार करने वालों तथा कपटाचारियों का कहना न मानो. निस्संदेह अल्लाह जानने वाला तथा विवेक वाला है. 2 (पैग़ंबर!) उस चीज़ का अनुसरण करो जो तुम्हारे रब की ओर से तुम पर उतारी जा रही है. निस्संदेह, अल्लाह उसकी ख़बर रखता है जो तुम करते हो. 3 और अल्लाह पर भरोसा रखो, अल्लाह काम बनाने के लिए पर्याप्त है.

4 अल्लाह ने किसी व्यक्ति के सीने में दो दिल नहीं बनाए और न तुम्हारी उन पत्नियों को जिन्हें तुम 'माँ की पीठ की तरह' होने की बात कहते हो उन्हें तुम्हारी माँ बना दिया. और न उसने तुम्हारे मुँह बोले बेटों को तुम्हारा बेटा बना दिया. यह सब तुम्हारे मुँह की बातें हैं. और अल्लाह सत्य बात कहता है और वह सीधा मार्ग दिखाता है. 5 मुँह बोले बेटों को उनके बापों के नाम के साथ पुकारो. यह अल्लाह की दृष्टि में अधिक न्यायोचित बात है. यदि तुम उनके पिता को न जानते हो तो वे (मुँह-बोले बेटे) तुम्हारे धर्म-बंधू हैं और तुम्हारे साथी हैं. और (इस संबंध से) तुम से कोई भूल-चूक हो जाए तो उसका तुम पर कोई दोष नहीं. लेकिन उस बात पर (अवश्य ही पकड़ है) जो तुम दिल से संकल्प करके करोगे. अल्लाह माफ़ करने वाला और दया करने वाला है.

6 (ख़ुदा के) पैग़ंबर का हक़ ईमान वालों पर स्वयं उनके अपने प्राणों से बढ़कर है. और पैग़ंबर की पत्नियाँ उनकी माएँ हैं और अल्लाह की किताब के अनुसार दूसरे ईमान वालों और मुहाजिरों की अपेक्षा नातेदार आपस में एक-दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं. लेकिन यह कि तुम अपने साथियों के साथ कोई भलाई (करना चाहो तो) कर सकते हो. यह किताब में लिख दिया गया है.

7 (ऐ मुहम्मद!) याद करो जब हमने पैग़ंबरों से उनका वचन लिया और तुमसे भी और नूह और इब्राहीम और मूसा और मरियम के बेटे ईसा से भी. इन सबसे हमने दृढ़ वचन लिया. 8 ताकि सच्चे लोगों से (उनका रब) उनकी सच्चाई के बारे में सवाल करे. और सत्य के इन्कार पर आग्रही रहने वालों के लिए हमने कष्टदायी यातना तैयार कर रखी है.

9 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अपने ऊपर अल्लाह के उपकार को याद करो. जब तुम पर सेनाएँ चढ़ आयीं तो हमने उन पर एक सख़्त आँधी भेज दी और ऐसी (फ़रिश्तों की) सेनाएँ भेजी जो तुम्हें नज़र न आती थीं. अल्लाह वह सब कुछ देखता है जो तुम करते हो. 10 जब (दुश्मन की) सेना तुम पर चढ़ आयी, तुम्हारे ऊपर की ओर से और तुम्हारे नीचे की ओर से. तब (भय के मारे) आँखें पथरा गयीं, कलेजे मुँह को आ गए. और तुम लोग अल्लाह के संबंध से तरह-तरह के गुमान करने लगे. 11 उस समय ईमान लाने वाले आज़माए गए और बुरी तरह हिला दिए गए.

12 तब कपटाचारी और वे लोग जिनके दिलों में (संदेह का) रोग था, कहने लगे कि अल्लाह और उसके पैग़ंबर ने जो वादा हमसे किया था, वह फ़रेब के सिवा कुछ नहीं था. 13 तब उनमें से एक समूह ने कहा, ऐ यसरिब वालो! तुम्हारे लिए अब ठहरने का कोई मौक़ा नहीं, तो तुम लौट चलो. और उनमें से एक समूह पैग़ंबर से यह कहकर (वापस जाने की) अनुमति चाह रहा था कि हमारे घर असुरक्षित हैं, हालाँकि वे असुरक्षित न थे. वास्तव में वे (पैग़ंबर का साथ छोड़कर) भागना चाहते थे. 14 यदि शहर के चारों ओर से दुश्मन घुस आए होते और तब इन (कपटाचारियों) को (ईमान वालों के विरुद्ध) उपद्रव मचाने के लिए कहा जाता, तो वे ऐसा कर डालते, और उसके लिए बिल्कुल भी विलंब न करते. 15 उन्होंने इससे पहले अल्लाह को वचन दिया था कि ये पीठ न फेरेंगे. और अल्लाह से किए हुए वचन के बारे में पूछ तो होनी ही है. 16

(पैग़ंबर!) उनसे कहो, यदि तुम मृत्यु या क़तल से भागो, तो यह भागना तुम्हारे कुछ काम न आएगा. और उस स्थिती में तुम्हें मात्र थोड़े दिन लाभ उठाने का अवसर मिलेगा. 17 इनसे कहो, कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता है यदि वह तुम्हें नुक़सान पहुँचाना चाहे? (और कौन उसकी दयालुता को रोक सकता है) यदि वह तुम पर दया करना चाहे? ये लोग अपने लिए अल्लाह के मुक़ाबले में कोई समर्थक व सहायक नहीं पा सकते.

18 अल्लाह तुममें से उन लोगों को ख़ूब जानता है जो रुकावट डालने वाले हैं. और अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारे पास आ जाओ. वे लड़ाई के लिए आए तो कम ही आते हैं. 19 वे तुम्हारे साथ कृपणता से काम लेते हैं. और तुम देखते हो कि यदि ख़तरे का वक़्त आ जाए तो इस प्रकार आँखें फिरा-फिराकर तुम्हारी ओर देखते हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छा रही हो. लेकिन जब ख़तरा समाप्त हो जाता है तो यही लोग माल के लोभ में तुम पर तेज़ ज़बानें चलाने लगते हैं. ये लोग (वास्तव में) ईमान लाए ही नहीं. तो अल्लाह ने उनके कर्म नष्ट कर दिए. और यह अल्लाह के लिए बिल्कुल सरल है. 20 वे समझ रहे हैं कि (हमलावर) सेनाएँ अभी गयी नहीं हैं. और यदि वे फिर आ जाएँ तो ये लोग यही पसंद करेंगे कि किसी प्रकार रेगिस्तान में बद्दुओं के बीच जा बैठें और वहीं से तुम्हारे समाचार पूछते रहें. और यदि तुम्हारे साथ रहे भी होते तो लड़ाई में कम ही भाग लेते. 21 निस्संदेह! तुम्हारे लिए अल्लाह के पैग़ंबर में उत्तम आदर्श है. हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और मृत्यु-पश्चात लोक के दिन (सफलता) का उम्मीदवार हो और जो अल्लाह को अधिकता से याद करता हो.

22 जब ईमान वालों ने सेनाओं को देखा, तो वे बोले, यह तो वही चीज़ है जिसका अल्लाह और उसके पैग़ंबर ने हमसे वादा किया था. अल्लाह और उसके पैग़ंबर ने सच कहा था. और उस चीज़ ने उनके ईमान तथा समर्पण को अधिक बढ़ा दिया.

23 ईमान वालों में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अल्लाह से की हुयी प्रतिज्ञा को पूरा कर दिखाया. उनमें से कुछ ने तो अपना दायित्व पूरा कर दिया और उनमें से कोई प्रतीक्षा में हैं. और उन्होंने (अपनी बात में) तनिक भी परिवर्तन नहीं किया. 24 (यह सब कुछ इसलिए घटित हुआ,) ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का इनाम दे. और कपटाचारियों को चाहे तो सज़ा दे और चाहे तो उनके पश्चात्तापपूर्वक पलट आने को स्वीकार करे. निस्संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला तथा दया करने वाला है.

25 अल्लाह ने सत्य के (आक्रमणकारी) विरोधियों को उनके क्रोध सहित (इस दशा में) फेर दिया कि उनकी कुछ भी इच्छा पूरी नहीं हुयी (अर्थात बग़ैर कुछ पाए उन्हें खाली हाथ वापस जाना पडा). और ईमान वालों की ओर से लड़ने के लिए अल्लाह पर्याप्त हो गया. अल्लाह बड़ा शक्तिमान और जबरदस्त है. 26 अल्लाह उन पूर्ववर्ती किताब वालों को जिन्होंने आक्रमणकारियों का साथ दिया, उनके गढ़ियों से उन्हें उतार लाया और उनके दिलों में धाक बिठा दी कि अब तुम उनके एक समूह को क़तल करने लगे और एक समूह को क़ैद करने लगे. 27 उसने तुम्हें उनकी ज़मीन और उनके घरों और उनके मालों का वारिस बना दिया. और उस ज़मीन का भी जिस पर तुमने क़दम नहीं रखा था. और अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है.

28 पैग़ंबर! अपनी पत्नियों से कहो, यदि तुम सांसारिक जीवन और उसकी शोभा चाहती हो, तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे-दिलाकर भली रीति से विदा कर दूँ. 29 यदि तुम अल्लाह और उसके पैग़ंबर और मृत्यु-पश्चात दुनिया के (शाश्वत) घर को चाहती हो, तो (जान लो कि) अल्लाह ने तुममें से उत्तमकार औरतों के लिए बड़ा प्रतिफल तैयार कर रखा है. 30 ऐ पैग़ंबर की पत्नियों! तुममें से जो खुली बेहयाई का काम करेगी तो उसके लिए दोहरी सज़ा होगी. और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है.

पारा – 22 31 (ऐ पैग़ंबर की पत्नियों!) तुममें से जो अल्लाह और उसके पैग़ंबर का आज्ञापालन करेगी और भले काम करेगी, उसे हम दोहरा प्रतिफल देंगे. हमने उसके लिए सम्मानपूर्ण आजीविका तैयार कर रखी है. 32 ऐ पैग़ंबर की पत्नियों! तुम सामान्य औरतों की तरह नहीं हो. यदि तुम अल्लाह के प्रति सचेत रहने वाली हो तो तुम दबी ज़बान से बात न किया करो कि दिल की ख़राबी में ग्रस्त आदमी लालच में पड़ जाए, बल्कि साफ़-सीधी बात करो.

33 (ऐ पैग़ंबर की पत्नियों!) तुम अपने घर में (शांतिपूर्वक) ठहरी रहो और दिखावा करती न फिरो जैसे (इस्लाम-पूर्व) अज्ञान-काल में दिखावा किया जाता था. और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह तथा उसके पैग़ंबर का आज्ञापालन करो. अल्लाह तो यह चाहता है कि पैग़ंबर के घर वालों से गंदगी को दूर कर दे और तुम्हें पूर्णतः पाक-साफ़ कर दे. 34 (ऐ पैग़ंबर की पत्नियों!) तुम्हारे घरों में अल्लाह के संदेशों की तथा उन (संदेशों पर आधारित) विवेकपूर्ण बातों की जो शिक्षा दी जाती है उसको याद रखो. निस्संदेह अल्लाह असीम (विवेक) दृष्टि रखने वाला तथा ख़बर रखने वाला है.

35 (अल्लाह की इच्छा को) समर्पित पुरुष और (अल्लाह की इच्छा को) समर्पित स्त्रियाँ और ईमान वाले पुरुष और ईमान वाली स्त्रियाँ, आज्ञाकारी पुरुष और आज्ञाकारी स्त्रियाँ, सन्मार्ग पर चलने वाले पुरुष और सन्मार्ग पर चलने वाली स्त्रियाँ, धैर्य से काम लेने वाले पुरुष और धैर्य से काम लेने वाली स्त्रियाँ, अल्लाह के प्रति सचेत रहने वाले पुरुष और अल्लाह के प्रति सचेत रहने वाली स्त्रियाँ, दान-कार्य करने वाले पुरुष और दान-कार्य करने वाली स्त्रियाँ, रोज़ा रखने वाले पुरुष और रोज़ा रखने वाली स्त्रियाँ, ख़ुद के शील की रक्षा करने वाले पुरुष और रक्षा करने वाली स्त्रियाँ, अल्लाह को अधिकता से याद करने वाले पुरुष और याद करने वाली स्त्रियाँ — अल्लाह के पास इनके लिए क्षमा है तथा अल्लाह ने इनके लिए बड़ा प्रतिफल तैयार कर रखा है.

36 किसी ईमान लाए हुए पुरुष तथा ईमान लायी हुयी स्त्री के लिए गुंजाइश नहीं है कि जब अल्लाह और उसका पैग़ंबर किसी मामले का निर्णय कर दे, तो उनके लिए उनके मामले में स्वयं निर्णय करने का कोई अधिकार बाक़ी रहे. जो व्यक्ति अल्लाह और उसके पैग़ंबर की अवज्ञा करेगा तो वह स्पष्ट पथभ्रष्टता में लिप्त हो गया.

37 पैग़ंबर! (याद करो) जब तुम उस व्यक्ति से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने और तुमने उपकार किया था कि अपनी पत्नी को न छोड़ और अल्लाह से डर. तब तुम अपने दिल में वह बात छिपाए हुए थे जिसे अल्लाह खोलना चाहता था. तुम लोगों से डर रहे थे, हालाँकि अल्लाह इसका अधिक हक़दार है कि तुम उससे डरो. फिर जब ज़ैद को उससे कोई सरोकार नहीं रहा (अर्थात ज़ैद ने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दिया) तो हमने उसका विवाह तुमसे कर दिया, ताकि ईमान वालों पर अपने मुँह बोले बेटों की (घटस्फोटित) पत्नियों के बारे में कोई संकोच न रहे. जबकि उनका उन स्त्रियों से कोई सरोकार न रह जाए (अर्थात कोई 'मुँह-बोले' बेटे की घटस्फोटित पत्नी को अपने विवाह-बंधन में ला सकता है). अल्लाह का फ़ैसला तो पूरा होकर ही रहता है.

38 पैग़ंबर पर किसी ऐसे काम में रुकावट नहीं, जो अल्लाह ने उसके लिए निर्धारित कर दिया हो. यही अल्लाह की नीति उन सारे पैग़ंबरों के मामले में रही है जो पहले गुज़र चुके हैं. और अल्लाह का आदेश अंतिम निर्णय होता है. 39 वे अल्लाह के संदेश पहुँचाते थे और उसी से डरते थे. और वे अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे. और अल्लाह हिसाब लेने के लिए पर्याप्त है. 40 मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं. लेकिन वे अल्लाह के पैग़ंबर और पैग़ंबरों पर मुहर लगाने वाले (अर्थात पैग़ंबरों के समापक) हैं. अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है.

41 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करो. 42 सुबह व शाम उसका महिमागान करते रहो. 43 (ऐ ईमान लाने वालो!) वही है जो तुम पर रहमत

भेजता है और उसके फ़रिश्ते भी (तुम पर रहमत के लिए दुआ करते रहते हैं,) ताकि वह तुम्हें अँधेरों से रोशनी में निकाल लाए. वह ईमान वालों पर बहुत मेहरबान है. 44 जिस दिन वे उससे मिलेंगे, उनका स्वागत सलाम से होगा और उसने उनके लिए सम्मानजनक बदला तैयार कर रखा है. 45 पैग़ंबर! हमने तुम्हें गवाही देने वाला और शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है. 46 और अल्लाह की अनुज्ञा से अल्लाह की ओर बुलाने वाला; और रोशन चराग बनाकर (भेजा है).

47 (पैग़ंबर!) उन लोगों को शुभ-सूचना दे दो जो ईमान लाए हैं कि उनके लिए अल्लाह की ओर से बहुत बड़ी कृपा है. 48 और तुम सत्य का इन्कार करने वालों तथा कपटाचारियों की बातों में न आना और उनके सताने को अनदेखा करो और अल्लाह पर दृढ़ विश्वास रखो. अल्लाह ही भरोसे के लिए पर्याप्त है.

49 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जब तुम ईमान वाली औरतों से विवाह करो, फिर यदि उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो, तो तुम्हारे लिए उन पर कोई इद्दत (प्रतीक्षा-काल) अनिवार्य नहीं है जिसकी तुम गिनती करो. तो उन्हें कुछ माल दो और भले तरीक़े से उन्हें विदा कर दो.

50 पैग़ंबर! हमने तुम्हारे लिए वैध कर दी हैं वह पत्नियाँ जिनका महर तुम दे चुके हो. और वह औरतें भी जो तुम्हारे स्वामित्व में हैं, जो अल्लाह ने ग़नीमत में तुम्हें दी हैं (अर्थात युद्ध-बंदी के रूप में आयी हुयी औरतें). और (तुम्हारे लिए विवाह के लिए वैध हैं) तुम्हारे चाचा की बेटियाँ और तुम्हारी फुफियों की बेटियाँ और तुम्हारे मामू की बेटियाँ और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियाँ जिन्होंने तुम्हारे साथ (अल्लाह के मिशन के लिए) घर-बार छोड़ा हो, और वह ईमान वाली औरतें भी वैध हैं जो अपने आपको पैग़ंबर को दे दे, लेकिन शर्त यह है कि पैग़ंबर उसे अपने विवाह में लेना चाहे. (पैग़ंबर!) यह छूट विशेष रूप से तुम्हारे लिए है, दूसरे ईमान वालों के लिए नहीं है. हमें मालूम है जो कुछ हमने

उनकी पत्नियों और उनकी दासियों के संबंध से अनिवार्य किया है. (पैग़ंबर! तुम्हें इन सीमाओं से इसलिए अलग किया गया है,) ताकि तुम्हारे ऊपर कोई तंगी न रहे. अल्लाह क्षमा करने वाला तथा दया करने वाला है.

51 (पैग़ंबर!) तुम अपनी पत्नियों में से जिस-जिस को चाहो दूर रखो और जिसे चाहो अपने साथ रखो और जिन्हें दूर रखा था उनमें से फिर जिसे चाहो अपने पास बुला लो. इस मामले में तुम पर कोई दोष नहीं. इस तरह इस बात की अधिक संभावना है कि उनकी आँखें ठंडी रहेगी और वे दुःखी न होंगी. और जो कुछ तुम उन सबको दो उस पर वे सब संतुष्ट रहेंगी. अल्लाह जानता है जो कुछ तुम लोगों के दिलों में है. और वह सर्वज्ञानी तथा संयमी है. 52 इसके बाद तुम्हारे लिए दूसरी औरतें वैध नहीं. और न यह (तुम्हारे लिए) उचित है कि तुम उनकी जगह दूसरी पत्नियाँ ले आओ, यद्यपि उनका सौंदर्य तुम्हें अच्छा लगे, लेकिन उनकी बात और है जो तुम्हारी दासियाँ हों. अल्लाह हर चीज़ का निरीक्षण कर रहा है.

53 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! पैग़ंबर के घरों में प्रवेश न करो, सिवाय इसके कि तुम्हें खाने पर आने को कहा जाए. वह भी इस तरह (जाओ) कि तुम्हें उसकी (अर्थात खाना पकने की) तैयारी में प्रतीक्षा न करनी पड़े. हाँ, जब तुम्हें बुलाया जाए, तब तो अंदर जाओ. और जब तुम खाना खा चुको तो उठकर चले जाओ और बातों में लगे बैठे न रहो. इस बात से पैग़ंबर को कष्ट होता है, लेकिन वह तुम्हारा लिहाज़ करने के कारण कुछ नहीं कहते. और अल्लाह सच्ची बात कहने में किसी का लिहाज़ नहीं करता. और (ऐ ईमान वालो!) जब तुम पैग़ंबर की पत्नियों से कोई चीज़ माँगो तो परदे के पीछे से माँगो. यह तरीक़ा तुम्हारे और उनके दिलों के लिए अधिक पवित्र है (अर्थात दिलों को पाक रखने का कारक है). और तुम्हारे लिए कदापि उचित नहीं कि अल्लाह के पैग़ंबर को कष्ट पहुँचाओ और न यह वैध है कि तुम उनके बाद उनकी पत्नियों से कभी विवाह करो.

निस्संदेह यह अल्लाह की दृष्टि में बड़ी गंभीर बात है. 54 (ऐ ईमान वालो!) तुम किसी चीज़ को प्रकट करो या उसे (दिल में) छिपाए रखो, अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है.

55 पैग़ंबर की पत्नियों के लिए इसमें कोई दोष नहीं है कि उनके बाप, उनके बेटे, उनके भाई, उनके भतीजे, उनके भांजे, उनकी मेल-जोल की औरतें और उनकी दासियाँ (उनके घरों में आएँ). (ऐ पैग़ंबर की पत्नियों!) अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनी रहो. निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ का साक्षी है. 56 अल्लाह और उसके फ़रिश्ते पैग़ंबर पर रहमत भेजते हैं. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो तुम भी पैग़ंबर पर दुरूद व सलाम भेजो (अर्थात रहमत व सलामती की दुआ भेजो). 57 जो लोग अल्लाह और उसके पैग़ंबर को कष्ट पहुँचाते हैं. अल्लाह की उन पर इस दुनिया में और मृत्यु-पश्चात दुनिया में फिटकार है और उसने उनके लिए अपमानित करने वाली यातना तैयार कर रखी है. 58 जो लोग ईमान वाले पुरुष तथा ईमान वाली स्त्रियों को कष्ट पहुँचाते हैं, बिना इसके कि उन्होंने कुछ किया हो तो उन्होंने एक बड़े मिथ्यारोपण तथा स्पष्ट-रूपी पाप का बोझ अपने सर ले लिया.

59 पैग़ंबर! अपनी पत्नियों तथा बेटियों से और ईमान वालों की औरतों से कह दो कि (जब भी वे बाहर निकलें तो) अपने ऊपर अपनी चादरों के पल्लू लटका लिया करें, ताकि वे पहचान ली जाएँ और सतायी न जाएँ. अल्लाह क्षमा करने वाला तथा दया करने वाला है. 60 पाखंडी तथा वे लोग जिनके दिलों में रोग है और वे जो मदीना में झूठी सूचनाएँ फैलाते हैं यदि वे अपनी हरकतों से बाज़ न आएँ तो हम तुम्हें उनके पीछे लगा देंगे, फिर वे मदीना में तुम्हारे साथ बहुत कम रह पाएंगे. 61 फिटकारे हुए, जहाँ कही पाए जाएंगे, पकड़े जाएंगे और बुरी तरह मारे जाएंगे. 62 यह अल्लाह की रीति रही है उन लोगों के बारे में जो पहले गुज़र चुके हैं और तुम अल्लाह के विधान में कोई परिवर्तन न पाओगे.

63 (पैग़ंबर!) लोग तुमसे क़यामत के बारे में पूछते हैं (कि वह कब आएगी). कहो, उसका ज्ञान तो अल्लाह ही को है. तुम्हें क्या ख़बर कि शायद वह क़रीब आ लगी हो. 64 निस्संदेह अल्लाह ने सत्य नकारने पर आग्रही लोगों को अपनी रहमत से दूर कर दिया है और उनके लिए भड़कती हुयी आग तैयार कर रखी है. 65 जिसमें वे सदा के लिए रहेंगे, वे (वहाँ) न कोई समर्थक पाएंगे और न कोई सहायक. 66 जिस दिन उनके चेहरे आग में उलट-पलट किए जाएंगे. वे कहेंगे, काश! हमने अल्लाह और पैग़ंबर का आज्ञापालन किया होता. 67 और वे (सज़ा पाए हुए लोग) कहेंगे, ऐ हमारे रब! हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहना माना, तो उन्होंने हमें सीधे रास्ते से भटका दिया. 68 ऐ हमारे रब! उन्हे दोहरी यातना दे और उन पर सख़्त लानत कर.

69 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम उन लोगों की तरह न बनो जिन्होंने मूसा को कष्ट पहुँचाया, फिर अल्लाह ने उसे उन लोगों की बातों से बरी सिद्ध किया. और वह अल्लाह की दृष्टि में सम्मानित था. 70 ऐ ईमान वालो! अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो और उचित बात किया करो. 71 अल्लाह तुम्हारे कर्मों को सुधार देगा और तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा. जो व्यक्ति अल्लाह और उसके पैग़ंबर का आज्ञापालन करे उसने बड़ी सफलता प्राप्त की.

72 हमने अमानत को आसमानों और धरती तथा पहाड़ों के समक्ष प्रस्तुत किया तो उन्होंने उसे उठाने से इन्कार कर दिया. वे उससे डर गये और मनुष्य ने उसे उठा लिया. निश्चय ही मनुष्य बड़ा ज़ालिम और अज्ञानी था. 73 (इसका अटल परिणाम यह है) कि अल्लाह पाखंडी पुरुषों तथा पाखंडी स्त्रियों को और उन पुरुषों तथा स्त्रियों को सज़ा देगा जो उसके साझी ठहराते हैं; और ईमान वाले पुरुष तथा ईमान वाली स्त्रियों पर अपनी कृपादृष्टि डालेगा. (निस्संदेह!) अल्लाह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है.

सूरह–34. सबा

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जो आसमान और ज़मीन की हर चीज़ का मालिक है. और मृत्यु-पश्चात लोक में भी उसी की प्रशंसा है. वह विवेकवान तथा ज्ञानवान है. 2
वह जानता है जो कुछ ज़मीन के अंदर जाता है और जो कुछ उससे निकलता है. और जो आसमान से उतरता है और जो उसमें चढ़ता है. और वह दया करने वाला और क्षमा करने वाला है.

3 लेकिन जिन्होंने सत्य का इन्कार किया, वे कहते हैं कि हम पर क़यामत नहीं आएगी. कहो कि क्यों नहीं? मेरे रब की क़सम जो अदृश्य को जानने वाला है, वह अवश्य तुम पर आएगी. उससे कण बराबर भी कोई चीज़ छिपी हुयी नहीं है, न आसमानों में और न धरती में और न कोई चीज़ उससे छोटी और न बड़ी, सब कुछ एक स्पष्ट
किताब में अंकित है. 4 (क़यामत इसलिए आएगी) ताकि अल्लाह उन लोगों को जो ईमान
लाए और भले कर्म करते रहे, प्रतिफल प्रदान करे. यही वे लोग हैं जिनके लिए क्षमा है
और सम्मानपूर्वक जीविका. 5 लेकिन जो लोग हमारे संदेशों को नीचा दिखाने के लिए
प्रयासरत रहे उनके लिए बहुत ही बुरी तरह की यातना है. 6 (पैग़ंबर!) जिन्हें ज्ञान प्रदान
किया गया है वे ख़ूब जानते हैं कि जो कुछ तुम्हारे रब की ओर से तुम पर उतारा गया है, वह सत्य है और वह शक्तिशाली तथा प्रशंसनीय अल्लाह का मार्ग दिखाता है.

7 सत्य नकारने पर आग्रही लोग कहते हैं, क्या हम तुम्हें ऐसा व्यक्ति बताएँ जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम्हारे (शरीर का मृत्यु-पश्चात) कण-कण बिखर चुका
होगा, तब तुम नए सिरे से पैदा किए जाओगे. 8 क्या उसने अल्लाह पर झूठ बाँधा है या
फिर उसे किसी प्रकार का उन्माद है? (नहीं,) बल्कि जो लोग मृत्यु-पश्चात जीवन ही को नहीं मानते वे यातना में ग्रस्त होने वाले हैं और वे पर ले दर्जे की पथभ्रष्टता में लिप्त हैं.

9 तो क्या उन्होंने आसमान और ज़मीन को नहीं देखा जो उनके आगे भी है और पीछे भी? यदि हम चाहे तो उन्हें धरती में धँसा दें या उन पर आसमान से कुछ टुकड़े गिरा दें. निस्संदेह इसमें निशानी है हर उस बंदे के लिए जो ध्यान देने वाला हो.

10 हमने दाऊद को अपने यहाँ से बहुत बड़ी नेमत दी थी. (हमने पहाड़ों को यह आदेश दिया था कि) ऐ पहाड़ों! तुम भी उसके साथ महिमागान में शामिल हो जाओ. और यही आदेश हमने पक्षियों को भी दिया था. और हमने उसके लिए लोहे को नर्म कर दिया.
11 (इस उपदेश के साथ कि उससे) तुम बड़े कवच बनाओ और कड़ियों को माप के अनुसार जोड़ो और अच्छे कर्म करो. जो कुछ तुम करते हो उसको मैं देख रहा हूँ.

12 हमने हवा को सुलैमान के अधीन कर दिया था. प्रातः समय उसका चलना एक महिने की राह तक और शाम के समय उसका चलना एक महिने की राह तक (इस प्रकार वह चलती थी). और हमने उसके लिए पिघले हुए तांबे का स्रोत बहा दिया था. और जिन्नों में से कुछ को उसके अधीन कर दिया था जो उसके रब के आदेश से उसके आगे काम करते थे. और उनमें से जो हमारे आदेश की अवज्ञा करता उसको हम भड़कती हुयी आग का मज़ा चखाते.
13 वे उसके लिए बनाते थे जो कुछ वह चाहता जैसे, ऊँचे भवन, प्रतिमाएँ, बड़े-बड़े हौज़ जैसे लगन और अपनी जगह से न हटने वाली भारी देंगे. ऐ दाऊद के परिवार वालो! कृतज्ञता के साथ कर्म करो. और मेरे बंदों में कम ही कृतज्ञ हैं.

14 फिर जब हमने सुलैमान पर उसकी मौत का फ़ैसला लागू किया, तो जिन्नों को उसकी मौत का पता उस भूमि के कीड़े ने दिया जो उसकी लाठी को खा रहा था. इस तरह जब सुलैमान गिर पड़ा तो जिन्नों पर यह बात खुल गयी कि यदि वे अदृश्य के जानने वाले होते तो इस अपमानजनक यातना में न पड़े रहते.
15 सबा के लिए उनके अपने आवासीय श्रेत्र में ही निशानी थी. दो बाग़ दाएँ और बाएँ, (उनसे कहा गया,) खाओ

अपने रब का दिया हुआ और उसके प्रति कृतज्ञ बनो. भूमि भी अच्छी और रब भी क्षमाशील. 16 लेकिन वे मुँह मोड़ गए तो हमने उन पर बाँध का सैलाब भेज दिया और उनके बाग़ों को दो ऐसे बाग़ों से बदल दिया जिनमें कड़वे-कसैले फल और झाव के वृक्ष थे और कुछ थोड़े से बेर. 17 यह था उनके इन्कार का बदला जो हमने उन्हें दिया. हम ऐसा बदला उसी को देते हैं जो कृतघ्न हो.

18 उनके और उन बस्तियों के बीच जिन्हें हमने बरकत दे रखी थी, ऐसी दूसरी बस्तियाँ बसायी जो (स्पष्टता) दिखायी देती थीं. और हमने उनके बीच प्रवास की मंज़िलें निर्धारित कर दी थीं. (उनसे कहा गया था कि) चलो-फिरो इन रास्तों में रात-दिन पूरे अमन के साथ. 19 लेकिन उन्होंने कहा, ऐ हमारे रब! हमारे प्रवास की दूरियाँ लंबी कर दे. उन्होंने अपने आप पर अत्याचार किया, तो अंततः हमने उन्हें कहानियाँ बनाकर रख दिया और उन्हें बिल्कुल तितर-बितर कर डाला. निस्संदेह इसमें निशानियाँ हैं प्रत्येक धैर्य से काम लेने वाले तथा कृतज्ञ बनने वाले के लिए.

20 इबलीस (अर्थात शैतान) ने उनके मामले में अपने गुमान को सच कर दिखाया. उन्होंने इबलीस का अनुसरण किया, सिवाय कुछ ईमान वालों के. 21 इबलीस को उन पर कोई प्रभुत्व प्राप्त न था, (लेकिन जो कुछ हुआ) इसलिए हुआ कि हम यह देखना चाहते थे कि कौन मृत्यु-पश्चात जीवन को मानने वाला है और कौन उसके संबंध से संदेह में पड़ा हुआ है. और तुम्हारा रब हर चीज़ की निगरानी करने वाला है.

22 (पैग़ंबर! इन बहुदेववादियों से) कहो कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने अल्लाह के सिवा उपास्य समझ रखा है. (जिन्हें तुमने उपास्य समझ रखा हैं) वे न आसमानों में कण बराबर किसी चीज़ पर अधिकार रखते हैं और न धरती में, और न इन दोनों में (अर्थात आसमान व धरती में) उनकी कोई साझेदारी है. और उनमें से कोई अल्लाह का मददगार भी नहीं है.

23 अल्लाह के यहाँ कोई सिफ़ारिश (किसी के) काम नहीं आ सकती, सिवाय उस आदमी के जिसके लिए उसने सिफ़ारिश करने की इजाज़त दी हो. और फिर जब लोगों के दिलों की घबराहट दूर होगी तो वे (सिफ़ारिश करने वालों से) पूछेंगे कि तुम्हारे रब ने क्या कहा है? वह कहेंगे कि सत्य बात का आदेश दिया है. और वह सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है.

24 (पैग़ंबर!) इनसे पूछो, कौन तुम्हें आसमानों और धरती से जीविका देता है? कहो कि अल्लाह! अब (अनिवार्य रूप से) हममें और तुममें से कोई एक सन्मार्ग पर है या स्पष्ट पथभ्रष्टता में.
25 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, (यदि) अपराध हमने किया हो तो उसकी कोई पूछ-ताछ तुमसे न होगी. और जो कुछ तुम कर रहे हो उसके संबंध से हमसे नहीं पूछा जाएगा.
26 कहो, हमारा रब हम सबको इकट्ठा करेगा, फिर वह हमारे बीच सत्य के अनुसार निर्णय करेगा. वह सर्वोच्च जानकार एवं न्यायाधीश है.
27 इनसे कहो, मुझे उन्हें दिखाओ जिन्हें तुमने साझीदार बनाकर अल्लाह के साथ जोड़ रखा है. कदापि नहीं, बल्कि प्रभुत्ववान और विवेकवान बस वह अल्लाह ही है.
28 (ऐ मुहम्मद!) हमने तुम्हें सारे इंसानों के लिए शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है. लेकिन अधिकतर लोग नहीं जानते.

29 और यह लोग तुमसे पूछते हैं कि यह (क़यामत का) वादा कब (पूरा) होगा, यदि तुम सच्चे हो?
30 उनसे कह दो, तुम्हारे लिए एक ऐसे दिन का वादा है, जिससे तुम न एक घड़ी पीछे रह सकते हो और न एक घड़ी आगे बढ़ सकते हो.
31 सत्य का इन्कार करने वाले लोग कहते हैं, हम न इस क़ुरआन को मानेंगे और न उसको जो इससे पहले है (अर्थात पूर्ववर्ती आसमानी किताब को भी नहीं मानेंगे). (पैग़ंबर!) काश, तुम देखो इनका हाल उस समय जब ये अत्याचारी अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे. तब वे एक-दूसरे को दोष दे रहे होंगे. जो लोग कमज़ोर समझे गए थे वे उन लोगों से कहेंगे जो

(दुनिया में) बड़े बनते थे. यदि तुम न होते तो हम अवश्य ईमान वाले होते. 32 वे लोग जो बड़े बनते थे, उन लोगों को उत्तर देंगे जो कमज़ोर समझे गए थे, क्या हमने तुम्हें उस मार्गदर्शन से रोका था, जब वह तुम्हारे पास आ चुका था? बल्कि तुम स्वयं अपराधी थे.

33 वे लोग जो कमज़ोर समझे गए थे, बड़े बनने वालों से कहेंगे, नहीं, तुम्हारी बल्कि रात दिन की मक्कारी थी (जिसके कारण हम पथभ्रष्ट हुए). जब तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह का इन्कार करें और दूसरों को उसके बराबर का ठहराएँ, और जब ये (अपराधी) लोग यातना को देखेंगे तो मन ही मन पछताएंगे. और हम उन लोगों की गरदनों में तौक़ डाल देंगे जो सत्य के इन्कार पर आग्रही बने रहे. वे वही बदला पाएंगे जो वे करते थे. 34 और हमने जिस बस्ती में भी कोई सचेत करने वाला भेजा, तो वहाँ के संपन्न लोगों ने यही कहा, जो कुछ देकर तुम्हें भेजा गया है हम तो उसको नहीं मानते. 35 और उन्होंने यही कहा कि हम तो तुमसे अधिक धन और संतान वाले हैं और हम कदापि सज़ा पाने वाले नहीं हैं. 36 (पैग़ंबर!) कह दो, मेरा रब जिसके लिए चाहता है अधिक जीविका प्रदान करता है और जिसके लिए चाहता है कम कर देता है, लेकिन अधिकतर लोग नहीं जानते. 37 तुम्हारी संपत्ती और तुम्हारी संतान वह चीज़ नहीं जो तुम्हें हमारा निकटवर्ती दर्जे वाला बना दे. हाँ, मगर जो ईमान लाया और उसने अच्छे कर्म किए, ऐसे लोगों को उनके कर्म का दो गुना बदला मिलेगा, वे ऊँचे भवनों में निश्चिंतता के साथ रहेंगे. 38 और जो लोग हमारे संदेशों को नीचा दिखाने के लिए दौड़-धूप करते हैं, तो वे यातना-ग्रस्त किए जाएंगे. 39 (पैग़ंबर!) कह दो, मेरा रब अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है जीविका विपुलता के साथ देता है और जिसके लिए चाहता है कम कर देता है. और जो चीज़ भी तुम खर्च करोगे तो वह उसका बदला देगा. और वह सबसे अच्छा जीविका प्रदान करने वाला है.

40 और जिस दिन वह सारे इंसानों को इकट्ठा करेगा, फिर फ़रिश्तों से पूछेगा, क्या ये लोग तुम्हारी उपासना किया करते थे. 41 वे जवाब देंगे, (ऐ प्रभु!) पाक है तेरी ज़ात! हमारा संबंध तो तुझसे है, न कि इन लोगों से. वास्तव में यह लोग हमारी नहीं, बल्कि जिन्नों की उपासना किया करते थे. उनमें से अधिकतर उन्हीं पर ईमान रखते थे. 42 तो आज तुममें से कोई एक-दूसरे को न लाभ पहुँचा सकता है और न हानि. और हम अत्याचारियों से कहेंगे कि उस आग की यातना चखो जिसे तुम झुठलाते थे. 43 जब इन्हें हमारे स्पष्ट संदेश सुनाए जाते हैं तो यह कहते हैं कि यह तो बस एक ऐसा आदमी है जो यह चाहता है कि तुम्हारे बाप-दादा जिनकी उपासना करते थे उससे तुम्हें रोक दे. और उन्होंने (सत्य के संदेश के बारे में) कहा, यह तो मात्र एक झूठ है गढ़ा हुआ. और जब इन्कारियों के सामने सत्य आया तो उन्होंने कह दिया, यह तो बस स्पष्ट जादू है. 44 हालाँकि हमने इन लोगों को न पहले किताबें दी थी कि ये उसे पढ़ते हों और न तुमसे पहले इनकी ओर कोई सचेत करने वाला भेजा था. 45 इनसे पहले वालों ने भी झुठलाया था. और जो कुछ हमने उन्हें दिया था उसके दसवें हिस्से को भी यह नहीं पहुँचे हैं, तो जब उन्होंने मेरे पैग़ंबरों को झुठलाया तो (देख लो) कैसी रही मेरी (ओर से उन्हें दी गयी) सज़ा.

46 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, मैं तुम्हें एक बात का उपदेश करता हूँ, यह कि तुम अल्लाह के लिए दो-दो और एक-एक करके उठ खड़े हो, फिर विचार करो, तुम्हारे साथी में (अर्थात मुहम्मद साहब में) आख़िर कौनसी बात है जो जुनून की हो. (सोचने पर तुम जानोगे कि उनमें कोई जुनून नहीं है) वह तो मात्र एक कठोर यातना आने से पहले तुम्हें सचेत करने वाले हैं. 47 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, यदि मैंने तुमसे कुछ उजरत माँगी हो तो वह तुम्हें ही मुबारक हो. मेरी उजरत तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है. और वह हर चीज़ पर गवाह है.

48 इनसे कहो, मेरा रब सत्य से असत्य पर चोट लगाता है. वह छिपी चीज़ों का जानने वाला है. 49 कहो कि सत्य आ गया है (और जहाँ तक असत्य का संबंध है) असत्य न प्रारंभ कर सकता है और न पुनरावृत्ति. 50 कह दो, यदि मैं पथभ्रष्ट हो गया हूँ, तो मेरी पथभ्रष्टता का वबाल मुझ पर है और यदि मैं सन्मार्ग पर हूँ तो उस आसमानी संदेश के कारण हूँ जो मेरा रब मेरी ओर अवतरित कर रहा है. निस्संदेह वह सब कुछ सुनने वाला है और निकट है.

51 यदि तुम देखो इन्हें उस समय जब ये लोग घबराए हुए होंगे. और वे कहीं बचकर न जा सकेंगे, बल्कि क़रीब ही से पकड़ लिए जाएंगे. 52 तब वे कहेंगे हमने इसे मान लिया. हालाँकि उनके लिए कहाँ संभव है कि इतने दूरस्थ स्थान से उसे पा सकें (अर्थात परिणाम के दिन ईमान लाने का मौक़ा कहाँ?). 53 इससे पहले उन्होंने उसका इन्कार किया है; और बिन-देखे दूरवर्ती स्थान से बातें बनाते रहे (अर्थात निराधार अटकल दौड़ाते रहे). 54 तब उनके और उनकी चाहतों के बीच रोक लगा दी जाएगी, जैसा कि इससे पहले इनके सहपंथियों के साथ किया गया. निश्चय ही वे बड़े उलझन वाले संदेह में पड़े रहे.

सूरह–35. फ़ातिर

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 प्रशंसा अल्लाह के लिए है. आसमानों और धरती की रचना करने वाला. फ़रिश्तों को संदेशवाहक बनाने वाला, जिनके पंख हैं दो-दो, तीन-तीन और चार-चार. वह रचना में जो चाहे अधिक कर देता है. निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है. 2 अल्लाह जो दयालुता लोगों के लिए खोले उसे कोई रोकने वाला नहीं और जिसे अल्लाह रोक ले तो कोई उसका खोलने वाला नहीं. वह प्रभुत्वशाली तथा विवेकवान है.

3 ऐ लोगो! अल्लाह के तुम पर जो उपकार हैं उन्हें याद करो. क्या अल्लाह के सिवा कोई और रचयिता है जो तुम्हें आसमान और धरती से जीविका प्रदान करता हो. उसके सिवा दूसरा कोई उपास्य नहीं, आख़िर तुम कहाँ से धोका खा रहे हो? 4 (पैग़ंबर!) अब यदि ये लोग तुम्हें झुठलाएँ तो तुमसे पहले भी बहुत से पैग़ंबर झुठलाए जा चुके हैं. और सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटने वाले हैं. 5 ऐ लोगो! अल्लाह का वादा सच्चा है. तो दुनिया की ज़िंदगी तुम्हें धोके में न डाले. और वह धोखेबाज़ तुम्हें अल्लाह के संबंध से धोका देने न पाए. 6 (ऐ लोगो!) निस्संदेह शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तो तुम उसे दुश्मन ही समझो. वह तो अपनी (पैरवी करने वाले) गिरोह को इसलिए बुलाता है कि वह आग वालों में शामिल हो जाएँ. 7 जो लोग सत्य का इन्कार करने पर तुले रहे उनके लिए कठोर यातना है. और जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए उनके लिए क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है. 8 क्या ऐसा व्यक्ति जिसको उसका बुरा कर्म अच्छा करके दिखाया गया, फिर वह उसे अच्छा समझने लगा (कहीं ईमान वाले सत्कर्मी व्यक्ति के समान हो सकता है)? सत्य तो यह है कि अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है मार्गदर्शन देता है. तो (पैग़ंबर!) उन पर दुःखी होकर तुम अपने को व्यथित न करो. जो कुछ ये कर रहे है अल्लाह ख़ूब जानता है.

9 वह अल्लाह ही तो है जो हवाओं को भेजता है, फिर वे बादल को उठाती हैं. फिर हम उसे मृत भूभाग की ओर ले जाते हैं और उससे धरती को उसके मृत हो जाने के पश्चात जीवित कर देते हैं. इसी प्रकार (मरे हुए लोगों का) जी उठना है. 10 जो व्यक्ति सम्मान चाहता हो तो (उसे मालूम होना चाहिए कि) सम्मान सारा का सारा अल्लाह का है. उसके यहाँ जो चीज़ ऊपर चढ़ती है, वह पाकीज़ा बात है और भला कृत्य उसको ऊपर चढ़ाता है. जो लोग बुरी युक्तियाँ कर रहे हैं, उनके लिए कठोर यातना है और उनकी युक्तियाँ व्यर्थ होकर रहेंगी.

11 अल्लाह ने तुमको मिट्टी से बनाया फिर पानी की बूँद से. फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े बनाया. कोई महिला न गर्भवती होती है और न बच्चा जनती है, लेकिन उसके ज्ञान से. और न कोई आयु पाने वाला दीर्घायु प्राप्त करता है और न किसी की आयु घटती है, लेकिन यह सब एक पंजिका में दर्ज है. निस्संदेह यह अल्लाह के लिए सरल है.

12 पानी के दोनों भंडार एक जैसे नहीं हैं. एक मीठा है, प्यास बुझाने वाला, पीने में अच्छा लगने वाला. तो दूसरा खारी तथा कड़वा है. मगर तुम हर एक में से ताज़ा मांस खाते हो और आभूषण निकालते हो, जिसे तुम पहनते हो. तुम देखते हो जहाज़ों को कि वे उसमें उसका सीना चीरते हुए चलते हैं, ताकि तुम अल्लाह का अनुग्रह तलाश करो और तुम उसके प्रति कृतज्ञ बनो. 13 वह रात को दिन में दाख़िल कराता है और दिन को रात में दाख़िल कराता है. उसने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है. प्रत्येक चलता है एक निर्धारित अवधी के लिए. यह (सब करने वाला) अल्लाह ही तुम्हारा रब है. बादशाही उसी के लिए है, उसे छोड़कर जिन्हें तुम पुकारते हो वे खजूर की गुठली के एक छिलके के भी मालिक नहीं हैं.14 यदि तुम उन्हें पुकारो वे तुम्हारी पुकार नहीं सुन सकते. और यदि वे सुनते तो भी तुम्हारी पुकार के जवाब में कुछ नहीं कर सकते. और क़यामत के

दिन वे तुम्हारे साझी ठहराने के कृत्य का इन्कार करेंगे. हर चीज़ की ख़बर रखने वाले (अल्लाह की तरह) दूसरा कोई भी तुम्हें (सत्य से) अवगत नहीं करा सकता.

15 ऐ लोगो! तुम अल्लाह के मुहताज हो और अल्लाह तो निस्पृह है, प्रशंसनीय है.
16 यदि वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और (तुम्हारी जगह) एक नयी रचना ले आए, 17
ऐसा करना अल्लाह के लिए कुछ कठिन नहीं. 18 (क़यामत के दिन) कोई बोझ उठाने
वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा. और यदि कोई भारी बोझ वाला अपना बोझ
उठाने के लिए किसी को पुकारेगा, तो (किसी के द्वारा) उसमें से कुछ भी न उठाया
जाएगा, यद्यपि वह निकटवर्ती संबंधी ही क्यों न हो. (पैग़ंबर!) तुम तो केवल उन्हीं लोगों
को सचेत कर सकते हो जो बिन देखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं.
जो कोई अपने (मन) को पाक करता है तो अपने ही लिए पाक करता है (अर्थात इसमें
उसकी अपनी भलाई है). (अंत में) लौटकर सबको अल्लाह ही की ओर जाना है.

19 अँधा और आँखों वाला समान नहीं. 20 और न अँधेरा और उजाला समान
हैं. 21 न छाँव और धूप की तपन एक जैसे हैं. 22 और न ज़िंदे और मुर्दे बराबर हैं.
निश्चय ही अल्लाह जिसे चाहता है, सुनाता है. (पैग़ंबर!) तुम उन लोगों को नहीं सुना
सकते जो क़बरों में दफ़न हैं. 23 तुम तो बस एक सचेत-कर्ता हो. 24 (पैग़ंबर!) हमने
तुम्हें सत्य के साथ भेजा है. शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर. और
कोई समुदाय ऐसा नहीं जिसमें कोई सचेत करने वाला न आया हो. 25 (पैग़ंबर!) यदि ये
लोग तुम्हें झुठलाते हैं, तो इनसे पहले जो लोग हुए हैं उन्होंने भी झुठलाया. उनके पास
उनके पैग़ंबर स्पष्ट प्रमाण और आसमानी संदेश-पत्रिका और रोशन किताब लेकर आए.
26 फिर जिन लोगों ने न माना उन्हें मैंने पकड़ लिया. तो देखो कैसी कठोर थी वह सज़ा
जो मेरी ओर से (उन्हें दी गयी).

27 क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया. फिर उसके द्वारा हमने विभिन्न रंगों के फल बनाए? और पहाड़ों में भी सफ़ेद लाल और विभिन्न रंगों की धारियाँ पायी जाती हैं और कुछ गहरे काले होते हैं. 28 और मनुष्यों और जीवधारियों और मवेशियों के रंग भी इसी प्रकार भिन्न हैं. अल्लाह से उसके बंदों में से मात्र वही लोग डरते हैं जो ज्ञान वाले हैं. निस्संदेह अल्लाह शक्तिशाली है, क्षमा करने वाला है.

29 जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से छिपे और खुले खर्च करते हैं. वे एक ऐसे व्यापार की आशा रखते हैं जिसमें कदापि घाटा न होगा. 30 (इस व्यापार में उन्होंने अपना सब कुछ इसलिए खपाया है) ताकि अल्लाह उन्हें उनका बदला पूरा-पूरा दे और भी अपनी कृपा से उन्हें अधिक प्रदान करे. निस्संदेह अल्लाह क्षमाशील और गुणग्राहक है. 31 (पैग़ंबर!) हमने तुम्हारी ओर जो किताब प्रकट की है वह सत्य है. वह उसकी पुष्टि करती है जो इसके पहले से मौजूद है. निस्संदेह अल्लाह अपने बंदों की ख़बर रखने वाला है, देखने वाला है.

32 फिर हमने किताब का उत्तराधिकारी बनाया उन लोगों को जिन्हें हमने अपने बंदों में से चुन लिया. तो उनमें से कुछ अपने आप पर अत्याचार करने वाले हैं और उनमें से कुछ मध्य मार्ग पर हैं. और उनमें से कुछ अल्लाह की कृपा से भलाइयों में बाज़ी ले जाने वाले हैं. यही सबसे बड़ी कृपा है. 33 (उनके लिए) सदैव रहने के बाग़ हैं, जिनमें वे प्रवेश करेंगे. वहाँ उन्हें सोने के कंगन तथा मोती से आभूषित किया जाएगा. और वहाँ उनका वस्त्र रेशम होगा. 34 जन्नती लोग कहेंगे, शुक्र है उस अल्लाह का, उसने हमसे (हमेशा के लिए) दुःख को दूर कर दिया निस्संदेह हमारा रब क्षमाशील तथा गुणग्राही है. 35 जिसने हमें अपनी कृपा से शाश्वत आवास की जगह ठहरा दिया. अब यहाँ हमें न कोई कष्ट पहुँचता है और न थकान होती है.

36 जो लोग सत्य के इन्कार पर तुले रहे उनके लिए जहन्नम की आग है, न उन्हें सज़ा-ए-मौत का फ़ैसला सुनाया जाएगा कि वे मर (कर हमेशा के लिए समाप्त हो) जाएँ. और न ही उनसे उनकी यातना हल्की की जाएगी. हम सत्य का इन्कार करने वाले हर एक को ऐसा ही बदला देते हैं. 37 जहन्नमी लोग वहाँ चिल्लाएंगे, ऐ हमारे रब! हमें (इससे) निकाल ले. हम अच्छा कर्म करेंगे, उससे भिन्न जो हम किया करते थे. (उन्हें जवाब में कहा जाएगा,) क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र न दी थी कि जिसमें (सच्चाई के संबंध से) कोई सोचना-समझना चाहता तो सोच-समझ लेता. और तुम्हारे पास सचेत करने वाला भी आया था. अब चखो मज़ा (अपने किए का). अत्याचारियों का यहाँ कोई मददगार नहीं.

38 निस्संदेह अल्लाह आसमान व धरती की हर छिपी चीज़ को जानने वाला है. उसे दिल की बातें भी पता हैं. 39 वही तो है जिसने तुम्हें धरती पर आबाद किया. तो जो व्यक्ति इन्कार करेगा, उसके इन्कार का वबाल उसी पर पड़ेगा. सत्य का इन्कार करने वालों का इन्कार उनके रब के यहाँ केवल प्रकोप ही को बढ़ाता है. और इन्कार करने वालों के लिए उनका इन्कार केवल घाटे ही में वृद्धि करता है.

40 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, तनिक तुम देखो अपने उन साझीदारों को जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारा करते हो. मुझे बताओ कि उन्होंने धरती में क्या बनाया है; या फिर उनकी आसमानों में कोई हिस्सेदारी है; या हमने इन्हें कोई किताब दी है कि ये उसके स्पष्ट प्रमाण पर क़ायम हैं? नहीं, बल्कि ये अत्याचारी आपस में एक-दूसरे से केवल धोके का वादा कर रहे हैं. 41 निस्संदेह अल्लाह ही आसमानों और धरती को टल जाने से रोके हुए है. और यदि वे (अल्लाह के आदेश से) टल जाएँ तो अल्लाह के सिवा दूसरा कोई और उन्हें थाम नहीं सकता. निस्संदेह अल्लाह बड़ा सहनशील और क्षमाशील है. 42 ये लोग अल्लाह के नाम से कड़ी-कड़ी क़समें खाकर कहा करते थे कि यदि उनके पास कोई

सचेत करने वाला आ गया होता तो ये हर क़ौम से बढ़कर सीधे रास्ते पर चलने वाले होते. लेकिन जब उनके पास सचेत करने वाला आया, तो उसके आने से इसके सिवा कुछ नहीं हुआ कि उनकी (सत्य से) दूरी में वृद्धि हुयी.

43 ये धरती पर और अधिक उद्दंडता करने लगे और बुरी चालें चलने लगे, हालाँकि बुरी चालें अपने चलने वालों ही को ले बैठती हैं. अब क्या ये लोग उसी विधान की प्रतीक्षा में हैं जो पहले गुज़रे लोगों के संबंध में प्रकट हुआ. तो तुम अल्लाह के विधान में न कोई परिवर्तन पाओगे और न अल्लाह के विधान को टलता हुआ पाओगे. 44 क्या ये लोग धरती पर चले फिरे नहीं कि वे देखते कि कैसा हुआ उन लोगों का अंत जो इनसे पहले गुज़रे हैं? हालाँकि वे शक्ति में बढ़े हुए थे. अल्लाह ऐसा नहीं कि कोई चीज़ उसे विवश कर सके, न आसमानों में और न धरती में. निस्संदेह वह ज्ञानवान है, सामर्थ्यवान है.

45 और यदि लोगों को उनके कर्मों पर अल्लाह उन्हें पकड़ता तो धरती पर वह एक जीवधारी को भी न छोड़ता. लेकिन वह उन्हें निर्धारित अवधी तक मुहलत दे रहा है. जब उनका नियत समय आ जाएगा (तो अल्लाह अपने बंदों का फ़ैसला कर देगा). निस्संदेह अल्लाह की निगाह में हैं उसके सब बंदे.

सूरह–36. या० सीन०

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 या० सीन०. 2 क़सम है विवेकपूर्ण क़ुरआन की. 3 (ऐ मुहम्मद!) निस्संदेह तुम पैग़ंबरों में से हो. 4 सीधे रास्ते पर 5 (और यह क़ुरआन) प्रभुत्वशाली और दयावान का उतारा हुआ है. 6 ताकि तुम उन लोगों को सचेत कर दो जिनके पूर्वजों को सचेत नहीं किया गया था. वे (जीवन की हक़ीक़त के संबंध से) ग़ाफ़िल हैं.

7 इनमें से अधिकतर लोगों पर बात सिद्ध हो चुकी है (कि वे सज़ा पाकर रहेंगे), इसीलिए वे ईमान नहीं लाते. 8 हमने उनकी गरदनों में तौक़ (पट्टे) डाल दिए हैं, जो ठोड़ियों तक हैं. तो उनके सिर ऊँचे हो रहे हैं. 9 और हमने उनके आगे एक दीवार खड़ी कर दी है और एक दीवार उनके पीछे भी है. इस प्रकार हमने उन्हें ढाँक दिया तो उन्हें अब कुछ नहीं दिखायी देता (अर्थात कुछ नहीं सूझता). 10 उनके लिए समान है, तुम उन्हें सचेत करो अथवा न करो, वे ईमान नहीं लाएंगे. 11 (पैग़ंबर!) तुम तो उसी व्यक्ति को सचेत कर सकते हो जो उपदेश पर चले और अल्लाह से बिन देखे डरे. तो ऐसे व्यक्ति को क्षमा तथा सम्मानपूर्वक प्रतिफल की शुभ-सूचना दे दो.

12 निश्चय ही हम मुर्दों को जीवित करेंगे. और हम लिख रहे हैं जो उन्होंने आगे भेजा और जो उन्होंने पीछे छोड़ा. हर चीज़ को हमने एक खुली किताब में लिख रखा है. 13 इन्हें मिसाल के तौर पर उस बस्ती वालों का क़िस्सा सुनाओ, जबकि उसमें पैग़ंबर आए थे.

14 हमने उनके पास दो पैग़ंबर भेजे थे, तो उन्होंने दोनों को झुठला दिया. फिर हमने तीसरे को (उन दोनों की) मदद के लिए भेजा, उन सब ने कहा, हम तुम्हारी ओर संदेशवाहक बनाकर भेजे गए हैं. 15 बस्ती वालों ने कहा, तुम तो हमारे ही जैसे मनुष्य हो और कृपावंत ख़ुदा ने कोई चीज़ नहीं उतारी है, तुम सिर्फ़ झूठ बोलते हो. 16 पैग़ंबरों ने

कहा, हमारा रब जानता है कि हम तुम्हारी ओर भेजे गए हैं. 17 और हम पर संदेश स्पष्ट रूप से पहुँचाने के सिवा और कोई दायित्व नहीं. 18 (इस पर) बस्ती वाले कहने लगे, हम तो तुम्हें अपने लिए अपशकुन समझते हैं, यदि तुम लोग बाज़ न आए तो हम तुम्हें पत्थरों से मार डालेंगे और तुम्हें हमारी ओर से कठोर कष्ट पहुँचेगा. 19 पैग़ंबरों ने जवाब दिया, तुम्हारा अपशकुन तुम्हारे अपने ही साथ है. क्या ये बातें तुम इसलिए करते हो कि तुम्हें (सत्य की ओर आने का) उपदेश किया गया. बल्कि (वास्तव में) तुम सीमा से निकल जाने वाले लोग हो. 20 और शहर के दूरवर्ती स्थान से एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया. उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगो! पैग़ंबरों का अनुसरण करो. 21 अनुसरण करो उन लोगों का जो तुमसे कोई उजरत नहीं चाहते. और वे सीधे मार्ग पर हैं.

पारा – 23 22 (उस ईमान वाले बंदे ने आगे कहा,) मैं क्यों न इबादत करूँ उस ज़ात कि जिसने मेरा सृजन किया है और उसी की ओर तुम सबको पलटकर जाना है. 23 (उसने आगे कहा,) (जिसने मेरा सृजन किया है) उसके सिवा क्या मैं दूसरों को उपास्य बनाऊँ? यदि कृपावंत ख़ुदा मुझे कष्ट पहुँचाना चाहे तो न उनकी सिफ़ारिश मेरे काम आ सकती है और न वे मुझे छुड़ा ही सकते हैं. 24 (यदि मैं सच्चे ख़ुदा को छोड़कर दूसरों को उपास्य बनाऊँ तो) तब निस्संदेह मैं स्पष्ट पथभ्रष्टता में पड़ जाऊँगा. 25 (उस ईमान वाले बंदे ने आगे कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगो!) मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया तो तुम भी मेरी बात सुन लो. 26 (अंततः उसकी क़ौम के लोगों ने उसे क़तल कर दिया) तब उसे कहा गया, जन्नत में दाख़िल हो जाओ. उसने कहा, काश मेरी क़ौम जानती 27 कि मेरे रब ने मुझे क्षमा कर दिया है और मुझे सम्मानित लोगों में शामिल किया है.

28 उसके बाद हमने उसकी (अपराधी) क़ौम पर आसमान से कोई सेना नहीं उतारी. और हम इस तरह सेना नहीं उतारा करते. 29 बस एक धमाका हुआ और यकायक वे सब बुझ कर रह गए.

30 अफ़सोस है बंदों के ऊपर जो पैग़ंबर भी उनके पास आया, वह उनका उपहास ही करते रहे. 31 क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी ही क़ौमें नष्ट कर दीं. अब वे उनकी ओर पलटकर आने वाले नहीं. 32 उन सबको (एक दिन) हमारे सामने हाज़िर किया जाना है.

33 (हमारे सामर्थ्य की निशानियों में से) उनके लिए एक निशानी मृत भूमि है. उसको हमने जीवित किया और हमने उससे अनाज निकाला, तो वे उसमें से खाते हैं. 34 और उसमें हमने खजूर और अंगूर के बाग़ बनाए. और उसके भीतर हमने स्रोत जारी किए. 35 ताकि लोग उसके फल खाएँ. यह सब कुछ उनके हाथों ने नहीं बनाया है. तो क्या वे शुक्र अदा नहीं करते? 36 महिमावान है वह जिसने समस्त चीज़ों के जोड़े बनाए. चाहे वे चीज़ें हों जिन्हें धरती उगाती है. और स्वयं उनके भी जोड़े हैं (अर्थात मनुष्य के) और उन चीज़ों के भी जोड़े हैं जिन्हें वह नहीं जानते.

37 और उनके लिए एक निशानी रात है. हम उससे दिन को खींच लेते हैं, तो उन पर अँधेरा छा जाता है. 38 और सूरज अपनी नियत कक्षा में भ्रमण करता रहता है. यह बाँधा हुआ हिसाब है प्रभुत्वशाली एवं ज्ञानवान का. 39 और चाँद के लिए हमने उसकी मंज़िलें निर्धारित कर दीं, यहाँ तक कि वह ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की सूखी डाल. 40 न सूरज के बस में है कि चाँद को जा पकड़े और न रात दिन से आगे निकल सकती है. सब अपनी-अपनी कक्षा में तैर रहे हैं.

41 उनके लिए एक निशानी यह है कि हमने उनकी नस्ल को भरी हुयी नाव में सवार कर दिया. 42 और हमने उनके लिए उस जैसी और चीज़ें निर्माण कीं जिन पर ये सवार होते हैं. 43 यदि हम चाहें तो उन्हें डुबो दें, फिर न उनकी कोई फ़रियाद सुनने वाला होगा और न ये बचाए जा सकेंगे. 44 लेकिन यह हमारी दयालुता है और उनके लिए एक निर्धारित समय तक (ज़िंदगी का) लाभ लेने का अवसर.

45 जब उनसे कहा जाता है कि उस चीज़ का डर रखो जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है (अर्थात पीछे कर्म हैं और आगे उनका अंजाम है उससे सचेत रहो,) ताकि तुम पर दया की जाए. 46 और उनके रब की निशानियों में से कोई निशानी भी उनके पास ऐसी नहीं आती जिससे वह मुँह न मोड़ते हों. 47 और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ तुहें प्रदान किया है उसमें से खर्च करो तो जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया है वे ईमान लाने वालों से कहते हैं कि क्या हम उन्हें खिलाएँ, जिन्हें यदि अल्लाह चाहता तो वह स्वयं उन्हें खिला देता, तुम लोग तो स्पष्ट पथभ्रष्टता में लिप्त हो.

48 और वे कहते हैं कि यह (क़यामत) का वादा कब पूरा होगा, (बताओ) यदि तुम सच्चे हो. 49 (पैग़ंबर!) वास्तव में यह लोग जिस चीज़ की राह देख रहे हैं वह बस एक धमाका है, जो इन्हें (यकायक) इस दशा में आ पकड़ेगा जब ये (परस्पर) झगड़ रहे होंगे. 50 तब वे न वसीयत कर सकेंगे और न वे अपने घर वालों की ओर लौट सकेंगे. 51 फिर जब सूर में फूँक मारी जाएगी तो यकायक वे क़ब्रों से निकलकर अपने रब की ओर चल पड़ेंगे. 52 वे कहेंगे, हाय हमारा दुर्भाग्य, किसने हमें हमारी ख़्वाबगाह से उठाया है. (कहा जाएगा,) यह वही है जिसका रहमान ने वादा किया था और पैग़ंबरों ने सच कहा था. 53 बस वह एक धमाका होगा और सब के सब हमारे सामने हाज़िर कर दिए जाएंगे.

54 (कहा जाएगा कि) आज के दिन किसी व्यक्ति पर कण भर भी ज़ुल्म न होगा. तुम्हें वही बदला मिलेगा जो तुम करते थे. 55 निस्संदेह उस दिन जन्नती लोग अपनी आनंददायी व्यस्तता में होंगे. 56 वे और उनके जीवनसाथी घने सायों में मसनदों पर तकिये लगाए हुए बैठे होंगे. 57 उनके लिए वहाँ फल होंगे और वह सब कुछ होगा जो वे माँगेगे. 58 जन्नतियों को सलाम कहलाया जाएगा दयावान रब की ओर से. 59 (तब अपराधियों से कहा जाएगा,) ऐ अपराधियो! आज तुम अलग हो जाओ.

60 ऐ आदम की संतान! क्या मैंने तुम्हें ताकीद नहीं कर दी थी कि तुम शैतान की उपासना न करना. निस्संदेह वह तुम्हारा स्पष्टतः शत्रु है. 61 और यह कि तुम मेरी ही उपासना करना यही सीधा मार्ग है.

62 (ख़ुदा आगे कहेगा,) शैतान ने तुममें से एक बड़े समूह को भटका दिया. तो क्या तुम समझते नहीं थे? 63 (आगे ख़ुदा कहेगा,) यह है जहन्नम जिसका तुमसे वादा किया जाता था. 64 अब अपने इन्कार के बदले जो तुम किया करते थे जहन्नम में दाख़िल हो जाओ. 65 आज हम इनके मुँह पर मुहर लगा देंगे. फिर इनके हाथ हमसे बोलेंगे और इनके पैर गवाही देंगे जो कुछ यह लोग करते थे.

66 और यदि हम चाहते तो उनकी आँखों को मिटा देते, फिर ये रास्ते की ओर लपकते तो इन्हें कहाँ से रास्ता दिखायी देता. 67 और यदि हम चाहते तो इन्हें इनके स्थान ही पर विकृत करके रख देते, फिर ये न आगे बढ़ सकते और न पीछे लौट सकते. 68 और हम जिस व्यक्ति को चाहें उसे लंबी उम्र देते हैं और उसे उसकी संरचना में उलटा कर देते हैं. तो क्या ये बुद्धि से काम नहीं लेते? 69 हमने पैग़ंबर को कविता नहीं सिखायी है और न यह उसे शोभा देती है. यह तो एक बोध-ग्रंथ है (अर्थात सत्य) स्पष्टतः बताने वाला क़ुरआन. 70 (पैग़ंबर पर क़ुरआन इसलिए प्रकट किया गया,) ताकि वह हर उस व्यक्ति को सचेत कर दे जो (मन से) ज़िंदा हो और सत्य का इन्कार करने वालों पर तर्क स्थापित हो जाए.

71 क्या ये लोग देखते नहीं कि हमने उनके लिए अपने हाथों की बनायी चीज़ों में से मवेशी निर्माण किए. और अब ये उनके मालिक हैं. 72 हमने उन मवेशियों को इनके अधीन कर दिया है. उनमें से किसी पर ये सवार होते हैं, किसी का ये मांस खाते हैं. 73 और इनके लिए उन मवेशियों में तरह-तरह के फ़ायदे हैं और पीने की चीज़ें भी. फिर क्या ये कृतज्ञ नहीं बनते? 74 लेकिन उन्होंने अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य बना लिए हैं, इस

उम्मीद से कि (उन उपास्यों के द्वारा) इन्हें सहायता प्राप्त हो. 75 वे इनकी कोई सहायता नहीं कर सकते, बल्कि ये (उपासक) उन (झूठे उपास्यों) की फ़ौज हैं, जिन्हें हाज़िर होना पड़ेगा. 76 तो (पैग़ंबर!) उनकी बात तुम्हें दुःखी न करे, हम जानते हैं जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ वे प्रकट करते हैं.

77 क्या इंसान देखता नहीं कि हमने उसका एक बूँद से सृजन किया, फिर वह खुला झगड़ालू बन गया (अर्थात अनुचित वादविवाद करने वाला बन गया). 78 वह हमारे लिए मिसाल बयान करता है और वह अपनी पैदाइश को भूल गया. इंसान कहता है कि हड्डियों को कौन जीवित करेगा जबकि वह चूर-चूर हो गयी हों. 79 कह दो, उन्हें वही जीवित करेगा जिसने उनका पहली बार सृजन किया. और वह हर प्रकार की रचना करना जानता है. 80 वही है (तुम्हारा रब) जिसने तुम्हारे लिए हरे-भरे पेड़ से आग पैदा कर दी. और तुम उससे आग जलाते हो. 81 क्या जिसने आसमानों तथा धरती का सृजन किया है, क्या वह इसकी सामर्थ्य नहीं रखता कि उन जैसों का (मृत्यु-पश्चात) सृजन कर दे? क्यों नहीं! वही है वास्तविक सृजनहार तथा ज्ञानवान. 82 उसका मामला तो यह है (वह ऐसा सामर्थ्यवान सृजनकर्ता है) कि जब वह किसी चीज़ (के सृजन) का इरादा करता है तो वह बस कह देता है कि ‘हो जा’, तो वह चीज़ अस्तित्वमान हो जाती है. 83 महिमावान है वह ज़ात जिसके हाथ में हर चीज़ का अधिकार है. और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे.

सूरह–37. अस–साफ़्फ़ात

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़तार दर क़तार पंक्तिबद्ध फ़रिश्तों की क़सम. 2 (फिर उनकी क़सम) जो डाँटने-फटकारने वाले हैं. 3 (फिर उनकी क़सम) जो उपदेश की बात सुनाने वाले हैं. 4 निस्संदेह तुम्हारा उपास्य बस एक ही है. 5 आसमानों तथा धरती का रब और जो कुछ उनके बीच है (उन सबका रब) और (वही) रब है पूर्वी दिशाओं का.

6 हमने दुनिया के आसमान को तारों की शोभा से सुसज्जित किया है. 7 और हर उद्दंड शैतान से उसे सुरक्षित भी कर दिया है. 8 ये शैतान सर्वोच्च दरबार (की बातें सुनने के लिए उस)की ओर कान नहीं लगा सकते. वे हर ओर से मारे जाते हैं. 9 (यह व्यवस्था है उन्हें) भगाने के लिए और (शाश्वत दुनिया में) उनके लिए एक अंतहीन यातना है. 10 लेकिन यदि कोई शैतान कोई बात, उचक ले तो एक दहकता हुआ अंगारा उसका पीछा करता है.

11 तो (पैग़ंबर!) इनसे पूछो कि उन्हें (दोबारा) निर्माण करने का कार्य अधिक कठिन (अर्थात अधिक बड़ा) है या उन चीज़ों का निर्माण करने का (कार्य अधिक बड़ा है,) जिन्हें हमने निर्माण कर रखा है (अर्थात आसमान व धरती जैसी रचनाएँ). इन्हें तो हमने चिपकते हुए गारे से पैदा किया है. 12 और तुम तो (ख़ुदा के करिश्मों पर) हैरान हो, ये उसका मज़ाक उड़ा रहे हैं. 13 जब उन्हें समझाया जाता है तो वे समझते नहीं. 14 और जब वे कोई निशानी देखते हैं तो वे उसे हँसी में टाल देते हैं. 15 और कहते हैं कि यह तो मात्र स्पष्ट जादू है. 16 क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएंगे तो फिर हम उठाए जाएंगे. 17 और क्या हमारे अगले बाप-दादा भी. 18 कहो कि हाँ, (तुम सब अवश्य उठाए जाओगे) और तुम अपमानित भी होंगे.

19 वह तो बस एक झिड़की होगी और यकायक वे अपनी आँखों से (वह सब कुछ) देखने लगेंगे (जिसकी उन्हें ख़बर दी जा रही थी). 20 वे कहेंगे, हाय, हमारा दुर्भाग्य! यह तो बदले का दिन है. 21 (कहा जाएगा,) यह वही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाया करते थे. 22 (हुक्म होगा,) घेर लाओ सब ज़ालिमों को और उनके साथियों को और उन उपास्यों को जिनकी वे 23 अल्लाह को छोड़कर (उपासना किया करते थे). फिर इन सबको जहन्नम का रास्ता दिखाओ. 24 और इन्हें तनिक ठहराओ, उनसे कुछ पूछना है. 25 तुम्हें अब क्या हो गया है कि तुम एक-दूसरे की सहायता नहीं करते. 26 बल्कि आज तो वे (बड़े) आज्ञाकारी हो गए हैं.

27 वे एक-दूसरे की ओर रुख करके पूछते हुए 28 कहेंगे, तुम हमारे पास दाहिनी ओर से चले आते थे. 29 वे उत्तर देंगे, नहीं, बल्कि तुम स्वयं ईमान लाने वाले नहीं थे. 30 और हमारा तुम पर कोई ज़ोर न था, तुम स्वयं ही विद्रोही लोग थे. 31 तो अब हम सब पर हमारे रब की बात पूरी होकर रही कि अब हमें (अपनी करतूतों का) प्रतिफल चखना ही है. 32 हमने तुम्हें बहकाया, निस्संदेह हम स्वयं बहके हुए थे. 33 तो वे सब उस दिन यातना में एक-दूसरे के सहभागी होंगे.

34 हम अपराधियों के साथ ऐसा ही करते हैं. 35 यही वे लोग थे कि जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के सिवा दूसरा कोई उपास्य नहीं है, तो वे घमंड करते थे. 36 और कहते थे, क्या हम एक उन्मादी कवी के कहने से अपने उपास्यों को छोड़ दें? 37 नहीं, (वह उन्मादी कवी नहीं, बल्कि वह अल्लाह का पैग़ंबर था) जो सत्य लेकर आया था और उसने (पूर्ववर्ती) पैग़ंबरों की पुष्टी की थी. 38 फिर (अपराधियों से कहा जाएगा, अब) तुम्हें दुखद यातना का मज़ा चखना होगा. 39 तुम्हें उसी का बदला दिया जा रहा है जो तुम करते थे.

40 लेकिन जो अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं (वे दुखद यातना से सुरक्षित रहेंगे). 41 उनके लिए नियत जीविका है. 42 जैसे, मेवे (,आदी) और वे (जन्नत में) अत्यंत आदरपूर्वक रखे जाएंगे. 43 नेमत भरी जन्नतों में. 44 जन्नती लोग तख़्तों पर आमने-सामने बैठे होंगे. 45 जन्नती लोगों के पास ऐसा प्याला लाया जाएगा जो बहती हुयी शराब से भरा जाएगा (अर्थात वह पेय सड़ी हुयी शराब नहीं होगा, बल्कि स्वच्छ व शुद्ध पेय होगा). 46 वह बिल्कुल साफ़ और चमकती शराब होगी (अर्थात पेय होगा), पीने वालों के लिए स्वादपूर्ण. 47 उस शराब से न तो नुक़सान होगा और न उनकी बुद्धि उससे ख़राब होगी. 48 और उनके पास निगाहें नीची रखने वाली, सुंदर आँखों वाली स्त्रियाँ होंगी. 49 ऐसी नाज़ुक (तथा निर्मल) मानो छिपे हुए अंडे हों.

50 फिर जन्नती लोग एक-दूसरे की ओर ध्यान देकर प्रश्न करने लगेंगे. 51 उनमें से एक कहने वाला कहेगा (दुनिया में) मेरा एक साथी था. 52 वह कहा करता था कि क्या तुम भी (मृत्यु-पश्चात जीवन जैसी चीज़ की) पुष्टि करने वालों में से हो? 53 क्या जब हम मर जाएंगे, फिर मिट्टी और हड्डियाँ हों जाएंगे तो क्या हमें (हमारे कर्मों का) बदला मिलेगा. 54 वह (अपने जन्नती साथियों से) कहेगा, क्या तुम देखना चाहोगे (कि अब वह किस अवस्था में है)? 55 फिर वह झाँकेगा तो उसे जहन्नम के बीच में देखेगा.

56 (वह अपने दुनिया के साथी को जहन्नम के बीच देखकर) कहेगा, अल्लाह की क़सम, तू तो मुझे नष्ट कर देने वाला था. 57 यदि मेरे रब की कृपा न होती तो आज मैं भी उन्हीं लोगों में से होता जो पकड़े हुए आए हैं. 58 (फिर अपने जन्नती साथियों से कहेगा,) क्या अब हमें कभी मरना नहीं है? 59 लेकिन पहली बार जो मौत हमें आनी थी, आ चुकी. और न हमें कोई यातना दी जाएगी. 60 निस्संदेह यही बड़ी सफलता है. 61 ऐसी ही सफलता के लिए कर्म करने वालों को कर्म करना चाहिए.

62 यह (जन्नत) का आतिथ्य अच्छा है या (जहन्नम में मौजूद) ज़क़्क़ूम का वृक्ष? 63 हमने उस पेड़ को ज़ालिमों के लिए यातना (का माध्यम) बना दिया है. 64 वह एक ऐसा पेड़ है जो जहन्नम के तल से निकलता है. 65 उसके गाभे ऐसे हैं मानों शैतानों के सिर हैं. 66 तो जहन्नमी लोग उसे खाएंगे और उसी से अपने पेट भरेंगे. 67 फिर उस पर पीने के लिए उन्हें (गंदगी) युक्त खौलता हुआ पानी मिलेगा. 68 फिर उसके बाद उनकी वापसी जहन्नम की आग की तरफ़ होगी. 69 (ये वे लोग हैं कि) उन्होंने अपने बाप-दादा को गुमराह पाया 70 और उन्हीं के पदचिह्नों पर चल पड़े. 71 हालाँकि उनसे पहले बहुत से लोग गुमराह हो चुके थे. 72 और हमने उनमें सचेत करने वाले (अर्थात पैग़ंबर) भेजे. 73 तो देखो उन लोगों का अंत कैसा हुआ जिन्हें सचेत किया गया था. 74 इस (अंजाम) से सिर्फ़ (वही लोग) बचे जो अल्लाह के चुने हुए बंदे थे.

75 और हमको (इससे पहले) नूह ने पुकारा था, तो देखो हम क्या ख़ूब पुकार सुनने वाले हैं. 76 हमने उसको और उसके लोगों को (अर्थात उसका साथ देने वालों को) बड़े दुःख से बचा लिया. 77 और हमने उसकी संतति को बाक़ी रखा. 78 और हमने उसके मार्ग पर बाद वालों में से एक समूह को छोड़ा. 79 सलाम है नूह पर तमाम दुनिया वालों में. 80 हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं. 81 निस्संदेह वह हमारे ईमान वाले बंदों में से था. 82 फिर हमने दूसरों को डुबो दिया (और उसे बचा लिया).

83 नूह के मार्ग पर चलने वालों में से इब्राहीम भी था. 84 (याद करो) जब वह अपने शुद्ध अंतःकरण के साथ अपने रब की ओर पलटा. 85 जबकि उसने अपने बाप से और क़ौम के लोगों से कहा, यह क्या चीज़ें हैं जिनकी तुम उपासना कर रहे हो? 86 क्या तुम अल्लाह को छोड़कर मनगढ़ंत उपास्यों को चाहते हो? 87 आख़िर सारे संसार के रब (अल्लाह) के बारे में तुम्हारा क्या विचार है? 88 फिर इब्राहीम ने तारों पर एक निगाह

डाली 89 और कहा, मैं अस्वस्थ हूँ. 90 फिर वे लोग उसे छोड़कर चले गए. 91 तो वह उनके बुतख़ाने की ओर पलटा, कहा, क्या तुम खाते नहीं हो. 92 तुम्हें क्या हुआ कि तुम कुछ बोलते नहीं. 93 फिर उन्हें मारा पूरी शक्ति के साथ. 94 फिर (जब लोगों को यह पता चला तो) वे इब्राहीम के पास दौड़ते हुए आए. 95 इब्राहीम ने कहा, क्या तुम लोग उन चीज़ों को पूजते हो जिन्हें तुम स्वयं तराशते हो? 96 हालाँकि अल्लाह ही ने सृजित किया है तुम्हें भी और उन चीज़ों को भी जिन्हें तुम बनाते हो. 97 इब्राहीम की क़ौम के लोगों ने कहा, इसके लिए एक अलाव (अर्थात अग्निकुंड) तैयार करो, फिर इसे दहकती हुयी आग में डाल दो. 98 उन्होंने उसके विरुद्ध एक कार्रवाई करनी चाही थी, लेकिन हमने उन्हीं को नीचा दिखा दिया. 99 (फिर इब्राहीम अपनी क़ौम से अलग होकर वहाँ से निकल गए तब) इब्राहीम ने कहा, मैं अपने रब की ओर जाता हूँ. वही मेरा मार्गदर्शन करेगा. 100 फिर (इब्राहीम ने ख़ुदा से दुआ की) ऐ मेरे रब! मुझे सदाचारी संतान प्रदान कर. 101 तो हमने उसको एक सहनशील लड़के की ख़ुशख़बरी दी.

102 जब वह लड़का उसके साथ दौड़-धूप करने की अवस्था को पहुँच गया तो (एक दिन) इब्राहीम ने उससे कहा, बेटा! मैं स्वप्न में देखता हूँ कि तुझे ज़बह कर रहा हूँ. तो तुम सोच लो कि तुम्हारा क्या विचार है. उसने कहा, अब्बाजान! जो कुछ आपको हुक्म दिया जा रहा है. उसे कर डालिए. अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वालों में से पाओगे. 103 अंततः जब दोनों ने अपने आपको समर्पित कर दिया. और इब्राहीम ने (अपने) बेटे को माथे के बल गिरा दिया. 104 हमने उसे पुकारा, ऐ इब्राहीम! 105 तुमने सपना सच कर दिखाया. निस्संदेह हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं. 106 यह एक खुली आज़माइश थी. 107 और हमने एक बड़ी क़ुर्बानी के बदले उसे छुड़ा लिया. 108 और हमने उसके मार्ग पर बाद वालों में से एक समूह को छोड़ा 109 सलामती हो इब्राहीम पर 110 हम भलाई करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं.

111 निस्संदेह इब्राहीम हमारे आस्थावान बंदों में से था. 112 और हमने उसको इसहाक़ की शुभ-सूचना दी, एक पैग़ंबर नेक लोगों में से. 113 और हमने उसको और इसहाक़ को अपनी कृपा प्रदान की. अब इन दोनों के वंश में अच्छे भी हैं और ऐसे भी हैं जो अपने आप पर स्पष्टतः अत्याचार करते हैं.

114 हमने मूसा और हारून पर उपकार किया. 115 हमने उन्हें और उनकी क़ौम को एक बड़ी विपत्ति से छुटकारा दिया. 116 हमने उनकी सहायता की तो वही प्रभावी रहे. 117 हमने उन्हें स्पष्ट ग्रंथ प्रदान किया 118 और उन्हें सीधा मार्ग दिखाया. 119 और हमने उनके मार्ग पर बाद वालों में से एक समूह को छोड़ा 120 सलामती हो मूसा और हारून पर. 121 हम भलाई करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं. 122 निस्संदेह वह दोनों हमारे ईमान वाले बंदों में से थे.

123 इलयास भी पैग़ंबरों में से था. 124 (याद करो) जब उसने अपनी क़ौम से कहा था कि क्या तुम लोग (ख़ुदा से) डरते नहीं हो? 125 तुम 'बअल' को पुकारते हो और सर्वश्रेष्ठ सृष्टा को छोड़ देते हो. 126 उस अल्लाह को जो तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे उन बाप-दादा का रब भी जो पहले गुज़र चुके. 127 लेकिन क़ौम के लोगों ने इलयास को झुठला दिया. तो निश्चय ही वे पकड़े जाने वालों में होंगे, 128 सिवाय अल्लाह के उन बंदों के जिन्हें उसने चुन लिया है. 129 और हमने उसके मार्ग पर बाद वालों में से एक समूह को छोड़ा 130 सलामती हो इलयास पर. 131 हम भलाई करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं. 132 निस्संदेह वह हमारे ईमान वाले बंदों में से था.

133 निस्संदेह लूत भी पैग़ंबरों में से था. 134 (याद करो) जब हमने उसे और उसके सभी लोगों को बचा लिया, 135 सिवाय एक बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में से थी. 136 फिर हमने (लूत के साथियों के सिवा) दूसरों को नष्ट करके रख दिया. 137

और (ऐ मक्का वालो!) तुम दिन के समय उनकी उजड़ी हुयी बस्तियों के पास से गुज़रते हो. 138 और रात के समय भी, तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?

139 निस्संदेह यूनुस भी पैग़ंबरों में से था. 140 (याद करो उस घटना को) जब वह भाग कर भरी हुयी नाव पर पहुँचा. 141 फिर पर्ची डाली गयी, तो वही दोषी निकला. 142 (फिर जब नाव वालों ने उसे समुद्र में फेंक दिया) तो मछली ने उसको निगल लिया. और (तब) वह स्वयं की मलामत कर रहा था. 143 यदि वह महिमागान करने वालों में न होता. 144 तो लोगों के उठाए जाने के दिन तक (अर्थात क़यामत के दिन तक) वह मछली के पेट में ही रहता. 145 फिर हमने उसको एक साफ़ मैदान में डाल दिया, जबकि व निढाल अवस्था में था. 146 फिर हमने उस पर एक बेलदार वृक्ष उगा दिया. 147 हमने यूनुस को एक लाख या उससे अधिक लोगों की ओर भेजा था. 148 (फिर जब वह क़ौम की ओर वापस आकर, उसने दोबारा संदेश-प्रसार किया) तो वे लोग ईमान लाए फिर हमने उन लोगों को लाभ उठाने दिया एक अवधी तक. 149 अब उनसे पूछो, क्या तुम्हारे रब के लिए तो बेटियाँ हों और उनके अपने लिए बेटे?

150 क्या हमने फ़रिश्तों को औरतें बनाया है? और क्या ये (बहुदेववादी फ़रिश्तों के निर्माण किए जाने को) देख रहे थे? 151 सुन लो, ये लोग मात्र मनगढ़ंत रूप से ऐसा कहते हैं 152 कि अल्लाह संतान रखता है. वास्तविकता यह है कि ये झूठे हैं.

153 क्या अल्लाह ने बेटों की तुलना में बेटियों को पसंद किया है? 154 तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा फ़ैसला करते हो? 155 क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? 156 क्या तुम्हारे पास कोई स्पष्ट प्रमाण है? 157 तो लाओ अपनी वह किताब यदि तुम सच्चे हो.

158 और उन्होंने अल्लाह और जिन्नों के बीच भी नाता जोड़ रखा है, हालाँकि जिन्न भली-भाँति जानते हैं कि वे अवश्य पकड़ कर हाज़िर किए जाएंगे. 159 अल्लाह पाक है उन बातों से जो ये लोग बयान करते हैं. 160 लेकिन वे लोग जो अल्लाह के चुने हुए बंदे

हैं (वे इनसे पूर्णतः भिन्न हैं). 161 (अल्लाह से झूठी बातों का संबंध जोड़ने वालो!) तुम और वे जिन्हें तुम पूजते हो, 162 अल्लाह से किसी को फेर नहीं सकते (अर्थात बहकाकर किसी बंदे को ख़ुदा से दूर नहीं कर सकते). 163 सिवाय उसके जो जहन्नम की भड़कती आग में पड़ने वाला हो. 164 (फ़रिश्ते तो कहते हैं कि) हममें से प्रत्येक का एक निर्धारित स्थान है. 165 हम अल्लाह के समक्ष मात्र पंक्तिबद्ध रहने वाले हैं. 166 और हम (सदैव) उसका महिमागान करते रहते हैं.

167 और ये लोग कहा करते थे. 168 यदि हमारे पास पहले के लोगों की शिक्षा होती. 169 तो हम अल्लाह के चुने हुए बंदे होते. 170 (लेकिन जब उनके पास ख़ुदा की किताब आयी) तो उन्होंने उसको झुठला दिया. अब बहुत जल्द इन्हें (झुठलाने का अंजाम) मालूम हो जाएगा. 171 और अपने भेजे हुए बंदों के लिए (अर्थात पैग़ंबरों के लिए) हमारा यह निर्णय पहले ही हो चुका है 172 कि निश्चित रूप से वही प्रभावी होंगे. 173 और निश्चय ही हमारी ही सेना विजय प्राप्त करने वाली है. 174 तो (पैग़ंबर!) एक अवधी तक इन्हें इनके हाल पर छोड़ दो. 175 और देखते रहो, ये (इन्कार करने वाले) भी जल्द ही (अपना अंजाम) देख लेंगे.

176 क्या वे हमारी (ओर से उन पर) यातना के लिए जल्दी मचा रहे हैं. 177 जब वह यातना उनके प्रांगण में उतरेगी, तो बड़ी ही बुरी होगी उन लोगों की वह सुबह जिन्हें सचेत किया जा चुका है. 178 बस, ज़रा इन्हें कुछ मुद्दत के लिए छोड़ दो. 179 और देखते रहो, शीघ्र ही वे स्वयं देख लेंगे. 180 पाक है तुम्हारा रब! जो इज़्ज़त का मालिक है, उन सारी बातों से (पाक) जो ये (इन्कार करने वाले) लोग उसके संबंध से बयान करते हैं. 181 सलामती है पैग़ंबरों पर.182 समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए जो समस्त सृष्टि का रब है.

सूरह–38. सॉद०

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 सॉद०. क़सम है जिक्र (उपदेश) वाले क़ुरआन की. 2 बल्कि जिन लोगों ने इन्कार किया वह घमंड और हठधर्मिता में लिप्त हैं. 3 उनसे पहले हमने कितनी ही (इन्कारी) क़ौमें नष्ट कर दी हैं. (तो जब उनकी शामत आयी) तो वे पुकारने लगे, लेकिन वह समय बचने का न था.

4 और उन लोगों को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि एक डराने वाला स्वयं उन्हीं में से आ गया. इन्कार करने वालों ने कहा, यह जादूगर है, झूठा है. 5 क्या इसने इतने ख़ुदाओं की जगह एक ख़ुदा बना डाला? यह तो बड़ी विचित्र बात है. 6 क़ौम के सरदार यह कहते हुए चल खड़े हुए, चलो, अपने उपास्यों पर जमे रहो, इसके पीछे (इस आदमी का) कोई स्वार्थ है. 7 यह बात तो हमने पिछले पंथ में नहीं सुनी. यह मात्र एक मनगढ़ंत बात है. 8 क्या हम सब में बस यही एक था जिस पर उपदेश-रूपी आसमानी-संदेश अवतरित किया गया. बल्कि (पैग़ंबर! वास्तविकता यह है कि) ये लोग मेरे उपदेश के संबंध से संदेह में हैं. नहीं, बल्कि हक़ीक़त यह है कि उन्होंने मेरी (ओर से) यातना का मज़ा चखा ही नहीं.

9 क्या उनके पास तुम्हारे रब की दयालुता के ख़ज़ानें हैं जो प्रभुत्वशाली तथा दाता है? 10 क्या वे आसमानों तथा धरती और जो कुछ उनके बीच में है उसके सत्ताधीश हैं? (यदि ऐसा है तो) चाहिए कि वे रस्सियों (या सीढ़ियों) द्वारा ऊपर चढ़ जाएँ. 11 यह तो जत्थों में से एक जत्था है जो इसी जगह मात खाने वाला है (अर्थात मक्कावासी क़ुरैश का जत्था). 12 इनसे पहले नूह की क़ौम और आद और मेखों वाले फ़िरऔन ने झुठलाया. 13 और झुठलाया क़ौमे-समूद ने और लूत की क़ौम ने और अयका वालों ने. यह लोग बड़े-बड़े समूह थे. 14 उन सब ने पैग़ंबरों को झुठलाया तो उन्हें मेरी (ओर से) यातना

पहुँचकर रही. 15 ये लोग तो बस एक चिंघाड़ की प्रतीक्षा में हैं, जिसके बाद कोई ढील नहीं. 16 वे कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हिसाब के दिन से पहले ही हमारा हिस्सा हमें जल्दी से दे दे.

17 (पैग़ंबर!) वे जो कुछ कहते हैं उस पर धैर्य से काम लो और हमारे बंदे दाऊद को याद करो जो निस्संदेह सामर्थ्य वाला और अपने रब की तरफ़ बहुत ज़्यादा रुजू करने वाला था. 18 हमने पहाड़ों को उसके साथ वशीभूत कर रखा था कि सुबह व शाम वे उसके साथ महिमागान करते थे. 19 और पक्षियों को भी जो इकट्ठा होकर उसके महिमागान में शामिल होते. सब के सब अल्लाह की ओर बहुत ज़्यादा रुजू रहते थे. 20 हमने दाऊद की सत्ता सुदृढ़ कर दी थी और हमने उसे बुद्धिमानी (wisdom) तथा मामलों का निर्णय करने की योग्यता प्रदान की थी.

21 फिर क्या तुम्हें उन विवादियों (मुक़द्दमे वालों) की ख़बर पहुँची है, जबकि वे दीवार पर चढ़कर (दाऊद के) उपासना-कक्ष में आ पहुँचे थे? 22 जब वे दाऊद के पास पहुँचे तो (उन्हें देखकर) वह घबरा गया. उन्होंने कहा, आप घबराएँ नहीं, हम दो पक्ष हैं. एक ने दूसरे पर अत्याचार किया है तो आप हमारे बीच सच्चाई के साथ फ़ैसला कर दीजिए. हम पर अन्याय न कीजिए और हमें सीधा रास्ता बताइए.

23 यह मेरा भाई है. इसके पास निन्यानवे दुंबियाँ हैं और मेरे पास मात्र एक दुंबी है तो यह कहता है कि वह एक दुंबी भी मेरे हवाले कर दे. और बातचीत में उसने मुझे दबा लिया है. 24 (इस पर) दाऊद ने कहा, इसने तुम्हारी दुंबी को अपने दुंबियों में मिलाने की माँग करके वास्तव में तुम पर अत्याचार किया है. वास्तविकता यह है कि बहुत से साथ रहने वाले लोग एक-दूसरे पर ज़ुल्म किया करते हैं, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाते हैं और अच्छे कर्म करते हैं. लेकिन ऐसे लोग बहुत कम हैं. (यह कहते हुए) दाऊद समझ गया कि यह तो हमने उसकी परीक्षा ली है. तो उसने अपने रब से क्षमा माँगी और

सजदे में गिर कर हमारी ओर रुजू हुआ. 25 फिर हमने इस बारे में उसे क्षमा कर दिया. निश्चय ही हमारे यहाँ उसके लिए सामीप्य वाला स्थान है और उत्तम ठिकाना है.

26 (हमने उससे कहा,) ऐ दाऊद! हमने तुम्हें धरती में सत्ताधारी बनाया है. तो तुम लोगों के बीच न्याय के साथ निर्णय करो और अपनी इच्छा का अनुपालन न करो कि वह तुम्हें अल्लाह के मार्ग से भटका देगी. जो लोग अल्लाह के मार्ग से भटकते हैं, निश्चय ही उनके लिए सख़्त सज़ा है. इस कारण से कि वे हिसाब के दिन को भूले रहे. 27 हमने धरती तथा आसमान और जो कुछ उनके बीच में है निरुद्देश्य नहीं बनाया. (उद्देशपूर्ण रचना को संयोग समझना) यह तो उन लोगों का भ्रम है जिन्होंने सत्य का इन्कार किया है. तो जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया उनके लिए जहन्नमरूपी सर्वनाश है. 8 क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और भले कर्म किए उनके समान कर देंगे जो धरती में उपद्रव मचाने वाले हैं? क्या हम सदाचारियों को दुराचारियों जैसा कर देंगे? 29 (पैग़ंबर!) यह (क़ुरआन) कृपा (तथा मार्गदर्शन) से युक्त किताब है जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसके संदेशों पर चिंतन करें, ताकि बुद्धि रखने वाले इससे शिक्षा ग्रहण करें.

30 और हमने दाऊद को सुलैमान प्रदान किया. जो (हमारा) बेहतरीन बंदा था. वह अपने रब की ओर बहुत ज़्यादा रुजू करने वाला था. 31 (याद करो) जब एक शाम के समय उसके सामने सधाए हुए द्रुतगामी घोड़े हाज़िर किए गए. 32 तो उसने कहा, मुझे अच्छी चीज़ों का (हमेशा) आकर्षण रहा है, क्योंकि वे मुझे मेरे रब की याद दिलाने के कारक हैं. (वह घोड़ों का निरीक्षण करता रहा,) यहाँ तक कि घोड़े (दौड़ते हुए) ओट में छिप गए. 33 उसने हुक्म दिया कि उन्हें मेरे पास वापस लाओ! फिर वह उनकी पिंडलियों और गरदनों पर हाथ फेरने लगा.

34 और हमने सुलैमान को परीक्षा में डाला. हमने उसके तख़्त पर एक धड़ डाल दिया. फिर उसने रुजूअ किया. 35 उसने कहा, ऐ मेरे रब! मुझे क्षमा कर दे और मुझे ऐसी बादशाही प्रदान कर जो मेरे बाद किसी को प्राप्त न हो. निस्संदेह तू ही बड़ा दाता है. 36 तो हमने हवा को उसके क़ाबू में कर दिया, जो उसके आदेश से नर्मी के साथ चलती थी, जिधर वह चाहता था. 37 और हमने जिन्नों को भी उसका आज्ञापालन करने वाला बना दिया, जो (उसके लिए) हर तरह का निर्माण करते और गोता लगाते थे. 38 और (कुछ जिन्न ऐसे थे) जो जज़ीरों में जकड़े हुए रहते थे. 39 (हमने सुलैमान से कहा,) यह (तुम्हें) हमारी देन है तो जिसे चाहे दो या (अपने पास) रोके रखो, कोई हिसाब नहीं. 40 निश्चय ही उसके लिए हमारे यहाँ समीपता वाला स्थान है और सर्वश्रेष्ठ परिणाम.

41 और हमारे बंदे अय्यूब को भी याद करो कि जब उसने अपने रब को पुकारा कि शैतान ने मुझे दुःख और पीड़ा पहुँचा रखी है. 42 (इस पर हमने उसे कहा,) अपना पाँव धरती पर मारो. यह है थंडा पानी नहाने के लिए और पीने के लिए.

43 फिर हमने उसे उसके परिजन वापस दिए और उनके साथ उतने ही और, अपनी ओर से दयालुता के रूप में. (इसमें) शिक्षा है बुद्धि वालों के लिए. 44 और (हमने उससे कहा,) सीकों का एक मुट्ठा लो और उससे मार दो और क़सम न तोड़ो. निस्संदेह हमने उसे धैर्यवान पाया, बेहतरीन बंदा, अपने रब की ओर बहुत रुजू करने वाला.

45 और हमारे बंदे इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब को याद करो जो हाथों वाले और आँखों वाले थे (अर्थात शारीरिक सामर्थ्य तथा दूरदृष्टि रखने वाले थे). 46 हमने उन्हें एक विशुद्ध गुण के आधार पर चुन लिया था और वह मृत्यु-पश्चात लोक की याद थी. 47 वे हमारे यहाँ चुने हुए नेक लोगों में से हैं. 48 और इस्माईल और अल-यसअ और ज़ुल-किफ़्ल को याद करो. सभी भले लोगों में से थे. 49 यह क़ुरआन तो उपदेश-ग्रंथ है. और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहने वालों के लिए अच्छा ठिकाना

है. 50 (अल्लाह के प्रति सचेत रहने वालों के लिए) सदैव रहने की जन्नतें हैं, जिनके दरवाज़े उनके लिए खुले होंगे. 51 उनमें वे तकिये लगाए बैठे होंगे. बहुत से फल और पेय मँगवाते होंगे. 52 उनके पास शर्मीली और समान आयु वाली पत्नियाँ होंगी. 53 यह है वह चीज़ जिसका तुमसे हिसाब के दिन के लिए वादा किया जाता है. 54 यह हमारा दिया है जो कभी ख़त्म न होगा (अर्थात जन्नत की नेमतें).

55 एक ओर यह है तो (दूसरी ओर) विद्रोहियों के लिए बुरा ठिकाना है, 56 जहन्नम जिसमें वे प्रवेश करेंगे, जो बहुत ही बुरी ठहरने की जगह है. 57 यह खौलता हुआ पानी और पीप है तो यह लोग इन्हें चखें. 58 और इस प्रकार दूसरी और भी (यातना-दायी) चीज़ें होंगी. 59 (पहले दाख़िल हुए जहन्नमी लोग एक-दूसरे से कहेंगे) यह एक भीड़ है जो तुम्हारे साथ घुसी चली आ रही है. कोई आवभगत उनके लिए नहीं. वे तो आग में पड़ने वाले हैं. 60 (अनुयायी अपने भ्रष्ट नायकों से) कहेंगे, नहीं, बल्कि तुम, तुम्हारे लिए कोई स्वागत नहीं. तुम्हीं तो यह हमारे समक्ष लाए हो. कैसी बुरी है यह ठहरने की जगह. 61 फिर वे कहेंगे, ऐ हमारे रब! जिसने हमारे आगे यह (मुसीबत) लायी है, तू उसे आग में दोहरी यातना दे. 62 जहन्नमी लोग कहेंगे, क्या बात है कि हम उन लोगों को यहाँ नहीं देख रहे हैं जिन्हें हम (दुनिया में) बुरा समझते थे. 63 क्या हमने यूँ ही उनका मज़ाक़ बनाया था या वे नज़रों से ओझल हैं. 64 आग वालों का परस्पर झगड़ना, निस्संदेह घटित होने वाली सत्य घटना है.

65 (पैग़ंबर!) उनसे कहो, मैं तो मात्र (यह) सचेत करने वाला हूँ कि कोई उपास्य नहीं सिवाय अल्लाह के, जो अकेला है, सब पर क़ाबू रखने वाला है. 66 वह रब है आसमानों और धरती का और उन सारी चीज़ों का जो उनके बीच हैं. वह सर्व-शक्तिमान है और क्षमाशील है. 67 कह दो, यह एक बड़ी ख़बर है. 68 जिससे तुम मुँह फेर रहे हो. 69 मुझे उच्च लोक वालों की कोई ख़बर नहीं, जब वे (उच्च लोक वाले) परस्पर वाद-

विवाद कर रहे थे. 70 मेरे पास आसमानी संदेश सिर्फ़ इसलिए आता है कि मैं स्पष्ट रूप में सचेत करने वाला हूँ.

71 (याद करो) जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा, मैं मिट्टी से एक मनुष्य बनाने वाला हूँ. 72 तो जब मैं उसको ठीक कर दूँ (अर्थात पूर्णतः बना दूँ) और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम उसके आगे सजदे में गिर जाना. 73 (तो ख़ुदा के आदेश का पालन करते हुए) सभी फ़रिश्तों ने सजदा किया. 74 लेकिन इबलीस कि उसने घमंड किया और इन्कार करने वालों में से बन गया. 75 अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ इबलीस! किस चीज़ ने तुझे रोक दिया कि तू उसे सजदा करे जिसे 'मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया' क्या तूने घमंड किया या तू कोई ऊँची हस्ती है? 76 (इस पर) इबलीस ने कहा, मैं आदम से श्रेष्ठ हूँ. तूने मुझको आग से बनाया है और इसको मिट्टी से. 77 ख़ुदा ने कहा, तू यहाँ से निकल जा (अब) तू तिरस्कृत है. 78 और तुझ पर मेरी ओर से फिटकार है बदले के दिन तक.

79 इबलीस ने कहा, ऐ मेरे रब! मुझे मुहलत दे उस दिन तक जब लोग पुनः उठाए जाएंगे. 80 अल्लाह ने फ़रमाया, तुझे मुहलत दी गयी. 81 एक निर्धारित समय के लिए. 82 शैतान ने (आगे) कहा, (ऐ मेरे रब!) तेरी इज़्ज़त की क़सम मैं उन सबको (अर्थात आदम की सारी संतान को) भटका कर रहूँगा. 83 सिवाय तेरे उन बंदों के जिन्हें तूने खास कर लिया है. 84 अल्लाह ने फ़रमाया, सत्य यह है और मैं सत्य ही कहता हूँ. 85 कि मैं जहन्नम को तुझसे और उन सब लोगों से भर दूँगा जो उनमें से तेरा अनुसरण करेंगे.

86 (पैग़ंबर!) कह दो, मैं इस पर तुमसे कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता और न मैं बनावटी लोगों में से हूँ. 87 यह क़ुरआन तो बस एक उपदेश है समस्त संसार वालों के लिए. 88 और तुम शीघ्र ही इसकी दी हुयी ख़बर को जान लोगे.

सूरह–39. अज़–ज़ुमर

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 यह किताब अल्लाह की ओर से उतारी गयी है जो प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है.
2 (पैग़ंबर!) निस्संदेह! हमने यह किताब तुम्हारी ओर सत्य के साथ अवतरित की है. तो
तुम अल्लाह ही की उपासना करो, आस्था को शुद्ध रूप से उसी के लिए रखते हुए
(अर्थात उसी को पूर्णतः समर्पित होकर उसकी उपासना करो). 3 जान रखो कि शुद्ध
आस्था अल्लाह ही का हक़ है (अर्थात शुद्ध एवं संपूर्ण समर्पण अल्लाह ही का हक़ है.).
जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरे संरक्षक बना रखे हैं, (वे कहते हैं) कि हम तो उनकी
उपासना मात्र इसलिए करते हैं कि वे अल्लाह तक हमारी पहुँच करा दें. निस्संदेह अल्लाह
उनके बीच उस बात का निर्णय कर देगा जिसमें वे मतभेद कर रहे हैं. अल्लाह ऐसे व्यक्ति
को सन्मार्ग नहीं दिखाता जो झूठा तथा सत्य का इन्कारी हो.

4 यदि अल्लाह चाहता कि वह बेटा बनाए तो अपनी सृष्टि में से जिसको चाहता चुन
लेता. वह पाक है. वह अल्लाह है, वह अकेला है और सब पर प्रभुत्व रखने वाला. 5 उस
(प्रभुत्वशाली) ने आसमानों तथा धरती का अर्थपूर्ण उद्देश्य के साथ सृजन किया. वही
दिन पर रात और रात पर दिन को लपेटता है. उसी ने सूरज व चाँद को (अपने नियमों
के) अधीन कर रखा है कि हर एक निर्धारित अवधी के अनुसार चलता जा रहा है. सुन
लो कि वही प्रभुत्वशाली है, क्षमा करने वाला है.

6 अल्लाह ने तुम्हें एक जान से बनाया, फिर उसने उसी से उसका जोड़ा बनाया.
और उसी ने तुम्हारे लिए मवेशियों में से आठ नर व मादा बनाए. वह तुम्हारी माँओ के
पेटों में, तीन अंधकारमय पर्दों के भीतर तुम्हें एक के बाद दूसरा रूप देता चला जाता है.
यही अल्लाह तुम्हारा रब है. बादशाही उसी की है. उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं फिर तुम
कहाँ से फेरे जाते हो?

7 (ऐ लोगो!) यदि तुम इन्कार करो तो अल्लाह तुमसे निस्पृह है (अर्थात वह इसका ज़रूरतमंद नहीं कि तुम उसको मानो). लेकिन वह बंदों की ओर से इन्कार को पसंद नहीं करता. यदि तुम कृतज्ञता का परिचय दो तो उसे वह तुम्हारे लिए पसंद करता है. कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा. फिर तुम्हारे रब ही की ओर है तुम्हारी वापसी. फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या करते रहे हो. वह तो दिलों का हाल तक जानता है.

8 इंसान पर जब कोई विपत्ति आती है तो वह अपने रब की ओर एकाग्र होकर उसे पुकारने लगता है. फिर जब वह उसे अपनी ओर से नेमत प्रदान कर देता है तो वह उसे भूल जाता है जिसके लिए वह उसे पहले पुकार रहा था. और दूसरों को अल्लाह का समकक्ष ठहराने लगता है, ताकि वह (दूसरों को भी) उसके मार्ग से भटका दे. (पैग़ंबर!) उससे कह दो, तू थोड़े दिन अपने इन्कार से लाभ उठा ले. निस्संदेह तू आग वालों में से
है. 9 भला कोई व्यक्ति रात की घड़ियों में सजदा करता है (और इबादत में ख़ुदा के सामने) खड़ा होता है, पूर्ण समर्पण के साथ. और वह मृत्यु-पश्चात (हिसाब) का भय रखता हो और वह अपने रब से दयालुता की आशा रखता हो (क्या वह उस जैसा हो सकता है जो सत्य का इन्कारी है?). (पैग़ंबर!) इनसे पूछो, क्या जानने वाले और न जानने वाले दोनों बराबर हो सकते हैं? उपदेश तो बुद्धि वाले लोग ही ग्रहण करते हैं.

10 (पैग़ंबर! मेरे बंदों को मेरा यह संदेश) बता दो, ऐ मेरे बंदों जो ईमान लाए हो! अपने रब के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो. जो लोग इस संसार में भलाई करेंगे उनके लिए भला बदला है. और अल्लाह की धरती विशाल है. सब्र करने वालों को उनका बदला बेहिसाब दिया जाएगा.

11 (पैग़ंबर!) कह दो, मुझे यह आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह ही की उपासना करूँ उसी के लिए आस्था को पूर्णतः समर्पित करते हुए.
12 और मुझे आदेश दिया गया

है कि मैं सबसे पहले स्वयं आज्ञाकारी बनूँ. 13 कहो, यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ तो मैं एक भयानक दिन की यातना से डरता हूँ. 14 कहो कि मैं सिर्फ़ अल्लाह की उपासना करता हूँ उसी के लिए अपनी आस्था को पूर्णतः समर्पित करते हुए. 15 तुम उसके सिवा जिस-(जिस) की उपासना करना चाहो, करते रहो (तुम बहुत जल्द उसके अंजाम को जान लोगे). (पैग़ंबर!) कह दो कि वास्तविक घाटे वाले तो वे लोग हैं जिन्होंने अपने आपको और अपने घर वालों को क़यामत के दिन घाटे में डाला. ख़ूब सुन रखो, यही स्पष्ट घाटा है. 16 (जो लोग शाश्वत-रूपी घाटे में पड़ेंगे) उनके ऊपर आग की छतरियाँ छायी होंगी और उनके नीचे भी आग होगी. यही वह चीज़ है जिससे अल्लाह अपने बंदों को डराता है. ऐ मेरे बंदों! मेरा डर रखो!

17 जो लोग शैतान की इबादत से बचे और अल्लाह की ओर एकाग्र हुए, उनके लिए शुभ-सूचना है. तो (पैग़ंबर!) मेरे उन बंदों को शुभ-सूचना दे दो. 18 जो बात को ध्यान से सुनते हैं, फिर उसके श्रेष्ठ अर्थ का अनुसरण करते हैं. यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन प्रदान किया है; और यही सूझ-बूझ वाले लोग हैं.

19 तो क्या वह व्यक्ति जिस के लिए यातना का फ़ैसला हो चुका है (उसे कौन बचा सकता है)? क्या तुम उसे बचा सकते हो जो आग में पड़ चुका? 20 लेकिन जो लोग अपने रब के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहे, उनके लिए ऊँचे भवन हैं, (उनमें) मंज़िल पर मंज़िल बनी हुयी है. उनके नीचे नहरें बह रही होंगी. यह अल्लाह का वादा है और अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध नहीं करता.

21 क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया. फिर उस पानी को धरती के स्रोतों में प्रवाहित कर दिया. फिर वह उससे विभिन्न प्रकार की खेतियाँ निकालता है. फिर वह (लहलहाती खेतियाँ) सूख जाती हैं. फिर तुम देखते हो कि वह पीली पड़ गयीं. फिर वह उसे चूर्ण-विचूर्ण कर देता है. निस्संदेह इसमें शिक्षा-सामग्री है बुद्धि वालों के लिए.

22 क्या वह व्यक्ति जिसके दिल (के द्वार) को अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया तो वह अपने रब की ओर से (प्राप्त) एक रोशनी पर चल रहा है (क्या उस जैसा हो सकता जिसके दिल का द्वार सत्य के लिए बंद है)? विनाश है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह के उपदेश के संबंध से कठोर हो गए. यह लोग स्पष्ट पथभ्रष्टता में हैं. 23 अल्लाह ने सर्वोत्तम वाणी अवतरित की है, एक ऐसी किताब परस्पर मिलती-जुलती, बार-बार दोहरायी हुयी. इससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने रब से डरने वाले हैं. फिर उनके शरीर तथा उनके दिल अल्लाह की याद की ओर झुक जाते हैं. यह अल्लाह का मार्गदर्शन है. इसके द्वारा वह मार्ग दिखाता है जिसको वह चाहता है. जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट कर दे उसका कोई मार्गदर्शक नहीं.

24 वह व्यक्ति जो क़यामत के दिन अपने चेहरे को बुरी यातना की ढाल बनाएगा (क्या उस व्यक्ति जैसा होगा जो बुरी यातना से सुरक्षित होगा)? और अत्याचारियों से कह दिया जाएगा, अब चखो मज़ा उस कमाई का जो तुम कर रहे थे. 25 जो लोग इनसे पहले हुए वे भी झुठला चुके हैं. तो उन पर यातना वहाँ से आयी जिसका उन्हें कोई गुमान भी न था. 26 तो अल्लाह ने उन्हें सांसारिक जीवन में भी अपमान का स्वाद चखाया और मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन की यातना और भी बड़ी है. काश कि यह लोग जानते!

27 हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर प्रकार की मिसाल बयान की है, ताकि वे उपदेश ग्रहण करें. 28 यह अरबी क़ुरआन है, इसमें कोई टेढ़ नहीं, ताकि लोग सचेत हो जाएँ. 29 अल्लाह एक मिसाल बयान करता है (तो इसे ध्यान से सुनो). एक (ग़ुलाम) व्यक्ति तो वह है, जिसके मालिक होने में कई व्यक्ति साझी हैं — आपस में खींचा-तानी करने वाले. और एक (ग़ुलाम) व्यक्ति ऐसा है, जो पूरा का पूरा एक ही स्वामी का दास है. क्या इन दोनों की दशा समान हो सकती है? सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, लेकिन उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते. 30 (पैग़ंबर!) तुम्हें भी मरना है और इन

(इन्कारी) लोगों को भी मरना है. 31 फिर तुम लोग क़यामत के दिन अपने रब के सामने अपना-अपना मुक़द्दमा पेश करोगे.

पारा – 24 32 उस व्यक्ति से अधिक अत्याचारी कौन होगा, जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा और सच्चाई को झुठला दिया जब वह उसके पास आयी. क्या ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम न होगा.

33 और जो व्यक्ति सच्चाई लेकर आया और जिसने उसकी पुष्टि की, तो यही वे लोग हैं जो अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहने वाले हैं. 34 उनके लिए उनके रब के पास वह सब है जो वे चाहेंगे. यह बदला है भलाई करने वालों का. 35 ताकि अल्लाह उनसे उनके बुरे कर्मों को दूर कर दे. और जो उत्तम कर्म वे करते रहे उसका उन्हें प्रतिफल प्रदान करे.

36 (पैग़ंबर!) क्या अल्लाह अपने बंदों के लिए पर्याप्त नहीं है? ये (इन्कारी) लोग उसके सिवा दूसरों से तुम्हें डराते हैं. हालाँकि अल्लाह जिसे भटका दे उसे कोई मार्ग दिखाने वाला नहीं. 37 और जिसे अल्लाह मार्ग दिखाए उसे गुमराह करने वाला भी कोई नहीं.

38 यदि इन लोगों से तुम पूछो कि आसमानों तथा धरती का किसने सृजन किया है? तो वे अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने. इनसे पूछो, तुम (इस संबंध से) क्या सोचते हो कि यदि अल्लाह मुझे कोई कष्ट पहुँचाना चाहे, तो ये उपास्य जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो, क्या उसके पहुँचाए हुए कष्ट को दूर कर सकते हैं? अथवा अल्लाह मुझ पर कोई कृपा करना चाहे तो क्या ये उसकी कृपा को रोकने वाले बन सकते हैं? इनसे कह दो, अल्लाह मेरे लिए पर्याप्त है. भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं. 39 (पैग़ंबर!) कह दो, ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम अपने स्थान पर कर्म किए जाओ. मैं भी (अपने स्थान पर) कर्म कर रहा हूँ. तो तुम शीघ्र जान लोगे. 40 कि किस पर अपमानित करने वाली यातना आती है. और (तुम देखोगे कि) किस पर वह यातना आती है जो कभी

टलने वाली नहीं. 41 (पैग़ंबर!) हमने लोगों के मार्गदर्शन के लिए यह किताब सत्य के साथ तुम पर उतारी है. तो अब जो सीधा मार्ग अपनाएगा तो अपने ही लिए अपनाएगा और जो भटकेगा तो उसके भटकने का वबाल उसी पर होगा. तुम उनके ज़िम्मेदार नहीं हो.

42 वह अल्लाह ही है जो प्राणों को उनकी मृत्यु के समय ग्रस्त कर लेता है. और जिसकी मृत्यु का समय नहीं आया उसे उसकी नींद की अवस्था में ग्रस्त कर लेता है. फिर वह उसे रोक लेता है जिसकी मृत्यु का निर्णय वह कर चुका है. और दूसरों को एक नियत समय के लिए छोड़ देता है. निस्संदेह इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो चिंतन करने वाले हैं.

43 क्या उन्होंने अल्लाह को छोड़कर दूसरों को सिफ़ारिशी बना रखा है? (उनसे) पूछो, क्या यद्यपि वे न किसी चीज़ का अधिकार रखते हों और न कुछ समझते हों (तब भी क्या उन्हें सिफ़ारिशी बनाते हो)? 44 (पैग़ंबर!) उनसे कह दो, सिफ़ारिश सारी की सारी अल्लाह के अधिकार में है. आसमानों तथा धरती की सत्ता उसी की है. फिर तुम उसी की और लौटाए जाओगे. 45 और जब अकेले अल्लाह की याद की जाती है, तो जो लोग मृत्यु-पश्चात जीवन पर विश्वास नहीं रखते, उनके दिल (अल्लाह की चर्चा से) कुढ़ते हैं. और जब अल्लाह के सिवा दूसरों का चर्चा होता है तो उस समय वे ख़ुशी से खिल उठते हैं. 46 कहो! ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के बनाने वाले, परोक्ष तथा प्रत्यक्ष के जानने वाले. तू अपने बंदों के बीच उस चीज़ का निर्णय करेगा जिसमें वे मतभेद कर रहे हैं. 47 यदि इन अत्याचारियों के पास वह सब कुछ हो जो धरती में है और उतना ही और भी हो, तो ये क़यामत के दिन की बुरी यातना से बचने के लिए सब कुछ मुक्ति-धन के रूप में दे दें (तब भी वे बच नहीं पाएंगे). वहाँ अल्लाह की ओर से उनके सामने वह कुछ आएगा जिसका उन्हें गुमान भी न था.

48 और जो बुरे कर्म उन्होंने कमाए थे उनके समक्ष आ जाएंगे. और वह चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसका वे उपहास करते थे.

49 तो जब इंसान को कोई कष्ट पहुँचता है तो वह हमें पुकारता है. फिर जब हम अपनी ओर से दयालुता प्रदान कर देते हैं, तो वह कहने लगता है कि यह तो मुझे मेरे ज्ञान के कारण प्राप्त हुआ है. नहीं, बल्कि यह तो एक परीक्षा है. लेकिन उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते. 50 यह (कृतघ्नतापूर्वक) बात उनसे पहले वाले लोग भी कह चुके हैं. तो जो कुछ वे कमाते थे वह उनके काम न आया. 51 तो उन पर वह बुराइयाँ आ पड़ीं जो उन्होंने कमाई थीं. और इनमें सेभी जो अत्याचारी हैं, उनके सामने भी उनकी (बुरी) कमाई के बुरे परिणाम शीघ्र ही आएंगे. वे हमें विवश करने वाले नहीं है. 52 क्या उन्हें मालूम नहीं कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है जीविका में वृद्धि कर देता है और जिसके लिए चाहता है, कम कर देता है. निस्संदेह इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं.

53 (पैग़ंबर! मेरी ओर से मेरा यह संदेश) पहुँचा दो कि ऐ मेरे बंदों! जिन्होंने अपने आप पर अत्याचार किया है अल्लाह की दयालुता से निराश न हो. निस्संदेह अल्लाह (शुद्ध रूप से उसकी ओर पलटने वाले के भूतकालिक) सारे गुनाह माफ़ कर देता है. निस्संदेह वह बड़ा क्षमाशील और दयावान है. 54 और तुम अपने रब की तरफ़ पलटो और उसके प्रति समर्पित हो जाओ, इससे पहले कि तुम पर यातना आ जाए, फिर तुम्हारी कोई सहायता न की जाए.

55 और तुम अनुसरण करो अपने रब की भेजी हुयी किताब के श्रेष्ठ पहलू का इससे पहले कि तुम पर अचानक यातना आ जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो. 56 कहीं ऐसा न हो कि बाद में कोई आदमी यह कहने लगे, अफ़सोस मेरी उस कोताही पर जो मैंने अल्लाह के संबंध से की है. और मैं उपहास करने वालों में शामिल रहा.

57 या यह कहने लगे, काश, अल्लाह मुझे मार्ग दिखाता तो मैं भी डरने वालों में से होता. 58 या जब वह यातना को देखे तो कहने लगे कि काश मुझे (कर्म की) दुनिया में एक बार फिर लौटकर जाना हो, तो मैं नेक बंदों में से हो जाऊँ! 59 (लेकिन तब यही उत्तर मिलेगा) नहीं, मेरे संदेश तेरे पास पहुँच चुके थे तो तूने उन्हें झुठलाया और घमंड किया और तू इन्कार करने वालों में शामिल रहा.

60 तुम क़यामत के दिन उन लोगों को देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ा था कि उनके चेहरे काले होंगे. क्या घमंडियों का ठिकाना जहन्नम न होगा? 61 (इसके विपरीत) जो लोग अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहे, अल्लाह उन लोगों को उनकी सफलता के साथ बचा लेगा (अर्थात उन्हें मुक्ति प्रदान करेगा). फिर न उन्हें कोई कष्ट पहुँचेगा और न वे दुःखी होंगे.

62 अल्लाह हर चीज़ का सृजनकर्ता है और वही हर चीज़ का निगहबान है. 63 आसमानों और धरती (के ख़ज़ानों) की कुंजियाँ उसी के पास हैं. और जो लोग अल्लाह के संदेशों का इन्कार करते हैं, वही घाटे में रहने वाले हैं. 64 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, ऐ अज्ञानियो! क्या तुम मुझे अल्लाह के सिवा किसी और की उपासना करने के लिए कहते हो? 65 (पैग़ंबर!) तुम्हारी ओर और तुमसे पहले वालों की ओर आसमानी संदेश भेजा जा चुका है. यदि तुमने अल्लाह के साझीदार ठहराए तो तुम्हारे कर्म नष्ट हो जाएंगे और तुम घाटा उठाने वालों में से हो जाओगे. 66 इसलिए (पैग़ंबर!) तुम अल्लाह की उपासना करो और कृतज्ञ बंदों में से बनो.

67 लोगों ने अल्लाह की क़द्र न की जैसा कि उसकी क़द्र करने का हक़ है. (उसकी महानता का आलम तो यह है कि) क़यामत के दिन समस्त धरती उसकी मुट्ठी में होगी और सारे आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे. वह पाक तथा श्रेष्ठ है उस साझी ठहराने के कृत्य से जो यह लोग करते हैं. 68 और उस दिन सूर (महाशंख) फूँका जाएगा तो आसमान और धरती में जो भी हैं सब मूर्छित होकर गिर पड़ेंगे, सिवाय उसके जिसे

अल्लाह (ऐसा होने से बचाना) चाहे. फिर दोबारा सूर फूँका जाएगा तो यकायक सबके सब उठकर देखने लगेंगे. 69 (क़यामत के दिन) धरती अपने रब के प्रकाश से चमक उठेगी और किताब रख दी जाएगी और पैग़ंबर तथा गवाह हाज़िर कर दिए जाएंगे. लोगों के बीच न्याय के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा, उन पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा. 70 उस दिन प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा. और लोग जो कुछ भी करते हैं, अल्लाह उसको ख़ूब जानता है. 71 और जो लोग सत्य नकारते रहे थे, वे समूह दर समूह जहन्नम की ओर हाँके जाएंगे, यहाँ तक कि जब वे उसके पास पहुँचेंगे. उसके द्वार खोल दिए जाएंगे और उसके रक्षक उनसे पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हीं लोगों में से पैग़ंबर नहीं आए जो तुम्हें तुम्हारे रब के संदेश सुनाते थे और तुम्हें तुम्हारी इस दिन की मुलाक़ात से सचेत करते थे? वे कहेंगे कि हाँ! लेकिन इन्कार करने वालों पर यातना की बात सत्य साबित होकर रही.

72 कहा जाएगा, जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, उसमें सदैव रहने के लिए. तो कैसा बुरा ठिकाना है — घमंड करने वालों के लिए! 73 और जो लोग अपने रब के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहे, वे समूह-दर-समूह जन्नत की ओर ले जाए जाएंगे. यहाँ तक कि जब वे उसके पास पहुँचेंगे, उसके दरवाज़े खोल दिए जाएंगे. और उसके रक्षक उनसे कहेंगे, सलामती हो तुम पर, अब प्रसन्न रहो, तो इसमें दाख़िल हो जाओ, हमेशा रहने के लिए. 74 जन्नती लोग कहेंगे, शुक्र है उस अल्लाह का जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया और हमें इस जन्नती-धरती का वारिस बनाया. अब हम जन्नत में जहाँ चाहे रह सकते हैं. तो क्या ख़ूब बदला है (भले) कर्म करने वालों का. 75 और तुम देखोगे कि फ़रिश्ते अर्श (सिंहासन) के चारों ओर घेरा बनाए हुए अपने रब की प्रशंसा और महिमागान कर रहे होंगे. और लोगों के बीच ठीक-ठीक निर्णय कर दिया जाएगा. और कहा जाएगा कि समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो समस्त संसार का स्वामी है.

सूरह–40. अल–मोमिन

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 हा० मीम०. 2 यह किताब उतारी गयी है उस अल्लाह की ओर से जो प्रभुत्वशाली तथा सर्वज्ञानी है. 3 वह गुनाह माफ़ करने वाला और (गुनाहों के पश्चात) उसकी ओर पलट आने को स्वीकार करने वाला है, सख़्त सज़ा देने वाला, असीम सामर्थ्य वाला है. उसके सिवा दूसरा कोई ख़ुदा नहीं, (अंत में) सबको उसी की ओर लौट कर जाना है.

4 अल्लाह के संदेशों के संबंध से वही लोग झगड़े निकालते हैं जो सत्य नकारने पर अड़े हुए हैं. तो नगरों में उनकी चलत-फिरत तुम्हें धोके में न डाले. 5 इनसे पहले नूह की क़ौम ने झुठलाया और उनके बाद के समूहों ने भी. हर समुदाय ने अपने पैग़ंबर के प्रति साजिश की, कि उसे पकड़ ले. और उन्होंने झूठे झगड़े निकाले, ताकि उसके द्वारा सत्य को पराजित कर दें. तो मैंने उन्हें पकड़ लिया, तो कैसा था मेरी ओर से दिया गया दंड. 6 इस प्रकार तेरे रब की बात उन लोगों पर पूरी हो चुकी है कि जो सत्य नकारने पर आग्रही रहे कि वे आग वालों में से हैं.

7 जो फ़रिश्ते सिंहासन को उठाए हुए हैं और जो उसके गिर्द हैं, वे अपने रब की प्रशंसा और उसका महिमागान करते हैं. और वे उस पर ईमान रखते हैं और वे ईमान वालों के लिए क्षमा की प्रार्थना करते हैं (वे कहते हैं,) ऐ हमारे रब! तू अपनी दयालुता और अपने ज्ञान से हर चीज़ पर छाया हुआ है. तो तू माफ़ कर दे और जहन्नम की यातना से बचा ले उन लोगों को जो तेरी ओर पलट आए और जिन्होंने तेरा रास्ता अपना लिया. 8 ऐ हमारे रब! तू उन्हें सदैव रहने के बागों में दाख़िल कर जिनका तूने उनसे वादा किया है. और उनके बाप-दादा और उनकी पत्नियों और उनकी संतान में से जो सदाचारी हों उन्हें भी (उनके साथ जन्नत में दाख़िल कर). निस्संदेह तू प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है. 9

और उन्हें बुराइयों से बचा. जिसे तूने उस दिन बुराइयों से बचा लिया, तो उन पर तूने दया की और यही बड़ी सफलता है.

10 जो लोग सत्य के इन्कार पर आग्रही रहे थे, (क़यामत के दिन) उन्हें पुकार कर कहा जाएगा, आज अपने आप पर तुम्हें जितना गुस्सा आ रहा है, अल्लाह को तुम पर इससे ज़्यादा गुस्सा उस समय आता था, जब तुम्हें ईमान की ओर बुलाया जाता था और तुम इन्कार करते थे. 11 (जिनके संबंध से यातना का फ़ैसला हो चुका होगा,) वे कहेंगे, ऐ हमारे रब! तूने हमें दो बार मृत्यु दी और दो बार जीवित किया. अब हमने अपने गुनाहों को स्वीकार कर लिया है. क्या अब यहाँ से निकलने का कोई रास्ता है? 12 (कहा जाएगा,) यह (तुम्हारी दुर्दशा) इसलिए है कि जब अकेले अल्लाह की ओर बुलाया जाता था तो तुम मानने से इन्कार कर देते थे. और जब उसके साथ दूसरों को बुलाया जाता तो तुम मान लेते थे. तो अब निर्णय अल्लाह ही के अधिकार में है जो सबसे महान है, सबसे उच्च है.

13 वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है. और आसमान से तुम्हारे लिए जीविका उतारता है. उपदेश तो वही व्यक्ति ग्रहण करता है जो अल्लाह की ओर रुजूअ करने वाला हो. 14 तो (ऐ ईमान वालो!) तुम अल्लाह ही को पुकारो आस्था को उसी के लिए शुद्ध करके, चाहे सत्य का इन्कार करने वालों को यह कितना ही बुरा क्यों न लगे. 15 वह है उच्च दर्जों वाला, (समस्त सृष्टि के सत्ता-)सिंहासन का स्वामी. वह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है (अपना) संदेश उतारता है, ताकि वह मुलाक़ात के दिन से सचेत कर दे. 16 जिस दिन वे खुले रूप में सामने उपस्थित होंगे. उनकी कोई चीज़ अल्लाह से छिपी न रहेगी. (उस दिन पुकार कर पूछा जाएगा,) आज बादशाही किसकी है. (हर ओर से जवाब मिलेगा,) अकेले प्रभुत्वशाली अल्लाह की. 17 (कहा जाएगा,) आज प्रत्येक व्यक्ति को उसके किए का बदला मिलेगा. आज किसी पर कोई अत्याचार नहीं होगा.

निस्संदेह, अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है. 18 (पैग़ंबर!) इन लोगों को उस दिन से डराओ जो क़रीब आ लगा है. जब कलेजे मुँह को आ रहे होंगे. (अत्याचारी लोग) अंदर ही अंदर घुट रहे होंगे. अत्याचारियों का न कोई मित्र होगा और न ऐसा कोई सिफ़ारिशी होगा जिसकी बात मानी जाए. 19 अल्लाह निगाहों की चोरी तक को जानता है और उसे भी जो सीने छिपाए हुए हैं. 20 अल्लाह ठीक-ठीक फ़ैसला करेगा. जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज़ का निर्णय नहीं कर सकते. निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने वाला देखने वाला है.

21 क्या वह धरती पर चले-फिरे नहीं कि देखते क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं. वे इन (मक्का वालों) से अधिक शक्तिशाली थे और निशानियों (स्मृति चिन्हों) की दृष्टि से भी (शक्तिशाली थे जो वे छोड़ गए) ज़मीन में. लेकिन अल्लाह ने उन्हें उनके अपराधों पर पकड़ लिया और कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न था. 22 यह (उन क़ौमों का अंजाम) इसलिए हुआ कि उनके पास उनके पैग़ंबर सत्य के स्पष्ट प्रमाण लेकर आए तो उन्होंने (उन्हें) मानने से इन्कार कर दिया, तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया. निस्संदेह वह शक्तिशाली है और कठोर दंड देने वाला है.

23 हमने मूसा को भेजा अपनी स्पष्ट निशानियों और स्पष्ट प्रमाण के साथ. 24 फ़िरऔन, हामान और क़ारून की ओर. तो उन्होंने कहा, यह जादूगर है, बड़ा झूठा है. 25 फिर जब वह उनके पास हमारी ओर से सत्य लेकर पहुँचा, तो उन्होंने कहा, जो लोग ईमान लाकर उसके साथ हुए, उनके लड़कों को क़तल करो और उनकी लड़कियों को ज़िंदा छोड़ दो. लेकिन इन्कार करने वालों की चाल (अंत में) अकारथ ही गयी.

26 (एक दिन) फ़िरऔन ने कहा, मुझे छोड़ो, मैं मूसा का क़तल कर डालता हूँ, और वह (अपनी रक्षा के लिए) अपने रब को पुकारे. मुझे आशंका है कि कहीं यह तुम्हारा धर्म बदल न डाले या देश में कहीं बिगाड़ न पैदा कर दे.

27 मूसा ने कहा, मैंने तो हर उस अहंकारी के मुक़ाबले में जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता, अपने और तुम्हारे रब की शरण ले ली है.

28 फ़िरऔन वालों में एक ईमान वाला व्यक्ति, जो अपने ईमान को छिपाए हुए था, बोल उठा, क्या तुम एक व्यक्ति की मात्र इस बात पर हत्या कर डालोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है, हालाँकि वह तुम्हारे रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण भी लेकर आया है. (ईमान वाला दरबारी आगे कहता है) यदि वह (अर्थात मूसा) झूठा है तो उसके झूठ का बवाल उसी पर पड़ेगा और यदि वह सच्चा है तो जिस चीज़ से वह तुम्हें डरा रहा है, उसमें से कुछ न कुछ तुम पर पड़कर रहेगा. निस्संदेह अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को मार्ग नहीं दिखाता जो मर्यादा का उल्लंघन करने वाला तथा झूठा हो. 29 (वह ईमान वाला दरबारी अपनी क़ौम को संबोधित करने लगता है) ऐ मेरी क़ौम के लोगो! आज तुम्हारी सत्ता है और धरती पर तुम प्रभुत्वशाली हो. लेकिन यदि अल्लाह की ओर से यातना आ गयी तो (उससे बचने के लिए) हमारी कौन सहायता करेगा. (इस पर) फ़िरऔन ने कहा, मैं तुम लोगों को वही राय दे रहा हूँ जो मुझे उचित लगती है. और मैं उसी मार्ग की ओर तुम्हारा मार्गदर्शन करता हूँ जो पूर्णतः सही है. 30 (दरबारियों में से) जो व्यक्ति ईमान लाया था, उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम! मैं डरता हूँ कि तुम पर और समूहों जैसा (यातना का) दिन आ जाए. 31 जैसा दिन नूह और आद और समूद और उनके बाद वाली क़ौमों पर आया था. और अल्लाह अपने बंदों पर अत्याचार नहीं करता.

32 और ऐ मेरी क़ौम! मैं डरता हूँ कि कहीं तुम पर चीख-पुकार का दिन न आ जाए. 33 जिस दिन तुम पीठ फेर कर भागोगे. लेकिन तुम्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा. और जिसको अल्लाह पथभ्रष्ट कर दे, उसको कोई मार्गदर्शन प्रदान करने वाला नहीं.

34 और इससे पहले यूसुफ़ तुम्हारे पास सत्य के स्पष्ट प्रमाण लेकर आए थे. लेकिन तुम उसके प्रति संदेह ही में पड़े रहे, जो लेकर वह तुम्हारी ओर आए थे. फिर जब उनका देहांत हो गया तो तुमने कहा, अल्लाह उनके बाद कदापि कोई पैग़ंबर न भेजेगा. इस तरह अल्लाह उसे गुमराही में डाल देता है जो मर्यादा का उल्लंघन करने वाला और संदेह में पड़े रहने वाला हो. 35 (वह ऐसे लोगों को गुमराही में डाल देता है) जो अल्लाह के संदेशों के संबंध से झगड़े निकालते हैं, बिना इसके कि उनके पास कोई प्रमाण आया हो. यह (रवैय्या) अल्लाह और ईमान वालों की दृष्टि में अत्यंत अप्रिय है. इस प्रकार अल्लाह मुहर लगा देता है हर घमंडी और विद्रोही के दिल पर.

36 और फ़िरऔन ने कहा, ऐ हामान! मेरे लिए एक ऊँचा भवन बना, ताकि मैं रास्तों तक पहुँच सकूँ. 37 आसमानों के रास्तों तक, और मूसा के ख़ुदा को झाँक कर देखूँ. मैं तो मूसा को झूठा समझता हूँ. और इस प्रकार फ़िरऔन के लिए उसके बुरे कर्म आकर्षक बना दिए गए. वह सीधे मार्ग से रोक दिया गया. फ़िरऔन की युक्ति व्यर्थ होकर रही. 38 जो व्यक्ति ईमान लाया था, उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम! तुम लोग मेरा अनुसरण करो, मैं तुम्हें सही रास्ता बताता हूँ. 39 ऐ मेरी क़ौम! यह दुनिया की ज़िंदगी थोड़े दिनों की है. हमेशा रहने की जगह तो मृत्यु-पश्चात दुनिया है. 40 जो व्यक्ति बुराई करेगा उसे वैसा ही बदला मिलेगा. और जो व्यक्ति भला कर्म करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, शर्त यह है कि वह ईमान वाला हो, तो यही लोग जन्नत में प्रवेश करेंगे, वहाँ वे असीम जीविका पाएंगे. 41 (वह ईमान वाला बंदा आगे कहता है,) ऐ मेरी क़ौम! आख़िर यह कैसा (अजीब) मामला है कि मैं तुम्हें मुक्ति की ओर बुलाता हूँ और तुम मुझे आग की ओर बुला रहे हो. 42 तुम मुझे बुला रहे हो कि मैं अल्लाह के संबंध से इन्कार की नीति अपनाऊँ और ऐसी चीज़ का उसे साझीदार बनाऊँ जिसका मुझे कोई ज्ञान नहीं. हालाँकि मैं तुम्हें प्रभुत्वशाली और बड़े क्षमाशील अल्लाह की ओर बुला रहा हूँ.

43 निश्चित बात यह है कि तुम जिस चीज़ की ओर मुझे बुलाते हो उसकी ओर बुलाने की न इस दुनिया में कोई हक़ीक़त है और न मृत्यु-पश्चात दुनिया में. निस्संदेह हम सबकी वापसी अल्लाह ही की ओर (अर्थात सच्चे ख़ुदा की ओर) है और मर्यादा का उल्लंघन करने वाले ही आग में जाने वाले हैं. 44 (ईमान वाला बंदा आगे कहता है,) तुम लोग आगे चलकर मेरी बात को याद करोगे. और अपना मामला मैं तो अल्लाह को सौंपता हूँ, निस्संदेह अल्लाह अपने बंदों का निगहबान है.

45 फिर अल्लाह ने उसको उनकी बुरी चालों से बचा लिया. और फ़िरऔन के लोगों को बुरी यातना ने आ घेरा. 46 अर्थात आग ने, जिस पर वे सुबह व सायं प्रस्तुत किए जाते हैं. और जब क़यामत क़ायम होगी (तो आदेश होगा,) फ़िरऔन वालों को (अर्थात फ़िरऔन तथा उसके साथियों को) सबसे कठोर यातना में दाख़िल करो. 47 और जब वे जहन्नम में एक-दूसरे से झगड़ रहे होंगे. तो कमज़ोर लोग उन लोगों से कहेंगे जो (दुनिया में) बड़े बनते थे, हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे तो क्या तुम हमसे आग का कोई भाग हटा सकते हो? 48 वे लोग जो बड़े बनते थे, कहेंगे, हम सभी इसमें पड़े हैं, अल्लाह बंदों के बीच फ़ैसला कर चुका है. 49 जो लोग आग में होंगे, वे जहन्नम के संरक्षकों से कहेंगे कि तुम अपने रब से प्रार्थना करो कि वह हमारी यातना में बस एक दिन की कमी कर दे. 50 वे पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़ंबर स्पष्ट प्रमाण लेकर नहीं आये थे? वे जवाब देंगे कि क्यों नहीं? (अवश्य आए थे,) जहन्नम के दारोग़ा कहेंगे, फिर तुम ही प्रार्थना करो; और सत्य का इन्कार करने वालों की पुकार तो अकारथ ही जाने वाली है. 51 निस्संदेह हम सहायता करते हैं अपने पैग़ंबरों की और ईमान वालों की दुनिया की ज़िंदगी में और उस दिन भी जब (परिणाम की दुनिया में) गवाह खड़े होंगे.

52 जिस दिन अत्याचारियों को उनका उज़्र (अर्थात सफ़ाई पेश करना) कुछ भी लाभ न देगा. बल्कि उनके लिए तो लानत है और उनके लिए बुरा ठिकाना है. 53 और

हमने मूसा को मार्गदर्शन प्रदान किया. और इसराईल की संतान को (आसमानी) किताब का उत्तराधिकारी बनाया. 54 मार्गदर्शन और उपदेश है बुद्धि वालों के लिए. 55 तो (पैग़ंबर!) तुम धैर्य से काम लो. निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है. और अपनी कोताहियों के लिए माफ़ी चाहो. और संध्या समय तथा प्रातःकाल की घड़ियों में अपने रब का महिमागान करो, उसकी प्रशंसा के साथ (अर्थात अपने रब का शुक्र करते हुए उसका ज़िक्र करो).

56 जो लोग किसी प्रमाण के बिना, जो उनके पास आया हो, अल्लाह के संदेशों में झगड़े निकालते हैं. उनके दिलों में अहंकार भरा हुआ है. लेकिन वे उस बड़ाई को पहुँचने वाले नहीं (जिसका वे घमंड रखते हैं). तो तुम अल्लाह की शरण लो. निस्संदेह वह सुनने वाला देखने वाला है.

57 निस्संदेह आसमानों तथा धरती का बनाना, इंसान को बनाने से बड़ा काम है. लेकिन अधिकतर लोग नहीं जानते. 58 अँधा और आँखों वाला समान नहीं हो सकता. और वे लोग जो ईमान लाए तथा नेक कृत्य किए, दुराचारी जैसे नहीं हो सकते. लेकिन तुम लोग कम ही चिंतन करते हो. 59 निस्संदेह क़यामत आकर रहेगी. इसमें कोई संदेह नहीं. लेकिन अधिकतर लोग नहीं मानते.

60 तुम्हारा रब कहता है कि तुम मुझे पुकारो. मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूँगा. जो लोग घमंड में आकर मेरी उपासना से मुँह मोड़ते हैं, वे शीघ्र ही अपमानित होकर जहन्नम में प्रवेश करेंगे. 61 वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनायी, ताकि तुम उसमें विश्राम करो और दिन को प्रकाशमान बनाया. निस्संदेह अल्लाह लोगों पर बहुत कृपा करने वाला है, लेकिन अधिकतर लोग शुक्र अदा नहीं करते. 62 यह (सब कुछ करने वाला) अल्लाह ही तुम्हारा रब है. वही हर चीज़ का सृजन करने वाला है. उसके सिवा

दूसरा कोई ख़ुदा नहीं. फिर तुम किधर से बहकाए जा रहे हो? 63 इसी प्रकार वे सारे लोग भटकाए जाते रहे हैं, जो अल्लाह के संदेशों का इन्कार करते थे.

64 वह अल्लाह ही है जिसने धरती को ठहरने की जगह बनाया और आसमान को छत बनाया और तुम्हारा रूप बनाया, तो क्या ही अच्छा रूप बनाया. और उसने अच्छी चीज़ों की जीविका दी. यही अल्लाह है तुम्हारा रब, बड़ा ही बरकत वाला है अल्लाह जो रब है समस्त संसार का. 65 वह ज़िंदा ज़ात है, उसके सिवा कोई उपास्य नहीं. तो तुम उसी को पुकारो, आस्था को उसी के लिए शुद्ध रखते हुए (अर्थात शुद्ध रूप से उसी को समर्पित होकर). सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो रब है समस्त सृष्टि का.

66 (पैग़ंबर!) इन लोगों से कह दो, मुझे इससे रोक दिया गया है कि मैं उनकी उपासना करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो. (मैं यह काम कैसे कर सकता हूँ) जबकि मेरे पास मेरे रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण आ चुके हैं. मुझे आदेश दिया गया है कि मैं अपने आपको समस्त सृष्टि के रब को समर्पित कर दूँ. 67 वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर वीर्य से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर वह तुम्हें बच्चे के रूप में निकालता है. फिर वह तुम्हें बढ़ाता है, ताकि तुम प्रौढ़ता (युवावस्था) को पहुँचो. फिर वह तुम्हें बुढ़ापे की ओर पहुँचाता है. और तुममें से कोई (बुढ़ापे से) पहले ही मर जाता है. और यह इसलिए कि तुम एक नियत अवधी तक पहुँच जाओ. यह सब इसलिए है, ताकि तुम (सच्चाई को) समझ सको. 68 वह अल्लाह ही है जो ज़िंदगी देता है और मौत देता है. फिर जब वह किसी चीज़ का फ़ैसला करता है तो बस एक आदेश दे देता है कि वह हो जाए और वह हो जाती है.

69 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह के संदेशों में झगड़े निकालते हैं? वे कहाँ से बहकाए जाते हैं? 70 जिन लोगों ने किताब को झुठलाया और उस चीज़ को भी जिसके साथ हमने अपने पैग़ंबरों को भेजा था. तो शीघ्र ही वे जान लेंगे. 71 जब तौक़

उनकी गरदनों में होंगे और ज़ंजीरें (जिनके ज़रीए) वे घसीटते जाएंगे, 72 खौलते हुए पानी में. फिर वे आग में झोंक दिए जाएंगे. 73 फिर उनसे पूछा जाएगा कि कहाँ है वे जिन्हें तुम साझी ठहराते थे, 74 अल्लाह के सिवा. वे जवाब देंगे, वे हमसे खोए गए, बल्कि हम इससे पहले किसी चीज़ को पुकारते न थे. इस तरह अल्लाह इन्कार करने वालों को भटकता छोड़ देता है. 75 यह (परिणाम) इसलिए हुआ है कि तुम धरती में असत्य पर मगन रहा करते थे. और इसलिए भी कि घमंड किया करते थे. 76 अब जाओ, जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा रहने के लिए. तो कैसा बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का.

77 तो (पैग़ंबर!) धैर्य से काम लो. निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है. तो जिस चीज़ का (अर्थात जिस परिणाम का) हम उनसे वादा कर रहे हैं, उसका कुछ भाग हम तुम्हें दिखा देंगे या (उससे पहले) हम तुम्हें मृत्यु देंगे. इन्हें लौट कर तो हमारी ही ओर आना है.

78 (ऐ मुहम्मद!) हमने तुमसे पहले बहुत से पैग़ंबर भेजे, उनमें से कुछ के वृत्तांत हमने तुम्हें सुनाए हैं और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जिनके वृत्तांत हमने तुम्हें नहीं सुनाए. कोई पैग़ंबर इसके लिए समर्थ नहीं था कि वह अल्लाह की अनुमति के बिना कोई निशानी ले आए. फिर जब अल्लाह का आदेश आ गया तो सत्य के अनुसार फ़ैसला कर दिया गया. और उस समय ग़लत काम करने वाले लोग घाटे में पड़ गए.

79 वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए मवेशी बनाए, ताकि तुम कुछ से सवारी का काम लो और उनमें से कुछ ऐसे हैं, जिन्हें तुम खाते हो. 80 और तुम्हारे लिए उनमें और भी लाभ हैं, ताकि उनके द्वारा तुम उस आवश्यकता की पूर्ति कर सको जो तुम्हारे दिलों में है. और तुम उन पर और नौकाओं पर सवार किए जाते हो. 81 और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है. तो तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों को झुठलाओगे?

82 क्या वे धरती पर चले-फिरे नहीं कि वे देखते कि उन लोगों का कैसा अंजाम हुआ जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं. वे इनसे संख्या में अधिक थे और इनसे बढ़कर शक्तिशाली थे. और वे जो निशानियाँ धरती पर छोड़ गए हैं, उस संबंध से भी वे इनसे बढ़े हुए थे. लेकिन जो कुछ वे कमाते थे, उनके कुछ काम न आया. 83 तो जब उनके पैग़ंबर उनके पास सत्य के स्पष्ट प्रमाण लेकर पहुँचे तो वे जो (बाप-दादा से प्राप्त) ज्ञान उनके पास था उसी पर मगन रहे. तो (परिणाम-स्वरूप) उन पर वह यातना आ पड़ी जिसका वे उपहास करते थे. 84 फिर जब उन्होंने हमारी ओर से यातना (आती) देखी, तो वे पुकार उठे कि हम ईमान लाए अल्लाह पर जो अकेला है (जिसके सिवा दूसरा कोई पूजनीय नहीं). और उसका हम इन्कार करते हैं जिसको हम उसका साझी ठहराया करते थे. 85 लेकिन हमारी ओर से यातना आते देखकर उनका ईमान लाना उनके लिए कुछ भी लाभदायक नहीं हुआ. यही अल्लाह की रीति है, जो उसके बंदों में पहले से चली आयी है. और उस समय इन्कारी लोग घाटे में पड़ गए.

सूरह–41. हा० मीम० अस–सजदा

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 हा० मीम०. 2 यह अत्यंत कृपावान तथा दयावान की ओर से अवतरित वाणी है.

3 यह एक ऐसी किताब है जिसके संदेश ख़ूब खोल-खोल कर बयान किए गए हैं. 'अरबी भाषा का क़ुरआन' उन लोगों के लिए जो समझ रखने वाले हैं. 4 यह (क़ुरआन) शुभ-सूचना देने वाला तथा डराने वाला है. लेकिन इन लोगों में से अधिकतर लोगों ने (इसके संदेशों से) मुँह मोड़ा, तो वे सुनते नहीं हैं.

5 और उन (इन्कार करने वालों) ने कहा, 'जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुला रहे हो, उसके लिए हमारे दिलों पर ग़िलाफ़ पड़े हुए हैं और हमारे कान बहरे हो गए हैं. हमारे और तुम्हारे बीच एक पर्दा आ पड़ा है. तो तुम अपना काम करो और हम भी अपना काम किए जाएंगे.'

6 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, मैं तो एक इंसान हूँ तुम जैसा, लेकिन मेरे पास यह आसमानी संदेश आता है कि तुम्हारा ख़ुदा तो बस एक ही ख़ुदा है. इसलिए तुम सीधे उसी का रुख करो और उसी से क्षमा चाहो. और विनाश है अल्लाह के समकक्ष ठहराने वालों के लिए. 7 जो ज़कात नहीं देते और वही हैं जो मृत्यु-पश्चात जीवन का इन्कार करते हैं. 8 निस्संदेह जो लोग ईमान लाए और भले कर्म किए उनके लिए ऐसा प्रतिफल है जो कभी समाप्त होने वाला नहीं.

9 (पैग़ंबर!) कहो, क्या तुम उसका इन्कार करते हो जिसने धरती को दो दिनों में (अर्थात दो कालखंडों में) बनाया. और क्या तुम दूसरों को सके समकक्ष ठहराते हो? वह तो रब है समस्त सृष्टि का. 10 उसने धरती में पहाड़ जमा दिए और उसमें बरकतें रख दीं. और उसमें सब माँगने वालों के लिए उनकी माँग (तथा आवश्यकता) के नुसार ख़ुराकों

को रख दिया, यह सब चार दिन में हुआ. 11 फिर उसने आसमान की ओर रुख किया और वह धुवाँ (जैसा) था. उसने आसमान व ज़मीन से कहा, तुम दोनों आओ (अर्थात अस्तित्व धारण करो) स्वेच्छा के साथ या अनिच्छा के साथ. दोनों ने कहा, हम स्वेच्छापूर्वक हाज़िर हैं. 12 फिर उसने दो दिन में सात आसमान बना दिए और प्रत्येक आसमान में अपना आदेश भेज दिया. और हमने धरती के (निकटवर्ती) आसमान को दीपकों से सुशोभित किया और उसको सुरक्षित कर दिया. यह प्रभुत्वशाली और सर्वज्ञ की योजना है.

13 (पैग़ंबर!) अब यदि ये लोग मुँह मोड़ते हैं तो इनसे कह दो कि तुम्हें उसी प्रकार की यातना से सचेत करता हूँ जैसी यातना (पूर्ववर्ती क़ौमें) आद और समूद पर आयी थी. 14 जब अल्लाह के पैग़ंबर उनके पास आए, उनके आगे से और उनके पीछे से (अर्थात उन्हें हर ओर से यह बता दिया गया था) कि अल्लाह के सिवा तुम किसी की उपासना न करो. (इस पर) उन्होंने कहा, यदि हमारा रब चाहता तो फ़रिश्ते उतार देता. तो हम उस चीज़ को झुठलाते हैं जिसे देकर तुम भेजे गए हो.

15 क़ौमे-आद का हाल यह था कि उन्होंने धरती पर बिना किसी हक़ के घमंड किया और कहा, कौन है जो हमसे ज़्यादा शक्तिशाली है? क्या उन्होंने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने उनका सृजन किया है वह शक्ति में उनसे अधिक है. और वे हमारी निशानियों का इन्कार करते रहें. 16 तो हमने उन पर कुछ अशुभ दिनों में अत्यंत तूफ़ानी हवा भेज दी, ताकि उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में अपमानकारी यातना का मज़ा चखाए. और मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन की यातना तो सांसारिक यातना से भी अधिक अपमानकारी यातना है. वहाँ उन्हें कोई सहायता नहीं पहुँचेगी. 17 और वह जो समूद थे, तो हमने उन्हें सन्मार्ग दिखाया, लेकिन उन्होंने सन्मार्ग की अपेक्षा अँधेपन को पसंद किया. तो परिणामतः उनकी करतूतों के कारण अपमानकारी यातना उन पर टूट पड़ी.

18 और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए और जो ख़ुदा के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहा करते थे. 19 और जिस दिन अल्लाह के शत्रु आग की ओर एकत्र किए जाएंगे. फिर उन्हें श्रेणियों में क्रमबद्ध किया जाएगा. 20 यहाँ तक कि (अल्लाह के शत्रु) जहन्नम के पास पहुँच जाएंगे तो उनके कान और उनकी आँखें और उनकी चमड़ियाँ उन पर उनके कर्मों की गवाही देंगी. 21 वे अपनी चमड़ियों से कहेंगे, तुमने हमारे विरुद्ध क्यों गवाही दी? वे उत्तर देंगी, हमें उसी अल्लाह ने बोलने की क्षमता दी जिसने हर बोलने वाले को बोलने की क्षमता दी है. उसी ने तुम्हारा पहली बार सृजन किया था और अब तुम उसी के पास वापस लाए गए हो. 22 और तुम स्वयं को इससे छिपा न सकते थे कि तुम्हारे कान, तुम्हारी आँखें और तुम्हारी चमड़ियाँ तुम्हारे विरुद्ध गवाही दें. लेकिन तुम इस भ्रम में रहे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से उन कर्मों को नहीं जानता जो तुम करते हो. 23 तुम्हारे इसी भ्रम ने जो तुमने अपने रब के संबंध से किया था, तुम्हें बरबाद कर डाला और तुम घाटा उठाने वालों में से हो गए. 24 यदि जहन्नम में पड़ने वाले धैर्य रखें तो आग ही उनका ठिकाना है. और यदि वे क्षमा चाहे तो उन्हें क्षमादान नहीं मिलेगा.

25 हमने उन पर (अर्थात इन्कार पर आग्रहपूर्वक जमे हुए लोगों पर) कुछ ऐसे साथी नियुक्त कर दिए, तो उन्होंने उनके आगे और पीछे की प्रत्येक चीज़ मनमोहक बनाकर दिखायी. अंततः उन पर वह बात सिद्ध होकर रही जो जिन्नों और इंसानों के उन समूहों पर सिद्ध हुयी थी जो उनसे पहले गुज़र चुके थे. निस्संदेह वह घाटे में रह जाने वाले थे.

26 सत्य के इन्कारी लोग कहते हैं कि इस क़ुरआन को मत सुनो और (जब इसे सुनाया जाए) तो इसमें बाधा उत्पन्न करो, ताकि तुम प्रभावी रहो. 27 तो हम सत्य का इन्कार करने वालों को कठोर यातना का मज़ा चखाएंगे और अवश्य ही हम उन्हें सब से

बुरा बदला देंगे उस कर्म का जो वे करते थे. 28 यह अल्लाह के शत्रुओं का बदला है, अर्थात जहन्नम की आग. उनके लिए उसमें सदैव रहने का ठिकाना होगा, इसके प्रतिफल-स्वरूप कि वे हमारे संदेशों को झुठलाते थे. 29 जो लोग सत्य का इन्कार किया करते थे, वे कहेंगे, ऐ हमारे रब! हमें उन लोगों को दिखा जिन्होंने जिन्नों और इंसानों में से हमें भटकाया, हम उन्हें अपने पैरों के नीचे डालेंगे, ताकि वे अपमानित हों.

30 जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह हमारा रब है, फिर वे उस पर जमे रहे. निश्चय ही उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं और उनसे कहते हैं कि तुम न भयभीत हो और न दुःखी हो और उस जन्नत की शुभ-सूचना से प्रसन्न हो जाओ. जिसका तुमसे वादा किया गया है. 31 हम वर्तमान दुनिया की ज़िंदगी में भी तुम्हारे मित्र हैं और मृत्यु-पश्चात दुनिया में भी. (फ़रिश्ते आगे कहते हैं,) तुम्हारे लिए वहाँ हर चीज़ है जिसे तुम्हारा दिल चाहे और वहाँ तुम्हारे लिए वह सब कुछ है जो तुम माँगोगे. 32 यह अतिथि सत्कार है अत्यंत क्षमाशील और कृपावान की ओर से. 33 उससे श्रेष्ठ किसकी बात होगी जिसने अल्लाह की ओर बुलाया और अच्छा कर्म किया और कहा कि मैं उन लोगों में से हूँ जो अल्लाह को समर्पित हो चुके हैं.

34 भलाई और बुराई दोनों समान नहीं. तो तुम जवाब में वह कहो जो उससे बेहतर है. फिर तुम देखोगे कि तुममें और जिसमें शत्रुता थी, वह ऐसा हो जाएगा जैसे कोई आत्मीय मित्र हो. 35 यह चीज़ केवल उन लोगों को प्राप्त होती है जो धैर्य से काम लेते हैं. और यह चीज़ केवल उसको प्राप्त होती है जो बड़ा भाग्यशाली है. 36 यदि तुम शैतान की ओर से कोई उकसाहट महसूस करो तो अल्लाह की शरण माँगो. निस्संदेह वह सुनने वाला जानने वाला है. 37 और उसकी निशानियों में से है रात और दिन और सूरज और चाँद तो तुम सूरज और चाँद को सजदा न करो, बल्कि उस अल्लाह को सजदा करो जिसने उन सबको बनाया है, यदि तुम वास्तव में उसी की उपासना करने वाले हो.

38 लेकिन (पैग़ंबर!) ये लोग (इस संदेश को नकार कर) घमंड का ही प्रदर्शन करेंगे, तो (जान रखो कि अल्लाह की इबादत करने वालों की कोई कमी नहीं) फ़रिश्ते जो तुम्हारे रब के यहाँ हैं, वे रात व दिन उसी का महिमागान करते हैं और वे कभी नहीं थकते.

39 और उसकी निशानियों में से यह है कि तुम धरती को सूनी पड़ी हुयी देखते हो. फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह फबक उठती है और फूल जाती है. निस्संदेह जो मृत ज़मीन को जीवित करता है, वही मुर्दों को भी जीवित करने वाला है. निस्संदेह उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है. 40 जो लोग हमारे संदेशों को उलटे अर्थ पहनाते हैं वे हमसे कुछ छिपे हुए नहीं हैं. क्या वह व्यक्ती बेहतर है जो आग में झोंका जाने वाला है या वह व्यक्ति जो क़यामत के दिन शांति की स्थिती में हाज़िर होगा. जो कुछ चाहे कर लो. निस्संदेह वह देख रहा है जो कुछ तुम कर रहे हो. 41 जिन लोगों ने अल्लाह के उपदेश को मानने से इन्कार कर दिया, जब वह उनके पास आया. हालाँकि वह एक प्रभुत्वशाली किताब है. 42 इसमें असत्य न इसके आगे से आ सकता है और न पीछे से. यह किताब बुद्धिमान और प्रशंसनीय ज़ात की ओर से अवतरित की गयी है. 43 (ऐ मुहम्मद!) तुमसे वही बातें कही जा रही हैं जो तुमसे पहले पैग़ंबरों से कही जा चुकी हैं. निस्संदेह तुम्हारा रब माफ़ करने वाला है और कष्टप्रद यातना देने वाला भी.

44 यदि हम इसको 'ग़ैर-अरबी क़ुरआन' बनाकर भेजते तो ये (अरबी) लोग कहते कि इसे साफ़-साफ़ (हमारी भाषा में) क्यों नहीं बयान किया गया. क्या अजमी किताब और अरबी लोग! (पैग़ंबर!) इनसे कहो, यह क़ुरआन ईमान लाने वालों के लिए मार्गदर्शन तथा (आत्मिक) आरोग्य (प्राप्ति) का साधन है. और जो लोग ईमान नहीं लाते, उनके कानों के लिए बोझ और आँखों की पट्टी है. उनका हाल तो ऐसा है, जैसे उन्हें दूर के स्थान से पुकारा जा रहा हो.

45 (इससे पहले) हमने मूसा को किताब दी थी. फिर उसमें मतभेद पैदा किया
गया. यदि तुम्हारे रब की ओर से एक बात पहले से निर्धारित न हो चुकी होती तो उनके
बीच निर्णय कर दिया जाता. और ये लोग उसकी बाबत उलझन भरे संदेह में पड़े हुए हैं.
46 जो कोई भले कर्म करेगा तो अपने ही लिए करेगा और जो कोई बुराई करेगा तो
उसकी विपत्ति उसी पर आएगी. तुम्हारा रब बंदों पर अत्याचार करने वाला नहीं है.

पारा – 25 47 क़यामत का ज्ञान अल्लाह ही से संबंधित है. कोई फल अपने
गाभे में से नहीं निकलता और न कोई औरत गर्भवती होती है और न जन्म देती है.
लेकिन यह उसके संज्ञान में होता है. फिर जिस दिन अल्लाह इन (बहुदेववादियों) को
पुकारेगा (और पूछेगा), कहाँ है मेरे साझीदार? वे कहेंगे, हम यह स्पष्ट करते हैं कि
(अब) हममें से कोई भी इसकी गवाही नहीं देता. 48 जिन्हें बहुदेववादी पहले पुकारा
करते थे, वे सब उनसे गुम हो जाएंगे. और वे जान लेंगे कि अब उनके लिए बचाव का
कोई मार्ग नहीं.

49 और मनुष्य भलाई माँगने से नहीं थकता और यदि उसको कोई कष्ट पहुँच जाए
तो वह निराश व हताश हो जाता है. 50 यदि हम उस कष्ट के बाद जो उसे पहुँचा था.
अपनी कृपा का स्वाद चखा देते हैं तो वह कहता है. वह तो मेरा अधिकार ही है और मैं
नहीं समझता कि क़यामत कभी आएगी. और यदि मैं अपने रब की और लौटाया भी गया
तो निश्चित रूप से मेरे लिए श्रेष्ठ ही होगा. हालाँकि इन्कार करने वालों को हम बताकर
रहेंगे कि वे क्या करके आए हैं और उन्हें कठोर यातना का स्वाद चखाएंगे.

51 और जब हम मनुष्य पर कृपा करते हैं तो वह मुँह मोड़ता है और अपना पहलू
फेर लेता है. और जब उसे कष्ट पहुँचता है तो लंबी-लंबी प्रार्थनाएँ करने लगता है. 52
(पैग़ंबर!) इनसे कहो, यदि यह क़ुरआन वास्तव में अल्लाह की ओर से हो और तुम

इसका इन्कार करते रहे, तो उस व्यक्ति से बढ़कर पथभ्रष्ट कौन होगा जो विरोध में बहुत दूर निकल गया हो?

53 जल्द ही हम उन्हें अपनी निशानियाँ बाहरी दुनिया में भी दिखाएंगे और स्वयं उनके अपने भीतर भी, यहाँ तक कि उन पर स्पष्ट हो जाएगा कि यह क़ुरआन सत्य है (पैग़ंबर!) क्या यह बात पर्याप्त नहीं कि तुम्हारा रब हर चीज़ का साक्षी है. 54 सुन रखो! ये लोग अपने रब से मुलाक़ात के संबंध से संदेह में पड़े हुए हैं, सुन रखो वह हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है.

सूरह–42. अश–शूरा

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 हा० मीम०. 2 ऐन० सीन० क़ाफ़०. 3 उसी प्रकार अल्लाह प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान तुम्हारी ओर (अपना) संदेश प्रकट कर रहा है, जैसे उन (पैग़ंबरों) की ओर प्रकट करता रहा जो तुमसे पहले हुए हैं. 4 उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है. वही सबसे ऊपर है, वही महिमावान है. 5 निकट है कि आसमान ऊपर से फट पड़े. और फ़रिश्ते अपने रब की प्रशंसा के साथ उसका महिमागान करते रहते हैं और वे धरती वालों के लिए क्षमा की प्रार्थना करते रहते हैं. सुन रखो! अल्लाह ही क्षमा करने वाला तथा दया करने वाला है. 6 जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरे संरक्षक बना रखे हैं, अल्लाह उन पर निगाह रखे हुए है. और (पैग़ंबर!) तुम उनके ऊपर ज़िम्मेदार नहीं हो.
7 तो (पैग़ंबर!) इस तरह हमने तुम्हारी ओर अरबी क़ुरआन उतारा है. ताकि तुम मक्का वालों को और उसके आस पास वालों को डरा दो. उन्हें जमा होने के दिन से डरा दो, जिसके आने में कोई संदेह नहीं. एक समूह जन्नत में होगा और एक समूह आग में.

8 यदि अल्लाह चाहता तो सबको एक ही (मार्ग पर चलने वाला) समुदाय बना देता, लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है. अत्याचारियों का

कोई समर्थक व सहायक नहीं. 9 क्या उन्होंने उसके सिवा दूसरे संरक्षक बना रखे हैं, संरक्षक तो अल्लाह ही है और वही मुरदों को ज़िंदा करता है. वही हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है. 10 (पैग़ंबर! कह दो,) जिस किसी बात में तुम मतभेद करते हो, उसका फ़ैसला अल्लाह ही के हवाले है. वही अल्लाह मेरा रब है. उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की ओर मैं रुजूअ करता हूँ.

11 (पैग़ंबर आगे कहता है,) वही आसमानों तथा धरती का बनाने वाला है. उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी अपनी ही सहजाति से जोड़े बनाए. इसी प्रकार चौपायों के जोड़े भी बनाए. इस तरह से वह तुम्हारे वंश को चलाता है. कोई चीज़ उसके जैसी नहीं है. 12 उसी के अधिकार में आसमानों तथा धरती की कुंजियाँ हैं. वह जिसके लिए चाहता है अधिक जीविका प्रदान करता है और जिसके लिए चाहता है कम कर देता है. निस्संदेह उसे हर चीज़ का ज्ञान है. 13 (ऐ मुहम्मद!) अल्लाह ने तुम्हारे लिए वही दीन (धर्म) निर्धारित किया है जिसका आदेश उसने नूह को दिया था. और उसी (विचारधारा) को उसने तुम पर प्रकट किया है. और उसी का आदेश हमने इब्राहीम को और मूसा को और ईसा को दिया था कि दीन को क़ायम रखो और उसमें फूट न डालो.(पैग़ंबर!) बहुदेववादियों पर वह बात बहुत भारी है जिसकी ओर तुम उन्हें बुला रहे हो. अल्लाह जिसे चाहता है अपनी ओर चुन लेता है और वह अपनी ओर उसका मार्गदर्शन करता है जो उसकी ओर पलटता है.

14 जो लोग (मतभेद को कारण बनाकर) समूह-समूह बन गए, इसके पश्चात कि उनके पास ज्ञान आ चुका था, मात्र परस्पर हठधर्मिता के कारण. और यदि तुम्हारे रब की ओर से एक नियत समय के लिए बात पहले से निश्चित न हो चुकी होती, तो उनके बीच फ़ैसला कर दिया जाता. और उनके बाद जो लोग किताब के उत्तराधिकारी बनाए गए, वे (भी) उसकी बाबत उलझन-कारी संदेह में पड़े हुए हैं.

15 तो (पैग़ंबर!) तुम (लोगों को) इसी (सत्य-धर्म) की ओर बुलाते रहो और उसी पर जमे रहो, जैसा कि तुम्हें आदेश दिया गया है. और उनकी इच्छाओं का पालन न करो. और उनसे कह दो कि अल्लाह ने जो किताब उतारी है मैं उस पर ईमान लाता हूँ. और मुझे यह आदेश हुआ है कि मैं तुम्हारे बीच न्याय करूँ. अल्लाह हमारा रब है और तुम्हारा रब भी. हमारे कर्म हमारे लिए हैं और तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए. हमारे और तुम्हारे बीच कोई झगड़ा नहीं. अल्लाह हम सबको इकट्ठा करेगा. उसी की ओर (सबकी) वापसी है. 16 जो लोग अल्लाह के संबंध से झगड़ते हैं. इसके पश्चात कि उसकी पुकार स्वीकार कर ली गयी. उनका झगड़ना उनके रब की दृष्टि में बिल्कुल असत्य है. उन पर उसका प्रकोप है और उनके लिए कठोर यातना है.

17 वह अल्लाह ही है जिसने सत्य के साथ किताब उतारी और तराज़ू भी. और तुम्हें क्या ख़बर शायद फ़ैसले की घड़ी क़रीब ही आ लगी हो. 18 उसके लिए वे लोग जल्दी मचाते हैं जो उस पर ईमान नहीं रखते. और जो ईमान रखते हैं, वे तो उससे डरते हैं. और वे जानते हैं कि वह सत्य है. जान रखो, जो लोग उस घड़ी के आने के संबंध से संदेहपूर्ण बहसें करते हैं, वे पथभ्रष्टता में बहुत दूर निकल गए हैं.

19 अल्लाह अपने बंदों पर कृपा करने वाला है. वह जिसे (जितनी) चाहता है जीविका प्रदान करता है. वह शक्तिमान एवं प्रभुत्ववान है. 20 जो कोई शाश्वत जीवन की खेती चाहता हो, हम उसे उसकी खेती में उन्नति प्रदान करेंगे. और जो कोई इसी (क्षणभंगूर) दुनिया की खेती चाहता हो. हम उसे दुनिया ही में से कुछ दे देते हैं, लेकिन शाश्वत दुनिया में उसका कोई हिस्सा नहीं. 21 क्या इनके ठहराए हुए साझीदारों ने, उनके लिए कोई ऐसा धर्म निर्धारित कर दिया है, जिसकी अनुमति अल्लाह ने नहीं दी? यदि फ़ैसले की बात पहले से निर्धारित न की गयी होती कि (अंतिम फ़ैसला पुनरुत्थान के दिन होगा) तो उनका फ़ैसला चुका दिया जाता. निस्संदेह अत्याचारियों के लिए कष्टप्रद यातना है.

22 (फ़ैसले के दिन) तुम अत्याचारियों को देखोगे कि वे डर रहे होंगे अपनी कमाई (के अंजाम) से. लेकिन वह तो उन पर पड़कर रहेगा. लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, वे जन्नत के बागों में होंगे. उनके लिए उनके रब के पास वह सब कुछ होगा जो वे चाहेंगे. यही बड़ी कृपा है. 23 यह चीज़ है जिसकी शुभ-सूचना अल्लाह अपने उन बंदों को देता है जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए. (पैग़ंबर!) उनसे कह दो कि मैं इसका तुमसे कोई पारिश्रमिक नहीं चाहता, बस रिश्ते-नाते का प्रेम-भाव (क़ायम रहे, यही अपेक्षा). जो व्यक्ति नेकी कमाएगा, हम उसके लिए उसमें और अच्छाई बढ़ा देंगे. निस्संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला है, गुणग्राहक है.

24 क्या वे कहते हैं कि इसने अल्लाह पर झूठ बाँधा है? यदि अल्लाह चाहे तो (पैग़ंबर!) वह तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे. अल्लाह तो असत्य मिटाता है और अपने वचनों के द्वारा सत्य को स्थापित करता है. निस्संदेह वह दिलों की बातों को जानता है. 25 और वही है जो अपने बंदे के (सन्मार्ग की ओर) पलट आने को स्वीकार करता है और बुराइयों को माफ़ करता है, हालाँकि वह जानता है, जो कुछ तुम करते हो. 26 और वह उन लोगों की प्रार्थनाएँ स्वीकार करता है जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए. और वह अपनी कृपा से उन्हें और अधिक प्रदान करता है. और जो सत्य का इन्कार करने वाले हैं, उनके लिए कठोर यातना है.

27 यदि अल्लाह अपने (सारे) बंदों के लिए जीविका (विपुलता के साथ) खोल देता तो वे धरती में उपद्रव मचाते. लेकिन वह एक हिसाब के साथ जितना चाहता है उतारता है. निस्संदेह अल्लाह अपने बंदों को जानने वाला है और वह उन पर निगाह रखता है. 28 वही है जो लोगों के निराश हो जाने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी दयालुता को फैला देता है. और वही है काम बनाने वाला और वही है प्रशंसा के योग्य.

29 उसकी निशानियों में से है आसमानों व धरती की रचना. और वह जीवधारी भी जो उसने उनके बीच फैलाए हैं. और वह जब चाहे उन्हें इकट्ठा करने की सामर्थ्य भी रखता है.

30 और जो मुसीबत तुम्हें पहुँचती है, वह तुम्हारे हाथों की कमाई के कारण पहुँचती है और वह तो बहुत कुछ माफ़ ही कर देता है. 31 और तुम धरती में अल्लाह के नियंत्रण से निकल नहीं सकते. और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई काम बनाने वाला है और न कोई सहायक.

32 यह उसकी निशानियों में से है कि जहाज़ समुद्र में चलते हैं, जैसे पहाड़. 33 यदि वह चाहे तो हवा को रोक दे, फिर वह समुद्र की सतह पर ठहरे हुए रह जाएँ. निस्संदेह इसमें निशानियाँ हैं हर उस व्यक्ति के लिए जो धैर्य से काम लेने वाला तथा कृतज्ञ हो. 34 या (ऐसा भी हो सकता है कि वह चाहे तो) उन (जहाज़ों) को (जहाज़ वालों) की कमाई के कारण नष्ट कर दे और (यह भी संभव है कि) बहुतों को क्षमा कर दे. 35 ताकि जान लें वे लोग जो हमारी निशानियों के संबंध से झगड़ते हैं कि उनके लिए भागने की कोई जगह नहीं.

36 तो जो कुछ तुम्हें दिया गया है. वह तो सांसारिक जीवन की अस्थायी सुख-सामग्री है. लेकिन जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम भी है और बाक़ी रहने वाला भी.

37 और जो लोग बड़े-बड़े गुनाहों से और अश्लील कर्मों से बचते हैं और यदि गुस्सा आ जाए तो वे माफ़ कर देते हैं. 38 जो अपने रब का आदेश मानते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं और अपने काम परस्पर परामर्श से करते हैं और हमने जो कुछ उन्हें प्रदान किया है उसमें से खर्च करते हैं. 39 और वे ऐसे हैं कि उन पर जब अत्याचार किया जाता है तो वे अपना बचाव करते हैं.

40 बुराई का बदला वैसी ही बुराई है. फिर जो कोई माफ़ कर दे और सुधार कर दे तो उसका बदला अल्लाह के पास है. निस्संदेह अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता. 41 जो व्यक्ति अपने ऊपर ज़ुल्म होने के पश्चात बदला ले, तो ऐसे लोगों पर कोई दोष नहीं. 42 दोष मात्र उन पर आता है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और धरती पर नाहक उपद्रव मचाते हैं. यही वे लोग हैं जिनके लिए कष्टप्रद यातना है. 43 और जिसने धैर्य से काम लिया और क्षमा कर दिया, तो निस्संदेह यह साहस के कार्य हैं.

44 और जिस व्यक्ति को अल्लाह गुमराही में डाल दे, तो उसके बाद उसका कोई संरक्षक-मित्र नहीं. और तुम अत्याचारियों को देखोगे कि जब वे यातना को देखेंगे तो वे कहेंगे क्या अब वापस जाने का कोई मार्ग है? 45 और तुम अत्याचारियों को देखोगे कि जहन्नम पर इस दशा में लाए जाएंगे कि वे अपमान के कारण झुके हुए होंगे, छिपी निगाहों से देख रहे होंगे. तब वे लोग कहेंगे जो ईमान लाए थे. वास्तव में घाटा उठाने वाले वही लोग हैं जिन्होंने क़यामत के दिन अपने आपको और अपने संबंधियों को घाटे में डाला. सुन रखो, अत्याचारी लोग स्थायी यातना में रहेंगे. 46 उनके लिए कोई संरक्षक न होंगे जो अल्लाह के मुक़ाबले में उनकी मदद कर सके. जिसे अल्लाह गुमराही में डाल दे, उसके लिए कोई मार्ग नहीं.

47 (लोगो!) तुम अपने रब की बात मान लो, इससे पहले कि वह दिन आए, जिसके टलने की कोई सूरत अल्लाह की ओर से नहीं है. उस दिन तुम्हारे लिए कोई शरण न होगी और न तुम किसी चीज़ को निरस्त कर सकोगे. 48 (पैग़ंबर!) अब यदि यह लोग मुँह मोड़ते हैं तो हमने तुम्हें उनके ऊपर कोई रखवालदार बनाकर नहीं भेजा है. तुम्हारा दायित्व मात्र संदेश पहुँचा देना है. और जब मनुष्य को हम अपनी ओर से दयालुता का स्वाद चखाते हैं, तो वह उस पर फूला नहीं समाता. लेकिन जब लोगों पर उनके कर्मों के बदले में कोई आपत्ति आ पड़ती है (तो वे निराश हो जाते हैं). निस्संदेह मनुष्य है ही बड़ा कृतघ्न.

49 आसमानों और धरती की बादशाही अल्लाह के लिए है. वह जो चाहता है निर्माण करता है. वह जिसे चाहता है बेटियाँ प्रदान करता है और जिसे चाहता है बेटे प्रदान करता है. 50 और जिसे चाहता है बेटे और बेटियाँ (दोनों) प्रदान करता है और जिसे चाहता है निःसंतान रखता है. निस्संदेह वह जानने वाला, सामर्थ्य वाला है.

51 कोई इंसान का यह स्थान नहीं कि अल्लाह उससे सीधे संवाद करे, मगर यह कि वह अपने संदेश की उस पर प्रकाशना (प्रकटीकरण) करे या परदे के पीछे से संवाद करे या फिर वह कोई संदेशवाहक फ़रिश्ता भेजता है और वह भेजा गया फ़रिश्ता उसके आदेश से वह जो चाहता है वह संदेश (पैग़ंबर तक) पहुँचा देता है. निस्संदेह वह सबसे ऊपर है, विवेकवान है. 52 और (ऐ मुहम्मद!) इसी प्रकार हमने तुम पर अपना संदेश अवतरित किया है, अपने हुक्म से (अर्थात हम अपने हुक्म से संदेश अवतीर्ण करवाते हैं). (ऐ मुहम्मद!) तुम न जानते थे कि (आसमानी) किताब क्या है और न जानते थे कि ईमान क्या है? लेकिन हमने इस (आसमानी किताब 'क़ुरआन') को (सन्मार्ग दिखाने वाली) एक रोशनी बना दिया. इससे हम मार्गदर्शन प्रदान करते हैं अपने बंदों में से जिसको चाहते हैं. (पैग़ंबर!) तुम निस्संदेह एक सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन कर रहे हो.

53 उस अल्लाह के मार्ग की ओर जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों और धरती में है. सुन लो! सारे मामले (अंततः) अल्लाह ही की ओर लौटते हैं.

सूरह–43. अज़–ज़ुख़रुफ़

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 हा० मीम०. 2 क़सम है इस स्पष्ट किताब की (अर्थात यह स्पष्ट किताब गवाह है). 3 निश्चय ही हमने इसे अरबी भाषा का क़ुरआन बनाया, ताकि तुम समझो. 4 और निस्संदेह यह हमारे यहाँ मूल किताब में अंकित है, जो उच्च तथा विवेकपूर्ण है.

5 (सत्य का इन्कार करने वालो!) क्या हम तुमसे विरक्त होकर इस उपदेश-ग्रंथ को तुम्हारे यहाँ भेजना छोड़ दें, सिर्फ़ इसलिए कि तुम हद से गुज़रे हुए लोग हो? 6 हम पहले के लोगों में कितने ही पैग़ंबर भेज चुके हैं. 7 कभी ऐसा नहीं हुआ कि कोई पैग़ंबर उनके यहाँ आया हो और उन्होंने उसका मज़ाक न उड़ाया हो. 8 फिर जो (इन्कारी) लोग इन (इन्कारियों) से अधिक शक्तिशाली थे, हमने उन्हें भी नष्ट कर दिया. (इतिहास में) पिछली क़ौमों की मिसालें गुज़र चुकी.

9 और यदि तुम पूछो की आसमानों और धरती को किसने बनाया है तो वे अवश्य कहेंगे, इन्हें प्रभुत्वशाली जानने वाले ने बनाया है. 10 जिसने तुम्हारे लिए धरती को फ़र्श बनाया और उसमें तुम्हारे लिए मार्ग बनाए, ताकि तुम मार्ग पाओ. 11 वही है जिसने आसमान से पानी उतारा एक पैमाने के साथ, और उसके माध्यम से मुर्दा ज़मीन को जिला उठाया. इसी प्रकार तुम (मृत्यु-पश्चात जीवित करके) निकाले जाओगे. 12 वही है जिसने हर प्रकार के जोड़े बनाए और तुम्हारे लिए नावों और पशुओं (को सवारी बनाया) जिन पर तुम सवार होते हो. 13 ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर बैठो. फिर तुम अपने रब की नेमत को याद करो, जब भी तुम उन पर बैठो. कहो, पाक है वह जिसने इन चीज़ों को हमारे क़ाबू में कर दिया. वरना हम इन्हें क़ाबू में लाने की शक्ति न रखते थे. 14 निस्संदेह हम अपने रब की ओर लौटने वाले हैं.

15 उन लोगों ने अल्लाह के बंदों में से अल्लाह का अंश ठहराया. निस्संदेह मनुष्य स्पष्ट कृतघ्न है. 16 क्या अल्लाह ने अपनी रचना में से अपने लिए बेटियाँ चुनी और तुम्हें बेटे प्रदान किए? 17 जिस चीज़ का (अर्थात बेटियों का) संबंध ये लोग रहमान से जोड़ते हैं, उसी (के पैदा होने) की सूचना जब इनमें से किसी को दी जाती है, तो उसका चेहरा काला पड़ जाता है और वह दुःख से भर जाता है. 18 क्या वह जो आभूषणों में (अर्थात नाज़-नख़रों में) पलती हो और वादविवाद में ठीक से बोल भी नहीं पाती (अल्लाह के हिस्से में आयी है)? 19 उन्होंने फ़रिश्तों को, जो कृपावंत ख़ुदा के बंदे हैं, औरतें क़रार दे रखा है. क्या वे उनका सृजन होते समय उपस्थित थे? उनका यह दावा लिख लिया जाएगा और उनसे पूछ होगी.

20 और वे कहते हैं कि कृपावंत ख़ुदा चाहता तो हम उनकी उपासना न करते. (वास्तविकता यह है कि) उन्हें (इस मामले का) कुछ ज्ञान नहीं, वे तो बस अटकल दौड़ाते हैं. 21 क्या हमने उन्हें इससे पहले कोई किताब दी है, तो उन्होंने उसे दृढ़ता से पकड़ रखा है? 22 (नहीं,) बल्कि वे कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादा को एक मार्ग पर पाया है और हम उनके पीछे चले जा रहे हैं. 23 (पैग़ंबर!) इसी तरह तुमसे पहले हमने जिस बस्ती में भी कोई सचेत करने वाला भेजा तो उसके संपन्न लोगों ने कहा कि हमने अपने बाप-दादा को एक मार्ग पर पाया है और हम उन्हीं के पद-चिन्हों पर चल रहे हैं. 24 (इस पर) सचेत करने वाले ने कहा, यद्यपि मैं उससे अधिक उचित मार्ग तुम्हें बताऊँ जिस पर तुमने अपने बाप-दादा को पाया है. (इस पर) उन्होंने (पैग़ंबर से) कहा, हम उसका इन्कार करते है जो देकर तुम भेजे गए हो. 25 तो हमने उन (इन्कारियों) से बदला लिया, तो देख लो कि इन्कारियों का कैसा अंजाम हुआ.

26 (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने पिता तथा अपनी क़ौम से कहा था कि तुम जिन चीज़ोंकी उपासना करते हो मेरा उनसे कोई संबंध नहीं. 27 (मेरा संबंध सिर्फ़ उससे

है) जिसने मेरा सृजन किया, वही मेरा मार्गदर्शन करेगा. 28 और इब्राहीम यही बात अपने पीछे अपनी संतान में छोड़ गया, ताकि वे इस (बात की) ओर लौटें. 29 (इसके पश्चात जब ये अरब लोग दूसरों की उपासना करने लगे, तो मैंने उन्हें मिटा नहीं दिया) बल्कि उन्हें और उनके बाप-दादा को मैं आजीविका देता रहा, यहाँ तक कि इन (अरबवासियों) के पास सत्य को खोल-खोल कर बयान करने वाला पैग़ंबर आ गया. 30 लेकिन जब सत्य उनके पास आया, तो उन्होंने कह दिया, यह तो जादू है, और हम इसे मानने से इन्कार करते हैं.

31 (अरबवासी) कहते हैं, यह क़ुरआन (अरब की) दोनों बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा गया. 32 क्या ये लोग तुम्हारे रब की रहमत को बाँटते हैं (अर्थात पैग़ंबर किसे बनाया जाए क्या यह लोग तय करेंगे)? सांसारिक जीवन में उनकी जीविका को हमने ही बाँटा है. और हमने एक को दूसरे पर श्रेष्ठता प्रदान की है, ताकि वे एक-दूसरे से काम लें. और तुम्हारे रब की रहमत (अर्थात पैग़ंबरी) उससे श्रेष्ठ है जो ये (भौतिक चीज़ें) एकत्र करने में लगे हुए हैं. 33 यदि यह आशंका न होती कि सारे लोग एक ही तरीक़े के हो जाएंगे, तो जो लोग कृपावंत ख़ुदा को नकारते हैं, उनके लिए हम उनके घरों की छतें चाँदी की बना देते, और सीढ़ियाँ भी जिन पर वे चढ़ते हैं. 34 और उनके दरवाज़े और उनके तख़्त जिन पर वे तकिये लगाए बैठते हैं 35 (सब चाँदी) और सोने के बना देते. यह तो केवल दुनिया की ज़िंदगी की सामग्री है और मृत्यु-पश्चात दुनिया (की सफलता) तुम्हारे रब के यहाँ उनके लिए है जो उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनें रहते हैं.

36 जो व्यक्ति कृपावंत ख़ुदा के उपदेश से मुँह मोड़ता है तो हम उस पर एक शैतान नियुक्त कर देते हैं और वह उसका साथी बन जाता है. 37 ये शैतान लोगों को सन्मार्ग से रोकते हैं और वे समझते हैं कि वे सन्मार्ग पर हैं. 38 लेकिन जब ऐसा व्यक्ति हमारे यहाँ

पहुँचेगा तो (अपने साथी शैतान से) कहेगा, काश, मेरे और तेरे बीच पूरब और पश्चिम की दूरी होती, तू तो सबसे बुरा साथी था. 39 (तब इन लोगों से कहा जाएगा) जबकि तुम अत्याचारी कृत्य कर चुके तो आज यह बात तुम्हारे लिए कुछ भी लाभप्रद नहीं है. अब तुम यातना में एक-दूसरे के साझी हो.

40 (पैग़ंबर!) क्या तुम बहरों को सुनाओगे या तुम अंधों को मार्ग दिखाओगे और उन्हें जो स्पष्ट पथभ्रष्टता में पड़े हुए हैं? 41 (पैग़ंबर!) यदि हम तुम्हें उठा लें तो हम उनसे बदला लेने वाले हैं. 42 या (यह भी हो सकता है कि तुम्हारे जीते जी) तुम्हें वह चीज़ हम दिखा दें जिसका हमने उनसे वादा किया है. हमें इन पर पूरी सामर्थ्य प्राप्त है. 43 तो (पैग़ंबर!) जो संदेश तुम पर प्रकट किया गया है, तुम उसे दृढ़तापूर्वक थामे रहो. निस्संदेह तुम सीधे रास्ते पर हो. 44 निश्चय ही यह क़ुरआन तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए उपदेश-ग्रंथ है. बहुत जल्द तुम लोगों से पूछ होगी. 45 जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा है, उनसे पूछ लो, (अर्थात पूर्ववर्ती सारे पैग़ंबरों का जो भी वास्तविक संदेश मौजूद हो उससे पता कर लो) क्या हमने (एक) कृपावंत ख़ुदा के सिवा अन्य उपास्य ठहराए थे कि उनकी उपासना की जाए?

46 हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा. तो मूसा ने (उनसे) कहा, मैं समस्त सृष्टि के स्वामी का भेजा हुआ हूँ. 47 फिर जब मूसा हमारी निशानियों के साथ उनके सामने आया, तो वे हँसी उड़ाने लगे. 48 हमने उन्हें जो निशानियाँ दिखायीं, वह पहली निशानी से बढ़कर होती थी. और हमने उन्हें (फटकार-रूपी) यातना में ग्रस्त किया, ताकि वे (किसी तरह) बाज़ आ जाएँ. 49 (जब भी वे फटकार-रूपी यातना में ग्रस्त होते तो) कहते, ऐ जादूगर! हमारे लिए अपने रब से प्रार्थना करो, उस वादे के आधार पर जो उसने तुमसे किया है (कि वह इस यातना को हम से हटाए तो) हम अवश्य सीधे रास्ते पर आ जाएंगे. 50 फिर जब हमने उस यातना को उनसे हटा दिया, तो वे अपनी बात से फिर गए.

51 फ़िरऔन ने अपनी क़ौम के बीच पुकार कर कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगो! क्या मिस्र (इजिप्त) का साम्राज्य मेरा नहीं है? और यह नहरें जो मेरे नीचे बह रही हैं (क्या मेरी नहीं हैं)? क्यातुम लोगों को नज़र नहीं आता? 52 फिर इस तुच्छ इंसान से क्या मैं बेहतर नहीं हूँ? जो साफ़ बोल भी नहीं पाता. 53 (फ़िरऔन आगे कहता है,) क्यों न इस पैग़ंबर को सोने के कंगन मिले? या क्यों न इसके साथ फ़रिश्ते आए, जो इसके साथ-साथ रहते? 54 इस तरह फ़िरऔन ने अपनी क़ौम के लोगों को मूर्ख बनाया. उन लोगों ने उसकी बात मान ली. वे थे ही अवज्ञाकारी लोग. 55 फिर जब फ़िरऔन और उसके लोगों ने हमें क्रोध दिलाया, तो हमने उनसे बदला लिया और हमने उन सबको डुबो दिया. 56 फिर हमने उन्हें भूतकाल की कहानी बना दिया और बाद के लोगों के लिए एक शिक्षाप्रद उदाहरण.

57 फिर जब मरियम के बेटे की मिसाल दी गयी तो तुम्हारी क़ौम के लोग लगे चिल्लाने. 58 उन्होंने कहा, हमारे उपास्य अच्छे हैं या वह? यह उदाहरण वह तुमसे मात्र झगड़ने के लिए बयान करते हैं, बल्कि (वास्तविकता यह है कि) यह हैं ही झगड़ालू लोग. 59 मरियम का बेटा (ईसा) इसके सिवा कुछ न था कि वह (हमारा) एक बंदा था. जिस पर हमने अपना इनाम किया था और इसराईल की संतान के लिए उसे आदर्श बनाया था. 60 यदि हम चाहें तो तुम्हारे अंदर से फ़रिश्ते बना दें, जो पृथ्वी पर तुम्हारे उत्तराधिकारी हों. 61 निस्संदेह वह क़यामत की निशानी है. तो तुम उसमें संदेह न करो और मेरी बात मान लो —यही सीधा रास्ता है. 62 ऐसा न हो कि शैतान तुम्हें इससे रोक दे. निस्संदेह वह तुम्हारा खुला दुश्मन है.

63 और जब ईसा स्पष्ट निशानियों के साथ आया. उसने कहा, मैं तुम्हारे पास विवेकपूर्ण चीज़ लेकर आया हूँ. और इसलिए आया हूँ कि तुम पर कुछ ऐसी बातें स्पष्ट कर दूँ जिनमें तुम मतभेद कर रहे हो. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा आज्ञापालन करो.

64 (ईसा ने कहा,) निस्संदेह अल्लाह ही मेरा रब है और तुम्हारा रब भी. तो तुम उसी की उपासना करो. यही सीधा मार्ग है. 65 लेकिन (ईसा की इस स्पष्ट शिक्षा के बावजूद) उनमें से कितने ही समूहों ने परस्पर मतभेद किया. तो विनाश है उन लोगों के लिए जिन्होंने अत्याचारी कृत्य किया, एक कष्टप्रद दिन की यातना के द्वारा (विनाश).
66 यह (इन्कारी) लोग मात्र क़यामत की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह उन पर अचानक आ पड़े और उन्हें ख़बर भी न हो. 67 सारे दोस्त उस दिन एक-दूसरे के शत्रु होंगे, सिवाय ख़ुदा के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहने वाले लोगों के.

68 (उस दिन सफलता प्राप्त करने वालों से कहा जाएगा,) ऐ मेरे बंदों! आज तुम पर न कोई भय है और न तुम दुःखी होंगे. 69 (ये वे लोग होंगे) जिन्होंने हमारे संदेशों पर ईमान लाया और हमारे आज्ञाकारी बने. 70 (सफलता प्राप्त करने वाले बंदों से कहा जाएगा,) दाख़िल हो जाओ जन्नत में तुम और तुम्हारी पत्नियाँ, ख़ुशियों के साथ. 71 जन्नती लोगों के समक्ष सोने के प्याले और (नेमतों से भरी थालियाँ प्रस्तुत की जाएँगी. और वहाँ आदमी का जो जी चाहे वह (सारी) चीज़ें होंगी. जिनसे आँखों को तृप्ति मिलेगी. (जन्नतियों से कहा जाएगा,) तुम अब यहाँ हमेशा रहोगे, 72 यह वह जन्नत है जिसके तुम वारिस बनाए गए हो, उन कर्मों के बदले में जो तुम करते थे. 73 तुम्हारे लिए यहाँ इसमें बहुत से फल हैं, जिन्हें तुम खाओगे.

74 निस्संदेह अपराधी लोग हमेशा जहन्नम की यातना में ग्रस्त रहेंगे. 75 उनकी सज़ा में कभी कमी न की जाएगी, वे उसमें निराश पड़े रहेंगे. 76 हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे. 77 जहन्नमी लोग (जहन्नम के रखवालदार फ़रिश्तों को) पुकारेंगे, (कहेंगे) ऐ स्वामी! तुम्हारा रब हमारा काम ही तमाम कर दे (तो अच्छा होगा). (इस पर) फ़रिश्ता जवाब देगा, तुम्हें (यहाँ) इसी प्रकार पड़े रहना है. 78 हम तुम्हारे पास सत्य का संदेश लेकर आए थे, लेकिन तुममें से अधिकतर लोगों को सत्य अप्रिय था. 79 क्या इन्होंने कोई बात ठान रखी है? तो हमने भी ठान

लिया है. 80 क्या इन्होंने यह समझ रखा है कि हम इनकी रहस्य की बातें तथा कानाफूसियों को सुनते नहीं हैं? क्यों नहीं?(हम सब कुछ सुन रहे हैं) और हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उनके पास ही लिखते रहते हैं.

81 (पैग़ंबर!) कह दो, यदि कृपावंत ख़ुदा की कोई संतान होती तो मैं सबसे पहले उसकी उपासना करने वाला होता. 82 आसमानों और धरती का स्वामी, (समस्त सृष्टि के सत्ता-)सिंहासन का स्वामी, वह उन बातों से पाक है जिसका संबंध लोग उससे जोड़ते हैं. 83 (पैग़ंबर!) तो छोड़ो उन्हें कि वे व्यर्थ की बहस (कुतर्क) में पड़े रहें और (शब्दों के) खेल में लगे रहें, यहाँ तक कि उनका उस दिन से सामना हो जाए, जिसका उनसे वादा किया जा रहा है.

84 वही (अकेला) आसमान में भी ख़ुदा (अर्थात उपासनायोग्य) है और वही धरती पर भी ख़ुदा है. वह बुद्धिमान एवं ज्ञानवान है. 85 बहुत बरकत वाली है वह ज़ात जिसका साम्राज्य आसमानों और धरती में है और हर उस चीज़ पर (भी उसका साम्राज्य है) जो इन दोनों के बीच में है. उसी को क़यामत का ज्ञान है. और उसी की ओर तुम सबको लौट कर जाना है.

86 अल्लाह को छोड़कर जिन्हें यह लोग पुकारते हैं, वे किसी सिफ़ारिश का अधिकार नहीं रखते, सिवा इसके कि कोई अपने ज्ञान के आधार पर सत्य की गवाही दे (वह भी इजाज़त मिलने पर). 87 यदि तुम उनसे पूछो कि उनका सृजन किसने किया है, तो वे अवश्य कहेंगे, अल्लाह ने तो फिर वे कहाँ से धोका खा रहे हैं. 88 (लेकिन अल्लाह को इस चीज़ का पूर्ण ज्ञान है कि) पैग़ंबर ने (निराश होकर) कहा, ऐ मेरे रब! यह ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते. 89 तो (पैग़ंबर!) तुम उनकी ओर अनदेखी करो और कहो कि सलाम है तुम्हें. बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा.

सूरह–44. अद्–दुख़ान

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 हा० मीम०. 2 क़सम है इस स्पष्ट किताब की. 3 हमने इसे एक बरकत वाली रात में अवतरित किया है. निस्संदेह हम सचेत करने वाले हैं. 4 उस रात में प्रत्येक विवेकपूर्ण प्रयोजन निर्धारित किया जाता है, 5 हमारे आदेश से. निस्संदेह हम ही हैं पैग़ंबर भेजने वाले. 6 तुम्हारे रब की रहमत के तौर पर. निस्संदेह वह सुनने वाला और जानने वाला है. 7 आसमानों और धरती का रब और हर उस चीज़ का रब जो उन दोनों के बीच में है, यदि तुम विश्वास करने वाले हो. 8 उसके सिवा दूसरा कोई उपास्य नहीं, वही जीवन प्रदान करता है और वही मौत देता है. वह तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे गुज़रे हुए बाप-दादा का रब भी.

9 लेकिन वे संदेह में पड़े हुए खेल रहे हैं. 10 अच्छा, तो उस दिन की प्रतीक्षा करो जब आसमान एक खुले हुए धुएँ के साथ प्रकट होगा. 11 वह धुआँ लोगों को घेर लेगा, यह एक कष्टप्रद यातना होगी. 12 (तब लोग कहने लगेंगे) ऐ हमारे रब! हम पर से यह यातना टाल दे, हम ईमान लाते हैं. 13 लेकिन अब उनके लिए होश में आने का मौक़ा कहाँ बाक़ी रहा. (इनका हाल तो यह था कि) उनके पास साफ़-साफ़ बताने वाला पैग़ंबर आ चुका था. 14 तो उन्होंने उसकी ओर से मुँह मोड़ लिया और कहा कि यह तो सिखाया हुआ दीवाना है. 15 यदि हम कुछ समय के लिए यातना को हटा दें, तो तुम उसी दशा पर आ जाओगे. 16 लेकिन जिस दिन हम पकड़ेंगे, बड़ी पकड़. उस दिन हम पूरा बदला लेंगे.

17 इनसे पहले हमने फ़िरऔन के लोगों की परीक्षा ली. उनके पास एक सम्मानित पैग़ंबर आया. 18 (इस संदेश के साथ) कि अल्लाह के बंदों को मेरे हवाले कर दो. मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय पैग़ंबर हूँ.

19 और यह कि अल्लाह के मुक़ाबले में विद्रोह न करो. मैं तुम्हारे समक्ष एक खुला प्रमाण प्रस्तुत करता हूँ. 20 मैं इससे उस अल्लाह की शरण ले चुका हूँ जो मेरा और तुम्हारा रब है कि तुम मुझ पर हमलावर हो. 21 और यदि तुम ईमान नहीं लाते हो, तो तुम मुझसे दूर रहो (अर्थात मुझ पर हाथ डालने से बाज़ रहो).

22 (अंततः) मूसा ने अपने रब को पुकारा कि ये लोग अपराधी हैं. 23 (अल्लाह ने कहा,) अब तुम मेरे बंदों को रातों-रात लेकर चले जाओ. निस्संदेह तुम्हारा पीछा किया जाएगा. 24 और तुम लोग दरिया को थमा छोड़ दो, ये सारी सेना डुबो दी जाने वाली है. 25 वे (अपने पीछे) कितने ही बाग़ और स्रोत छोड़ गए. 26 और खेतियाँ और कई उत्तम आवासीय भवन 27 और कितनी ही सुख-सामग्री जिसमें वे मज़े कर रहे थे (अपने पीछे सब छोड़ गए). 28 इस प्रकार हुआ (उनका अंत) और हमने दूसरों को इन चीज़ों का वारिस बना दिया. 29 तो उन पर न आसमान रोया और न धरती रोयी, न उन्हें कोई मुहलत दी गयी.

30 इस प्रकार हमने इसराईल की संतान को अपमानजनक यातना से छुटकारा दे दिया. 31 अर्थात फ़िरऔन से (छुटकारा). निस्संदेह वह विद्रोही तथा सीमा का उल्लंघन करने वालों में से था. 32 और हमने इसराईल की संतान को अपने ज्ञान से संसार वालों पर श्रेष्ठता प्रदान की. 33 और हमने उन्हें ऐसी निशानियाँ दी जिनमें स्पष्ट परीक्षा थी.

34 ये लोग बड़ी दृढ़ता के साथ कहते हैं, 35 हमारी पहली मौत के सिवा और कुछ नहीं है. उसके बाद हम दोबारा उठाए जाने वाले नहीं हैं. 36 (वे मृत्यु-पश्चात परिणाम की दुनिया की ख़बर देने वालों से कहते हैं,) यदि तुम सच्चे हो तो ले आओ हमारे बाप-दादा को. 37 क्या ये (इन्कारी लोग) श्रेष्ठ हैं या तुब्बा की क़ौम या वे जो उनसे पहले थे. हमने उन्हें नष्ट कर दिया. निस्संदेह वे अपराधी लोग थे.

38 हमने आसमानों तथा धरती को और जो कुछ उनके बीच में है, खेल के तौर पर नहीं
बना दिया. 39 उन्हें हमने उद्देश्यपूर्वक बनाया है. लेकिन उनमें से अधिकतर लोग नहीं
जानते. 40 निस्संदेह फ़ैसले का दिन इन सबका नियत समय है. 41 जिस दिन कोई
संबंधी किसी संबंधी के किसी भी तरह काम नहीं आएगा, और न उनकी सहायता की
जाएगी. 42 सिवाय उसके जिस पर अल्लाह दया करे. निस्संदेह वह प्रभुत्वशाली है,
दयालुता वाला है.

43 ज़क़्क़ूम का वृक्ष (अर्थात उसके कांटेदार फल) 44 अपराधियों का खाना
होगा, 45 तेल की तलछट जैसा वह पेटों में खौलेगा, 46 जैसे गर्म पानी खौलता है. 47
(जहन्नम के दारोगा को आदेश होगा,) पकड़ो उसे और घसीटते हुए उसको जहन्नम के
बीचों-बीच ले जाओ. 48 फिर उसके सर पर यातनादायी खौलता हुआ पानी उंडेल दो.
49 चख इसका मज़ा, तू स्वयं को बड़ा ही सामर्थ्यवान और इज़्ज़तदार समझता था. 50
यह वही चीज़ है जिस के संबंध से तुम लोग संदेह करते थे.

51 अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) लोग शांति के स्थान में होंगे. 52
(जन्नती लोग) बागों और स्रोतों में, 53 बारिक और गाढ़े रेशम के वस्त्र पहने हुए आमने-
सामने बैठे होंगे. 54 ऐसा होगा (जन्नतियों का जीवन). हम जन्नती लोगों का विवाह
बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरों से करेंगे. 55 वे वहाँ माँगेंगे हर प्रकार के फल अत्यंत
निश्चिंतता के साथ. 56 वे वहाँ कदापि मृत्यु को न चखेंगे, लेकिन वह मृत्यु जो पहले
(दुनिया में) आ चुकी. अल्लाह ने उन्हेंजहन्नम की यातना से बचा लिया होगा. 57 यह
तुम्हारे रब की कृपा से होगा. यही है बड़ी कामयाबी.

58 (पैग़ंबर) हमने इस क़ुरआन को तुम्हारी भाषा में सरल बना दिया है, ताकि लोग
मार्गदर्शन प्राप्त करें. 59 तो तुम भी प्रतीक्षा करो, ये लोग भी प्रतीक्षा कर रहे हैं.

सूरह–45. अल–जासिया

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 हा० मीम०. 2 यह किताब है उतारी हुयी अल्लाह की ओर से जो प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है. 3 निस्संदेह आसमानों और धरती में निशानियाँ हैं ईमान वालों के लिए. 4 और (निशानियाँ हैं) तुम्हारी अपनी रचना में और उन जीवधारियों में भी जो उसने धरती में फैला रखे हैं, (इन सब में) निशानियाँ हैं. उन लोगों के लिए जो विश्वास रखते हैं. 5 और रात व दिन के आने-जाने में और उस (वर्षा-रूपी) जीविका में जिसको अल्लाह आसमान से उतारता है, फिर उससे धरती मृत हो जाने के बाद उसे जीवित करता है. और हवाओं की गर्दिश में भी, (इन सारी घटनाओं में) निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेने वाले हैं. 6 ये अल्लाह के संदेश हैं, जिन्हें हम तुम्हें ठीक-ठीक सुना रहे हैं. अब अल्लाह और उसके संदेशों के बाद किस बात पर ये ईमान लाएंगे?

7 तबाही है हर झूठ गढ़ने वाले गुनाहगार के लिए. 8 जो अल्लाह के संदेशों को सुनता है, जबकि वे उसके समक्ष पढ़े जाते हैं, फिर वह घमंड के साथ (इन्कार पर) अड़ा रहता है, मानो उसने उन्हें सुना ही नहीं तो (पैग़ंबर!) ऐसे व्यक्ति को दुखदायी यातना की शुभ-सूचना दे दो. 9 जब वह हमारे संदेशों के द्वारा किसी चीज़ की सूचना पाता है, तो वह उसकी हँसी उड़ाने लगता है. ऐसे लोगों के लिए अपमानजनक यातना है. 10 उनके आगे जहन्नम है (अर्थात उनकी मंज़िल जहन्नम है). और जो कुछ उन्होंने कमाया, वह उनके कुछ काम आने वाला नहीं और न वे (उनके कुछ काम आएंगे) जिन्हें उन्होंने अल्लाह को छोड़कर दूसरों को संरक्षक बना रखा. उनके लिए बड़ी यातना है. 11 (निस्संदेह!) यह क़ुरआन मार्गदर्शन है. जिन्होंने अपने रब के संदेशों को झुठलाया, उनके लिए कठोर सज़ा है.

12 वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए समुंदर को क़ाबू में दे दिया, ताकि उसके आदेश से उसमें नौकाएँ चलें. ताकि तुम उसकी कृपा तलाश करो. ताकि तुम कृतज्ञ बनो. 13 जो चीज़ें आसमानों में हैं और जो धरती में हैं. उसने उन सबको अपनी ओर से तुम्हारे काम में लगा रखा है. निस्संदेह इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो चिंतन करते हैं.

14 (पैग़ंबर!) ईमान लाए हुए लोगों से कह दो कि वे उन लोगों को क्षमा करें जो अल्लाह के दिनों की अपेक्षा नहीं रखते. ताकि अल्लाह एक क़ौम को उसकी कमाई का बदला दे. 15 जो व्यक्ति भला कर्म करेगा तो उसका लाभ उसी के लिए है. और जो बुराई करेगा तो उसका वबाल उसी पर पड़ेगा. फिर तुम अपने रब की ओर लौटाए जाओगे.

16 हमने इसराईल की संतान को किताब तथा निर्णय शक्ति और पैग़ंबरी प्रदान की. इसी के साथ उन्हें हमने अच्छी जीविका दी. इस प्रकार हमने उन्हें दुनिया भर के लोगों में श्रेष्ठता प्रदान की. 17 हमने उन्हें दीन (सत्य-आस्था) के संबंध से स्पष्ट दलीलें दीं फिर जो मतभेद उनके बीच पैदा हुआ वह (न जानने के कारण नहीं था, बल्कि) ज्ञान आ चुकने के बाद पैदा हुआ, परस्पर हठधर्मिता के कारण. निस्संदेह तुम्हारा रब क़यामत के दिन उनके बीच निर्णय कर देगा, जिनमें वे परस्पर मतभेद करते थे. 18 फिर (पैग़ंबर!) हमने तुम्हें दीन (सत्य-आस्था) के मामले में एक स्पष्ट मार्ग पर स्थापित किया. तो तुम उसी पर चलो और उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न करो जो ज्ञान नहीं रखते. 19 (पैग़ंबर! अपनी इच्छाओं पर चलने वाले) यह लोग अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकते. (हक़ीक़त यह है कि) अत्याचारी लोग एक-दूसरे के मित्र हैं और अल्लाह उन लोगों का मित्र है जो उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहते हैं. 20 (क़ुरआन के) यह संदेश लोगों के लिए विवेकपूर्ण बातें हैं और मार्गदर्शन व दयालुता उन लोगों के लिए जो दृढ़तापूर्वक विश्वास करने वाले हैं.

21 क्या वे लोग जिन्होंने बुरे कर्म किए, समझते हैं कि उनको हम उन लोगों के भाँति कर देंगे जो ईमान लाए और भले कर्म किए कि उन सबका जीना और मरना समान हो जाए? बहुत बुरा निर्णय है जो वे कर रहे हैं.
22 अल्लाह ने आसमानों और धरती को इस सत्य उद्देश्य के साथ बनाया है, कि हर इंसान को उसके किए का बदला दिया जाए; और उन पर कोई अत्याचार न होगा.

23 क्या तुमने उस व्यक्ति का (चिंतनपूर्वक) निरीक्षण किया जिसने अपनी इच्छा को अपना उपास्य बना रखा है? और अल्लाह ने उसके ज्ञान के बावजूद उसे पथभ्रष्टता में डाल दिया है. और उसके कान और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँख पर पर्दा डाल दिया. तो ऐसे व्यक्ति को कौन मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है, इसके बाद कि अल्लाह ने उसे भटका दिया हो. क्या तुम लोग शिक्षा नहीं लेते?

24 और वे कहते हैं कि ज़िंदगी तो बस यही हमारी दुनिया की ज़िंदगी है. यहीं मरना और जीना है. काल-चक्र के सिवा कोई चीज़ नहीं जो हमें नष्ट करती हो. (हक़ीक़त यह है कि) इस मामले में उनके पास कोई ज्ञान नहीं है. ये तो बस अटकल दौड़ाते हैं.
25 और जब उन्हें हमारे स्पष्ट संदेश सुनाए जाते हैं, तो उनके पास कोई तर्क इसके सिवा नहीं होता कि हमारे बाप-दादा को जीवित करके लाओ यदि तुम सच्चे हो.
26 (पैग़ंबर!) उनसे कह दो, अल्लाह ही तुम्हें जीवन प्रदान करता है और वही तुम्हें मौत देता है. फिर वही क़यामत के दिन तुम सबको इकट्ठा करेगा, जिसके आने में कोई संदेह नहीं. लेकिन अधिकतर लोग जानते नहीं हैं.

27 आसमानों तथा धरती का साम्राज्य अल्लाह ही का है. और जिस दिन क़यामत की घड़ी घटित होगी, उस दिन झुठलाने वाले घाटे में होंगे.
28 उस समय तुम हर समूह को घुटनों के बल गिरा देखोगे. हर समूह अपने कर्म-पत्रों की ओर बुलाया जाएगा. (उनसे कहा जाएगा,) आज तुम्हें उसका बदला दिया जाएगा जो कुछ तुम करते थे.
29

यह हमारी पंजिका (रेकॉर्ड-बुक) है, जो तुम्हारे ऊपर ठीक-ठीक गवाही दे रही है. जो कुछ भी तुम करते थे हम लिखवाते जा रहे थे.

30 जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें उनका रब अपनी रहमत में दाख़िल करेगा. यही स्पष्ट सफलता है. 31 और जिन लोगों ने सत्य को नकारा था (उनसे पूछा जाएगा), क्या तुम्हें मेरे संदेश पढ़कर नहीं सुनाए जाते थे? लेकिन तुमने घमंड किया और तुम थे ही अपराधी लोग! 32 (झुठलाने वालों से कहा जाएगा,) जब तुमसे कहा जाता था कि अल्लाह का वादा सच्चा है और क़यामत के आने में कोई संदेह नहीं. तो तुम कहते थे, हम नहीं जानते कि क़यामत क्या होती है. हमें तो बस अनुमान सा प्रतीत होता है और हमें विश्वास नहीं होता.

33 (उस दिन) उनके बुरे कर्मों (के परिणाम) उनके सामने आ जाएंगे और वह चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसका वह उपहास करते थे. 34 और कहा जाएगा कि आज हम तुम्हें भुला देंगे जिस प्रकार तुमने इस दिन की भेंट को भुला रखा था. तुम्हारा ठिकाना अब आग है और तुम्हारा कोई सहायक नहीं. 35 यह इस कारण कि तुमने अल्लाह के संदेशों की हँसी उड़ाई. और दुनिया की ज़िंदगी ने तुम्हें धोके में डाल रखा था. आज न अपराधी लोग उस (आग) से निकाले जाएंगे और न उनसे कहा जाएगा कि क्षमा याचना करके (अपने रब को राज़ी करो).

36 सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो आसमानों का रब है और धरती का रब, (अर्थात) समस्त सृष्टि का रब. 37 उसी के लिए बड़ाई है आसमानों और धरती में. वही प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है.

पारा – 26

सूरह–46. अल–अहक़ाफ़

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 हा० मीम०. 2 यह किताब अल्लाह की ओर से उतारी गयी है. जो प्रभुत्वशाली और बुद्धिमान है. 3 हमने आसमानों और धरती को और उन सारी चीज़ों को जो उनके बीच है (अर्थपूर्ण) उद्देश्य के साथ तथा एक निर्धारित कालावधी के लिए बनाया है. लेकिन सत्य का इन्कार करने वाले लोग उस (वास्तविकता) से मुँह मोड़े हुए हैं, जिससे उन्हें सचेत किया गया है.

4 (पैग़ंबर!) उनसे कहो, क्या तुमने उनके संबंध से कभी सोचा भी है कि जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो. मुझे बताओ कि उन्होंने धरती की चीज़ों में से किस चीज़ का सृजन किया है. या आसमानों में उनकी कोई साझेदारी है? (इसके प्रमाण के तौर पर) मेरे पास इससे पहले की कोई किताब ले आओ या कोई ज्ञान जो चला आता हो, यदि तुम सच्चे हो. 5 उस व्यक्ति से अधिक पथभ्रष्ट और कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारे जो क़यामत तक उसको जवाब नहीं दे सकते, बल्कि वे तो ऐसे लोगों की पुकार से बेख़बर हैं. 6 (उस दिन) जब सारे लोग इकट्ठा किए जाएंगे वे (ग़ैर-ख़ुदा) अपने पुकारने वाले (उपासकों) के दुश्मन होंगे और उनकी उपासना को नकार देंगे.

7 और जब हमारे स्पष्ट संदेश उन्हें पढ़कर सुनाए जाते हैं तो इन्कारी लोग, सत्य के संबंध से कहते, जबकि वह उनके पास आ गया, ‘यह तो खुला हुआ जादू है.’ 8 क्या इन्कारी लोग कहते हैं कि पैग़ंबर ने इस (संदेश) को स्वयं गढ़ लिया है? (पैग़ंबर!) उनसे कहो, यदि मैंने इसे अपनी ओर से गढ़ा है, तो तुम लोग मुझे तनिक भी अल्लाह की (पकड़) से बचा नहीं सकते. जो बातें तुम बनाते हो, अल्लाह उन्हें भली-भाँति जानता है. वह मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए पर्याप्त है. वह क्षमा करने वाला तथा दया करने वाला है.

9 (ऐ मुहम्मद!) कह दो, मैं कोई अनोखा पैग़ंबर नहीं हूँ. मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या. मैं तो बस उस आसमानी संदेश का पालन करता हूँ जो मेरी ओर प्रकट किया जाता है. मैं तो मात्र एक साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूँ. 10 (पैग़ंबर!) इनसे कहो, क्या तुमने कभी सोचा कि यदि यह क़ुरआन अल्लाह की ओर से हो, फिर तुमने इसे मानने से इन्कार कर दिया (तो तुम्हारा क्या अंजाम होगा)? और ऐसी ही किताब पर इसराईल की संतान में से एक गवाह ने गवाही दी है. तो वह ईमान लाया और तुमने घमंड किया. निस्संदेह अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन प्रदान नहीं करता.

11 सत्य का इन्कार करने वाले लोग ईमान लाने वालों के संबंध से कहते हैं कि इस (किताब) को मान लेना कोई अच्छा काम होता तो यह ईमान वाले लोग इस संबंध में हमसे आगे न रहे होते. चूँकि उन्होंने इस किताब से मार्गदर्शन प्राप्त नहीं किया तो अब वे कहेंगे कि यह तो पुराना झूठ है. 12 और इस (क़ुरआन) से पहले मूसा पर अवतरित किताब थी मार्गदर्शन और रहमत. और अब यह किताब (अर्थात क़ुरआन) जो पूर्ववर्ती किताब की पुष्टि करती है, अरबी भाषा में (अवतरित हुयी है), ताकि ज़ालिमों को सचेत कर दे और उत्तम प्रकार से नेक कर्म करने वालों को शुभ-सूचना दे दे.

13 निस्संदेह जिन लोगों ने कहा, हमारा रब अल्लाह है, फिर उस पर जम गए, उनके लिए न कोई भय है और न वे दुःखी होंगे. 14 (सच्चाई को पाने वाले और उस पर दृढ़तापूर्वक जमे रहने वाले) यही लोग हैं जो जन्नत में जाने वाले हैं, जहाँ वे सदैव रहेंगे. अपने उन कर्मों के बदले जो वे दुनिया में करते रहे हैं. 15 हमने इंसान को ताकीद की, कि वह अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करे. उसकी माँ ने कष्ट उठा कर उसे पेट में रखा और कष्ट उठा कर उसे जन्म दिया. और उसके गर्भ की अवस्था में रहने और दूध छुड़ाने की प्रक्रिया तीस महीनों में पूर्ण होती है (इस कालावधी में शिशु पूर्णतः माँ पर

निर्भर होता है), यहाँ तक कि जब वह अपनी प्रौढ़ता को पहुँचा और चालीस बरस का हुआ तो उस (ईमान वाले बंदे) ने कहा, ऐ मेरे रब! मुझे सामर्थ्य प्रदान कर कि मैं तेरी उन नेमतों का शुक्र अदा करूँ जो तूने मुझे और मेरे माँ-बाप को प्रदान की है. और यह कि मैं वह भला कर्म करूँ जिससे तू प्रसन्न हो. और मेरे लिए मेरी संतान में भलाई रख दे. (ऐ मेरे रब!) मैं तेरी ओर पलटता हूँ और मैं तेरे प्रति (स्वयं को) पूर्णतः समर्पित करता हूँ.
16 यही वे (सदाचारी) लोग हैं, जिनके अच्छे कर्मों को हम स्वीकार करेंगे और उनकी बुराइयों को हम क्षमा करेंगे. वह जन्नत वालों में से होंगे. सच्चा वादा — जो उनसे किया जाता था.

17 लेकिन (अवज्ञाकारी संतान का हाल यह होता है कि) वह अपने माता-पिता से कहता है कि मैं दुःखी हूँ तुमसे. क्या तुम मुझे इससे डराते हो कि मैं (क़ब्र से) निकाला जाऊँगा? हालाँकि मुझसे पहले कितनी ही पीढ़ियाँ गुज़र चुकी हैं (उनमें से कोई उठकर न आया). माँ-बाप अल्लाह की दुहाई देकर कहते हैं, अफ़सोस है तुझ पर, मान जा. निस्संदेह अल्लाह का वादा सच्चा है. लेकिन वह कहता है, यह सब पहले के लोगों की कहानियाँ हैं. 18 यह वे लोग हैं जिनके संबंध से अल्लाह का नियम सही साबित हुआ. उनसे पहले जिन्न व इंसानों के (इन जैसे दुराचारी) समूह हो गुज़रे हैं, (उन्हीं में ये भी शामिल होंगे). निस्संदेह ये घाटा उठाने वाले लोग हैं.

19 और प्रत्येक के लिए उनके कर्मों के अनुसार दर्जे होंगे, ताकि अल्लाह उन्हें उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला चुका दे और उन पर कदापि ज़ुल्म न होगा. 20 फिर जब सत्य के इन्कारी आग के सामने ला खड़े किए जाएंगे, (तो उनसे कहा जाएगा) तुम अपनी अच्छी चीज़ें दुनिया की ज़िंदगी में ले चुके और उनका उपभोग कर चुके, तो आज तुम्हें अपमानकारी सज़ा दी जाएगी, इस कारण कि तुम दुनिया में बिना किसी हक़ के घमंड करते थे और इस कारण कि तुम स्पष्ट अवज्ञाकारी थे. 21 और क़ौमे-आद के भाई

हूद को याद करो, जबकि उसने अहक़ाफ़ (मरू-भूमि) में अपनी क़ौम को सचेत किया था. और सचेत करने वाले (पैग़ंबर) उससे पहले भी आते थे और उसके बाद भी आते रहे (इसी एकमात्र संदेश के साथ) कि अल्लाह के सिवा किसी और की उपासना न करो. मैं तुम पर एक भयानक दिन की यातना से डरता हूँ.

22 क़ौम के लोगों ने कहा कि क्या तुम हमारे पास सिर्फ़ इसलिए आए हो कि हमें हमारे उपास्यों से फेर दो. यदि तुम (वास्तव में) सच्चे हो तो वह चीज़ (अर्थात वह यातना) हम पर ले आओ जिससे तुम हमें सावधान कर रहे हो. 23 (इस पर) पैग़ंबर ने कहा, उसका ज्ञान तो अल्लाह ही को है. मैं तो तुम्हें वह संदेश पहुँचा रहा हूँ जो मुझे देकर भेजा गया है. लेकिन मैं देख रहा हूँ कि तुम नासमझी की बातें कर रहे हो.

24 जब क़ौम के लोगों ने (उस सज़ा को) बादलों के रूप में अपनी घाटियों की ओर आते हुए देखा तो उन्होंने कहा यह तो बादल हैं जो हमारे लिए बारिश लाये हैं. नहीं, बल्कि यह वह चीज़ है जिसके लिए तुम जल्दी मचा रहे थे. यह एक आँधी है जिसमें दुखदायी यातना (चली आ रही) है. 25 वह हर चीज़ को अपने रब के आदेश से उखाड़ फेंकेगी. तो (अंततः) उनकी अवस्था यह हुयी कि उनके (उजड़े हुए) घरों के सिवा वहाँ कुछ दिखायी न देता था. अपराधियों को हम इसी प्रकार दंड देते हैं.

26 (ऐ मक्कावासियो!) हमने उन्हें वह सामर्थ्य प्रदान किया था जो तुम्हें प्रदान नहीं किया. हमने उन्हें सुनने, देखने तथा समझने की शक्ति प्रदान कर रखी थी. लेकिन यह सुनने, देखने तथा समझने की शक्ति (अंत में) उनके कुछ काम न आयी, क्योंकि वे अल्लाह के संदेशों का इन्कार करते थे. और उन्हें उस चीज़ ने घेर लिया जिसका वे उपहास करते थे. 27 और हमने तुम्हारे आस-पास की बस्तियाँ भी नष्ट कर दी. हमने बार-बार अपनी निशानियाँ बतायीं, ताकि वे (सन्मार्ग की ओर) पलट आएँ.

28 तो फिर उन्होंने अल्लाह को छोड़कर जिन्हें उसका सामीप्य प्राप्त करने के लिए उपास्य बना रखा था वे उन (उपासकों) की मदद करने वाले क्यों न बने? बल्कि वे सब उनसे खोए गए. और यह उनका झूठ था और उनकी गढ़ी हुयी बात थी. 29 (और पैग़ंबर! वह घटना भी उल्लेखनीय है) जब हम जिन्नों के एक समूह को तुम्हारी ओर ले आए थे, ताकि वे क़ुरआन सुनें. जब वे वहाँ पहुँचे तो कहने लगे, चुप रहो (और ध्यानपूर्वक क़ुरआन सुनो). फिर जब क़ुरआन पढ़ा जा चुका तो वे लोग डराने वाले बनकर अपनी क़ौम की ओर वापस गए. 30 (क़ुरआन सुनने के बाद जब जिन्न अपने समूह की ओर वापस आए तो) उन्होंने कहा, ऐ हमारी क़ौम! हमने एक किताब सुनी है, जो मूसा के बाद उतारी गयी है. पुष्टि करती है अपने से पहले आयी हुयी किताबों की, वह सत्य एवं सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन करती है. 31 (उन्होंने अपने समूह से आगे कहा,) ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह की ओर बुलाने वाले की पुकार को स्वीकार करो और उस पर ईमान ले आओ. अल्लाह तुम्हारे पापों को माफ़ कर देगा और तुम्हें कष्टप्रद यातना से बचाएगा. 32 और जो कोई अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात न माने, तो धरती में वह (अल्लाह को) पराजित नहीं कर सकता. और अल्लाह के सिवा उसका कोई सहायक न होगा. ऐसे लोग स्पष्ट पथभ्रष्टता में हैं.

33 क्या इन लोगों ने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने आसमानों और धरती को बनाया है और वह उनके बनाने से नहीं थका. वह अवश्य इसकी सामर्थ्य रखता है कि मुर्दों को जीवित कर दे. क्यों नहीं? वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है. 34 और जिस दिन सत्य के इन्कार पर तुले हुए लोग आग के सामने लाए जाएंगे (और उनसे पूछा जाएगा,) क्या यह सत्य नहीं है? वे कहेंगे, हाँ! हमारे रब की क़सम! (यह जहन्नम सत्य है!) तो ख़ुदा कहेगा, अच्छा, तो सज़ा का मज़ा चखो अपने उस इन्कार के बदले जो तुम करते रहे थे.

35 (पैग़ंबर!) तुम धैर्य से काम लो जिस प्रकार (पूर्ववर्ती) साहसी पैग़ंबरों ने धैर्य से काम लिया. और इनके मामले में जल्दी न करो. जिस दिन ये लोग उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है. तो (उन्हें यह जान पड़ेगा कि वे दुनिया में) मानो एक घड़ी भर से ज़्यादा नहीं रहे थे. (पैग़ंबर! तुम पर) यह संदेश पहुँचा देने (की ज़िम्मेदारी) है. तो वही लोग नष्ट होंगे जो अवज्ञा करने वाले हैं.

सूरह–47. मुहम्मद

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 जिन लोगों ने सत्य को नकारा और (दूसरों को) अल्लाह के मार्ग से रोका, अल्लाह ने उनके कर्मों को अकारथ कर दिया. 2 जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और उस चीज़ को मान लिया जो मुहम्मद पर उतारी गयी है. और वह सत्य है उनके रब की ओर से. तो अल्लाह ने उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर दीं और उनकी दशा को सुधार दिया. 3 यह (अंतर) इस कारण है कि जिन लोगों ने सत्य का स्वीकार करने से मना किया उन्होंने असत्य का अनुसरण किया. और जो लोग ईमान लाए उन्होंने सत्य का अनुसरण किया, जो उनके रब की ओर से है. इस प्रकार अल्लाह लोगों के लिए उनकी मिसालें बयान करता है.

4 सत्य का इन्कार करने वाले (आक्रमणकारियों) से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उनकी गरदनें मारो, यहाँ तक कि जब तुम उन्हें अच्छी तरह कुचल कर रख दो (अर्थात सत्य के विरोधियों का ज़ोर तोड़ देने के बाद) उन्हें युद्ध-क़ैदी (के रूप में) मज़बूत बाँध लो. फिर उसके बाद या तो उपकार करके छोड़ना है या मुक्ति-धन लेकर. यहाँ तक कि युद्ध पूर्णतः समाप्त हो जाए. यह है (तुम्हारे करने का) काम. यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं ही उन (सत्य के विरोधियों) से निपट लेता. लेकिन (उसने तुम्हें युद्ध की इजाज़त इसलिए दी है) कि वह तुम लोगों को एक-दूसरे से आज़माए, और जो लोग अल्लाह के मार्ग में

मारे जाएंगे, अल्लाह उनके कर्मों को कदापि अकारथ नहीं करेगा. 5 वह उनका मार्गदर्शन करेगा और उनकी दशा सुधार देगा. 6 और उन्हें उस जन्नत में दाख़िल करेगा जिसकी उसने उन्हें पहचान करा दी है. 7 ऐ ईमान वालो! यदि तुम अल्लाह की सहायता करोगे तो वह तुम्हारी सहायता करेगा और वह तुम्हारे क़दम जमा देगा. 8 जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया उनके लिए विनाश है. अल्लाह उनके कर्मों को अकारथ कर देगा. 9 यह इस कारण कि उन्होंने उस चीज़ को नापसंद किया जो अल्लाह ने उतारी है. तो अल्लाह ने उनके कर्मों को अकारथ कर दिया.

10 क्या ये लोग धरती पर चले-फिरे नहीं कि उन लोगों का अंजाम देखते जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं. अल्लाह ने उन्हें उखाड़ फेंका और यही अंजाम इन्कार करने वालों के लिए नियत है. 11 यह इसलिए कि अल्लाह ईमान लाने वालों का संरक्षक है. और सत्य के इन्कारियों का कोई संरक्षक नहीं.

12 निस्संदेह अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, ऐसे बागों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. लेकिन जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया वे (कुछ दिनों की दुनिया में) मज़े लूट रहे हैं. वे खा रहे हैं जिस तरह जानवर खाते हैं. आग उन लोगों का ठिकाना है. 13 (पैग़ंबर!) कितनी ही बस्तियाँ थीं जो तुम्हारी उस बस्ती से बहुत ज़्यादा शक्तिशाली थीं, जिसने तुम्हें निकाल दिया है. हमने उन्हें नष्ट कर दिया, तो कोई उनका सहायक न बना.

14 जो व्यक्ति अपने रब की ओर से स्पष्ट प्रमाण पर हो, क्या वह उस जैसा हो सकता है जिसके बुरे कर्मों को (उसके लिए) आकर्षक बना दिया गया हो. (और क्या वह उन लोगों जैसा हो सकता है) जो अपनी इच्छाओं का अनुसरण करते हों? 15 उस जन्नत की शान, जिसका वादा ख़ुदा के प्रति सचेत रहने वालों से किया गया है, यह है कि उसमें ऐसे पानी की नहरें होंगी जो प्रदूषित (अथवा परिवर्तित) नहीं होगा. और नहरें होंगी

दूध की जिसके स्वाद में कोई अंतर नहीं आएगा. और नहरें होंगी ऐसे पेय की जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट होगा. और नहरें होंगी साफ़-सुथरे शहद की. और उनके लिए वहाँ हर प्रकार के फल होंगे. और उनके रब की ओर से माफ़ी होगी. क्या ये जन्नती लोग उन जैसे हो सकते हैं जो सदैव आग में रहेंगे, जिन्हें ऐसा खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा जो उनकी अंतड़ियों को काट डालेगा?

16 (पैग़ंबर!) और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं. यहाँ तक कि वे तुम्हारे पास से निकलते हैं तो ज्ञान वालों से पूछते हैं कि उन्होंने अभी-अभी क्या कहा? यही वे लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और वे अपनी इच्छाओं के पीछे चल रहे हैं. 17 और जिन लोगों ने सन्मार्ग को अपनाया तो अल्लाह उन्हें और अधिक मार्गदर्शन प्रदान करता है. और उन्हें सत्य की गहरी पहचान प्रदान करता है. 18 यह लोग तो बस इसकी प्रतीक्षा में हैं कि क़यामत उन पर अचानक आ जाए. तो उसकी निशानियाँ प्रकट हो चुकी हैं. तो जब क़यामत आ जाएगी तो इनके लिए उपदेश ग्रहण करने का अवसर कहाँ शेष रहेगा.

19 तो ख़ूब जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं. तो अपनी ग़लतियों के लिए क्षमा याचना करो और ईमान वाले पुरुषों तथा औरतों के लिए भी. अल्लाह तुम्हारी चलत-फिरत (अर्थात सारी activities) को जानता है और तुम्हारे ठिकानों को भी.

20 जो लोग ईमान लाए हैं, वे कह रहे थे कि कोई अध्याय क्यों नहीं उतारा जाता (जिसमें युद्ध की इजाज़त हो). लेकिन जब एक स्पष्ट अध्याय उन पर उतरा जिसमें युद्ध का भी उल्लेख था. तो तुमने देखा कि जिनके दिलों में (पाखंड का) रोग है वे तुम्हारी ओर इस प्रकार देख रहे हैं, जैसे किसी पर मृत्यु छा गयी हो. अफसोस है उनके हाल पर. 21 (पैग़ंबर का) आज्ञापालन करना और उचित बात करना (यही उनके लिए आवश्यक था). फिर जब बात निश्चित हो जाए, तब वे अल्लाह के समक्ष सच्चे साबित होते, तो

उन्हीं के लिए अच्छा होता. 22 (उनसे पूछो) यदि तुम फिर गए तो इसके सिवा तुमसे कोई आशा नहीं कि तुम धरती में बिगाड़ फैलाओगे और अपने रिश्ते-नातों को तोड़ डालोगे. 23 यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने अपनी रहमत से दूर कर दिया. तो उन्हें अंधा और बहरा बना दिया. 24 क्या ये लोग क़ुरआन में चिंतन नहीं करते या उनके दिलों पर ताले लगे हुए हैं. 25 जो लोग, इसके पश्चात कि मार्ग उन पर स्पष्ट रूप से खुल चुका था, वे पीठ फेर कर लौट गए, तो शैतान ने उन्हें बहका दिया और अल्लाह ने उन्हें ढील दे दी. 26 यह इस कारण से हुआ कि उन्होंने अल्लाह की उतारी हुयी चीज़ को नापसंद करने वालों से कहा कि कुछ मामलों में हम तुम्हारी बात मान लेंगे. अल्लाह उनकी गुप्त बातों को भली-भांति जानता है.

27 फिर उस समय क्या हाल होगा जब फ़रिश्ते उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते हुए उनके प्राण निकालेंगे. 28 यह इस कारण से कि उन्होंने उस चीज़ का अनुसरण किया जो अल्लाह को क्रोध दिलाने वाली थी. और उन्होंने अल्लाह की प्रसन्नता को नापसंद किया. तो अल्लाह ने उनके कर्म अकारथ कर दिए.

29 जिन लोगों के दिलों में (पाखंड का) रोग है, क्या वे समझते हैं कि अल्लाह उनके दिलों की खोट प्रकट नहीं करेगा? 30 और यदि हम चाहते तो उन (पाखंडियों) को तुम्हें दिखा देते, फिर तुम उन्हें उनके चेहरों से (स्पष्टतः) पहचान लेते. लेकिन तुम उन्हें उनकी बातचीत के ढंग से उन्हें पहचान ही लोगे. अल्लाह तो तुम सबके कर्मों को ख़ूब जानता है.

31 और हम अवश्य तुम्हें परीक्षा में डालेंगे, ताकि हम उन लोगों को जान लें (अर्थात उन्हें स्पष्ट रुप में सामने ला दें) जो तुममें जिहाद करने वाले (अर्थात ख़ुदा के मार्ग में प्रयत्नों की पराकाष्ठा करने वाले) हैं और दृढ़तापूर्वक जमे रहने वाले हैं और ताकि हम तुम्हारी परिस्थितियों को जाँच लें (कि किस परिस्थिती में तुम क्या रिस्पॉन्स देते हो).

32 निस्संदेह जिन लोगों ने सत्य को नकारा और (दूसरों को) अल्लाह के मार्ग से रोका और पैग़ंबर का विरोध किया, जबकि उन पर सीधा रास्ता स्पष्ट हो चुका था. वे (सत्य के विरोधी लोग) अल्लाह को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकते. और अल्लाह उनका किया-धरा सब बरबाद कर देगा.

33 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह का आज्ञापालन करो और पैग़ंबर का आज्ञापालन करो. और अपने कर्मों को नष्ट न करो. 34 निस्संदेह जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया और अल्लाह के मार्ग से रोका और फिर इन्कार की ही अवस्था में मर गए, अल्लाह उन्हें कभी माफ़ नहीं करेगा. 35 और ऐसा न हो कि तुम हिंमत हार जाओ और सुलह का निमंत्रण देने लगो. तुम ही प्रभावशाली रहोगे. अल्लाह तुम्हारे साथ है. अल्लाह कदापि तुम्हारे कर्मों (के प्रतिफल) में कोई कमी नहीं करेगा. 36 दुनिया की ज़िंदगी तो बस खेल और तमाशा है. यदि तुम लोग ईमान लाए और सदाचार की नीति अपनाए तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारे कर्मों का बदला देगा और वह तुमसे तुम्हारे माल नहीं माँगेगा. 37 यदि कहीं वह तुम्हारे माल तुमसे माँग ले और सारा का सारा माल तुमसे तलब कर ले तो तुम कृपणता का परिचय दोगे. (परिणाम-स्वरूप) वह तुम्हारे द्वेष को प्रकट कर देगा. 38 हाँ! यह तुम ही लोग हो कि तुम से अल्लाह के मार्ग में खर्च करने को कहा जाता है. तो तुम में कुछ लोग हैं जो कृपणता का परिचय देते हैं. हालाँकि जो कृपणता का परिचय देता है — वह (वास्तव में) अपने ही साथ कृपणता का मामला करता है. और अल्लाह किसी चीज़ का ज़रूरतमंद नहीं है, बल्कि तुम (उसके) ज़रूरतमंद हो. यदि तुम फिर जाओ तो अल्लाह तुम्हारे स्थान पर दूसरी क़ौम ले आएगा. और वे तुम जैसे न होंगे.

सूरह–48. अल–फ़तह

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 (पैग़ंबर) निस्संदेह हमने तुम्हें स्पष्ट विजय प्रदान कर दी, 2 ताकि अल्लाह तुम्हारी
अगली और पिछली सारी ग़लतियाँ माफ़ कर दे और तुम्हारे ऊपर अपने अनुग्रह को पूर्ण
कर दे और तुम्हें सीधा मार्ग दिखाए 3 और अल्लाह तुम्हें ज़बरदस्त सहायता प्रदान करे.

4 वह अल्लाह ही है जिसने ईमान वालों के दिलों में संतुष्टि उतारी, ताकि उनके ईमान
में और अधिक ईमान की वृद्धि हो. आसमानों और धरती की सेनाएँ अल्लाह ही की हैं.
अल्लाह ज्ञानवान तथा विवेकवान है. 5 (वर्तमान दुनिया में परीक्षा इसलिए है,) ताकि
अल्लाह ईमान वाले पुरुषों तथा ईमान वाली स्त्रियों को ऐसी हमेशा रहने की जन्नतों में
दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी. और उनकी बुराइयाँ उनसे दूर कर दे. यह
अल्लाह की दृष्टि में बहुत बड़ी सफलता है. 6 (वर्तमान दुनिया की परीक्षा इसलिए है,)
ताकि अल्लाह कपटाचारी पुरुष तथा कपटाचारी औरतों और बहुदेववादी पुरुष और
बहुदेववादी औरतों को सज़ा दे जो अल्लाह के संबंध से बुरे विचार रखते हैं. बुराई के फेर
में वे स्वयं ही आ गए हैं. अल्लाह उन पर क्रुद्ध हुआ और उसने उन पर लानत की. उनके
लिए उसने जहन्नम तैयार कर रखी है. और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है. 7 आसमानों
और धरती की सेनाएँ अल्लाह ही की हैं. अल्लाह प्रभुत्ववान एवं बुद्धिमान है. 8 (पैग़ंबर!)
हमने तुम्हें (सत्य की) गवाही देने वाला और (सत्कर्मियों को) शुभ-सूचना देने वाला
और (असत्य के परिणाम) से सचेत करने वाला बनाकर भेजा है.

9 ताकि (ऐ लोगो!) तुम अल्लाह और उसके पैग़ंबर पर ईमान लाओ और पैग़ंबर
का साथ दो और उसका आदर-सम्मान करो. और तुम अल्लाह का महिमागान करते रहो,
सुबह और शाम. 10 (पैग़ंबर!) जो लोग तुमसे प्रतिज्ञा करते हैं वे वास्तव में अल्लाह से
प्रतिज्ञा करते हैं. अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है. अब जो इस प्रतिज्ञा को भंग

करेगा तो उसके भंग करने का वबाल उसी पर पड़ेगा. और जो व्यक्ति उस प्रतिज्ञा को पूरा करेगा जो उसने अल्लाह से की है, तो अल्लाह उसको बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा.

11 (पैग़ंबर!) अरब बद्दुओं में से जो लोग पीछे रह गए थे, वे अब तुम से कहेंगे, हमारी संपत्ती और हमारे बाल-बच्चों ने हमें व्यस्त रखा था. तो आप हमारे लिए क्षमा की प्रार्थना करें. ये अपने मुँह से वे बातें कहते हैं जो इनके दिलों में नहीं होतीं. (पैग़ंबर!) तुम कहो कि कौन है जो अल्लाह के समक्ष तुम्हारे लिए अधिकार रखता हो, यदि वह तुमको कोई हानि अथवा कोई लाभ पहुँचाना चाहे? बल्कि अल्लाह उससे अवगत है जो तुम कर रहे हो. 12 (लेकिन वह सत्य नहीं है जो तुम कह रहे हो,) बल्कि तुमने यह समझा कि पैग़ंबर और ईमान वाले लौटकर अपने घर वालों की ओर नहीं आएंगे. और यह बात तुम्हारे दिलों को भली लगी. तुमने तो बहुत बुरे गुमान किए और तुम्हीं लोग हुए तबाही में पड़ने वाले. 13 और जो कोई अल्लाह पर और उसके पैग़ंबर पर ईमान न लाए, तो इन्कार करने वालों के लिए हमने भड़कती हुयी आग तैयार कर रखी है. 14 आसमानों और धरती की बादशाही अल्लाह ही की है, वह जिसे चाहे माफ़ करे और जिसे चाहे सज़ा दे. और अल्लाह माफ़ करने वाला, दया करने वाला है.

15 जब तुम ग़नीमतें (अर्थात पराभूत पक्ष की ओर से प्राप्त होने वाला माल) लेने के लिए चलोगे, तो पीछे रह जाने वाले लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो.
वे चाहते हैं कि अल्लाह की बात को बदल दें. कहो कि तुम कदापि हमारे साथ नहीं चल सकते, अल्लाह ने पहले ही ऐसा कह दिया है. तो वे कहेंगे, (नहीं,) बल्कि तुम लोग हमसे ईर्षा कर रहे हो. (नहीं,) बल्कि यह लोग बहुत कम समझते हैं.

16 (पैग़ंबर!) पीछे रह जाने वाले अरब बद्दुओंसे कह देना, बहुत जल्द तुम्हें ऐसे लोगों की ओर बुलाया जाएगा (अर्थात उनसे लड़ने के लिए बुलाया जाएगा) जो बड़े ताक़तवर हैं. तुम्हें उनसे लड़ना होगा, या फिर वे आज्ञाकारी हो जाएँ. यदि तुम आदेश

मानोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा बदला देगा और यदि तुम मुँह मोड़ोगे, जैसा कि तुम इससे पहले मुँह मोड़ चुके हो, तो वह तुम्हें कष्टदायी यातना देगा. 17 (हाँ, यदि) अँधा, लँगड़ा और बीमार (पीछे रह जाएँ तो,) उन पर कोई दोष नहीं. जो कोई अल्लाह और उसके पैग़ंबर का आज्ञापालन करेगा, उसे अल्लाह ऐसे बागों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और जो व्यक्ति मुँह मोड़ेगा उसे वह कष्टदायक यातना देगा.

18 अल्लाह ईमान वालों से प्रसन्न हो गया, जब वे पेड़ के नीचे तुमसे प्रतिज्ञा कर रहे थे. अल्लाह ने जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था. तो उसने उन पर सकीनत (संपूर्ण संतुष्टि तथा शांति) उतारी और बदले में उन्हें शीघ्र मिलने वाली विजय निश्चित कर दी.
19 और बहुत सी ग़नीमतें भी जिन्हें वे प्राप्त करेंगे. (निस्संदेह) अल्लाह प्रभुत्ववान एवं
विवेकवान है. 20 (ऐ ईमान वालो!) अल्लाह ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वादा किया
है, जिन्हें तुम प्राप्त करोगे. यह (सुलह-रूपी) विजय उसने तुम्हें तात्कालिक रूप से प्रदान
की है. और उसने लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए, ताकि ईमान वालों के लिए एक निशानी
बन जाए. और ताकि वह तुम्हें सीधे मार्ग पर चलाए. 21 एक विजय और भी है जिस पर
तुम अभी समर्थ नहीं हुए. अल्लाह ने उसे घेर रखा है. अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता
है.

22 यदि यह सत्य के इन्कारी लोग तुमसे लड़ते, तो वे अवश्य पीठ फेरकर भागते.
फिर वह न कोई समर्थक पाते और न कोई सहायक. 23 यह अल्लाह की रीति है जो पहले
से चली आ रही है. और तुम अल्लाह की रीति में कोई परिवर्तन न पाओगे. 24 वही है
जिसने मक्का की घाटी में उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिए, इसके बाद
कि उसने तुम्हें उन पर नियंत्रण दे दिया था. और अल्लाह तुम्हारे कार्यों को देख रहा है.

25 ये वही लोग हैं जिन्होंने सत्य का इन्कार किया और तुम्हें मसजिदे-हराम (अर्थात मक्का स्थित काबा) से रोका और क़ुर्बानी के जानवरों को भी उनकी क़ुर्बानी की

जगह न पहुँचने दिया. यदि (मक्का में) बहुत से ईमान वाले पुरुष और बहुत सी ईमान वाली स्त्रियाँ न होतीं, और यह (आशंका न होती) कि अंजाने में तुम उन्हें कुचल दोगे और उनके कारण तुम पर दोष आएगा (तो लड़ाई न रोकी जाती, वह इसलिए रोकी गयी,) ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल कर ले. यदि ईमान वाले (इन्कारियों से) अलग हो गए होते, तो हम उन्हें अवश्य यातना देते जो उनमें सत्य के इन्कारी थे.

26 जब सत्य के इन्कारियों ने अपने दिलों में पूर्वाग्रह को पनपने दिया, अज्ञानपूर्ण पूर्वाग्रह. फिर अल्लाह ने अपनी ओर से पैग़ंबर और ईमान वालों पर संतुष्टिपूर्ण शांति अवतरित की. और उसने उन्हें सदाचारी-वृत्ति पर जमाए रखा. (क्योंकि) वही इसके हक़दार तथा इसके योग्य थे. अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है.

27 निस्संदेह अल्लाह ने अपने पैग़ंबर को सच्चा सपना दिखाया, जो वास्तविकता के अनुसार था. निस्संदेह अल्लाह ने चाहा तो तुम मस्जिदे-हराम (मक्कास्थित काबा) में अवश्य प्रवेश करोगे, शांति के साथ. तुम अपने सर मुंडवाओगे और बाल कटवाओगे और तुम्हें कोई भय न होगा. अल्लाह वह बात जानता है जो तुम नहीं जानते. इसलिए उसने (मक्का विजय से पहले तुम्हें) यह निकटवर्ती विजय प्रदान की. 28 वह अल्लाह ही है जिसने अपने पैग़ंबर को मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ भेजा, ताकि वह उसे सभी धर्मों पर वर्चस्व प्रदान कर दे. और अल्लाह की गवाही पर्याप्त है.

29 मुहम्मद अल्लाह के पैग़ंबर हैं. और जो उनके साथी हैं वे सत्य के इन्कारियों पर कठोर और आपस में दयालु हैं. तुम उन्हें रुकूअ (ख़ुदा के सामने झुकने की अवस्था) तथा सजदे में (अर्थात नतमस्तक अवस्था में) देखोगे. वे अल्लाह की कृपा और उसकी प्रसन्नता की चाहत में लगे रहते हैं. उनकी निशानी उनके चेहरों पर है, सजदों के प्रभाव से. यह उनकी मिसाल तौरात में और इंजील में इस प्रकार दी गयी है कि जैसे खेती, उसने

अपना अंकुर निकाला फिर उसे दृढ़ता प्रदान की, फिर वह और मोटा हुआ, फिर वह अपने तने पर खड़ा हो गया. वह किसानों को भला लगता है. ताकि (उन्हें देखकर) सत्य के इन्कारियों का जी जले. उनमें से जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनसे अल्लाह ने क्षमा और बड़े प्रतिफल का वादा किया है.

सूरह–49. अल–हुजुरात

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह और उसके पैग़ंबर से आगे न बढ़ो. और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो. निस्संदेह अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है.

2 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम अपनी आवाज़ें पैग़ंबर की आवाज़ से ऊपर न करो और न पैग़ंबर को इस प्रकार आवाज़ देकर पुकारो जिस प्रकार तुम आपस में एक-दूसरे को पुकारते हो. कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म नष्ट हो जाएँ और तुम्हें ख़बर भी न हो.
3 जो लोग अल्लाह के पैग़ंबर के आगे अपनी आवाज़ें पस्त रखते हैं वही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने सदाचारिता के संबंध से जांच लिया है. उनके लिए क्षमा है और बड़ा प्रतिफल.
4 (पैग़ंबर!) जो लोग तुम्हें (तुम्हारे आवासीय) कमरों के बाहर से पुकारते हैं, उनमें से अधिकतर समझ नहीं रखते.
5 यदि वे धैर्य से काम लेते, यहाँ तक कि तुम स्वयं उनके पास निकल कर आ जाते, तो यह उनके लिए अच्छा होता. और अल्लाह क्षमाशील एवं दयावान है.

6 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! यदि कोई दुराचारी (मानसिकता का आदमी) तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए (तो उस पर विश्वास करने से पहले अच्छी तरह) उसकी छानबीन कर लिया करो. कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी समूह को अनजाने में नुक़सान पहुँचा बैठो, फिर तुम्हें अपने किए पर पछताना पड़े.
7 और (ऐ ईमान वालो!) ख़ूब जान रखो कि

तुम्हारे बीच अल्लाह का पैग़ंबर मौजूद है. यदि वह बहुत से मामलों में तुम्हारी बात मान ले तो तुम बड़ी कठिनाई में पड़ जाओ. लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान की मुहब्बत दी और तुम्हारे दिलों में उसका प्रेम डाल दिया. और सत्य का इन्कार, सीमा का उल्लंघन तथा अवज्ञा (इन चीज़ों) को तुम्हारे लिए अप्रिय बना दिया. 8 ऐसे ही लोग सन्मार्ग पर हैं अल्लाह के अनुग्रह और दया से. अल्लाह जानने वाला तथा विवेक वाला है.

9 यदि ईमान वालों के दो समूह परस्पर लड़ जाएँ तो उनके बीच समझौता कराओ. फिर यदि उनमें का एक समूह दूसरे समूह पर अत्याचार करे, तो उस समूह से लड़ो जो अत्याचार करता है, यहाँ तक कि वह अल्लाह के आदेश की ओर पलट आए. फिर यदि वह लौट आए तो उनके बीच न्याय के साथ सुलह करा दो. और (ऐ ईमान वालो!) न्याय करने वाले बनो. निस्संदेह अल्लाह न्याय करने वालों को पसंद करता है. 10 ईमान वाले तो भाई-भाई हैं तो अपने भाइयों के बीच सुलह करा दो. और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो, ताकि तुम पर दया की जाए.

11 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! न पुरुष दूसरे पुरुषों की हँसी उड़ाएँ, हो सकता है कि वे (अल्लाह की नज़र में) उनसे बेहतर हों. और न औरतें दूसरी औरतों की हँसी उड़ाएँ, हो सकता है कि वे (अल्लाह की नज़र में) उनसे बेहतर हों. और न एक-दूसरे पर ताने कसो और न आपस में एक-दूसरे को बुरी उपाधियों से पुकारो. ईमान लाने के बाद दुराचार (से संबंधित) नाम देना बहुत बुरी बात है. जो इससे बाज़ न आएँ तो यही लोग अत्याचारी हैं.

12 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! बहुत गुमान करने से बचो. क्योंकि कुछ गुमान गुनाह होते हैं. और टोह में मत पड़ो. और न तुम में से कोई किसी की पीठ पीछे निंदा करे. क्या तुम से कोई इस बात को पसंद करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का माँस खाए? (नहीं,) इससे तो तुम घिन करोगे. और अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने

रहो. निस्संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है. 13 ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया फिर तुम्हें क़ौमों और क़बीलों में बाँट दिया, ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो. निस्संदेह अल्लाह के यहाँ तुममें सबसे सम्माननिय वह है, जो तुममें सबसे ज़्यादा अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहता हो. निस्संदेह अल्लाह जानने वाला, ख़बर रखने वाला है.

14 देहाती कहते हैं, हम ईमान लाए. उनसे कहो, तुम ईमान नहीं लाए, बल्कि यूँ कहो कि हम आज्ञाकारी हो गए. ईमान (the realization of God) तो अभी तुम्हारे दिलों में दाख़िल हुआ ही नहीं है. यदि तुम अल्लाह और उसके पैग़ंबर का आज्ञापालन करो तो अल्लाह तुम्हारे कर्मों में से तुम्हारे लिए कुछ कम न करेगा. निस्संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है. 15 वास्तव में ईमान वाले तो वे लोग हैं जो अल्लाह और उसके पैग़ंबर पर ईमान लाए. फिर उन्होंने कोई संदेह नहीं किया और अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया, यही सच्चे लोग हैं.

16 (पैग़ंबर!) इन (ईमान के दावेदारों) से कहो, क्या तुम अल्लाह को अपनी आस्था की ख़बर दे रहे हो? हालाँकि अल्लाह आसमानों और ज़मीन की हर चीज़ को जानता है. अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है.

17 (पैग़ंबर!) यह लोग तुम पर एहसान जताते हैं कि उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया है. इनसे कह दो, अपने इस्लाम का एहसान मुझ पर न रखो, बल्कि अल्लाह का तुम पर एहसान है कि उसने तुम्हें ईमान (को पाने) का रास्ता दिखाया, यदि तुम सच्चे हो. 18 निस्संदेह अल्लाह आसमानों और धरती की छिपी बातों को जानने वाला है. और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो.

सूरह–50. क़ाफ़०

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़ाफ़०. क़सम है क़ुरआन की जो महान है. 2 लेकिन उन लोगों को आश्चर्य इस बात पर हुआ कि उनके पास उन्हीं में से एक सचेत करने वाला आया. तो सत्य के इन्कारियों ने कहा, यह तो आश्चर्यकारक बात है! 3 (इन्कारी लोग कहते हैं,) क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे (तो क्या हम दोबारा जीवित किए जाएंगे)? यह पलटना तो बहुत दूर की बात है (अर्थात यह वापसी तो असंभव है). 4 हम जानते हैं जो कुछ धरती उनमें से घटाती है (अर्थात मिट्टी उनके शरीर में से जो कुछ खाती है). और हमारे पास एक किताब है जिसमें सब कुछ सुरक्षित है. 5 बल्कि उन लोगों ने सत्य को झुठला दिया जब वह उनके पास आया. वे तो उलझन में पड़े हुए हैं.

6 क्या इन लोगों ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा, हमने किस तरह उसे बनाया और उसे सजाया. और उसमें कोई दरार नहीं है. 7 और पृथ्वी को हमने फैलाया और उसमें पहाड़ जमा दिए और उसमें प्रत्येक प्रकार की सुंदर चीज़ें उगायीं, 8 आँखें खोलने और याद दिलाने के उद्देश्य से, हर उस बंदे के लिए जो रुजू करने वाला हो. 9 और आसमान से हमने बरकत वाला पानी उतारा, फिर उससे हमने बाग़ उगाए और काटी जाने वाली फसलें. 10 और खजूरों के ऊँचे वृक्ष जिनके गुच्छे तह पर तह होते हैं, 11 (यह प्रबंध है) बंदों की रोज़ी के लिए. हमने उस (पानी) के माध्यम से मृत धरती को जीवित किया. इसी तरह (मृत लोग भी जीवित करके) निकाले जाएंगे. 12 इनसे पहले झुठलाया नूह की क़ौम ने और अर-रस वालों ने और क़ौमे-समूद ने. 13 और क़ौमे-आद ने और फ़िरऔन की क़ौम ने और लूत के भाइयों ने 14 और अयका वालों ने और तुब्बअ की क़ौम ने. इन सबने पैग़ंबरों को झुठलाया, तो मेरा सचेत करना उन पर सत्यापित होकर रहा.

15 क्या हम पहली बार सृजन करने में असमर्थ थे? बल्कि यह लोग नए सिरे से सृजित करने के संबंध से संदेह में पड़े हुए हैं.

16 हमने मनुष्य का सृजन किया और हम जानते हैं उन बातों को जो उसके दिल में आती हैं. और हम उससे उसकी गरदन की रग से भी अधिक निकट हैं. 17 (और हमारे इस प्रत्यक्ष ज्ञान के सिवा) इंसान के दाएँ और बाएँ दो लिखने वाले मौजूद हैं जो हर चीज़ रेकार्ड कर रहे हैं. 18 कोई शब्द उसके मुख से नहीं निकलता कि (उसे रेकार्ड करने हेतु) उसके पास एक निरीक्षक तैयार न रहता हो.

19 (यह रेकॉर्डिंग यहाँ तक जारी रहती है कि) मृत्यु की बेहोशी सत्य के साथ आ पहुँचती है. (ऐ इंसान!) यह वही चीज़ है जिससे तू भागता था. 20 फिर (अंत में पुनरुत्थान का) सूर (महाशंख) फूँका जाएगा, (कहा जाएगा,) यही है वह दिन जिससे तुझे सचेत किया गया था. 21 प्रत्येक व्यक्ति इस प्रकार आ गया कि उसके साथ एक हाँक कर लाने वाला है और एक गवाही देने वाला. 22 तू इस चीज़ की ओर से ग़फ़लत में पड़ा था. अब हमने तुझ पर से तेरा पर्दा हटा दिया. तो आज तेरी दृष्टि बड़ी तेज़ है. 23 और उसके साथ का फ़रिश्ता कहेगा, यह जो (रेकॉर्ड) मेरे पास था, हाज़िर है. 24 (ख़ुदा की ओर से आदेश होगा,) जहन्नम में डाल दो, हर सत्य के इन्कारी तथा विरोधी को. 25 जो भलाई से रोकने वाला, सीमा का उल्लंघन करने वाला और संदेह में लिप्त था. 26 जिसने अल्लाह के साथ दूसरे को ख़ुदा बना रखा था. तो डाल दो इसे कठोर यातना में. 27 (जिसके संबंध से जहन्नम का फ़ैसला हो चुका होगा) उसका साथी (शैतान) कहेगा, ऐ हमारे रब! मैंने इसे विद्रोही नहीं बनाया, बल्कि वह स्वयं (सन्मार्ग से दूर) परले दर्जे की गुमराही में पड़ा हुआ था. 28 आदेश होगा, मेरे समक्ष झगड़ा मत करो, मैं तुम्हें पहले ही (बुरे अंजाम से) सचेत कर चुका था. 29 मेरे यहाँ बात बदली नहीं जाती और मैं बंदों पर अत्याचार करने वाला नहीं.

30 जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे, क्या तू भर गयी! वह कहेगी, क्या कुछ और भी है? 31 और (उस दिन) जन्नत उन लोगों के निकट लायी जाएगी जो अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने हुए थे. (उनसे) कुछ भी दूर न होगी. 32 (कहा जाएगा,) यह है वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जाता था. (यह जन्नत) हर उस व्यक्ति के लिए है जो रुजू करने वाला (अर्थात अल्लाह की ओर पलटने वाला) और (अपने कर्तव्यों के प्रति) दक्ष रहने वाला था. 33 जो व्यक्ति कृपावंत ख़ुदा से बिना देखे डरते रहा और उसकी ओर बार-बार पलटने वाला दिल लेकर आया. 34 (ऐसे व्यक्ति से कहा जाएगा,) दाख़िल हो जाओ जन्नत में सलामती के साथ. वह दिन शाश्वत जीवन का दिन होगा. 35 वहाँ उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वे चाहेंगे. और हमारे पास उससे अधिक भी है.

36 और हम इनसे पहले कितनी ही क़ौमों को नष्ट कर चुके हैं, जो इनसे बहुत ज़्यादा शक्तिशाली थीं. उन्होंने दुनिया के देशों को भी छान मारा था. फिर क्या वे कोई शरण की जगह पा सके? 37 इसमें शिक्षा-सामग्री है उस व्यक्ति के लिए जिसके पास दिल (अर्थात दिमाग़) हो और वह कान लगाने वाला हो ध्यान के साथ.

38 और हमने आसमानों और धरती को और जो कुछ उनके बीच में है (सब) छः दिन (अर्थात छः कालखंडों) में बनाया और हमें कुछ थकान नहीं हुयी. 39 तो (पैग़ंबर!) जो कुछ वे कहते हैं उस पर धैर्य रखो. और अपने रब की प्रशंसा के साथ उसका महिमागान करते रहो. सूरज के निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले. 40 और रात के समय भी उसका महिमागान करो और सजदों के पश्चात भी.

41 और कान लगाए रहो, उस दिन (की पुकार की ओर,) जब पुकारने वाला क़रीब ही से पुकारेगा. 42 जिस दिन सारे लोग (एक) चीख़ सुनेंगे, सत्य के साथ (अर्थात यह सब सत्य होगा). यह (जीवित होकर) निकलने का दिन होगा.

43 निस्संदेह हम ही जीवन प्रदान करते हैं और हम ही मौत देते हैं और उस दिन हमारी ही ओर सबको पलटना है. 44 जिस दिन धरती उन पर से फट जाएगी और वे तेज़ी से निकल पड़ेंगे. यह इकट्ठा करना हमारे लिए बहुत आसान हैं.

45 हम जानते हैं जो कुछ वे लोग कह रहे हैं और (पैग़ंबर!) तुम उन पर जबरदस्ती करने वाले नहीं हो. बस तुम इस क़ुरआन के माध्यम से उस व्यक्ति को उपदेश करो जो मेरी चेतावनी से डरे.

सूरह–51. अज़–ज़ारियात

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़सम है उन हवाओं की जो धूल उड़ाने वाली हैं 2 (और उन हवाओं की
क़सम) जो बोझ उठा लेती हैं (अर्थात पानी से भरे बादलों का बोझ). 3 फिर धीमी गती
से चलने लगती हैं 4 फिर अलग–अलग करती हैं मामला. 5 निस्संदेह तुमसे जिस चीज़
का वादा किया जाता है 6 वह सत्य है. निस्संदेह न्याय होना निश्चित है. 7 क़सम है
जालदार आसमान की 8 निस्संदेह तुम मतभेद में पड़े हुए हो. 9 (सत्य से) विमुख वही
होता है जो बहकाया जाता हो.

10 नाश हुआ अटकल दौड़ाने वालों का 11 जो (अज्ञानता और) ग़फ़लत में डूबे
हुए हैं. 12 वे पूछते हैं, कब है वह बदले का दिन? 13 (वह दिन जब आएगा) तो उस
दिन ये लोग आग पर तपाए जाएंगे 14 (उनसे कहा जाएगा) अब चखो मज़ा अपने
विद्रोह का, यह है वह चीज़ जिसकी तुम जल्दी मचा रहे थे. 15 निस्संदेह ख़ुदा के प्रति
सचेत (एवं उत्तरदायी) लोग बागों और स्रोतों के बीच होंगे. 16 जो कुछ उनका रब उन्हें
देगा वे वह ले रहे होंगे. इससे पहले वे नेकी करने वाले थे. 17 वे रातों को कम सोते थे.
18 और सुबह की घड़ियों में वे माफ़ी माँगा करते थे. 19 और उनके मालों में माँगने
वालों का और वंचित लोगों का हक़ (अर्थात हिस्सा) हुआ करता था.

20 ज़मीन में निशानियाँ है विश्वास करने वालों के लिए. 21 और स्वयं तुम्हारे
अंदर भी, क्या तुम देखते नहीं? 22 और आसमान में तुम्हारी जीविका है और वह चीज़
भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है. 23 तो आसमान और धरती के रब की क़सम,
निस्संदेह यह (क़ुरआन) सत्य है, जिस प्रकार तुम्हारा बात करना (सत्य है).

24 (पैग़ंबर!) क्या तुम तक इब्राहीम के प्रतिष्ठित अतिथियों का वृत्तांत पहुँचा? 25
जब वे उसके पास आए तो उन्होंने कहा, सलाम है तुम पर. (उनके जवाब में) इब्राहीम ने

कहा, सलाम आप लोगों पर भी! (और मन ही मन में बोला,) ये तो अपरिचित लोग हैं.
26 फिर वह अपने घर वालों के पास गया और (अतिथियों के लिए) एक बछड़ा भुना
हुआ (अर्थात बछड़े का भुना हुआ माँस) ले आया. 27 और उसे उनके सामने पेश
किया. इब्राहीम ने (उसे न खाते देखकर उनसे) कहा, आप लोग खाते क्यों नहीं? 28
फिर उसने उनसे दिल में डर महसूस किया. उन्होंने कहा, डरिए नहीं. और उन्होंने इब्राहीम
को एक ज्ञानवान लड़के (के पैदा होने) की शुभ-सूचना दी. 29 (यह सुनकर) उसकी
पत्नी चिल्लाते हुए आगे बढ़ी, फिर माथे पर हाथ मार कर कहने लगी, एक बूढ़ी बाँझ (के
यहाँ अब बच्चा होगा)! 30 उन्होंने कहा, ऐसा ही तेरे रब ने फ़रमाया है. निस्संदेह वह
प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है.

पारा – 27 31 इब्राहीम ने कहा, ऐ फ़रिश्तो! (अब) तुम्हारे सामने क्या
मुहीम है? 32 उन्होंने कहा, हम एक अपराधी क़ौम (अर्थात लूत की क़ौम) की ओर
भेजे गए हैं. 33 ताकि उस क़ौम के लोगों पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाएँ. 34 जो
तुम्हारे रब के यहाँ निशान लगे हुए हैं उन लोगों के लिए जो हद से गुज़र जाने वाले लोग
हैं. 35 फिर वहाँ जितने ईमान वाले थे उन्हें हमने निकाल लिया. 36 तो हमने वहाँ एक
घर के सिवा कोई आज्ञाकारी घर न पाया. 37 और हमने उसमें एक निशानी छोड़ी उन
लोगों के लिए जो कष्टदायक यातना से डरते हैं.

38 और (तुम्हारे लिए) मूसा के क़िस्से में भी निशानी है, जब हमने उसे फ़िरऔन
के पास एक स्पष्ट प्रमाण के साथ भेजा. 39 लेकिन उसने अपनी शक्ति के कारण मुँह फेर
लिया और बोला, यह जादूगर है या दीवाना है. 40 फिर (अंततः) हमने उसे और उसकी
सेनाओं को पकड़ा और उन्हें समुद्र में फेंक दिया और वह निंदित होकर रह गया. 41
और आद (के वृत्तांत) में भी (तुम्हारे लिए शिक्षाप्रद) निशानी है. जबकि हम ने उन पर
उजाड़ देने वाली आँधी भेजी. 42 वह जिस चीज़ पर से भी गुज़रती उसे चूरा-चूरा करके

छोड़ती. 43 और समूद (के वृत्तांत) में भी (शिक्षाप्रद निशानी है), जबकि उनसे कहा
गया था एक अवधी तक मज़े कर लो. 44 तो उन्होंने अपने रब के आदेश की अवहेलना
की. फिर (अंततः) उन्हें कड़क ने आ पकड़ा और वे (असहाय अवस्था में) देखते रहे.
45 फिर न वे उठ सके और न अपना बचाव कर सके. 46 और नूह की क़ौम को भी
इससे पहले (हमने पकड़ा) निस्संदेह वे अवज्ञाकारी लोग थे.

47 हमने आसमान को अपने सामर्थ्य से बनाया और हम उसका (अविरत)
विस्तार करते जा रहे हैं. 48 और धरती को हमने बिछाया, हम क्या ही ख़ूब बिछाने वाले
हैं. 49 हमने हर चीज़ को जोड़ा-जोड़ा बनाया है, ताकि तुम ध्यान करो. 50 तो (पैग़ंबर!
लोगों से कह दो,) दौड़ो अल्लाह की ओर, मैं उसकी ओर से तुम्हारे लिए साफ़-साफ़
सचेत करने वाला हूँ. 51 और अल्लाह के साथ कोई दूसरा उपास्य न ठहराओ. मैं उसकी
ओर से तुम्हारे लिए साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूँ.

52 (मानवीय इतिहास में यूँ होता रहा हैं कि) इनसे पहले की क़ौमों के पास कोई
पैग़ंबर ऐसा नहीं आया, जिसे क़ौम के लोगों ने जादूगर या दीवाना न कहा हो. 53 क्या ये
एक-दूसरे को इसकी वसीयत करते चले आ रहे हैं? (नहीं,) बल्कि यह सब विद्रोही
लोग हैं. 54 तो (पैग़ंबर!) तुम उनसे मुँह फेर लो, तुम पर कुछ दोष नहीं. 55 और
उपदेश करते रहो, क्योंकि उपदेश करना ईमान वालों के लिए लाभदायक है. 56 मैंने
जिन्न और इंसान का सृजन मात्र इसीलिए किया कि वे मेरी उपासना करें. 57 मैं उनसे
कोई जीविका नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाएँ. 58 निस्संदेह अल्लाह
ही (सबको) जीविका प्रदान करने वाला है, शक्तिशाली एवं जबरदस्त है. 59 जिन लोगों
ने अत्याचार किया है, उनका डोल भर चुका है जैसे (इससे पहले) उनके साथियों का
डोल भर चुके थे. तो ये लोग मुझसे जल्दी न मचाएँ. 60 तो सत्य के इन्कारियों के लिए
विनाश है उनके उस दिन से जिसका उनसे वादा किया जा रहा है.

सूरह–52. अत–तूर

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़सम है तूर पर्वत की! 2 और क़सम है लिखी हुयी किताब की! 3 खुले हुए पन्नों में. 4 और (हमेशा) आबाद रहने वाले उस घर की क़सम! 5 और ऊँची छत की. 6 और उफनते हुए समुद्र की क़सम! 7 निस्संदेह तुम्हारे रब की ओर से यातना आकर रहेगी. 8 जिसे टालने वाला कोई नहीं. 9 (जब वह घड़ी आएगी) उस दिन आसमान डगमगाएगा 10 और पहाड़ चलने लगेंगे. 11 तो विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए. 12 जो शब्दों का खेल खेलने में व्यस्त हैं. 13 उस दिन (इन्कारी) लोगों को धक्के मार-मार कर जहन्नम की ओर ले जाया जाएगा. 14 (कहा जाएगा,) यही है वह आग जिसे तुम झुठलाते थे. 15 अब (बताओ) भला यह कोई जादू है या तुम्हें कुछ सूझ नहीं रहा है? 16 जाओ अब झुलसो इसके अंदर. अब तुम धैर्य से काम लो या धैर्य से काम न लो तुम्हारे लिए समान है. तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे.

17 निस्संदेह वे लोग बागों और नेमतों में होंगे जो अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने हुए थे. 18 आनंद ले रहे होंगे उन चीज़ों से जो उनके रब ने उन्हें दी होंगी. उनके रब ने उन्हें जहन्नम की यातना से बचा लिया होगा. 19 (उनसे कहा जाएगा,) खाओ और पिओ मज़े के साथ उसके बदले में जो तुम किया करते थे. 20 (जन्नती लोग) पंक्तिबद्ध तख़्तों पर तकिया लगाए हुए बैठे होंगे. और हम बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरों से उनका विवाह कर देंगे.

21 और जो लोग ईमान लाए और उनकी संतान भी ईमान लाकर उनके मार्ग पर चली तो हम उनकी संतान को भी (जन्नत में उनके) साथ एकत्र कर देंगे और उनके कर्म में से कोई चीज़ कम न करेंगे. प्रत्येक व्यक्ति अपनी कमाई में फंसा हुआ है. 22 और हम (जन्नती लोगों को) उनकी पसंद के फल और मांस उन्हें निरंतर देते रहेंगे (अर्थात उन्हें

उनके पसंद की कोई चीज़ कभी कम न पड़ेगी). 23 उनके बीच शराब के प्यालों का आदान-प्रदान हो रहा होगा, जिससे न तो बेहूदा बात को प्रेरणा मिलेगी न ही गुनाह के कृत्य को. 24 उनकी सेवा में लड़के दौड़ते फिर रहे होंगे, मानो कि वे सुरक्षापूर्वक रखे हुए मोती हैं. 25 जन्नती लोग आपस में एक-दूसरे की ओर रुख करके बात करेंगे. 26 वे कहेंगे कि हम पहले अपने घर वालों में (ख़ुदा से) डरते हुए जीवन व्यतीत करते थे. 27 तो अल्लाह ने हम पर कृपा की और हमें झुलसा देने वाली यातना से बचा लिया. 28 हम इससे पहले उसी को पुकारते थे. निस्संदेह वह सद्व्यवहार करने वाला और दयावान है.

29 तो (पैग़ंबर!) तुम उपदेश करते रहो. अपने रब की कृपा से न तो तुम काहिन हो और न दीवाने. 30 क्या ये लोग कहते हैं, यह व्यक्ति (अर्थात पैग़ंबर) कवी है, हम इस पर काल परिवर्तन की प्रतीक्षा में हैं? 31 (पैग़ंबर) इनसे कहो, तुम प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ. 32 क्या उनकी बुद्धि उन्हें यही सिखाती है या फिर वे हैं ही विद्रोही लोग? 33 क्या वे कहते हैं कि इस व्यक्ति ने क़ुरआन को स्वयं गढ़ लिया है? वास्तविकता यह है कि ये लोग ईमान लाना नहीं चाहते. 34 (ये पैग़ंबर पर दोषारोपण करने वाले लोग) यदि वे अपनी बात में सच्चे हैं तो इस क़ुरआन जैसा कलाम ले आएँ.

35 क्या वे किसी सृजनकर्ता के बिना ही अस्तित्वमान हो गए अथवा वे स्वयं ही अपने सृजनकर्ता हैं? 36 क्या आसमान और धरती का उन्होंने सृजन किया है? वास्तविकता यह है कि ये लोग विश्वास नहीं रखते. 37 क्या उनके पास तुम्हारे रब के ख़ज़ानें हैं या वे उसके नियंत्रक (बन बैठे) हैं? 38 क्या इनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर चढ़ कर वे (ऊपरी लोक की) बातें सुन लिया करते हैं? तो उनका सुनने वाला कोई स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करे. 39 क्या अल्लाह के लिए बेटियाँ हैं और तुम्हारे लिए बेटे?

40 (पैग़ंबर!) क्या तुम उनसे कोई पारिश्रमिक माँगते हो कि वे तावान के बोझ से दबे जा रहे हैं? 41 क्या इन (इन्कारी) लोगों के पास अदृश्य का ज्ञान है कि वे वह (ज्ञान की बातें) लिख लेते हों? 42 क्या (इन्कारी) लोग कोई चाल चलना चाहते हैं? (यदि

यह बात है) तो इन्कार करने वाले अपनी ही चाल के लपेटे में आ जाएंगे. 43 क्या अल्लाह के सिवा उनका कोई और उपास्य है? अल्लाह पाक है उनके साझीदार बनाने से.

44 और (सत्य के इन्कारियों में निडरपन की मानसिकता इस प्रकार विकसित हो चुकी है कि) यदि वे आसमान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखे, तो वे कहेंगे, यह तो परत-दर-परत बादल हैं (जो उमड़े चले आ रहे हैं). 45 तो (पैग़ंबर!) उन्हें (उनके हाल पर) छोड़ दो, यहाँ तक कि वे उस दिन का सामना करें जिसमें उनके होश उड़ जाएंगे. 46 जिस दिन उनकी कोई चाल उनके काम न आएगी और उन्हें (कहीं से) कोई सहायता प्राप्त नहीं होगी. 47 और उन अत्याचारियों के लिए उसके सिवा भी यातना है, लेकिन उनमें से अधिकतर नहीं जानते.

48 (पैग़ंबर!) तुम धैर्यपूर्वक अपने रब का फ़ैसला आने तक प्रतीक्षा करो. तुम हमारी नज़रों के सामने हो. और अपने रब का महिमागान करो उसकी प्रशंसा के साथ, जब तुम उठते हो. 49 और रात की घड़ियों में भी उसका महिमागान करो और सितारों के पीठ फेरने के समय भी (अर्थात प्रातःकाल होने पर भी).

सूरह–53. अन–नज्म

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़सम है तारे की, जबकि वह अस्त होता हो. 2 (लोगो!) तुम्हारा साथी (अर्थात पैग़ंबर) न भटका है और न पथभ्रष्ट हुआ है. 3 और वह अपने मन से नहीं बोलता. 4 यह (क़ुरआन) आसमानी-संदेश है जो उस पर प्रकट किया जा रहा है. 5 उसे जबरदस्त शक्तिशाली ने शिक्षा दी है. 6 बुद्धिमान और सूझ-बूझ वाले ने. (जब) वह (फ़रिश्ता अपने वास्तविक रूप में) सामने आ खड़ा हुआ 7 तो वह क्षितिज के उच्चतम छोर पर था. 8 फिर वह क़रीब आया और उतर गया. 9 यहाँ तक कि दो कमानों के बराबर या उससे भी कुछ कम दूरी रह गयी. 10 फिर अल्लाह ने अपने बंदे (मुहम्मद) पर

(अपना) संदेश प्रकट किया, जो कुछ संदेश प्रकट करना था. 11 झूठ नहीं कहा पैग़ंबर के दिल ने, जो उसने देखा. 12 अब क्या तुम उस चीज़ पर उससे झगड़ते हो जो उसने देखा है. 13 पैग़ंबर एक बार और भी फ़रिश्ते को उतरते हुए देख चुका है, 14 सिदरतुल मुन्तहा (अर्थात अंतिम छोर पर स्थित बेरी के वृक्ष) के पास. 15 जिसके पास जन्नत है, जो (सदा का) ठिकाना है. 16 तब उस बेरी पर छा रहा था जो कुछ छा रहा था. 17 दृष्टि न तो बहकी और न हद से आगे बड़ी. 18 निश्चय ही उसने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखी.

19 क्या तुमने कभी विचार किया लात, उज़्ज़ा 20 और तिसरी (देवी) मनात के संबंध से (अर्थात इन बुतों की वास्तविकता के संबंध से कभी तुमने सोचा भी है)? 21 क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और अल्लाह के लिए बेटियाँ. 22 यह तो बहुत धांधलीपूर्ण बँटवारा हुआ. 23 यह तो मात्र नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं. अल्लाह ने इनके संबंध से कोई प्रमाण नहीं उतारा है. वह मात्र भ्रम का अनुसरण कर रहे हैं और अपने मन की इच्छाओं का अनुसरण, जबकि उनके पास उनके रब की ओर से मार्गदर्शन आ चुका है. 24 क्या इंसान वह पा लेता है जो वह चाहे (अर्थात क्या इंसान जो चाहे वही सत्य होता है)? 25 वर्तमान दुनिया और परिणाम की दुनियाका मालिक तो अल्लाह ही है.

26 और आसमानों में कितने ही फ़रिश्ते हैं, उनकी सिफ़ारिश कुछ भी काम नहीं आ सकती. मगर यह कि अल्लाह (बोलने की) अनुमति दे, जिसे वह चाहे (और उसकी बात को) पसंद करे. 27 जो लोग मृत्यु-पश्चात परिणाम के जीवन को नहीं मानते, वे फ़रिश्तों को स्त्रियों जैसे नाम देते हैं. 28 जबकि उनके पास इसके लिए कोई प्रमाण नहीं. वे केवल अटकल के पीछे चल रहे हैं. और अटकल सत्य के सामने तनिक भी लाभप्रद नहीं (अर्थात अटकल 'सत्य' के सामने टिकने वाला नहीं). 29 तो (पैग़ंबर) तुम ऐसे

व्यक्ति से किनारा कर लो जो हमारे उपदेश से मुँह मोड़ता हो. और वह सिर्फ़ दुनिया की ज़िंदगी (को ही सब कुछ जानकर उसी) के पीछे दौड़ता है. 30 ऐसे लोगों के ज्ञान की पहुँच बस यहीं तक है. (पैग़ंबर!) तुम्हारा रब भली-भांति जानता है कि कौन उसके मार्ग से भटका हुआ है और वह उसे भी भली-भाँति जानता है जो सन्मार्ग पर है.

31 अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ धरती में है. इसलिए वही बुरे काम करने वालों को उनकी बुराई का बदला देगा और जिन लोगों ने भलाई की उन्हें अच्छा बदला प्रदान करेगा. 32 वे लोग जो बड़े गुनाहों और अश्लील कामों से बचते हैं, यह और बात है कि कुछ छोटी-मोटी ग़लतियाँ उनसे हो जाएँ (तो वह क्षम्य होंगी). निस्संदेह तुम्हारे रब की क्षमाशीलता अत्यंत व्यापक है. वह तुम्हें तब से ख़ूब जानता है, जब उसने ज़मीन से तुम्हें पैदा किया, और जब तुम अपनी माँओ के पेटों में भ्रूण की अवस्था में थे. तो तुम अपने आपको पवित्र न समझो. वह उसे बहुत ख़ूब जानता है जो (उसके प्रति) सचेत (एवं उत्तरदायी) बना रहता है.

33 (पैग़ंबर!) क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जिसने (अल्लाह के मार्ग से) मुँह मोड़ा. 34 थोड़ा सा दिया और रुक गया. 35 क्या उसके पास अदृश्य का ज्ञान है कि वह (सारी अदृश्य हक़ीक़तों को) देख रहा है? 36 क्या उसे ख़बर नहीं पहुँची उस बात की जो मूसा के ग्रंथों में 37 और इब्राहीम के ग्रंथों में बयान हुयी थी? जिसने हक़ अदा कर दिया था. 38 कि कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा 39 और यह कि इंसान के लिए वही है जो उसने कमाया. 40 और यह कि उसका प्रयास शीघ्र ही देखा जाएगा. 41 फिर उसको पूरा बदला दिया जाएगा 42 सबको अंत में तुम्हारे रब ही के पास पहुँचना है.

43 निस्संदेह वही हँसाता है और वही रुलाता है. 44 वही मारता है और वही जिलाता है. 45 उसी ने नर और मादा के जोड़े बनाए, 46 एक बूँद से जब वह टपकायी

जाती है. 47 और उसी के ज़िम्मे है दूसरी बार ज़िंदगी देना. 48 और यह कि उसी ने संपत्ती प्रदान की और धनवान बनाया. 49 और वही शिअरा (नामक तारे) का रब है.

50 और अल्लाह ही ने नष्ट किया प्राचीन क़ौम आद को 51 और समूद को. (ऐसा नष्ट किया कि उन इन्कारियों में से) किसी को बाक़ी नहीं छोड़ा. 52 और उनसे पहले नूह की क़ौम को नष्ट कर दिया. निस्संदेह वे अत्यंत अत्याचारी और विद्रोही लोग थे. 53 और उलटी हुयी बस्तियों को भी उसी ने उठा फेंका. 54 तो उन्हें ढ़ाँक लिया जिस चीज़ ने ढाँक लिया. 55 तो तुम अपने रब के किन-किन चमत्कारों को झुठलाओगे. 56 यह एक सचेत करने वाला है, पहले सचेत करने वालों की तरह. 57 निकट आने वाली (क़यामत की घड़ी) निकट आ गयी. 58 अल्लाह के सिवा कोई उसको हटाने वाला नहीं.

59 अब क्या तुम इस (ख़बर) पर आश्चर्य करते हो? 60 (इन गंभीर ख़बरों पर) तुम हँसते हो और तुम रोते नहीं. 61 और तुम घमंड का परिचय देते हो. 62 (जबकि लोगो! तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम) नतमस्तक हो जाओ अल्लाह के आगे और उसी की उपासना करो.

सूरह–54. अल–क़मर

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़यामत निकट आ गयी और चाँद फट गया. 2 वे चाहे कोई भी निशानी देख लें, तो मुँह ही फेरेंगे और कहेंगे, यह तो जादू है जो पहले से चला आ रहा है. 3 उन्होंने झुठला दिया और अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया. हर मामले के लिए एक नियत अवधी है. 4 उन्हें (पूर्ववर्ती क़ौमों की ख़बरें पहुँच चुकी हैं जिसमें उद्दंडता से बाज़ रहने हेतु) पर्याप्त शिक्षाप्रद सामग्री है 5 और उच्चतम विवेकशीलता है. लेकिन चेतावनियाँ उन्हें लाभ नहीं देतीं. 6 तो (पैग़ंबर!) तुम उनसे किनारा कर लो. जिस दिन पुकारने वाला एक अत्यंत अप्रिय चीज़ की ओर पुकारेगा. 7 आँखें झुकाए हुए क़ब्रों से निकल पड़ेंगे,

मानो वे बिख़री हुयी टिड्डियाँ हों. 8 पुकारने वाले की ओर दौड़े जा रहे होंगे. तब सत्य के इन्कारी लोग कहेंगे, यह दिन बड़ा कठोर है. 9 इनसे पहले नूह की क़ौम ने इन्कार किया. उन्होंने हमारे बंदे को झुठलाया और कहा कि यह दिवाना है. और उसे झिड़क दिया. 10 तो (अंततः) नूह ने अपने रब को पुकारा कि मैं दबा लिया गया हूँ, अब तू इनसे बदला ले. 11 तो हमने आसमान के दरवाज़े मुसलाधार वर्षा से खोल दिए 12 और धरती को फाड़कर स्रोतों में बदल दिया और वह सारा पानी उस काम को पूरा करने के लिए मिल गया जो नियत हो चुका था. 13 और हमने नूह को एक तख़्तों और कीलों वाली (नौका) पर सवार कर दिया. 14 वह हमारी आँखों के सामने चलती रही. यह था बदला उस व्यक्ति के लिए जिसकी नाक़द्री की गयी थी. 15 और हमने उस नौका को निशानी बनाकर छोड़ दिया, तो क्या है कोई, शिक्षा ग्रहण करने वाला? 16 तो कैसी थी मेरी ओर से यातना और कैसी थी मेरी चेतावनियाँ. 17 तो हमने क़ुरआन को उपदेश ग्रहण करने के लिए सरल कर दिया है, तो क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला?

18 क़ौमे-आद ने भी झुठलाया. तो कैसी थी मेरी ओर से (उन्हें पहुँची) यातना, और कैसी थीं मेरी चेतावनियाँ. 19 हमने उन पर एक निरंतर नहूसत भरे दिन में तेज़ तूफ़ानी हवा चलायी. 20 वह लोगों को इस तरह उखाड़ फेंकती थी, जैसे वे (जड़ से) उखड़े हुए खजूर के तने हों. 21 तो देखो कैसी थी मेरी ओर से (उन पर आयी) यातना और कैसी थी मेरी चेतावनियाँ. 22 हमने क़ुरआन को उपदेश के लिए सरल कर दिया है, तो क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला?

23 क़ौमे-समूद ने चेतावनी को झुठलाया. 24 तो उन्होंने कहा, क्या हम एक ऐसे आदमी के पीछे चलेंगे जो हम ही में से है, तब तो हम गुमराही और दीवानगी में पड़ जाएंगे. 25 (इन्कारियों ने कहा,) क्या हम सब में से इसी पर उपदेश उतरा है, बल्कि वह झूठा है, बड़ा बनने वाला. 26 (तो ख़ुदा ने अपने पैग़ंबर से कहा,) वे कल के दिन जान

लेंगे कि कौन झूठा है और बड़ा बनने वाला. 27 हम ऊँटनी को भेजने वाले हैं, उनके लिए परीक्षा बनाकर तो तुम उन्हें देखते रहो और धैर्य से काम लो. 28 और उन्हें सचेत कर दो कि पानी को उनमें बाँट दिया गया है. प्रत्येक (अपनी) बारी पर आया करे.
29 फिर उन्होंने अपनी (क़ौम के एक) आदमी को पुकारा तो उसने हमला किया और ऊँटनी को काट डाला. 30 फिर कैसी रही उन्हें मेरी (ओर से पहुँची) यातना और कैसी थी मेरी चेतावनियाँ. 31 हमने उन पर एक चिंघाड़ भेजी, तो वे बाड़ लगाने वाले की रौंदी हुयी बाड़ की तरह चूरा होकर रह गए. 32 हमने क़ुरआन को उपदेश के लिए सरल कर दिया है, तो क्या है कोई उपदेश प्राप्त करने वाला?

33 लूत की क़ौम ने भी सचेत करने वालों को झुठलाया. 34 (परिणाम-स्वरूप) हमने उन पर पथराव करने वाली हवा भेजी. सिर्फ़ लूत के घर वाले उससे सुरक्षित रहे. उन्हें हमने बचा लिया प्रातःकाल के समय, 35 अपनी ओर से कृपा करके. हम इसी तरह बदला देते हैं उस व्यक्ति को जो कृतज्ञता दिखलाए. 36 लूत ने तो उन्हें हमारी पकड़ से सावधान कर दिया था. लेकिन उन्होंने उन चेतावनियों में झगड़े पैदा किए. 37 और उन्होंने (अश्लील उद्देश्य से) लूत के (पास आए उसके) मेहमानों को उससे लेने की कोशिश की, तो हमने उनकी आँखें मिटा दीं. तो लो अब चखो मज़ा मेरी ओर से यातना का और मेरी चेतावनियों का. 38 और सुबह सवेरे ही एक अटल यातना ने उन्हें आ लिया. 39 तो अब चखो मज़ा मेरी ओर से यातना का और चखो मेरी चेतावनियों को (नज़रंदाज़ करने का अंजाम). 40 हमने क़ुरआन को उपदेश ग्रहण करने के लिए सरल कर दिया है, तो क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला?

41 और फ़िरऔन वालों के पास पहुँचे सचेत करने वाले. 42 उन्होंने हमारी सभी निशानियों को झुठलाया. तो अंततः हमने उन्हें पकड़ा, जिस तरह कोई ज़बरदस्त सामर्थ्यवान पकड़ा करता है.

43 क्या तुम्हारे इन्कार करने वाले (अर्थात ये मक्कावासी इन्कारी लोग) उन (पूर्ववर्ती नष्ट किए गए) लोगों से बेहतर हैं? या फिर क्या आसमानी किताबों में तुम्हारे लिए माफ़ी लिख दी गयी है? 44 या (फिर क्या) वे कहते हैं कि हम ऐसे समूह हैं जो (हमेशा) प्रभावशाली रहेंगे? 45 (लेकिन) शीघ्र ही यह (इन्कारी) समूह पराजित होगा और पीठ फेरकर भागेगा. 46 (इस दुनिया में भी वे पकड़े जाएंगे) क़यामत उनके वादे का समय है और क़यामत अत्यंत कठोर और कड़वी चीज़ है. 47 निस्संदेह अपराधी लोग पथभ्रष्टता में लिप्त हैं और उनकी मती मारी गयी है. 48 जिस दिन वे मुँह के बल आग में घसीटें जाएंगे (तब उनसे कहा जाएगा,) अब चखो स्वाद आग का. 49 हमने हर चीज़ का सृजन एक (उचित) पैमाने के अनुसार किया है. 50 हमारा आदेश तो बस एक ही बार होता है जैसे आँख का झपकना (फिर उसका क्रियान्वयन होता है). 51 निश्चय ही हम तुम जैसे बहुतों को नष्ट कर चुके हैं. फिर क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला? 52 जो कुछ उन्होंने किया, सब दफ़तरों में अंकित है. 53 हर छोटी और हर बड़ी बात लिखी हुयी मौजूद है. 54 निस्संदेह ख़ुदा के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहने वाले बागों और नहरों के बीच होंगे. 55 वह बैठे होंगे सच्ची बैठक में प्रभुत्वशाली बादशाह के पास.

सूरह–55. अर–रहमान

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 रहमान ने, 2 क़ुरआन की शिक्षा दी है. 3 उसने इंसान का सृजन किया, 4 उसी ने इंसान को बोलना सिखाया. 5 सूरज और चाँद एक हिसाब में बंधे हुए हैं. 6 तारे और वृक्ष सजदा करते हैं. 7 उसने आसमान को ऊँचा किया और तराज़ू रख दी. 8 कि तुम तोलने में अन्याय न करो. 9 और न्याय के साथ ठीक-ठीक तोलो और तौल में कमी न करो.

10 धरती को उसने जीवधारी रचनाओं के लिए बनाया. 11 उसमें (विभिन्न प्रकार के) फल हैं और खजूर के वृक्ष हैं जो ग़िलाफ़ों में लिपटे होते हैं. 12 और भूस वाले

अनाज भी हैं और सुगंध वाले फूल भी. 13 फिर तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे. 14 उसने ठीकरे की तरह खनखनाती मिट्टी से मनुष्य की रचना की. 15 और उसने जिन्नों को आग की लपट से बनाया. 16 फिर तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे? 17 वह मालिक है दोनों पूरब और दोनों पश्चिम का. 18 फिर तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे. 19 उसने चलाए दो दरिया मिलकर चलने वाले 20 दोनों के बीच एक रोक है जिससे वे आगे नहीं बढ़ते. 21 फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे? 22 उन दोनों (खारी और मीठे) दरियाओं से मोती और मूँगा निकलते हैं. 23 तो तुम अपने रब की किन-किन कृपाओं को झुठलाओगे? 24 उसी के बस में हैं समुद्र में पहाड़ों की तरह खड़े हुए जहाज़. 25 फिर तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

26 जो कुछ धरती पर है सब नष्ट होने वाला है. 27 और सिर्फ़ तुम्हारे रब की प्रतापवान तथा (सदैव) सम्मान-योग्य ज़ात हमेशा बाक़ी रहने वाली है. 28 तो (ऐ जिन्नों व इंसानों!) तुम अपने रब के किन-किन चमत्कारों को झुठलाओगे? 29 उसी से माँगते हैं जो आसमानों और धरती में है. उसकी हर दिन नई शान है. 30 फिर तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

31 ऐ दो भारी क़ाफ़िलो! (अर्थात समस्त जिन्न-ज़ात तथा समस्त मनुष्य-ज़ात!) बहुत जल्द हम तुमसे पूछ-गछ के लिए तुम्हारी ओर रुख करने वाले हैं (अर्थात बहुत जल्द हम तुम दोनों क़ाफ़िलों का हिसाब लेने वाले हैं). 32 फिर तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे? 33 ऐ जिन्न व मनुष्यों के समूहों! यदि तुम आसमानों तथा ज़मीन की सीमाओं से निकल कर भाग सकते हो, तो भाग देखो. नहीं (कदापि नहीं) भाग सकते, बिना (हमारे द्वारा) अधिकार प्रदान किए के. 34 फिर तुम अपने रब के किन-किन सामर्थ्यों का इन्कार करोगे? 35 (और यदि भागने की कोशिश की तो) तुम

पर आग की लपटें और धुआँ छोड़ दिया जाएगा, तो तुम बचाव न कर सकोगे. 36 (तो
ऐ जिन्न व इंसान!) तुम अपने रब के किन-किन सामर्थ्यों को झुठलाओगे?

37 फिर जब आसमान फट जाएगा और लाल चमड़े की तरह लाल हो जाएगा.
38 तो (ऐ जिन्न व इन्स) तुम अपने रब के किन-किन सामर्थ्यों को झुठलाओगे? 39
उस दिन किसी इंसान या जिन्न से उसका गुनाह पूछा नहीं जाएगा (अर्थात पूछने की
आवश्यकता नहीं होगी). 40 तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
41 अपराधी अपने चेहरों से पहचान लिए जाएंगे. फिर उनके माथे के बाल और पाँव
द्वारा उन्हें पकड़ लिया जाएगा. 42 तो तुम अपने रब के किन-किन सामर्थ्यों को
झुठलाओगे? 43 (तब कहा जाएगा,) यह वही जहन्नम है जिसको अपराधी लोग झूठ
बताया करते थे. 44 वे फिरेंगे जहन्नम के बीच और खौलते हुए पानी के बीच. 45 फिर
तुम अपने रब के किन-किन सामर्थ्यों को झुठलाओगे?

46 और जो व्यक्ति अपने रब के सामने पेश होने का डर रखता हो उसके लिए दो
बाग़ हैं. 47 तुम अपने रब की किन-किन कृपाओं को झुठलाओगे? 48 (वे दोनों बाग़
हैं) घनी डालियों वाले. 49 तुम अपने रब की किन-किन कृपाओं को झुठलाओगे? 50
उन दोनों बागों में दो स्रोत प्रवाहित हैं. 51 फिर तुम अपने रब की किन-किन कृपाओं को
झुठलाओगे? 52 उन दोनों बागों में हर फल की दो-दो क़िस्में हैं. 53 फिर तुम अपने रब
के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे? 54 जन्नती लोग ऐसे बिछौनों पर तकिये लगा
कर बैठे होंगे, जिनके अस्तर गाढ़े रेशम के होंगे और बागों के फल झुके पड़े होंगे. 55
फिर तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे? 56 उनमें नीची निगाहें रखने
वाली (अर्थात शर्मीला स्वभाव वाली) स्त्रियाँ होंगी, जिन्हें जन्नतियों से पहले कभी किसी
इंसान या जिन्न ने न छुआ होगा. 57 फिर तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को
झुठलाओगे? 58 ऐसी सुंदर जैसे हीरे और मोती हों. 59 फिर तुम अपने रब के किन-

किन उपकारों को झुठलाओगे? 60 भलाई का बदला भलाई के सिवा और क्या हो सकता है? 61 फिर तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

62 और उन दो बाग़ों के अलावा दो और बाग़ हैं. 63 फिर तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे? 64 घने हरे-भरे बाग़. 65 तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे? 66 उनमें दो चशमे (स्रोत) होंगे उबलते हुए. 67 फिर तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे? 68 उन जन्नतों में फल और खजूर और अनार होंगे. 69 तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे? 70 उनमें भली और सुंदर स्त्रियाँ होंगी. 71 तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे? 72 'हूरें' (अर्थात स्वर्ग-वधू) खेमों में रहने वालियाँ. 73 फिर तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे? 74 जन्नतियों से पहले उन्हें न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया है और न किसी जिन्न ने. 75 फिर तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे? 76 वे जन्नती लोग रेशमी गद्दों और उत्कृष्ट क़ालीनों पर तकिया लगाए बैठे होंगे. 77 फिर तुम अपने रब के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे? 78 बड़ी बरकत वाला है तुम्हारे रब का नाम, जो प्रतापवान और उदार है.

सूरह–56. अल–वाक़िआ

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 जब घटित होने वाली घटित हो जाएगी. 2 उसके घटित होने में कुछ झूठ नहीं. 3 (किसी को) नीचा कर देने वाली और (किसी को) बुलंद कर देने वाली. 4 (जब क़यामत घटित होगी) तब धरती हिला डाली जाएगी. 5 और पहाड़ इस तरह चूरा-चूरा कर दिए जाएंगे. 6 कि बिखरी हुयी धूल बनकर रह जाएंगे. 7 और तुम लोग तिन गिरोहों में बट जाओगे.

8 तो दाहिनी ओर वाले, क्या ख़ूब हैं दाहिनी ओर वाले. 9 और बायीं ओर वाले, कैसे बुरे लोग हैं बायीं ओर वाले? 10 और आगे वाले तो आगे ही वाले हैं. 11 वे (अल्लाह के) निकटवर्ती हैं. 12 नेमत भरी जन्नतों में होंगे. 13 उनकी बड़ी संख्या पहले के लोगों में से होगी. 14 और थोड़े बाद के लोगों में से. 15 वे (जन्नत में) जड़ाऊ तख़्तों पर 16 तकिया लगाए आमने-सामने बैठे होंगे. 17 उनके पास (उनकी सेवा में) चीर-तरुण लड़के फिर रहे होंगे (जो हमेशा तरूण रहेंगे), 18 प्याले और जग और विशुद्ध शराब से भरा हुआ पात्र लिए (फिर रहे होंगे). 19 जिसको (पीने) से न तो उन्हें सिर दर्द होगा और न उनकी बुद्धि भ्रष्ट होगी. 20 और वहाँ फल होंगे, जो चाहे चुन लें. 21 और पक्षियों का माँस जो उन्हें प्रिय हो. 22 और (जन्नतियों की जीवन-संगिनियाँ) बड़ी आँखों वाली हूरें होंगी, 23 (ऐसी सुंदर) जैसे सुरक्षित रखे हुए मोती. 24 (ये सारी नेमतें) उन कर्मों का बदला होंगी जो वे करते थे. 25 उसमें वे न कोई व्यर्थ बात सुनेंगे और न कोई गुनाह की बात, 26 सिवाय सलामती-सलामती के बोल.

27 और दाहिने वाले, क्या ख़ूब हैं दाहिने वाले. 28 (वे वहाँ होंगे) जहाँ बिना कांटों के बेर होंगे. 29 और गुच्छेदार केले 30 और दूर तक फैली हुयी छाँव 31 और बहता हुआ पानी. 32 और प्रचुर मात्रा में फल 33 जो न कभी समाप्त होंगे और न कोई रोक-टोक होगी. 34 जन्नती लोग ऊँची बैठकों में होंगे. 35 हमने उन औरतों को (जो जन्नती लोगों के जीवनसाथी होंगे) विशेष रूप से बनाया है. 36 फिर उन्हें कुंवारी रखा है. 37 मन मोहने वाली और समान आयु वाली (अर्थात अत्यंत सही जोड़ा). 38 दाहिने वालों के लिए. 39 'दाहिने वाले' पहले वालों में से भी बहुत से होंगे. 40 और बाद वालों में से भी.

41 और बायें वाले, कैसे बुरे हैं बायें वाले! 42 वे लू की लपट और खौलते हुए पानी 43 और काले धुएँ की छाया में होंगे. 44 जो न शीतल है और न सुखदायी.

45 वे लोग इससे पहले ख़ुशहाल थे. 46 और बड़े गुनाह पर अड़े रहते थे. 47 वे (कृतघ्न लोग) कहते थे, हम जब मर जाएंगे और मिट्टी तथा हड्डियाँ हो जाएंगे तो फिर क्या उठा खड़े किए जाएंगे? 48 और क्या हमारे बाप-दादा भी उठाए जाएंगे जो पहले गुज़र चुके हैं? 49 (पैग़ंबर!) इन लोगों से कहो, (हाँ,) निश्चित रूप से! पहले वाले और बाद वाले. 50 सभी इकट्ठा किए जाएंगे, एक निर्धारित दिन के समय पर. 51 फिर तुम लोग, ऐ बहके हुए और झुठलाने वालो! 52 ज़क़्क़ूम के वृक्ष से खाओगे. 53 फिर उसी से अपना पेट भरोगे, 54 फिर उस पर खौलता हुआ पानी पिओगे. 55 फिर प्यासे ऊँटों की तरह पिओगे. 56 यह उनका आतिथ्य होगा न्याय के दिन.

57 हमने तुम्हारा सृजन किया है, फिर तुम पुष्टि क्यों नहीं करते? 58 कभी तुमने सोचा है कि जो (वीर्य-रूपी) चीज़ तुम टपकाते हो, 59 उससे (इंसान को) तुम बनाते हो या हम है उसके बनाने वाले? 60 (लोगो!) हमने तुम्हारे बीच मृत्यु को नियत किया है. और हमारे बस से यह बाहर नहीं, 61 कि तुम्हारे रूप बदल दें और तुम्हें ऐसे रूप में बना दें जिसे तुम नहीं जानते. 62 तुम तो पहली बार सृजित किए जाने को जान चुके हो, फिर क्यों तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते? 63 जो बीज तुम बोते हो उसके संबंध से क्या तुमने कभी सोचा है? 64 क्या उसे तुम उगाते हो या हम हैं उसके उगाने वाले? 65 और यदि हम चाहें तो उसे चूरा-चूरा कर दें, फिर तुम बातें बनाते रह जाओ, 66 कि हम तो घाटे में पड़ गए, 67 बल्कि हम पूर्णतः वंचित होकर रह गए. 68 क्या तुमने कभी सोचा है उस पानी के संबंध से जो तुम पीते हो? 69 क्या तुमने उसे बादलों से बरसाया है या उसके बरसाने वाले हम हैं? 70 यदि हम चाहें तो उसे अत्यंत खारा बनाकर रख दें. फिर (ऐ इंसानों!) तुम कृतज्ञ क्यों नहीं बनते? 71 क्या तुमने कभी सोचा है उस आग के संबंध से जिसे तुम जलाते हो? 72 क्या तुमने वृक्ष का सृजन किया है या हम हैं उसे सृजित करने

वाले? 73 हमने उसे याददिहानी का माध्यम बनाया और यात्रियों के लिए लाभ की चीज़. 74 तो (पैग़ंबर!) अपने महान रब के नाम का महिमागान करो.

75 तो नहीं! मैं क़सम खाता हूँ सितारों की स्थितियों की. 76 यदि तुम समझो तो यह बहुत बड़ी क़सम है, 77 निस्संदेह यह प्रतिष्ठित क़ुरआन है. 78 एक सुरक्षित किताब में. 79 इसे वही छूते हैं जो पवित्र बनाए गए हैं. 80 यह उतरा है सारे संसार के रब की ओर से. 81 तो क्या तुम इस वाणी की उपेक्षा करते हो? 82 क्या तुम ने इसमें अपना हिस्सा यह रखा है कि तुम इसे झुठलाते हो?

83 फिर ऐसा क्यों नहीं होता, जबकि प्राण कंठ को आ लगता है. 84 और तुम देख रहे होते हो (कि मरने वाला मर रहा है) 85 और हम तुम से भी अधिक उस (मरने वाले) के निकट होते हैं, लेकिन हम तुम्हें नज़र नहीं आते. 86 यदि तुम अधीन नहीं हो तो क्यों नहीं 87 उस प्राण को फेर लेते, यदि तुम सच्चे हो? 88 फिर यदि वह मरने वाला व्यक्ति (ख़ुदा के) निकटवर्ती बंदों में से होगा 89 तो (उसके लिए) राहत और अच्छी जीविका और नेमतों से भरी जन्नत है. 90 और यदि वह दाहिने वालों में से हो. 91 तो (फ़रिश्ते उससे कहेंगे,) तुम्हारे लिए सलामती है तुम दाहिने वालों में से हो. 92 और यदि वह झुठलाने वाले पथभ्रष्ट लोगों में से हो. 93 तो (उसके लिए) गर्म पानी का आतिथ्य है. 94 फिर भड़कती हुयी आग में झोका जाना है. 95 निस्संदेह यह सत्य है, बिल्कुल विश्वसनीय. 96 तो (पैग़ंबर!) तुम अपने महान रब के नाम का महिमागान करो.

सूरह–57. अल–हदीद

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अल्लाह का महिमागान करती है हर वह चीज़ जो आसमानों तथा धरती में है. वह प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है. 2 आसमानों और धरती का साम्राज्य उसी का है. वही जीवन देता है और वही मृत्यु देता है और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है. 3 वही

आरंभ में था और वहीं अंत में है. वह प्रकट भी है, और अप्रकट भी. वह हर चीज़ का जानने वाला है. 4 वह अल्लाह ही है जिसने आसमानों और धरती की छः दिनों में रचना की. फिर वह सिंहासन पर विराजमान हुआ (अर्थात समस्त सृष्टि का सूत्र-संचालन अपने नियंत्रण में लिया). वह जानता है जो कुछ ज़मीन में जाता है और जो कुछ उससे निकलता है और जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है. और जहाँ भी तुम हो वह तुम्हारे साथ है और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो. 5 आसमानों और धरती का साम्राज्य उसी का है. और अल्लाह ही की ओर लौटते हैं सारे मामले. 6 वही रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल कराता है. वही दिलों की बातों को जानने वाला है.

7 (ऐ लोगो!) ईमान लाओ अल्लाह और उसके पैग़ंबर पर और खर्च करो उस चीज़ में से जिस पर उसने तुम्हें अधिकार प्रदान किया है. तो जो लोग तुममें से ईमान लाए और उन्होंने खर्च किया, उनके लिए बड़ा प्रतिफल है.

8 और (ऐ लोगो!) तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते? हालाँकि पैग़ंबर तुम्हें अपने रब पर ईमान लाने का आवाहन कर रहा है. और ख़ुदा तुमसे दृढ़ वचन भी ले चुका है, (अंतिम पैग़ंबर पर ईमान लाओ) यदि तुम (वास्तव में पूर्ववर्ती पैग़ंबरों को) मानने वाले हो. 9 वह अल्लाह ही तो है जो अपने बंदे पर स्पष्ट संदेश उतारता है, ताकि तुम्हें अँधेरों से प्रकाश की ओर लेकर आए. अल्लाह तुम्हारे लिए बड़ा ही करुणामय और दयावान है. 10 और तुम्हें क्या हुआ कि तुम अल्लाह के मार्ग में खर्च नहीं करते, हालाँकि आसमान व ज़मीन अंत में सब अल्लाह ही के रह जाएंगे. तुममें से जो लोग विजय प्राप्त होने के बाद खर्च करेंगे और (ख़ुदा के मार्ग में) लड़ेंगे, वे उन लोगों के समान नहीं हो सकते जिन्होंने विजय से पहले खर्च किया और वे (ख़ुदा के मार्ग में) लड़े. उनका दर्जा बाद में खर्च करने वालों तथा बाद में लड़ाई में सहभागी होने वालों से बढ़कर

है. यद्यपि अल्लाह ने सबसे, अर्थात पहले और बाद वालों से भलाई का वादा किया है. अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो.

11 कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे, अच्छा कर्ज़, ताकि अल्लाह उस क़र्ज़ को उस देने वाले के लिए बढ़ाए. उसके लिए सम्मानपूर्वक प्रतिफल है. 12 उस दिन तुम ईमान वाले पुरुष तथा ईमान वाली स्त्रियों को देखोगे कि उनका प्रकाश उनके आगे और दाएँ चल रहा होगा. (उनसे कहा जाएगा कि) आज ख़ुशख़बरी है तुम्हारे लिए ऐसे बागों की जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी. तुम उसमें सदैव रहोगे. यही बड़ी सफलता है. 13 उस दिन कपटाचारी मर्द और कपटाचारी औरतें ईमान वालों से कहेंगे कि हमें तनिक अवसर दो कि हम भी तुम्हारे प्रकाश से कुछ लाभ उठा लें. लेकिन उनसे कहा जाएगा, तुम अपने पीछे लौट जाओ और प्रकाश तलाश करो. फिर उनके बीच एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा. उस दरवाज़े के अंदर की ओर रहमत होगी और बाहर की ओर यातना होगी. 14 वे (सत्य के विरोधी) ईमान वालों से पुकार कर कहेंगे, क्या (दुनिया में) हम तुम्हारे साथ न थे? (इस पर) ईमान वाले कहेंगे, हाँ थे, लेकिन तुमने अपने आपको फ़रेब में डाला और प्रतीक्षा करते रहे (अर्थात अवसरवादिता का परिचय दिया) और संदेह में पड़े रहे. और झूठी आशाओं ने तुम्हें धोके में रखा, यहाँ तक अल्लाह का फ़ैसला आ गया और वह बड़ा धोखेबाज़ (अर्थात शैतान) तुम्हें अल्लाह के संबंध से धोका देता रहा. 15 (उनसे क़यामत के दिन कहा जाएगा कि) आज तुमसे न कोई अर्थदंड स्वीकार किया जाएगा. और न उन लोगों से जो सत्य के इन्कार ही पर अड़े रहे थे. (अब) तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है. और (अब) वही तुम्हें आश्रय देने वाली है. और वह बुरा ठिकाना है. 16 क्या ईमान वालों के लिए अभी वह समय नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के आगे झुक जाएँ और उस सत्य के आगे जो अवतरित किया जा चुका है. और वे उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिन्हें पहले किताब दी गयी थी. फिर उन

पर लंबी मुदत गुज़र गयी, तो उनके दिल कठोर हो गए और उनमें से अधिकतर लोग अवज्ञाकारी हैं.

17 ख़ूब जान लो कि अल्लाह ज़मीन को उसकी मौत के बाद जीवन प्रदान करता है. हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ (खोल-खोल कर) बयान कर दी हैं, ताकि तुम बुद्धि से काम लो.

18 निस्संदेह दानकार्य करने वाले पुरुष और दानकार्य करने वाली स्त्रियाँ और वे लोग जिन्होंने अल्लाह को ऋण दिया, अच्छा ऋण, उसे उनके लिए कई गुना कर दिया जाएगा. और उनके लिए सम्मानपूर्वक प्रतिफल है. 19 जो लोग ईमान लाए अल्लाह पर और उसके पैग़ंबरों पर, तो ऐसे ही लोग अपने रब की दृष्टि में सत्यवादी (सत्य पर जमे रहने वाले) और सत्य की गवाही देने वाले हैं. उनके लिए उनका प्रतिफल है और (उनकी सच्चाई का) प्रकाश (उनके साथ) होगा. और जिन लोगों ने सत्य का इन्कार किया और हमारे संदेशों को झुठलाया, तो ऐसे ही लोग जहन्नम वाले हैं. 20 ख़ूब जान लो कि यह दुनिया की ज़िंदगी इसके सिवा कुछ नहीं कि खेल व तमाशा है. और (क्षणभंगूर) साज व सज्जा है. और आपस में एक-दूसरे पर बड़ाई जताना और धन तथा संतान में एक-दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयास करना है. (दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल ऐसी है) जैसे कि वर्षा जिससे (होने वाली) पैदावार किसानों को भली लगती है. फिर वह सूख जाती है. फिर तुम देखते हो कि वह पीली हो गयी, फिर वह भूस बनकर रह जाती है. मृत्यु-पश्चात परिणाम की दुनिया में कठोर यातना भी है और अल्लाह की ओर से क्षमादान तथा उसकी प्रसन्नता भी. (लोगो!) दुनिया की ज़िंदगी धोके की पूँजी के सिवा और कुछ नहीं. 21 (तो ऐ लोगो!) एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो (अर्थात दौड़ो) अपने रब की क्षमा तथा उस जन्नत की ओर जिसकी विशालता आसमान और ज़मीन जैसी है. वह उन लोगों के लिए तैयार की गयी है, जो अल्लाह और उसके पैग़ंबरों

पर ईमान लाए. यह अल्लाह का अनुग्रह है. वह जिसे चाहता है प्रदान करता है. और अल्लाह अत्यंत अनुग्रह वाला है.

22 जो भी मुसीबत धरती में आती है और तुम्हारे अपने ऊपर, हमने उसे निर्माण करने से पहले, एक किताब में लिख रखा है. कोई भी मुसीबत ऐसी नहीं है जो धरती में आती हो या तुम्हारी अपनी जानों पर, उसे हमने निर्माण करने से पहले एक किताब में लिख न रखा हो. निस्संदेह यह अल्लाह के लिए आसान है. 23 (यह सब कुछ इसलिए है,) ताकि जो भी नुक़सान तुम्हें हो उस पर तुम दुःख न करो. और जो अल्लाह तुम्हें प्रदान करे उस पर बड़ाई न जताओ. अल्लाह किसी इतराने वाले और बड़ाई जताने वाले को पसंद नहीं करता. 24 जो कि स्वयं कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी की शिक्षा देते हैं. अब यदि कोई मुँह मोड़ता है तो अल्लाह निस्पृह और प्रशंसनीय है. 25 हमने अपने पैग़ंबरों को स्पष्ट प्रमाणों के साथ भेजा. और उनके साथ किताब और तराज़ू (अर्थात कसौटी) उतारी, ताकि लोग न्याय पर क़ायम हों. और हमने लोहा उतारा जिसमें बड़ी शक्ति है और लोगों के लिए फ़ायदे हैं. यह (सब) इसलिए कि अल्लाह जान ले (अर्थात अल्लाह चिन्हांकित कर पाए) कि कौन उसकी और उसके पैग़ंबरों की सहायता करता है बिना देखे. निस्संदेह अल्लाह शक्तिशाली तथा प्रभुत्ववान है.

26 हमने नूह और इब्राहीम को भेजा और उनकी संतान में हमने पैग़ंबरी और किताब रख दी. फिर उनमें किसी ने सन्मार्ग अपनाया, लेकिन उनमें अधिकतर अवज्ञाकारी हैं. 27 फिर इन (पैग़ंबरों) के पदचिह्नों पर हम अपने और पैग़ंबर भेजते रहे. फिर उन्हीं के पदचिह्नों पर हमने मरियम-पुत्र ईसा को भेजा और हमने उसे इंजील (बायबल) प्रदान किया. और जिन लोगों ने उसका अनुसरण किया उनके दिलों पर हमने स्नेह और दयालुता डाल दी. और जहाँ तक संन्यास धारण करने की प्रथा (का संबंध है तो) उसे उन्होंने स्वयं गढ़ा, हमने उन्हें इसका आदेश नहीं दिया था. लेकिन उन्होंने अल्लाह

की प्रसन्नता के लिए उसे स्वयं अपना लिया. फिर उन्होंने उसका निर्वाहन नहीं किया, जैसा कि उसका निर्वाहन करना चाहिए था. तो उनमें से जो लोग ईमान लाए हुए थे हमने उन्हें उनका प्रतिफल प्रदान किया. लेकिन उनमें से अधिकतर लोग अवज्ञाकारी हैं.

28 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनो और उसके (अंतिम) पैग़ंबर पर ईमान लाओ. अल्लाह तुम्हें अपनी दयालुता का दोहरा हिस्सा प्रदान करेगा. और तुम्हें वह प्रकाश प्रदान करेगा जिसकी रोशनी में तुम चलोगे और तुम्हें क्षमा कर देगा. अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, दयावान है. 29 पूर्ववर्ती किताब वाले यह जान लें कि उन्हें अल्लाह की कृपा में से किसी चीज़ पर अधिकार नहीं. और यह कि कृपा अल्लाह के हाथ में है. वह जिसे चाहता है प्रदान करता है. अल्लाह बहुत कृपा वाला है.

पारा – 28

सूरह–58. अल-मुजादला

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 (पैग़ंबर!) अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो अपने पति के संबंध से तुमसे झगड़ती थी. और अल्लाह से फ़रियाद किए जाती थी. अल्लाह तुम दोनों की बातचीत सुन रहा था. निस्संदेह अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है.

2 तुममें से जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार करते हैं (अर्थात अपनी पत्नियों को माता की पीठ की तरह बताकर उनसे विवाह संबंध समाप्त करते हैं,) (मात्र ऐसा कह देने से) उनकी पत्नियाँ उनकी माताएँ नहीं हो जातीं. उनकी माताएँ तो वहीं हैं जिन्होंने उन्हें जन्म दिया. निस्संदेह वे अत्यंत अनुचित और झूठ बात कहते हैं. निस्संदेह अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला है, क्षमाशील है. 3 जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार करते हैं, फिर अपनी उस बात से रुजूअ करें जो उन्होंने कही थी, तो इससे पहले कि दोनों एक-दूसरे को हाथ लगाएँ, एक ग़ुलाम आज़ाद करना होगा. तो यह बात है जिसका तुम्हें उपदेश दिया जाता है. और अल्लाह उसकी ख़बर रखता है जो कुछ तुम करते हो. 4 फिर ज़िहार करने वाला व्यक्ति (आज़ाद करने के लिए कोई) ग़ुलाम न पाए, तो वह दो महिने के लगातार रोज़े रखे, इससे पहले कि दोनों एक-दूसरे को हाथ लगाएँ, और जो रोज़े रखने की सामर्थ्य न रखता हो तो वह साठ मोहताजों को खाना खिलाएँ. यह आदेश इसलिए दिया जा रहा है कि तुम अल्लाह और उसके पैग़ंबर पर (गंभीरतापूर्वक) ईमान लाओ. यह अल्लाह की निर्धारित की हुयी सीमाएँ हैं. और इन्कार करने वालों के लिए दर्दनाक सज़ा है.

5 जो लोग अल्लाह और उसके पैग़ंबर का विरोध करते हैं, वे उसी तरह अपमानित किए जाएंगे जिस प्रकार इनसे पहले के (सत्य के विरोधी) अपमानित किए जा चुके हैं. हमने स्पष्ट संदेश उतार दिए हैं. अपमानकारी यातना है सत्य का इन्कार करने वालों के

लिए. 6 जिस दिन अल्लाह उन सबको उठा खड़ा करेगा और जो कुछ उन्होंने किया होगा, उससे उन्हें अवगत करा देगा. वे (अपने किए को) भूले हुए हैं, लेकिन अल्लाह ने उसको गिन रखा है. अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है.

7 क्या तुमने इस बात का (चिंतनपूर्वक) निरीक्षण नहीं किया कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ धरती में है. कभी ऐसा नहीं होता कि तीन आदमियों में कोई गुप्त बातचीत हो रही हो और उनके बीच चौथा अल्लाह न हो, या पाँच आदमियों में गुप्त बातचीत हो उनमें छठा अल्लाह न हो. गुप्त बातचीत करने वाले इससे कम हों या अधिक, जहाँ कहीं भी वे हों, अल्लाह उनके साथ होता है. फिर क़यामत के दिन वह उन्हें बता देगा कि उन्होंने क्या कुछ किया है. निस्संदेह अल्लाह हर बात का ज्ञान रखने वाला है. 8 क्या तुमने उन्हें नहीं देखा जिन्हें गुप्त बातचीत करने से रोका गया था, फिर भी वे वही करते रहे जिससे उन्हें रोका गया था. वे पाप और अत्याचार और पैग़ंबर की अवज्ञा के संबंध से गुप्त वार्तालाप करते हैं. और जब वे तुम्हारे पास आते हैं, तुम्हें उस प्रकार सलाम करते हैं, जिस प्रकार (जिन शब्दों में) अल्लाह ने तुम्हें सलाम नहीं किया और अपने दिलों में कहते हैं हमारी इन बातों पर अल्लाह हमें सज़ा क्यों नहीं देता? उनके लिए जहन्नम ही पर्याप्त है. वे उसमें पड़ेंगे. वह बहुत ही बुरा ठिकाना है.

9 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जब तुम एकांतमयी वार्तालाप करो तो पाप और अन्याय और पैग़ंबर की अवज्ञा के संबंध से एकांतमयी वार्तालाप न करो, बल्कि तुम नेकी और ईश-भय से संबंधित एकांतमयी वार्तालाप करो. और उस अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो जिसके पास तुम इकट्ठे किये जाओगे. 10 (भलाई हेतु की जाने वाली एकांतमयी वार्ता के सिवा) गुप्त वार्तालाप शैतानी काम है. (और इस हेतु किया जाता है,) ताकि ईमान वालों को कष्ट पहुँचाएं. हालाँकि ख़ुदा की इजाज़त के बिना वे उन्हें कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकते. और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए.

11 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जब तुम्हें कहा जाए कि मजलिसों में फैलकर बैठो, तो तुम फैलकर बैठो. अल्लाह तुम्हें फैलाव प्रदान करेगा. और जब तुमसे कहा जाए कि उठ जाओ, तो उठ जाया करो. तुममें से जो लोग ईमान लाए हैं और जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया है, अल्लाह उनके दर्जे ऊँचे करेगा. और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है.

12 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जब तुम पैग़ंबर से एकांत में कुछ बात करना चाहो, तो बात करने से पहले कुछ दान-कार्य करो. यह तुम्हारे लिए अच्छा है और पवित्रतम है. फिर यदि तुम स्वयं को इसके लिए असमर्थ पाओ, तो अल्लाह क्षमा करने वाला तथा दया करने वाला है. 13 क्या तुम डर गए इस बात से कि तुम्हें एकांत वाली बातचीत करने से पहले दान-कार्य करना होगा? यदि तुम ऐसा न कर सको, तो अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया. तो तुम नमाज़ क़ायम करो और ज़कात देते रहो और अल्लाह और उसके पैग़ंबर का आज्ञापालन करो. और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है.

14 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसे लोगों से मित्रता करते हैं जिन पर अल्लाह का प्रकोप हुआ है. वे न तुममें से हैं और न उनमें से, वे जानते बूझते झूठी बात पर क़समें खाते हैं. 15 अल्लाह ने उनके लिए कठोर यातना तैयार कर रखी है. निस्संदेह वह बुरे काम हैं जो वे करते हैं. 16 उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है (जिसकी आड़ में) वे अल्लाह के मार्ग से लोगों को रोकते हैं. तो उनके लिए अपमानकारी यातना है.

17 उनकी संपत्ती और उनकी संतान उन्हें तनिक भी अल्लाह से न बचा सकेंगे. यह लोग जहन्नम वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे. 18 जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा तो वे उसके सामने भी इसी तरह क़समें खाएंगे, जिस तरह तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं. और वे समझते हैं कि वे किसी आधार पर हैं. तो सुन लो कि ये लोग झूठे हैं. 19 शैतान ने उन

पर पूर्णतः अपना नियंत्रण बना लिया है. फिर उसने अल्लाह की याद को उनसे भुला दिया है. यह लोग शैतान के समूह के लोग हैं. सुन लो! शैतान का समूह अवश्य नष्ट होने वाला है. 20 निस्संदेह जो लोग अल्लाह और उसके पैग़ंबर का विरोध करते हैं, वे अत्यंत अपमानित लोगों में से हैं. 21 अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे पैग़ंबर प्रभुत्वशाली रहेंगे. निस्संदेह अल्लाह शक्तिमान है, प्रभुत्ववान है.

22 तुम यह कभी न पाओगे कि जो लोग अल्लाह और परिणाम के दिन पर ईमान रखने वाले हैं, वे ऐसे लोगों से मित्रता का संबंध स्थापित करते हों जिन्होंने अल्लाह और उसके पैग़ंबर का विरोध किया है. यद्यपि वे उनके बाप या उनके बेटे या उनके परिवार वाले ही क्यों न हों. यही वे लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने ईमान लिख दिया है और उन्हें अपनी कृपा से सामर्थ्य प्रदान किया है. और वह उन्हें ऐसे बागों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे उसमें हमेशा रहेंगे. अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए. यही लोग अल्लाह का समूह है. और अल्लाह का समूह ही सफलता पाने वाला है.

सूरह–59. अल–हश्र

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अल्लाह का महिमागान करती हैं वह सारी चीज़ें जो आसमानों तथा धरती में हैं. वह प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है. 2 वह अल्लाह ही है जिसने पूर्ववर्ती किताब वालों में से इन्कारियों को उनके घरों से पहली ही बार में इकट्ठा करके निकाल दिया. तुम्हें हरगिज़ गुमान न था कि वे निकल जाएंगे. और वे भी यह समझ बैठे थे कि उनके दुर्ग उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे. फिर अल्लाह उन पर वहाँ से आ पहुँचा, जहाँ से उन्हें कल्पना भी न थी. और उसने उनके दिलों में भय डाल दिया. परिणाम-स्वरूप वे अपने घरों को स्वयं अपने

हाथों से उजाड़ने लगे और ईमान वालों के हाथों से भी उजाड़े गए. तो ऐ दृष्टि रखने वालो! शिक्षा ग्रहण करो.

3 यदि अल्लाह ने उनके लिए देश से निकाला जाना न लिखा होता, तो वह उन्हें दुन्यिा में सज़ा देता. और शाश्वत परिणाम की दुनिया में उनके लिए आग की यातना है. 4 यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़ंबर का विरोध किया. और जो व्यक्ति अल्लाह का विरोध करे तो अल्लाह कठोर दंड देने वाला है. 5 तुम लोगों ने खजूरों के जो पेड़ काटे या जिन्हें अपनी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो यह अल्लाह की इजाज़त से था, ताकि वह अवज्ञाकारियों को अपमानित करे.

6 और अल्लाह ने उनसे लेकर अपने पैग़ंबर की ओर जो कुछ पलटाया, उसके लिए न तो तुमने अपने घोड़े दौड़ाए और न ऊँट. लेकिन अल्लाह अपने पैग़ंबरों को जिस पर चाहता है प्रभुत्व प्रदान कर देता है. और अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है. 7 जो कुछ अल्लाह ने अपने पैग़ंबर की ओर बस्तियों वालों से लेकर पलटाया है, वह अल्लाह के लिए है (अर्थात अल्लाह के मिशन के लिए है) और पैग़ंबर के लिए है और सगे-संबंधियों के लिए और अनाथों और निर्धनों और मुसाफ़िरों के लिए है, ताकि वह माल तुम्हारे मालदारों ही के बीच चक्कर न लगाता रहे. तो पैग़ंबर जो कुछ तुम्हें दे तुम उसको ले लो और वह जिस चीज़ से तुम्हें रोके उससे तुम रुक जाओ. और अल्लाह से डरो, अल्लाह कठोर सज़ा देने वाला है. 8 और वह माल (अर्थात पराभूत पक्ष की ओर से प्राप्त माल) उन घर-बार छोड़ने वालों के लिए है जो ग़रीब हैं, जिन्हें अपने घरों तथा अपनी संपत्तियों से निकाला गया है. वे अल्लाह की कृपा और उसकी प्रसन्नता चाहते हैं. वे अल्लाह और उसके पैग़ंबर की सहायता करते हैं. यही लोग वास्तव में सच्चे हैं. 9 (और वह माल उनके लिए भी है) जो इन घर-बार छोड़कर आने वालों से भी पहले से इस घर (अर्थात मदीना) में ठिकाना पकड़े हुए हैं और ईमान पर जमे हुए हैं. जो उनके पास अपना घर-

बार छोड़कर आता है वे (अर्थात मदीनावासी) उससे प्रेम करते हैं और वे अपने दिलों में उसके संबंध से कोई खटक नहीं पाते, जो मुहाजिरों (अर्थात अल्लाह के मार्ग में घर-बार छोड़ आए लोगों) को दिया जाता है. और वे स्थानीय लोग उन मुहाजिरों को अपने ऊपर प्राथमिकता देते हैं, यद्यपि वे स्वयं भूखे ही क्यों न हों. और जो कोई अपने मन की लालच से बचा लिया गया तो ऐसे ही लोग सफलता पाने वाले हैं. 10 और जो लोग (हिजरत करके) उनके बाद आए, वे कहते हैं, ऐ हमारे रब! हमें क्षमा कर दे और हमारे उन भाइयों को भी जो ईमान लाने के मामले में हमसे अग्रसर रहे हैं. और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कोई विद्वेष न रख. ऐ हमारे रब! तू अत्यंत करुणामय एवं दयावान है.

11 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो कपटाचार में लिप्त हैं? वे अपने इन्कार में ग्रस्त पूर्ववर्ती किताब वाले भाइयों से कहते हैं कि यदि तुम्हें निकाला गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएंगे. और तुम्हारे मामले में हम किसी की बात नहीं मानेंगे. और यदि तुमसे युद्ध किया गया तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे, लेकिन अल्लाह गवाही देता है कि ये लोग बिल्कुल झूठे हैं. 12 यदि उन (इन्कारी किताब वालों) को (देश से) निकाला गया तो यह कपटाचारी लोग उनके साथ नहीं निकलेंगे. और यदि उनसे युद्ध हुआ तो ये उनकी सहायता नहीं करेंगे और यदि ये (दिखावे के लिए) सहायता करेंगे भी तो पीठ फेर कर (जल्द ही) भाग जाएंगे. फिर उन्हें कोई सहायता प्राप्त नहीं होगी.

13 इन कपटाचारियों के दिलों में अल्लाह से बढ़कर तुम्हारा भय है. यह इसलिए कि ये लोग समझ नहीं रखते. 14 ये कपटाचारी सब मिलकर (खुले तौर पर) कभी तुम से नहीं लड़ेंगे. यदि (लड़ेंगे) तो क़िला-बंद बस्तियों में बैठकर या फिर दीवारों की आड़ लेकर. उनकी लड़ाई आपस में सख़्त है. तुम उन्हें संगठित समझते हो, लेकिन उनके दिल एक-दूसरे से फटे हुए हैं. यह इसलिए कि यह लोग बुद्धि से काम नहीं लेते.

15 ये उन्हीं लोगों जैसे हैं जो उनसे पहले निकट काल में अपने किए का स्वाद चख चुके हैं. और उनके लिए कष्टदायी यातना है. 16 इन (कपटाचारियों) की मिसाल शैतान जैसी है. जो इंसान से कहता है कि सत्य का इन्कार कर दे. और जब इंसान (उसके बहकावे में आकर) सत्य का इन्कार कर देता है, तो शैतान कहता है कि मैं तुम्हारी ज़िम्मेदारी से बरी हूँ. मैं तो उस अल्लाह से डरता हूँ जो समस्त सृष्टि का रब है. 17 फिर उन दोनों का अंजाम यह होना है कि वे हमेशा रहने के लिए जहन्नम में जाएँ. और ज़ालिमों का यही बदला है.

18 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनो. हर व्यक्ति यह देखे कि उसने कल के लिए क्या भेजा है. अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो. निस्संदेह अल्लाह उसकी ख़बर रखता है जो कुछ तुम करते हो. 19 (और ऐ ईमान वालो!) तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जो अल्लाह को भूल गए तो उसने भी (उनके संबंध से) ऐसा किया कि उन्होंने अपने आपको भुला दिया. यही लोग अवज्ञाकारी हैं. 20 जहन्नम वाले और जन्नत वाले कभी समान नहीं हो सकते. जन्नत वाले ही वास्तव में सफलता प्राप्त करने वाले हैं.

21 यदि हम इस क़ुरआन को पहाड़ पर उतारते तो तुम देखते कि वह अल्लाह के डर से दबा जा रहा है और फट पड़ रहा है. ये मिसालें हम लोगों के लिए इसलिए पेश करते हैं कि वह (उन पर) चिंतन करें. 22 वह अल्लाह ही है. जिसके सिवा दूसरा कोई पूजनीय नहीं. परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला, वह बड़ा ही कृपाशील तथा दयावान है. 23 वह अल्लाह ही है जिसके सिवा दूसरा कोई पूजनीय नहीं, वही (वास्तविक) बादशाह है. वह पाक ज़ात है. (अर्थात वह हर दोष से पूर्णता मुक्त है) वह सर्वथा सलामती है. वह निश्चिंतता (अर्थात शांति) प्रदान करने वाला है. वह संरक्षण प्रदान करने वाला है. वह शक्तिशाली है. वह प्रभुत्वशाली है (अर्थात वह जो चाहे बलपूर्वक मनवा सकता है). वह

अपनी बड़ाई प्रकट करने वाला है. पाक है अल्लाह उस साझी ठहराने के कृत्य से जिसे (बहुदेववादी) करते हैं. 24 वह अल्लाह ही है जो सृजनकर्ता है (हर चीज़ का). वह प्रारंभकर्ता है (हर चीज़ का). वही रचनाकार है (हर चीज़ का). उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम. हर चीज़ जो आसमानों तथा धरती में है उसी का महिमागान कर रही है. वह प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है.

सूरह–60. अल–मुमतहिना

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम मेरे शत्रुओं और अपने शत्रुओं को मित्र न बनाना. तुम उनकी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाते हो, और वे हैं कि, उस सत्य का जो तुम्हारे पास आया है, इन्कार कर चुके हैं. वे पैग़ंबर को और तुम्हें इसलिए निर्वासित करते हैं कि तुम अपने रब अल्लाह पर ईमान लाए हो. यदि तुम मेरे मार्ग में जिहाद करने (अर्थात प्रयत्नों की पराकाष्ठा करने) तथा मेरी प्रसन्नता प्राप्ति के लिए निकले हो (तो सत्य के विरोधियों से मित्रत्व कैसे संभव है). तुम छिपाकर उन्हें मित्रता का संदेश भेजते हो और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम प्रकट करते हो. और जो
व्यक्ति तुममें से ऐसा करेगा, तो निश्चित रूप से वह सन्मार्ग से भटक गया. 2 यदि वे तुम
पर क़ाबू पा जाएँ तो वे तुम्हारे शत्रु बन जाएंगे और अपने हाथ तथा ज़बान से तुम्हें कष्ट पहुँचाएंगे (अर्थात वे तुम्हारे साथ शत्रुत्वपूर्ण व्यवहार करेंगे). वे तो चाहते हैं कि तुम भी
किसी तरह सत्य के इन्कारी बन जाओ. 3 क़यामत के दिन न तुम्हारे संबंधी तुम्हें कोई
लाभ पहुँचा सकते हैं और न तुम्हारी संतान. उस दिन अल्लाह तुम्हारे बीच निर्णय करेगा. अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो.

4 तुम्हारे लिए इब्राहीम और उसके साथियों में एक उत्तम आदर्श है. जबकि उन्होंने अपनी क़ौम के लोगों से कह दिया था कि हम अलग होते हैं तुमसे और उन चीज़ों से

जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो. हम तुम्हारा इन्कार करते हैं. हमारे और तुम्हारे बीच हमेशा के लिए शत्रुत्व और वैमनस्य प्रकट हो गया है, जब तक तुम अकेले अल्लाह पर ईमान न लाओ. लेकिन इब्राहीम का अपने पिता से यह कहना (इससे अलग है कि) मैं आपके लिए माफ़ी की प्रार्थना तो अवश्य करूँगा, लेकिन आपके लिए अल्लाह से कुछ प्राप्त कर लेना मेरे बस में नहीं. (और इब्राहीम तथा इब्राहीम के साथियों ने यह दुआ की थी कि) ऐ हमारे रब! तेरे ही ऊपर हमने भरोसा किया और तेरी ही तरफ़ हमने रुजू कर लिया और तेरे ही पास हमें पलटना है. 5 ऐ हमारे रब! हमें इन्कार करने वालों के लिए आज़माइश न बना. और ऐ हमारे रब! हमें माफ़ कर दे. निस्संदेह तू प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है. 6 निस्संदेह तुम्हारे लिए इब्राहीम और उनके साथियों में उत्तम आदर्श है. (आदर्श) उस व्यक्ति के लिए है जो अल्लाह (की प्रसन्नता प्राप्ति) का और परिणाम की दुनिया (की सफलता) का उम्मीदवार हो. और जो व्यक्ति मुँह मोड़ेगा तो अल्लाह निस्पृह है, प्रशंसनीय है.

7 असंभव नहीं कि अल्लाह तुम्हारे और उनके बीच मुहब्बत डाल दे जिनसे तुमने (सत्य की ख़ातिर) शत्रुता मोल ली है. अल्लाह सब कुछ करने की सामर्थ्य रखने वाला है. अल्लाह क्षमाशील एवं दयावान है.

8 (ऐ ईमान लाने वालो!) अल्लाह तुम्हें उन लोगों (के साथ सद्व्यवहार करने) से नहीं रोकता, जिन्होंने धर्म के मामले में तुमसे युद्ध नहीं किया और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला, कि तुम उनके साथ भलाई का व्यवहार करो और तुम उनके साथ न्याय करो. निस्संदेह अल्लाह न्याय करने वालों को पसंद करता है. 9 अल्लाह मात्र उन लोगों से मित्रता करने से तुम्हें रोकता है जो धर्म के मामले में तुमसे लड़ते हैं और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकालते हैं और तुम्हें घरों से निकालने में एक-दूसरे की सहायता करते हैं. उनसे जो लोग मित्रता करेंगे वे अत्याचारी हैं.

10 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जब तुम्हारे पास ईमान वाली औरतें अपना घर-बार त्याग कर आएँ तो तुम उनकी जाँच-पड़ताल कर लो. अल्लाह उनके ईमान को भली-भाँति जानता है. फिर जब तुम्हें मालूम हो जाए कि वे ईमान वाली हैं. तो उन्हें सत्य के इन्कारियों की तरफ़ वापस न लौटाओ. न ये औरतें उनके लिए वैध हैं और न वे (इन्कारी) उन औरतों के लिए वैध हैं. उनके इन्कारी पतियों ने जो कुछ (महर के रूप में उन औरतों पर) खर्च किया है वह उन्हें अदा कर दो. और तुम ईमान वाले पुरुषों पर कोई दोष नहीं, यदि तुम उनसे विवाह कर लो, जबकि तुम उनके महर उन्हें अदा कर दो. और तुम इन्कार करने वाली औरतों को अपने विवाह-बंधन में न रोके रखो. और जो कुछ तुम ने खर्च किया है वह उनसे माँग लो. और जो कुछ इन्कारियों ने (ईमान वाली औरतों पर) खर्च किया है वे भी तुमसे माँग लें. यह अल्लाह का आदेश है. वह तुम्हारे बीच फ़ैसला करता है. अल्लाह ज्ञानवान एवं विवेकवान है. 11 यदि तुम्हारी पत्नियों के महर में से कुछ इन्कारियों की ओर रह जाए और फिर तुम्हारी बारी आए तो जिन लोगों की पत्नियाँ उधर चली गयी हैं, तो जितना उन्होंने खर्च किया है उन्हें दे दो. और उस अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो जिस पर तुम ईमान लाए हो.

12 पैग़ंबर! जब तुम्हारे पास ईमान वाली औरतें इस बात पर प्रतिज्ञा करने के लिए आएँ कि वह अल्लाह के साथ किसी को साझी न बनाएँगी, चोरी नहीं करेंगी, व्यभिचार नहीं करेंगी अपनी संतान की हत्या नहीं करेंगी और अपने हाथों तथा पैरों के बीच कोई आरोप गढ़कर नहीं लाएँगी और किसी भलाई के कार्य में तुम्हारी अवज्ञा नहीं करेंगी. तो (पैग़ंबर!) तुम उनसे प्रतिज्ञा ले लो और उनके लिए अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो. निस्संदेह अल्लाह क्षमाशील एवं दयावान है. 13 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम उन लोगों को मित्र न बनाओ जिनके ऊपर अल्लाह का प्रकोप हुआ. वे मृत्यु-पश्चात दुनिया (में प्रतिफल पाने) के संबंध से निराश हो चुके हैं. जिस प्रकार क़ब्रों में पड़े हुए इन्कारी निराश हो चुके हैं.

सूरह–61. अस–सफ़्फ़

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अल्लाह का महिमागान करती है, हर वह चीज़ जो आसमानों तथा धरती में है.
वह प्रभुत्वशाली तथा विवेकवान है. 2 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम ऐसी बात क्यों
कहते हो जो तुम करते नहीं. 3 अल्लाह की दृष्टि में यह अत्यंत अप्रिय है कि तुम ऐसी बात
कहो जो करो नहीं. 4 अल्लाह को तो वे लोग पसंद हैं जो उसके मार्ग में इस प्रकार
पंक्तिबद्ध होकर लड़ते हैं, मानो वे सीसा पिलाई हुयी दीवार हैं.

5 और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा, ऐ मेरी क़ौम के
लोगों! तुम लोग मुझे क्यों कष्ट देते हो, हालाँकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी ओर अल्लाह
का भेजा हुआ पैग़ंबर हूँ. फिर जब वे फिर गए तो अल्लाह ने भी उनके दिलों को फेर दिया.
अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को सन्मार्ग प्रदान नहीं करता.

6 और याद करो जब मरियम-पुत्र ईसा ने कहा, ऐ इसराईल की संतान! मैं तुम्हारी
ओर अल्लाह का भेजा हुआ पैग़ंबर हूँ. पुष्टि करने वाला हूँ, उस तौरात की जो मुझसे पहले
से मौजूद है. और शुभ-सूचना देने वाला हूँ एक पैग़ंबर की जो मेरे बाद आएगा. उसका
नाम अहमद होगा. फिर जब वह उनके पास स्पष्ट प्रमाणों के साथ आया, तो उन्होंने कहा,
यह तो स्पष्ट जादू है. 7 और उससे बढ़कर अत्याचारी दूसरा कौन होगा जो अल्लाह पर
झूठ बाँधे, जबकि उसे इस्लाम (अर्थात अल्लाह को पूर्णतः समर्पित होने) की ओर बुलाया
जा रहा हो? अल्लाह अत्याचारी लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता. 8 वह चाहते हैं कि
अल्लाह के प्रकाश को अपने मुँह की फूँकों से बुझा दें, लेकिन अल्लाह अपने प्रकाश को
(अर्थात सत्य के प्रकाश को) पूर्ण करके रहेगा (अर्थात उसे प्रभुत्व प्रदान करके रहेगा),
यद्यपि यह सत्य के इन्कार करने वालों को कितना ही अप्रिय क्यों न लगे. 9 वह अल्लाह
ही है जिसने भेजा अपने पैग़ंबर को मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ, ताकि वह सत्य

धर्म को सारे (मानवनिर्मित) धर्मों पर प्रभुत्व प्रदान कर दे, चाहे बहुदेववादियों (अर्थात असत्य धर्मों को गढ़ने तथा उन्हें चलाने वालों) को कितना ही अप्रिय क्यों न लगे. 10 ऐ
लोगो जो ईमान लाए हो! क्या मैं तुम्हें एक ऐसा व्यापार बताऊँ जो तुम्हें दुखदायी यातना से बचा ले? 11 तुम्हें अल्लाह और उनके पैग़ंबर पर ईमान लाना है और अल्लाह के मार्ग में जिहाद (अर्थात प्रयत्नों की पराकाष्ठा) करना है अपने मालों तथा अपनी जानों के साथ.
यह तुम्हारे लिए बेहतर है यदि तुम जानो. 12 (उस तिजारत के परिणाम-स्वरूप) अल्लाह
तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुम्हें ऐसे बागों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. और वह तुम्हें सदैव रहने की जन्नत में उत्कृष्ट आवास प्रदान करेगा. यह है बड़ी सफलता.

13 और (ऐ ईमान वालो!) वह चीज़ भी जो तुम चाहते हो (वह तुम्हें प्रदान करेगा, अर्थात), अल्लाह की ओर से सहायता और निकट प्राप्त होने वाली विजय. (पैग़ंबर!) ईमान वालों को इसकी शुभ-सूचना दे दो. 14 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम अल्लाह के
सहायक बनो. जिस तरह मरियम-पुत्र ईसा ने (अपने) साथियों से कहा था, कौन है (अल्लाह की ओर बुलाने में) मेरा सहायक? (इस पर उनके) साथियों ने कहा था, हम हैं अल्लाह के सहायक. फिर इसराईल की संतान में से एक समूह (मरियम-पुत्र मसीह पर) ईमान लाया और एक समूह ने इन्कार किया. फिर हमने ईमान लाने वालों की उनके शत्रुओं के मुक़ाबले में सहायता की; परिणाम-स्वरूप वे प्रभावी होकर रहे.

सूरह–62. अल–जुमुआ

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अल्लाह का महिमागान कर रही है हर वह चीज़ जो आसमानों और धरती में है. जो (सच्चा) बादशाह है, जो (हर ऐब से) पाक है, जो शक्तिशाली तथा विवेकवान है.

2 वह अल्लाह ही है जिसने निरक्षर लोगों के बीच एक पैग़ंबर उन्हीं में से उठाया. पैग़ंबर उन्हें अल्लाह के संदेश पढ़कर सुनाता है. और उनके (दिलों को) शुद्ध करता है और उन्हें ख़ुदा की किताब तथा हिकमत (wisdom) की शिक्षा देता है (अर्थात ख़ुदा के संदेशों में मौजूद विवेकपूर्ण बातों को उन पर खोलता है). और वे इससे पहले पथभ्रष्टता में पड़े हुए थे. 3 (इस पैग़ंबर का भेजा जाना) उन दूसरे लोगों के लिए भी है जो अभी उनसे मिले नहीं हैं. अल्लाह प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है. 4 यह (पैग़ंबरी) अल्लाह की कृपा है, जिसे चाहता है वह प्रदान करता है. अल्लाह बड़ा ही कृपा करने वाला है.

5 जिन लोगों पर (आसमानी किताब) तौरात का बोझ डाला गया, फिर उन्होंने उसका बोझ नहीं उठाया, उनकी मिसाल उस गधे जैसी है जिस पर किताबें लदी हुयी हों. बहुत ही बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह के संदेशों को झुठला दिया. अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्गदर्शन प्रदान नहीं करता. 6 (पैग़ंबर! यहूदियों से) कहो, ऐ लोगो जो यहूदी बन गए हो! यदि तुम्हें यह गुमान है कि सारे लोगों को छोड़कर बस तुम ही अल्लाह के चहेते हो तो तुम मौत की कामना करो, यदि तुम सच्चे हो. 7 लेकिन ये कभी भी मृत्यु की कामना नहीं करेंगे, उन कर्मों के कारण जो उनके हाथ आगे भेज चुके हैं. और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भांति जानता है. 8 उनसे कहो जिस मृत्यु से तुम भागते हो, वह तुम्हें आकर रहेगी. फिर तुम उसके सामने पेश किए जाओगे, जो छिपे और खुले का जानने वाला है; और वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या कुछ करते रहे हो. 9 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जुमुआ के दिन जब नमाज़ के लिए तुम्हें पुकारा जाए तो अल्लाह की याद की ओर चल पड़ो. खरीदना तथा बेचना रोक दो. यह तुम्हारे लिए उत्तम है, यदि तुम जानो. 10 फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो धरती में फैल जाओ और अल्लाह की कृपा तलाश करो. और अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करते रहो, ताकि तुम सफलता पाओ.

11 और जब वे कोई व्यापार या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी ओर दौड़ पड़ते हैं और तुम्हें खड़ा हुआ छोड़ देते हैं. कहो, जो अल्लाह के पास है, वह खेल-तमाशे और व्यापार से बेहतर है. अल्लाह सबसे अच्छी जीविका देने वाला है.

सूरह–63. अल–मुनाफ़िक़ून

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 (पैग़ंबर!) जब कपटाचारी लोग तुम्हारे पास आते हैं तो वे कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि आप निस्संदेह अल्लाह के पैग़ंबर हैं. अल्लाह जानता है कि निस्संदेह तुम उसके पैग़ंबर हो. और अल्लाह गवाही देता है कि ये कपटाचारी झूठे हैं. (अर्थात जो बात वह ज़बान से कह रहे हैं वह उनके दिल में नहीं).
2 कपटाचारियों ने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है. इस प्रकार वे (लोगों को) अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं. निस्संदेह अत्यंत बुरा है वह कार्य जो वे कर रहे हैं.
3 यह सब इस कारण से है कि उन्होंने ईमान लाकर इन्कार किया, तो उनके दिलों पर मुहर लगा दी गयी, अब वे कुछ नहीं समझते (अर्थात वे सत्य व असत्य में अंतर नहीं कर सकते).

4 तुम उन्हें देखते हो तो उनके शरीर (उनके बाह्य रूप) तुम्हें अच्छे लगते हैं. यदि वे बात करें तो तुम उनकी बातें सुनते रह जाओ. लेकिन (वास्तव में उनका हाल यह है कि) मानो वे लकड़ियाँ हैं टेक लगायी हुयीं. हर ज़ोर की आवाज़ को वे अपने विरुद्ध समझते हैं. यही लोग (वास्तव में) शत्रु हैं, तो उनसे बचकर रहो. अल्लाह की मार पड़े उन पर, वे कहाँ से बहक जाते हैं!
5 और जब उनसे कहा जाता है कि आओ, ताकि अल्लाह का पैग़ंबर तुम्हारे लिए क्षमा करे. तो वे अपना सिर मोड़ लेते हैं. और तुम उन्हें देखोगे कि वे बड़े घमंड के साथ बेरुख़ी करते हैं.
6 उनके लिए समान है कि तुम उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो या क्षमा की प्रार्थना न करो, अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा. निस्संदेह अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को रास्ता नहीं दिखाता.

7 ये वही लोग हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के पैग़ंबर के साथ हैं उन पर खर्च न करो, ताकि वे तितर बितर हो(कर समाप्त ही हो) जाएँ. हालाँकि आसमानों तथा धरती के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं, लेकिन ये कपटाचारी लोग नहीं समझते. 8 कपटाचारी लोग कहते हैं, हम मदीना वापस पहुँच जाएँ तो जो इज़्ज़तवाला है, वह वहाँ से बेइज़्ज़त को निकाल कर बाहर करेगा. हालाँकि इज़्ज़त अल्लाह और उसके पैग़ंबर और ईमान वालों के लिए है, लेकिन कपटाचारी लोग नहीं जानते. 9 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम्हारी संपत्ती और तुम्हारी संतान तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दे. जो कोई ऐसा करे तो ऐसे ही लोग घाटे में रहने वाले हैं. 10 (ऐ ईमान वालो!) हमने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से खर्च करो, (हमारी प्रसन्नता हेतु), इससे पहले कि तुममें से किसी की मौत आ जाए, फिर वह कहने लगे कि ऐ मेरे रब! तूने मुझे कुछ और मुहलत क्यों न दी कि मैं दान-कार्य करता और भले लोगों में शामिल हो जाता. 11 लेकिन अल्लाह किसी व्यक्ति को जब उसका नियत समय आ जाए, कदापि मुहलत नहीं देता. और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है.

सूरह–64. अत–तग़ाबुन

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अल्लाह का महिमागान करती है हर वह चीज़ जो आसमानों में है और जो धरती में है. (समस्त सृष्टि में) उसी की बादशाही है और प्रशंसा उसी के लिए है. और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है. 2 वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारा सृजन किया. फिर तुममें से कोई इन्कार करने वाला है और कोई ईमान वाला है. अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो. 3 अल्लाह ने आसमान और धरती का सत्य-उद्देश्य के साथ सृजन किया. उसने तुम्हारा रूप बनाया, तो अत्यंत अच्छा रूप बनाया. और अंत में तुम्हें उसी की ओर लौटना है.

4 अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ धरती में है. वह जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम प्रकट करते हो. अल्लाह दिलों तक की बातों का जानने वाला है.

5 क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जिन्होंने इससे पहले इन्कार किया था. फिर उन्होंने अपने बुरे कर्म के परिणाम का स्वाद चखा और (शाश्वत परिणाम की दुनिया में) उनके लिए दुःखदायी यातना है. 6 यह इस कारण कि उनके पास उनके पैग़ंबर स्पष्ट प्रमाण लेकर आते रहे. लेकिन उन्होंने कहा, क्या मनुष्य हमारा मार्गदर्शन करेंगे. इस तरह उन्होंने इन्कार किया और मुँह फेर लिया. तो अल्लाह भी उनसे बेपरवाह हो गया. अल्लाह तो निस्पृह और प्रशंसनीय है. 7 सत्य के इन्कारी दावा करते हैं कि, वे (मृत्यु-पश्चात) कदापि नहीं उठाए जाएंगे. कह दो, क्यों नहीं, मेरे रब की क़सम, तुम अवश्य उठाए जाओगे, फिर जो कुछ तुमने किया है उससे तुम्हें अवगत कराया जाएगा. और यह अल्लाह के लिए अत्यंत आसान है.

8 तो ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके पैग़ंबर पर और (सन्मार्ग दिखाने वाले) उस प्रकाश पर जिसे हमने अवतरित किया है. तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है. 9 इकट्ठा किए जाने के दिन जब वह तुम्हें इकट्ठा करेगा. यही दिन हार-जीत का दिन होगा. जो व्यक्ति अल्लाह पर (परीक्षा की दुनिया में) ईमान लाया होगा. और उसने भले कर्म किए होंगे, तो अल्लाह (परिणाम की दुनिया में) उससे उसके गुनाह दूर कर देगा. और उसे ऐसे बागों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे हमेशा उसमें रहेंगे यही है बड़ी सफलता. 10 लेकिन जिन लोगों ने सत्य को नकारा और हमारे संदेशों को झुठलाया, वही लोग आग वाले हैं. वे उसमें हमेशा रहेंगे. और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है.

11 अल्लाह की अनुमति के बिना कोई भी मुसीबत नहीं आती. जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान रखता है, अल्लाह उसके दिल को मार्ग दिखाता है. अल्लाह हर चीज़ को भली-भाँति जानता है. 12 तो तुम लोग अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और पैग़ंबर की आज्ञा का पालन करो. फिर यदि तुम मुँह मोड़ोगे तो हमारे पैग़ंबर पर बस स्पष्ट रूप से (संदेश) पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है. 13 अल्लाह उसके सिवा दूसरा कोई पूजनीय नहीं है. ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए.

14 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारी संतान में से कुछ ऐसे भी हैं जो तुम्हारे शत्रु हैं. तो तुम उनसे होशियार रहो. यदि तुम माफ़ कर दो और नज़रंदाज़ कर दो और दरगुज़र कर दो तो अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला और दया करना वाला है. 15 (ऐ ईमान वालो!) तुम्हारी संपत्ती तथा तुम्हारी संतति तो बस एक आज़माइश है और अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल है. 16 तो जहाँ तक तुम्हारे बस में हो अल्लाह से डरते रहो. और सुनो और आज्ञापालन करो और अपना माल (अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति हेतु) खर्च करो. यह तुम्हारे ही लिए बेहतर है. जो व्यक्ति मन की लालच से बचा रहा, तो ऐसे ही लोग सफलता प्राप्त करने वाले हैं. 17 (ऐ ईमान वालो!) यदि तुम अल्लाह को क़र्ज़ दोगे, अच्छा कर्ज़, तो वह उसको तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हारी ग़लतियों को माफ़ कर देगा. अल्लाह बड़ा गुणग्राहक है और संयमी है. 18 वह परोक्ष व प्रत्यक्ष का जानने वाला है, प्रभुत्वशाली एवं बुद्धिमान है.

सूरह–65. अत–तलाक़

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 पैग़ंबर! जब तुम औरतों को तलाक़ दो तो उन्हें तलाक़ उनकी इद्दत के हिसाब से दो और इद्दत को गिनते रहो. और (तलाक़ के मामले में) उस अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहो जो तुम्हारा रब है. (तलाक़ की प्रासेस के दरमियान) उन औरतों को

उनके घरों से न निकालो और न वह स्वयं निकलें, सिवाय यह कि वे कोई खुली बुराई कर बैठें. यह अल्लाह की सीमाएँ हैं और जो व्यक्ति अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करेगा तो उसने अपने ऊपर अत्याचार किया. और तुम नहीं जानते कि अल्लाह इसके बाद कोई और सूरत पैदा कर दे.

2 फिर जब वे अपनी इद्दत की) अवधी के अंत को पहुँच जाएँ तो या उन्हें भले तरीक़े से (अपने निकाह में) रोक रखो या भले तरीक़े से उन्हें अलग कर दो. और अपने में से दो न्यायी व्यक्तियों को गवाह बना लो. (और गवाह बनने वाले!) अल्लाह के लिए गवाही को दुरुस्त रखें. इसकी नसीहत हर उस व्यक्ति को की जाती है जो अल्लाह और परिणाम के दिन पर ईमान रखता हो. और जो व्यक्ति अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बनेगा, अल्लाह उसके लिए मार्ग निकालेगा. 3 (जो व्यक्ति अल्लाह के प्रति सचेत एवं उत्तरदायी बना रहेगा,) अल्लाह उसे वहाँ से जीविका देगा, जहाँ से उसने कल्पना भी न की हो. और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करेगा, तो अल्लाह उसके लिए पर्याप्त है. निस्संदेह अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है. अल्लाह ने हर चीज़ के लिए पैमाना निर्धारित कर रखा है.

4 और तुम्हारी औरतों में से जो माहवारी से निराश हो चुकी हों (अर्थात रजोनिवृत्ति को पहुँच चुकी हों), यदि तुम्हें संदेह हो तो उनकी इद्दत तीन महिने है. और इसी प्रकार उनकी भी इद्दत है जिन्हें माहवारी (अभी) नहीं आती हो. और गर्भवती औरतों की इद्दत उनके शिशु-प्रसव तक है. और जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके काम में उसके लिए आसानी कर देगा. 5 यह अल्लाह का आदेश है जो उसने तुम्हारी ओर उतारा है जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसकी बुराइयाँ उससे दूर कर देगा और उसे बड़ा बदला प्रदान करेगा.

6 अपने सामर्थ्य के अनुसार, जहाँ तुम स्वयं रहते हो उन्हें (अर्थात तलाक दी जा रही औरतों को) भी उसी जगह रखो. और उन्हें तंग करने के लिए उन्हें कष्ट न पहुँचाओ. और यदि वे गर्भवती हों तो उन पर खर्च करते रहो, जब तक कि उनका शिशु-प्रसव न हो जाए. फिर यदि वे तुम्हारे लिए शिशु को दूध पिलाएँ तो उन्हें उनका पारिश्रमिक दो. और आपस में भली रीति से बातचीत के द्वारा कोई बात निश्चित कर लो. और यदि आपस में सहमती न बन सकी तो फिर कोई दूसरी औरत उस (बच्चे के बाप) के लिए (बच्चे को) दूध पिलाएगी. 7 चाहिए कि सामर्थ्य वाला अपनी क्षमता के अनुसार खर्च करे और जिसे जीविका कम दी गयी हो, उसे चाहिए कि जितना अल्लाह ने उसे प्रदान किया है, वह उसमें से खर्च करे. जितना कुछ दिया है उससे बढ़कर अल्लाह किसी व्यक्ति पर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालता. दूर नहीं कि अल्लाह तंगी के बाद आसानी पैदा कर दे.

8 कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्होंने अपने रब के और उसके पैग़ंबरों के आदेश की अवहेलना की, तो हमने उनसे कड़ा हिसाब लिया और उन्हें बुरी तरह सज़ा दी. 9 तो उन्होंने अपने किए का स्वाद चखा और उनका अंत (शाश्वत-रूपी) घाटे में हुआ. 10 अल्लाह ने (शाश्वत परिणाम की दुनिया में) उनके लिए कष्टदायी यातना तैयार कर रखी है. तो अल्लाह के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहो, ऐ बुद्धि रखने वालो, जो ईमान लाए हो! अल्लाह ने तुम्हारी ओर एक उपदेश-नामा (अर्थात-क़ुरआन) उतार दिया है. 11 और उसका भेजा हुआ पैग़ंबर, जो तुम्हें अल्लाह के स्पष्ट संदेश सुनाता है, ताकि ईमान लाने वालों और अच्छे कर्म करने वालों को अँधेरों से निकाल कर रोशनी में लाए. फिर जो कोई ईमान लाए और अच्छा कर्म करे अल्लाह उसे जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी. (जन्नत में दाख़िल किए गए) लोग उसमें हमेशा-हमेशा के लिए रहेंगे. अल्लाह ने उसके लिए उत्तम जीविका रखी है. 12 वह अल्लाह ही है जिसने बनाए सात आसमान और उन्हीं की तरह धरती भी. उनके बीच उसका आदेश उतरता है, ताकि तुम

यह जान लो कि अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है. और यह कि अल्लाह का ज्ञान हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है.

सूरह–66. अत–तहरीम

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 पैग़ंबर! जिस चीज़ को अल्लाह ने तुम्हारे लिए वैध ठहराया है उसे तुम क्यों अवैध ठहराते हो? (क्या इसलिए कि) तुम अपनी पत्नियों की प्रसन्नता चाहते हो? अल्लाह क्षमाशील एवं दयावान है. 2 अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी क़समों की पाबंदी से निकलने का तरीक़ा निश्चित कर दिया है. अल्लाह तुम्हारा संरक्षक है. वही ज्ञानवान एवं बुद्धिमान है.

3 जब पैग़ंबर ने अपनी किसी पत्नी से एक बात गुप्त रूप में कही थी, जब उस पत्नी ने उस बात को (किसी और को) बता दिया. और अल्लाह ने पैग़ंबर को इस (रहस्योद्घाटन) की सूचना दे दी, तो पैग़ंबर ने उसे उस (बात) का कुछ भाग बताया और कुछ टाल दिया. जब पैग़ंबर ने पत्नी को इस (रहस्योद्घाटन की) बात बतायी, तो पत्नी ने पूछा, आपको इसकी किसने ख़बर दी? पैग़ंबर ने कहा, मुझे उसने ख़बर दी जो सब कुछ जानने वाला, ख़बर रखने वाला है. 4 यदि तुम दोनों (पश्चात्ताप के साथ) अल्लाह की ओर पलटो (तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है). तुम्हारे दिल सीधे मार्ग से हट ही चुके हैं. लेकिन यदि तुम पैग़ंबर के विरुद्ध एक-दूसरे की सहायता करोगी (तो जान रखो कि) अल्लाह पैग़ंबर का संरक्षक है. और जिबरील और नेक ईमान वाले और (सारे) फ़रिश्ते उसके सहायक हैं. 5 असंभव नहीं कि यदि पैग़ंबर तुम सब पत्नियों को तलाक दे दे, तो उसका रब तुम्हारे बदले में तुमसे अच्छी पत्नियाँ प्रदान करे. जो समर्पित रहने वाली, ईमान वाली, आज्ञापालन करने वाली, अल्लाह की ओर पलटने वाली, इबादत करने वाली, (अल्लाह के मार्ग में) भ्रमण करने वाली, विधवा और कुवाँरियाँ. 6 ऐ लोगो जो

ईमान लाए हो! अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईधन आदमी और पत्थर होंगे, जिस पर कठोर स्वभाव के बलशाली फ़रिश्ते नियुक्त हैं. अल्लाह उन्हें जो भी आदेश देता है उस मामले में वह उसकी अवज्ञा नहीं करते. वे वही करते हैं जिसका उन्हें आदेश मिलता है.

7 (परिणाम के दिन इन्कारियों से कहा जाएगा,) ऐ लोगो जिन्होंने सत्य को नकारा है! आज बहाने न बनाओ, तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे.

8 ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह की तरफ़ पलटो, सच्चा पलटना. (यदि तुम सच्चे रूप में पलटे तो) असंभव नहीं कि अल्लाह तुम्हारी बुराइयाँ तुमसे दूर कर दे. और तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाख़िल कर दे. जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी. उस दिन अल्लाह पैग़ंबर को और उसके साथ ईमान लाने वालों को शरमिंदा नहीं करेगा. उन(की सच्चाई) का प्रकाश उनके आगे और उनकी दायीं ओर दौड़ रहा होगा. वे कह रहे होंगे कि ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारे प्रकाश को पूर्ण कर दे और हमें माफ़ कर दे. निस्संदेह तू हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है.

9 पैग़ंबर! सत्य के इन्कारियों तथा कपटाचारियों से जिहाद (संघर्ष) करो और उनके साथ सख़्ती से पेश आओ. उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरा ठिकाना है. 10 अल्लाह सत्य के इन्कारियों के लिए नूह की पत्नी और लूत की पत्नी की मिसाल प्रस्तुत करता है. वे दोनों हमारे दो नेक बंदों की पत्नियाँ थीं, लेकिन उन्होंने अपने पतियों के साथ विश्वासघात किया. तो वे दोनों (अर्थात उनके पति) अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ काम न आ सके. और दोनों से कह दिया गया कि आग में दाख़िल हो जाओ, दाख़िल होने वालों के साथ. 11 अल्लाह ईमान वालों के लिए फ़िरऔन की पत्नी की मिसाल प्रस्तुत करता है. जबकि उसने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे और मुझे फ़िरऔन और उसके कर्म से छुटकारा दे. और मुझे छुटकारा दे ज़ालिम

लोगों से. 12 और वह इमरान की बेटी मरियम (की मिसाल भी ईमान वालों के लिए प्रस्तुत करता है,) जिसने अपने सतीत्व की रक्षा की, फिर हमने उसमें अपनी आत्मा फूँक दी. और उसने अपने रब के शब्दों की और किताबों की पुष्टि की. और वह आज्ञाकारी लोगों में से थी.

पारा – 29 सूरह–67. अल–मुल्क

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 बड़ी बरकत वाली है वह ज़ात जिसके हाथ में (समस्त जगत) का राज्य है. उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है. 2 जिसने बनाया मौत और ज़िंदगी को, ताकि वह तुम लोगों को आज़मा कर देखे कि तुममें कौन अच्छा कर्म करने वाला है. वह प्रभुत्वशाली तथा क्षमाशील है.

3 (वह अल्लाह ही है) जिसने ऊपर तले सात आसमान बनाए. तुम कृपावंत की रचना में कोई दोष नहीं पाओगे. फिर नज़र डालो, क्या तुम्हें कोई बिगाड़ दिखायी देता है. 4 फिर बार-बार नज़र डालो, तुम्हारी नज़र विफल होकर, थक-हार कर तुम्हारी ओर पलट आएगी.

5 और हमने (पृथ्वी के) निकटवर्ती आसमान को दीपकों से सजाया है. और हमने उन्हें शैतानों को मार भगाने का साधन बनाया है. और उन शैतानों के लिए हमने दहकती आग की यातना तैयार कर रखी है. 6 और जिन लोगों ने अपने रब को झुठलाया उनके लिए जहन्नम की यातना है. और वह बुरा ठिकाना है. 7 जब जहन्नमी लोग जहन्नम में डाले जाएंगे, तो वे उसके दहाड़ने की (भयंकर) आवाज़ सुनेंगे और वह जोश में उबल रही होगी. 8 ऐसा प्रतीत होगा कि वह क्रोध में फट पड़ेगी. जब उसमें कोई समूह डाला जाएगा, उसके दारोगा उस समूह के लोगों से पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई सचेत करने वाला नहीं आया? 9 वे उत्तर देंगे, हाँ! हमारे पास सचेत करने वाला आया था, फिर हमने उसको झुठला दिया और हमने कहा, अल्लाह ने कुछ भी नहीं उतारा है, तुम तो बस एक बड़ी पथभ्रष्टता में पड़े हुए हो. 10 वे कहेंगे काश, हम सुनते और समझते तो (आज) हम जहन्नम वालों में से न होते. 11 तो (जहन्नम के पात्र ठहरे हुए) वे लोग अपने पापों का स्वीकार करेंगे. फिटकार है जहन्नम वालों पर.

12 जो लोग अपने रब से बिन देखे डरते हैं. उनके लिए माफ़ी है और बड़ा प्रतिफल है. 13 तुम अपनी बात छिपा कर कहो या पुकार कर कहो. वह दिलों तक की बातों को जानता है. 14 क्या वही न जानेगा जिसने सृजन किया है. वह सूक्ष्मदर्शी है और ख़बर रखने वाला है.

15 वही तो है जिसने तुम्हारे लिए धरती को क़ाबू में दे रखा है. तो तुम उसके रास्तों में चलो और उसकी जीविका में से खाओ. उसी के यहाँ (दोबारा जीवित हो) उठना है. 16 क्या तुम उससे निडर हो गए जो आसमान में है कि वह तुम्हें धरती में धँसा दे, फिर ये धरती झकोले खाने लगे? 17 क्या तुम उससे निडर हो गए जो आसमान में है कि वह तुम पर पथराव करने वाली हवा भेज दे? फिर तुम्हें मालूम हो जाएगा कि मेरी चेतावनी कैसी होती है? 18 और उन्होंने झुठलाया जो इनसे पहले थे. तो देख लो कैसी थी (उन झुठलाने वालों पर) मेरी फिटकार?

19 क्या ये लोग अपने ऊपर पक्षियों को नहीं देखते पंख फैलाए हुए और वे उन्हें समेट भी लेते हैं. कृपावंत ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जो उन्हें थामे हुए हो. निस्संदेह वह हर चीज़ को देख रहा है. 20 भला वह कौन है जो तुम्हारी सेना बनकर कृपावंत ख़ुदा के मुक़ाबले में तुम्हारी सहायता करे? इन्कार करने वाले तो बस धोके में पड़े हुए हैं. 21 भला कौन है वह जो तुम्हें जीविका दे यदि अल्लाह अपनी जीविका रोक ले, बल्कि ये लोग विद्रोह (की नीति) आग्रहपूर्वक अपनाए हुए हैं और (सत्य से) मुँह फेर रहे हैं.

22 क्या जो व्यक्ति अपना मुँह औंधा किए हुए चल रहा हो वह अधिक सीधा मार्ग पाने वाला है या वह जो सीधे (सर उठाए हुए) सीधे मार्ग पर चल रहा हो. 23 इनसे कहो कि वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारा सृजन किया और तुम्हें सुनने, देखने और समझने की क्षमता प्रदान की, लेकिन तुम कम ही कृतज्ञ बनते हो. 24 कह दो, वह अल्लाह ही है जिसने धरती पर तुम्हें फैलाया है और तुम उसी की ओर इकट्ठा किए जाओगे.

25 और वे (अर्थात इन्कारी लोग) कहते हैं कि यह वादा (अर्थात क़यामत का वादा) कब पूरा होगा, (बताओ,) यदि तुम सच्चे हो. 26 कहो, इसका ज्ञान तो अल्लाह के पास है, मैं तो बस साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूँ. 27 फिर जब वे उस (वादे) को क़रीब आता देख लेंगे तो उनके चेहरे बिगड़ जाएंगे, जो इन्कार पर अड़े हुए थे. तब उनसे कहा जाएगा, यही है वह चीज़ जिसकी तुम माँग कर रहे थे. 28 इनसे कहो, क्या तुमने कभी यह सोचा भी है कि अल्लाह यदि चाहे तो मुझे और मेरे साथियों को नष्ट कर दे या हम पर कृपा करे. लेकिन सत्य के इन्कारियों को दुखद यातना से कौन बचाएगा? 29 कहो, वह कृपावंत है, हम उस पर ईमान लाए और उसी पर हमने भरोसा किया. तो शीघ्र ही तुम जान लोगे कि स्पष्ट पथभ्रष्टता में कौन है. 30 कहो, बताओ, यदि तुम्हारा पानी नीचे उतर जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिए स्वच्छ पानी ले आए.

सूरह–68. अल–क़लम

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 नून० क़सम है क़लम की और उसकी जो वे लिखते हैं. 2 (पैग़ंबर!) तुम अपने रब की कृपा से दीवाने नहीं हो. 3 निस्संदेह तुम्हारे लिए ऐसा प्रतिफल है जो कभी समाप्त होने वाला नहीं. 4 (पैग़ंबर!) निस्संदेह तुम उत्तम चरित्र पर हो. 5 तो (पैग़ंबर!) शीघ्र ही तुम देखोगे और वे भी देखेंगे. 6 कि तुममें से किसको जुनून था. 7 निस्संदेह तुम्हारा रब उसे भली-भाँति जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया है. और वह उन लोगों को भी जानता है जो सीधे मार्ग पर हैं.

8 तो तुम इन झुठलाने वालों का कहना न मानो. 9 वे चाहते हैं कि कुछ तुम नरम पड़ो और कुछ वे नरम पड़ें. 10 तुम ऐसे व्यक्ति का कहना न मानो जो बहुत क़समें खाने वाला तथा हीन (मानसिकता वाला) हो. 11 जो व्यंग कसता हो, और पीठ पीछे बुराई करते फिरता हो. 12 जो भलाई से रोकता हो और सीमा का उल्लंघन करने वाला हो,

दुराचारी हो. 13 जो पत्थरदिल हो और इसी के साथ अधम भी हो. 14 इस कारण कि वह बहुत माल और संतान वाला है. 15 जब उसे हमारे संदेश पढ़कर सुनाए जाते हैं तो वह कहता है, ये पहले लोगों की कहानियाँ हैं.16 हम शीघ्र ही उसकी नाक पर दाग लगाएंगे.

17 हमने इन (मक्का वालों) को उसी तरह परीक्षा में डाला है. जिस तरह एक बाग़ के मालिकों को परीक्षा में डाला था. जब उन्होंने क़सम खाई कि सुबह सवेरे वे अवश्य ही उस बाग़ के फल तोड़ लेंगे. 18 और उन्होंने इंशाअल्लाह नहीं कहा (अर्थात उन्होंने अपना संकल्प व्यक्त करते हुए यह नहीं कहा कि हम अल्लाह चाहे तो ऐसा कर पाएंगे). 19 तो तुम्हारे रब की ओर से उस बाग़ पर एक बला फिर गयी, जब वे (रात को सो रहे थे.) 20 फिर उसकी ऐसी दशा हो गयी जैसे कटी हुयी फ़सल 21 सुबह उन लोगों ने एक-दूसरे को पुकारा. 22 कि यदि फल तोड़ना है तो अपने खेत पर सवेरे ही पहुँचो. 23 फिर वे चल पड़े और आपस में चुपके-चुपके बातें करते हुए. 24 (उन्होंने कहा) आज बाग़ में कोई मुहताज तुम्हारे पास न आने पाए. 25 और वे (किसी को) कुछ न देने (का फ़ैसला करके) स्वयं को समर्थ समझ कर चले. 26 लेकिन जब (उन्होंने उस उजड़े हुए) बाग़ को देखा तो कहने लगे कि हम रास्ता भूल गए हैं. 27 नहीं, बल्कि हम वंचित हो गए. 28 उनमें से जो बेहतर व्यक्ति था उसने कहा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम लोग (ख़ुदा का) महिमागान क्यों नहीं करते? 29 वे पुकार उठे, पाक है हमारा रब! निस्संदेह हम अत्याचारी थे. 30 फिर वे आपस में एक-दूसरे पर दोषारोपण करने लगे. 31 (अंत में) उन्होंने कहा, अफसोस है हम पर! हम निस्संदेह सीमा का उल्लंघन करने वाले लोग थे. 32 असंभव नहीं कि हमारा रब हमें बदले में इससे अच्छा बाग़ प्रदान करे. हम अपने रब की ओर पलटते हैं. 33 इसी प्रकार आती है यातना और परिणाम की दुनिया की यातना इससे भी बड़ी है. काश, यह लोग जानते.

34 रब के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहने वालों के लिए निस्संदेह उनके रब के पास नेमत भरे बाग़ हैं. 35 क्या हम आज्ञाकारी लोगों का हाल अपराधियों जैसा कर देंगे? 36 तुम लोगों को क्या हो गया है कि तुम कैसे फ़ैसले करते हो? 37 क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम यह पढ़ते हो? 38 क्या उसमें तुम्हारे लिए वही है जिसे तुम पसंद करते हो? 39 या फिर क्या तुमने हमसे क़समें ले रखी हैं जो क़यामत के दिन तक बाक़ी रहने वाली हैं कि तुम्हारे लिए वही कुछ है जो तुम फ़ैसला करो? 40 उनसे पूछो, उनमें से कौन इसकी ज़िम्मेदारी लेता है? 41 या फिर उनके ठहराए हुए कुछ साझीदार हैं? फिर तो चाहिए कि वे अपने उन साझीदारों को ले आएँ, यदि वे सच्चे हैं.

42 जिस दिन हक़ीक़त से पर्दा उठाया जाएगा और लोग सजदे के लिए बुलाए जाएंगे तो वे सजदा न कर सकेंगे. 43 उनकी निगाहें झुकी हुयी होंगी, अपमान उन पर छा रहा होगा. ये जब भले-चंगे थे उस समय उन्हें (सच्चे ख़ुदा को) सजदा करने के लिए बुलाया जाता था (तब ये इन्कार करते थे). 44 तो (पैग़ंबर!) तुम इस कलाम के झुठलाने वालों का मामला मुझ पर छोड़ दो. हम ऐसे लोगों को धीरे-धीरे ऐसे तरीक़े से (विनाश की ओर) ले जाएंगे, कि उन्हें ख़बर भी न होगी. 45 मैं उन्हें ढील दे रहा हूँ. निस्संदेह मेरी चाल बहुत मज़बूत है. 46 क्या तुम उनसे कोई बदला माँग रहे हो कि वे मुआवज़े के बोझ से दबे जा रहे हों. 47 क्या उनके पास परोक्ष का ज्ञान है जिसे व लिख रहे हों? 48 तो (पैग़ंबर!) अपने रब का निर्णय आने तक धैर्य रखो और मछली वाले (यूनुस) की तरह न हो जाओ. जब उसने (अपने रब को) पुकारा था, इस दशा में कि वह ग़म से घुट रहा था.

49 यदि उसके रब की कृपा उसके साथ न होती तो वह निंदित अवस्था में चटियल मैदान में फेंक दिया जाता. 50 अंततः उसके रब ने उसे चुन लिया और उसे सदाचारी लोगों में शामिल कर दिया. 51 जब ये सत्य के इन्कारी लोग इस उपदेश (को अर्थात इस

क़ुरआन को) सुनते हैं तो इस प्रकार तुम्हें देखते हैं कि मानो अपनी दृष्टि से तुम्हारे (क़दम) फिसला देंगे. और वे कहते हैं कि यह अवश्य दीवाना है. 52 हालाँकि यह क़ुरआन सारे संसार वालों के लिए उपदेश है.

सूरह–69. अल–हाक़्क़ा

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 वह होकर रहने वाली 2 क्या है वह होकर रहने वाली? 3 और तुम क्या जानो
वह क्या है होकर रहने वाली? 4 समूद और आद (इन प्राचीन क़ौमों) ने उस खड़खड़ाने
वाली चीज़ को झुठलाया. 5 तो समूद एक भयानक आपदा से नष्ट किए गए. 6 और
आद, तेज़ तूफ़ानी आँधी से नष्ट किए गए. 7 अल्लाह ने उसको उन पर निरंतर सात रात
और आठ दिन तक लगाए रखा. (यदि तुम उस दृश्य को देख पाते) तो तुम देखते कि
वहाँ वे लोग इस प्रकार गिरे हुए पड़े हैं, मानो कि वे खजूरों के खोखले (जर्जर हो चुके)
तने हों. 8 तो क्या तुम्हें उनमें से कोई बचा हुआ दिखायी देता है? 9 फ़िरऔन ने और
उससे पहले के लोगों ने और तलपट हो जाने वाली बस्तियों ने, सब ने अपराध किया.
10 उन्होंने अपने रब के पैग़ंबर की अवज्ञा की, तो उसने (अर्थात उनके रब ने) उनकी
सख़्त पकड़ की. 11 और जब पानी सीमा से बढ़ गया तो हमने तुम्हें नौका में सवार
कराया. 12 (यह इसलिए हुआ,) ताकि इस घटना को तुम्हारे लिए (शिक्षाप्रद) यादगार
बना दें; और याद रखने वाले कान (अर्थात याद रखने वाले लोग) उसे याद रखें.

13 जब सूर में फूँक मार दी जाएगी. 14 और धरती और पहाड़ों को उठाकर एक
ही बार में चूरा-चूरा कर दिया जाएगा. 15 तो उस दिन घटित हो जाएगी, वह घटित होने
वाली (अर्थात क़यामत). 16 और आसमान फट जाएगा, तो वह उस दिन वह क्षीण हो
जाएगा. 17 और फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे और तेरे रब के सिंहासन को उस दिन
आठ फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाए हुए होंगे. 18 उस दिन तुम लोग पेश किए जाओगे और

तुम्हारी कोई बात छिपी हुयी न होगी. 19 तो जिस व्यक्ति को उसका कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा तो वह कहेगा, लो मेरा कर्म-पत्र पढ़ो. 20 मैं समझता ही था कि मेरे सामने मेरा हिसाब आने वाला है. 21 फिर वह मनपसंद ख़ुशियों में होगा. 22 ऊँचे बाग़ में 23 जिसके फलों के गुच्छे झुके हुए होंगे. 24 खाओ और पिओ मज़े से, अपने उन कर्मों के बदले में जो तुमने बीते दिनों में किए हैं. 25 और जिस व्यक्ति का कर्म-पत्र उसके बाएँ हाथ में दिया जाएगा, तो वह कहेगा काश मेरा कर्म-पत्र मुझे न दिया जाता. 26 और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है. 27 काश मेरी मौत (मुझे हमेशा के लिए) समाप्त कर देने वाली होती. 28 (वह आगे कहेगा,) मेरी संपत्ती मेरे काम न आयी.29 मेरा प्रभुत्व समाप्त हो गया.

30 (आदेश होगा,) उस व्यक्ति को पकड़ो और उसकी गरदन में तौक़ डाल दो. 31 फिर उसे जहन्नम में झोंक दो. 32 फिर एक ज़ंजीर में, जिसकी लंबाई सत्तर हाथ है, उसको जकड़ दो. 33 यह न महिमावान अल्लाह पर ईमान लाता था 34 और न मुहताज को खाना खिलाने पर उभारता था. 35 तो आज यहाँ उसके साथ कोई सहानुभूति रखने वाला नहीं. 36 और घावों के धोवन के सिवा उसके लिए कोई खाना नहीं. 37 उसे अपराधियों के सिवा कोई नहीं खाएगा.

38 तो नहीं! मैं क़सम खाता हूँ उन चीज़ों की जिन्हें तुम देखते हो. 39 और उनकी जिन्हें तुम नहीं देखते. 40 निस्संदेह यह एक सम्मानित पैग़ंबर की लायी हुयी वाणी है. 41 यह क़ुरआन किसी शायर का कलाम नहीं, तुम लोग बहुत ही कम ईमान लाते हो. 42 यह किसी काहिन (अर्थात भविष्य-वक्ता) की वाणी नहीं, तुम बहुत कम चिंतन करते हो. 43 यह 'क़ुरआन' संसार के स्वामी की ओर से उतारा हुआ है. 44 यदि पैग़ंबर कोई बात गढ़कर हमसे उसका संबंध जोड़ता. 45 तो हम उसका दाहिना हाथ पकड़ते. 46 और हम उसकी गरदन की रग काट डालते. 47 फिर तुममें से कोई हमें ऐसा

करने से रोकने वाला न होता. 48 निस्संदेह यह क़ुरआन (ख़ुदा के प्रति) सचेत रहने वालों के लिए नसीहत है. 49 हम जानते हैं तुममें इसके झुठलाने वाले हैं. 50 निस्संदेह यह इन्कार करने वालों के लिए पछतावे का कारक है. 51 और यह निश्चित सत्य है. 52 तो (पैग़ंबर!) तुम अपने महान रब के नाम का महिमागान करो.

सूरह–70. अल–मआरिज

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 माँगने वाले ने यातना माँगी, जो आकर रहेगी. 2 सत्य के इन्कारियों के लिए, कोई उसे टालने वाला नहीं. 3 वह उस अल्लाह की ओर से आएगी, जो ऊँचे दर्जों वाला है. 4 उसकी ओर फ़रिश्ते और जिब्रील चढ़कर जाते हैं, एक ऐसे दिन में जो पचास हज़ार वर्ष के बराबर है. 5 तो (पैग़ंबर!) तुम सब्र से काम लो, उत्तम सब्र से. 6 वे उसे दूर देखते हैं. 7 लेकिन हम उसे निकट देख रहे हैं. 8 जिस दिन आसमान पिघली हुयी धातू जैसा हो जाएगा. 9 और पहाड़ धुनके हुए ऊन जैसे हो जाएंगे. 10 कोई मित्र किसी मित्र को न पूछेगा. 11 हालाँकि वे एक-दूसरे को दिखाए जाएंगे. अपराधी चाहेगा कि उस दिन की यातना से बचने के लिए अपनी संतान को. 12 अपनी बीवी को, अपने भाई को. 13 और अपने उस परिवार को जो उसे आश्रय प्रदान करता था. 14 और (यहाँ तक चाहेगा कि) सारे धरती वालों को बदले में देकर अपने आपको बचा ले.

15 कदापि नहीं, वह तो भड़कती हुयी आग की लपट होगी. 16 जो चमड़ी उतार देगी. 17 वह प्रत्येक उस व्यक्ती को अपनी ओर बुलाएगी जिसने सत्य से मुँह मोड़ा और पीठ फेरी. 18 माल जमा किया और सैंत कर रखा.

19 निस्संदेह इंसान अधीर पैदा हुआ है. 20 जब उसे कष्ट पहुँचता है तो वह घबरा उठता है. 21 लेकिन जब उसे सम्पन्नता प्राप्त होती है तो वह कृपणता का परिचय देता है. 22 लेकिन वे लोग (इसमें अपवाद हैं), जो नमाज़ पढ़ने वाले हैं. 23 जो अपनी नमाज़

को नियमित रूप से अदा करते हैं. 24 जिनके मालों में एक निश्चित अधिकार है. 25 उसका (अधिकार) जो माँगने वाला है और जो वंचित है. 26 जो न्याय के दिन पर विश्वास रखते हैं. 27 और जो अपने रब की ओर से दी जाने वाली यातना से काँपते रहते हैं. 28 निस्संदेह उनके रब की ओर से दी जाने वाली यातना से किसी को निडर नहीं होना चाहिए. 29 और जो अपनी शर्मगाहों की रक्षा करते हैं. 30 सिवाय अपनी पत्नियों या अपनी बांदियों से (विवाह के उपरांत), तो (उनसे वैवाहिक) संबंध रखने पर उन पर कोई दोष नहीं. 31 फिर जो व्यक्ति इसके सिवा कुछ और चाहे तो वही लोग सीमा का उल्लंघन करने वाले हैं. 32 जो अपने पास रखी गयी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा को निभाते हैं. 33 और जो अपनी गवाहियों पर अटल रहते हैं 34 और जो अपनी नमाज़ की रक्षा करते हैं. 35 यही लोग जन्नतों में सम्मानपूर्वक रहेंगे.

36 (पैग़ंबर!) इन सत्य के इन्कारियों को क्या हो गया है कि वे तुम्हारी ओर दौड़े चले आ रहे हैं, 37 दाएँ से और बाएँ से, समूह दर समूह. 38 क्या इन में से हर व्यक्ति यह लालसा रखता है कि (बस यूँ ही) नेमत भरी जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा? 39 कदापि नहीं, हमने जिस चीज़ से उनका सृजन किया है वे उसे जानते हैं.

40 तो नहीं, मैं क़सम खाता हूँ सूर्योदय तथा सूर्यास्त के स्थानों की, हमें इसकी सामर्थ्य प्राप्त है 41 कि इनकी जगह इनसे बेहतर लोग ले आएँ और हम विवश नहीं हैं.
42 तो (पैग़ंबर!) उन्हें छोड़ो कि वे व्यर्थ बातों में पड़े रहें और खेल-तमाशे में व्यस्त रहें, यहाँ तक कि अपने उस दिन को पहुँच जाएँ जिसका उनसे वादा किया जा रहा है. 43 जिस दिन वे क़ब्रों से निकल कर इस तरह दौड़ पड़ेंगे, जैसे किसी निशान की ओर दौड़े जा रहे हों. 44 उनकी निगाहें झुकी हुयी होंगी, अपमान उन पर छा रहा होगा. यह है वह दिन जिसका उनसे वादा किया जाता रहा है.

सूरह–71. नूह

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर पैग़ंबर बनाकर भेजा कि अपनी क़ौम के लोगों को सचेत कर दो इससे पहले कि उन पर कोई दुखदायी यातना आ जाए, 2 नूह ने (अपनी क़ौम से) कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुम्हारे लिए साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूँ. 3 तुम अल्लाह की उपासना करो और उसका डर रखो और मेरा आज्ञापालन करो. 4 अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा और तुम्हें एक निश्चित अवधी तक मुहलत देगा. निस्संदेह जब अल्लाह का निर्धारित किया हुआ समय आ जाता है, फिर वह टाला नहीं जाता, काश कि तुम जानते! 5 नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब! मैंने अपनी क़ौम को रात व दिन पुकारा. 6 (नूह आगे कहते हैं) लेकिन (ऐ मेरे रब!) मेरी पुकार ने उनकी दूरी में ही वृद्धि की. 7 और मैंने जब भी उन्हें बुलाया, ताकि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो उन्होंने अपने कानों में अपनी उंगलियाँ डाल लीं और अपने कपड़ों से स्वयं को ढाँक लिया और वे हठ पर अड़ गए और बड़ा घमंड किया. 8 फिर मैंने उन्हें खुल्लमखुल्ला पुकारा. 9 फिर मैंने उन तक खुले रूप में संदेश पहुँचाया और उन्हें चुपके-चुपके भी समझाया.

10 मैंने कहा, अपने रब से माफ़ी माँगो, निस्संदेह वह बड़ा माफ़ करने वाला है. 11 वह तुम पर आसमान से ख़ूब वर्षा करेगा (अर्थात लाभकारी वर्षा करेगा). 12 और तुम्हारी संपत्ती और संतान में वृद्धि करेगा और तुम्हारे लिए बाग़ पैदा करेगा और तुम्हारे लिए नहरें जारी कर देगा. 13 तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की महानता की अनुभूती नहीं करते. 14 हालाँकि उसी ने तुम्हें तरह-तरह की (अवस्थाओं में से गुज़ारते हुए) बनाया है. 15 क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने किस प्रकार सात आसमान ऊपर तले बनाए. 16 और उनमें चाँद को प्रकाश और सूरज को दीपक बनाया. 17 और अल्लाह ने तुम्हें धरती से अद्भुत रूप से उगाया. 18 फिर वह तुम्हें धरती में वापस ले

जाएगा. और फिर उससे तुम्हें बाहर ले आएगा. 19 और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को हमवार (समतल) बनाया है, 20 ताकि तुम उसके खुले रास्तों में चलो.

21 नूह ने कहा, ऐ मेरे रब! उन्होंने मेरा कहा न माना और ऐसे व्यक्ति का अनुसरण किया जिसके धन और संतान ने उसके घाटे में ही वृद्धि की. 22 और उन्होंने बहुत बड़ा छल-कपट का. जाल फैला रखा है. 23 और उन्होंने कहा, तुम अपने उपास्यों को कदापि न छोड़ना. और तुम न छोड़ना 'वद' को और न 'सुवाअ' को और न 'यग़ूस' को और न 'यऊक़' को और न 'नस्र' को. 24 (नूह ने आगे कहा, ऐ प्रभु!) इन्होंने बहुत से लोगों को पथभ्रष्ट किया है तो तू अब इन अत्याचारियों की पथभ्रष्टता में ही वृद्धि कर. 25 (फिर) वे अपने पापों के कारण डुबो दिए गए, फिर वे आग में डाल दिए गए. तो उन्होंने अपने लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई सहायक नहीं पाया.

26 नूह ने कहा, ऐ मेरे रब! इन इन्कार करने वालों में से कोई धरती पर बसने वाला न छोड़. 27 यदि तू उन्हें छोड़ देगा तो ये तेरे बंदों को गुमराह कर देंगे और उनकी नसल से जो भी पैदा होगा वह दुराचारी तथा इन्कारी ही होगा. 28 ऐ मेरे रब मुझे माफ़ कर दे और मेरे माँ-बाप को भी माफ़ कर दे और हर उस व्यक्ति को भी माफ़ कर दे जो मेरे घर में ईमान वाला बनकर दाख़िल हो. और सारे ईमान वाले पुरुषों तथा सारी ईमान वाली औरतों को भी माफ़ कर दे. और अत्याचारियों के लिए विनाश के सिवा किसी चीज़ में वृद्धि न कर.

सूरह–72. अल–जिन्न

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 (पैग़ंबर!) कह दो, मेरी ओर यह आसमानी संदेश भेजा गया है कि जिन्नों के एक समूह ने क़ुरआन को सुना तो उन्होंने (दूसरे जिन्नों से) कहा, हमने एक अजीब क़ुरआन सुना है.
2 जो सीधे रास्ते की ओर मार्गदर्शन करता है.(जिन्नों ने आगे कहा,) हम क़ुरआन पर ईमान लाए और हम अपने रब के साथ किसी को साझीदार नहीं बनाएंगे.

3 और हमारे रब की महानता (उसकी महती) बहुत उच्च है. उसने किसी को पत्नी या संतान नहीं बनाया है. 4 और यह कि हममें से नादान अल्लाह के संबंध से ऐसी बातें करता रहा है जिनका सत्य से कोई संबंध नहीं. 5 और (उन जिन्नों ने आगे कहा,) यह कि हम समझते थे कि इंसान और जिन्न ख़ुदा के संबंध से झूठ नहीं बोल सकते. 6 और यह कि इंसानों में कुछ ऐसे थे जो जिन्नों में से कुछ की शरण माँगा करते थे. इस प्रकार उन्होंने जिन्नों का घमंड और अधिक बढ़ा दिया. 7 और यह कि इंसानों ने भी वही गुमान किया जैसा तुम (जिन्नों) का गुमान था कि अल्लाह किसी को (मृत्यु-पश्चात) कदापि नहीं उठाएगा.

8 और यह कि हमने आसमान का निरीक्षण किया तो हमने पाया कि वह सख़्त पहरेदारों और उल्काओं से भरा पड़ा है. 9 और यह कि हम (पहले) उसके कुछ स्थानों में (फ़रिश्तों के लोक की बातें) सुनने के लिए बैठा करते थे. लेकिन अब जो कोई सुनना चाहता है तो वह अपने लिए घात में लगा हुआ उल्का पाता है. 10 और यह कि हम नहीं जानते कि उन लोगों के साथ जो धरती पर हैं बुराई का इरादा किया गया है या उनके रब ने उनके लिए (भलाई और) मार्गदर्शन का इरादा किया है. 11 और यह कि हम (जिन्नों) में से कुछ नेक हैं और कुछ और तरह के हैं. हम विभिन्न मार्गों पर हैं. 12 और यह कि हमने यह समझ लिया कि हम धरती में अल्लाह को विवश नहीं कर सकते और न भागकर उसे हरा सकते हैं. 13 और (उन जिन्नों ने आगे कहा) यह कि हमने मार्गदर्शन की बात सुनी तो उस पर ईमान ले आए. तो जो व्यक्ति अपने रब पर ईमान लाएगा तो उसे न तो किसी हक़ के मारे जाने का भय होगा और न किसी ज़ुल्म का. 14 और यह कि हममें से कुछ मुस्लिम (अर्थात आज्ञाकारी) हैं और कुछ सन्मार्ग से हटे हुए हैं. तो जिन्होंने आज्ञापालन का मार्ग (अर्थात इस्लाम) ग्रहण कर लिया तो उन्होंने भलाई का (वास्तविक) मार्ग पा लिया. 15 और जो लोग सन्मार्ग से हटे हुए हैं वे जहन्नम का ईंधन होंगे.

16 (पैग़ंबर! कहो कि मुझ पर यह संदेश उतारा गया है) कि यदि वे सीधे मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चलते तो हम उन्हें ख़ूब सिंचित करते. 17 ताकि उस नेमत में उनकी परीक्षा लें. और जो व्यक्ति अपने रब की याद से मुँह मोड़ेगा, उसका रब उसे कठोर यातना में डाल देगा. 18 और यह कि मसजिदें अल्लाह के लिए हैं, तो तुम अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो. 19 और यह कि जब अल्लाह का बंदा उसे पुकारने के लिए खड़ा हुआ तो लोग उस पर टूट पड़ने के लिए तैयार हो गए. 20 (पैग़ंबर! कह दो) मैं तो बस अपने रब ही को पुकारता हूँ और मैं उसके साथ किसी को साझी नहीं ठहराता. 21 (पैग़ंबर!) कह दो, मैं तो तुम लोगों के लिए न किसी हानि का अधिकार रखता हूँ और न किसी भलाई का (अर्थात मेरे बस में न तुम्हारा भला करना है और न बुरा करना). 22 (पैग़ंबर!) कह दो, मुझे अल्लाह से कोई बचा नहीं सकता और न मैं उसके सिवा कोई शरण लेने की जगह पा सकता हूँ. 23 लेकिन (मेरा कर्तव्य) अल्लाह की ओर से पहुँचा देना है और उसके संदेशों को अदा कर देना है. जो व्यक्ति अल्लाह और उसके पैग़ंबर की अवज्ञा करेगा तो उसके लिए जहन्नम की आग है. ऐसे लोग उसमें हमेशा रहेंगे. 24 जब वे उसे देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है, तो इन्हें मालूम हो जाएगा कि किसके सहायक कमज़ोर हैं और किसका जत्था कम संख्या वाला है. 25 (पैग़ंबर!) कह दो, मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जा रहा है, वह निकट है या मेरे रब ने उसके लिए लंबी अवधी निश्चित कर रखी है. 26 परोक्ष का जानने वाला वही है. वह अपने परोक्ष को किसी पर प्रकट नहीं करता, 27 सिवाय उस पैग़ंबर के जिसे उसने (परोक्ष का ज्ञान देने के लिए) पसंद किया हो. तो वह उसके आगे और पीछे रक्षा करने वाले लगा देता है. 28 ताकि अल्लाह जान ले कि उन्होंने अपने रब के संदेश पहुँचा दिए हैं. और जो कुछ उनके पास है उसे अल्लाह घेरे में लिए हुए है और हर चीज़ को उसने गिन रखा है.

सूरह–73. अल–मुज़्ज़म्मिल

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 ऐ कपड़े में लिपटे हुए (पैग़ंबर)! 2 रात को (नमाज़ में) खड़े रहा करो, रात का
थोड़ा हिस्सा. 3 (रात की इबादत को) आधी रात या उससे कुछ कम कर लो. 4 या
उससे कुछ अधिक कर लो. और (पैग़ंबर!) तुम क़ुरआन को ठहर-ठहर कर पढ़ो. 5
(पैग़ंबर!) निश्चय ही हम तुम पर एक भारी बात डालने वाले हैं.

6 निस्संदेह रात में उठना कष्टदायी है, लेकिन (तब) बात ठीक निकलती है. 7
निश्चय ही दिन में तुम्हारी बहुत सी व्यस्तताएँ होती हैं. 8 अपने रब का स्मरण करो और
सबसे कटकर उसी के हो जाओ. 9 वह पूर्व और पश्चिम का मालिक है उसके सिवा
कोई ख़ुदा नहीं. इसलिए तुम उसी को अपना संरक्षक बना लो. 10 (पैग़ंबर!) लोग जो
कुछ कहते हैं उस पर धैर्य रखो और भली रीति से उनसे अलग हो जाओ. 11 तुम
झुठलाने वाले सुखसंपन्न लोगों का मामला मुझ पर छोड़ दो और उन्हें थोड़ी मुहलत दे दो.

12 हमारे पास (उनके लिए) बेड़ियाँ हैं और भड़कती हुयी आग. 13 और गले में
फँसने वाला खाना और दर्दनाक सज़ा. 14 (यह उस दिन होगा) जब ज़मीन और पहाड़
काँप उठेंगे और पहाड़ों (का हाल ऐसा होगा) जैसे रेत के ढेर हैं जो बिखरे जा रहे हैं.

15 हमने तुम्हारी ओर एक पैग़ंबर भेजा है तुम पर गवाह बनाकर, जिस प्रकार हमने
फ़िरऔन की ओर एक पैग़ंबर भेजा था. 16 फिर फ़िरऔन ने पैग़ंबर का कहा न माना तो
हमने उसकी पकड़ की, सख़्त पकड़. 17 यदि तुम मानने से इन्कार करोगे तो उस दिन
(की यातना) से कैसे बच सकोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा. 18 जिस दिन आसमान
फट पड़ेगा. अल्लाह का वादा तो पूरा होकर रहना है. 19 यह (क़ुरआन) एक उपदेश-
नामा है. तो जो चाहे अपने रब की ओर रास्ता अपना ले.

20 (पैग़ंबर!) निस्संदेह तुम्हारा रब जानता है कि तुम (कभी) लगभग दो तिहाई रात या (कभी) आधी रात या (कभी) एक तिहाई रात (इबादत में) खड़े होते हो और तुम्हारे साथियों में से भी एक समूह (जो इसका अनुसरण करता है). और अल्लाह ही रात और दिन का पैमाना ठहराता है. उसे मालूम था कि तुम लोग (समयों की) गिनती ठीक-ठीक नहीं कर सकते, इसलिए उसने तुम पर कृपा की. अब जितना क़ुरआन आसानी से पढ़ सकते हो पढ़ लिया करो. उसे मालूम था कि तुममें से कुछ बीमार भी होंगे, और कुछ दूसरे लोग अल्लाह के अनुग्रह को खोजते हुए धरती पर यात्रा करेंगे. और दूसरे ऐसे लोग भी होंगे जो अल्लाह के मार्ग में लड़ेंगे. तो उसमें से जितना आसानी से हो सके पढ़ लिया करो. और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात देते रहो और अल्लाह को क़र्ज़ दो, अच्छा क़र्ज़. और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहाँ मौजूद पाओगे. वही ज़्यादा बेहतर है और उसका बदला बहुत बड़ा है. अल्लाह से क्षमा माँगते रहो. निस्संदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील एवं दयावान है.

सूरह–74. अल–मुद्दस्सिर

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 ऐ कपड़े में लिपटे हुए (पैग़ंबर)! 2 उठो और (लोगों को) सावधान करो. 3 और
अपने रब की बड़ाई बयान करो. 4 और अपने कपड़े पाक-साफ़ रखो. 5 और गंदगी से
दूर रहो (अर्थात हर प्रकार के नकारात्मक विचारों से भी स्वयं को पाक रखो). 6 और
ऐसा न करो कि उपकार करो और बहुत बदला चाहो. 7 और अपने रब के लिए सब्र
करो. 8 और जब सूर फूँका जाएगा, 9 तो वह दिन बड़ा ही कठिन दिन होगा. 10 वह
सत्य के इन्कारियों पर आसान नहीं होगा. 11 छोड़ दो मुझे और उस (इन्कारी) व्यक्ति
को अकेला, जिसे मैंने सृजित किया. 12 और उसको बहुत सा माल दिया 13 और
उसके पास हाज़िर रहने वाले बेटे दिए. 14 और हर प्रकार के साधन उसके लिए उपलब्ध

कर दिए. 15 फिर वह लालच रखता है कि मैं उसे और अधिक दूँ. 16 कदापि नहीं, वह
हमारे संदेशों का विरोधी है. 17 शीघ्र ही मैं उसे एक कठिन चढ़ाई चढ़ाऊँगा.

18 उसने सोचा और कुछ बात बनायी. 19 उसका नाश हो, उसने कैसी बात
बनायी. 20 फिर उसका नाश हो, उसने कैसी बात बनायी. 21 फिर उसने (लोगों की
ओर) देखा. 22 फिर उसने माथा सुकड़ाया और मुँह बनाया. 23 फिर पीठ फेरी और
घमंड किया. 24 अंततः बोला, यह कुछ नहीं है, मगर एक जादू है जो पहले से चला आ
रहा है. 25 यह तो मात्र इंसानी कलाम है.

26 मैं शीघ्र ही उस (इन्कारी) को जहन्नम में डाल दूँगा. 27 और तुम क्या जानो
कि क्या है वह जहन्नम? 28 न बाक़ी रहने देगी और न छोड़ेगी. 29 खाल को झुलसा देने
वाली. 30 उस पर उन्नीस फ़रिश्ते हैं. 31 हमने फ़रिश्तों को ही जहन्नम के रक्षक बनाया
है. और हमने उनकी संख्या को इन्कार करने वालों के लिए आज़माइश बना दिया है, ताकि विश्वास प्राप्त करें वे लोग जो पूर्ववर्ती किताब (को मानने) वाले हैं. और ईमान वाले अपने ईमान को बढ़ाएँ और पूर्ववर्ती किताब वाले और ईमान वाले किसी संदेह में न रहें. और (यह परीक्षा इसलिए है, कि) जिन के दिलों में रोग है (अर्थात पाखंडी) और इन्कारी कहें कि इस (वर्णन) से अल्लाह का क्या तात्पर्य है. इस प्रकार अल्लाह भटकाता है जिसे चाहता है और मार्ग दिखाता है जिसे चाहता है. और तुम्हारे रब की सेनाओं को स्वयं उसके सिवा कोई नहीं जानता. यह क़ुरआन तो बस मनुष्य के लिए उपदेश है.

32 कदापि नहीं, क़सम है चाँद की; 33 और रात की, जब वह जाने लगे. 34
और सुबह की जब वह रोशन होती है. 35 निस्संदेह जहन्नम बड़ी चीज़ों में से एक है. 36
चेतावनी है इंसान के लिए 37 तुममें से हर उस व्यक्ति के लिए जो आगे बढ़ना या पीछे
हटना चाहे. 38 प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के बदले में गिरवी है (अर्थात हर इंसान अपनी
कमाई के साथ बँधा हुआ है). 39 (हर व्यक्ति विफल होने वाला है) सिवाय दाएँ बाज़ू

वालों के. 40 जो बागों में होंगे, वे पूछते होंगे 41 अपराधियों से, 42 तुम्हें क्या चीज़ जहन्नम में ले गयी? 43 वे कहेंगे, हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे. 44 और हम मुहताज को खाना नहीं खिलाते थे. 45 और हम व्यर्थ बहस करने वालों के साथ व्यर्थ बहस करते थे. 46 और हम न्याय के दिन को झुठलाते थे. 47 यहाँ तक कि वह अटल चीज़ (अर्थात क़यामत) हम पर आ गयी. 48 तो तब सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश उनके कुछ काम न आएगी.

49 आख़िर इन लोगों को क्या हो गया है कि वे उपदेश से मुँह मोड़ रहे हैं, 50 मानो कि वे जंगली गधे हैं. 51 जो शेर से (डर कर) भागे जा रहे हैं. 52 नहीं, बल्कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि उसे (आसमान से) खुली किताबें दी जाएँ. 53 कदापि नहीं, बल्कि वे परिणाम की दुनिया का भय नहीं रखते. 54 कदापि नहीं (अर्थात उनकी कोई माँग कदापि पूरी होने वाली नहीं), यह तो बस एक उपदेश-नामा है. 55 तो जिसका जी चाहे उससे उपदेश ग्रहण करे. 56 और वे उससे उपदेश ग्रहण नहीं करेंगे, मगर यह कि अल्लाह चाहे. वही इस योग्य है कि उसके प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) रहा जाए. और वह इस योग्य है कि क्षमा कर दे.

सूरह–75. अल–क़ियामह

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 नहीं, मैं क़सम खाता हूँ क़यामत के दिन की. 2 और नहीं, मैं क़सम खाता हूँ मलामत करने वाली आत्मा की. 3 क्या इंसान समझता है कि हम उसकी हड्डियों को एकत्र न करेंगे? 4 क्यों नहीं? हम तो इस पर समर्थ हैं कि उसकी उंगलियों की पोर-पोर तक ठीक कर दें. 5 लेकिन इंसान चाहता है कि आगे भी बुरे कर्म करता रहे (और उसे किसी को हिसाब देना न पड़े). 6 इंसान पूछता है कि आख़िर क़यामत का दिन कब आएगा? 7 (वह तब आएगा) जब आँखें चौंधिया जाएँगी. 8 और चाँद बे-नूर

(प्रकाशहीन) हो जाएगा. 9 सूरज और चाँद एकत्र कर दिए जाएंगे. 10 उस दिन (सत्य
का इन्कारी) इंसान कहेगा, कहाँ भागकर जाऊँ? 11 बिल्कुल नहीं, कहीं शरण नहीं. 12
उस दिन तेरे रब ही की ओर जाकर ठहरना है. 13 उस दिन इंसान को बताया जाएगा कि
उसने क्या आगे भेजा है और क्या पीछे छोड़ा है. 14 बल्कि इंसान अपने आपको ख़ूब
जानता है, 15 चाहे वह कितने ही बहाने पेश करे.

16 (पैग़ंबर!) तुम इस (क़ुरआन) को जल्दी-जल्दी पाने के लिए अपनी ज़बान
को न चलाओ. 17 हमारे ऊपर है उसका एकत्र करना और उसको पढ़कर सुनाना. 18
तो जब हम उसको सुनाएँ तो तुम उस सुनाने का अनुसरण करो. 19 उसे स्पष्ट कर देना भी
हमारे ज़िम्मे है.

20 कदापि नहीं, तुम लोग शीघ्र मिलने वाली चीज़ को चाहते हो. 21 और तुम
उसे छोड़ देते हो जो देर में मिलती है (और जो हमेशा रहने वाली है). 22 कुछ चेहरे उस
दिन प्रफुल्लित होंगे. 23 अपने रब की ओर देख रहे होंगे. 24 और कुछ चेहरे उस दिन
उदास होंगे. 25 सोच रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला मामला होने वाला है.
26 कदापि नहीं (अर्थात तुम जैसा सोच रहे हो वैसा नहीं), जब जान हलक़ तक पहुँच
जाएगी, 27 (कहा जाएगा,) है कोई झाड़-फूँक करने वाला? 28 और आदमी समझ
लेगा कि यह दुनिया से जुदाई का समय है. 29 और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी.
30 (ऐ इंसान!) वह दिन होगा तेरे रब की ओर जाने का. 31 लेकिन उसने न सच माना
और न नमाज़ पढ़ी. 32 बल्कि झुठलाया और मुँह मोड़ा. 33 फिर अकड़ता हुआ अपने
लोगों की ओर चल दिया. 34 अफ़सोस है तुझ पर, अफ़सोस है. 35 फिर अफ़सोस है
तुझ पर, अफ़सोस है. 36 क्या इंसान समझता है कि बस वह यूँ ही छोड़ दिया जाएगा?
37 क्या इंसान केवल टपकाए हुए वीर्य का एक बूँद न था. 38 फिर वह लोथड़ा बना,
फिर अल्लाह ने उस(के शरीर) को रूप दिया और उसके अंग ठीक किए. 39 फिर उसकी

दो क़िस्में बनायीं —— पुरुष और स्त्री. 40 क्या उस (सृजनकर्ता) को इसकी सामर्थ्य प्राप्त नहीं है कि मरने वालों को फिर से ज़िंदा कर दे?

सूरह–76. अद–दह्र

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क्या इंसान पर कोई ऐसा समय (नहीं) बीता कि वह ऐसी चीज़ नहीं था जिसका उल्लेख किया जाए? 2 हमने इंसान का सृजन एक मिश्रित बूंद से किया है. हम उसे उलटते-पलटते रहे. फिर हमने उसे सुनने और देखने वाला बना दिया. 3 हमने उसे रास्ता दिखा दिया, (अब) चाहे तो वह कृतज्ञ बने या अकृतज्ञ.

4 हमने सत्य के इन्कारियों के लिए ज़ंजीरें, तौक़ और भड़कती हुयी आग तैयार कर रखी है. 5 (जन्नत में) नेक लोग ऐसे जाम से पिएंगे जिसमें काफ़ूर का मिश्रण होगा. 6 यह (जन्नत में) एक स्रोत है जिससे अल्लाह के बंदे पिएंगे; और (जहाँ चाहेंगे) उसकी शाखाएँ निकाल लेंगे. 7 वे अनिवार्य कृत्यों को पूरा करते हैं. और उस दिन के संबंध से सचेत रहते हैं, जिसकी आफत हर ओर फैली हुयी होगी. 8 और अल्लाह की मुहब्बत में मुहताज और अनाथ और क़ैदी को खाना खिलाते हैं. 9 (वे उनसे कहते हैं,) हम तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह के लिए खिला रहे हैं. हम तुमसे न कोई बदला चाहते है और न कृतज्ञता. 10 हम अपने रब की ओर से एक कठोर और दुखदायी दिन का डर रखते हैं. 11 तो अल्लाह उन्हें उस दिन की सख़्ती से बचा लेगा. और उन्हें ताज़गी और प्रसन्नता प्रदान करेगा. 12 और (वह उन्हें) उनके सब्र के बदले में जन्नत तथा रेशमी वस्त्र प्रदान करेगा. 13 (जन्नती लोग जन्नत में) ऊँची मसनदों पर तकिये लगाए बैठे होंगे उसमें उनका न तो गर्मी से सामना होगा और न ठंडी से. 14 और उस बाग़ के साए जन्नतियों पर झुके हुए होंगे और उसके फलों के गुच्छे उनकी पहुँच में होंगे. 15 और उनके सामने चाँदी के

बरतन और शीशे के प्याले घूम रहे होंगे. 16 शीशे भी वे जो चाँदी की क़िस्म के होंगे. जो ठीक पैमाने से भरे हुए होंगे.

17 जन्नतियों को जन्नत में एक पेय पिलाया जाएगा, जिसमें सोंठ का मिश्रण होगा. 18 यह जन्नत का एक चश्मा होगा जिसका नाम सलसबील है. 19 जन्नतियों की सेवा में ऐसे बच्चे दौड़ते फिर रहे होंगे जो हमेशा बच्चे ही रहेंगे (अर्थात वे कभी वृद्ध नहीं होंगे). तुम उन्हें देखो तो समझो कि मोती हैं जो बिखेर दिए गए हैं. 20 और तुम (जन्नत में) जिधर भी निगाह डालोगे नेमतें ही नेमतें देखोगे और तुम वहाँ विशाल साम्राज्य देखोगे. 21 उनके ऊपर बारिक रेशम के हरे कपड़े होंगे और मोटे रेशम के कपड़े भी. उन्हें चाँदी के कंगन पहनाए जाएंगे और उनका रब उन्हें पाकीज़ा पेय पिलाएगा. 22 (जन्नतियों से कहा जाएगा) यह तुम्हारा बदला है और तुम्हारे प्रयासों की क़द्र की गयी.

23 (पैग़ंबर!) हमने तुम पर क़ुरआन थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है. 24 तो तुम अपने रब के हुक्म पर सब्र करो (अर्थात रब का काम करते हुए आने वाली कठिनाइयों पर सब्र करो). और उनमें से किसी दुराचारी या सत्य के इन्कारी की बात न मानो. 25 और सुबह व शाम अपने रब के नाम का स्मरण करो. 26 और रात को भी उसे सजदा करो और रात के बड़े हिस्से में उसका महिमागान करते रहो. 27 यह (इन्कारी) लोग शीघ्र मिलने वाली चीज़ को चाहते हैं और इन्होंने अपने पीछे एक भारी दिन को छोड़ रखा है. 28 हम ही ने उनकी रचना की और उनके जोड़-बंद सुदृढ़ किए. और जब हम चाहेंगे उन्हीं जैसे लोग उनके स्थान पर बदल लाएंगे. 29 यह क़ुरआन एक उपदेश-नामा है, तो जो व्यक्ति चाहे अपने रब की ओर मार्ग अपना ले. 30 और तुम नहीं चाह सकते सिवाय इसके कि अल्लाह चाहे. निस्संदेह अल्लाह ज्ञानवान एवं विवेकवान है. 31 अल्लाह जिसे चाहता है अपनी दयालुता में दाख़िल करता है. अत्याचारियों के लिए उसने दर्दनाक यातना तैयार कर रखी है.

सूरह–77. अल–मुरसलात

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़सम है हवाओं की जो छोड़ दी जाती हैं 2 फिर वह तूफ़ानी चाल से चलती हैं
3 और बादलों को उठाकर फैलाती हैं 4 फिर मामला करती हैं अलग-अलग. 5 फिर
पेश करती है उपदेश, 6 इल्ज़ाम उतारने या चेतावनी देने के लिए. 7 जो वादा तुमसे किया
जा रहा निस्संदेह घटित होने वाला है.

8 जब तारे माँद पड़ जाएंगे (अर्थात प्रकाशहीन हो जाएंगे). 9 और जब आसमान
फट जाएगा. 10 और जब पहाड़ चूर्ण-विचूर्ण कर दिए जाएंगे. 11 और जब पैग़ंबर
निर्धारित समय पर एकत्र किए जाएंगे. 12 (यह सारी चीज़ें) किस दिन के लिए टाली गयी
हैं? 13 फ़ैसले के दिन के लिए. 14 और तुम्हें क्या ख़बर कि वह फ़ैसले का दिन क्या
है? 15 विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए. 16 क्या हमने पहले (झुठलाने वाले)
लोगों को नष्ट नहीं किया? 17 फिर हम उन्हीं के पीछे बाद वालों को भी लगाते रहे. 18
हम अपराधियों के साथ ऐसा ही करते हैं. 19 विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए.

20 क्या हमने तुम्हारा सृजन तुच्छ पानी से नहीं किया? 21 फिर उसको एक
सुरक्षित स्थान पर रखा. 22 एक निर्धारित अवधी तक. 23 फिर हमने एक पैमाना
ठहराया, हम कैसा अच्छा पैमाना ठहराने वाले हैं. 24 विनाश है उस दिन झुठलाने वालों
के लिए.

25 क्या हमने धरती को समेट कर रखने वाली नहीं बनाया? 26 ज़िंदा लोगों के
लिए भी और मुर्दों के लिए भी. 27 और हमने उसमें ऊँचे पहाड़ बनाए और तुम्हें मीठा
पानी पिलाया. 28 उस दिन विनाश है झुठलाने वालों के लिए.

29 (उस दिन झुठलाने वालों से कहा जाएगा,) चलो, उस चीज़ की ओर जिसको
तुम झुठलाते थे. 30 चलो तीन शाखाओं वाली छाया की ओर. 31 जो छाया न ठंडक

पहुँचाने वाली है और न आग की लपट से बचाने वाली. 32 वह चिनगारियाँ फेंकती है महल जैसी ऊँची. 33 जो (उछलती हुयी ऐसी लगती हैं) मानो कि वे पीले ऊँट हैं. 34 विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए. 35 यह वह दिन है जिसमें लोग बोल न सकेंगे. 36 और न (झुठलाने वालों) को कोई अनुमति होगी कि वे बहाने बनाएं. 37 विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए. 38 (कहा जाएगा,) यह फ़ैसले का दिन है. हमने तुम्हें और तुमसे पहले वालों को (अर्थात सारे इंसानों को) इकट्ठा कर लिया है. 39 अब यदि कोई दाँव है तो मेरे विरुद्ध चलाकर देखो. 40 विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए. 41 (ख़ुदा के प्रति) डर रखने वाले लोग छाँवों और स्रोतों (वाली जन्नत) में होंगे. 42 वहाँ वे फलों के बीच होंगे, जो वे चाहें 43 (जन्नतियों से कहा जाएगा,) खाओ और पिओ मज़े के साथ उन कामों के बदले में जो तुम करते रहे हो. 44 हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं. 45 विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए. 46 (ऐ सत्य को झुठलाने वालो!) खा लो और मज़े कर लो थोड़े दिन. निस्संदेह तुम लोग अपराधी हो. 47 विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए. 48 और जब उनसे कहा जाता है कि (अल्लाह के आगे) झुको तो वे झुकते नहीं. 49 विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए. 50 अब इस क़ुरआन के बाद वह किस बात पर ईमान लाएंगे.?

सूरह–78. अन–नबा

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 लोग किस चीज़ के बारे में पूछ रहे हैं. 2 उस बड़ी ख़बर के बारे में, 3 जिसमें वे मतभेद कर रहे हैं. 4 कदापि नहीं, शीघ्र ही वे जान लेंगे. 5 (फिर सुन लो,) कदापि नहीं (जैसा वे सोच रहे हैं), वे शीघ्र ही जान लेंगे. 6 क्या हमने धरती को फ़र्श नहीं बनाया है? 7 और पहाड़ों को मेखें नहीं बनाया? 8 और तुम्हें हमने बनाया जोड़े-जोड़े, 9 और नींद को बनाया तुम्हारी थकान दूर करने के लिए, 10 और हमने रात को बनाया ढक लेने

वाली. 11 और दिन को हमने जीविका (प्राप्ति) के लिए बनाया. 12 और हमने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए. 13 और हमने उसमें एक जगमगाता हुआ दीपक रख दिया. 14 और हमने बादलों से लगातार बारिश बरसायी. 15 ताकि हम उसके माध्यम से उगाएँ अनाज और सब्जी. 16 और घने बाग़. 17 निस्संदेह फ़ैसले का दिन एक नियत समय है.

18 जिस दिन सूर फूँका जाएगा, फिर तुम समूह के समूह निकल आओगे. 19 और आसमान खोल दिया जाएगा तो उसमें दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे. 20 और पहाड़ चला दिए जाएंगे तो वे रेत (की तरह) होकर रह जाएंगे. 21 निस्संदेह जहन्नम एक घात-स्थल है. 22 विद्रोहियों का ठिकाना. 23 उसमें वे मुद्दतों पड़े रहेंगे. 24 उसमें न किसी ठंडक को चखेंगे और न किसी (पीने-योग्य) चीज़ को पीएंगे, 25 सिवाय खौलते हुए पानी और पीप के. 26 यह (उनकी करतूतों का) भरपूर बदला होगा. 27 वे किसी प्रकार के हिसाब की आशा ही न रखते थे. 28 और वे हमारे संदेशों को झुठलाते ही रहे. 29 और हमने हर चीज़ गिन-गिनकर लिख रखी है.
30 अब चखो मज़ा, हम तुम्हारे लिए यातना के सिवा किसी और चीज़ में बढ़ोत्तरी नहीं करेंगे.

31 निस्संदेह डरने वालों (अर्थात ख़ुदा के प्रति सचेत एवं उत्तरदायी बने रहने वालों) के लिए सफलता है. 32 बाग़ और अंगूर. 33 और नवयुवतियाँ समान आयु वाली 34 और छलकते हुए जाम 35 वहाँ वे बेहूदा और झूठी बात नहीं सुनेंगे. 36 बदला तुम्हारे रब की ओर से, हिसाब के अनुसार प्रतिफल (उनके सत्कर्मों का). 37 उस कृपावंत ख़ुदा की ओर से जो आसमान और धरती और जो कुछ उनके बीच में है उसका रब है. उसके सामने बात करना उनके बस में नहीं होगा.

38 जिस दिन जिब्रील और (अन्य) फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध खड़े होंगे. कोई न बोलेगा, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे कृपावंत ख़ुदा अनुमति दे और जो ठीक बात कहे. 39 वह दिन सत्य है. अब जिसका जी चाहे अपने रब के पास ठिकाना बना ले. 40 हमने तुम लोगों को उस यातना से डरा दिया है जो क़रीब आ लगी है. जिस दिन आदमी वह सब कुछ देख लेगा जो उसके हाथों ने आगे भेजा है. और (वह व्यक्ति) जिसने इन्कार किया था, पुकार उठेगा, काश मैं मिट्टी होता.

सूरह–79. अन–नाज़िआत

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़सम है जड़ से उखाड़ फेंकने वाली हवाओं की. 2 क़सम है उनकी जो नर्मी के साथ चलती हैं. 3 क़सम है तैरने वाले बादलों की. 4 एक-दूसरे से आगे बढ़ने वालों की 5 फिर मामले का प्रबंध करने वालों की. 6 जिस दिन हिला देने वाली हिला डालेगी. 7 उसके पीछे एक और आने वाली चीज़ आएगी. 8 कितने दिल उस दिन काँप रहे होंगे 9 उनकी आँखें झुक रही होंगी. 10 वह कहते हैं, क्या हम पहली स्थिती में फिर वापस होंगे, 11 जब हम सड़ी-गली हड्डियाँ बन चुके होंगे? 12 उन्होंने कहा, यह वापसी तो बड़े घाटे की होगी. 13 वह तो बस (एक ज़ोर की) डाँट होगी. 14 फिर यकायक वे एक मैदान में उपस्थित होंगे.

15 क्या तुम्हें मूसा की बात पहुँची है? 16 जब उसके रब ने उसे तुवा की पवित्र घाटी में पुकारा, 17 कि फ़िरऔन के पास जाओ, वह विद्रोही हो चुका है. 18 और उससे पूछो, क्या तू चाहता है कि तू सुधर जाए. 19 और मैं तुझे तेरे रब का मार्ग दिखाऊँ कि तू उससे डरे? 20 तो मूसा ने उसे बड़ी निशानी दिखायी. 21 लेकिन उसने झुठला दिया और न माना. 22 फिर वह पलटा और प्रयास करने लगा 23 फिर उसने लोगों को इकट्ठा किया और पुकार कर.

24 कहा, मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूँ. 25 तो अल्लाह ने उसको शाश्वत दुनिया और वर्तमान दुनिया की यातना में पकड़ लिया. 26 निस्संदेह इसमें शिक्षा है हर उस व्यक्ति के लिए जो डरे.

27 क्या तुम्हारा बनाना ज़्यादा कठिन काम है या आसमान का बनाना, अल्लाह ने उसको बनाया. 28 उसकी छत को ऊँचा किया, फिर उसका संतुलन स्थापित क्या. 29 और उसकी रात को अँधेरी बनाया और उसके दिन को प्रकाशमान किया. 30 उसके बाद उसने धरती को फैलाया. 31 उससे उसका पानी और चारा निकाला. 32 और उसने पहाड़ों को स्थापित किया. 33 (यह जीवनदायी व्यवस्था) तुम्हारे लिए और तुम्हारे चौपायों की जीविका के लिए. 34 फिर जब वह बड़ी आपदा आएगी (अर्थात क़यामत). 35 जिस दिन मनुष्य अपने किए को याद करेगा.

36 और देखने वालों के सामने जहन्नम प्रकट कर दी जाएगी. 37 तो जिसने विद्रोह किया था 38 और दुनिया की ज़िंदगी को प्राथमिकता दी थी. 39 तो जहन्नम उसका ठिकाना होगा. 40 और जिसने अपने रब के सामने खड़े होने का भय रखा था और अपने मन को बुरी इच्छाओं से बाज़ रखा था. 41 तो जन्नत उसका ठिकाना होगी. 42 (पैग़ंबर!) वे तुमसे क़यामत के संबंध से पूछते हैं कि वह कब घटित होगी? 43 उसका (समय) बताने से तुम्हारा क्या संबंध? 44 उसका ज्ञान तो तुम्हारे रब पर समाप्त है (अर्थात यह मामला सर्वथा तुम्हारे रब से संबंधित है). 45 (पैग़ंबर!) तुम तो मात्र डराने वाले हो उस व्यक्ति को जो उससे डरे. 46 जिस दिन यह लोग उसको देख लेंगे तो (उन्हें लगेगा कि) मानो वे (दुनिया में) एक शाम या उसकी सुबह से ज़्यादा नहीं ठहरे.

सूरह–80. अबस

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 उसने (अर्थात पैग़ंबर ने) त्योरी चढ़ाई और मुँह फेर लिया. 2 इस बात पर कि
वह अँधा व्यक्ति पैग़ंबर के पास आया. 3 और (पैग़ंबर!) तुम्हें क्या ख़बर कि शायद वह
सुधर जाए 4 या वह उपदेश को सुने तो उपदेश उसके काम आए. 5 (पैग़ंबर!) जो
व्यक्ति बेपरवाही बरतता है. 6 तुम उसकी ओर तो ध्यान देते हो. 7 जबकि तुम पर कोई
ज़िम्मेदारी नहीं है, यदि वह न सुधरें. 8 और जो व्यक्ति तुम्हारे पास दौड़ा चला आता है 9
और वह (अल्लाह से) डर रहा होता है. 10 तो तुम उससे बेपरवाही बरतते हो. 11 कदापि
नहीं (अर्थात ऐसा कदापि ठीक नहीं), निस्संदेह यह क़ुरआन तो एक उपदेश है, 12 तो
जो चाहे उपदेश ग्रहण करे. 13 यह ऐसे सहिफ़ों में अंकित है जो आदरणीय हैं. 14 जो
उच्च और सर्वथा पवित्र हैं. 15 लिखने वालों के हाथों में 16 जो सम्मानित और नेक हैं.

17 बुरा हो मनुष्य का, वह कैसा कृतघ्न है. 18 अल्लाह ने उसकी किस चीज़ से
रचना की है? 19 एक बूँद से उसकी रचना की है. फिर उसके लिए एक (संतुलित)
पैमाना ठहराया. 20 फिर उसके लिए रास्ता आसान कर दिया. 21 फिर उसे मृत्यु दी और
क़ब्र में ले गया. 22 फिर जब वह चाहेगा तो उसे दोबारा उठा खड़ा कर देगा.

23 कदापि नहीं, उसने वह (कर्तव्य) पूरा नहीं किया जिसका अल्लाह ने उसको आदेश
दिया था. 24 इंसान को चाहिए कि वह अपने खाने को चिंतनपूर्वक देखे. 25 हमने पानी
बरसाया अच्छी तरह, 26 फिर हमने धरती को विशेष रूप से फाड़ा. 27 फिर उगाए
उसमें अनाज 28 और अंगूर और सब्जियाँ 29 और ज़ैतून और खजूर 30 और घने बाग़
31 और फल और हरियाली, 32 तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए जीविका
के रूप में. 33 तो जब वह कानों को बहरा कर देने वाला शोर उठेगा.

34 जिस दिन इंसान भागेगा अपने भाई से, 35 और अपनी माँ से और अपने बाप से,
36 और अपनी पत्नी से और अपनी संतान से. 37 उनमें से हर व्यक्ति को उस दिन
(स्वयं की) ऐसी चिंता लगी होगी जो उसको दूसरों से बेपरवाह कर देगी.
38 कुछ चेहरे उस दिन रोशन होंगे, 39 हँस रहे होंगे और प्रसन्न हो रहे होंगे. 40 और
कुछ चेहरे ऐसे होंगे उस दिन जिन पर धूल पड़ी होगी. 41 उन पर कलौंस छायी हुयी
होगी. 42 यही लोग इन्कारी तथा दुराचारी हैं.

सूरह–81. अत–तकवीर

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 जब सूरज लपेट दिया जाएगा. 2 और तारे प्रकाशहीन हो जाएंगे. 3 और जब
पहाड़ चलाए जाएंगे. 4 और जब दस महिने की गर्भवती ऊँटनियाँ छुटी फिरेंगी. 5 और
जब जंगली जानवर इकट्ठे हो जाएंगे. 6 और जब समुद्र भड़का दिए जाएंगे. 7 जब लोग
क़िस्म-क़िस्म कर दिए जाएंगे. 8 उस दिन जीवित दफ़नायी गयी लड़की से पूछा जाएगा
9 कि वह किस क़सूर में मार डाल गयी. 10 और जब कर्म-पत्र खोले जाएंगे 11 और
जब आसमान खुल जाएगा. 12 और जब जहन्नम की आग भड़कायी जाएगी. 13 और
जन्नत को क़रीब लाया जाएगा. 14 हर व्यक्ति जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है.

15 तो नहीं, मैं क़सम खाता हूँ पीछे हटने वाले की, 16 जो चलते-चलते जा
छुपते हैं (अर्थात सितारों की क़सम). 17 और क़सम है रात की जो जाने लगे 18 और
सुबह की जब वह आने लगे. 19 निस्संदेह यह क़ुरआन एक आदरणीय संदेशवाहक
(फ़रिश्ते) की लायी हुयी वाणी है. 20 जो सामर्थ्यशाली है और (सृष्टि-) सिंहासन के
स्वामी अल्लाह के यहाँ उच्च स्थान वाला है. 21 वहाँ (अर्थात फ़रिश्तों के बीच) उसकी
बात मानी जाती है. वह विश्वसनीय है. 22 (ऐ मक्कावासियों!) तुम्हारा साथी दीवाना नहीं
हैं. 23 और निश्चय ही उसने उस संदेशवाहक फ़रिश्ते को रोशन क्षितिज पर देखा है. 24

वह परोक्ष (के इस ज्ञान को लोगों तक पहुँचाने) के मामले में कंजूस नहीं है. 25 और यह क़ुरआन धिक्कारे हुए शैतान की वाणी नहीं है. 26 फिर तुम लोग किधर (बहके) चले जा रहे हो? 27 यह क़ुरआन तो सारी दुनिया वालों के लिए उपदेश है. 28 तुममें से हर उस आदमी के लिए जो सीधे रास्ते पर चलना चाहता हो. 29 और तुम नहीं चाह सकते, सिवा इसके कि समस्त सृष्टि का रब अल्लाह चाहे (अर्थात केवल तुम्हारा चाहना परिणाम के लिए पर्याप्त नहीं, उसके लिए अल्लाह का चाहना भी आवश्यक है.).

सूरह–82. अल–इनफ़ितार

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 जब आसमान फट जाएगा. 2 और तारे बिखर जाएंगे. 3 और जब समुद्र बह पड़ेंगे. 4 और जब क़ब्रें खोल दी जाएँगी. 5 तब हर इंसान जान लेगा कि उसने आगे क्या भेजा और पीछे क्या छोड़ा 6 ऐ इंसान! तुझे किस चीज़ ने अपने कृपावंत रब के संबंध से धोके में डाल रखा है. 7 (उस रब के संबंध से) जिसने तेरा सृजन किया, फिर तेरे अंगों को ठीक किया. फिर तुझे संतुलित बनाया.8 और जिस रूप में चाहा तुझे आकार दे दिया.

9 कदापि नहीं (अर्थात धोके में पड़ने का कोई वास्तविक कारण नहीं), बल्कि तुम न्याय के दिन को झुठलाते हो. 10 हालाँकि तुम पर निगरानी करने वाले नियुक्त हैं. 11 सम्मानित लिखने वाले. 12 वे जानते हैं जो कुछ तुम करते हो. 13 निस्संदेह नेक लोग नेमतों के बीच होंगे. 14 और निस्संदेह अपराधी लोग जहन्नम में होंगे. 15 न्याय के दिन वे उसमें डाले जाएंगे. 16 और वे उससे बच रहने वाले नहीं. 17 और तुम्हें क्या पता कि न्याय का दिन क्या है? 18 फिर तुम्हें क्या मालूम की वह न्याय का दिन क्या है? 19 उस दिन कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के लिए कुछ न कर सकेगा. और उस दिन मामला अल्लाह ही के अधिकार में होगा.

सूरह–83. अल–मुतफ़्फ़िफ़ीन

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 विनाश है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिए. 2 जो लोगों से नाप कर लेते
हैं तो पूरा-पूरा लेते हैं. 3 और जब उन्हें नापकर या तोलकर देते हैं तो घटाकर देते हैं. 4
क्या यह लोग नहीं समझते कि वे (मृत्यु-पश्चात) जीवित करके उठाए जाने वाले हैं, 5
एक भारी दिन में. 6 जिस दिन सारे लोग समस्त सृष्टि के रब के सामने खड़े होंगे.

7 कदापि नहीं (अर्थात अपराधी यूँ ही छोड़ नहीं दिए जाएंगे), निस्संदेह अपराधियों
का कर्म-पत्र सिज्जीन में होगा. 8 और तुम क्या जानों कि सिज्जीन क्या है? 9 वह एक
लिखित ब्योरा है. 10 विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए, 11 जो न्याय के दिन
को झुठलाते हैं. 12 और न्याय के दिन को वही झुठलाता है जो हद से गुज़र जाने वाला
है, पापी है. 13 जब उसे हमारे संदेश सुनाए जाते हैं तो वह (उल्लंघनकारी) कहता है कि
यह पहले लोगों की कहानियाँ हैं. 14 कदापि नहीं, बल्कि इन लोगों के दिलों पर इनके
(बुरे) कर्मों का ज़ंग चढ़ गया है. 15 कदापि नहीं, बल्कि उस दिन ये (बुरे लोग) अपने
रब से ओट में रखे जाएंगे (अर्थात अपने रब के दर्शन से वंचित रखे जाएंगे). 16 फिर वे
जहन्नम में प्रवेश करेंगे. 17 फिर कहा जाएगा कि यही वह चीज़ है जिसको तुम झुठलाते
थे.

18 कदापि नहीं, निस्संदेह नेक लोगों का कर्म-पत्र इल्लिय्यीन में है. 19 और तुम
क्या जानो इल्लिय्यीन क्या है? 20 वह लिखा हुआ ब्योरा है. 21 जिसकी देख भाल
(ख़ुदा के) सामीप्य प्राप्त फ़रिश्ते करते हैं. 22 निस्संदेह नेक लोग नेमतों के बीच में होंगे.
23 वे तख़्तों पर बैठे देखते होंगे. 24 उनके चेहरों पर तुम ख़ुशहाली का तेज महसूस
करोगे. 25 उन्हें शुद्ध मुहरबंद शराब (अर्थात शरबत) पिलायी जाएगी, 26 जिस पर मुश्क
की मुहर लगी होगी. यह है वह चीज़ (अर्थात नेमतों से भरी जन्नत) जिसकी अभिलाषा

करने वालों को अभिलाषा करनी चाहिए.27 और उस शराब में तसनीम का मिश्रण होगा. 28 वह एक ऐसा स्रोत है जिससे सामीप्य प्राप्त लोग पीएंगे. 29 निस्संदेह जो अपराधी लोग थे, वे ईमान वालों पर हँसते थे. 30 जब वे उनके सामने से गुज़रते तो वे आपस में आँखों से इशारे करते थे. 31 और जब वे अपने लोगों में लौटते, तो दिल्लगी करते हुए लौटते. 32 और जब उन्हें देखते तो कहते कि यह बहके हुए लोग हैं. 33 जबकि वे उन पर निगराँ बनाकर नहीं भेजे गए थे. 34 तो आज ईमान वाले सत्य के इन्कारियों पर हँसते होंगे, 35 वे तख़्तों पर बैठे देख रहे होंगे. 36 (कहते होंगे,) क्या मिल गया उसका बदला सत्य के इन्कारियों को, जो वे करते रहे थे?

सूरह–84. अल–इनशिक़ाक़

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 जब आसमान फट जाएगा. 2 और वह अपने रब का आदेश सुन लेगा और वह इसी के पात्र है. 3 और जब धरती फैला दी जाएगी. 4 वह अपने भीतर की चीज़ों को बाहर फेंक कर खाली हो जाएगी. 5 और वह अपने रब का आदेश सुन लेगी, और वह इसी के पात्र है. 6 ऐ इंसान! तू अपने रब की ओर खिंचा चला जा रहा है. फिर तू उससे मिलने वाला है. 7 (जब वह ख़ुदा के पास पहुँचेगा तब) जिसे उसका कर्म-पत्र दाहिने हाथ में दिया जाएगा. 8 उससे आसान हिसाब लिया जाएगा. 9 और वह अपने लोगों के पास ख़ुश-ख़ुश आएगा. 10 और जिसका कर्म-पत्र उसकी पीठ पीछे से दिया जाएगा. 11 वह मौत को पुकारेगा.12 और जहन्नम में दाख़िल होगा. 13 वह अपने लोगों में ख़ुश-ख़ुश रहता था (और परिणाम के दिन के संबंध से बे-फ़िक्र रहा करता था). 14 उसने समझ रखा था कि उसे (ख़ुदा की ओर) लौटना नहीं है. 15 क्यों नहीं? उसका रब उसे देख रहा था.

16 तो नहीं, मैं क़सम खाता हूँ शाम की लालीमा की 17 और रात की और उन चीज़ों की जिन्हें रात समेट लेती है. 18 और चाँद की, जब वह पूरा हो जाए (अर्थात पूर्णमासी चाँद हो जाए). 19 कि तुम्हें अवश्य एक दशा के बाद दूसरी दशा पर पहुँचना है. 20 तो इन्हें क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते? 21 और जब उन्हें क़ुरआन पढ़कर सुनाया जाता है तो सजदे में नहीं गिरते.

22 बल्कि (वास्तविकता यह है कि) इन्कारी लोग सत्य को झूठ बता रहे हैं. 23 अल्लाह जानता है जो कुछ ये लोग (अपने कर्म-पत्र में) इकट्ठा कर रहे हैं. 24 (पैग़ंबर!) उन्हें कष्टदायक यातना की शुभ-सूचना दे दो. 25 लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके लिए कभी न समाप्त होने वाला प्रतिफल है.

सूरह–85. अल–बुरूज

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़सम है बुर्जों वाले आसमान की. 2 और क़सम है वादा किए हुए दिन की. 3 और क़सम है देखने वाले की और देखी जाने वाली चीज़ की 4 कि नष्ट हुए खाई वाले. 5 जिसमें भड़कते हुए ईंधन की आग थी. 6 जबकि वे उस गढ़े के किनारे पर बैठे हुए थे. 7 और जो कुछ वे ईमान लाने वालों के साथ कर रहे थे, वे उसे देख रहे थे. 8 और उन ईमान वालों से उनकी शत्रुता इसके सिवा किसी कारण से न थी कि वे ईमान लाए उस अल्लाह पर जो प्रभुत्वशाली एवं प्रशंसनीय है. 9 जो आसमानों और ज़मीन के साम्राज्य का मालिक है. और अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है. 10 जिन लोगों ने ईमान वाले पुरुषों तथा ईमान वाली औरतों को प्रताड़ित किया, फिर पश्चात्ताप नहीं किया, तो उनके लिए जहन्नम की यातना है. और उनके लिए यातना है भड़कती आग की. 11 निस्संदेह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, यही है बड़ी सफलता.

12 निस्संदेह तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है. 13 वही पहली बार सृजन करता है, वही उसकी पुनरावृत्ती करेगा. 14 और वह क्षमा करने वाला है और मुहब्बत करने वाला है. 15 वह उच्च सिंहासन का स्वामी है. 16 जो कुछ चाहे कर डालने वाला. 17 क्या तुम्हें सेनाओं की ख़बर पहुँची है. 18 फ़िरऔन और समूद (की सेनाओं) की (अर्थात उनके उद्दंडता के अंजाम की ख़बर). 19 लेकिन यह इन्कारी लोग सत्य को झूठ बताने पर तुले हुए हैं. 20 हालाँकि अल्लाह ने उन्हें घेरे में ले रखा है, उनके आगे से और उनके पीछे से (अर्थात हर ओर से). 21 (उनके नकारने से सत्य पर आँच नहीं आ सकती,) बल्कि यह तो गौरवशाली क़ुरआन है. 22 लौहे-महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में अंकित है.

सूरह–86. अत–तारिक़

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़सम है आसमान की और रात को प्रकट होने वाले की. 2 और तुम क्या जानो कि वह रात को प्रकट होने वाला क्या है. 3 चमकता हुआ तारा. 4 कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसके ऊपर निरीक्षक न हो. 5 तो इंसान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से सृजित किया गया है. 6 वह एक उछलते हुए पानी से सृजित किया गया है. 7 जो निकलता है पीठ और फसलियों के बीच में से. 8 निस्संदेह अल्लाह (उसे) दोबारा सृजित करने की सामर्थ्य रखता है. 9 जिस दिन छिपी हुयी चीज़ें परखी जाएँगी. 10 उस दिन इंसान के पास न कोई शक्ति होगी और न कोई सहायक. 11 क़सम है उलट-फेर करने वाले आसमान की (अर्थात बारिश बरसाने वाले आसमान की) 12 और (वनस्पतियों के उगते समय) फट जाने वाली धरती की. 13 निस्संदेह यह दो-टूक बात है. 14 यह कोई हँसी मज़ाक नहीं है. 15 (पैग़ंबर) वे (मक्का के इन्कारी) चाल चलने में लगे हुए हैं. 16 और मैं भी चाल चलने में लगा हुआ हूँ. 17 तो (पैग़ंबर!) इन सत्य के इन्कारियों को मुहलत दे दो, थोडी देर की मुहलत.

सूरह–87. अल–आला

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 (पैग़ंबर!) अपने सर्वोच्च रब के नाम का महिमागान करो. 2 जिसने सृजन किया,
फिर (हर चीज़ को) संतुलित किया. 3 जिसने (सब कुछ) निर्धारित कर लिया, फिर मार्ग
बताया. 4 और जिसने वनस्पतियाँ (अर्थात पेड़-पौधे) उगाए. 5 फिर उसे काला कूड़ा-
करकट बना दिया. 6 (पैग़ंबर!) हम तुम्हें (क़ुरआन) पढ़वाएंगे, फिर तुम नहीं भूलोगे. 7
सिवा उसके जो अल्लाह चाहे. वह जानता है प्रत्यक्ष को भी और उसको भी जो कुछ छिपा
है. 8 और हम तुम्हें ले चलेंगे आसान मार्ग पर. 9 तो तुम उपदेश देते रहो, यदि उपदेश
देना लाभप्रद हो. 10 जो आदमी (ख़ुदा के प्रति) सचेत है, वह उपदेश ग्रहण कर लेगा.
11 लेकिन उससे कतराएगा वही जो अत्यंत दुर्भाग्य वाला होगा. 12 वह बड़ी आग में
पड़ेगा. 13 फिर उसमें न तो मरेगा और न जिएगा. 14 सफल हो गया वह जिसने अपने
आपको पाक किया. 15 (वह सफल हुआ) जिसने अपने रब के नाम का स्मरण किया
और नमाज़ अदा की. 16 बल्कि तुम (क्षणभंगूर) सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते
हो. 17 हालाँकि मृत्यु-पश्चात शाश्वत जीवन बेहतर है और हमेशा बाक़ी रहने वाला है.
18 यही बात पूर्ववर्ती आसमानी ग्रंथों में भी थी. 19 मूसा और इब्राहीम के ग्रंथों में भी.

सूरह–88. अल–ग़ाशियह

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क्या तुम्हें उस छा जाने वाले की ख़बर पहुँची है? 2 उस दिन कुछ चेहरे भयभीत
होंगे. 3 कठिन परिश्रम करने वाले, थके हारे. 4 वे दहकती हुयी आग में पड़ेंगे. 5 खौलते
हुए स्रोत का पानी उन्हें पीने के लिए दिया जाएगा. 6 उनके लिए काँटों वाले झाड़ के
सिवा और कोई खाना न होगा. 7 जो न (शरीर को) पुष्ट करेगा और न भूख मिटाएगा. 8
उस दिन (दूसरे) कुछ चेहरे खिले हुए होंगे. 9 अपनी कोशिशों पर ख़ुश होंगे (अर्थात जो

काम तथा कोशिश वे कर आए होंगे उस पर ख़ुश होंगे). 10 उच्च श्रेणी की जन्नत में होंगे. 11 वे उसमें कोई व्यर्थ बात नहीं सुनेंगे. 12 उसमें बहते हुए स्रोत होंगे. 13 उसमें ऊँचे-ऊँचे तख़्त होंगे बिछे हुए 14 और वहाँ आबख़ोरे सामने रखे हुए होंगे. 15 और बराबर बिछे हुए गद्दे. 16 और हर ओर क़ालीनें बिछी होंगी. 17 क्या तुम ऊँट को नहीं देखते कि वह कैसे बनाया गया है? 18 और आसमान को कि वह कैसा ऊँचा उठाया गया है? 19 और पहाड़ों को कि वे किस तरह जमाए गए? 20 और धरती को कि वह किस तरह बिछायी गयी? 21 तो (पैग़ंबर!) उपदेश करते रहो, तुम तो मात्र उपदेश करने वाले हों. 22 तुम उन पर कोई दारोगा नहीं हो. 23 लेकिन जो व्यक्ति मुँह मोड़ेगा और इन्कार करेगा. 24 तो अल्लाह उसको बड़ी सज़ा देगा. 25 हमारी ही ओर है उनकी वापसी. 26 फिर हमारे ही ज़िम्मे है उनका हिसाब लेना.

सूरह–89. अल–फ़ज्र

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़सम है फ़ज्र (उषाकाल) की. 2 और दस रातों की. 3 और सम और विषम की (अर्थात जो सम है और जो विषम है उसकी). 4 और रात की जब वह चलने लगे. 5 क्या इसमें पर्याप्त गवाही (नहीं) जो सोचते हैं उनके लिए? 6 क्या तुमने नहीं देखा, तुम्हारे रब ने आद के साथ क्या मामला किया? 7 स्तंभों वाले इरम के साथ. 8 जिनके जैसी कोई क़ौम (दुनिया के) देशों में पैदा नहीं की गयी थी? 9 और समूद के साथ जिन्होंने घाटी में चट्टानें तराशी थीं, 10 और मेखों वाले फ़िरऔन के साथ? 11 ये वे लोग थे जिन्होंने (दुनिया के) भूभागों में विद्रोह किया था. 12 और उनमें बहुत उपद्रव मचाया था. 13 तो तुम्हारे रब ने उन पर यातना का कोड़ा बरसाया. 14 निस्संदेह तुम्हारा रब घात लगाए रहता है (अर्थात अपराधियों की उचित समय पर पकड़ करने के लिए तैयार रहता है). 15 इंसान का हाल यह है कि जब उसका रब उसकी परीक्षा लेता है और उसको सम्मान

और नेमत प्रदान करता है, तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे सम्मान दिया. 16 लेकिन जब वह उसकी (दूसरी तरह से) परीक्षा लेता है और उसकी जीविका उस पर तंग कर देता है, तो वह कहने लगता है. कि मेरे रब ने मुझे अपमानित कर दिया. 17 कदापि नहीं (अर्थात तुम जैसा सोचते हो वैसा नहीं है), बल्कि तुम अनाथ के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार नहीं करते. 18 और तुम मुहताज को खाना खिलाने पर एक-दूसरे को नहीं उभारते. 19 और तुम विरासत को समेटकर खा जाते हो. 20 और माल की मुहब्बत में बुरी तरह गिरफ़्तार हो. 21 कदापि नहीं (अर्थात तुम जैसा सोचते हो वैसा नहीं है), जब धरती को तोड़ कर चूर्ण-विचूर्ण कर दिया जाएगा. 22 और तुम्हारा रब आएगा और फ़रिश्ते आएंगे पंक्ति-पंक्ति होकर. 23 उस दिन जहन्नम सामने लायी जाएगी. उस दिन इंसान को समझ आएगी, लेकिन उस समय समझने का क्या फ़ायदा! 24 वह कहेगा, काश मैं अपने जीवन में कुछ आगे भेजता. 25 फिर उस दिन अल्लाह जो सज़ा देगा वैसी सज़ा देने वाला कोई नहीं. 26 उस दिन वह (अपराधियों को) ऐसे जकड़ेगा जैसा कोई नहीं जकड़ सकता. 27 (इसके विपरीत नेक इंसान से कहा जाएगा) ऐ संतुष्ट आत्मा! 28 चल अपने रब की ओर, तू उससे राज़ी, वह तुझसे राज़ी. 29 और शामिल हो मेरे बंदों में 30 और दाख़िल हो मेरी जन्नत में.

सूरह–90. अल–बलद

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 नहीं, मैं क़सम खाता हूँ इस शहर की (अर्थात मक्का की). 2 और तुम इस शहर में रह रहे हो. 3 और क़सम है बाप की और उसकी संतान की. 4 निश्चय ही हमने इंसान को कष्ट में घिरा हुआ सृजित किया है.

5 क्या इंसान समझता है कि उस पर किसी का कोई नियंत्रण नहीं? 6 वह कहता है कि मैंने बहुत सा माल खर्च कर दिया. 7 क्या वह समझता है कि किसी ने उसे नहीं देखा? 8

क्या हमने उसे दो आँखें नहीं दीं? 9 इसी तरह एक ज़बान और दो होंठ? 10 हमने इंसान को दोनों मार्ग बता दिए. 11 लेकिन वह घाटी पर नहीं चढ़ा. 12 और तुम क्या जानो कि क्या है वह घाटी. 13 किसी गरदन को छुड़ाना (अर्थात दास को इंसानी दास्यता से आज़ाद करना). 14 और भूखे को खाना खिलाना. 15 किसी निकटवर्ती अनाथ को 16 या दुर्दशाग्रस्त मुहताज को 17 फिर यह कि वह उन लोगों में से हो जो ईमान लाए और उन्होंने एक-दूसरे को सब्र की और एक-दूसरे से दयालुता (पूर्ण व्यवहार) करने की ताकीद की. 18 यही लोग हैं दाएँ बाज़ू वाले (सौभाग्यशाली). 19 लेकिन जिन लोगों ने हमारे संदेशों को मानने से इन्कार किया वे बाएँ बाज़ू वाले (अर्थात दुर्भाग्य वाले हैं). 20 उन पर आग छाई हुई होगी.

सूरह–91. अश–शम्स

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़सम है सूरज की और उसके चढ़ते तेज की. 2 और क़सम है चाँद की जब वह सूरज के पीछे आता है. 3 और दिन की जब वह उसे प्रकट कर दे. 4 और रात की जब वह उसे छिपाए. 5 और आसमान की जैसा उसे बनाया. 6 और धरती की और जैसा उसे फैलाया. 7 और उस व्यक्ति की, जैसा कि उसे संवारा. 8 फिर उसको समझ दी बुराई तथा भलाई में अंतर करने की. 9 सफल हुआ जिसने उसको पाक रखा. 10 और विफल हुआ जिसने उसको दूषित किया. 11 क़ौमे-समूद ने अपनी विद्रोही (नीति) के चलते झुठलाया. 12 जब उस क़ौम का सबसे ज़्यादा अभागा आदमी उठ खड़ा हुआ. 13 तो अल्लाह के पैग़ंबर ने उनसे कहा, कि (ख़बरदार!) अल्लाह की ऊँटनी (को हाथ न लगाना) और उसके पानी पीने की बारी के संबंध से सचेत हो जाओ. 14 तो उन्होंने उसे झुठला दिया. और उस ऊँटनी को मार डाला. फिर उनके रब ने उनके पाप के कारण उन पर विनाश उतारा. और उस बस्ती वालों को समतल कर दिया (अर्थात उनकी बस्ती को मिटा दिया). 15 और उसे उसके परिणाम का कोई भय नहीं.

सूरह–92. अल–लैल

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़सम है रात की, जबकि वह छा जाए. 2 और दिन की, जबकि वह रोशन हो 3 और
उसकी जो उसने सृजित किए, नर और मादा. 4 निस्संदेह तुम्हारे प्रयास भिन्न-भिन्न हैं. 5
जिसने (अल्लाह के मार्ग में अपना माल) दिया और (उसके प्रति) सचेत बना रहा. 6 और
उसने भली बात को सच माना 7 तो उसको हम आसान मार्ग के लिए सुविधा देंगे. 8 और
जिसने कृपणता दिखायी और बेपरवाह रहा, 9 और भली बात को झुठलाया, 10 तो हम
उसे कठिन मार्ग के लिए सुविधा देंगे. 11 और उसकी संपत्ती उसके कुछ काम न आएगी
जब वह गढ़े में गिरेगा. 12 निस्संदेह हमारा दायित्व है मार्ग बताना. 13 निस्संदेह हमारे ही
अधिकार में है परिणाम की दुनिया और वर्तमान (परीक्षा की) दुनिया. 14 तो मैंने तुम्हें
डरा दिया है भड़कती हुयी आग से. 15 उस (भड़कती हुयी आग) में वही पड़ेगा जो
अभागा है. 16 जिसने झुठलाया और मुँह मोड़ा 17 उससे सुरक्षित रखा जाएगा वह व्यक्ति
जो ख़ुदा के प्रति बहुत सचेत (एवं उत्तरदायी) बना रहा. 18 जो (ख़ुदा के मार्ग में) अपना
धन देता है, ताकि पवित्रता प्राप्त करे. 19 और यह कि उसका किसी पर कोई उपकार
नहीं है, जिसका प्रतिफल उसे लेना हो. 20 लेकिन वह तो सिर्फ़ अपने महान रब की
प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ऐसा करता है (अर्थात दान-कार्य करता है). 21 और वह
शीघ्र ही अवश्य (अपने कार्य से) प्रसन्न होगा.

सूरह–93. अज़–ज़ुहा

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़सम है प्रकाशमय दिन की. 2 और रात की जब वह छा जाए. 3 (पैग़ंबर!)
तुम्हारे रब ने तुम्हें कदापि नहीं छोड़ा और न वह तुमसे नाराज़ हुआ.

4 निश्चित रूप से शाश्वत दुनिया तुम्हारे लिए वर्तमान दुनिया से बेहतर है 5 बहुत जल्द तुम्हारा रब तुम्हें प्रदान करेगा तो तुम प्रसन्न हो जाओगे. 6 (पैग़ंबर!) क्या ऐसा नहीं है कि अल्लाह ने तुम्हें अनाथ पाया तो ठिकाना दिया? 7 और तुम्हें (सत्य का) खोजी पाया तो राह दिखायी. 8 और (पैग़ंबर!) हमने तुम्हें निर्धन पाया तो समृद्ध कर दिया. 9 तो तुम यतीम पर सख़्ती न करो. 10 और तुम माँगने वालों को न झिड़की न दो. 11 और तुम अपने रब की नेमतों का चर्चा करो.

सूरह–94. अल–इनशिराह

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 (पैग़ंबर!) क्या हमने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिए खोल नहीं दिया? 2 और तुम पर से तुम्हारा बोझ उतार दिया. 3 जो तुम्हारी कमर तोड़ दे रहा था. 4 और हमने तुम्हारा चर्चा बुलंद कर दिया. 5 तो कठिनाई के साथ आसानी है. 6 निस्संदेह कठिनाई के साथ आसानी है. 7 तो जब तुम फुरसत प्राप्त हो, तो (सत्य-प्रचार के) परिश्रम में लग जाओ. 8 और अपने रब की ओर एकाग्रचित्त रहो.

सूरह–95. अत–तीन

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़सम है तीन की और ज़ैतून की 2 और सीनाई पर्वत की. 3 और इस शांति वाले नगर (मक्का) की. 4 हमने इंसान का सृजन श्रेष्ठ रचना के साथ किया. 5 फिर हमने इंसान को सबसे नीचे फेंक दिया. 6 सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और वे अच्छे कर्म किए तो उनके लिए कभी न समाप्त होने वाला प्रतिफल है. 7 तो (पैग़ंबर!) इस (सत्य को स्पष्ट करने) के बाद अब क्या (कारण) है कि न्याय के दिन के मामले में तुम्हें झुठलाया जाए.? 8 क्या अल्लाह सारे शासकों से बड़ा शासक नहीं है?

सूरह–96. अल–अलक़

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 पढ़ अपने रब के नाम से जिसने सृजन किया. 2 उसने बनाया इंसान को जमे हुए
ख़ून के एक लोथड़े से 3 पढ़ अपने (उस) रब (के नाम से) जो अत्यंत उदार है. 4 जिसने
क़लम के द्वारा ज्ञान सिखाया 5 इंसान को वह कुछ सिखाया जो वह न जानता था. 6
कदापि नहीं, इंसान उद्दंडता का परिचय देता है. 7 इस आधार पर कि वह अपने आपको
आत्मनिर्भर समझता है. 8 (ऐ इंसान!) निस्संदेह (अंत में) तुझे तेरे रब ही की ओर
लौटना है. 9 क्या तुमने देखा उस व्यक्ति को जो रोकता है, 10 एक बंदे को जबकि वह
नमाज़ पढ़ता है? 11 तुम्हारा क्या विचार है? यदि वह सीधे मार्ग पर हो. 12 या ख़ुदा के
प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बने रहने का उपदेश देता हो. 13 तुम्हारा क्या विचार है यदि
उस (रोकने वाले) ने (सत्य को) झुठलाया और मुँह मोड़ा (तो क्या वह अंजाम से बच
जाएगा)?14 क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह देख रहा है? 15 कदापि नहीं (अर्थात वह
जो सोच रहा है वैसा नहीं है), यदि वह नहीं माना तो हम उसके पेशानी के बाल पकड़
कर उसको खीचेंगे. 16 उस पेशानी को जो झूठी और पापी पेशानी है. 17 अब वह बुला
ले अपने समर्थकों को. 18 हम भी जहन्नम के फ़रिश्तों को बुलाएंगे. 19 कदापि नहीं, उस
(उद्दंड इन्कारी) की बात न मानो, और सजदा करो और अपने रब के क़रीब हो जाओ.

सूरह–97. अल–क़द्र

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 हमने इस कुरआन को शबे-क़द्र (अर्थात भाग्य के फ़ैसलों वाली रात) में
अवतरित किया (अर्थात अवतरित करना आरंभ किया). 2 तो तुम क्या जानों, शबे-क़द्र
क्या है? 3 शबे-क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है. 4 फ़रिश्ते और रूह (जिब्रील) उस रात

में अपने रब की अनुमति से उतरते हैं, हर आदेश लेकर. 5 वह रात पूर्णतः सलामती है उषाकाल होने तक.

सूरह–98. अल–बय्यिनह

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 पूर्ववर्ती किताब वाले तथा बहुदेववादियों में से जिन लोगों ने इन्कार किया, वे बाज़ आने वाले नहीं हैं, जब तक कि उनके पास कोई स्पष्ट दलील (अर्थात स्पष्ट चमत्कार) न आ जाए. 2 (अर्थात) अल्लाह की ओर से एक ऐसा पैग़ंबर, जो उन्हें पाक ग्रंथ पढ़कर सुनाने वाला हो (उनके पास आए) 3 और उस ग्रंथ में (ठोस अंदाज़ में) सच्ची बातें लिखी हुयी हों. 4 हालाँकि पूर्ववर्ती किताब वाले स्पष्ट प्रमाण आ जाने के बाद भी भिन्न-भिन्न हो गए. 5 उन्हें तो यही आदेश दिया गया था कि वे अल्लाह कि उपासना करें, आस्था को उसी के लिए शुद्ध रखते हुए और (उसी की ओर) एकाग्र होकर. और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें. यही है सत्य पर स्थापित धर्म. 6 पूर्ववर्ती किताब वाले तथा बहुदेववादियों में से जो लोग सत्य के इन्कार पर अड़े रहे, वे जहन्नम की आग में पड़ेंगे. वे हमेशा-हमेशा के लिए उसमें रहेंगे. यह (जहन्नम में पड़ने वाले लोग सारे प्राणधारियों में) सबसे बुरे प्राणधारी हैं. 7 (इसके विपरीत) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, तो यही लोग (सारे प्राणधारियों में) सबसे अच्छे प्राणधारी हैं.
8 उन (ईमान वालों) का बदला उनके रब के पास सदैव रहने वाले बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उन बाग़ों में जन्नती लोग हमेशा-हमेशा रहेंगे. अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए. यह उसके लिए है जो अपने रब के प्रति सचेत (एवं उत्तरदायी) बना रहा.

सूरह–99. अज़–ज़िल्ज़ाल

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 जब धरती तीव्रता के साथ हिला डाली जाएगी. 2 और धरती अपने सारे बोझ
निकाल कर बाहर डाल देगी. 3 और इंसान कहेगा कि इसे क्या हो गया है. 4 उस दिन
वह अपना (सारा) वृत्तांत सुनाएगी (उस पर घटित सारी घटनाओं का वृत्तांत). 5 क्योंकि
तुम्हारे रब का उसको यही आदेश होगा. 6 उस दिन लोग अलग-अलग निकलेंगे, ताकि
उन्हें उनके कर्म दिखाए जाएँ. 7 जिस व्यक्ति ने कण बराबर भलाई की होगी वह उसको
देख लेगा. 8 और जिस व्यक्ति ने कण बराबर बुराई की होगी वह उसको देख लेगा.

सूरह–100. अल–आदियात

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़सम है उन घोड़ों की जो हाँफते हुए दौड़ते हैं. 2 फिर अपने टाप मारकर चिनगारी
निकालते हैं. 3 फिर सुबह सवेरे छापा मारते हैं. 4 फिर धूल उड़ाते हैं. 5 फिर इसी हाल में
किसी (सेना के) दल में जा घुसते हैं. 6 निस्संदेह इंसान अपने रब का बड़ा ही नाशुक्रा है.
7 और वह स्वयं इस पर गवाह है. 8 निस्संदेह इंसान धन के मोह में अत्यंत बुरी तरह
जकड़ा हुआ है. 9 क्या वह जानता नहीं, जब क़ब्रों में जो कुछ है उसे निकाल लिया
जाएगा. 10 और निकाला जाएगा जो कुछ दिलों में है. 11 निस्संदेह उस दिन उनका रब
उनकी पूरी ख़बर रखता होगा (अर्थात उस दिन उनका रब उनकी असलियत खोल कर
रख देगा).

सूरह–101. अल–क़ारिआ

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 वह खड़खड़ाने वाली! 2 क्या है वह खड़खड़ाने वाली? 3 और तुम्हें क्या मालूम, क्या है वह खड़खड़ाने वाली? 4 जिस दिन लोग बिखरे हुए परवानों की तरह होंगे. 5 और पहाड़ धुनके हुए रंगीन ऊन की तरह होंगे. 6 फिर जिस किसी के (सत्कर्म का) पलडा भारी होगा, 7 उसे मनपसंद जीवन प्राप्त होगा. 8 और जिस किसी के (सत्कर्म का) पलडा हल्का होगा 9 तो उसका ठिकाना गहरी खाई है. 10 और तुम्हें क्या ख़बर कि वह चीज़ क्या है? 11 वह भड़कती हुयी आग है.

सूरह–102. अत–तकासुर

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अधिकाधिक (धन) प्राप्त करने की लालच ने तुम्हें ग़फ़लत में रखा. 2 यहाँ तक कि तुम क़ब्रों में जा पहुँचे. 3 लेकिन तुम बहुत जल्द जान लोगे. 4 (फिर सुन लो,) कदापि नहीं, तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा. 5 कदापि नहीं, यदि तुम विश्वसनीय ज्ञान के रूप में (अंजाम को) जानते होते (तो तुम्हारी यह नीति न होती). 6 तुम जहन्नम को अवश्य देखोगे. 7 (फिर सुन लो कि) तुम जहन्नम को विश्वास की आँख से देख लोगे. 8 फिर उस दिन निश्चित रूप से तुमसे नेमतों के संबंध से पूछ होगी.

सूरह–103. अल–अस्र

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क़सम है ज़माने की (अर्थात समस्त मानवीय इतिहास की क़सम). 2 निस्संदेह इंसान घाटे में है, 3 सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और भले कर्म किए और उन्होंने एक-

दूसरे को सच्चाई का उपदेश दिया. और उन्होंने एक-दूसरे को सहनशीलता का उपदेश दिया.

सूरह–104. अल–हु–म–ज़ह

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 विनाश है हर उस व्यक्ति के लिए जो (लोगों पर) ताने कसता है और ऐब निकालता है.
2 (विनाश है उसके लिए) जिसने धन को समेटा और गिनगिनकर कर रखा. 3 वह
सोचता है कि उसका धन सदैव उसके साथ रहेगा. 4 कदापि नहीं, उसे फेंका जाएगा रौंद
डालने वाली जगह में. 5 और तुम क्या जानो कि वह रौंद डालने वाली जगह क्या है? 6
वह अल्लाह की भड़कायी हुयी आग है. 7 जो दिलों तक पहुँचेगी. 8 वह उन पर ढाँक कर
बंद कर दी जाएगी. 9 ऊंचे–ऊंचे स्तंभों में.

सूरह–105. अल–फ़ील

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ क्या मामला किया?
2 क्या उसने उनकी युक्ति को असफल नहीं कर दिया? 3 और उन पर परिंदों के झुंड के
झुंड भेज दिए. 4 जो उन पर कंकरीले पत्थर फेंक रहे थे. 5 फिर अंततः अल्लाह ने उन्हें
ऐसा कर दिया जैसा खाया हुआ भूसा.

सूरह–106. क़ुरैश

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 (मक्कावासी) क़ुरैश को सुरक्षा प्राप्त हुयी इसलिए. 2 जाड़े और गर्मी की यात्राओं
में उन्हें सुरक्षा प्राप्त हुयी (यह इस कारण संभव हुआ क्योंकि वे अल्लाह के घर के पड़ोस में
रहते थे), 3 तो उन्हें भी चाहिए कि वे इस घर के रब की उपासना करें. 4 जिसने उन्हें
भूख में खाना दिया और उन्हें भय से मुक्त कर दिया.

सूरह–107. अल–माऊन

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 क्या तुमने नहीं देखा उस व्यक्ति को जो न्याय के दिन को झुठलाता है. 2 वही है
जो अनाथ को धक्के देता है. 3 और निर्धन को खाना देने पर नहीं उभारता. 4 तो विनाश है
उन नमाज़ पढ़ने वालों के लिए, 5 जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं. 6 वे जो दिखावे के
कार्य करते हैं 7 और साधारण बरतने की चीज़ें भी किसी को नहीं देते.

सूरह–108. अल–कौसर

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 (पैग़ंबर!) हमने तुम्हें कौसर प्रदान किया (अर्थात प्रचुरता के साथ महान
भलाइयाँ प्रदान कीं) 2 तो अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो और त्याग करो. 3 निस्संदेह
तुम्हारा शत्रु ही बे-नाम व निशान है.

सूरह–109. अल–काफ़िरून

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 (पैग़ंबर!) कह दो, ऐ सत्य का इन्कार करने वालो! 2 मैं उनकी उपासना नहीं
करता जिनकी उपासना तुम करते हो. 3 और न तुम उसकी उपासना करने वाले हो
जिसकी उपासना मैं करता हूँ. 4 और मैं उनकी उपासना करने वाला नहीं जिनकी उपासना
तुम करते हो. 5 और न तुम उसकी उपासना करने वाले हो जिसकी उपासना मैं करता हूँ.
6 तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म, मेरे लिए मेरा धर्म.

सूरह–110. अन–नस्र

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 जब आयी अल्लाह की मदद और विजय प्राप्त हुयी. 2 तो तुमने देखा कि लोग
अल्लाह के दीन में (अर्थात सत्य-धर्म में) दल के दल प्रवेश कर रहे हैं. 3 तो (पैग़ंबर!)
तुम अपने रब की प्रशंसा के साथ उसका महिमागान करो. और उससे क्षमा के लिए प्रार्थना करो. निस्संदेह वह बहुत क्षमा करने वाला है.

सूरह–111. अल–लहब

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 अबू-लहब के हाथ टूट जाएँ और वह नष्ट हो जाए. 2 न उसकी संपत्ती उसके
काम आएगी और न वह जो उसने कमाया. 3 वह शीघ्र ही भड़कती हुयी आग में पड़ेगा
4 और (उसके साथ) उसकी पत्नी भी, जो ईंधन लिए फिरती है सिर पर. 5 उसके गले में
रस्सी होगी बटी हुयी.

सूरह–112. अल–इख़लास

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 (पैग़ंबर!) कह दो अल्लाह एक है. 2 अल्लाह निस्पृह है. 3 न उसकी कोई संतान है
और न वह किसी की संतान है. 4 और कोई उसके बराबरी का नहीं.

सूरह–113. अल–फ़लक़

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 (पैग़ंबर!) कहो, मैं शरण माँगता हूँ, सुबह के रब की, 2 जो कुछ भी उसने
सृजित किया है उसकी बुराई से. 3 और अँधेरे की बुराई से, जबकि वह छा जाए 4 और

गाँठों में फूँक मारने वालों की बुराई से 5 और ईर्ष्या करने वाले की बुराई से, जबकि वह ईर्ष्या करे.

सूरह–114. अन–नास

आरंभ अल्लाह के नाम से जो अत्यंत कृपालु और दयावान है.

1 (पैग़ंबर!) कहो, मैं शरण माँगता हूँ इंसानों के रब की, 2 इंसानों के बादशाह
की, 3 इंसानों के उपास्य की. 4 उसकी बुराई से जो वसवसा डालता है और छुप जाता
है. 5 जो लोगों के दिलों में वसवसा डालता है, 6 चाहे वह जिन्नों में से हो या इंसानों में
से.